आ ग्रथ मळवाना ठेकाणा

१ अमारे त्यांथी दोशी गुलाबचद आणंदजी
लाइब्रेरीयन मारफत

२ मुंबइ शा भीमशी माणक जैनपुस्तक
वेचनार मांडवीबदर

३ भावनगर जैनधर्म प्रसारक सभा आफीस

अर्पण पत्रिका.

अनेक गुणगणालंकृत सुज्ञ मुरवी शेठ

आणंदजी परशोतमनी सेवामां

मु० जावनगर.

बाल्यावस्थाथी स्वशक्तिबले सांसारिक व्यापारमां अभ्युदय प्राप्त थवाथी आपे स्वोपार्जित द्रव्यनो, अन्य अन्य प्रसंगे, तीर्थ-यात्रा, उद्यापन (उजमणु) अठाइ महोत्सव, शत्रुंजय महातीर्थ उपर जीनबिंबोनुं स्थापन, अक्षयनीधिआदि धर्मकार्योमां अं-तःकरणना धार्मिक उत्साहथी व्यय करी पोताना आत्माने नि-र्मल करेलो छे, अने तेवी निर्मलता प्राप्त थवाथी वृद्धावस्थामां शांतरसनो आपना अंतःकरणमां जमाव थयोछे, तेनो प्रत्यक्ष अनुभव जावनगरना जैनसमुदायमां प्रसंगे प्रसंगे थता उंचा म-नने शांति पमाडवामां आपनुं अंतःकरण साधनभूत थायछे, एवां अनेक कारणोने लीधे, तेमज मारा उपर आप अत्यंत प्रीति राखो छो; तेथी आ भाषान्तररूप ग्रंथ आपने सविनय अर्पण करुंछुं ते स्विकारशो.

जावनगर,
ता० १७ नोवेंबर
१८९९

ली. आज्ञांकित,
भाषांतर कर्त्ता.

प्रस्तावना.

नमे त्राता महावीरो, नद्वेषो कपिलादिषु ॥
युक्तिमद् वचनंयस्य तस्यकार्यः परिग्रहः ॥ १ ॥
इत्याचार्य श्री हरिभद्र सूरिः ॥

जैनदर्शन सर्व दर्शनोमां श्रेष्ठ छे, एम पूर्वाचार्य श्रीमद् हरिभद्र सूरिए षट्दर्शन समुच्चय नामना ग्रंथमां छ ए दर्शनोना देवता तत्वप्रमुखना यथार्थ विचार प्रदर्शित करी सिद्ध करी बताव्युं छे. मोक्षाभिलाषी आत्माउने मोक्षपद प्राप्त करवामां जैनदर्शननुं आराधन एज सत्य साधान छे. साधन रत्नत्रयीनुं आराधन करवुं तेज छे. ज्ञान, दर्शन, चारित्र रत्नत्रय छे. श्री तत्वार्थमां "सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः" एम यथार्थ सिद्ध करी बताव्युं छे.

वेदांत आदि दर्शनमां मात्र ज्ञाननेज मुक्तिनुं साधन मानेलुं छे. दर्शन, चारित्र तो तेमनी गणनामांज नथी. जुउ शंकराचार्यकृत अपरोक्षानुभूति, तथा विद्यारण्य स्वामिकृत पंचदशी. श्री शंकराचार्यकृत आत्मबोधमां चारित्र अर्थात् क्रियानी जरुरीआत बतावी छे, परंतु दर्शन अर्थात् सम्यग्दर्शननी मोक्षप्राप्तिमां केटली आवश्यकता छे ते संबंधी विचार जैनदर्शन शिवाय बीजा कोइपण दर्शनमां बिलकुल बताव्या नथी. सम्यग्दर्शननुं यथार्थ स्वरूप तो मात्र जैनदर्शनना पूर्वाचार्य प्रणीत गहन ग्रंथोनुं अवलोकन करवाथीज जाणी शकाय छे, तेमां पण गुरुगम ज्ञाननी आवश्यकता छे. जैनदर्शनमां सम्यग्दर्शननी मुख्यता छे, कारण के ते शिवाय ज्ञान अने चारित्र मोक्ष प्राप्त कराववामां असमर्थ छे; आप्रमाणे छे छतां सम्यग्दर्शन अने सम्यग्चारित्रनु मूल कारण सम्यग् ज्ञान छे. जो सम्यग् ज्ञान प्राप्त थाय तो सम्यग् दर्शन अने सम्यग् चारित्र सेहेजे प्राप्त थाय छे, परंतु सम्यक् ज्ञान प्राप्त थवुं ते अति दुर्लभ छे. जुदा जुदा दर्शनना आचार्योनी विद्वत्ता तेउना ग्रंथोनुं अवलोकन करवाथी स्पष्ट रीते मालम पडे छे. जुदा जुदा दर्शनना ग्रंथो अवलोकन करशो तो आपने सिद्ध थशे के सम्यग् ज्ञान मात्र जैनदर्शनना ग्रंथोमांज छे. अवलोकन करती वखते निष्पक्षपात मतिनी पुरी जरूर छे. बी-

जाठे वास्ते तो शुज वोलवु, परंतु वेदांतमतना धुरंधर श्री माधवाचार्ये पोताना सर्वदर्शन संग्रह नामना ग्रंथमां जुदा जुदा शोल दर्शनना विचारो बतावेलाछे, एकनु बीजामां एम उत्तरोत्तर खंडन करेलु छे, तेमां आर्हत (जैन) दर्शन संबंधी विचारो बतावतां जेजे बाबतोनु जेजे रूपे खंडन करेलु छे ते एवु तो विचित्र छे के, आ प्रसंगे हुं हिंमतथी लखी शकुं छुं के, तेवा महान् आचार्यने पण जैनदर्शननुं यथार्थज्ञान न होतु सर्वदर्शनसंग्रहमां आर्हत दर्शननु स्वरूप बतावबामां छ द्रव्यसंबंधी तथा सप्तभंगीसंबंधी विचारो बताव्या छे छ द्रव्यमा "धर्म अने अधर्म" जे प्रथमना बे द्रव्यो छे, तेनु स्वरूप तद्दन असत्य ते स्थले बतावेलु छे, जैनदर्शनतु सत्यज्ञान जो तेमने होत तो ते बंने पदार्थोनो जेबो तेमणे अर्थ कर्यो छे तेवो करतज नहि, खोटो अर्थ करी असत्य खंडन कर्युं छे खेर। मात्र तेटलुज नहि परंतु सप्तभंगीनी गहन शैली पण तेवा विद्वान् आचार्यने समजवामां आवी नथी, छतां "नैकस्मिन्नसंभवात्" एम सूत्र लखी असत्य कल्पनाठे बतावी छे सप्तभंगीना असत्य खंडननु खंडन श्रीमद्विजयानंदसुरिजीए बहुज विस्तारथी करेलु छे जे थोडा वखत पछी छपाववामां आवशे, ते अवलोकन करवाथी वाचकवर्गने सिद्ध थशे के जैनदर्शन अति गहन दर्शन छे, अने तेनुज यथार्थ ज्ञान ते सम्यग् ज्ञान छे श्री माधवाचार्य जेवा महान् आचार्यपण जैनदर्शनना परम रहस्यथी अज्ञात हता, तो सामान्य विद्वानो माटे तो शुंज बोलवु? आमारा लखाणनी साबिती माटे जीज्ञासुए जैनदर्शनना प्रवीण पुरुष पासे जैनदर्शननु यथार्थ ज्ञान नवतत्त्व प्रमुखनु प्राप्त करी सर्व दर्शन संग्रहमां वर्णवेला आर्हत दर्शनसंबंधी विचारो तथा तेनु खंडन अवलोकन करवुं, आर्यावर्तमां वसनारा तेमज बहारना विद्वानो मध्येनो मोटो भाग वेदांतदर्शनने सर्वोत्तम दर्शन माने छे, परंतु दिलगीरी मात्र ए छे के वेदांतनुं ज्ञान धरावनारा महाविद्वानो पण जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान प्राप्त करवा सारु तेना गहन ग्रंथोनो लेशमात्र अभ्यास करता नथी जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान पूर्वाचार्य श्रीमद्हरिभद्रसूरि तथा श्रीमद् हेमचंद्राचार्य प्रमुखना रचेला द्रव्यानुयोग संबंधी ग्रंथोनु सद्गुरु समक्ष अध्ययन करवाथी थाय छे संस्कृत भाषाना वेत्ताठे, तर्कना नियमो लक्षमां

लइ, पूर्वाचार्यप्रणीत जैनदर्शनना गहन ग्रंथोनुं अध्यन करे छे, त्यारेज तेओने सर्व दर्शनो करतां जैनदर्शननी महत्त्वतानुं जासन थाय छे. जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान थवा सारू प्राचीन तथा अर्वाचीन महान् आचार्योए अनेक ग्रंथोनी रचना करेली छे; परंतु एवा निःस्वार्थ परोपकारी महात्माओए ज्ञानरूप लक्ष्मी जैनोने वारसामां आपतां उत्तरोत्तर प्राप्त थतां वर्त्तमान कालना जैनोना कबजामां ते एवी तो बंधनमां पडेली छे के, ते ज्ञानरूप लक्ष्मीना उत्तम नगीना अति जीज्ञासुओने पण दृष्टिपथे आववा पामता नथी. आप्रमाणे लखवानो हेतु ए छे के परमकृपालु श्रीमद् विजयानंदसूरिजीने (ग्रंथकर्त्ताने) एक प्रसंगे अमुक शेहेरनो ज्ञान जंडार अवलोकन करवानी जीज्ञासा थइ हती. तेवा धर्मधुरंधर महान् आचार्यने पण त्यांना श्रावकोए ज्ञानजंडार बतावावामां आनाकानी करी हती. आवी अज्ञानता ज्यां ज्यां व्यापेली छे, ते ते स्थलना जैनो जैनदर्शननी ज्ञानरूप लक्ष्मीनो सडुपयोग करताज नथी, तेमज बीजा जीज्ञासुओने पण करवा देता नथी. महाविद्वान् आचार्योए परम उपगार बुद्धिए अति प्रयासथी अमूल्य ग्रंथोनी रचना करी जैनीओने जे स्वाधिन करेला छे,ते मात्र सिंडुकमां राखवासारु तेमज बार मासे एक दिवस धूप देवा अने वज नाखवासारु नहि,परंतु नदीना जलनी जेम ज्ञाननी पिपासावालाने तृषा छीपाववासारु प्रगट दृष्टिपथे आवे तेवी रीते राखवासारु स्वाधिन करेला छे. मारो लखवानो हेतु ए छे के जैनदर्शननुं ज्ञान बीजा दर्शनवालाओना ज्ञानना प्रमाणमां बहु अल्प विस्तारमां प्रसिद्धिमां आवेलुं छे. अन्य दर्शनवालाओना जेजे महान् ग्रंथो छे ते सर्वे प्रगट थएला छे, त्यारे जैनदर्शनना महान् ग्रंथो ज्ञानजंडारोमांज मात्र बिराजे छे. जुओ सम्मतितर्क, रत्नावतारिका प्रमुख. जैनदर्शनधारी श्रावक समुदायतो आवा अमूल्य ग्रंथोना ज्ञानथी अतिदूर छे. साधु समुदायमां पण विरला छे. सारांश के वर्त्तमान कालना जैनोने ज्ञान प्राप्त करवानी बहुज अल्प जिज्ञासा छे. जैनदर्शनमां सात क्षेत्रमां द्रव्यनो व्यय करवानी जिनाज्ञा छे. सात क्षेत्रमां ज्ञानक्षेत्रनो समावेश छे; आ क्षेत्र एवुं तो बलवान छे के तेना रक्षण उपर जैनदर्शनना अस्तित्वनो परम आधार छे. ए प्रमाणे जिनाज्ञा छे छतां वर्त्तमान कालना जैनो आ आधारजूत क्षेत्रमां बिलकुल व्यय श-

किना प्रमाणमां करताज नथी जे कांइ व्यय करे ठे ते बीजाउंना प्र माणमां यत्किंचित् ठे आ प्रसंगे कोइ सवाल करशे के हालमां जैनशा स्त्रो अनेक स्थले स्थापवामां आवी ठे ते शुं ज्ञानक्षेत्रमां व्यय नथी? उत्तर मात्र एटलोज ठे के ते व्ययनी बीजा क्षेत्रना व्ययनी साथे सरखामणी करशो, त्यारेज यथार्थ समजवामां आवशे आवी जैनशालाउंमां महा विद्वान् शिक्षकोने राखी तीक्ष्ण बुद्धिवाला जैनना बालकोने उत्तरोत्तर गहन ग्रथोनुं अध्ययन करावयामां पुष्कल द्रव्यनो व्यय करवानी जरूर ठे, एटले सुधी के जे वरखे चैत्यक्षेत्र तथा प्रतिमाक्षेत्र वर्त्तमान कालमां प्रकाशित थयेल ठे, ते वरखे ज्ञानक्षेत्रने प्रकाशित करवानी जरूर ठे ज्ञानीने पुष्टि आपवी तेज ज्ञाननी पुष्टि ठे, अने ज्ञानने पुष्टि आपवी ते ज्ञानीने खोराक आपवातुल्य ठे आ बाबतमां वर्तमान कालना अन्यदर्श नीउंनी पद्धति तरफ दृष्टि करवी जोइए. अन्यदर्शनोना तमाम महान् ग्रथो प्रगट थएला ठे विद्वान् पुरुषो ते प्रगट थएला ग्रथोनु अवलोकन करी शके ठे जेथी बुट विद्वानोने अन्यदर्शनोना ग्रथोनी ठे, तेथी जैनदर्शनना ग्रथोनी नथी टुंकामां कहीए तो जैनदर्शनना ग्रथो बिलकुल विस्तार पा मेला नथी जे प्रगट थयेला ठे ते पण एवी पद्धतिमां के प्रवेशकने सहा यक शिवाय मार्ग पण सूझे नहि सारांश के जैनदर्शननु ज्ञान केलवणी रूप थवामां तेवा प्रकारनी रचनानी वर्त्तमानमां अत्यत खामी ठे आवी अनेक मुश्केलीउंना कारणथी सम्यग्ज्ञान प्राप्त थवु ते वर्त्तमान कालना मनुष्योने अति दुर्लभ ठे

सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र ते मोक्षमार्ग एवु जे प्रथम दर्शावेल ठे तेनो सामान्य अर्थ आ प्रसंगे बतावयानी जरूर ठे

सम्यग् ज्ञान—ते आप्तप्रणीत तत्वस्वरूपनो यथार्थ अवबोध

सम्यग् दर्शन ते आप्त प्रणीत तत्व सरूपना यथार्थ अवबोधनो अनुभव, वा यथार्थ तत्व रुचि

सम्यक्चारित्र ते आत्मस्वरूपमां, कर्मक्षय करवा निमित्ते रमणताकरवी

सम्यग् दर्शन अने सम्यक् चारित्रनु विस्तारथी स्वरूप बताववानो आ स्थले प्रसंग नथी मात्र सम्यग् ज्ञानसंबधी कांइक लखवानी आ

वश्यकता छे, तेथी पूर्वाचार्यप्रणीत ग्रंथनुं अनुकरण करी नवतत्वसंबंधी कांइक विचार जाहेर करवा रजा लउं छुं.

आप्तप्रणीत तत्व बे छे. १ जीव, २ अजीव. बे तत्वना विस्ताररूप सात तथा नव तत्व छे. ते आ प्रमाणे १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, ९ मोक्ष. पुण्य, पापने बंधमां अंतर्भावी करवाथी सात तत्व थाय छे.

प्रथम जीवतत्व–जीव शब्द चेतन, आत्मा इत्यादि अर्थवाची छे. जीवतत्वनो यथार्थ अवबोध तेज अति गहन ज्ञान छे. जीवनुं अस्तित्व माननारा विद्वानोना विचारमां पण बहुज विचित्रता छे. जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्रयुक्त, सुख दुःख वीर्यवान् छे. भव्यत्व, अभव्यत्व, प्रमेयत्व, सत्व, द्रव्यत्व, प्राणधारित्व, संसारित्व, सिद्धत्व, आदि स्व अने परपर्याय जीवने छे. ज्ञानादि जीवना धर्म छे. तेमना थकी जीव भिन्न पण नथी अने अभिन्न पण नथी, परंतु ते बन्नेथी भिन्न जातिरूप भिन्नाभिन्न छे. जो ज्ञानादि धर्मोथी जीव भिन्न होय तो हुं जाणुं छुं, हुं जोउं छुं, हुं सुखी, हुं दुःखी, हुं भव्य इत्यादि अभेद प्रतिपत्ति न थवी जोइए, अने ते तो प्राणीमात्रने छे; तेमज जो ज्ञानादि धर्मोथी जीव अभिन्न होय तो, आ धर्मी अने आ तेना धर्म छे, एवी भेदबुद्धि न थवी जोइए. माटे ज्ञानादि धर्म थकी भिन्नाभिन्न एवोज जीव मानवो जोइए. वळी जीव केवो छे? कर्मना भेदोनो कर्त्ता छे, तेमज ते कर्मोना फळनो पण भोक्ता छे, चतुर्गतिरूप संसारमां कर्मना संबंधथी परिभ्रमण करनारो छे. तेमज द्वादशविध तपप्रयोगथी सकल कर्मनो क्षय करी सिद्धत्व प्राप्त करनारो छे. आ सर्व लक्षणो जीवना, चेतनना, आत्माना छे. जीव, पृथ्वी, अप, तेउ, वायु वनस्पतिकायनो तेमज बे, त्रण, चार के पांच इंद्रियवाळो छे, एम नव प्रकारनो छे. प्रकारांतरे तेना ५६३ भेद पण थाय छे.

बीजुं अजीवतत्व–जीव करतां जेनां लक्षणो विपरीत होय ते अजीव, अज्ञानादि धर्मवान्, रूप, रस, गंध, स्पर्शादिथी भिन्नाभिन्न, नरदेवादि भवांतरमां नहि गमन करनार, ज्ञानावरणीयादि कर्मनो अकर्त्ता, तेमना फळनो अभोक्ता, अने जडस्वरूप, सडन, पडन, विध्वंसनादि धर्मवान्,

ते अजीव छे तेना धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल अने काल, एवा पांच भेद छे

त्रीजु पुण्यतत्व अने चोथुं पापतत्व—सत्कर्मपुद्गल ते पुण्य छे, अने ते नाथी विपरीत ते पाप छे पुण्य पापथीज जीवने उत्तरोत्तर सुखदुःख प्राप्त थाय छे दानादि शुभ क्रिया पुण्यनुं कारण छे, अने हिंसादि अशुभक्रिया पापनुं कारण छे जीवमात्रमां आत्मत्व तो सरखुंज छे, छतां मनुष्य, पशु आदि देहप्रमुख विचित्रता जे जणाय छे, तेनु कारण पुण्यपाप छे

पांचमु आश्रव तत्व छे जेनाथी जीवने कर्म प्राप्त थाय ते आश्रव तेना मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग, आ हेतु छे असद् देव, गुरु, धर्मने सत् रूपे मानवानी जे बुद्धि ते मिथ्यात्व, हिंसादिथी न विरमवु ते अविरति, क्रोध, मान, प्रमुख ते कषाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग सारांश के ज्ञानावरणीयादि कर्म बंधना हेतु ते आश्रव तत्व छे

छठुं संवर तत्व छे मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग रूप आश्र वनो सम्यग् दर्शन, विरति, क्षमादि अने त्रिगुप्ति आदि धर्मना आचर णथी निरोध अर्थात् निवारण ते संवर सारांश के जीवने कर्म उपादान हेतुभूत परिणामनो अभाव ते संवर छे

सातमु निर्जरा तत्व छे जीवसाथे बंधायेला ज्ञानावरणीयादि कर्मनु चार प्रकारना तपथी छुटा पडवु ते निर्जरा छे तेना बे प्रकार छे १ सकाम, २ अकाम अति दुष्कर तपश्चर्या करनारा, कायोत्सर्गमां रहेनारा, बावीस परीषह सहनकरनारा, लोचादि काय क्लेश भोगवनारा, अष्टादश शीलांग रथना धारण करनारा, बाह्य, अभ्यतर सर्व परिग्रहना त्यागनारा, चारित्री आदि सकाम निर्जरावाळां छे देशविरतिवंने पण सकाम निर्जरा थाय छे बाकीनाछे अकाम निर्जरावाळां छे

आठमु बंध तत्व छे बंध अर्थात् बंधन, अर्थात् जीव अने कर्मप्रदे श पुद्गलनो क्षीरनीर जेवो संबध

सवाल—जीव अने कर्मनो संबंध कंचुकिक अने कचुकना जेवो छे के अन्य तरेहनो छे ?

उत्तर—कंचुकिक अने कचुकना जेवो नथी, परतु अग्नि अने लोहना जेवो तेमज क्षीर अने नीरना जेवो, कर्म अने जीवनो संबध परस्पर अ

नुप्रवेशात्मक अर्थात् परिणमन धर्मवालो संबंध छे. आ प्रसंगे कोइ शंका करे के जीवतो अमूर्त छे, तेने हस्त प्रमुख तो छे नहि, एटले लेवा मुकवानी शक्ति पण नथी, तो तेने कर्म ग्रहण केम संभवे ? समाधान ए छे के जीवने अमूर्त कोणे मान्यो छे ? जीवने कर्मनो संबंध अनादि छे, अर्थात् बंने क्षीरनीरनी जेम एक होय तेम परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे जीव मूर्त होवाथी कर्म ग्रहण करे छे. कर्मने लेवा मुकवामां कांइ हस्त प्रमुखनी जरूर पडती नथी; परंतु राग द्वेष, मोहरूप परिणामनी चीकाशथी, तेलमां पडेला वस्त्रने रज चोटवानी जेम जीव कर्मने ग्रहण करे छे, अने तेनाथीज विपरीत एवा सद् अध्यवसायथी जीव कर्मने मुके छे. सारांश के संसार अवस्थामां जीव मूर्त छे. आवो जे बंध ते प्रकृति, स्थिति, रस अने प्रदेश एवा चार भेदथी प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे प्रकारनो छे.

नवमुं मोक्ष तत्व छे. शरीर, इंद्रिय, आयुष्य आदि बाह्य प्राण, पुण्य, पाप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, पुनर्जन्मग्रहण, वेदत्रय; कषायादि संग, अज्ञान, असिद्धत्व इत्यादि समेत देहादिनो जे आत्यंतिक वियोग ते मोक्ष छे. सारांश के सकल कर्मनुं सर्वथा क्षय लक्षण ते मोक्ष छे.

आ नव तत्वनुं स्वरूप अति सूक्ष्म छे, अति विस्तारवालुं छे अने तेनुं अनुभवरूप स्वरूप समजवामां स्वसंवेदनत्व तथा गुरुगम अवबोधनी संपूर्ण आवश्यकता छे. नवतत्वनुं प्रकरण कंठाग्र करवाथी जे पोपटीयुं ज्ञान प्राप्त थाय छे, ते मुमुक्षु थवानी अभिलाषा राखनारा प्राणीओने बस नथी; कारण के शास्त्रमां कह्युं छे के " श्रावक तेजे जाणे तत्व " आ सूत्रनो अर्थ समजनारा एम मानता होय के अमे नवतत्व कंठे कर्यां एटले श्रावक थया, तो एवुं तेमनुं मानवुं यथार्थ नथी. ज्यारे तत्वनुं स्वरूप यथार्थ रीते जाणवामां आवे अने ते प्रमाणे गुण धारण करवामां आवे त्यारेज श्रावकपणुं प्राप्त थाय छे. तेवी अभिलाषा धारण करनारा उत्तम जीवोना हीतने अर्थे परम कृपालु महाराजे अनेक प्राचीन, अर्वाचीन महान ग्रंथकारोना अति उत्तम ग्रंथोमांथी जीन वचनामृतनुं दोहन करी आ जैनतत्वादर्श ग्रंथरूप क्यारीमां तेनुं सिंचन करेल छे. ग्रंथकर्त्ताए आ ग्रंथनुं नाम " जैनतत्वादर्श आपेलुं छे ते यथार्थ छे, कारण के आ ग्रंथना अ-

ध्ययन करनार, आदर्श (आरीसा) मां जोनार जेम पोताना प्रतिबिं बने जुए छे, तेम आ ग्रंथरूप आदर्शमा तत्व स्वरूप जुए छे

आ प्रसंगे मारे जणाववु जोइए के, मात्र सांसारिक विद्याना अभ्या सीओ वारंवार एवो सवाल करे छे के अमोने जैनदर्शननु ज्ञान मेळववानी तो बहुज जीज्ञासा थाय छे, परतु पद्धतिप्रमाणे ज्ञान प्राप्त करवानु को इपण ग्रंथकारे अत्यारसुधीमां एक पण साधन योजेलु होय तेम अमारी नजरे आवतु नथी तेवा जीज्ञासुओने मारी नम्र विनंति एवी छे के सां सारिक तत्वनु ज्ञान एकडेएकथी ते महान पाठशालाओनी उंचा प्रका रनी केळवणी सुधी प्राप्त करतां केटलां वर्षो व्यतीत थाय छे, तेमां जेवी धीरज अने खंत राखो छो, तेना करतां आ अति गहन धर्मतत्व विष यमां विशेष धीरज अने खंत राखवानी जरूर छे तत्वज्ञाननी जीज्ञासा वाळाने शरुआत करवामां आ ग्रंथ अति उत्तम छे, ज्यां ज्यां पारिभाषिक कठिनता लागे, त्यां त्यां तत्ववेत्ताओनी सहाय लेवी तत्वनु ज्ञान लेशमात्र नहि छतां मात्र सांसारिक विद्याना कारणथी पोताने कृतकृत्य मानवा ते मिथ्याभिमान छे सासारिक विद्या ऐहिक सुखना साधनोनी योजना करी आपे छे, परतु आमुष्मिक सुखनां साधनो योजवामां तो तत्वविद्यानुज साम्राज्य छे सासारिक विद्याना उत्कर्षरूप ज्वरने शांत करवामा आ ग्रंथ परम औषध छे

आ ग्रंथ हिंदुस्तानी भाषामां ग्रंथकर्त्ताए रचेलो छे, तेनुं गुजराती भाषामा भाषान्तर करी आपवानी मने मारा मित्रोए तथा गुरुराज ना केटलाएक शिष्योए भलामण करी में तेमने कह्यु के हिंदुस्ता नी भाषामां जे खुबी समायेली छे, ते गुजराती भाषामां कोइपण रीते आववानी नथी छतांपि तेमनो आग्रह एवो थयो के काठीआवाड गुजरातना घहु लोको हिंदुस्तानी भाषा बराबर समजी शकता नथी, ते भाईओना हीतने अर्थ भाषान्तर करी आपो, ते कारणथी आ भाषान्तर मारी अल्पमति अनुसार में कर्युं छे आ भाषान्तरना जेजे स्थले चूक भूक मा लम पडे ते सर्वे सुज्ञजनोए सुधारी वाचवा कृपा करवी एज विनंति

ली भाषान्तर कर्त्ता

॥ आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका लखीये ढीये ॥

॥ प्रथम परिछेदमां देवतत्वनुं स्वरूप ढे तेनी अनुक्रमणिका लखीये ढीये ॥

अंक विषय पृष्ट.

॥ बीजा परिछेदमां कुदेवनुं स्वरूप ढे,तेनी अनुक्रमणिका॥

॥ त्रीजा परिछेदमां गुरुतत्वनुं स्वरूप कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ पांचमा परिछेदमां शुद्ध धर्मतत्त्वनुं स्वरूप कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ ठठा परिछेदमां चौद गुणस्थाननु स्वरूप ठे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ सातमा परिछेदमां सम्यग् दर्शननुं स्वरूप लखेलछे, तेनी अनुक्रमणिका॥

नवमा परिछेदमां श्रावकोनो दिनकृत्य विधि कहेलछे, तेनी अनुक्रमणिका

दशमा परिछेदमां रात्रिकृत्यादिक पांच कृत्यो कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका.

॥ बारमां परिच्छेदमां श्री महावीर भगवानथी लइने आज पर्यंत केटलुंक वृतांत लखेल छे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ ॐनमः स्याद्वादवादिने ॥

॥ अथ तपागच्छीय ॥

॥ मुनिश्री आनंदविजय (आत्मारामजी) विरचित ॥

॥ जैनतत्त्वादर्श नामक ग्रंथ प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम परिच्छेद ॥

॥ अनुष्टुब् वृत्तम् ॥

स्यात्कारमुद्रितानेक, सदसद्भाववेदिनम् ॥
प्रमाणरूपमव्यक्तं, भगवंतमुपास्महे ॥ १ ॥

प्रथम देव, गुरु अने धर्म, आ त्रण तत्वोनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए.

विदित करीए छीए के आ जैनमतनुं स्वरूप श्रीतीर्थंकर, गणधर तेमज पूर्वाचार्य आदि पुरुषोए, आगम निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका तेमज प्रकरणो अने तर्कशास्त्रादि अनेक ग्रंथोनी रचना करी स्पष्ट बतावेल छे; परंतु पूर्वाचार्य रचित ते सर्व ग्रंथो प्राकृत तेमज संस्कृत भाषामां होवाथी तेमज वर्तमान कालमां जैनिओना विद्याभ्यासमां उद्यमनो अभाव होवाथी ते अत्यंत उत्तम ग्रंथोनो आशय नाश पामवा योग्य थयेल छे. तेथी केटलाएक भव्य जीवोनी प्रेरणाथी तथा स्वकर्मनिर्जराना हेतुथी जेओने संस्कृत तेमज प्राकृत कठिन लागेछे तेमना उपकार माटे देव, गुरु अने धर्मनुं कांइक स्वरूप भाषामां (गुजरातीमां) लखीए छीए.

श्रीसंघना वाचक वर्गने नम्रतापूर्वक विनति छे के आ ग्रंथमां जैन मार्गथी विपरीत ज्यां माराथी लखायुं होय त्यां यथार्थ जे होय ते बतावशे तो तेओनो मारा उपर अत्यंत उपकार थशे; आ कालमां लोकोए स्वकपोलकल्पित घणां नवीन मतो प्रगट करेलछे तथा अंग्रेजी अने फारसी विद्याभ्यासथी तथा अनेक मत मतांतरोनी वातो श्रवण करवाथी अनेक भव्यजीवोने अनेक तरेहना संशय उत्पन्न थया करेछे,ते दूर करवाने कांइक लखवुं एज आ ग्रंथ लखवानो उद्देशछे. प्रथम कहेलां त्रण तत्वो मध्येथी देव तत्वनुं स्वरूप नीचे मुजब—

देव नाम परमेश्वरनु छे ते परमेश्वरना स्वरूपमां अनेक प्रकारना विकल्प मतांतरी पुरुषो करेछे जैनमतमां परमेश्वरनु स्वरूप केवु कथन करेलछे, ते नाम, रूप तेमज विशेषणसंयुक्त बतावुछुं जैनमतमां जे परमेश्वर मानेलछे ते बार गुण सहित तेमज अढार दोषरहित अर्हंत परमेश्वर छे अने जे परमेश्वर बार गुण रहित तेमज अढार दोष सहित हशे तेनामां परमेश्वरता कदापि सिद्ध थशे नहि आ विवेचन आगल करवामां आवशे

प्रथम बार गुण तेमा अशोक वृक्षादि अष्ट महाप्रातिहार्य सर्व जैन समुदायमां प्रसिद्ध छे ते तथा चार मूल अतिशय ए रीते बार गुण ए बार गुणमध्येना चार मूल अतिशयनां नाम (१) ज्ञानातिशय (२) वा गतिशय (३) अपायापगमातिशय (४) पूजातिशय प्रथम ज्ञानातिशय नु स्वरूप आ प्रमाणे केवलज्ञान तथा केवल दर्शनेंकरी भूत, भविष्य, व र्तमानकालमां जे सामान्य विशेषात्मक वस्तु छे तेनुं, तथा उत्पाद, व्य य, ध्रौव्ययुक्त त्रिकाल संबधी जे सत् वस्तुछेनु, जाणवुं तेनु नाम ज्ञाना तिशय बीजो वचनातिशय तेमां भगवतनां वचन पांत्रीश अतिशयें युक्त होय छे ते पांत्रीश अतिशयोनु स्वरूप आ प्रमाणे (१) संस्कारवत्त्व (सं स्कृतादि लक्षण युक्त) (२) औदात्त्य (शब्दमां उच्चपणु) (उपचार प रीतता) (३) अग्राम्यत्व (गामडाना रेहेनार पुरुषना वचन समान जेम नुं वचन नहि) (४) मेघगम्भीरघोषत्व (मेघनी समान गंभीर शब्द) (५) प्रतिनाद विधायिता (सर्ववाजीत्रोनी साथ मलता शब्द) (६) दक्षि णत्व (वचननी सरलतासंयुक्त) (७) उपनीतरागत्वं (मालकोशादि ग्रा म राग सयुक्त) आ सात अतिशय शब्दनी अपेक्षाथी जाणवा-बाकीना बीजा अतिशयो अर्थ आश्रय जाणवा (८) महार्थता (अत्यंत मोटो जे मां अभिधेय कहेवा योग्य अर्थ छे) (९) अव्याहतत्व (पूर्वापरविरोध रहित) (१०) शिष्टत्वं (अभिमत सिद्धांत उक्त अर्थता) एटले के अ भिमत सिद्धांतनुं जे कहेवु ते वक्ताना शिष्टपणानु सूचक छे (११) संश यानामसंभव (जेना कथनमां श्रोताने संशय थतो नथी) (१२) नि राकृतान्योत्तरत्व जेना कथनमा कोइपण दूषण नहि, श्रोताने संशय उ त्पन्न थाय नहि तेम भगवान् बीजीवार उत्तर दे नहि) (१३) हृदय गम ता (हृदयमा ग्रहणकरवा योग्य) (१४) मिथ साकांक्षता (अरस पर

स पद वाक्योनुं सापेक्षपणुं) (१५) प्रस्तावौचित्यं (देशकाल युक्त, विरुद्धनहिं) (१६) तत्त्वनिष्ठता (विवक्षित वस्तुना स्वरूपने अनुसरवापणुं) (१७) अप्रकीर्ण प्रसृतत्वं (सुसंबंधनो विस्तारअथवा असंबंध अधिकारनो अतिविस्तार नहि) (१८) अस्वश्लाघाऽन्यनिंदता (आत्मोत्कर्ष तथा परनिंदा रहित) (१९) आभिजात्यं (प्रतिपाद्य वस्तुनी भूमिकाने अनुसरवारूप) (२०) अति स्निग्ध मधुरत्वं (घीगोलनी पेठे सुखकारी)(२१) प्रशस्यता (कहेला गुणोनी योग्यताथी प्राप्त थइ छे श्लाघा) (२२) अमर्मवेधिता (पारकां मर्म जेमां उघाड्यां होय नहि) (२३) औदार्य (अभिधेय अर्थनुं तुच्छपणुं नहि) (२४) धर्मार्थप्रतिबद्धता (धर्म तेमज अर्थ संयुक्त) (२५) कारकाद्यविपर्या (कारक, काल, वचन तेमज लिंगादि ज्यां विपर्यय नहि) (२६) विभ्रमादिवियुक्तता (वक्ताना मनमां भ्रांति विक्षेपादि दोष रहित) (२७) चित्रकृत्त्व (कुतूहल पणानो जेमां अभाव छे) (२८) अद्भुतत्वं (अद्भुतपणुं) (२९) अनतिविलंबिता (अति विलंब रहित) (३०) अनेकजाति वैचित्र्य (जाति आदि वर्णन करवा योग्य वस्तु स्वरूपना आश्रय युक्त) (३१) आरोपिता विशेषता (वचनांतरनी अपेक्षाथी विशेषपणुं जेमां स्थापन थयेल छे) (३२) सत्त्वप्रधानता (साहस करी संयुक्त) (३३) वर्णपदवाक्य विविक्तता (वर्णादिनुं विच्छिन्नपणुं) (३४) अव्युच्छित्तिः (विवक्षित अर्थनी सम्यक् प्रकारें सिद्धि ज्यां सुधी न थाय त्यां सुधी अव्यवच्छिन्न वचननुं प्रमेयपणुं) (३५) अखेदित्वं (श्रमरहित) भगवंतना बीजा वचनातिशयना ए पांत्रीशभेद— त्रीजो अपायापगमातिशय एटले उपद्रव निवारक. चोथो पूजातिशय. जेथी भगवान् त्रण लोकना पूजनीय छे. आ बे अतिशयना विस्ताररूप चोत्रीश अतिशय छे. ते आ प्रमाणे.

(१) तीर्थंकर भगवानना देहनुं रूप तथा सुगंध सर्वथी उत्कृष्ट तेमज रोग, परसेवो अने मलें करी रहित शरीर (२) श्वास निःश्वास पद्मकमलना जेवो सुगंधमय (३) रुधिर अने मांस गायना दुध जेवुं उज्वल (४) आहार निहारनो विधि चर्मचक्षु वालां देखे नहि. आचार अतिशय जन्मथीज (१) एक योजन समवसरणनुं क्षेत्र छतां देवता, मनुष्य, तिर्यंचोनी कोडाकोडी पण ज्यां समाइशके अने भीड थाय नहि (२) वाणी

भाषा अर्धमागधी, देवता, मनुष्य अने तिर्यंचोने पोतपोतानी भाषामां समजाइ जाय तेमज एक योजन सुधी सांभळी शकाय (३) प्रभामंडळ मस्तकना पाछळना भागमां सूर्यना बिंबोनी साथे जाणे हरीफाइ करतुं होयनी! पोतानी शोभायुक्त मनोहर भामंडळ शोभे छे (४) चारे दिशामां साडीपचवीश योजन सुधी उपद्रव रूप ज्वरादि रोग होय नहि (५) वैर (परस्पर विरोध होय नहि) (६) (इति) धान्यने उपद्रव कारी उदरादि न होय (७) मारिमरीनो उपद्रव न होय (८) (अति वृष्टि) निरंतर वरसाद नहि (९) (अवृष्टि) वरसादनो अभाव नहि (१०) दुर्भिक्ष न होय (११) स्वचक्र परचक्रनो भय न होय आ अगीयार अतिशय ज्ञानावरणीय आदि चार घातिकर्मना क्षयथी उत्पन्न थाय छे (१) आकाशमा धर्मप्रकाशक चक्र चाले छे (२) आकाशमा चामर विंझाय छे (३) आकाशमा पादपीठ सहित स्फटिकमय सिंहासन होय छे (४) आकाशमां त्रण छत्र (५) रत्न मय ध्वज फरके छे (६) भगवान् ज्यारे चाले छे त्यारे पगनी नीचे सुवर्ण कमळ देवता रचे छे (७) समवसरणमां रत्न, सुवर्ण अने रूपामय त्रणकोट मनोहर होय छे (८) समवसरणमां प्रभुनां चार मुख देखाय छे (९) अशोक वृक्ष छाया करे छे (१०) कांटा अधोमुख थइ जाय छे (११) वृक्षो एवी रीते नमी जाय छे के जाणें नमस्कार करतां होय (१२) उच्चनादें दुंदुभि भुवनव्यापक नाद ध्वनि करे छे (१३) पवन सुखदायक वाय छे (१४) पक्षी प्रदक्षिणा दे छे (१५) सुगंध मय पाणीनो वरसाद थाय छे (१६) ढींचण प्रमाण पांच वर्णना फुलनो वरसाद थाय छे (१७) केश दाढी मुछ अवस्थित रहे छे (१८) चार प्रकारना देवता जघन्यथी जघन्य एक क्रोड भगवतनी पासे रहे छे (१९) छ ए ऋतु सानुकूल शुभस्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्दयुक्त, अशुभ नाश पामे छे अने सुंदर प्रगट थाय छे आ ओगणीश अतिशय देवकृत छे मतांतर तथा वांचनांतरमा कोइ कोइ अतिशय अन्यतरेहथी छे पूर्वोक्त चार मूळ अतिशय अने आठ महाप्रातिहार्य मळी बार गुणमय बिराजमान अर्हंत भगवत परमेश्वर छे तेज अढारे दोपरहित छे तेथी अढारदोषनुं वर्णन आ प्रमाणे –

श्लोक ॥अंतरायदानलाभ, वीर्यभोगोपभोगगा ॥हासोरत्यरती भीति,

जुगुप्सा शोकएव च ॥२॥ कामोमिथ्यात्वमज्ञानं, निद्रा च विरतिस्तथा ॥ रागोद्वेषश्च नो दोषा, स्तेषामष्टादशाऽप्यमी ॥ १ ॥ अर्थ (१) दान देवामां अंतराय, (२) लाभगत अंतराय, (३) वीर्यगत अंतराय. (४) जे एक वखत भोगववामां आवे ते भोग, पुष्पमालाप्रमुख तद्गत अंतराय ते भोगांतराय (५) वारंवार भोगववामां आवे जेम के स्त्री, घर, कंकण, कुंडलादि तद्गत अंतराय ते उपभोगांतराय, (६) हास्य (७) (रति) पदार्थोपर प्रीति (८) अरति (रतिथी विपरीत) (९) सात प्रकारना भय. (१०) जुगुप्सा– मलीन वस्तुने देखी नाक मचकोडवुं. (११) शोक–चित्तनुं विकलपणुं (१२) काम–स्त्री, पुरुष, नपुंसक ए त्रणेनो वेदविकार (१३) मिथ्यात्व–दर्शनमोह (१४) अज्ञान–मूढपणुं (१५) निद्रा (१६) अविरति–प्रत्याख्याननो अभाव (१७) राग–पूर्वसुखना साधनमां गृद्धिपणुं (१८) द्वेष–पूर्व दुःखोनुं स्मरण तेमज पूर्व दुःखमां अथवा तेना साधनमां क्रोध–आ अढार दूषण जेमां न होय ते अर्हंत, भगवंत, परमेश्वर छे. ए अढार दूषणोमांथी एक पण दूषण जेमां होय ते कदापि अर्हंत, भगवंत, परमेश्वर होइ शके नहि. प्रथमना पांच विघ्नो जेमां लागी रहेल छे ते परमेश्वर केवी रीते होइ शके ?

प्रश्न–दानांतरायनो नाश थवाथी शुं परमेश्वर दान दे छे ? तेमज लाभांतरायनो नाश थवाथी परमेश्वरने शुं लाभ प्राप्त थाय छे ? तथा वीर्यांतरायनो नाश थवाथी परमेश्वर शुं शक्ति बतावे छे ? तथा भोगांतरायनो नाश थवाथी शुं परमेश्वर भोग करे छे ? अने उपभोगांतरायनो क्षय थवाथी शुं परमेश्वर उपभोग करे छे ?

उत्तर–पूर्वोक्त पांच विघ्न क्षय थवाथी भगवंतमां पांच शक्तिउ प्रगट थाय छे. जेम निर्मल चक्षुउनी आर्फा आवेलां पडलादि नाश पामवांथी जोवानी शक्ति प्रगट थाय छे तेम– मरजी होय तो देखे अथवा न देखे परंतु देखवानी शक्ति विद्यमान छे; तेवीज रीतें अर्हंत भगवंतने पांच शक्तिउ प्रगट थाय छे, पछी मरजी होयतो दानादि करे अथवा न करे परंतु शक्ति विद्यमान छे, जे पूर्वोक्त पांच शक्तिउथी रहित छे ते परमेश्वर केवी रीते होइ शके ?

६ हास्य–हसवुं जे आवेछे ते अपूर्व वस्तु देखवाथी अथवा अपूर्व

वस्तु सांजलवाथी अथवा अपूर्व आश्चर्यना अनुजवनु स्मरण थवाथी ए विगेरे हास्यनां निमित्तछे, तेमज मोहकर्मनी प्रकृति हास्यनुं उपादान कारणछे तेथी ए बने कारण अर्हंत जगवतमां नथी प्रथमना निमित्त कारणनो अर्हंत जगवतमा संजवज केम होय, कारण के अर्हंत जगवत सर्वज्ञ सर्वदर्शी छे तेमना ज्ञानमा एवी अपूर्व वस्तु नथी के जेने देख वाथी सांजलवाथी के अनुजववाथी आश्चर्य उत्पन्न थाय, तेथी हास्यनु निमित्त कारण कांइ नथी, अने मोहकर्म तो अर्हंत जगवतें सर्वथा क्षय कर्युंछे तेथी उपादान कारणनो पण संजव नथी ए हेतुथी अर्हंतमा हा स्यरूप दूषण नथी जे हसनशील हशे ते अवश्य असर्वज्ञ, असर्वदर्शी तेमज मोहयुक्त हशे तेथी ते परमेश्वर केम होइ शकशे ?

७ रति–जेनी प्रीति पदार्थो उपर होय ते अवश्य सुंदर शब्द,रूप,रस, गंध,स्पर्श,स्त्री आदि उपर प्रीतिमान् होय, जे प्रीतिमान् होय ते अवश्य ते पदार्थनी लालसावाला होय अने जे लालसावाला होय ते अवश्य ते प दार्थनी अप्राप्तिथी दु खी होय, ते अर्हंत परमेश्वर केवी रीतें होइ शके?

८ अरति–जेनी पदार्थो उपर अप्रीति होय ते तो पोतेज अप्रीति रूप दुःखें करी दु खी छे ते अर्हंत जगवत केवीरीतें होइ शके ?

९ जय–जेणें पोतानोज जय दूर कर्यो नहि ते अर्हंत जगवंत केम होइ शके?

१० जुगुप्सा–मलीन वस्तु देखीने नाक चढाववुं परमेश्वरना ज्ञान मां सर्ववस्तुनु जासन थाय छे जो परमेश्वरमां जुगुप्सा होय तो अ त्यत दुःख होय तेथी जुगुप्सावंत अर्हंत जगवंत केम होइ शके ?

११ शोक–जे पोतेज शोक वालोछे ते परमेश्वर केम होय ?

१२ काम–जे पोतेज विषयीछे, स्त्रियोनी साथे जोग करे छे एवा वि षयाजिलाषीने कयो बुद्धिमान् पुरुष परमेश्वर माने ?

१३ मिथ्यात्व–जे दर्शनमोहें करी लेपायेल छे ते जगवंत नहीं

१४ अज्ञान–जे पोतेज मूढ छे ते जगवंत नहीं

१५ निद्रा–जेने निद्रा आवे छे ते निद्रामां केटलुएक जाणता नथी तेथी निद्रावान्, अर्हंत जगवंत सदा सर्वज्ञ, केम होइ शके ?

१६ अप्रत्याख्यान–जे प्रत्याख्यानरहितछे ते सर्वाजिलाषी छे तेथी तृ ष्णावाला अर्हंत जगवंत केम होइ शके ?

१७-१८ राग अने द्वेष- रागद्वेषवान् मध्यस्थ होइ शकता नथी. तेमज रागीद्वेषीमां क्रोध, मान, मायानो संभवछे. भगवान् वीतराग, समशत्रुमित्र, सर्वजीवपर समबुद्धि न कोइने दुःखी अथवा सुखी करे जो दुःखी सुखी करे तो वीतराग करुणासमुद्र कदापि न होइ शके, ए कारणथी राग द्वेष वाला अर्हत भगवंत परमेश्वर नहीं. पूर्वोक्त अढार दूषणरहित अर्हत भगवंत परमेश्वर छे, बीजा कोइ परमेश्वर नथी.

अथ अर्हंतनां नाम बे श्लोकथी लखीए छीए. "अर्हन् जिनः पारगतस्त्रिकालवित्, क्षीणाष्टकर्मा परमेष्ट्यऽधीश्वरः ॥ शंभुः स्वयंभूर्भगवान् जगत्प्रभु, स्तीर्थंकरस्तीर्थकरोजिनेश्वरः ॥ १ ॥ स्याद्वाद्यऽभयदसर्वाः, सर्वज्ञः सर्वदर्शिकेवलिनौ ॥ देवाधिदेवबोधिद, पुरुषोत्तमवीतरागाप्ताः॥२॥ अर्थ-चोत्रीश अतिशयें करी सर्वथी अधिक होवाथी सुरेंद्र आदिएं करेली अष्ट महाप्रातिहार्य तथा जन्म स्नात्रादि पूजाने जे पात्र छे ते अर्हन् अथवा ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मरूप शत्रुउंनो नाश करवाथी अर्हन् अथवा बांधेली कर्मरजनो नाश करवाथी अर्हन् अथवा कोइ पदार्थ जेना ज्ञानमां गुप्त नथी ते अर्हन् तथा नामांतरथी अरुहन् जेने भवरूप अंकुर उत्पन्न थवानो नथी ते (२) जीत्यां छे राग द्वेष मोहादि अढार दूषणो जेणें ते जिन (३) संसारना तेमज प्रयोजन मात्रना अंतने जे प्राप्त थया छे एटले के संसारमां जेने कोइ प्रयोजन नथी ते पारगत (४) भूत, भविष्य, वर्तमान ए त्रणे कालने जे जाणे ते त्रिकालवित् (५) क्षय थयां छे आठ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जेनां ते क्षीणाष्टकर्मा (६) परम उत्कृष्ट पदमां जे रहे ते परमेष्टी (७) जगतना ईश्वर ते अधीश्वर (८) शाश्वत सुखमां जे होय ते शंभु (९) पोते पोतानाज आत्माथी तथा भव्यत्व आदि सामग्रीनी परिपक्वताथी तथा बीजाना उपदेश विना होय ते स्वयंभु (आ कथन तेज भवनी अपेक्षानुं छे) (१०) भग शब्दना चौद अर्थ छे तेमांथी अर्क अने योनि ए बे अर्थ बाद करीने बार अर्थवंत जे होइ शके छे. तेनां नाम (१) ज्ञानवंत (२) माहात्म्यवंत (३) शाश्वत वैरियोना वैर उपशमाववाथी यशस्वी (४) राज्य लक्ष्मीनो त्याग करवाथी वैराग्यवंत (५) मुक्तिवंत (६) रूपवंत (७) अनंत बल होवाथी वीर्यवंत (८) तप करवामां उत्साहवान् होवाथी प्रयत्नवंत (९) संसारमांथी जीवो

नो उद्धार करवानी मरजी होवाथी इच्छावंत (१०) चोत्रीश अतिशयरूप लक्ष्मीए बिराजमान होवाथी श्रीमंत (११) धर्मवत (१२) अनेक कोटि देवोथी सेव्यमान होवाथी ऐश्वर्यवंत आ चार अर्थ युक्त ते जगवान्(११) जगत्ना परमेश्वर तेथी जगत्प्रभु (१२) तरीए संसारसमुद्र जेनाथी ते तीर्थ, प्रवचनना आधार, चार प्रकारना सघ अथवा प्रथम गणधर तेम ने स्थापन करवानो स्वभाव होवाथी तीर्थंकर (१३) रागादिने जीतनारा जिन (केवली) तेना जे ईश्वर ते जिनेश्वर (१४) स्यात् अव्यय अनेकात वाचक छे तेथी वस्तुउने अनेकांत पणें, अनेक स्वरूपथी केहेवानु शील छे जेमने ते स्याद्वादि (१५) जय सात प्रकारना छे (१) मनुष्यने स्वजा तिथी अर्थात् एक मनुष्यने बीजा मनुष्यथी जय ते इहलोकजय (२) वि जातीय तिर्यंच देवताथी जे जय उत्पन्न थाय ते परलोकजय (३) धना विना कारणथी चोर प्रमुखथी जे जय थाय ते आदानजय (४) बाह्यार ना निमित्त विना घरादिनेविषे बेसनारने रात्रिआदिने समये जे जय उत्पन्न थाय ते अकस्मात् जय (५) हु निर्धन हुं डुकालमां केवी रीते जीवितव्य धारण करीश एवो जे जय ते आजीविका जय (६) मरणजय (७) आ प्रमाणे करीश तो मारी मोटी अपकीर्ति थशे एम धारी अय शना जयथी प्रवर्त्ते नही ते अश्लाघाजय ए सात प्रकारना जयनो जे प्रतिपक्षी ते अजय ते अजय शु वस्तु छे? विशिष्ट आत्मानुं स्वस्थपणुं, निःश्रेयस धर्मनिबधन जूमिकाजूत ते गुणनी प्रकर्षताथी अचिंत्य शक्ति युक्त होवाथी सर्व प्रकारें परहितकारी होय, एवु जे अजय आपे ते अजयद (१६) सर्व प्राणीउं प्रत्ये जे हित चाहे ते सर्वा (१७) सर्व जे जाणे ते सर्वज्ञ (१८) सर्व जे देखे ते सर्वदर्शी (१९) सर्व प्रकारें कर्म आ वरणने दूर करवाथी चेतनस्वरूप प्रगट थयु छे ते "केवल" केवलज्ञान छे जेने ते केवली (२०) देवताउंना जे अधिपति ते देवाधिदेव (२१) जि नप्रणीत धर्मनी प्राप्ति जे करावे ते बोधिद (२२) पुरुषोमांहे उत्तम सह ज तथा जव्यत्वादि जाव करी श्रेष्ठ ते पुरुषोत्तम (२३) गया छे राग द्वेष जेमांथी ते वीतराग (२४) हितोपदेशक होवाथी आप्त ए रीते चोवी शनाम तथा बीजां हजारो नाम परमेश्वरनां छे

पूर्वोक्त परमेश्वरनुं स्वरूप श्रीहेमचंद्राचार्यकृत ग्रंथोने अनुसार तथा

समवायांग राजप्रश्नीय प्रमुख शास्त्रानुसार लखेल छे. अन्यथा जिनसह स्र नामना ग्रंथमां एक हजार आठनाम अन्वयार्थ सहित वर्णवेल छे. सर्वनाम व्युत्पत्ति सहित अर्हत परमेश्वरनां छे. " अर्हत पद " अनादि अनंत छे परंतु ते पदना धारण करनारा जीव अनंत अतीत कालमां थई गया. कारण के एकेक उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि कालमां जारत वर्षमां चोविश चोवीश जीव अर्हत पदने धारण करी सिद्ध पदने प्राप्त थयेला छे.

आ वर्त्तमान अवसर्प्पिणिथी आगलनी उत्सर्प्पिणिमां जे जीवो अर्हत पदने धारण करनारा थई गया तेमनां नाम. (१) केवल ज्ञानी (२) निर्वाणी (३) सागर (४) महायश (५) विमलनाथ (६(सर्वानुजूति (७) श्रीधर (८) दत्त (ए) दामोदर (१०) सुतेज (११) स्वामी (१२) मुनिसुव्रत (१३) सुमति (१४) शिवगति, (१५) अस्ताग (१६) नेमीश्वर (१७) अनिल (१८) यशोधर (१ए) कृतार्थ (२०) जिनेश्वर (२१) शुद्धमति (२२) शिवकर (२३) स्यंदन (२४) संप्रति.

वर्तमान चोवीश अर्हत्तनां नाम. (१) श्रीरुषजनाथ (२) श्री अजित नाथ (३) श्री संजवनाथ (४) श्री अजिनंदन नाथ (५) श्री सुमतिनाथ (६) श्री पद्मप्रज (७) श्रीसुपार्श्वनाथ (८) श्री चंद्रप्रज (ए) श्रीसुविधि नाथ वीजुं नाम पुष्पदंत (१०) श्रीशीतलनाथ (११) श्रीश्रेयांसनाथ (१२) श्री वासुपूज्य स्वामी (१३) श्री विमल नाथ (१४) श्री अनंतनाथ (१५) श्रीधर्मनाथ (१६) श्रीशांतिनाथ (१७) श्री कुंथुनाथ (१८) श्री अरनाथ (१ए) श्रीमल्लिनाथ (२०) श्री मुनिसुव्रत स्वामी (२१) श्री नमिनाथ(२२) श्रीअरिष्टनेमि (२३) श्री पार्श्वनाथ (२४) श्री महावीर.

वर्त्तमान चोवीश तीर्थंकर जगवंतनां नाम शा शा कारणथी थयां ते तथा नामोना सामान्यार्थ जे सर्व तीर्थंकरोमां पामी शकाय तथा विशेषार्थ जे ते एकज तीर्थंकरना नामने निमित्तें छे ते लखीयें छीयें.

"रुषति गछति परमपदमिति रुषजः" जाय जे परमपदने ते रुषज आ अर्थ सर्व तीर्थंकरमां व्यापक छे तथा " उर्वोर्वृषजलांछनमजूद्जगवतो जनन्या चतुर्दशानां स्वप्नानामादौ वृषजोदृष्टः तेन रुषजः " जगवानना वंने साथलोमां बलदनुं लांछन हतुं अथवा जगवंतनी माता मरुदेवीए चौद स्वप्ननी आदिमां बलदनुं स्वप्न दीठुं ते कारणथी रुषज एवुं नाम दीधुं.

एवी रीते सर्व तीर्थंकरनो प्रथम सामान्यार्थ अने पछी विशेषार्थ जाणवो
२ "परिसहादिभिर्नजित इत्यजित" बावीश परिसह आदि शब्दथी चार कषाय, आठकर्म, चारप्रकारना उपसर्ग इत्यादिथी न जीताय, ते अजित, तथा "यद्वा गर्भस्थेऽस्मिन् द्यूते राज्ञा जननी न जितेत्यजित" ज्यारे भगवान् गर्भमां हता त्यारे जुगार खेलतां राजा राणीने न जीती शक्या ते हेतुथी अजित नाम दीधु
३ "शं सुखं भवत्यस्मिन् स्तुते सशंभव" शं नाम सुखवाचक छे सुख थाय जेनी स्तुति करतां ते संभव "यद्वा गर्भगतेऽप्यस्मिन्नभ्यधिकसस्य संभवात् संभवोपि" अथवा ज्यारे भगवान् गर्भमा हता त्यारे पृथ्वीमां अधिक धान्यनो संभव होवाथी संभव
४ "अभिनंद्यते देवेंद्रादिभिरित्यभिनंदन" जेनी स्तुति करायेली छे देवेंद्रादिथी ते अभिनंदन "यद्वा गर्भात् प्रभृत्येवाभीक्ष्णं शक्रेणाभिनंदनादभिनंदन" अथवा जे दिवसे भगवान् गर्भमां आव्या ते दिवसथी लइने वारंवार शक्रेंद्रे स्तुति करी तेथी अभिनंदन
५ "शोभना मतिरस्येति सुमति" भली छे बुद्धि ते जेनी ते सुमति,"यद्वा गर्भस्थे जनन्या सुनिश्चिता मतिरभूदिति सुमति" अथवा भगवान् गर्भमां आव्या त्यारथी मातानी बहुज निर्मल निश्चित बुद्धि थइ ते कारणथी सुमति
६ "निष्पकतामंगीकृत्य पद्मस्येव प्रभाऽस्य पद्मप्रभ" विषयतृष्णा कर्मकलंकरूप कीचडथी रहित पद्मनी पेठे प्रभा छे जेनी ते पद्मप्रभ "यद्वा पद्मशयनदोहदो मातुर्देवतया पूरितइति पद्मवर्णश्च भगवानिति पद्मप्रभ" अथवा पद्मशयन दोहलो माताने उत्पन्न थयो ते देवतायें पूर्ण कर्यो ते कारणथी प्रद्मप्रभ अथवा पद्मकमल समान भगवानना शरीरनो वर्ण हतो ते कारणथी पद्मप्रभ
७ "शोभनो पार्श्वावस्य सुपार्श्व" शोभनिक छे थंने पासा जेनां ते सुपार्श्व "यद्वा गर्भस्थे भगवति जनन्यपि सुपार्श्वाऽभूदिति सुपार्श्व" अथवा भगवान् गर्भमां रह्या त्यारथी माताना धंने पासां बहुज सुंदर थइगयातेथी सुपार्श्व
८ "चंद्रस्येव प्रभा ज्योत्स्ना सौम्यलेश्याविशेषाऽस्य चंद्रप्रभ" चंद्रमानी पेठे सौम्य लेश्या छे जेनी ते चंद्रप्रभ, तथा "गर्भस्थे देव्या चंद्रपानदोहदोऽभूत् इति चंद्रप्रभ" गर्भमां ज्यारे भगवान् हता त्यारे

मातानेे चंद्रमा पीवानो दोहद उत्पन्न थयो ते कारणथी चंद्रप्रभ.

९ "शोभनो विधिर्विधानमस्य सुविधिः" रूडो छे विधि ते जेनो तेसुविधि. तथा "यद्वा गर्भस्थे भगवति जनन्यप्येवमिति सुविधिः" भगवान् गर्भमां रेहेवाथी माता पण शोभनिक विधिवाली थइ ते कारणथी सुविधि.

१० "सकलसत्त्वसंतापहरणात् शीतलः" सर्वजीवोनो संताप दूर करवाथी शीतल तथा "गर्भस्थे भगवति पितुः पूर्वोत्पन्नाऽचिकित्स्यपित्तदाहोजननीकरस्पर्शाडुपशांत इति शीतलः" भगवंतना पिताना शरीरमां पित्तदाहनो रोग हतो तेनी वैद्योथी शांति न थई परंतु भगवान् माताना गर्भमां आववाथी भगवंतनी माताना हाथस्पर्शथीज राजानुं शरीर शीतल थई गयुं ते कारणथी शीतल.

११ "श्रेयान् समस्तभुवनस्यैव हितकरः प्राकृतशैल्या छांदसत्वाच्च श्रेयांसइत्युच्यते" सर्वजगतनुं जे हित करे ते श्रेयांस "यद्वा गर्भस्थेऽस्मिन् केनापि नाक्रांतपूर्वी देवताधिष्टितशय्या जनन्या आक्रांतेति श्रेयोजातमिति श्रेयांसः" ज्यारे भगवान् गर्भमां हता त्यारे भगवानना पिताना घरमां देवताऽधिष्टित शय्या हती ते उपर जे बेसता तेने असमाधि उत्पन्न थती भगवाननी मातानेे ते शय्यापर सुवानो दोहद थयो, माता ते शय्यापर सुती, देवतायें उपद्रव न कर्यो पण शांत थयो ते कारणथी श्रेयांस.

१२ "तत्र वसूनां पूज्यः वसुपूज्यः वसवोदेवाः" देवताउथी जे पूजनीय ते वसुपूज्य "वसुपूज्यनृपतेरपत्यं वासुपूज्यः" वसुपूज्य नामना राजाना जे पुत्र ते वासुपूज्य "वासवो देवराया तस्स गप्भगयस्स अभिरकणं अभिरकणं जणणीए पूयं करेति तेण वासुपुज्जोत्ति अहवा वसूणि रयणाणि वासवो वेसमणो सो गप्भगए अभिरकणं अभिरकणं तं रायकुलं रयणेहिं पूरेयति वासुपुज्जोत्ति. अर्थः—वासव नाम इंद्रनुं छे. भगवान् ज्यारे गर्भमां आव्या त्यारे वारंवार इंद्रे भगवाननी मातानी पूजा करी ते कारणथी वासुपूज्य अथवा वसु एटले रत्न अने वासव नाम वैश्रमणनुं छे. भगवान् ज्यारे गर्भमां हता त्यारे वैश्रमणें भगवानना कुलमां वारंवार रत्नोनी पूर्णता करी ते हेतुथी वासुपूज्य.

१३ "विगतो मलोऽस्य विमलः विमलज्ञानादियोगाद्वा विमलः" दूर थया छे आठ कर्मरुप मल जेना ते विमल, अथवा निर्मलज्ञानादि यो

गें करी विमल, " यद्वा गर्भस्थे मातुर्मतिस्तनुश्च विमला जातेति विम ल " तथा भगवान् ज्यारे गर्भमां हता त्यारे मातानी बुद्धि तथा शरीर निर्मल थई गया ते कारणथी विमल

१४ " न विद्यते गुणानामतोऽस्य अनंत अनतकर्मांशजयाद्वाऽनत अ नंतानि वा ज्ञानादीनि यस्येत्यनंत " जेना गुणनो अत न जाणी शकियें ते अनंत, अथवा अनंत कर्मांश जीतवाथी अनंत अथवा अनंत छे ज्ञाना दि गुण जेने ते अनंत, " रयण विचित्तं रयण खचिय अणंत अतिमह पमाणं, दामं सुमिणे जणणीयें, दिठ तठे अणतोत्ति " विचित्ररत्नें जडि त अति मोटी दाममाला मातायें स्वप्नमां दीठी ते कारणथी अनंत

१५ " दुर्गतौ पतन्त सत्त्वं संघात धारयतीति धर्म्म " दुर्गतिमां पड ता जीवोना समूहने जे धारण करे ते धर्म, तथा " गर्भस्थे जननी दा नादिधर्म्मपरा जातेति धर्म " परमेश्वर गर्भमां आववाथी माता दाना दि धर्ममां तत्पर थई तेथी धर्म

१६ " शांतियोगात्तदात्मकत्वात्तत्कर्तृकत्वाद्वाय शांति " शांतिना यो गथी अथवा शांतिरूप होवाथी अथवा शांति करवाथी शांति, तथा "गर्भ स्थे पूर्वोत्पन्ना शिवं शातिरभूदिति शांति " तथा भगवान् गर्भमां उत्प न्न थवाथी पूर्वे जे अशिव उत्पन्न थयुं हतु ते शांत थइ गयु तेथी शांति

१७ " कु पृथ्वी तस्या स्थितिवानिति कुंथु पृषोदरादित्वात् " कु नाम पृथ्वीनु छे ते पृथ्वीमां जे स्थित थया ते कुंथु तथा " गर्भस्थे भग वति जननी रत्नानां कुंथु राशिं दृष्टवतीति कुंथु " भगवान् गर्भमा आ व्या पछी मातायें रत्नमय कुंथुउनो राशि दीठो ते कारणथी कुंथु

१८ " सर्वोत्तममहासत्त्व , कुले यउपजायते ॥ तस्याभिवृद्धये वृद्धैरसा वरउदाहृत " ॥ १ ॥ इतिवचनादर सर्वथी उत्तम महासात्त्विक कुलमां जे उत्पन्न थाय तथा ते कुलनी वृद्धिकारक जे होय तेने वृद्धपुरुष प्रधान अर कहेछे तथा " गर्भस्थे भगवति जनन्या स्वप्ने सर्वरत्नमयोऽरोदृष्ट इत्यपर " तथा भगवान् गर्भमां हता त्यारे मातायें सर्वरत्नमय अर स्व प्नमां दीठो ते कारणथी अर

१९ " परिसहादिमल्लजयनान्निरुक्तान् मल्लि " परिसहादि मल्लोने जीतवाथी मल्लि तथा " गर्भस्थे भगवति मातु सुरभिकुसुममाल्यशय

नीयदोहदो देवतया पूरित इति मल्लिः" तथा जगवान् गर्जमां आव्या पछी माताने सुगंधी फुलोनी मालावाली शय्या उपर सुवानो दोहद उत्पन्न थयो ते देवतायें पूर्ण कर्यो ते कारणथी मल्लि.

२० "मन्यते जगतस्त्रिकालावस्थामिति मुनिः शोजनानि व्रतान्यस्येति सुव्रतः मुनिश्चासौ सुव्रतश्च मुनिसुव्रतः" त्रणे कालमां जे जगतने माने ते मुनि, जलां छे व्रत जेनां ते सुव्रत आ बंने पद एकत्र करवाथी मुनिसुव्रत, तथा "गर्जस्थे जननी मुनिवत् सुव्रता जातेति मुनिसुव्रतः" तथा जगवंत गर्जमां रह्यां थकां माता रूडा व्रतवाली थइ तेथी मुनिसुव्रत.

२१ "परीसहोपसर्गादीनां नामनात् नमेस्तुवेति विकल्पेनोपांत्यस्येकाराजावपक्षे नमिः" परिसह उपसर्गोने नमाववाथी नमि, तथा "यद्वा गर्जस्थे जगवति परचक्रनृपैरपि प्रणतिः कृतेति नमिः" जगवान् गर्जमां आववाथी वैरीराजाउयें पण नमस्कार कर्यो ते कारणथी नमि.

२२ "धर्मचक्रस्य नेमिवन्नेमिः" धर्मचक्रनी धारासमान ते नेमि तथा "गप्नगए तस्स मायाए, रिठरयणा मउमहति महालउ नेमि ॥ उप्पयमाणो सुमिणे, दिठोत्ति तेणसेरिठनेमित्ति नामं कयंति" तथा जगवान् गर्जमां आव्यापछी मातायें अरिष्ट रत्नमय मोटो नेमि (चक्रधारा) आकाशमां उत्पन्न थयो एम स्वप्नमां दीठो ते कारणथी अरिष्टनेमि.

२३ "स्पृशति ज्ञानेन सर्वजावानिति पार्श्वः" सर्वपदार्थोने ज्ञानें करी स्पर्शे जाणे ते पार्श्व. तथा "गर्जस्थे जनन्या निशि शयनीयस्थयांऽधकारे सर्प्पो दृष्टइति गर्जानुजावोयमिति पश्यतीति निरुक्तात् पार्श्वः पार्श्वोऽस्यवैयावृत्त्यकरो यक्षस्तस्य नाथः पार्श्वनाथः जीमो जीमसेन इति न्यायाद्वा पार्श्वः" तथा जगवान् गर्जमां रह्या थका मातायें रात्रिमां शय्या उपर बेठां थकां अंधारामां सर्प जातो दीठो, माता पितायें विचार्युं के आ गर्जनो प्रजाव छे अथवा पार्श्वनामा वैयावच्च करनारा देवताना जे नाथ ते पार्श्वनाथ.

२४ "विशेषेण ईरयति प्रेरयति कर्माणीति वीरः" विशेषेंकरी प्रेरे जे कर्मोने ते वीर तथा अत्यंत उग्र परीसह उपसर्ग सहन करवाथी देवताउयें श्रमण जगवान् महावीर एवुं तथा माता पितायें धनधान्यादिनी वृद्धि थवाथी वर्धमान एवुं नाम दीधुं.

ए प्रकारें आ अवसर्पिणिमा जे तीर्थंकर थया तेमनां नाम तथा शा हेतुथी ते नाम राख्या ते समाप्त थयु

आ चोवीश तीर्थंकर मध्येथी बावीश अर्हंत इक्ष्वाकुकुलमां उत्पन्न थया एटले के ऋषभदेवजीना वंशमां थया, इक्ष्वाकुकुल ऋषभदेवजीथी प्रसिद्ध छे, तेनुं स्वरूप आगल केहेवामा आवशे, बाकीना वीशमा मुनि सुव्रतस्वामी तथा बावीशमा अरिष्टनेमि भगवान् ए बने तीर्थंकर हरिव शमा उत्पन्न थया चोवीश तीर्थंकरोमा छठा पद्मप्रभ अने बारमा वासु पूज्य लाल वर्ण शरीरवाला थया, आठमा चंद्रप्रभ तथा नवमा सुविधि नाथ (पुष्पदंत) ए बे तीर्थंकर श्वेतवर्ण स्फटिकवत् उज्वल शरीरवाला थया, ओगणीशमा मल्लिनाथ तथा त्रेविशमा पार्श्वनाथ हरितवर्ण शरीरवाला थया, तथा वीशमा मुनिसुव्रत स्वामी तथा बावीशमा अरिष्टनेमि भगवान् श्यामवर्ण रगें अलसीना फुलजेवा शरीरवाला थया बाकीना सोल सुवर्णवर्ण शरीरवाला थया

चोवीश तीर्थंकरोना चिह्न तेमना दक्षिण पगमां हता तथा तेमनी ध्व जामा ते चिह्न होय छे, हालपण तेमनी प्रतिमाना आसनमां ते चिह्न होय छे ते चिह्नो आ प्रमाणे– (१) ऋषभदेवजीनु बलदनु चिह्न (२) अजित नाथजीनु हाथीनु चिह्न (३) संभवनाथजीनुं घोडानु चिह्न (४) अभिनंद नजीनु वांदरानु चिह्न (५) सुमतिनाथजीनु कौंच पक्षीनुं चिह्न (६) पद्मप्र भुजीनुं कमलनु चिह्न (७) सुपार्श्वनाथजीनु साथीयानु चिह्न (८) चंद्रप्रभु जीनु चंद्रमानुं चिह्न (९) सुविधिनाथ (पुष्पदंत) जीनु मकरनु चिह्न (१०) शीतलनाथजीनुं श्रीवत्सनु चिह्न (११) श्रेयांसनाथजीनु गेंडानु चिह्न (१२) वासुपूज्यजीनु महिषनु चिह्न (१३) विमलनाथजीनु सूअरनु चिह्न (१४) अनंतनाथजीनु बाजनु चिह्न (१५) धर्मनाथजीनु वज्रनुं चिह्न (१६) शांतिनाथजीनु हरणनु चिह्न (१७) कुंथुनाथजीनु बोकडानु चिह्न (१८) अरनाथजीनु नंदावर्त्तनु चिह्न (१९) मल्लिनाथजीनु कुंभनु चिह्न (२०) मुनिसुव्रतस्वामिनु काचबानु चिह्न (२१) नमीनाथजीनु नीला कमलनु चिह्न (२२) अरिष्टनेमिजीनु शंखनु चिह्न (२३) श्रीपार्श्वनाथजीनु सर्पनुं चिह्न (२४) श्रीमहावीरस्वामिनुं सिंहनु चिह्न

हवे चोवीश तीर्थंकरोना पिताना तथा माताना नाम लखीयें छीयें

(१) नाभिनह्यन्यायिनोहकारादिभिर्नीतिभिरिति नाभिरंत्यकुलकरः, (हकारादि नीतियें अन्यायिउनो दंड करनार छेलो कुलकर ते नाभि) (२) जिताः शत्रवोऽनेन जितशत्रुः (जीत्या छे शत्रुउ जेणें ते जितशत्रु) (३) जिताअरयोऽनेन जितारिः (जित्या छे वैरियो जेणें ते जितारि) (४) संवृणोतींद्रियाणि संवरः (वश करी छे इंद्रियो जेणें ते संवर) (५) सकलसत्वसंतापहरणात् मेघइव मेघः (मेघनी पेठे सकल जीवोनो संताप हरवाथी मेघ) (६) धरति धात्रीमिति धरः (धारण करे जे पृथ्वीने ते धर) (७) प्रतितिष्ठति धर्मकार्ये प्रतिष्ठः (धर्मना कार्यमां जे रहे ते प्रतिष्ठ) (८) महती पूज्या सेनाऽस्य महासेनः (मोटी पूजवा योग्य सेना छे जेनी ते महासेन (९) शोभना ग्रीवाऽस्य सुग्रीवः (भली छे ग्रीवा जेनी ते सुग्रीव) (१०) दृढोरथोऽस्य दृढरथः (बलवान् छे रथ जेनो ते दृढरथ) (११) वेवेष्टि बलैः पृथिवीं विष्णुः (वींटी छे सेनाथी पृथ्वीने जेणे ते विष्णु) (१२) अन्यै राजभिर्वसुभिर्धनैः पूज्यते इति वसुपूज्यः सचासौ राट्च वसुपूज्यराट् (बीजा राजाउयें धनेंकरी पूजा करी छे जेनी ते वसुपूज्य राजा) (१३) कृतं वर्मानेन कृतवर्मा (कर्यो छे सन्नाह जेणें ते कृतवर्मा) (१४) सिंहवत् पराक्रमवती सेनाऽस्य सिंहसेनः (सिंह समान पराक्रमवाली सेना जेनी छे ते सिंहसेन) (१५) भाति त्रिवर्गेण भानुः (धर्म अर्थ अने कामथी जे शोभे छे ते भानु) (१६) विश्वव्यापिनी सेनाऽस्य विश्वसेनः (जेनी सेना जगतमां व्यापेली छे ते विश्वसेन) सचासौराट् च विश्वसेनराट् (१७) तेजसा सूरइव सूरः (तेजें करी सूर्यसरखा ते सूर) (१८) शोभनं दर्शनमस्य सुदर्शनः (भलुं दर्शन छे जेनुं ते सुदर्शन)(१९) गुणपयसामाधारभूतत्वात् कुंभइव कुंभः (गुणरूप पाणीने आधाररूप होवाथी कुंभनी पेठे कुंभ) (२०) शोभनानि मित्राणि अस्य सुमित्रः (भला छे मित्रो जेना ते सुमित्र)विजयते शत्रूनिति विजयः(जीत्या छे शत्रुउने जेणें ते विजय) (२२) गांभीर्येण समुद्रस्यापि विजेता समुद्रविजयः (गंभीरताथी समुद्रने जीतनार ते समुद्रविजय (२३) अश्वप्रधाना सेनाऽस्य अश्वसेनः (घोडाउए करीप्रधान छे सेना जेनी ते अश्वसेन) (२४)सिद्धार्थाःपुरुषार्थाअस्य सिद्धार्थः (सिद्ध थया छे पुरुषार्थो ते जेना ते सिद्धार्थ. चोवीश तीर्थंकरोना पितानां अनुक्रमें नाम कह्यां.

हवे चोवीश तीर्थंकरोनी माताना नाम लखीयें ठीयें

(१) मरुद्भिर्दीव्यते स्तूयते मरुदेवा पृषोदरादित्वात् तलोप मुरदेव्यपि स्यात् (देवताओयें करी ठे स्तवना जेनी ते मरुदेवी मुरदेवी एम पण नाम ठे) (२) विजयते विजया (जयवतविजया) (३) सह अनेन जितारिस्वामिना वर्त्तते सेना (जितारि राजानी साथ जे वर्ते ते सेना) (४) सिद्धोर्थोऽस्या सिद्धार्था (सिद्ध थया ठे अर्थ जेना ते सिद्धार्था) (५) मंगलहेतुत्वात् मगला (मगलहेतुभूत होवाथी मंगला) (६) शोभना सीमा मर्यादाऽस्या सुसीमा (जली ठे मर्यादा जेनी ते सुसीमा) (७) स्थैर्येण पृथ्वीव पृथ्वी (स्थिर ठे पृथ्वीना जेवी ते पृथ्वी) (८) लक्ष्मी शोजाऽस्त्यस्या लक्ष्मणा (लक्ष्मीनी पेठे शोजा ठे जेनी ते लक्ष्मणा) (९) धर्मकृत्येषु रमते रामा (धर्मकृत्यमां जे रमे ते रामा) (१०) नदति सुपात्रेण नदा (सुपात्रदान देवाथी वृद्धिमती थाय ते नंदा) (११) वेवेष्टि गुणैर्जगदिति विष्णु (गुणेंकरी जगतने वींटाले ते विष्णु) (१२) जयति सतीत्वेन जया (उत्कृष्टपणे वर्ते ठे सतीपणु जेनु ते जया) (१३) श्यामवर्णत्वात् श्यामा (श्यामवर्ण होवाथी श्यामा) (१४) शोजनं यशोऽस्या सुयशा (जलु ठे यश जेनु ते सुयशा) (१५) शोजन व्रतमस्या सुव्रता पतिव्रतात्वात् (जला ठे व्रत जेना ते सुव्रता पतिव्रता होवाथी सुव्रता) (१६) न विरयति धर्मकार्येष्वऽचिरा (धर्मकार्योमां जे ढील करती नथी ते अचिरा) (१७) श्रीरिव श्रीदेवीव देवी प्रजाऽस्त्यस्या श्री (लक्ष्मीनी पेठे प्रजा ठे जेनी ते श्री) (१८) देवीनी पेठे प्रजा ठे जेनी ते देवी (१९) प्रजावती प्रजावती (२०) पद्मइव पद्मावती (पद्मनी जेवी ते पद्मावती) (२१) धर्मबीजमिति वप्रा (२२) शिवहेतुत्वात् शिवा (२३) मनोज्ञत्वात् वामा पापकार्येषु प्रातिकूल्यात् वामा (मनोज्ञ होवाथी वामा) (पापकार्याथी प्रतिकूल होवाथी वामा) (२४) त्रीणि ज्ञानदर्शनचारित्राणि शलयति प्राप्नोतीति त्रिशला (ज्ञानदर्शन चारित्र ए त्रणेने जे प्राप्त करे ठे ते त्रिशला)

ए प्रमाणे तीर्थंकरोनी माताना नाम कह्या अथवा सुगमताने माटे चोवीश तीर्थंकरोनी साथे बावन बोलनो संबध ठे तेनु स्वरूप यत्रबंध लखीयें ठीयें बावन बोलना नाम आ प्रमाणे –

बावन बोलनां नाम कहेछे.

१ श्रीतीर्थंकर नाम.
२ च्यवन तिथि.
३ कया विमानथी आव्या.
४ कइ नगरीमां जन्म थयो.
५ जन्मतिथि.
६ पिताउनां नाम.
७ माताउनां नाम.
८ कया नक्षत्रमां जन्म्या.
९ जन्मराशि.
१० लांछननां नाम.
११ शरीरनी उंचाइनुं प्रमाण.
१२ आयुषना वर्षनुं प्रमाण.
१३ शरीरनो वर्ण.
१४ पदवी.
१५ परणेला के कुंवारा ?
१६ केटला जणोनी साथे दीक्षा लीधी.
१७ दीक्षा कइ नगरीमां लीधी.
१८ दीक्षाने दिवसे केटलुं तप.
१९ प्रथम पारणे शुं आहार मळ्यो.
२० प्रथम पारणानुं घर.
२१ केटला दिवसनुं पारणुं.
२२ दीक्षानी तिथि.
२३ छद्मस्थपणाना कालनुं प्रमाण.
२४ कइनगरीमां केवलज्ञान प्राप्तथयुं
२५ ज्ञानोत्पत्तिने दिनें कयुं तपकर्युं
२६ कया वृक्षनी नीचे दीक्षा लीधी.
२७ कइ तिथियें ज्ञान उत्पन्न थयुं.
२८ गणधरोनी संख्या.
२९ साधुउनी संख्या.
३० साध्वीयोनी संख्या.
३१ वैक्रियलब्धिवंतोनी संख्या.
३२ अवधिज्ञानियोनी संख्या.
३३ केवलज्ञानियोनी संख्या.
३४ मनःपर्यवज्ञानियोनी संख्या.
३५ चौदपूर्वधारियोनी संख्या.
३६ वादियोनी संख्या.
३७ श्रावकोनी संख्या.
३८ श्राविकाउनी संख्या.
३९ शासनना यक्षोनां नाम.
४० शासननी यक्षिणीयोनां नाम.
४१ प्रथम गणधरनुं नाम.
४२ प्रथम आर्यानुं नाम.
४३ मोक्ष थवानुं स्थान.
४४ मोक्ष पहोंचवानी तिथि.
४५ मोक्ष दिनें तप.
४६ मोक्ष जवानुं आसन.
४७ परस्पर अंतरनुं मान.
४८ गण नाम.
४९ योनि नाम.
५० मोक्ष परिवार.
५१ सम्यक्त्व पाम्यापछीमहोटो नव.
५२ कया कुलमां उत्पन्न थया.
५३ गर्भवासना कालनुं प्रमाण.

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम	१ श्रीऋषभ देव.	२ श्रीअजितनाथ	३ श्रीसंभवनाथ
२	च्यवन तिथि	अषाडवदी ४	वैशाख शुदि १३	फाल्गुन शुदि ८
३	विमान नाम	सर्वार्थ सिद्धि	विजय विमान	उपरला ग्रैवेयक
४	जन्म नगरी	विनीता भूमि	अयोध्या	सावत्थी
५	जन्म तिथि	चैत्रवदी ८	माघशुदी ८	मगशुदी १४
६	पितानां नाम	नाभिकुलकर	जितशत्रु	जितारि
७	मातानां नाम	मरुदेवी	विजया	सेना
८	जन्म नक्षत्र	उत्तराषाढा	रोहिणी	मृगशिर
९	जन्म राशि	धन	वृष	मिथुन
१०	लांछन नाम	वृषभ	हस्ती	अश्व
११	शरीरनुं मान	५००) धनुष	४५०) धनुष	४००) धनुष
१२	आयुमान	८४) लक्षपूर्व	७२) लक्षपूर्व	६०) लक्षपूर्व
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्णवर्ण
१४	पदवी राजनी	राज पदवी	राज पदवी	राज पदवी
१५	पाणिग्रहण	विवाह थयो	विवाह थयो	विवाह थयो
१६	केटला साथे दीक्षा	४०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षा नगरी	विनीता	अयोध्या	सावत्थी
१८	दीक्षा तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	इक्षु रस	परमान्नक्षीर	परमान्नक्षीर
२०	पारणाना स्थान	श्रेयांसने घेर	ब्रह्मदत्तने घेर	सुरेंद्रदत्तने घेर
२१	केटलादिवसनांपा०	एक वर्षे पछी	बे दिवसपछी	बे दिवसपछी
२२	दीक्षा तिथि	चैत्रवदि ८	महावदी ९	मार्गशिरशु० १५
२३	छद्मस्थ काल	१०००) वर्ष	१२) वर्ष	१४) वर्ष
२४	ज्ञान नगरी	पुरिमताल	अयोध्या	सावत्थी
२५	ज्ञान तप	अठ्ठम उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षा वृक्ष	वट वृक्ष	शाल वृक्ष	प्रियाल वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	फाल्गुन वदि ११	पोषवदि ११	कार्त्तिकवदि ११

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८	गणधरसंख्या.	८४)	९५)	१०२)
२९	साधुओनी संख्या.	८४०००)	१०००००)	२०००००)
३०	साधवीयोनीसंख्या.	३०००००)	३३००००)	३३६०००)
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	२०६००)	२०४००)	१९८००)
३२	वादियोनी संख्या.	१२६५०)	१२४००)	१२०००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	९०००)	९४००)	९६००)
३४	केवली संख्या.	२००००)	२२०००)	१५०००)
३५	मनःपर्यवसंख्या.	१२७५०)	१२५५०)	१२१५०)
३६	चौदपूर्वी संख्या.	४७५०)	३७२०)	२१५०)
३७	श्रावक संख्या.	३५००००)	२९८०००)	२९३०००)
३८	श्राविका संख्या.	५५४०००)	५४५०००)	६३६०००)
३९	शासनयक्षोनां नाम.	गोमुखयक्ष	महायक्ष	त्रिमुखयक्ष
४०	शासननी यक्षिणी.	चक्रेश्वरी	अजितबाला.	दुरितारि
४१	प्रथम गणधर नाम.	पुंडरीक.	सिंहसेन.	चारु.
४२	प्रथम आर्या नाम.	ब्राह्मी	फाल्गु	श्यामा
४३	मोक्षस्थान.	अष्टपद	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	माघ वदि १३	चैत्र शुदि ५	चैत्रशुदि ५
४५	मोक्षसंलेषणा.	छ उपवास	एक मास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	पद्मासन	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग
४७	अंतर मान.	५०लाखकोटीसा	३०लाखकोटीसा	१०लाखकोटीसा
४८	गण नाम.	मानवगण	मानवगण	देवगण
४९	योनि नाम.	नकुलयोनि	सर्प्पयोनि	सर्प्पयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	१००००)	१०००)	१०००)
५१	भवसंख्या.	तेर भव कर्या.	त्रणभवकर्या	त्रण भव कर्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकाल मान.	नवमासचारदि०	८ मासपच्चीशदि.	नवमास८ दिवस

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्री तीर्थंकरनाम	४ श्रीअभिनंदन	५ श्रीसुमतिनाथ	६ श्री पद्मप्रभ
२	च्यवनतिथि	वैशाख शुदि ४	श्रावणशुदि २	माघवदि ६
३	विमान नाम	जयत विमान	जयत विमान	उपरिमग्रैवेयक
४	जन्मनगरी	अयोध्या	अयोध्या	कोसुंबी
५	जन्मतिथि	माघशुदि २	वैशाख शुदि ८	कार्तिकवदि १२
६	पितानां नाम	संवर राजा	मेघराजा	श्रीधरराजा
७	मातानां नाम	सिद्धार्था	मगला	सुसीमा
८	जन्मनक्षत्र	पुनर्वसु	मघा	चित्रा
९	जन्म राशि	मिथुन	सिंह	कन्या
१०	लांछननां नाम	वांदरानु	क्रौंच पक्षीनुं	पद्मकमलनुं
११	शरीर मान	३५०) धनुप	३००) धनुप	२५०) धनुप
१२	आयुनु प्रमाण	५०) लाखपूर्व	४०) लाख पूर्व	३०) लाखपूर्व
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	रक्तवर्ण
१४	पदवी राजानी	राजा	राजा	राजा
१५	पाणि ग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटला साथे दीक्षा	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	अयोध्या	अयोध्या	कोसुंबी
१८	दीक्षातप	बे उपवास	नित्यभक्त	एक उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर	क्षीर	क्षीर
२०	पारणानां स्थान	इंद्रदत्तने घेर	पद्मने घेर	सोमदेवने घेर
२१	केटला दिवसनांपा०	बे दिवस (२)	बे दिवस (२)	बे दिवस (२)
२२	दीक्षा तिथि	माघशुदि १२	वैशाखशुदि ९	कार्तिकवदि १३
२३	छद्मस्थ काल	अढार वर्ष	वीश वर्ष	छमास
२४	ज्ञाननगरी	अयोध्या	अयोध्या	कोसुंबी
२५	ज्ञान तप	बे उपवास	बे उपवास	चोथभक्त
२६	दीक्षावृक्ष	प्रियंगुवृक्ष	साल वृक्ष	छत्रवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पोषवदि १४	चैत्रशुदि ११	चैत्रशुदि १५

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८ गणधरसंख्या.	११६)	१००)	१०७)
२९ साधुर्जनीसंख्या.	३०००००)	३२००००)	३३००००)
३० साधवीयोनी संख्या.	६३००००)	५३००००)	४२००००)
३१ वैक्रिय लब्धिवंत.	१९०००)	१८४००)	१६१०८)
३२ वादियोनी संख्या.	११०००)	१०४००)	९६००)
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	९८००)	११०००)	१००००)
३४ केवली संख्या.	१४०००)	१३०००)	१२०००)
३५ मनःपर्यव संख्या.	११६५०)	१०४५०)	१०३००)
३६ चौद पूर्वीसंख्या.	१५००)	२४००)	२३००)
३७ श्रावकसंख्या.	२८८०००)	२८१०००)	२७६०००)
३८ श्राविकासंख्या.	५२७०००)	५१६०००)	५०५०००)
३९ शासन यक्षोनांनाम.	नायकयक्ष	तुंबरुयक्ष	कुसमययक्ष
४० शासन यक्षिणीनांना०	कालिका	महाकाली	श्यामा
४१ प्रथम गणधरनाम.	वज्रनाभ	चरम	प्रद्योतन
४२ प्रथम आर्यानाम.	अजिता	काश्यपी	रति
४३ मोक्ष स्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	वैशाखशुद ८	चैत्रशुदि ९	मागशिरवदि११
४५ मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग
४७ अंतरमान.	९लाखकोडीसा.	९०हजारकोडीसा	९हजारकोडीसा
४८ गणनाम.	देवगण	राक्षसगण	राक्षसगण
४९ योनिनाम.	छागयोनि	मूषकयोनि	महिषयोनि
५० मोक्षपरिवार.	१०००)	१०००)	३०८)
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकह्या	त्रणभवकह्या	त्रणभवकह्या
५२ कुलगोत्रनाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकालमान.	८मास२८दिवस	नवमासछदिवस	नवमासछदि०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमा कहेछे

१ श्रीतीर्थंकर नाम	७ श्रीसुपार्श्वनाथ	८ श्रीचन्द्रप्रभ	९ श्रीसुविधिनाथ
२ च्यवन तिथि	भाद्रवावदि ८	चैत्रवदि ५	फागण वदि ९
३ विमान नाम	मध्यिमग्रैवेयक	विजयत	आनतदेवलोक
४ जन्मनगरी	वणारसी नगरी	चन्द्रपुरीनगरी	काकदीनगरी
५ जन्मतिथि	ज्येष्ठशुदि १२	पोषवदि १२	मागशर वदि ५
६ पिताना नाम	प्रतिष्ठराजा	महासेन राजा	सुग्रीव राजा
७ माताना नाम	पृथिवीमाता	लक्ष्मणामाता	रामाराणीमाता
८ जन्म नक्षत्र	विशाखा नक्षत्र	अनुराधानक्षत्र	मूल नक्षत्र
९ जन्म राशि	तुलराशि	वृश्चिकराशि	धन राशि
१० लांछन नाम	साथीयानुलांछन	चंद्रनु लांछन	मगरमछनु लां०
११ शरीरनु प्रमाण	२००) धनुष	१५०) धनुष	१००) धनुष
१२ आयुनुप्रमाण	२०) लाखपूर्व	१०) लाखपूर्व	२) लाखपूर्व
१३ शरीरना वर्ण	सुवर्णवर्ण	श्वेतवर्ण	श्वेतवर्ण
१४ पदवी राजानी	राजा	राजा	राजा
१५ पाणिग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६ केटलासाथे दीक्षा	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७ दीक्षानगरी	वणारसी नगरी	चन्द्रपुरी नगरी	काकदी नगरी
१८ दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९ प्रथमपारणानोआ०	क्षीरनु भोजन	क्षीरनुं भोजन	क्षीरनु भोजन
२० पारणाना स्थान	महेंद्रने घेर	सोमदत्तने घेर	पुष्पने घेर
२१ केटलादिवसनापा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२ दीक्षातिथि	ज्येष्ठशुदि १३	पोषवदि १३	मागशिर वदि ६
२३ छद्मस्थकाल	नवमास रह्या	त्रण मास रह्या	चारमास रह्या
२४ ज्ञान नगरी	वणारसीनगरी	चन्द्रपुरी नगरी	काकदी नगरी
२५ ज्ञानतप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६ दीक्षावृक्ष	शिरीषवृक्ष	नागवृक्ष	शाली वृक्ष
२७ ज्ञानतिथि	फागण वदि ६	फागणवदि ७	कार्तिक शुदि ३

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८ गणधर संख्या.	(९५) गणधर	(९३) गणधर	(८८) गणधर.
२९ साधुओनीसंख्या.	३०००००)	२५००००)	२०००००)
३० साधवियोनी संख्या.	४३००००)	३८००००)	१२००००)
३१ वैक्रियलब्धिवंत.	१५३००)	१४०००)	१३०००)
३२ वादियोनीसंख्या.	८४००)	७६००)	६०००)
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	९०००)	८०००)	८४००)
३४ केवली संख्या.	११०००)	१००००)	७५००)
३५ मनःपर्यवसंख्या.	९१५०)	८०००)	७५००)
३६ चौदपूर्वीसंख्या.	२०३०)	२०००)	१५००)
३७ श्रावक संख्या.	२५७०००)	२५००००)	२२९०००)
३८ श्राविकासंख्या.	४९३०००)	४७९०००)	४७१०००)
३९ शासनयक्षनांनाम.	मातंगयक्ष	विजय यक्ष	अजिता यक्ष
४० शासनयक्षणीनांनाम.	शांता	भृकुटी	सुतारिका
४१ प्रथम गणधर नाम.	विदर्भ	दिन्न	वराहक
४२ प्रथमआर्या नाम.	सोमा	सुमना	वारुणी
४३ मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	फागण वदि ७	भाद्रवा वदि ७	भाद्रवा शुदि ९
४५ मोक्षसंलेषणा.	एक मास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७ अंतर प्रमाण.	९सोकोडीसागर	९०कोडीसागर	९ कोडीसागर
४८ गणनाम.	राक्षसगण	देवगण	राक्षसगण
४९ योनि नाम.	मृगयोनि	मृगयोनि	वानरयोनि
५० मोक्षपरिवार.	५००)	१०००)	१०००)
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकर्या	त्रणभवकर्या	त्रणभवकर्या
५२ कुलगोत्र नाम.	ईक्ष्वाकुकुल	ईक्ष्वाकुकुल	ईक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकाल मान.	९मास१९दिवस	नवमास७ दिव०	मास ८ दिव.२६

श्रा बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमा कहेछे

१	तीर्थंकरनाम	१०शीतलनाथ	११ श्रेयांसनाथ	१२ श्रीवासुपूज्य
२	च्यवनतिथि	वैशाखवदि ६	ज्येष्ठवदि ६	ज्येष्ठ शुदि ए
३	विमाननाम	अच्युत देवलोक	अच्युतदेव लोक	प्राणतदेवलोक
४	जन्मनगरी	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चपापुरी
५	जन्मतिथि	महावदि १२	फागणवदि १२	फागण वदि १४
६	पितानां नाम	दृढरथराजा	विष्णुराजा	वसुपूज्यराजा
७	मातानांनाम	नंदामाता	विष्णुमाता	जयामाता
८	जन्मनक्षत्र	पूर्वाषाढा	श्रवण नक्षत्र	शतभिषानक्षत्र
ए	जन्मराशि	धनराशि	मकर राशि	कुंभराशि
१०	लाछन नाम	श्रीवत्सनुलांछन	गेंडानुलांछन	पाडानु लाछन
११	शरीरनु मान	नेवुंधनुष	एंशीधनुष	सीत्तेरधनुष
१२	आयुनुप्रमाण	एकलाखपूर्व	८४ लाखवर्ष	७२ लाखवर्ष
१३	शरीरनावर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	लालवर्ण
१४	पदवीराजानी	राजा	राजा	कुमार
१५	पाणिग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथेदीक्षा	(१०००) साधु	(१००० साधु	६०० साधु
१७	दीक्षानगरी	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चपापुरी
१८	दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१ए	प्रथमपारणानोश्रा	क्षीरजोजन	क्षीरजोजन	क्षीरजोजन
२०	पारणानास्थान	पुनर्वसुनेघेर	नदनेघेर	सुनदनेघेर
२१	केटलादिवसनुपारणु	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि	महावदि १२	फागणवदि १३	फागणशुदि १५
२३	छद्मस्थकाल	त्रणमासरह्या	बे मासरह्या	एक मासरह्या
२४	ज्ञाननगरी	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चपापुरी
२५	ज्ञानतप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	प्रियगुवृक्ष	तडुकवृक्ष	पाडलवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पोषवदि १४	महावदि ३	महाशुदि २

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८ गणधरसंख्या.	८१)गणधर	७६)गणधर	६६)गणधर
२९ साधुउनी संख्या.	१०००००	८४०००	७२०००
३० साधवीयोनीसंख्या.	१००००६	१०३०००	१०००००
३१ वैक्रियलब्धिवंत.	१२०००	११०००	१००००
३२ वादियोनी संख्या.	५८००	५०००	४७००
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	७०२०	६०००	५४००
३४ केवली संख्या.	७०००	६५००	६०००
३५ मनःपर्यवसंख्या.	७५००	६०००	६५००
३६ चौदपूर्वी संख्या.	१४००	१३००	१२००
३७ श्रावक संख्या.	२८९०००	२७९०००	२१५०००
३८ श्राविका संख्या.	४५८०००	४४८०००	४३६०००
३९ शासनयक्षोनां नाम.	ब्रह्मायक्ष.	जक्षेटयक्ष.	कुमार यक्ष.
४० शासननी यक्षिणी.	अशोका	मानवी	चंद्रा
४१ प्रथम गणधर नाम.	नंद	कच्छप	सुभूम
४२ प्रथम आर्या नाम.	सुयशा	धारणी	धरणी
४३ मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	चंपापुरी
४४ मोक्षतिथि.	वैशाखवदि २	श्रावणवदि ३	अशाड शुदि १४
४५ मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एक मास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७ अंतर मान.	एककोडीसागर	चोपन सागर	त्रीश सागर
४८ गण नाम.	मानवगण	देवगण	राक्षसगण
४९ योनि नाम.	नकुलयोनि	वानरयोनि	अश्वयोनि
५० मोक्षपरिवार.	१००० परिवार	१००० परिवार	६००परिवार
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकर्या.	त्रणभवकर्या	त्रण भव कर्या
५२ कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकाल मान.	मास ९ दिवस६	मास ९ दिवस६	मास८ दिवस२०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम	१३ विमलनाथ	१४ अनंतनाथ	१५ श्रीधर्मनाथ
२	च्यवन तिथि	वैशाखशुदि १२	श्रावणवदि ७	वैशाखशुदि ७
३	विमान नाम	अष्टसारदेवलोक	प्राणत देवलोक	विजयविमान
४	जन्म नगरी	कंपिलपुरी	अयोध्या	रत्नपुरी नगरी
५	जन्म तिथि	महाशुदि ३	वैशाखवदि १३	महाशुदि ३
६	पितानां नाम	कृतवर्माराजा	सिंहसेन राजा	भानुराजा
७	मातानां नाम	श्यामामाता	सुयशामाता	सुव्रता माता
८	जन्म नक्षत्र	उत्तराभाद्रपद	रेवतीनक्षत्र	पुष्यनक्षत्र
९	जन्म राशि	मीनराशि	मीन राशि	कर्कराशि
१०	लांछन नाम	वराहनु लांछन	सीचाणानुलांछन	वज्रलांछन
११	शरीरनु मान	साठधनुष	पचाशधनुष	पीस्तालीशधनुष
१२	आयुर्मान	साठलाखवर्ष	त्रीशलाखवर्ष	दशलाखवर्ष
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण
१४	पदवी राजानी	राजा	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटला साथे दीक्षा	(१०००) साधु	(१०००) साधु	(१०००) साधु
१७	दीक्षा नगरी	कंपिल पुर	अयोध्या	रत्नपुरी
१८	दीक्षा तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन
२०	पारणानां स्थान	जयराजाने घेर	विजयराजानेघेर	धनसिंहने घेर
२१	केटलादिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षा तिथि	महाशुदि ४	वैशाखवदि १४	महाशुदि १३
२३	छद्मस्थ काल	बे मास	त्रण वर्ष	बे वर्ष
२४	ज्ञान नगरी	कपिलपुरी	अयोध्या	रत्नपुरी
२५	ज्ञान तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षा वृक्ष	जंबूवृक्ष	अशोक वृक्ष	दधिपर्णवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पोषशुदि ६	वैशाख वदि १४	पोष शुदि १५

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८ गणधरसंख्या.	५७) गणधर	५०) गणधर	४३) गणधर
२९ साधुउनीसंख्या.	६८०००)	६६०००)	६४०००)
३० साधवीयोनी संख्या.	१००८००)	६२०००)	६२४००)
३१ वैक्रिय लब्धिवंत.	९०००)	८०००)	७०००)
३२ वादियोनी संख्या.	३६००)	३२००)	२८००)
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	४८००)	४३००)	३६००)
३४ केवली संख्या.	५५००)	५०००)	४५००)
३५ मनःपर्यव संख्या.	५५००)	५०००)	४५००)
३६ चौद पूर्वीसंख्या.	११००)	१०००)	९००)
३७ श्रावकसंख्या.	२०८०००)	२०६०००)	२०४०००)
३८ श्राविकासंख्या.	४२४०००)	४०१४००)	४१३०००)
३९ शासन यक्षोनांनाम.	षण्मुखयक्ष	पातालयक्ष	किन्नरयक्ष
४० शासन यक्षिणीनांना०	विदिता	अंकुशा	कंदर्पा
४१ प्रथम गणधरनाम.	मंदरगणधर.	जसगणधर	अरिष्ट
४२ प्रथम आर्यानाम.	धरा	पद्मा	आर्यशिवा
४३ मोक्ष स्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	आषाढवदि ७	चैत्रशुदि ५	ज्येष्ठशुदि ५
४५ मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	काउस्सग	काउस्सग	काउस्सग
४७ अंतरमान.	नवसागरोपम	चारसागरोपम	त्रणसागरोपम
४८ गणनाम.	मानवगण	देवगण	देवगण
४९ योनिनाम.	छागयोनि	हस्तियोनि	मंजारयोनि
५० मोक्षपरिवार.	६००)	७००)	१०८)
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२ कुलगोत्रनाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकालमान.	मास८दिवस२१	मास ९ दिवस ६	मास८दिवस२६

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्री तीर्थंकरनाम	१६श्रीशांतिनाथ	१७ श्रीकुंथुनाथ	१८श्रीअरनाथ
२	च्यवनतिथि	जाद्रवाबदि ७	श्रावणवदि ए	फागण शुदि २
३	विमाननाम	सर्वार्थसिद्ध	सर्वार्थसिद्ध	सर्वार्थसिद्ध
४	जन्मनगरी	गजपुर	गजपुर	गजपुर
५	जन्मतिथि	ज्येष्ठवदि १३	वैशाख वदि १४	मागशिरशु० १०
६	पितानां नाम	विश्वसेन	सुरराजा	सुदर्शन
७	मातानां नाम	अचिरा राणी	श्री राणी	देवीराणी
८	जन्मनक्षत्र	जरणी नक्षत्र	कृत्तिका नक्षत्र	रेवती नक्षत्र
ए	जन्म राशि	मेषराशि	वृष राशि	मीन राशि
१०	लांछननां नाम	हरिणनु लांछन	बकरानु लांछन	नंदावर्त्तनुं
११	शरीर मान	४०) धनुष	३५) धनुष	३०) धनुष
१२	आयुनु प्रमाण	एक लाखवर्ष	एए५०००) वर्ष	८४०००) वर्ष
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण
१४	पदवी राजानी	चक्रवर्त्ती	चक्रवर्त्ती	चक्रवर्त्ती
१५	पाणि ग्रहण	६४०००) स्त्री	६४०००) स्त्री	६४०००) स्त्री
१६	केटला साथे दीक्षा	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	गजपुर	गजपुर	गजपुर
१८	दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१ए	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर जोजन	क्षीर जोजन	क्षीर जोजन
२०	पारणानां स्थान	सुमित्रने घेर	व्याघ्रसिंहने घेर	अपराजितने घेर
२१	केटला दिवसनापा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षा तिथि	ज्येष्ठ वदि १४	चैत्र वदि ५	मागशिर शु०११
२३	उद्मस्थ काल	एकवर्ष	शोल वर्ष	त्रणवर्ष
२४	ज्ञाननगरी	गजपुर	गजपुर	गजपुर
२५	ज्ञान तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	नंदीवृक्ष	नीलक वृक्ष	आंबानुं वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पोषशुदि ए	चैत्रशुदि ३	कार्तिक शुदि१२

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८	गणधर संख्या.	३६) गणधर	३५) गणधर	३३) गणधर.
२९	साधुओनीसंख्या.	५२०००)	६००००)	५००००)
३०	साधवियोनी संख्या.	६१६००)	६०६००)	६००००)
३१	वैक्रिय लब्धिवंत.	६०००)	५१००)	७३००)
३२	वादियोनीसंख्या.	२४००)	२०००)	१६००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	३०००)	२५००)	२६००)
३४	केवली संख्या.	४३००)	३२००)	२८००)
३५	मनःपर्यवसंख्या.	४०००)	३३४०)	२५५१)
३६	चौदपूर्वीसंख्या.	८००)	६७०)	६१०)
३७	श्रावक संख्या.	१९००००)	१७९०००)	१८४०००)
३८	श्राविकासंख्या.	३९३०००)	३८१०००)	३७२०००)
३९	शासनयक्षनांनाम.	गरुडयक्ष	गंधर्वयक्ष	यक्षेदयक्ष
४०	शासनयक्षणीनांनाम.	निर्वाणी	बला	धणा
४१	प्रथम गणधर नाम.	चक्रयुक्त	सांब	कुंभ
४२	प्रथमआर्या नाम.	शुचि	दामिनी	रक्षिता
४३	मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	ज्येष्ठ वदि १३	वैशाख वदि १	मागशिरशुदि१०
४५	मोक्षसंलेषणा.	एक मास	एकमास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अंतर प्रमाण.	०॥पल्योपम	०।पल्योपम	१००० क्रोडवर्ष
४८	गणनाम.	मानवगण	राक्षसगण	देवगण
४९	योनि नाम.	हस्तियोनि	छागयोनि	हस्तियोनि
५०	मोक्षपरिवार.	९००परिवार	१०००)परिवार	१०००) परिवार
५१	भवसंख्या.	बार भव कस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकाल मान.	मासनव दिवसछ	मासनवदि०पांच	मासनव दिव. ८

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमा कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम	१९ श्रीमल्लिनाथ	२० श्रीमुनिसुव्रत	२१ श्रीनमि नाथ
२	च्यवन तिथि	फागण शुदि ४	श्रावण शुदि १५	आशोशुदि १५
३	विमान नाम	जयतविमान	अपराजितविमा	प्राणत देवलोक
४	जन्मनगरी	मथुरानगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
५	जन्मतिथि	मागशिरशुदि११	ज्येष्ठवदि ८	श्रावण वदि ८
६	पितानां नाम	कुंभराजा	सुमित्रराजा	विजयराजा
७	मातानां नाम	प्रजावती	पद्मावती	विप्रा राणी
८	जन्म नक्षत्र	अश्विनी नक्षत्र	श्रवण नक्षत्र	अश्विनी नक्षत्र
९	जन्म राशि	मेषराशि	मकरराशि	मेषराशि
१०	लांछन नाम	कलशनुं लांछन	कछपनु लांछन	कमलनुं लांछन
११	शरीरनु प्रमाण	पचीश धनुष	वीश धनुष	पंदर धनुष
१२	आयुनुंप्रमाण	५५०००)वर्ष	३००००) वर्ष	१००००) वर्ष
१३	शरीरना वर्ण	नीलो वर्ण	श्यामवर्ण	पीलो वर्ण
१४	पदवी राजानी	कुमार	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण	नथी परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथे दीक्षा	३००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	मिथिला नगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
१८	दीक्षातप	त्रण उपवास	वे उपवास	वे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन
२०	पारणानां स्थान	विश्वसेन	ब्रह्मदत्त	दिन्नकुमार
२१	केटला दिवसनांपा०	वे दिवस	वे दिवस	वे दिवस
२२	दीक्षातिथि	मागशिरशुदि११	फागणशुदि १२	अषाढ वदि ९
२३	छद्मस्थकाल	एक अहोरात्र	अगियार मास	नवमास
२४	ज्ञान नगरी	मथुरा नगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
२५	ज्ञानतप	वे उपवास	वे उपवास	वे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	अशोक वृक्ष	चंपकवृक्ष	बकुलवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	मागशिरशुदि११	फागण वदि १२	मागशिरशुदि११

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरोमां कहेछे.

२८	गणधर संख्या.	२८) गणधर	१८) गणधर	१७) गणधर
२९	साधुउनी संख्या.	४००००	३००००	२००००
३०	साध्वीयोनी संख्या.	५५०००	५००००	४१०००
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	२९००	२०००	५०००
३२	वादियोनी संख्या.	१४००	१२००	१०००
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	२२००	१८००	१६००
३४	केवली संख्या.	२२००	१८००	१६००
३५	मनःपर्यव संख्या.	१७५०	१५००	१२५०
३६	चौदपूर्वी संख्या.	६६८	५००	४५०
३७	श्रावक संख्या.	१८३०००	१७२०००	१७००००
३८	श्राविका संख्या.	३७००००	३५००००	३४८०००
३९	शासन यक्षोनांनाम.	कुबेरयक्ष	वरुण यक्ष	त्रृकुटी यक्ष
४०	शासनयक्षणीनांनाम	धरणप्रिया	नरदत्ता	गंधारी
४१	प्रथम गणधर नाम.	अत्तीक्षकगणधर	मल्लीगणधर	शुम्नगणधर
४२	प्रथम आर्या नाम.	वधुमती	पुष्पमती	अनिला
४३	मोक्ष स्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्ष तिथि.	फागण शुदि १२	ज्येष्ठ वदि ९	वैशाखवदि १०
४५	मोक्ष संलेषणा.	एकमास	एक मास	एकमास
४६	मोक्ष आसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अंतरमान.	५४००००० वर्ष.	६००००० वर्ष	५००००० वर्ष
४८	गण नाम.	देवगण	देवगण	देवगण
४९	योनि नाम.	अश्वयोनि	वानरयोनि	अश्वयोनि
५०	मोक्ष परिवार.	५०० परिवार	१००० परिवार	१००० परिवार
५१	भव संख्या.	त्रण भव कस्या	त्रण भव कस्या	त्रणभव कस्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुवंश कुल	इक्ष्वाकुवंशकुल	इक्ष्वाकुवंशकुल
५३	गर्भकालमान.	मास ९ दिवस ७	मास ९ दिवस ८	मास ९ दिवस ८

श्रा बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकरनाम	२२ श्रीनेमिनाथ	२३श्रीपार्श्वनाथ	२४ श्रीमहावीर
२	च्यवनतिथि	कार्तिकवदि १२	चैत्रवदि ४	आषाढशुदि ६
३	विमाननाम	अपराजित	प्राणत देवलोक	प्राणतदेवलोक
४	जन्मनगरी	सौरिपुर	वणारसी	क्षत्रियकुंड
५	जन्मतिथि	श्रावणशुदि ५	पोषवदि १०	चैत्रवदि १३
६	पितानां नाम	समुद्र विजय	अश्वसेन	सिद्धार्थराजा
७	मातानांनाम	शिवा देवी	वामा देवी	त्रिशला देवी
८	जन्मनक्षत्र	चित्रानक्षत्र	विशाखा नक्षत्र	उत्तरा फाल्गुनी
९	जन्मराशि	कन्याराशि	तुला राशि	कन्याराशि
१०	लांछन नाम	शखनु लांछन	सर्पनु लांछन	केशरी लांछन
११	शरीरनुं मान	दशधनुष	नवहाथ	सातहाथ
१२	आयुनुप्रमाण	हजारवर्ष	शो वर्ष	बहोंत्तेर वर्ष
१३	शरीरनावर्ण	श्यामवर्ण	नीलो वर्ण	पीलो वर्ण
१४	पदवीराजानी	कुमार पदवी	कुमारपदवी	कुमार पदवी
१५	पाणिग्रहण	नथी परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथेदीक्षा	१०००) साधु	(३०० साधु	एकाकी दीक्षा
१७	दीक्षानगरी	सौरिपुर	वणारसी	क्षत्रियकुंड
१८	दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोश्रा	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन
२०	पारणानांस्थान	वरदिन्न	धन्यनाम	बहुल ब्राह्मण
२१	केटला दिवसनुपारणु	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि	श्रावण शुदि ६	पोषवदि ११	मागशिर वदि ११
२३	छद्मस्थकाल	चोपन दिवस	चोराशी दिवस	बार वर्ष
२४	ज्ञाननगरी	गिरनार	वणारसी	ऋजुवालुका नदी
२५	ज्ञानतप	त्रण उपवास	त्रण उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	वेडसवृक्ष	धातकीवृक्ष	शालवृक्ष
[illegible]	[illegible]तिथि	आशोवदि०)	चैत्रवदि ४	वैशाख शुदि १०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८	गणधरसंख्या.	११) गणधर	१०) गणधर	११) गणधर.
२९	साधुउनीसंख्या.	१८०००)	१६०००)	१४०००)
३०	साधवीयोनी संख्या.	४००००)	३८०००)	३६०००)
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	१५००)	११००)	७००)
३२	वादियोनी संख्या.	८००)	६००)	४००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	१५००)	१०००)	१३००)
३४	केवली संख्या.	१५००)	१०००)	७००)
३५	मनःपर्यव संख्या.	१०००)	७५०)	५००)
३६	चौद पूर्वीसंख्या.	४००)	३५०)	३००)
३७	श्रावकसंख्या.	१६९०००)	१६४०००)	१५९०००)
३८	श्राविकासंख्या.	३३६०००)	३३९०००)	३१८०००)
३९	शासन यक्षोनां नाम.	गोमेधयक्ष	पार्श्वयक्ष	मातंगयक्ष
४०	शासनयक्षिणीनांना०	अंबिका	पद्मावती	सिद्धायिका
४१	प्रथम गणधरनाम.	वरदत्त	आर्यदिन्न	इंद्रनूति
४२	प्रथम आर्यानाम.	यक्षदिन्ना	पुष्पचूडा	चंदनबाला
४३	मोक्ष स्थान.	गिरनार	समेतशिखर	पावापुरी
४४	मोक्षतिथि.	आषाढशुदि ८	श्रावण शुदि ८	कार्तिक वदि ०)
४५	मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एकमास	बे उपवास कर्या
४६	मोक्षआसन.	पद्मासन	काउस्सग	पद्मासन
४७	अंतरमान.	८३७५०) वर्ष.	२५०) वर्ष	चरमजिनेश्वर.
४८	गणनाम.	राक्षसगण	राक्षसगण	मानवगण
४९	योनिनाम.	महिषयोनि	मृगयोनि	महिषयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	५३६) परिवार	३३) परिवार	एकला पोते
५१	नवसंख्या.	नवनवकर्या	दशनव कर्या	सत्यावीशनवक०
५२	कुलगोत्रनाम.	हरिवंश	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्नकालमान.	मास ९ दिवस ८	मास ९ दिवस ६	मास ९ दिवस ७॥

आ यन्त्र अनुसार दरेक तीर्थंकरना बावन बोलनो संबंध जाणवो वे मध्येनां मातादि केटलाएक द्वार व्युत्पत्तिना कारणसर प्रथम पृथक् बतावेल छे

आ चोवीश तीर्थंकरमाहेना नवमा, दशमा, अग्यारमा, बारमा, तेरमा, चौदमा, अने पदरमा ए सात तीर्थंकरना निर्वाण थया पछी तेम नां शासन (द्वादशांग वाणीरूप शास्त्र) तथा साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका चतुर्विध श्रीसंघरूप तीर्थ केटलाएक काल प्रवर्त्ती विछेद गयां ते समये जारत वर्षमां जैनमतनु नाम पण विद्यमान न होतु, ते वखतथी अनेक मत मतांतर तथा कुशास्त्रोनी प्राय प्रवृत्ति थई ते वर्तमान काल सुधी विद्यमान छे बहु लोकोए स्वकपोलकल्पित शास्त्रो रचीने प्राचीन मुनि, ऋषि अथवा ईश्वरप्रणीत ते छे एम प्रसिद्ध कर्यां ए प्रमाणे त्रणसो त्रेसठ मत प्रवर्त्त्यां चारे आर्यवेद विछेद गया, अने नवीन वेदोनी रचना करी. नवीन वेदो मध्ये पण लोकोए केटलीएक वार नवी नवी रचना करी तेमने उलट पालट करी दीधा नवी नवी रचना कर्या पछी जे बाकी रह्या तेनी अनेक तरेहथी भाष्य, टीका, दीपिका, रचीने अर्थमां गडबड करी दीधी अत्यार सुधी ते प्रमाणेज कर्या करे छे आ सर्व स्वरूप ज्यां वेदोनी उत्पत्ति विषे लखशुं त्यां स्पष्ट लखशुं–वेद–नाम बहुज प्राचीन कालथी छे जे पुस्तकोनां नाम वेद आज प्रसिद्ध छे ते प्राचीन नथी तेनुं प्रमाणयुक्त वर्णन आगल करवामां आवशे इति श्री तपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्य मुनि श्री आनदविजय श्री आत्मारामविरचिते जैनतत्वादर्शे प्रथम परिछेद संपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय परिछेद ॥

आ परिछेदमां कुदेवनु स्वरूप लखियें छियें जे "भगवान्" नथी परंतु लोकोए पोतानी मतिथी जेने परमेश्वर मान्या तेने कुदेव कहेवामां आवे छे ते कुदेवनुं स्वरूप प्रथम वर्णवेला देव स्वरूपथी विपरीत छे एम सर्व बुद्धिमान् तो जाणी शके छे परंतु जेठं विस्तारपूर्वक लखवाथी समजी शके छे तेमना हित सारु लखियें छियें

“ श्लोक ॥ ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादि, रागाद्यंककलंकिताः ॥ निग्रहानुग्रहपरा, स्ते देवाः स्युर्न मुक्तये ॥ १ ॥ नाट्याट्टहाससंगीता, द्युपप्लव विसंस्थुलाः ॥ लंभयेयुः पदं शान्तं, प्रपन्नान्प्राणिनः कथं ॥ २ ॥ ” इति योगशास्त्रे॥ जे देवनी पासे स्त्री होय, तथा जेनी प्रतिमानी पासे स्त्री होय, ते देव तथा प्रतिमाद्वारा ते देवनुं स्वरूप प्रगट थइ जायछे, कारण के जेवो पुरुष होयछे तेवीज तेनी मूर्त्ति पण प्रायः होयछे. वर्तमानमां सर्व चित्रोमां तेमज देखवामां आवेछे; ते कारणथी मूर्त्तिद्वारा तथा मतावलंबी पुरुषोना ग्रंथानुसार स्वरूप समजी लेवुं; तेम शस्त्र, धनुष्, चक्र, त्रिशूल, अक्षसूत्र, जपमाला तथा कमंडल प्रमुख जेनी पासे होय ते देव केवा होय ? राग द्वेष प्रमुख दूषणोनां चिन्ह जे देवमां होय तथा जे देव स्त्रीने पासे राखेछे ते अवश्य रागी, द्वेषी तेमज कामी छे. स्त्री साथे भोग करनारो छे. तेना करतां अधिक रागीपणुं सूचवनारुं बीजुं कयुं चिह्न छे ? आ काम रागने वश थवाथी कुदेवोए परस्त्री, स्वस्त्री, पुत्री, माता, बेहेन तेमज पुत्रवधू प्रमुख स्त्रियो साथे अनेक कामक्रीडा कुचेष्टा करी छे.

वर्तमानमां कोइपण पुरुष परस्त्रीगमन करनारो होय तो तेने कोइपण मतावलंबी “ सज्जन ” कहेता नथी, तो पछी परमेश्वर थइने परस्त्रीसंग काम कुचेष्टा करे तेने कुदेव कहेवामां बुद्धिमान् पुरुषो शंका करता नथी; जे पुरुष पोतानी स्त्री साथे काम सेवन करेछे परंतु परस्त्रीनो त्यागीछे, तेने पण परस्त्रीनो त्यागी, गृहस्थधर्मी, एम लोक कही शके छे, परंतु तेने मुनि, ऋषि के ईश्वर कदापि तेओ कहेशे नहि; कारण के जे पोतेज कामाग्नि कुंडमां प्रज्वलित थई रह्या छे तेनामां ईश्वरता कदि होई शकती नथी. आ हेतुथी रागरूप चिह्नें करी जे संयुक्त छे ते कुदेव छे. वली द्वेषना चिह्नेंकरी जे संयुक्त छे ते पण कुदेव छे. द्वेषनां चिह्न शस्त्रादि धारण करवां ते; जे शस्त्र, धनुष्, चक्र, त्रिशूल प्रमुख पोतानी पासे राखे तेने अवश्य कोइ वैरीने मारवानो छे. ते विना शस्त्र राखवानुं शुं प्रयोजन छे ? तेथी जे वैरविरोधमय छे ते परमेश्वर थइ शक्ता नथी. जे भयसंयुक्त छे ते पोतानी साथे ढाल के खड्ग राखेछे, तेथी जे पोतेज भयसंयुक्त छे तेनी सेवा करवाथी अमें निर्भय केम थइ शकि-

यें ? आ हेतुथी द्वेषसयुक्तने पण कोण बुद्धिमान् परमेश्वर कही शके
छे ? परमेश्वर जे छे, ते तो "वीतराग" छे अने रागद्वेषसंयुक्त जे छे ते कुदेव छे

जेना हाथमां जपमाला छे ते असर्वज्ञतानु चिह्न छे जो सर्वज्ञ होय
तो मालाना मणका विना पण जापनी संख्या करी शके छे वली जे
जाप करे छे ते पण पोताना करता उंचानो जाप करे छे तो परमेश्वर
करता श्रेष्ठ कोण छे जेनो ते जाप करे छे ? आ हेतुथी मालाथी जे जाप
करे छे ते पण कुदेव छे जे शरीरें भस्म लगावे छे, धूणी तापे छे, नग्न
थइ कुचेष्टा करे छे, भांग, अफीण, धतुरो, मदिरा प्रमुख पीये छे, मां
सादि अशुद्ध आहार करे छे, तेमज हाथी, उंट, बलद अने रासभ प्र
मुखनी स्वारि करे छे ते पण कुदेव छे, कारण के शरीरें भस्म लगाडना
र तथा धूणी तापनार कोई वस्तुनी ईछावाला छे तेथी जेनो मनोरथ
अत्यार सूधी पूर्ण थयो नहि ते परमेश्वर नहि पण कुदेव छे तेमज जे
निस्सो करावनारी चीजो खाय छे तथा पीये छे ते निस्साना अमलमां
आनंद तेमज हर्ष दुंढे छे परमेश्वर तो सदा आनद तेमज सुखरूप छे
परमेश्वरमां एवो कयो आनद नथी जे निस्सो करवाथी तेने प्राप्त था
य छे ? ते हेतुथी निस्सो करनारा तेमज मांसादि अशुद्ध आहार कर
नारा पण कुदेव छे

स्वारि परजीवने पीडानु कारण छे परमेश्वर तो दयालु छे ते परजी
वने पीडा केम उत्पन्न करे ? तेथी स्वारि जे करे ते पण कुदेव छे

जे कर्मरुल राखे छे ते शुचिताने कारणे राखे छे, परमेश्वर तो सदा
काल पवित्र छे तेने कमंडलथी शु काम छे ?

स्त्रीसंग काममाचष्टे, द्वेष चायुधसंग्रह ॥ व्यामोहं चाक्षसूत्रादि,
रशौचं च कमण्डलु ॥ १ ॥ स्त्रीनो संग कामवृत्ति सूचवे छे, शस्त्रसंग्रह,
द्वेष भाव सूचवे छे, जपमाला व्यामोह अने कर्मरुल अशुचिपणुं बता
वे छे तेमज निग्रह (दंड) पणाथी जे बीजाने वध, बंधन, मरण,
रोग, शोक, अतीष्टवियोग, नरकपात, निर्धन, हीन, दीन, क्रीया करे ते
पण कुदेव छे, तेमज जेनी उपर अनुग्रह करे तेने इंद्र, चक्रवर्त्ती, बलदे
व, वासुदेव, महामंडलिक मंडलिक आदि राजपदवीनुं वरदान आपे, त
था सुदर स्त्री पुत्र परिवारादिसंयोग करावे ते पण कुदेव छे, कारण

के जे रागी, द्वेषी बे ते मोक्षप्राप्ति माटे कदि थइ शकता नथी, तेउं तो जूत, प्रेत पिशाचादिनी पेठे क्रीडाप्रिय देवता मात्र बे. तेवा देव पोताना सेवकोने मुक्ति केम प्राप्त करावी शके ? पोतेज रागी, द्वेषी, कर्मपरतंत्र बे तो सेवकोनुं कार्य शुं सारी शके बे? आ हेतुथी निग्रह, अनुग्रह करनारा पण कुदेव बे.

जे नाद, नाटक, हास्य, संगीत, ईत्यादि रसमां मग्न बे, वाजीत्र बजावे बे, पोते नाचे बे, बीजाने नचावे बे, हसे बे, कुदेबे, विषयी रागो गाय बे, संगीत करे बे इत्यादि, मोहकर्मने वश थई संसारनी चेष्टा करे बे तथा जेनो अस्थिर स्वजाव बे ते पण कुदेव बे जे पोतेज एवा बे ते सेवकोने शांतिपद केम प्राप्त करावी शके ? एरंम वृक्ष कल्पवृक्षनी पेठे इच्छा पूर्ण करी शकतुं नथी जेम कोइ मूर्ख पुरुष एरंम वृक्षने कल्पवृक्ष मानी एरंड पासे इच्छा फलीजूत करवा याचना करे ते एरंम शुं कल्पवृक्षनुं काम करी शके? तेम कोइ मिथ्यादृष्टि पुरुष कुदेवने परमेश्वर मानी लीये तो शुं ते कुदेव परमेश्वर थई शके बे ? ते कारणथी प्रथम परिछेदमां जे लक्षणो परमेश्वरनां बताव्यां बे, ते लक्षणोवाला परमेश्वर, देव बे बाकीना सर्वे कुदेव बे.

प्रश्न–अमे तो एम सांजल्युं बे के जैनियो ईश्वरने मानता नथी, तेमनो मत अनीश्वरीय बे, अने आपें तो प्रथम परिछेदमां कइक जगोयें अर्हंत, जगवंत परमेश्वर लखेल बे, वली प्रथम परिछेद तो जगवाननाज स्वरूपकथनमां समाप्त करेल बे. आमां वास्तविक शुं बे ?

उत्तर–हे जव्य ! जे एम कहे बे के जैनमतावलंबी ईश्वरने मानता नथी तेमनुं एवुं कथनज मिथ्या बे, तेउंए कदी जैनमतना शास्त्रनुं अध्ययन अथवा श्रवण कर्युं नहि होय, तेमज कोइ बुद्धिमान् जैनीनो परिचय पण कर्यो नहि होय; जो कदि जैनमतना शास्त्रोनुं अध्ययन अथवा श्रवण कर्युं होत तो कदि ते एम न कहेत के जैनी ईश्वरने मानता नथी. जो जैनी ईश्वरने मानता नथी तो आ श्लोको कोनी स्तुतिबे?

त्वामव्ययं विजुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥१॥ हे जिन ! सत्पुरुष आपने (अव्यय) कहे बे. अपचयने जे न प्राप्त थाय

ते द्रव्यार्थिक नयने मते अव्यय, प्रणे कालमा एक स्वरूप छे शोने छे परमेश्वर पणाए करी जे ते (विभु) अथवा समर्थ थया कर्मउन्मूलन करी जे ते (विभु) अथवा इन्द्रादि देवताउंना जे स्वामी ते (विभु) सत्पुरुष ते कारणथी आपने विभु कहे छे वली आपने अध्यात्मज्ञानी पण चिंतन करवामां समर्थ नथी तेथी आप (अचिंत्य) छो वली आपना गुणोनी गणतरी थइ शकती नथी तेथी सत्पुरुष आपने(असंख्य) कहे छे वली सर्व लोकव्यवहार प्रवर्त्तावयामा आदि करनार तेथी, अथवा पोतानु तीर्थ स्थापवामां आदि करवाथी आप (आद्य) छो वली अनंत आनंदें करी सर्वथी अधिक वृद्धिवाला होय ते (ब्रह्म) सत्पुरुष आपने ब्रह्म कहे छे वली सर्व देवताउंना ठाकोर तेथी आपने (ईश्वर) कहे छे वली अनंत ज्ञानदर्शनना योगथी (अनंत) अथवा नथी जेनो अंत ते (अनंत) अथवा अनंतज्ञान- अनंतवल- अनंतसुख- अनंतजीवन, ए चार अनंतें करी संयुक्त ते (अनंत) सत्पुरुष आपने अनंत कहे छे वली कामदेवनो नाश करवाने आप केतु समान छो तेथी आपने (अनगकेतु) कहे छे, अथवा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण शरीररूपी चिह्न जेनें नथी ते (अनग केतु) नविष्य नैगम नयने मतें करी आपने कहे छे वली चार ज्ञानना धारण करनार जे योगी केहेवाय छे तेना आप ईश्वर छो तेथी आपने (योगीश्वर) कहे छे वली जाण्या छे सम्यक् ज्ञानादियोग जेणें, अथवा ध्यानादि योग जेणें, अथवा विशेषें करी जीव साथेनो कर्मनो संयोग खंमित कर्यो छे जेणें ते (विदितयोग) सत्पुरुष आपने (विदितयोग) कहे छे वली आप ज्ञानें करी सर्वगत होवाथी, अथवा अनेक सिद्ध एकत्र रेहेवाथी, अथवा गुणपर्यायनी अपेक्षाथी, अथवा रुपनादि व्यक्तिनेदथी सत्पुरुष आपने (अनेक) कहे छे वली आप अद्वितीय उत्तमोत्तम छो तेथी अथवा जीवद्रव्य अपेक्षाथी आपने (एक) कहे छे वली आप, ज्ञान क्षायिक केवल छे स्वरूप जेनु ते ज्ञानस्वरूप तेथी आपने (ज्ञानस्वरूप) कहे छे वली अष्टादश दोषरूप मल जेने नथी तेथी सत्पुरुष आपने (अमल) कहे छे आ पदर विशेषण ईश्वरसंबंधी मतांतरोमां प्रसिद्ध छे

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २ ॥ अर्थः– हे विबुधार्चित! विबुध जे देवताउं, तेनाथी पूजाएला साते सुगतो मध्येथी कोइ एक सुगत, तेने बुद्ध कहियें, ते बुद्ध आपजछो, शा कारणथी ? धर्मबुद्धि प्रगट करवाथी. वली आप शंकर छो, शा कारणथी? त्रणे भुवनमां शं जे सुख ते करवाथी. वली हे धीर! आप धाता (ब्रह्मा) छो, शा कारणथी ? शिव जे मोक्ष तेनो मार्ग जे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप तेनो विधि बतावबाथी, आप विधाताछो. हे भगवन्! आप व्यक्त प्रगट, पुरुषोमां उत्तमछो. इत्यादि लाखो श्लोक, परमेश्वरनी स्तुतिना छे. जो जैनी ईश्वरने नथी मानता तो आ श्लोकोथी तेमणे कोनी स्तुति करीछे? सबब जे एम कहेछे के जैनी लोक, ईश्वरने नथी मानता ते प्रत्यक्ष मृषावादी छे.

प्रश्न–बहु सारुं थयुं जे मारा मननो संशय दूर थयो, परंतु एक संशय मारा मनमां अद्यापि छे. आपें ईश्वर तो मान्या परंतु जगत्कर्त्ता ईश्वर आपें जैनमतमां मान्या छे के नहि ? उत्तर–हे भव्य! जगत्ना कर्त्ता जो ईश्वर सिद्ध थाय तो जैनी केम न माने ? परंतु सर्व वस्तुना कर्त्ता ईश्वर कोइ पण प्रमाणथी सिद्ध थता नथी.

प्रश्न–जो कोइ पण प्रमाणथी ईश्वर सर्व वस्तुना कर्त्ता सिद्ध नथी थता तो १ नवीन वेदांती २ नैयायिक ३ वैशेषिक ४ पातंजल ५ नवीन सांख्य ६ इसाइ ७ मुसलमान प्रमुख अनेक मतावलंबी पुरुष ईश्वरने जगत्कर्त्ता अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता मानेछे; शुं तेउमां कोइ पण ईश्वरना जगत्कर्त्तापणानो निषेध करनार समजू थयो नहि ?

उत्तर–हे भव्य! १ जैन २ बौद्ध ३ प्राचीन सांख्य ४ पूर्वमीमांसा कारक जैमिनि मुनिना संप्रदायी भट्ट प्रभाकर इत्यादि अनेक मतावलंबियोमां कोइ पण समजु थयो नहिं के जेणें ईश्वरना जगत्कर्त्तापणानुं स्थापन कर्युं ! !

प्रश्न–जैन, बौद्ध अने प्राचीन सांख्य प्रमुख, ऊपर वर्णवेला मतावलंवी तमाम, अज्ञानी थया छे ते कारणथी ईश्वरने जगत्कर्त्ता नथी मानता.

उत्तर—नवीन वेदांती, नैयायिक, वैशेषिकादि सर्व अज्ञानी थया छे के जे ईश्वरने जगत्कर्त्ता माने छे

प्रश्न—ईश्वर जगत्ना अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता छे एम जो मानियें तो शुं दूषण छे ?

उत्तर—ईश्वरने जगत्ना कर्त्ता अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता मानवामां घणुं दूषणो आवे छे

प्रश्न—आप अपूर्व वात कहोछो अमें तो कदी सांजल्युं नथी के ईश्वरने जगत्कर्त्ता अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता मानवामां दूषण आवेछे हवे तो आपें ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानवामां शुं शुं दूषणो आवेछे ते के-हेवुं जोइये ?

उत्तर—हे भव्य ! प्रथम तो आप ए बतावो के आप कया ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानोछो ?

प्रश्न—शुं ईश्वर पण कइक तरेहना छे, जे आप अमने एम पुछोछो ?

उत्तर—शु आप नथी जाणता के बे प्रकारना ईश्वर मतावलंबियोयें मानेलाछे ? एकतो जगत् उत्पत्ति पेहेलां केवल एकज ईश्वर हता, जगतनां उपादानादि कोइ पण कारण अथवा बीजी वस्तु न होती, एकज शुद्ध बुद्ध सच्चिदानंदादिसरूपयुक्त परमेश्वर हता केटलाएक जीवोने तो एवा ईश्वर, जगत् वा सर्व वस्तुना रचनार संमत छे, अने बीजाउने तो १ जीव २ परमाणु ३ आकाश ४ काल दिशादि सामग्रीवाला अर्थात् एक तो ईश्वर उपर वर्णवेला विशेषणसंयुक्त—अने जेथी जगत् रचीश काय एवी बीजी सामग्री—ए बंने वस्तु अनादि छे, एम संमत छे, अर्थात् एक तो ईश्वर, अने बीजी जगत् उत्पन्न करवानी सामग्री, ए बंने कोइयें बनावी नथी एम तेउं मानेछे हवे आपने आ बे मतमांथी कयो मत संमतछे

पूर्वपक्ष—अमने तो प्रथम मत संमत छे कारण के वेदादि शास्त्रोमां एम लख्यु छे—" एतस्मादात्मन आकाश संभूत आकाशाद्वायुः वायोरग्निरग्नेराप अद्भ्य पृथिवी पृथिव्या ओषधय ओषधिभ्योन्नमन्नाद्रेत रेतसः पुरुष सवा एष पुरुषोन्नरसमय " आ तैत्तिरीय शाखानी श्रुतिछे, तथा "सदेव सोम्येदमग्रआसीदेकमेवाऽद्वितीयं तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति " आ श्रुति छांदोग्य उपनिषद्नी छे तथा "ना सदासीन्नो सदासीत्तदानीन्ना

सीद्रजोन व्योम परोयत् किमावरीवः कुहकस्य शर्मण्यम्नः किमासीज्ञहनं गन्नीरं" आ श्रुति ऋग्वेदनीछे, तथा "आत्मा वा इदमग्र आसीन्नान्यत् किंचिन्मिषत् स ईक्तत लोकानुसृज इति" आ ऐतरेय ब्राह्मणनी श्रुति छे; इत्यादि अनेक श्रुतियोथी सिद्ध थायछे के सृष्टिनी पेहेलां एक ईश्वर हता. न जगत् हतुं अथवा नहोतुं जगततुं कारण,एकज ईश्वर शुद्धस्वरूप हता. वली इसाइ तेमज मुसलमान मतवाला पण एमज माने छे. ए हेतुथी अमे प्रथम पक्ष मानियें छीयें.

उत्तर– हे पूर्वपक्षि! आपनुं ए केहेवुं ईश्वरने बहुज कलंकित करेछे.

पूर्वपक्ष– जगत् रचवाथी ईश्वरने शुं कलंक प्राप्त थाय छे ?

उत्तरपक्ष– प्रथम तो जगतनुं उपादान कारण नथी, ते हेतुथी जगत् कदापि उत्पन्न थइ शकतुं नथी. जेनुं उपादान कारण होय नहि ते कार्य कदापि उत्पन्न थइ शके नही. जेम के गधेडानां सींग.

पूर्वपक्ष–ईश्वरें पोतानी शक्ति, नामांतर कुदरतथी जगत् रचेल छे. ईश्वरनी जे शक्ति छे तेज उपादान कारण छे.

उत्तरपक्ष– ईश्वरनी जे शक्ति छे ते ईश्वरथी भिन्न छे, के अभिन्न छे ? जो कहो के भिन्न छे, तो पछी जड छे के चेतन छे ? जो कहो के जड छे, तो ते नित्य छे, के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो आपनुं एम जे केहेवुं हतुं के सृष्टिनी पेहेलां एक केवल ईश्वर हता अने बीजी कांइपण वस्तु न होती; ते प्रमाणरहित अन्यायी वचन थयुं, पोतेज पोताना वचनने मृषा कराव्युं. वली एम कहो के अनित्य छे तो पछी तेनी उपादानकारणरूप बीजी ईश्वरनी शक्ति थइ, ते शक्तिनी उत्पन्न करनारी त्रीजी शक्ति थइ; एवीरीतें करतां अनवस्था दूषण आवे छे. जो कहो के चेतन छे, तो पछी नित्य छे के अनित्य छे ? बंने पक्षमां उपर बताव्या मुजब पूर्वापर स्ववचन व्याहत तेमज अनवस्था दूषण छे. जो कहो के ईश्वरशक्ति ईश्वरथी अभिन्न छे तो सर्ववस्तुने, ईश्वरज केहेवी जोइये, जो सर्ववस्तु ईश्वर बनी गइ तो पछी सारुं के बुरुं, नरकके स्वर्ग, पुण्य के पाप, धर्म के अधर्म, उंचनीच, रंकराजा,सुशील के दुःशील, राजा तेमज प्रजा, चोर तेमज साधु, सुखी तेमज दुःखी इत्यादि सर्व, ईश्वर पोतेज बन्या. हवे विचारो के ईश्वरें जगत् शुं रच्युं ? पोतेज

पोतानु सत्तानाश करी लीधु आ प्रथम कलंक ईश्वरने लागे छे, तथा ज्यारें ईश्वर पोतेज सर्वरूप बनी गया तो पछी वेदादि शास्त्र शा माटे ब नाव्यां ? तेमज तेनो अभ्यास करवाथी शुं फल थयु ? आ बीजु कलंक, तथा ज्यारे वेदादि शास्त्र बनाव्यां त्यारें पोते पोताने ज्ञानी बनाववाने रच्यां ते उपरथी सिद्ध थयु के प्रथम तो पोते अज्ञानी हता आ त्रीजु कलंक, तथा शुद्ध हता ते अशुद्ध बन्या कारण के जगत्रूप बनवानी मेहेनत करी जे निष्फल थई आ चोथुं कलंक, कोइ वस्तु जगत्मां सा री के बुरी नहि, आ पांचमु कलंक, शा माटे पोते पोताने संकटमां ना ख्या आ छठ्ठु कलंक, इत्यादि अनेक कलंक आप ईश्वरने लगावो छो

पूर्वपक्ष–ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे, ते हेतुथी ईश्वर, उपादान कारण विनापण जगत् रची शकेछे

उत्तरपक्ष–आ जे आपनु केहेवु छे ते प्यारी स्त्री अथवा मित्र मानशे परंतु प्रेक्षावान् कोईपण नहि माने, कारण के आ तमारा केहेवामां कोईपण प्रमाण नथी जेनु उपादानकारण होय नहि ते कार्य कदी थ- ई शके नहि जेम के गधेडानां सींग, एवु प्रमाण आपना केहेवाने बा धक छे परतु साधक तो कोई नथी, तेम छतां हठ करी स्वकपोलकल्पि तनेज मानशो तो प्रेक्षावाननी पंक्तिमां कदापि दाखल नहि थई श को तेमज आ तमारा कथनमां इतरेतर आश्रय दूषणरूप वज्रनो प्रहा र पडे छे जेम के सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शु द्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय, जो सर्वशक्ति मान् सिद्ध थाय तो सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय, आ बनेमाथी ज्यां सुधी एक सिद्ध न थाय त्यांसुधी बीजुं कदीपण सिद्ध न थाय तेमज आ तमारा कथनमां चक्र क दूषण आवे छे, सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय ज्यारें सर्व शक्तिमान् सिद्ध थाय त्यारें सृष्टिनी पेहेला सामग्रीरहित केवल शुद्ध एक ईश्वर सिद्ध थाय, ज्यारे एम थाय त्यारे सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय, एम प्रगट चक्रक दूषण आवे छे

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध छे, पछी आप तेने सृष्टिक- र्त्ता केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष- जो ईश्वर सृष्टिना कर्त्ता प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थाय तो कोइने पण अमान्य न होय, अने तमारो अमारो ईश्वरविषयी विवाद पण कदी न होय, कारण के प्रत्यक्षमां विवाद होतोज नथी. परंतु ईश्वरनुं प्रत्यक्ष दर्शन तो आपना वेदमंत्रथी विरुद्ध छे. वेदमंत्र. अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुस्सशृणोत्यकर्णः ॥ सवेत्ति विश्वं नच तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥ आ मंत्रथी साबीत थायछे के ईश्वरने जाणनार कोइ छे नहि.

पूर्वपक्ष-कर्त्ता विना जगत् केम थइ गयुं? आ अनुमान प्रमाणथी ईश्वर सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय छे, ते आप केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष- आ आपना अनुमाननुं बीजा ईश्वरपक्षमां खंडन करवामां आवशे. उपर बतावेला प्रकारथी एक केवल उपादानादि सामग्री रहित, सृष्टिनी पेहेलां ईश्वर सिद्ध न थया तो पण अमे आगल चलावियें छियें. ज्यारे ईश्वरें आ जीवोने रच्या हता त्यारे १ निर्मल रच्या हता? २ पुण्यवाला रच्या हता? ३ पापवाला रच्या हता? ४ मिश्रित पुण्यपाप अर्धो अर्धवाला रच्या हता? ५ पुण्य अल्प पाप अधिक एवा रच्या हता? ६ किंवा पुण्य अधिक पाप अल्प एवा रच्या हता? जो प्रथम पक्ष ग्रहण करशो तो जगत्मां सर्व जीव निर्मलज होवा जोइये, पछी वेदादि शास्त्रद्वारा तेउने उपदेश करवो वृथा छे. तेमज वेदादि शास्त्रोना कर्त्ता पण मूढ सिद्ध थशे. कारण के जो प्रथमथीज जीव निर्मल छे तो तेउने माटे शास्त्र शा माटे रच्यां? जे वस्त्र निर्मल होय छे तेने काइपण बुद्धिमान् धोता नथी. जो कदापि धोवे तो ते महामूढ छे. आ कारणथी जे निर्मल जीवोना उपदेश निमित्त शास्त्र रचे ते पण मूढ छे.

पूर्वपक्ष-ईश्वरें तो जीवोने शुद्ध निर्मल अर्थात् सारा बनाव्या हता, परंतु जीवोए पोतानी इछाथी सारां अथवा भूंडां कामो करी लीधां छे, तेमां ईश्वरनो कांइ दोष नहि.

उत्तरपक्ष-जो ईश्वरें जीवोमां सारां अथवा बुरां काम करवानी शक्ति रची न होती तो पछी जीवोमां पुण्य अथवा पाप करवानी शक्ति क्यांथी आवी?

पूर्वपक्ष-शक्तियो तो जीवमां सर्व ईश्वरेंज रची छे, परंतु जीवोने बुरां

पोतानुं सत्तानाश करी लीधु आ प्रथम कलक ईश्वरने लागे छे, तथा ज्यारें ईश्वर पोतेज सर्वरूप थनी गया तो पछी वेदादि शास्त्र शा माटे व नाव्यां ? तेमज तेनो अभ्यास करवाथी शु फल थयु ? आ बीजु कलंक तथा ज्यारे वेदादि शास्त्र बनाव्यां त्यारें पोते पोताने ज्ञानी बनाववाने रच्यां ते उपरथी सिद्ध थयु के प्रथम तो पोते अज्ञानी हता आ त्रीजुं कलंक, तथा शुद्ध हता ते अशुद्ध बन्या कारण के जगत्रूप बनवानी मेहेनत करी जे निष्फल थई आ चोथुं कलंक, कोइ वस्तु जगत्मां सारी के बुरी नहि, आ पांचमु कलंक, शा माटे पोते पोताने संकटमां नाख्या आ छठु कलंक, इत्यादि अनेक कलंक आप ईश्वरने लगावो छो

पूर्वपक्ष–ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे, ते हेतुथी ईश्वर, उपादान कारण विनापण जगत् रची शकेछे

उत्तरपक्ष–आ जे आपनुं केहेवु छे ते प्यारी स्त्री अथवा मित्र मानशे परंतु प्रेक्षावान् कोईपण नहि माने, कारण के आ तमारा केहेवामां कोईपण प्रमाण नथी जेनु उपादानकारण होय नहि ते कार्य कदी थई शके नहि जेम के गधेडानां सींग, एवुं प्रमाण आपना केहेवाने बाधक छे परंतु साधक तो कोई नथी, तेम छतां हठ करी स्वकपोलकल्पितनेज मानशो तो प्रेक्षावानननी पंक्तिमां कदापि दाखल नहि थइ शको तेमज आ तमारा कथनमां ईतरेतर आश्रय दूषणरूप वज्रनो प्रहार पडे छे जेम के सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय, जो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय तो सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय, आ बनेमांथी ज्यां सुधी एक सिद्ध न थाय त्यांसुधी बीजुं कदीपण सिद्ध न थाय तेमज आ तमारा कथनमां चक्रक दूषण आवे छे, सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय ज्यारें सर्व शक्तिमान् सिद्ध थाय त्यारें सृष्टिनी पेहेलां सामग्रीरहित केवल शुद्ध एक ईश्वर सिद्ध थाय, ज्यारे एम थाय त्यारे सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय, एम प्रगट चक्रक दूषण आवे छे

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध छे, पछी आप तेने सृष्टिकर्त्ता केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष– जो ईश्वर सृष्टिना कर्त्ता प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थाय तो कोइने पण अमान्य न होय, अने तमारो अमारो ईश्वरविषयी विवाद पण कदी न होय, कारण के प्रत्यक्षमां विवाद होतोज नथी. परंतु ईश्वरनुं प्रत्यक्ष दर्शन तो आपना वेदमंत्रथी विरुद्ध छे. वेदमंत्र. अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुस्सशृणोत्यकर्णः ॥ सवेत्ति विश्वं नच तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥ आ मंत्रथी साबीत थाय-छे के ईश्वरने जाणनार कोइ छे नहि.

पूर्वपक्ष–कर्त्ता विना जगत् केम थइ गयुं? आ अनुमान प्रमाणथी ईश्वर सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय छे, ते आप केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष– आ आपना अनुमाननुं बीजा ईश्वरपक्षमां खंडन करवामां आवशे. उपर बतावेला प्रकारथी एक केवल उपादानादि सामग्री रहित, सृष्टिनी पेहेलां ईश्वर सिद्ध न थया तो पण अमे आगल चलावियें छियें. ज्यारे ईश्वरें आ जीवोने रच्या हता त्यारे १ निर्मल रच्या हता ? २ पुण्यवाला रच्या हता ? ३ पापवाला रच्या हता ? ४ मिश्रित पुण्यपाप अर्धो अर्धवाला रच्या हता ? ५ पुण्य अल्प पाप अधिक एवा रच्या हता ? ६ किंवा पुण्य अधिक पाप अल्प एवा रच्या हता ? जो प्रथम पक्ष ग्रहण करशो तो जगत्मां सर्व जीव निर्मलज होवा जोइये, पछी वेदादि शास्त्रद्वारा तेउने उपदेश करवो वृथा छे. तेमज वेदादि शास्त्रोना कर्त्ता पण मूढ सिद्ध थशे. कारण के जो प्रथमथीज जीव निर्मल छे तो तेउने माटे शास्त्र शा माटे रच्यां ? जे वस्त्र निर्मल होय छे तेने कोइपण बुद्धिमान् धोता नथी. जो कदापि धोवे तो ते महामूढ छे. आ कारणथी जे निर्मल जीवोना उपदेश निमित्त शास्त्र रचे ते पण मूढ छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वरें तो जीवोने शुद्ध निर्मल अर्थात् सारा बनाव्या हता, परंतु जीवोए पोतानी इछाथी सारां अथवा भूंडां कामो करी लीधां छे, तेमां ईश्वरनो कांइ दोष नहि.

उत्तरपक्ष–जो ईश्वरें जीवोमां सारां अथवा बुरां काम करवानी शक्ति रची न होती तो पछी जीवोमां पुण्य अथवा पाप करवानी शक्ति क्यांथी आवी ?

पूर्वपक्ष–शक्तियो तो जीवमां सर्व ईश्वरेंज रची छे, परंतु जीवोने बुरां

काम करवामां प्रवर्त्ताव्या नथी बुरां काम करवामां जीव पोतेज प्रवृत्त थयेलछे जेम के कोइ गृहस्थें पोताना प्रिय बालक पुत्रने खेलवा माटे एक रमकडुं दीधुं, हवे जो ते बालक ते खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख खोवे तो तेमा तेना पितानो शु दोष छे ? तेवीज रीतें ईश्वरें जीवोने जे हाथ, पग प्रमुख वस्तुउं आपीछे ते नित्य केवल धर्म करवाने वास्ते आपेली छे, पछी जे जीव पोतानी इछाथी ते वस्तुने पापकर्ममां प्रवर्त्तावे तो तेमां ईश्वरनो शु दोष छे ?

उत्तरपक्ष—हे जव्य ? आ जे तमे बालकनुं दृष्टांत आप्युं ते समीचीन नथी कारण के बालकना मातपिताने ए ज्ञान नथी के बालकने खेलवा वास्ते आपणे जे वस्तु आपियें छियें ते खेलवानी वस्तुथी आ बालक पोतानी आंख फोडी नाखशे, जो कदापि बालकना मातपिताने ए ज्ञान होत के आ बालक खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख फोडी नाखशे तो ते माता पिता कदापि तेना हाथमां ते खेलवानी वस्तु आपत नहि, जो कदी जाणवा छतां आपे तो ते तेनां मातपिता नथी परतु परम शत्रु छे तेवीज रीतें ईश्वर मातपिता तुल्य छे अने तमे अमे तेनां बालक छियें जो ईश्वर जाणता हता के में आ जीवोने रच्या, तेउंने हाथ, पग, मन इन्डियादि सामग्री आपी छे, आ जीव ते सामग्रीथी बहु पाप करीने नरकमां जानार छे, तो पछी ईश्वरें ते जीवने शा माटे रच्यो? जो कदी एम कहो के ईश्वर ए वात जाणता न होता के में धर्म करवाने आपेली सामग्रीथी पाप करीने ते जीव नरकमां जाशे, तो पछी ईश्वर आपना केहेवाथीज अज्ञानी, असर्वज्ञ, सिद्ध थाय छे जो कदी एम कहो के ईश्वर जाणता हता के आ जीव मारी आपेली सामग्रीथी पाप करीने नरक जवानो छे तो पछी अमने रचनार ईश्वर परम शत्रु थया के नहि ? प्रयोजन विना रांक जीवोने सामग्रीद्वारा पाप करावीने शा माटे तेउंने नरकमां नाख्या ? ज्यारे सामग्रीद्वारा प्रथम पाप कराव्यां अने पछी नरकमां जवानी शिक्षा करी त्यारे आ तमारा केहेवाथी ईश्वर करतां अधिक अन्यायी कोइ नथी, कारण के प्रथम तो ते जीवने रच्यो, पछी नरकमां नाख्यो बस आथीज तमे ईश्वरने अन्यायी,

असर्वज्ञ, निर्दय, अज्ञानी, वृथा मेहेनती इत्यादि कलंक दीधां. ते कारणथी निर्मल जीव ईश्वरें रच्या नथी ए प्रथम पक्षोत्तर.

द्वितीय पक्षोत्तर—जो एम कहो के ईश्वरें पुण्यवालाज जीव रच्याछे तो ते पण तमारुं केहेवुं मिथ्या छे. कारण के जो पुण्यवालाज सर्व जीव हता तो गर्भमांज अंधा, लंगडा, लूला, वहेरा, मूंगा होवापणुं, भूंडुं रूप, नीच अथवा निर्धन कुलमां जन्मवा पणुं, जावजीव दुःखी रेहेवुं, खावा पीवाने पुरुं न मलवुं, महाकष्टकारक मेहेनत करी पेट भरवुं, आ सर्व पुण्यना उदयथी होइ शकतुं नथी, वली पुण्य कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य केम लगावी दीधुं? जो कदी कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य लगावी दीधुं तो तेवीज रीतें धर्म कर्या विनाज जीवोने स्वर्ग तेमज मोक्ष केम नथी पहोंचाडी शकता? शास्त्रोपदेश करावीने, भूखें मरावीने, तृष्णा छोडावीने, राग द्वेष मिटावीने, घरवार तजावीने, साधु बनावीने, टुकडा मगावीने, दया, दम, दान, सत्यवचन, चोरीनो त्याग, स्त्रीनो त्याग, इत्यादि अनेक साधन करावीने पछी स्वर्ग मोक्षमां पहोंचाडवा; आ संकट ईश्वरें फोकट उत्पन्न करीने जीवोने शा माटे दुःख दीधुं. आ वातथी तो ए प्रतीत थायछे के ईश्वरने कांइ समजण नथी.

तृतीय पक्षोत्तर— जो कदी एम कहो के ईश्वरें पापसंयुक्तज जीव रच्या छे, तो पछी कर्या विनाज जीवोने पाप लगावी दीधां तेमां तो ईश्वरें अमारुं सत्तानाश करी दीधुं. हवे अमे कोनी पासे जइ विनति करियें के गुन्हा कर्या विना ईश्वर अमने पाप लगावे छे, जेथी आप तेमने मना करो के कर्याविना अमने पाप न लगावे; एवा अन्यायी ईश्वरनुं तो कदी नाम पण लेवुं न जोइयें. तथा जो ईश्वरें पापसंयुक्तज सर्व जीव रच्या छे, तो राजा, मंत्री, शेठ, सेनापति, धनवान् इत्यादिना घरमां उत्पन्न थवुं, नीरोगी काया, सुंदर रूप, सुंदर शरीर, घरमां आदर सन्मान, बहार यशकीर्त्ति, पंचेंद्रिय, विषयभोग, इत्यादि सामग्री प्राप्त थवानो पापथी कदी संभव होतो नथी. ते कारणथी जीवोने केवल पापवान् ईश्वरें रच्या नथी. इति.

चतुर्थ पक्षोत्तर—जो एम कहो के अर्धोअर्ध पुण्य पापवाला जीव ई-

श्वरें रच्या छे तो ते पक्ष पण यथार्थ नथी, कारण के श्ररधा सुखी श्र रधा दुःखी एवा पण सर्व जीव देखवामां श्रावता नथी इति

पंचम पक्षोत्तर– पांचमो पक्ष पण ठीक नथी, सुख थोडुं अने दुःख विशेष एवा पण सर्व जीव देखवामां नथी श्रावता, परंतु सुख विशेष अने दुःख अल्प, एवा बहु जीव देखवामां श्रावे छे इति

षष्ठ पक्षोत्तर– छठो पक्ष पण समीचीन नथी सुख घणु अने दुःख थोडुं एवा पण सर्व जीव देखवामा श्रावता नथी, दुःख बहु अने सुख अल्प, एवा बहु जीव देखवामां श्रावे छे श्रा हेतुथी ईश्वर जीवोने कोइपण व्यवस्थावाला रची शकता नथी तो पछी सृष्टिना कर्त्ता ईश्वर केम सिद्ध थइ शके छे ? कदी थइ शकता नथी तथा ज्यारे ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें ईश्वरने शुं दुःख हतुं ? अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे शु सुख थयु ?

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो सदा परम सुखी छे शु ईश्वरमां कांइ न्यूनता छे के ते न्यूनताने पूर्ण करवा वास्ते सृष्टि रचे छे ते तो जगत्मा पोतानी ईश्वरता प्रगट करवाने सृष्टि रचे छे

उत्तर पक्ष–ज्यारें ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें तो ईश्वरनी ईश्व रता प्रगट न होती अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे ईश्वरता प्रगट थइ तो प्रथम ज्यारें ईश्वरनी ईश्वरता प्रगट न होती थइ त्यारे तो ईश्वर बहुज उदास, तेमज अपूर्ण मनोरथवाला अने ईश्वरता प्रगट करवामां विह्वल हता श्रा हेतुथी अवश्य ईश्वरने दुःख होवुं जोइयें ज्यारें ईश्वर सृष्टिनी पेहेला एवा दुःखी हता त्यारे निरुद्यमी केम बेसी रह्या हता ? श्रा सृष्टिनी पेहेलां बीजी सृष्टि रचीने पोतानु दुःख केम दूर कर्यु न होतु ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरें जे सृष्टि रची छे ते जीवोने धर्म करावीने तेउने अनंत सुख देशे श्रा परोपकार वास्ते ईश्वरें सृष्टि रची छे

उत्तरपक्ष–धर्म करावीने जीवोने सुख देवुं ते तो तमारा केहेवा मु जब परोपकार थयो, परंतु जेउ पाप करीने नरकमां गया तेउना उपर शु उपकार कर्यो ? तेउने दुःखी करवाथी शु ईश्वर परोपकारी थइ शके छे?

१ सारो या प्रमाणसिद्ध सत्य

पूर्वपक्ष—तेउंने नरकमांथी काढीने पछी स्वर्गमां स्थापन करशे;

उत्तरपक्ष—तो पछी प्रथमज नरकमां केम जवा दीधा ?

पूर्वपक्ष—ईश्वरज सर्व पुण्यपापादि करावे छे. जीवने आधीन कांइपण नथी. ईश्वर जे चाहे छे ते करावे छे. जेम काष्ठनी पुतलीने बाजीगर जेम चाहे छे तेम नचावे छे अने पुतली स्वाधीन नथी तेम.

उत्तरपक्ष—जो जीवने कांइ आधीन नथी तो जीवने सारा नरसानुं फल पण न जोइयें. कारण के जो कोइ सरदार कोइ नोकरने फरमावे के तमे आ काम करो पछी नोकर सरदारना हुकम मुजब ते काम करे, अने ते काम सारुं अथवा नरसुं छे तो शुं पछी ते सरदार ते नोकरने कांइ शिक्षा करी शके छे ? कांइ पण करी शकता नथी. तेवीज रीतें ईश्वरनी आज्ञाथी जो जीवें पुण्य अथवा पाप कर्यां तो पछी पुण्य पापनुं फल जीवोने नज मलवुं जोइये. ज्यारें पुण्य पाप जीवनां कर्या थतां नथी त्यारें स्वर्ग तेमज नरक पण जीवने न होवां जोइयें. पछी जीवने, नरक, स्वर्ग, तिर्यक् तेमज मनुष्य ए चार गति पण न होय. ज्यारे चार गति न होय त्यारे संसार पण न होय. जो संसार न होय तो वेद, पुराण, तौरे, तजबूर, इंजिल प्रमुख शास्त्र पण न होय. ज्यारें शास्त्र न होय त्यारें शास्त्रना उपदेशक पण न होय, ज्यारें शास्त्रना उपदेशक पण होय नहि त्यारे ईश्वर पण नहि. जो ईश्वरज नहि तो पछी सर्व शून्यता सिद्ध थइ. आ कलंक केम मटशे ?

पूर्वपक्ष—आ जगत् बाजीगरनी बाजी जेवुं छे, अने ईश्वर तेना बाजीगर छे. तेथी ईश्वर आ जगत्ने रचीने खेलथी क्रीडा करेछे. नरक, स्वर्ग, पुण्य तेमज पाप कांइ नथी.

उत्तरपक्ष—जो ईश्वरें क्रीडाने माटे जगत्नी रचना करी तो क्रीडाज मात्र तेनुं फल थवुं जोइयें. परंतु आ जगत्मां तो कुष्टी, रोगी, शोकी, धनहीन, बलहीन, महादुःखी इत्यादि महाप्रलाप करी रह्याछे, जेउंने देखीने दयावश थवाथी अमारां रोम उंचां थायछे. तो शुं पछी ईश्वरने आ दुःखी जीवोने देखीने दया नथी आवती ? जो ईश्वरने दया नथी आवती तो पछी निर्दयपण कदी ईश्वर थइ शकेछे ? वली जे क्रीडा करवा वाला छे ते बालकनी पेठे रागी, द्वेषी, अज्ञानी होय छे. जो राग द्वेष छे

तो तेमां सर्व दूषण छे जो पोतेज अवगुणथी भरेला छे तो ते ईश्वर शेना ? ते तो संसारी जीवछे वली जो राग द्वेषवाला हशे तो सर्वज्ञ कदापि न हशे, जो सर्वज्ञ नहि तो तेने ईश्वर कोण कही शकेछे ?

पूर्वपक्ष—जीवोए करेलां पुण्य पापने अनुसारें ईश्वर फल दिये छे, तेमा ईश्वरने शु दोष छे ? जेवा जेणें (पुण्यपाप) कर्यां तेवा तेने फल दीधां

उत्तरपक्ष—आ तमारा केहेवाथी, आ ससार अनादि सिद्ध थइ गयो, वली ईश्वर कर्त्ता नहि एम सिद्ध थयुं वाह रे मित्र ? पोते पोतानी मेलेज मात थया कारण के जे जीव हाल छे, अने जे कांइ तेउने अ हियां फल मलेल छे, ते पूर्वजन्ममां करेलुं सिद्ध थयुं वली जे पूर्व जन्म हतो तेमा जे दुःख सुख जीवने मलेल हतुं, ते तेनी पेहेलांना पूर्वज न्ममां कर्युं हतु तेवी रीतें पूर्व पूर्व जन्ममां दुःख सुख करवां अने उत्तरोत्तर जन्ममा सुख दुःखने भोगववां, एम करतां संसार अनादि सिद्ध थायछे हवे विचारो के जगत्ना कर्त्ता ईश्वर केम सिद्ध थया ?

पूर्वपक्ष—अमें तो एकज परमब्रह्म पारमार्थिक सद्रूप मानियें छियें

उत्तर— जो एकज परम ब्रह्म सद्रूप छे, तो पछी आ जे सरल, रसाल, प्रियाल, हिताल, ताल, तमाल, प्रवाल प्रमुख पदार्थ अग्रगामी पणे क- री जे प्रतीत थाय छे ते शा कारणथी सत्स्वरूप नथी

पूर्वपक्ष—आ पूर्वोक्त पदार्थ जे प्रतीत थाय छे ते सर्व मिथ्या छे ते मज अनुमानप्रपच पण मिथ्या छे प्रतीत होवाथी जे एवा छे ते एवा छे, जेम के सीप, चांदीरूप, तेवोज आ प्रपंच छे आ अनुमानथी प्रपंच मिथ्यारूप छे अने एक ब्रह्मज पारमार्थिक सद्रूप छे

उत्तरपक्ष— हे पूर्वपक्षि ! आ अनुमान केहेवाथी आप तीक्ष्ण बुद्धि मान् नथी, तेज हवे बतावियें छियें आ जे प्रपंच तमे मिथ्यारूप माने ल छे ते मिथ्या त्रण तरेहनु होय छे एक तो अत्यत असत् रूप, बीजुं छे तो कांइ अन्य, अने प्रतीति होय अन्य तरेहनी, अने त्रीजु अनि र्वाच्य, आ त्रणे मिथ्यारूप प्रपंचमांथी कया प्रपंचने आप मानोछो ?

पूर्वपक्ष—आ त्रणे पक्षमांथी प्रथमना बे पक्षनो तोअमने स्वीकारज नथी त्रीजो अनिर्वाच्य पक्ष अमें मानियें छियें तेथी आ प्रपंच अनिर्वाच्यमिथ्यारूप छे

१ तेनां कारणरूप पाप पुण्य

उत्तरपक्ष–प्रथम तो आप ते कहो के अनिर्वाच्य शुं वस्तु छे? अर्थात् आप अनिर्वाच्य कइ वस्तुने कहो छो? (१) शुं वस्तुने केहेवावालो शब्द नथी? (२) अथवा शब्दनुं निमित्त नथी? प्रथमनो विकल्प तो कल्पनाज करवा योग्य नथी. आ सरल छे, आ रसाल छे, एवा शब्द तो प्रत्यक्ष सिद्ध छे. बीजो विकल्प लहियें, तो शुं शब्दनुं निमित्त ज्ञान नथी? के पदार्थ नथी? प्रथम पक्ष तो समीचीन नथी. सरल, रसाल, ताल, तमाल, प्रमुखनुं ज्ञान तो प्राणी प्राणी प्रत्ये प्रतीत छे. सर्व बुद्धिवंत जीव जाणे छे के सरल, रसाल, ताल, तमाल प्रमुखनुं ज्ञान अमने छे. बीजो पक्ष–पदार्थ भावरूप नथी? के अभावरूप नथी? जो एम कहो के पदार्थ भावरूप नथी अने प्रतीत थाय छे, तो आपने विपरीत आख्याति मानवी पडी, अने अद्वैतवादियोना मतमां विपरीत आख्याति मानवी ते महादूषण छे. बीजो पक्ष-जो पदार्थ अभावरूप नथी तो भावरूप सिद्ध थया, त्यारे तो सत्ख्याति मानवी पडी; अने ज्यारे अद्वैतमतनो अंगीकार कर्यो अने सत्ख्याति मानवी पडी त्यारे सत्ख्यातिना मानवाथी अद्वैतमतना मूलने कुहाडाथी कापी नाख्युं. एवी रीतें कदापि अद्वैतमत सिद्ध थशे नहि.

पूर्वपक्ष–भावरूप तथा अभावरूप ए बंने प्रकारें वस्तु नथी.

उत्तरपक्ष–अमें आपने पुछियें छियें के भाव तेमज अभाव आ बंनेना अर्थ जे लोकमां प्रसिद्ध छे तेज आपें मान्या छे? के तेनाथी विपरीत अन्य तरेहना अर्थ आपें मान्या छे? जो कदी प्रथम पक्ष मानशो तो ज्यां भावनो निषेध करशो त्यां अवश्य अभावने मानवो पडशे अने ज्यां अभावनो निषेध करशो त्यां अवश्य भावने कबुल करवो पडशे; कारण के बंने परस्पर विरोधी छे. तेथी एकनो निषेध बीजानो विधि अवश्य कबुल करावशे. ए रीतें अनिर्वाच्यता तो जड मूलथी नाश पामी. हवे बीजो पक्ष लेशो तो तेथी अमने कांइ हानि नथी, कारण के अलौकिक अर्थात् आपना मनःकल्पित शब्द तेमज शब्दनुं निमित्त जो नाश पामशे तो तेथी लौकिक शब्द तथा लौकिक शब्दनुं निमित्त कदापि नाश पामशे नहि; तो पछी अनिर्वाच्य प्रपंच केवी रीतें सिद्ध थशे? जो अनिर्वाच्य सिद्ध न थयो तो प्रपंच मिथ्या केम सिद्ध थायज? तो पछी एकज अद्वैत ब्रह्म पण केम सिद्ध थाय?

पूर्वपक्ष–अमें तो जे प्रतीत न थाय तेने अनिर्वाच्य कहियें छियें

उत्तरपक्ष–आ तमारा केहेवामां तो बहुज विरोध आवे छे जो कदी प्रपच प्रतीत थतो नथी तो आपें पोताना प्रथम अनुमानमा प्रपचने प्रतीयमान हेतुस्वरूपपणें शा माटे ग्रहण कर्यो ? अने प्रपचने अनुमान करती वेला धर्मिपणे शा माटे ग्रहण कर्यो ? जो एम कहेशो के प्रपचने धर्मीपणे अथवा प्रतीयमान हेतुपणे ग्रहण करवामा शुं दोष छे? तो पछी आपें उपर जे प्रतिज्ञा करी हती के अमे तो जे प्रतीत न होय तेने अनिर्वाच्य कहियें छियें, तो हवे प्रपच अनिर्वाच्य केवी रीतें सिद्ध थयो ? ज्यारे प्रपच अनिर्वाच्य नहि त्यारे तो भावरूप अथवा तो अभावरूप सिद्ध थशे आ बने पक्षमा कोइपण रूपें प्रपच मानवाथी पूर्वोक्त विपरीतख्याति तथा सतख्याति रूप बने दूषण वली आपना गलामां रसी नाखे छे हवे भागी क्या जशो ? वली अमे आपने पुछियें छियें के आ प्रपचने तमे जे अनिर्वाच्य मानोछो ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी मानोछो ? के अनुमान प्रमाणथी ? प्रत्यक्ष प्रमाण तो आ प्रपंचने सत स्वरूपज सिद्ध करेछे जेवा जेवा पदार्थ छे, तेवु तेवुज प्रत्यक्ष ज्ञान उत्पन्न थाय छे वली प्रपचस्वरूप एवुं छे के, परस्पर जुदी जुदी जे वस्तुछे ते पोत पोताना स्वरूपमा भावरूप छे, अने बीजा पदार्थना स्वरूपनी अपेक्षायें अभावरूप छे आ इतरेतर विविक्त वस्तुओनेज प्रपंच रूप मानेल छे, तो पछी प्रत्यक्ष प्रमाण, प्रपचने अनिर्वाच्य केवी रीतें सिद्ध करी शके छे ?

पूर्वपक्ष–उपर बतावेल अमारो जे पक्ष छे तेने प्रत्यक्ष कांइ पण हानि करी शकतुं नथी, कारण के प्रत्यक्ष तो विधायकज छे जो कदी प्रत्यक्ष एक वस्तुमा बीजी वस्तुना स्वरूपनो निषेध करे तो अमारा पक्षने बाध करनार ठरे, परंतु प्रत्यक्ष प्रमाण तो एवु नथी प्रत्यक्ष प्रमाण तो अन्य वस्तुमा अन्य वस्तुनु स्वरूप निषेध करवाने बुंठु (कुण्ठ) छे

उत्तर पक्ष–आ पण आपनु कहेवु असत्य छे अन्य वस्तुना स्वरूपनो निषेध कर्या विना प्रस्तुत वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो कदापि बोध नहि थाय पीलु इत्यादि वर्णोना अभावनो ज्यारे बोध थशे, त्यारेज कालुं एवा रूपनो बोध थशे तेमज ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाणथी यथार्थ व

स्तुस्वरूप ग्रहण करी शकाशे, त्यारेज अवश्य अपर वस्तुना स्वरूपनो निषेध पण त्यां जाणी शकाशे. जो कदी अन्य वस्तुना निषेधने अन्य वस्तुमां प्रत्यक्ष नहि जाणशो तो ते वस्तुना विधिस्वरूपने पण प्रत्यक्ष नहि जाणी शको, केवल जे वस्तुना स्वरूपने ग्रहण करवुं छे तेज अन्य वस्तुना स्वरूपनुं निषेध करावचुं छे. ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाण विधि अने निषेध बंनेने ग्रहण करे छे, त्यारे तो प्रपंच मिथ्यारूप कदापि सिद्ध नहि थाय, ज्यारे प्रपंच मिथ्यारूप प्रत्यक्ष प्रमाणथी न सिद्ध थयो, त्यारे पछी परम ब्रह्मरूप एकज अद्वैत तत्व केवी रीतें सिद्ध थयुं ? वली जो तमे प्रत्यक्षने नियमपूर्वक विधायकज मानशो तो तो विद्यानी पेठे अविद्यानो पण विधि तमारे मानवो पडशे. हवे आ ब्रह्म अविद्यारहित प्रत्यक्ष प्रमाणथी ग्रहण कराय त्यारे तो अविद्या पण प्रत्यक्षथी निषेध ग्रहण थशे. पछी जे तमारुं एम केहेवुं छे के प्रत्यक्ष जे छे ते विधायकज छे परंतु निषेधक नथी ते केवुं प्रमाणरहित उन्मत्तवचन छे? हवे जे अनुमान बतावचामां आवे छे तेथी साबीत थशे के आपना अनुमाननो पक्ष बाधित छे. अमारुं अनुमान एवुं छे के, प्रपंच मिथ्या नथी, असत्‌थी विलक्षण होवाथी; जे असत्‌थी विलक्षण छे ते आवो छे, जेवो आत्मा छे तेवोज आ प्रपंच छे. तथा प्रतीयमान जे आपनो हेतु छे ते ब्रह्मात्मानी साथे व्यभिचारी छे, जेम के ब्रह्मात्मा प्रतीयमान तो छे परंतु मिथ्यारूप नथी, जो एम कहो के ब्रह्मात्मा अप्रतीयमान छे तो वचनगोचर[1] नहि थाय, जो वचनगोचर[2] नथी तो तो आपने मुंगा बनवुं ठीक छे, कारण के ब्रह्म विना बीजुं तो कांइ छे नहि, अने जे ब्रह्मात्मा छे ते प्रतीयमान नथी, तो पछी आपने अमे मुंगा विना बीजुं शुं कहियें ? प्रथम अनुमानमां आपें जे छीपनुं दृष्टांत आप्युं हतुं ते साध्यविकल छे, कारण के जे छीप छे तेज प्रपंचनी अंतर्गत छे, अने आप तो प्रपंचने मिथ्यारूप सिद्ध करवा चाहोछो, ते कदापि सिद्ध थइ शकतुं नथी. जे साध्य होय तेज दृष्टांतमां कही शकाय. जो छीपनुं पण अत्यार सुधी सत् असत् पणुं सिद्ध नथी तो तेने दृष्टांतमां शा माटे लाववी जोइयें ? वली अमें आपने पुछियें छियें के आ जे तमे प्रथम अनुमान, प्रपंचने मिथ्या

---

१ वाणीने विषयरूप अर्थात् निर्वचनीय. २ निर्वचन योग्य.

सिद्ध करवाने कर्खुं हतु ते अनुमान, प्रपचथी भिन्न छे के अभिन्न छे ? जो कहो के भिन्न छे तो पछी सत्य छे के असत्य छे ? जो एम कहो के सत्य छे तो ते अनुमानना सत्यनी पेठे प्रपच पण सत्यस्वरूपज छे जो एम कहो के असत्यस्वरूप छे तो पछी शु शून्य छे ? के अन्यथा ख्यात छे ? के अनिर्वचनीय छे ? प्रथमना बने पक्ष तो कदापि साध्यना साधक नथी, मनुष्यना शृगनी पेठे, तथा छीपना रूपानी पेठे अने त्रीजो जे अनिर्वचनीय पक्ष छे तेनो तो संभवज नथी, ते पोताना साध्यने केम सिद्ध करशे ?

पूर्वपक्ष–अमारू जे अनुमान छे ते व्यवहार सत्य छे ते कारणथी असत्य नथी पछी पोताना साध्यने केम साधी शकतु नथी ? मतलब के साधीज शकेछे

उत्तरपक्ष–अमे आपने पुछियें छियें के आ व्यवहार सत्यनु शु स्वरूप छे ? व्यवहरतीति (व्यवहार) एम जो तेनी व्युत्पत्ति करियें तो तो ज्ञाननुंज नाम व्यवहार ठर्खुं, ज्ञानथी जे सत्यछे, ते पारमार्थिकज छे, आ पक्षमां सत् ख्यातिरूप प्रपच सिद्ध थयो ज्यारे प्रपच सत् सिद्ध थयो त्यारे तो एकज परम ब्रह्म सद्रूप अद्वैत तत्त्व कोइ पण रीतें सिद्ध नहि थइ शके, जो कदी कहो के व्यवहार नाम शब्दनु सत्य छे तो पछी आपने पुछियें छियें के जो व्यवहार नाम शब्दनु छे तो पछी शब्द, स्वरूपथी सत्यछे ? के असत्य छे ? जो एम कहो के शब्द सत्स्वरूप छे तो शब्दनी पेठे प्रपच पण सत्स्वरूप छे जो एम कहो के शब्द असत् स्वरूप छे तो पछी ब्रह्मादि, शब्दथी कह्यां थकां केवी रीतें सत्स्वरूप थइ शकशे ? कारण के जे पोतेज असत्स्वरूपछे ते बीजानी व्यवस्था करवाना के केहेवाना हेतुरूप कदी थइ शकता नथी

पूर्वपक्ष–जेम खोटो रूपियो साचा रूपियानी जेम क्रयविक्रयादि व्यवहारमां चालवाथी साचो रूपियो मनायछे, तेवीज रीतें अमारु अनुमान अगर जो के असत्स्वरूपछे तो पण जगतमां सत् व्यवहारथी प्रवर्त्तवाथी व्यवहार सत् छे, ते कारणथी पोताना साध्यने सिद्ध करनार छे

उत्तरपक्ष–हे भव्य ! आ तमारा केहेवाथी तमारु अनुमान पारमार्थिक असत्स्वरूप छे पछी जे दूपण असत्पक्षमां आपेलां छे ते सर्वे

अहींयां लागु पडेछे. जो एम कहेशो के अमे अनुमानने प्रपंचथी अभेद मानियें छियें तो तो प्रपंचनी पेठे अनुमान पण मिथ्यारूप सिद्ध थयुं, पछी तो पोताना साध्यने केम साधी शकशे? आ पूर्वोक्त विचारथी प्रपंच मिथ्यारूप नथी, परंतु आत्मानी पेठे सत्रूपछे, तो पछी एकज ब्रह्म अद्वैत तत्त्वछे आ तमारुं केहेवुं केवी रीतें सत्य थइ शकेछे? कदी सत्य थइ शकशे नहि.

पूर्वपक्ष–अमारी उपनिषदोमां तथा शंकर स्वामिना शिष्य आनंदगिरि, शंकरदिग्विजयना त्रीजा प्रकरणमां लखेछे केः–“ परमात्मा जगदुपादानकारणमिति ” परमात्मा जे छे तेज आ सर्व जगत्नुं कारण छे, कारण पण केवुं? उपादान रूपछे. उपादान कारण तेने कहियें के जे कारण होय तेज कार्यरूप थइ जाय,आ केहेवाथी एम सिद्ध थयुं के जे कांइ जगत्मां छे ते सर्व कांइ परमात्माज पोते बनी गया छे,तेथी जगत् परमात्मा रूपज छे हवे तमे सृष्टिकर्त्ता ईश्वर केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष–वाह रे नास्तिकशिरोमणि? आप जे कांइ कहो छो ते विचार करीने कहो छो के केम? आ तमारा केहेवाथी तो पूर्ण नास्तिकपणुं तमारा मतमां सिद्ध थाय छे. जुओ.ज्यारे सर्व जगत्स्वरूप परमात्म रूपज छे, त्यारे तो नथी कोइ पापी, के नथी कोइ धर्मी; नथी कोइ ज्ञानी के नथी कोइ अज्ञानी; नथी नरक के नथी स्वर्ग; नथी साधु के नथी चोर; नथी सत्शास्त्र के नथी मिथ्या शास्त्र; तेमज जेवा गोमांस भक्षी तेवाज अन्नभक्षी; जेवुं स्वभार्यासंग कामसेवन, तेवुंज माता, बेहेन, दीकरी संग कामसेवन, जेवा चंडाल तेवाज ब्राह्मण; जेवा गद्धा तेवा संन्यासी, कारण के ज्यारे सर्व वस्तुना कारण ईश्वर परमात्माज थयां त्यारे तो सर्व जगत् एकरस एक स्वरूप छे, बीजुं तो कांइ छे नहि.

पूर्वपक्ष–अमें तो एक ब्रह्म मानिये छियें,अने एक माया मानिये छियें, तेथी तमे जे उपर बहु आल जंजाल लख्युं ते सर्व मायाजन्य छे, अने ब्रह्म तो सच्चिदानंद एकज शुद्धस्वरूप छे.

उत्तरपक्ष–हे अद्वैतवादि! आ जे तमे पक्ष मान्यो छे ते बहुज असमीचीन छे. जुओ. माया जे छे ते ब्रह्मथी भिन्न छे के अभिन्न छे? जो कहो के भिन्न छे तो जड छे के चेतन छे? जो जड छे तो नित्य छे के

अनित्य छे ? जो कहो के नित्य छे तो अद्वैतमतना मूलनेज भस्म करे छे, कारण के ज्यारे ब्रह्मथी भेद रूप थइ, जडरूप थइ अने नित्यरूप थइ त्यारे तो पछी तमे पोते पोतानाज केहेवाथी द्वैतपथ सिद्ध कर्यो, अने अद्वैतपथ जडमूलथी नाश पाम्यो जो एम कहो के अनित्य छे तो द्वैतता कदी दूर नहि थाय, कारण के जे नाशवंत छे ते कार्यरूप छे, अने जे कार्य छे ते कारणजन्य छे, तो पछी ते मायानु उपादान कारण शु छे ? ते केहेवु जोइयें जो एम कहो के वीजी माया तो तो अनवस्था दूषण छे, अने अद्वैत त्रणे कालमां कदापि सिद्ध नहि थाय जो कदी ब्रह्मनेज उपादान कारण मानशो तो तो ब्रह्मज पोते सर्व काइ थनशे वली पूर्वोक्त दूषण आव्या जो कदी मायाने चैतन्य मानशो तो पण तेना तेज पूर्वोक्त दूषण आवशे, जो एम कहेशो के माया ब्रह्मथी अभेद छे तो तो ब्रह्मज केहेवुं जोइयें, माया नहि केहेवी जोइये

पूर्वपक्ष—अमे तो मायाने अनिर्वचनीय मानिये छियें

उत्तरपक्ष—आ अनिर्वचनीय पक्षनुं उपर खंडन करी आव्या छियें, तेवीज रीतें अहींयां करवुं वली अनिर्वचनीय जे शब्द छे तेमां निस् जे उपसर्ग छे तेनो अर्थ तो निषेधरूप कर्यो छे कलाप व्याकरण जुओ वाकी जे शब्द छे ते या तो भावनो वाचक छे अथ वा तो अभावनो वाचक छे ? जो भावनो निषेध करशो तो अभाव आवशे अने जो अभावनो निषेध करशो तो भाव आवी जशे आ भाव अभाव वे उपरांत त्रीजु वस्तुनु रूप कोइ नथी ते कारणथी अनिर्वचनीय शब्द वंन्नी पुरुषोए छलरूप रचेलो प्रतीत थाय छे आ केहेवाथी द्वैतज सिद्ध थयुं, अद्वैत नहि

पूर्वपक्ष—आ जे अद्वैतमत छे, तेना मुख्य आचार्य शंकरस्वामी छे, जेणें सर्व मतोनु खन्डन करी अद्वैतमत सिद्ध करेल छे, तो पछी एवा शंकरस्वामी, साक्षात् शिवना अवतार, सर्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी, शीलवान्, सर्व सामर्थ्ययुक्त, तेमना अद्वैतमतनु खन्डन करनार कोण छे ?

उत्तरपक्ष—अहो वहाला मित्र !! आपनी समजण मुजब तो जरूर जेम आप कहो छो तेमज छे, परंतु शंकरस्वामिना शिष्य आनंदगिरियें शंकर दिग्विजयना अठावनमा प्रकरणमां शंकरस्वामिनुं जे वृत्तांत लखेल छे ते

वांचवाथी तो एम प्रतीत थाय छे के शंकरस्वामी सर्वज्ञ नहि पण कामी छे, अज्ञानी छे, तेमज असमर्थ छे. ते लखाणथी एम पण प्रतीत थाय छे के वेदांतियोनुं अद्वैत ब्रह्मज्ञान ज्यां सुधी आ स्थूल देह रहे छे त्यां सुधीज रहे छे; परंतु आ शरीर छूट्या पछी कोइ वेदांतियोने ब्रह्मज्ञान रेहेशे नहि.

पूर्वपक्ष–ए केवुं शंकरस्वामिनुं वृत्तांत छे जेथी तमारी पूर्वोक्त विना सिद्ध थाय छे?

उत्तरपक्ष–जो आपने वृत्तांत सांभलवुं छे तो अमारे ढील नथी. हमणांज बतावियें छियें. "ज्यारे शंकरस्वामियें मंडनमिश्रनो पराजय कर्यो, त्यारे मंडनमिश्रे यतिव्रत लीधुं, अने मंडनमिश्रनी पत्नी सरसवाणी पोताना पतियें यतिव्रत लीधाथी ब्रह्मलोकमां चाली, सरसवाणीने गमन करती देखीने शंकरस्वामियें जीवन दुर्गा मंत्रथी दिग्बंधन कर्युं; पछी केहेवा लाग्या के हे सरसवाणि! तुं ब्रह्मशक्ति छो, ब्रह्मना अंशभूत मंडनमिश्रनी तुं पत्नीछो, उपाधियकी सर्वने फलित छो, ते कारणथी मारीसाथे प्रसंग लइने पछी तमारे गमन करवुं योग्य छे. पछी सरसवाणीयें शंकरस्वामिने कह्युं के पतिना संन्यासथी प्रथमज वैधव्य पणाना भयथी में पृथ्वी तजी छे, तेथी हवे पृथ्वीनो स्पर्श नहि करुं. हे यति! तुं तो पृथ्वीपर स्थित छो तेथी तारा प्रसंगमाटे एकविषय स्थिति केम होय. एम शंकरस्वामिने केहेनारीने फरी शंकरस्वामियें कह्युं के–हे माता! तो पण पृथ्वीथी उंचे छ हाथ आकाशमां रहो अने मारी साथे सर्व वचननो प्रपंच संचार करीने पछी गमन करो. त्यारबाद शरुआतमां शंकरस्वामि साथे सर्वशास्त्र, वेद, इतिहास, पुराणोविषे समय प्रसंग करीने शंकरनो तिरस्कार करवामाटे जेमां दुःखें प्रवेश थइ शके छे एवुं जे कामशास्त्र तेना नायक तथा नायिकाभेद संबंधी, विस्तार पूर्वक सरसवाणी शंकरने पूछवा लागी, परंतु शंकरस्वामी ते विषयने जाणता न होता तेथी उत्तर दइ शक्या नहि. मौन रह्या. पछी सरसवाणी शंकरस्वामिने सत्य केहेवा लागी के आ शास्त्र तमारा जाणवामां आव्युं नथी. निश्चयपूर्वक ते शास्त्र तो हुंज जाणुं छुं. अवसरना जाणनार शंकर स्वामी केहेवा लाग्या के–हे माता! आप अहींयांज छ महिना रहो, पछी सर्व अर्थनो निश्चय करी हुं तमारा प्रश्ननो उत्तर आपीश. त्यार-

थाव शकरस्वामी आग्रहपूर्वक सरस वाणीने त्याज आकाशमड लमां स्थापन करीने तथा सर्व शिष्योने योग्य स्थानकें मोकलीने १ हस्तामलक २ पद्मपाद ३ विधिवत् ४ आनदगिरि ए चार शिष्यो सहवर्तमान पूजाता थका ते नगरथी पश्चिमदिशा नामा गढमा गया सरसवाणीना प्रश्नोनो उत्तर जाणवा माटे, ते नगरनो राजा मरी गयो हतो, अने तेनु शरीर ते समये चितामा प्रज्वलित थतु हतु ते शरीरने देखीने, शकरस्वामियें पोतानु शरीर ते नगर पासेना एक पर्वतनी गुफामा स्थापन करीने शिष्योने कह्यु के तमारे आ शरीरनु रक्षण करवु, अने पोते परकायप्रवेश विद्याथी, लिंगशरीरसयुक्त, अभिमानसहित, ते राजाना शरीरमा ब्रह्मरंध्रथी प्रवेश कर्यो तत्काल राजा सजीवन थया, शीतोपचार कर्यो, अने उत्सव करी तेने नगरमा लाव्या, राजा मृत्यु पाम्या नथी एम प्रसिद्ध करी दीधु हवे शकर स्वामिने लोकोयें राज्या सनपर स्थापन कर्या पछी राज्यसिंहासनपरथी उठी स्वामिजी पट्टरा णीना मेहेलमा गया त्या जइ राणीसाथे कामक्रीडा करवा लाग्या हवे शकरस्वामिनी कुशलताथी तेने आलिंगन करवाथी सुख सभोग उत्पन्न थयो, तेथी शकरस्वामियें राणीना मुखनी साथे पोतानु मुख जोड्यु, पोतानी छाती राणीना बन्ने स्तनो पर लगाडी, तेवीज रीतें नाभि पण नाभि साथे जोडी, पोताना पगथी राणीना पग संकोच्या, अर्थात् जघा मां जघा मेलवी, अर्थात् एक शरीरवत् थइ गया बने जणा अत्यत गाढ आलिंगन करवा लाग्या, शंकरस्वामी राणीना कक्षास्थानमा हस्त स्पर्श करवाथी बहुज सुखमग्न थया राणी तेना आलाप, चतुराई देखी चित्तमा विचारवा लागी के शरीरमात्रथी तो आ मारो पति छे, परंतु तेनो जीव मारो पति नथी, आ कोइ सर्वज्ञ छे एवो विचार क- रीने राणीयें पोताना नोकरोने चारे दिशामां मोकल्या एवा फरमानथी के पर्वत अथवा गुफामां बार योजन सुधीमां जे जे शरीर जीवरहित होय ते सर्व चितामां भस्म करी द्यो शंकरस्वामी विषयमा अत्यत लुब्ध थया राणीना नोकरो शकरस्वामिना शरीरनु रक्षण करनारा चार शिष्योने देखी ते शरीर लइ चितामां राखी तेने अग्निसंस्कार करवा लाग्या शकरस्वामिना चारे शिष्यो नगरमां आव्या, त्या स्वामिजीने काम

लोलुप तथा विषयमां अति आसक्त देखीने राजा (शंकरस्वामी) सन्मुख नाटक करवा लाग्या. शंकरस्वामिने परोक्तिथी प्रतिबोध करवा लाग्या. ते परोक्ति नीचे मुजब.

(१) " यत्सत्यमुख्यशब्दार्थानुकूलं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (२) नह्येतत्त्वं विदितं नृषु भावं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (३) विश्वोत्पत्यादिविधिहेतु तत्त्वं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (४) सर्वचिदात्मकं सर्वमद्वैतं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्? (५) परतार्किकैरीश्वरसर्वहेतु, स्तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (६) यद्वेदांतादिभिर्ब्रह्म सर्वस्थं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (७) यज्जैमिनिनोक्तमखिलकर्म, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (८) यत् पाणिनिः प्राह शब्दस्वरूपं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन् (९) यत् सांख्यानां मतहेतुभूतं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१०) अष्टांगयोगेन अनंतरूपं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (११) सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१२) नह्येतददृश्यप्रपंचं तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१३) यद् ब्रह्मणोब्रह्मविषावीश्वराद्यभवन्, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१४) त्वद्रूपमेवमस्माभिर्विदितं राजन्! तव पूर्वयत्याश्रमस्थम् " आ परोक्तियोथी राजा प्रतिबोध पाम्या, सर्व विद्यमान राजाना देहमांथी निकलीने चाल्या गया, पर्वतनी कंदरामां शोधतां शरीर प्राप्त न थयुं, एटलामां विशेष शोध करतां शरीरने चितामां दीठुं, देखतांज तेमां कपालना मध्यथी प्रवेश कर्यो. शरीरनी आसपास चारे बाजुए अग्नि सलगतो हतो तेथी निकलवुं दुष्कर थयुं, एटले लक्ष्मीनृसिंहनी स्तुति करी, स्तुति करतांज लक्ष्मीनृसिंहें स्वामिजीने जीवता अग्निमांथी बहार काढ्या. इति.

हे भव्य! हवे विचार करी जुओ. में आपने प्रथम जे कह्युं हतुं ते सत्य छे के नहि? प्रथम तो (१) ज्यारे सरसवाणीयें पुछेला प्रश्नोनो उत्तर शंकरस्वामी न आपी शक्या, त्यारे हवे कयो बुद्धिमान् निष्पक्षपाती स्वामिजीने सर्वज्ञ कही शके छे (२) वली ज्यारे पटराणी साथे विषयसेवन कर्युं त्यारे कामी केहेवामां कांइ पण शंका रहेछे? (३) अने ज्यारे शिष्योयें आवीने प्रतिबोध कर्यो त्यारे अज्ञानी पण अवश्य सावीत थया. (४) अने ज्यारे चितामांथी निकली शक्या नहि, अने

कढ़वाने लक्ष्मीनृसिंहनी स्तुति करी अने लक्ष्मीनृसिंहें आवीने सघला अभिमाथी काढ्या, त्यारे शंकरस्वामी असमर्थपण सिद्ध थया हवे ज्यारे शंकरस्वामियें फरीथी आवीने सरसवाणीना प्रश्नोना उत्तर आप्या, त्यारे सरसवाणीयें कह्यु–हे स्वामिन्! तुं सर्वज्ञ छो जुओ के–मरण पामेला राजाना शरीरमां प्रवेश करीने, तेहनी राणी साथे विषयसेवन करीने, तेमज राणी पासेथी कांइक कामशास्त्रनी वातो शीखीने शु सर्वज्ञ थइ शकाय छे? सर्वज्ञ तो थइ शक्या नहि, परतु आ तो गड्डा छटनो न्याय थयो सरसवाणीयें स्वामिने सर्वज्ञ कह्या, अने स्वामियें सरसवाणीने सर्वज्ञ कही दीधी वाह शु सर्वज्ञोनी जोडी मली? सरसवाणी ब्रह्मनी शक्ति थइ, वली स्त्री बनीने मडनमिश्रनी साथे विषयसेवन करवा लागी, पछी सर्वज्ञ पण बनी गइ, तेम शकरस्वामी परस्त्री साथे विषयसेवन करी, कांइक कामशास्त्र शीखी सर्वज्ञ थइ गया, आ ते गड्डाछटनो न्याय थयो के बीजुं शु थयुं? ज्यारे शकरस्वामी पोतानु स्थूल शरीर छोडी राजाना शरीरमा दाखल थया, अने ब्रह्मविद्या सर्वे भूली गया त्यारे तो शिष्योने उपदेश करवो पड्यो जो न भूली गया होत तो तेउने तत्त्वमसिनो उपदेश करवानी शी जरुर हती? ज्यारे शकरस्वामी स्थूल शरीरने बवली शक्या, अने परब्रह्मविद्याने भूली गया, त्यारे तो ब्रह्मविद्यानो संबध, न लिंगशरीरनी साथे रह्यो के न आत्मानी साथे रह्यो, परंतु स्थूल शरीरनीज साथे रह्यो, तेथी एम सिद्ध थायछे के– ज्यारे वेदांती मरण पामेछे त्यारे तेनु ज्ञानपण नाश पामेछे कारण के स्थूलशरीरनी साथेज ज्ञाननो संबध रहेछे, आत्मानी साथे रेहेतो नथी वली आपें एम कह्यु हतु के– शंकरस्वामियें प्रगट कथन करेला अद्वैत मतने कोण खन्डन करी शकेछे? तो हे भव्य! ज्यारे शकरस्वामिनु चरित्रज असमजसछे, तो पछी तेनो कथन करेलो मत कोण सयुक्तिक समजी शके छे?

पूर्वपक्ष – "पुरुषएवेदं" इत्यादि श्रुतियोथी अद्वैतज सिद्ध थायछे

उत्तरपक्ष – आ पण तमारू केहेवुं असत् छे, कारण के जो पुरुषमात्ररूप अद्वैततत्त्व होय तो तो आ जे कोइ सुखी, कोइ दुःखी इत्यादि देखाय छे ते सर्व परमार्थथी असत् थइ जशे ज्यारे एम थशे त्यारे आ जे केहेवुं छे के– "प्रमाणतोऽधिगम्य संसारनैर्गुण्यं तद्विमुखया प्रज्ञया

तदुच्छेदाय प्रवृत्तिरित्यादि—अर्थः—संसारनुं निर्गुणपणुं प्रमाणथी जाणीने, संसारथी विमुख बुद्धि थइने, आ संसारनो उछेद करवामाटे प्रवृत्ति करे. पछी आ केहेवुं ते आकाशना फुलना सुगंधनुं वर्णन करवा सरखुं छे, कारण के ज्यारे अद्वैतरूपज तत्त्व छे त्यारे तो नरकादि जवभ्रमणरूप संसार क्यां रह्यो ? के संसारने निर्गुण जाणी तेनो उछेद करवानी प्रवृत्ति थाय.

पूर्वपक्षः— तत्त्वथी पुरुष अद्वैतमात्रज छे, अने आ जे संसार निर्गुण वर्णन करेल छे, ते जेम चित्रामण करेली स्त्रीनां सर्व अंगोपांग सारां नरसां प्रतीत थाय छे तेमज सर्व संसार प्रतीत थायछे, सर्व जीवोने हमेशां तेमज प्रतिभासन थइ रहेलछे. परंतु चित्रामण करेली स्त्रीना अंगोपांगना सारा नरसापणानी पेठे सर्व भ्रांतिरूप अथवा भ्रांतिजन्य छे.

उत्तरपक्षः—आ जे तमारूं केहेवुं ते असत् छे, आ वातमां कांइ वास्तविक प्रमाण नथी. जो कदि अद्वैत सिद्ध करवाने पृथग्भूत प्रमाण मानशो तो तो द्वैतापत्ति थशे, कारण के प्रमाण विना कोइनो पण मत सिद्ध थतो नथी, जो कदि प्रमाण विनाज सिद्ध मानशो, तो तो सर्व वादियो पोत पोताना मानेला मतने सिद्ध करी लेशे. वली भ्रांति पण प्रमाणभूत अद्वैतथी भिन्न न मानवी जोइये, नहि तो प्रमाणभूत अद्वैत अप्रमाणज थइ जशे, भ्रांति ज्यारे अद्वैतनुंज रूप थइ त्यारे तो पुरुष रूप थइ, अने भ्रांतिस्वरूपवाला पुरुषज छे नहि, त्यारे तत्त्वव्यवस्था तो कांइपण सिद्ध न थइ. जो कदि भ्रांति भिन्न मानशो तो द्वैतापत्ति आवशे अने अद्वैत मतनी हानि थशे. जो कदी स्तंभने कुंभादिकथी भेद मानवो तेनेज भ्रांति केहेशो तो निश्चयथी सत्स्वरूप कुंभादि कोइ जगें तो जरूर हशे. अभ्रांतिने दीठा विना कदापि भ्रान्ति देखवामां आवशे नहि. पूर्वें जेणें साचो सर्प दीठो नथी तेने दोरडामां सर्पनी भ्रांति कदापि नहि आवे. यथा—नाद्दृष्टपूर्वसर्पस्य, रज्ज्वां सर्पमतिः क्वचित् ॥ ततः पूर्वानुसारित्वाद्, भ्रांतिरभ्रांतिपूर्विका ॥ १ ॥ आ कथनथी अद्वैततत्त्व खंमन थइ गयुं. वली पुरुष अद्वैततत्त्व अवश्य बीजाने निवेदन करवुं, पोते पोताने नहि. पोतामां तो व्यामोह छे नहि. जो कदी केहेनारमां व्यामोह होय तो तो अद्वैतनी प्रतिपत्ति (सिद्धि) कदापि नहि थाय.

पूर्वपक्ष –ज्यारे आत्माने व्यामोह छे त्यारे तो अद्वैततत्त्वनो उपदेश कर्यो जाय छे?

उत्तरपक्ष – ज्यारे आत्मानो व्यामोह दूर थशे त्यारे तो आत्मा अवश्य अवस्थांतरने प्राप्त थशे, ज्यारे अवस्था बदलाशे, त्यारे अवश्य द्वैतापत्ति थइ जशे वळी ज्यारे अद्वैत तत्त्वनो उपदेशक परने उपदेश करशे त्यारे अवश्य परने मानवो पडशे पछी अद्वैततत्त्व परने निवेदन करवु अने अद्वैततत्त्व मानवु आ कथन तो मारो पिता कुंवारो (बाल) ब्रह्मचारी छे तेना जेवु थयु आ वचन केहेवाथी उन्मत्ताइनो दोष आवशे पोताने अने परने बंनेने जो मानशे तो द्वैतापत्ति अवश्य थशे आ कारणथी अद्वैतमत युक्तिविकल छे

पूर्वपक्ष – परमब्रह्मरूप सिद्धज सकल भेदज्ञान प्रत्ययोना निरालंबनपणांनी सिद्धि छे

उत्तरपक्षः–आ कथन पण तमारू ठीक नथी कारण के परम ब्रह्मनीज सिद्धि नथी जो छे तो स्वत सिद्धि छे के परत सिद्धि छे ? स्वत सिद्धि तो नथी, जो होय तो तो कोइनो पण विवाद रहे नहि जो परत सिद्धि छे तो शु अनुमानथी छे के आगमथी छे ? जो कहो के अनुमानथी छे तो ते अनुमान केवुं छे ?

पूर्वपक्ष –ते अनुमान आ छे विवादरूप जे अर्थ छे ते प्रतिभासांत प्रविष्ट ब्रह्मभासनी अतर छे, प्रतिभासमान होवाथी, जे जे प्रतिभासमान छे ते ते प्रतिभासात प्रविष्टज देखायछे, जेम प्रतिभास आत्मा प्रतिभासमान छे, सकल अर्थ सचेतन अचेतन विवादरूप छे ते कारणथी प्रतिभासांत प्रविष्टछे घटपटादि आ अनुमान छे

उत्तरपक्ष –आ अनुमान तमारू सम्यक् नथी (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत आ त्रणे प्रतिभासात प्रविष्ट होवाथी साध्यरूपज थया

पूर्वपक्ष –त्यारे तो (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टात, आ त्रणेना नहि होवापणाथी अनुमानज नहि बनी शके जो एम कहो के (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत आ त्रणे प्रतिभासांत प्रविष्ट नथी, तो तेछनीज साथे हेतु, व्यभिचारी थशे, जो एम कहो के अनादि अविद्या वासनाना बलथी हेतु दृष्टांत जे छे ते प्रतिभासना बाहिरनी पेठे निश्चय

करेछे, जेम प्रतिपाद्य, प्रतिपादक, सन्ना, सन्नापति जननी पेठे, ते कारणथी अनुमान पण थइ शकेछे, अने ज्यारे सकल अनादि अविद्यानो विलास दूर थइ जाशे त्यारे तो प्रतिन्नासांत प्रविष्ट प्रतिन्नास थशे. विवाद पण नहि रहे, पतिपाद्य प्रतिपादक साध्य साधक न्नाव पण रहेशे नहि. पढी तो अनुमान करवानुं पण कांइ फल नहि. आपज अनुन्नवमान परमब्रह्म बने ढते देश काल अव्यवछिन्न स्वरूप प्रगट थतां निर्व्यन्निचार, सकल अवस्था व्यापकपणा वालामां अनुमाननो कांइ प्रयोगज जोइतो नथी.

उत्तरपक्ष—जो अनादि अविद्या प्रतिन्नासांत प्रविष्ट छे तो तो विद्या थइ गइ. त्यारे हवे असत्रूप (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांतआदि न्नेद केम देखी शकाय. जो कहो के प्रतिन्नासनी बाहिरन्नूत छे तो तो अविद्या प्रतिन्नासमान छे के अप्रतिन्नासमान छे ? ते अविद्या प्रतिन्नासमान रूप होवाथी अप्रतिन्नासमान तो नहि. जो एम कहो के प्रतिन्नासमान छे, तो तेनीज साथे हेतु, व्यन्निचारी छे. तथा प्रतिन्नासनी बाहिरन्नूत होवाथी तेनो प्रतिन्नासमान होवाथी जो कदी तमारा मनमां एम होय के अविद्या जे छे ते नथी प्रतिन्नासमान के नथी अप्रतिन्नासमान, नथी प्रतिन्नासनी बाहिर के नथी प्रतिन्नासनी अंदर प्रविष्ट, नथी एक के नथी अनेक, नथी नित्य के नथी अनित्य, नथी व्यन्निचारिणी के नथी अव्यन्निचारिणी, सर्वथा विचारने योग्य नथी, सकल विचारांतर अतिक्रांत स्वरूप छे, रूपांतरना अन्नावथी अविद्या जे छे ते नीरूपता लक्षण छे, आ पण तमारो अज्ञाननो विस्तार छे, तेवी नीरूपता स्वन्नावने आ अविद्या छे, आ अप्रतिन्नासमान छे, एम कोण कथन करवाने समर्थ छे ? जो एम कहो के आ अविद्या प्रतिन्नासमान छे तो पढी केवीरीतें अविद्या नीरूप सिद्ध थशे, जे वस्तु जे स्वरूपथी प्रतिन्नासमान छे, ते तेज वस्तुनुं रूप छे; तथा अविद्या जे छे ते विचारगोचर छे के विचारगोचरतारहित छे ? जो कहो के विचारगोचर छे तो तो नीरूप नहि, जो विचारगोचर नथी तो तो तेने माननार महामूर्ख छे. ज्यारे विद्या, अविद्या बंने सिद्ध छे, त्यारे एक परम ब्रह्म अनुमानथी केम सिद्ध थया ? आ केहेवाथी उपनिषद्मां जे एक ब्रह्मने कहेनारी

श्रुति छे ते पण खण्डन थइ गइ तेमज " सर्वं वै खल्विदं ब्रह्मेत्यादि " वचनने परमात्मानो अर्थांतर होवाथी द्वैतापत्ति थइ जशे, जो एम कहेशो के अनादि अविद्याथी एम प्रतीत थायछे तो तो पूर्वोक्त दूषणोनो प्रसंग आवशे सबब अद्वैतनी सिद्धि वन्ध्यापुत्रनी शोभा जेवी छे ते कारणथी अद्वैतमत युक्तिविकल छे तेथी एकज ईश्वर जगत् पेदा करता ए केहेवुं मिथ्या छे आ प्रथम ईश्वरने माननारना मतनु खण्डन थयु

हवे बीजा ईश्वर जगत्ना उपादान कारणवाला, एक ईश्वर अने बीजी सामग्री, आ बने पदार्थ अनादि छे सामग्री जे छे ते नीचे मुजब छे

(१) पृथ्वी (२) जल (३) अग्नि (४) वायु आ चारेना परमाणुओ, (५) आकाश (६) दिशा (७) आत्मा (८) मन (९) काल आ नव वस्तु नित्य छे, अनादिछे, कोइनी बनावेली नथी ईश्वर, आ पूर्वोक्त सामग्रीथी आ सृष्टिने रचेछे मतावलंबियें जेवी रीतें ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानेल छे ते रीति लखियें छियें उपजातिछंद ॥ कर्त्तास्ति कश्चिज्जगत सचैक, ससर्वग सस्ववश सनित्य ॥ इमा कुहेवाकविडंबना स्यु, स्तेषां न येषामनुशासकस्त्वम् ॥ १ ॥ आ जगत् प्रत्यक्षादि प्रमाणथी लक्ष्य छे चराचररूप प्रणे जगत् तेनो कोइ एवो पुरुष रचनार छे के जेनु स्वरूप कही शकातुं नथी ईश्वरने जगत्कर्त्ता माननारा वादी एवु अनुमान करेछे के–पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादि सर्वे, बुद्धिमान् कर्त्तानां करेलां छे, कार्य होवाथी, जे जे कार्य छे ते सर्वे बुद्धिमान् कर्त्तानां करेल छे जेवो घट तेवु आ जगत् छे, ते कारणथी जगत् बुद्धिवालानु रचेलुं छे जेबुद्धिवाला छे तेज ईश्वरछे, एम पण न केहेशो के आ तमारो हेतु असिद्ध छे, शा कारणथी असिद्ध छे ? जुओ पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादि पोतपोताना कारण समूहथी उत्पन्न थयेल छे ते कारणथी कार्यरूप छे, तथा अवयवी छे, तेथी कार्यरूपछे, सर्ववादियोनो एवो निश्चय छे तथा एम पण न केहेवुं के आ तमारो हेतु अनेकांतिक छे, तथा विरुद्ध छे, कारण के अमारो हेतु विपक्षथी अत्यत दूर गयेल छे तथा एम पण न केहेवुं के आ तमारो हेतु कालात्ययापदिष्ट छे, कारण के प्रत्यक्ष, अनुमान, आगमथी बाधित नथी, धर्म धर्मी अनंतर केहेवाथी, तथा एम पण न केहेवु के तमारो हेतु प्रकरणसम छे, कारण के अनु

मानथी जे साध्य छे, तेना शत्रुभूत बीजा साध्यने साधनारा अनुमानना अभावथी, तथा एम पण न केहेवुं के ईश्वर, पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादिना कर्त्ता नथी, कारण के मुक्त आत्मानी पेठे शरीर विनाना छे. आ पाछलना तमारा अनुमाननो वैरी अनुमान छे ते ईश्वरने जगत्कर्त्ता सिद्ध थवा देतुं नथी. कारण के तमे तो ईश्वरने शरीरविनाना सिद्ध करीने जगतूना अकर्त्ता सिद्ध कर्या, परंतु अमे तो ईश्वर शरीरवाला मानेला छे ते कारणथी तमारुं अनुमान असत्य छे. वली अमारो हेतु निरवद्य छे तथा ईश्वर एक छे. कारण के जो बहु ईश्वर मानियें तो तो एक कार्य करवामां ईश्वरोनी जूदी जूदी बुद्धि थइ जाय अने तेउने मना करनार तो कोइ छे नहि तेथी कार्य केम उत्पन्न थाय? कोइ ईश्वर पोतानी इछाथी चार पगवालो मनुष्य रचे, वली बीजो ईश्वर छ पगवालो रची दे, अने त्रीजो बे पगवालो रचे, तो चोथो आठ पगवालो रचे, एवी रीतें सर्व वस्तु विलक्षण विलक्षण रचाय तो सर्व जगत् असमंजसरूप थइ जाय. परंतु एम नहि तेथी ईश्वर एकज होवा जोइये. वली ईश्वर सर्वगत सर्वव्यापी छे, जो ईश्वर सर्वव्यापक न होय तो त्रण भुवनमां जे एक साथे उत्पन्न थनारां कार्य छे ते सर्व एक कालमां कदी उत्पन्न नहि थाय. जेम के कुंभारादि ज्यां हशे त्यांज कुंभादि कार्य करी शकशे. परंतु देशांतरमां कदी तेउ नहि करी शके. तेमज ईश्वर सर्वज्ञ छे, जो सर्वज्ञ न होय तो सर्व कार्योनां उपादान कारणो केम जाणी शकशे? जो कार्योनां उपादान कारण न जाणे तो जगत् विचित्र केम रची शके? तथा ईश्वर स्वतंत्र छे, बीजा कोइने आधीन नथी, ईश्वर पोतानी इछाथी सर्व जीवोने सुखदुःखनुं फल आपे छे. कह्युं छे केः— ईश्वरप्रेरितोगछेत्, स्वर्गं वा स्वभ्रमेव वा ॥ अन्योजंतुरनीशोय, मात्मनः सुखदुःखयोरिति ॥ अर्थः—ईश्वरनीज प्रेरणाथी जगत्वासी जीव, स्वर्ग तथा नरकमां जाय छे, कारण के ईश्वर विना कोइ जीव पोते पोताने सुख दुःखनुं फल आपवाने समर्थ नथी. जो ईश्वरने परतंत्र मानियें तो मुख्य कर्त्ता ईश्वर रेहेशे नहि, एक बीजाने आधीन मानवाथी अनवस्था दूषण लागी जशे. ते हेतुथी ईश्वर स्ववश छे परंतु पराधीन नथी. वली ईश्वर नित्य छे जो कदी अनित्य होय तो तेने उत्पन्न करनार बीजो कोइ होवो जोइयें,

ते तो नथी ते हेतुथी ईश्वर नित्यज छे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त ईश्वर (जगवान्) जगत्कर्त्ता छे इति पूर्वपक्ष

उत्तरपक्ष –हे वादि ! आप जे एम कहो छो के पृथ्वी, पर्वत वृक्षादि बुद्धिमान् कर्त्तानां रचेलां छे, ते अयुक्त छे, कारण के आ आपना अनुमानमा व्याप्तिनु ग्रहण थइ शकतु नथी, अने हेतु जे होय छे ते सर्वत्र व्याप्तिमां प्रमाणथी सिद्ध थया थकाज पोताना साध्यने सिद्ध करी शके छे आ कथनमा सर्ववादियो एकमत छे

हवे प्रथम आप कहो के जो ईश्वर जगत् रचे छे तो पूर्वे कह्या मुजब ते ईश्वर, शरीरवाला छे के शरीरविनाना छे ? जो एम कहो के ईश्वर शरीरवाला छे तो अमारा सरखा दृश्य शरीरवाला छे के पिशाचादिनी पेठे अदृश्य शरीर वाला छे ? प्रथम पक्ष तो प्रत्यक्ष बाधित छे कारण के ते ईश्वरना विनाज वर्तमानमां पण उत्पन्न थनारां तृण, वृक्ष, इन्द्रधनुष, वादलां प्रमुख कार्यो देखियें छियें "अनित्य शब्दप्रमेयत्वात्" जेम आ प्रमेयत्व हेतु साधारण अनेकांतिक छे तेमज आ कार्यत्वहेतु साधारण अनेकांतिक छे

बीजो पक्ष मानशो तो शु ईश्वरनु शरीर नथी देखी शकातु ते ईश्वरना माहात्म्यथी नथी देखी शकातु के अमारा भाग्य अदृष्टना प्रभावथी ? अर्थात् अमारा भाग्य कर्मना प्रभावथी नथी देखी शकातु ? जो एम केहेशो के ईश्वरना माहात्म्यथी ईश्वरनुं शरीर देखातु नथी तो आ पक्षमां कोइ पण प्रमाण नथी के जेथी ईश्वरनु माहात्म्य सिद्ध थाय, परंतु वादी जो तपावेलु जसत पीवानी हिमत करे तो कदाचित् मानी लइयें आ तमारा कथनमां इतरेतर आश्रय दूषण आवे छे जो ईश्वर माहात्म्य विशेष सिद्ध थाय तो अदृश्य शरीरवाला सिद्ध थाय, जो अदृश्य शरीरवाला सिद्ध थाय तो माहात्म्य विशेष सिद्ध थाय बीजो पक्ष–जो पिशाचादिनी पेठे ईश्वरनु अदृश्य शरीर मानशो तो तो संशयनी निवृत्ति थशे नहि जेम के–शुं ईश्वर नथी के– जेथी तेनु शरीर नजरे पडतु नथी ? त्यारे तो वांझणीना पुत्रना शरीरनी जेम, अथवा तो अमारा पूर्वना पापोना प्रभावथी ईश्वरनु शरीर देखातुं नथी आ संशय कदी दूर नहि थाय जो एम कहो के अमारा ईश्वर, शरीररहित छे तो तो दृष्टांत तेमज दार्ष्टांतिक ए बन्ने विषम थइ जशे अने हेतुविरुद्ध थ

जशे, कारण के घटादि कार्योना कर्त्ता कुंजारादि शरीरवालाज देखियें यें, अने ईश्वरने ज्यारे शरीररहित मानियें त्यारे तो ईश्वर कांइ पण र्य करवाने समर्थ नहि थाय; जे आकाशनी जेम नित्य व्यापक अक्रिय अकर्त्ता छे. आ हेतुथी शरीरसहित के शरीररहित ईश्वरनी साथे कार्यत्वहेतुनी व्याप्ति सिद्ध थती नथी, तथा आपनो हेतु कालात्ययापदिष्ट पण छे, आपना साध्यना धर्मिनो एक देश वृक्ष, वीजली, वादलां, इंद्रधनुष्आदिना आज पण कोइ बुद्धिमान् कर्त्ता देखाता नथी, ते कारणथी प्रत्यक्षथी बाधित थया पछी तमे पोतानो हेतु कह्यो. तेथी तमारो हेतु कालात्ययापदिष्ट सिद्ध थयो. आ तमारा कार्यत्वहेतुथी बुद्धिमान् ईश्वर जगत्कर्त्ता कदी सिद्ध थता नथी.

हवे बीजी रीतें जगत्कर्त्ता खंडन करवानुं स्वरूप लखियें छियें जे कोइ ईश्वरवादी एम कहे छे के जगत् सर्व ईश्वरनुं रचेलुं छे! ते तेनुं केहेवुं समीचीन नथी, कारण के जगत्कर्त्ता ईश्वर कोइ प्रमाणथी सिद्ध थता नथी.

पूर्वपक्षः—ईश्वरने जगत् कर्त्ता सिद्ध करनार अनुमान प्रमाण छे. जुर्ज. जे यथोचित रीतें अभिमत फलने संपादन करवाने प्रवृत्त होय, तेनो अधिष्ठाता कोइ बुद्धिमान् अवश्य होवो जोइयें, जेम वांसला, आरि प्रमुख शस्त्र, काष्ठना बे कटका करवामां प्रवर्त्ते छे, तेमज यथोचित रीतें सर्वजगत्ने सुख दुःखादि जे फल आपे छे तेनो अधिष्ठाता कोइ बुद्धिमान् जरूर होवो जोइयें, आपें एम न केहेवुं के वांसला, आरि प्रमुख पोतेज काष्ठना बे कटका करवामां प्रवर्त्ते छे, कारण के ते तो अचेतन छे तेथी पोतानी मेले केम प्रवर्त्ती शके? जो एम कहो के वांसला, आरि प्रमुख स्वभावथी प्रवर्त्ते छे तो तो तेउनी निरंतर प्रवृत्ति होवी जोइये, वचमां कदी स्तब्ध थवां न जोइयें, पण एम छे नहि; पूर्वोक्त हेतुथी यथोचित रीतें पोत पोतानां फलने साधनारा जे जीव छे, तेउनो अधिष्ठाता ईश्वरज सिद्ध थाय छे. तथा बीजुं अनुमान. जे परिमंडलादि, वृत्त, त्र्यंश, चतुरंश, संस्थानवाला गाम, नगरादि छे, ते सर्वज्ञानवाननां करेलां छे. जेम घटादि पदार्थ, तेमज पूर्वोक्त संस्थान संयुक्त पृथ्वी, पर्वत प्रमुख छे. आ अनुमानथी पण जगत्कर्त्ता ईश्वर सिद्ध थाय छे.

उत्तर पक्षः—जगत्कर्त्ता सिद्ध करनारुं आपनुं आ अनुमान अयुक्त छे,

कारण के पूर्वोक्त तमारुं अनुमान जेम अमारा मतमा प्रथमथीज सिद्ध ठे तेमज सिद्ध करे ठे, ते कारणथी सिद्धसाधन दूषण तमारा अनुमानमा आवे ठे अमारा मतमां प्रथमथीज नीचे मुजब सिद्ध ठे संपूर्ण आ ज गत्नी जे विचित्रता ठे ते सर्वे कर्मना फलथी ठे एम अमे मानियें ठियें, कारण के आ भारत वर्षमां अनेक देशोमां, टापुठमां, हेमवतादि पर्व तोमां अनेक प्रकारना मनुष्यादि प्राणी जे वास करे ठे, तथा तेठने सुख दुःखादि अनेक तरेहनी जे अवस्था बनी रही ठे ते सर्व अवस्थानुं कारण कर्मज ठे बीजु कोइ नथी वली देखवामां पण कर्मज कारण थइ शके ठे, कारण के ज्यारे कोइ पुण्यवान् राजा राज्य करे ठे, त्यारे तेना राज्यमां सुकाल, निरुपद्रव होय ठे, ते, ते राजाना शुभ कर्मनो प्रभाव ठे ते कारणथी जे यथोचित रीतें जीवोने फल आपेठे ते कर्म ठे कर्म जीवने आधीन ठे, अने जीव चेतन होवाथी बुद्धिमान् ठे, तेथी बुद्धिमानने आधीन थइने कर्म यथोचित फल आपे ठे आ रीतें तमारा अनुमानमां सिद्धसाधन दूषण ठे जो एम केहेशो के अमेतो विशिष्ट बुद्धिवाला ईश्वरनेज सिद्ध करियें ठियें, परतु सामान्य बुद्धिवाला जीव नथी सिद्ध करता, तो तो तमारु दृष्टांत साध्यविकल ठे वांसला, आरि प्रमुखमां ईश्वर अधिष्ठितपणांनो व्यापार तो उपलब्ध थतो नथी परतु सुथारादिनो व्यापार अन्वयव्यतिरेकथी उपलब्ध थाय ठे

पूर्वपक्ष—सुथारादिपण ईश्वरनी प्रेरणाथीज ते ते काममां प्रवर्त्ते ठे अमारुं दृष्टांत साध्यविकल नथी

उत्तरपक्ष—त्यारे तो ईश्वर पण बीजा ईश्वरनी प्रेरणाथीज प्रवर्त्तता हशे, परतु पोतानी मेले प्रवर्त्तता नहि होय, वली ते ईश्वरपण बीजा ईश्वरनी प्रेरणाथी प्रवर्त्तता हशे, एवी रीतें तो अनवस्था दूषण आवशे

पूर्वपक्ष—सुथारप्रमुख जीव तो सर्वे अज्ञानी ठे तेथी ईश्वरनी प्रेर [illegible] ज पोत पोताना काममां प्रवर्त्ते ठे, अने ईश्वर (भगवान्) तो सर्व पदार्थोना ज्ञाता ठे तेथी अनवस्था दूषण नथी

उत्तरपक्ष—आ तमारु केहेवुं असत् ठे कारण के तेमां इतरेतर दूषण आवे ठे प्रथम ईश्वर जो सर्व पदार्थना यथाऽवस्थित स्वरूपना ज्ञाता सिद्ध थाय, तो अन्यनी प्रेरणा विना पोतेज प्रवर्त्ते ठे एम सिद्ध थाय, जो

नी प्रेरणा विना ईश्वर पोतेज प्रवर्त्ते छे एम सिद्ध थाय तो तो सर्व ार्थना यथावस्थित स्वरूप जाणनारा सर्वज्ञ सिद्ध थाय, ज्यां सुधी आ नेमांथी एक सिद्ध न थाय त्यां सुधी बीजानी सिद्धि कदी न थाय. ज्ञी हे ईश्वरवादि? अमे तमने पुछियें छियें के जो ईश्वर सर्वज्ञ ाज वीतराग छे तो शा माटे बीजा जीवोने असत् व्यवहारमां प्रवर्त्ता- छे? कारण के जे विवेकी होय छे ते मध्यस्थज होय छे तेमणे तो जी- ने सत् व्यवहारमांज प्रवृत्त करवा जोइयें, परंतु असत् व्यवहारमां नहि वृत्त करवा जोइयें, अने ईश्वर तो जीवोने असत् व्यवहारोमां पण प्र- र्त्तावे छे तेथी ईश्वरने सर्वज्ञ तेमज वीतराग केम केहेवा जोइये?

पूर्वपक्षः– ईश्वर तो सर्व जीवोने शुभ कर्म करवामांज प्रवर्त्तावे छे, ेथी भगवान् तो सर्वज्ञ अने वीतरागज छे; अने जे जीव अधर्म करनारा े तेउने असत् व्यवहारमां प्रवर्त्तावीने पछी नरकपातनुं फल आपे छे, जेथी ते जीवो दुःखथी डरीने फरी पाप न करे, तेथी उचित फल देवा- थी ईश्वर (भगवान्) विवेकवान् तेमज वीतराग सर्वज्ञ छे, तेमां कां- इपण दूषण नथी.

उत्तरपक्षः–आ आपनुं केहेवुं विचारविनानुं छे, कारण के प्रथम पाप करवामां तो ईश्वरज प्रवृत्त करे छे, ईश्वर विना बीजो तो कोइ प्रेरक नथी, वली जीव पोते तो कांइ करी शकतो नथी कारणके ते तो अज्ञानी छे तेथी पापमां के धर्ममां पोते प्रवृत्त थइ शकतो नथी, तो पछी प्रथम पाप कराववामां जीवने प्रवर्त्तावको. पछी नरकमां नाखीने तेनुं फल भो- गवावकुं, पछी धर्ममां प्रवर्त्तावको वाह? शुं ईश्वरनी ईश्वरता अने विचारपूर्वक काम छे?

पूर्वपक्षः–ईश्वर (भगवान्) जीवोने कदी प्रवर्त्तावता नथी परंतु जीव पोतेज प्रवर्त्ते छे. तेथी जे जीव जेवां कर्म करे छे, ते कर्मना वशथी ईश्वर (भगवान्) तेवां तेवां फल ते जीवोने आपेछे. जेम कोइ राजा राज्य करे छे ते चोरी करवानी मनाइ करे छे, कोइने चोरी करवानुं केहेता नथी, छतांपि कोइ सख्स चोरी करशे तो ते चोरने अवश्य राजा शिक्षा करशे, तेवीज रीतें ईश्वर पाप तो करावता नथी, परंतु पाप कर- नारने शिक्षा करे छे.

उत्तरपक्ष –आ तमारुं केहेवु अयुक्त छे, कारण के राजा चोरने निषेध करवामां समर्थ नथी, कारण के गमे तेवो उग्रशासनवालो राजा होय अने ते मन वचन कायाथी चोरी प्रमुख पाप कर्म अटकाववा चाहे, परंतु लोक चोरी प्रमुख पाप कर्म कदापि सर्वथा छोडशे नहि अने ईश्वर तो सर्व शक्तिमान् तमे मानो छो तो पछी सर्व जीवोने पाप करवामां प्रवर्त्तता केम मना करता नथी? जो ईश्वर जीवोने पाप करतां अटकावता नथी तो ईश्वरज जीव पासे पाप करावे छे, पछी जो तेओने दंड आपे तो पूर्वोक्त दूषण आवेछे जो एम कहो के जीवोने पापमां प्रवर्त्ततां मना करवाने ईश्वर समर्थ नथी, तो पछी ऊंचा शब्दथी एम केहेशो नहि के "सर्व कांइ ईश्वरेज कर्युं छे अने ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे" तथा जो जीव पाप पण पोतेज करे छे, अने धर्मपण पोतेज करे छे, तो फल पण पोतेज भोगवी लेशे हवे ईश्वर कर्त्तानी कल्पना व्यर्थ छे

पूर्वपक्ष –धर्म अधर्म तो जीव पोतेज करेछे, परंतु तेना फलप्रदाता तो इश्वरज छे, जीव पोतें करेला धर्म अधर्मनु फल पोते भोगववाने समर्थ नथी, जेम चोर चोरी करेछे, तेमां चोरी (अधर्म) तो पोतेज करेछे, परं तु ते चोरीनुं फल (बंदीखानु) भोगववुं ते पोते भोगवी शकतो नथी, बंदीखानामां नाखनार तो कोइ बीजो जोइयें

उत्तरपक्ष– आ पण तमारुं केहेवुं असत् छे कारण के जो जीव धर्म अधर्म करवामां समर्थ छे तो पछी तेनुं फल भोगववामां समर्थ केम नहि? आ संसारमां जे जीव जेवा जेवा धर्म अधर्म करेछे तेवां तेवां धर्म अधर्मनां फल भोगववामां निमित्त पण बनी जाय छे, जेम चोर चोरी करेछे, ते चोरीनुं फल राजा आपेछे, वली कोढीयो थाय छे, शरीरमां कीडा पडेछे, अग्निमां बली जाय छे, पाणीमां डुबी जायछे, खड्गथी हणाय छे, तोप बंदुकना गोला गोलीथी मरी जायछे, हाट, हवेली, माटीनी खाण नीचे दबाइ अनेक तरेहथी संकट भोगवी मरी जाय छे, निर्धन थइ जाय छे, इत्यादि असंख्य निमित्तोथी पोतें करेला कर्मनां फलने भोगवे छे अहींयां निमित्त विना बीजो ईश्वर फलदाता कोइ देखातो नथी, तेवीज रीतें नरक स्वर्गादि परलोकमां पण शुभाशुभ कर्म फल भोगववानां असंख्य निमित्त छे जो केहेशो के परस्त्रीगमन कर

थी, इत्यादि पापफलमां शुं निमित्त मलशे, जेना योगथी फल जोग-वानुं थशे? ते वात तो हुं (ग्रंथकार) जाणतो नथी के आ पुण्य पा-तुं आ निमित्त तमने मलीने फल थशे, कारण के मारुं एटलुं ज्ञान नथी के बराबर पुरे पुरां निमित्त बतावी शकुं, परंतु एटलुं कहि शकुंछुं के जीव जे जे पुण्य पाप करे छे तेनुं फल जोगववामां अवश्य कांइक निमित्त होवानुं, अने आवी रीतें फल जोगवशे, आ निमित्त मलशे, अमुक देशमां, अमुक कालमां जोगवशे, इत्यादि सर्व प्रत्यक्षपणें तो अर्हत, जगवंत (परमेश्वर) सर्वज्ञना ज्ञानमां जासन थाय छे. निमित्त विना कोइपण फल जोगवी शकता नथी, ते कारणथी ईश्वर फलप्रदाता छे एवी कल्पना व्यर्थ छे. शुं एवुं पण बुद्धिमानोनुं केहेवुं छे के माणस रोटली तो पकावी शकेछे परंतु पोते खाइ शकतो नथी. तेमज ईश्वरने फलदाता कल्पना करवाथी एक बीजुं पण कलंक आप तेने लगावो छो. जेमके एक पुरुषें बीजा पुरुषने खड्गादि शस्त्रथी मार्यो, हवे मरनारने जे संकट प्राप्त थयुं, ते कोना योगथी? कोनी प्रेरणाथी? जो केहेशो के ईश्वरें ते शस्त्रवालाने प्रेरणा करी, तेथी तेणें तेने मार्यो, तो पछी ते मा-रनारने फांसी शा माटे मलेछे? शुं ईश्वरनो एवो न्याय छे के प्रथम एक पुरुषना हाथथी बीजाने मराववो, पछी ते मारनारने फांसी अपाववी, आ आपनी समजणें ईश्वरने बहुज अन्यायी सिद्ध करेल छे. जो एम कहो के ईश्वरनी प्रेरणा विना ते पुरुषें बीजा पुरुषने मार्यो, तेमज दुः-ख दीधुं तो तो निमित्तथीज सुख दुःखनुं जोगववुं सिद्ध थयुं, पछी ई-श्वर फलदातानी कल्पना करवी ते अल्प बुद्धिवालानुं काम छे तथा हे ईश्वरवादि! आपने एक वात पुछियें छियें के धर्मनुं फल, उन्मत्त देवां-गनाउना सुकोमल शरीरनो स्पर्श करवो, ते तो जीवोने सुखनुं कारण छे तेथी ईश्वरें दीधुं, परंतु अधर्मनुं फल घोरनरकना कुंभमां पडवुं, अनेक प्रकारनां दुःख त्रास, कुंजीपाक, चर्म उत्कर्त्तन, अग्निमां प्रज्वलित थवुं, इत्यादि महादुःखो ईश्वर ते जीवोने शा वास्ते दीये छे?

पूर्वपक्षः—जे जीवोए पाप करेलां छे तेउने ते पापनुं फल अवश्य म-लवुं जोइये ते कारणथी ईश्वर फल आपे छे,

उत्तरपक्षः—आ तमारा केहेवाथी तो ईश्वर व्यर्थज जीवोने पीडा आ-

पेठे, कारण के जो ईश्वर ते जीवोने पापनुं फल आपे नहि तो जीव पोते तो कर्मनां फल जोगवी शकता नथी पठी नहि तो शरीर धारण करे के नहि तो नवुं पाप पण करे. पठी वेठा वेठा ईश्वरने शुं गलगलीया थाय ठे के पाठा जीवोने नरकमां नाखी दीये ठे जे मध्यस्थ जाववाला तथा परम दयालु होय ठे ते कोइ जीवने कदी निरर्थक पीडा आपता नथी,

पूर्वपक्ष –ईश्वर जगवान्, पोतानी क्रीडा वास्ते कोइने नरकमां नाखे ठे कोइने तिर्यंच योनिमां नाखे ठे, कोइने मनुष्य बनावे ठे, तो कोइने स्वर्गमां उत्पन्न करे ठे, ज्यारे ते जीव नाचे ठे, कूदेठे, रोयेठे, पीटेठे, विलाप करेठे, त्यारे ईश्वर पोतानी रचेली बाजीनो तमासो जुए ठे, ते वास्ते जगत् रचे ठे

उत्तरपक्ष –जो एम ठे तो ईश्वर प्रेक्षावान् (बुद्धिमान्) नथी, कारण के तेनी तो क्रीडा थाय ठे परंतु रांक जीवो तरफडी तरफडी, करुणास्पद थइ मरण पामेठे, तो पठी ईश्वरने दयालु मानवा ते केवी आपनी अज्ञानिता ठे ? कारण के जे महापुरुष सर्वज्ञ दयालु ठे ते कदापि कोइ जीवने दुःख देवानी क्रीडा करता नथी, तो पठी ईश्वर क्रीडार्थी केम होइ शके ? वली क्रीडा जे ठे ते रागवालाने होय ठे अने ईश्वर (जगवान्) तो वीतराग ठे, तो पठी ईश्वर (जगवान्) क्रीडा रसमा मग्न होय एम केम संजवे ?

पूर्वपक्ष –अमारा ईश्वर तो रागी द्वेषी ठे, ते कारणथी तेनामां क्रीडा करवानो संजव होइ शके ठे

उत्तरपक्ष –त्यारे तो आपें मुख उज्वल करवाने बदले कालुं कर्युं कारण के ज्यारे ईश्वर रागी द्वेषी थया त्यारे तो बीजा जीवोनी पेठे राग वाला थया वीतराग न थया तेम सर्वज्ञ न थया पठी तो अमारा सरखा थया हवे जगत्ना रचनार केवी रीतें थइ शके ठे ?

पूर्वपक्ष –अमें तो ईश्वरने रागद्वेषसंयुक्त सर्वज्ञ मानिये ठियें, ते कारणथी सर्व जगत्ना कर्त्ताठे

उत्तरपक्ष–आ आपना कथनमां कोइपण प्रमाण नथी, जे प्रमाणथी ईश्वर रागी, द्वेषी, के सर्वज्ञ सिद्ध थाय ?

पूर्वपक्ष –ईश्वरनो स्वजावज एवो ठे के रागी द्वेषी थवुं अने सर्वज्ञ पण

रेहेवुं,स्वजावमां कोइ तर्क थई शकतो नथी,जेम अग्नि तो दाहक छे परंतु आकाश दाहक केम नथी ? आ सवालमां उत्तर एमज देवाशे के अग्निमां दाहक स्वजाव छे, आकाशमां नथी, तेवी रीतें ईश्वरपण स्वजावथी रागी द्वेषी तेमज सर्वज्ञ छे.

उत्तरपक्षः—एवी रीतें तो कोइ वादी एम पण कही शके के आपनी सन्मुख आ जे गधेडुं खडुं छे ते सर्व जगत्नुं रचनार छे, जो आप एम पूछो के शा हेतुथी आ गर्दज्ञ जगत्नुं रचनार छे ? तो ते बाबतमां एम उत्तर आपी शकाशे के ते गर्दज्ञनो स्वजावज एवो छे के जगत्ने रचीने, राग द्वेषवाला सर्वज्ञ थइने पछी गर्दज्ञ बनी जायछे. एवी रीतें तो महिष आदि सर्व जीवने वादी जगत्कर्त्ता सिद्ध करी देशे. पछी ईश्वर कोण थया, जे कांइ पोताना मनमां मान्युं ते बनावी लीधुं. आ तो ईश्वरने मोटुं कलंक लागेछे. आ हेतुथी ईश्वर (जगवान्) सर्वज्ञ तेमज वीतराग छे. ते क्रीडाने अर्थे कदापि जगत्ने रचे नहि. वली हे ईश्वरवादि ! जो आपना केहेवा मुजब, ईश्वरें सर्व कांइ रच्युंछे तो तो त्रणशे त्रेसठ पाखंम मतनां सर्व शास्त्रो पण ईश्वरेंज रच्यां, अने शास्त्र तो सर्वे एक बीजाथी विरुद्ध छे तो तेमांथी केटलां एक शास्त्र अवश्य सत्य अने केटलां एक असत्य पण होशे, त्यारे सत्य अने असत्य बंनेना उपदेशक ईश्वरज ठर्या, त्यारे तो ईश्वर पोतेज सर्व मतांतरियोने अरस परस लडावेछे. हजारो बलके लाखो मनुष्य आ मतोना ऊघडामां मरी जायछे. हवे जुउ के ईश्वरें शास्त्र शुं रच्युं ? जगत्मां एक मोटो उपद्रव रच्यो. एवां जुठां, साचां शास्त्र रचनारने महाधूर्त्त केहेवा जोइयें परंतु ईश्वर नहि. जो एम कहो के ईश्वरें तो सत्य शास्त्रज रच्यां छे, असत्य रच्यांज नथी, असत्य तो जीवोए पोतेज बनावी लीधां छे तो तो ईश्वरें जगत् पण रच्युं नहि होय, जगत् पण जीवोएज रच्युं हशे, कारण के ईश्वर सर्व वस्तुना कर्त्ता सिद्ध थया नथी.

वली आपें पूर्वे बीजुं अनुमान कर्युं हतुं के जे जे आकारवाली वस्तु छे ते ते सर्वे बुद्धिवालानी रचेली छे. जेम के जुउ, जीर्ण कूप. अगर जो कारीगर त्यां उपलब्ध थतो नथी, तो पण अनुमानथी कारीगरज तेनो कर्त्ता सिद्ध थशे. जेम नवा कुवानो कर्त्ता उपलब्ध थायछे तेम.

उत्तर–आ आपनु अनुमान समीचीन नथी कारण के आकारवाळा आपना हेतु, संध्या, वादळां, सर्पनी वधी प्रमुख संस्थानवाळामां छे, परंतु तेनो बुद्धिमान् कर्त्ता कोइ नथी जो एम कहो के, वादळा, इन्द्रधनुष, सर्पनी वधीप्रमुख संस्थानवाळा बुद्धिमानोनां करेलां मनाता नथी त्यारे तो तेवीजरीतें पृथ्वी, पर्वत पण बुद्धिमानोना करेला नहि मानवा जोइयें

आ पूर्वोक्त प्रमाणोथी कोइपण रीतें ईश्वर जगत्कर्त्ता सिद्ध थता नथी हवे जे पुरुष ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानेछे तेउने अमे कहियें छियें के, ज्यां सुधी अमारी आ सघली युक्तियोनो उत्तर न अपाय त्यां सुधी ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानवा न जोइयें, जो कोइ ईश्वरवादी आ युक्तियोनो उत्तर पुरेपुरो देशे तो तो अमेपण जगत्कर्त्ता ईश्वर मानी लेशु, ते विना कदापि नहि मानियें

पूर्वपक्ष–ईश्वर जगत्‌ना कर्त्ता तो सिद्ध थता नथी, परंतु एक ईश्वर छे एम तो सिद्ध थायछे के नहि ?

उत्तरपक्ष –ईश्वर एकज छे, ए वात सिद्ध करनारु कोइ प्रमाण नथी, तेथी ईश्वर एक सिद्ध केम थाय ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरना एकत्वने सिद्ध करनार आ प्रमाण छे ज्यां बहु एकठा थइने एक काम करवा लागे त्यां जुदी जुदी मति होवाथी एक कार्यपण बनी शकतु नथी तेवीज रीतें जो ईश्वर अनंत होशे तो तो सृष्टि प्रमुख एकज कार्य करवामां न्यारी न्यारी मति थवाथी असमंजस कार्य बनशे ते कारणथी ईश्वर एकज होवा जोइयें

उत्तरपक्ष–आ तमारा प्रमाणथी तो ईश्वर एक सिद्ध थता नथी, कारण के पूर्वोक्त प्रमाणोथी ईश्वर कोइ वस्तुना कर्त्ता सिद्ध थता नथी वळी जुउ एक मधपुडो बनाववामां सर्वे मांखियो एकमतवाळी तो थायछे, परतु ईश्वर, परमात्मा, निर्विकार, निरुपाधिक, ज्योति स्वरूपियोनो एकमत थइ शकतो नथी आ मोटी आश्चर्यनी वातछे ? शु तमे ईश्वरोने कीडाउथी पण बुद्धिहीन, अभिमानी, तेमज अज्ञानी बनावी दीधा, के ते सर्वेनो एकमत थइ शकतो नथी ?

पूर्वपक्ष–मांखियो बहु एकठी थइने मधपुडा आदि कार्य करेछे त्या पण एक ईश्वरनाज व्यापारथी एक मधुपुडो बने छे

उत्तरपक्षः– त्यारे घडो बनाववो, चोरी करवी, परस्त्रीगमन करवुं इत्यादि सर्व काम ईश्वरना व्यापारथी बनेलां सिद्ध थशे, अने जीव सर्व, अकर्त्ता सिद्ध थशे, पछी पुण्य पापनुं फल कोने मलशे? अने नरक स्वर्गमां जीवने केम मोकलाशे?

पूर्वपक्ष–कुंभारादि, चोरादि, सर्वजीव स्वतंत्रताथी पोतपोतानुं कार्य करेछे, आ प्रत्यक्षसिद्ध छे.

उत्तरपक्ष–शुं मांखियोयेंज तमारो कांइ अपराध कर्योछे, के तेने स्वतंत्र केहेता नथी? आ तमारा एक ईश्वरने मानवाथी तो एम पण प्रतीत थायछे के जो कदी अनंत ईश्वर मान्या जाय तो तो कदाचित् एक सृष्टि रचवामां विवाद थइ जाय पछी ते विवादने कोण दूर करी शके? शिरपंच ता कोइ नथी, वली एक ईश्वरने देखीने बीजो ईश्वर इर्ष्या करे के आ मारी तुल्य केम छे? इत्यादि अनेक उपद्रव उत्पन्न थइ जाय, तेथी ईश्वर एकज मानवा जोइयें. आ पण तमारी समज पूर्ण अज्ञानरूप घुणनामना कीडानी खाधेली छे, कारण के जो ईश्वर (भगवान्) सर्वज्ञ छे तो तो सर्वज्ञना ज्ञानमां एकज सरखुं भासन थवुं जोइयें, पछी विवाद शा कारणथी होय, वली ईश्वरतो राग,द्वेष,ईर्ष्या,अभिमान इत्यादि सर्व दूषणोथी रहित छे तो बीजा ईश्वरने देखीने इर्ष्या,अभिमान शा माटे करशे? जो ईश्वर थइने अंदर अंदर विवाद, झघडा,इर्ष्या, अभिमान करशे तो ते पामरोने ईश्वरज केम मानवामां आवशे? जो जगत्कर्त्ताज ईश्वर सिद्ध थता नथी तो विवाद झघडाज ईश्वरोने अंदर अंदर शा माटे थशे? ते कारणथी अनंत ईश्वर मानवामां कांइपण दूषण नथी. वली ईश्वर "सर्वगत" सर्वव्यापी छे एम मानवुं पण प्रामाणिक नथी. कारण के जे वादी ईश्वरने सर्वव्यापक माने छे ते शरीरथी व्यापक माने छे के ज्ञानस्वरूपथी? जो शरीरथी ईश्वरने सर्वव्यापक मानशे तो ईश्वरनुं शरीरज सर्वजगामां व्यापी जशे, बीजा पदार्थोने रेहेवा माटे जरापण अवकाश नही मले? ते कारणथी ईश्वर शरीरथी तो सर्वव्यापक नथी.

प्रश्नः– शुं ईश्वरने पण शरीर छे के आप एवो विकल्प करोछो?

उत्तरः–हे भव्य! एवो पण आ जगत्मां मत छे, जे ईश्वरने देहधारी माने छे.

प्रश्नः– ए कयो मत छे, जेयें शरीरधारी ईश्वर मानेल छे?

उत्तर – तौरेत नामनो ग्रथ छे, तेमा एम लख्यु छे के, ईश्वरें अबर हामने त्यां रोटी खाधी, तथा याकुबनी साथे कुस्ती करी, आ लखा णथी प्रतीत थाय छे के ईश्वर देहधारी छे वली शंकरदिग्विजयना बी- जा प्रकरणमा शंकरस्वामिना शिष्य आनदगिरि तेज ग्रथना आदिमा लखे छे के "हुं सर्वज्ञ छुं" ते लखियें छियें "ज्यारे नारदजीए जोयु के आ लोकमा बहुज कपोलकल्पित मत उत्पन्न थया छे, अने सनातन ध र्म लुप्त थयो छे, त्यारें ते तत्काल ब्रह्माजीपासे पहोच्या अने जइने के- हेवा लाग्या के हे पिताजी! आपनो मत तो प्राय रह्यो नथी, अने लो कोए अनेक मत चलाव्या छे, तेथी आ वातनो कांइ उपाय करवो जो इये, ते सांजली ब्रह्माजी बहु वखत सुधी विचार करीने, पुत्र, मित्र, भ क्त जनोंने साथे लइने पोताना लोकथी निकली शिवलोकमां प्रवेश क रता हवा त्यां जइ जुए छे तो मध्याह्नमा क्रोड सूर्यनो प्रकाश होय न हि, तथा क्रोड चद्रमा समान शीतल, जेने पांच मुख छे, चद्रमा मुग टमा छे विजलीवत् पिंगलि जटा धारण करी छे, अने पार्वती जेना वा मारूं अंगमां छे एवा सर्वना ईश्वर, महादेव वीठा पछी ब्रह्माजीयें नम स्कार करी स्तुति करी, अने केहेवा लाग्या के हे महादेव! सर्वज्ञ, सर्वलोकेश, सर्वसाक्षी, सर्वमय, सर्व कारण इत्यादि–आ लखवाथी प्र गट प्रतीत थाय छे के ईश्वर देहधारी छे, जो देहधारी ईश्वर न होय तो पछी पांच मुख केम होय? आ लखाणथी ईश्वर शरीररहित सिद्ध थता नथी हवे जो शरीरधारी ईश्वर होय तो तो आ लोकमा ईश्वरज व्यापी रहेशे, अने बीजा पदार्थोने रेहेवामाटे बीजो लोक जोइशे जो एम कहो के ज्ञानात्माथी ईश्वर सर्वव्यापक छे तो तो सिद्धसाध्य नथी, अमे पण ज्ञानस्वरूपथी तो भगवानने सर्वव्यापी मानियें छियें परंतु तु र्हे तमारा वेदथी विरुद्ध न होय? कारण के वेदोमा शरीरथीज सर्व व्यापक कहेल छे यथा "विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पादित्यादि श्रुते" आ श्रुतिथी सिद्ध थाय छे के ईश्वर शरीरथीज सर्वव्यापक छे, अने तेम होवाथी पूर्वोक्त दूषणो आवे छे तेथी ईश्वर स र्वव्यापक नथी वली आप कहो छो के ईश्वर सर्वज्ञ छे, परंतु तमारा ईश्वर सर्वज्ञ पण नथी, कारण के अमे जे सृष्टिकर्त्ता ईश्वरना खण्डन क

रनारा छियें, ते तेनाथी विपरीत चालियें छियें, तेथी अमने तेउए शा-माटे रच्या ? जो एम केहेशो के जन्मांतरोथी उपार्जन करेलां जे जे तमारां शुनाशुन कर्म छे ते कर्मोने अनुसार तमने ईश्वर फल आपे छे, तो पछी तमारा केहेवाथीज ईश्वरनी स्वतंत्रतापर पाणी फर्युं; कारण के जो अमारां कर्मोविना ईश्वर फल आपी शकता नथी तो तो ईश्वरने कांइ आधीन नथी; जेवां अमारां कर्म हशे तेवुं अमने फल मलशे, जो एम कहो के ईश्वर जे इछे ते करे तो तो शुं जाणियें के ईश्वर शुं कर-शे, धर्मियोने नरकमां नाखशे के पापियोने स्वर्गमां मोकलशे ? जो एम कहो के परमेश्वर न्यायी छे, जेवुं जेवुं जे करे छे, तेवुं तेवुं तेने फल आ-पे छे, तो वली तेज परतंत्रतारूप दूषण ईश्वरमां लागे छे. वली ईश्वर नित्य छे एम केहेवुं ते पण तमारा पोताना घरमांज सुंदर लागे छे, का-रण के नित्य तो ते वस्तुने कहियें के जे त्रणे कालमां एकरूप रहे. जो ईश्वर नित्य छे तो शुं तेनामां जगत् बनाववानो स्वन्नाव छे के नहि ?जो एम कहो के तेनामां जगत् रचवानो स्वन्नाव छे तो ईश्वर निरंतर जगत्ने रच्या करशे,कदाऽपि बंध रहेशे नहि,कारण के जगत् रचवानो स्वन्नाव तो तेनामां नित्य छे. जो एम केहेशो के ईश्वरमां जगत् रचवानो स्वन्नाव नथी तो तो ईश्वर कदापि जगत् रचशे नहि, कारणे के जगत् रचवानो स्व-न्नाव तेनामां नथी. तथा जो ईश्वरमां जगत् रचवानो स्वन्नाव एकांत नित्य छे तो तो प्रलय कदापि नहि थाय, कारण के ईश्वरमां प्रलय क-रवानो स्वन्नाव नथी. जो एम कहो के ईश्वरमां रचवानी तेमज प्रलय करवानी बंने शक्तियो नित्य छे तो तो कदापि जगत् रचाशे पण नहि, तेम तेनो प्रलय पण थशे नहि, कारण के परस्परविरुद्ध एवी बे शक्ति-यो एक स्थानमां एककालमां कदापि रेहेती नथी. जो रेहेशे तो जगत् रचाशे नहि, तेम तेनो प्रलय थशे नहि; कारण के जे कालमां रचनारी शक्ति रचशे तेज कालमां प्रलय करनारी शक्ति प्रलय करशे, अने जे कालमां प्रलय करनारी शक्ति प्रलय करशे तेज कालमां रचनारी शक्ति रची देशे; एवी रीतें ज्यारे शक्तियोनो परस्पर विरोध थशे त्यारे जगत् रचाशे नहि तेम तेनो प्रलय पण थशे नहि. हवे तो अमांरोज मत सि-द्ध थयो. कारण के जगत् कोइयें रचेल नथी तेम तेनो कदापि प्रलय

पण थतो नथी, तेथी आ जगत् अनादि अनत सिद्ध थयु जो एम कहो के ईश्वरमा अने शक्तियो नथी तो पछी जगत् रचाशे पण नहि तेम ज तेनो प्रलय पण थशे नहि तेथी पण जगत् अनादि अनंत सिद्ध थयु जो एम कहो के ईश्वर रचवानी इछा करे छे त्यारे रचे छे, अने प्रलय करवानी इछा करे छे त्यारे प्रलय करे छे तेमां शुं दूषण ? तो तो ईश्वरनी शक्तियो अनित्य थई भले अनित्य होय, तेमां अमारे शु हानि छे ? पण जुओ ईश्वरनी शक्तियो अनित्य छे तो तो ईश्वर पण अनित्य थशे, कारण के ईश्वर पोतानी शक्तियोथी अभेद छे, जो एम कहो के शक्तियो ईश्वरथी भेदरूप छे तो पछी शक्तियो नित्य होवाथी जगत् रचाशे नहि तेम तेनो प्रलयपण थशे नहि, अने ईश्वर अकिंचित्कर सिद्ध थशे कारण के ज्यारे ईश्वर सर्वशक्तिओथी रहित छे, त्यारे तो कांइपण करवाने समर्थ नथी पछी जगत् रचवामां केम समर्थ थशे ? वली शक्तिओनु उपादान कारण कोण थशे ? पछी ईश्वरनो अभाव थइ जशे कारण के ज्यारे ईश्वरमां शक्तिज कांई नथी त्यारे ते ईश्वर शेनो ? तो तो आकाशना फुलसमान असत् छे पछी जगत्कर्त्ता कोने मानशो ?

हवे खरडह्मानिओनो ईश्वरवाद लखियेंछियें खरडह्मानी कहे छे के, जगत्मां जेटला पदार्थ छें तेना विलक्षण, विलक्षणसंयोग, आकृति, गुण तेमज स्वभाव मालम पडे छे जो कदी तेओनो तथा तेओना नियमोनो कर्त्ता कोइ न होय तो ते नियमो कदि बने नहि, कारण के जड पदार्थमां मलवानु तेमज जुदा थवानु यथावत् सामर्थ्य नथी ते हेतुथी ईश्वर कर्त्ता अवश्य होवा जोइयें

उत्तर पक्ष–प्रथमज अमे जगत्कर्त्ता ईश्वरनु खंडन करी चुक्या छियें, तो पछी आप जगत्कर्त्ता केम मानो छो ? वली आपें कह्यु के जगत्ना पदार्थोमां जुदा जुदा स्वभाव मालम पडे छे, तेथी ईश्वर सिद्ध थाय छे, परंतु आ कथनथी ईश्वर जगत्कर्त्ता सिद्ध थता नथी, कारण के सर्व पदार्थोमा अनंत शक्तिओ छे, तेथी पोतपोतानी शक्तिओथी सर्व पदार्थो पोतपोतानां काय करे छे पदार्थोना संयोगमा निमित्त आ छे १ काल, २ स्वभाव, ३ नियति (भवितव्यता) ४ जीवोनां कर्म,[१] ५ जीवोनो उद्यम,

---

१ प्रारब्ध–दैव–अदृष्ट–जीवकृत धर्माधर्म–क्रिया–पुद्गलो

आ पांच निमित्त विना बीजुं कोइपण निमित्त नथी, ए पांचनुं स्वरूप आगल उपर लखवामां आवशे.

प्रत्यक्षमां पण आ पांचे निमित्तोथी सर्व कांइ उत्पन्न थाय छे ते जोइयें छियें. जेम के बीजांकुर ज्यारे बीज ववाय छे, त्यारे काल पण यथानुकूल होवो जोइयें, तेमज बीज, जल अने पृथ्वी इत्यादिना स्वभाव पण अवश्य होवा जोइयें, तेमज नियति पण कारण छे–जे जे पदार्थोना स्वभाव छे ते ते पदार्थोना तेवा तेवा जे परिणाम थाय छे तेनुं नाम नियति छे; वली अष्टविध कर्मपण कारण छे. तथा [१]पुरुषकार (जीवोनो उद्यम) पण कारण छे. आ पांच वस्तु अनादि छे, कोइयें रचेल नथी; कारण के वस्तुना जे जे स्वभाव छे ते ते सर्व अनादिथी छे. जो कदी वस्तुमां पोतपोताना स्वभाव न होय तो तो कोइ वस्तुज सत्‌रूप रेहेशे नहि. सर्व शशशृंगवत् असत् थइ जशे. वली प्रत्यक्ष देखाय छे एवां, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चंद्रमा इत्यादि पदार्थो एवीरीतें अनादिरूपथी सिद्ध छे, तेमज पृथ्वीउपर जे जे रचना देखाय छे ते सर्व प्रवाहथी एमज चाली आवे छे. वली जगत्‌ना जे जे नियमो छे ते सर्व आ पांच निमित्त विना थइ शकता नथी. ते कारणथी सर्वे पदार्थो पोतपोताना नियमोमां छे. जो तमे द्रव्यनी शक्तिनेज ईश्वर मानी लेशो तो तो अमने कांइ हानि नथी; कारण के अमे द्रव्यनी अनादि शक्तिनुं नाम इश्वर राखी लेशुं, अने ज्यारे तमे द्रव्यनी अनादि शक्तिने ईश्वर मानी त्यारे तमारो अमारो विवाद दूर थयो; पछी तमे जे लख्युं छे के जडमां यथावत् मलवानी शक्ति नथी, ते पण तमारुं लखाण मिथ्या थयुं. वली जुओ के जगत्‌मां जड पदार्थो अनेक तरेहथी पोतपोतानी मेले पूर्वोक्त पांच निमित्तोथी पोतपोतामां मली जाय छे. जेम के सूर्यना किरणो वादलामां पडवाथी इंद्रधनुष्‌नुं बनवुं, संध्यानुं होवुं, पांच वर्णनां वादलांनी एकत्र घटा थवी, चंद्र सूर्यनी आस पास कुंडालां थवां, आकाशमां पवनोना मेलापथी जल तेमज अग्निनुं उत्पन्न थवुं, तेमज वरसाद वरसवाथी घास तृणादि अनेक प्रकारनी वनस्पतिनुं उत्पन्न थवुं, तथा अनेक प्रकारना कीट पतंग प्रमुख जीवोनुं उत्पन्न थवुं इत्यादि;

१ जीवकृत पुरुषार्थ वा तेणें करेलो शुभाशुभ यत्न.

आ पांचे निमित्त विना कोइ वस्तुने बनावतां ईश्वर देखाता नथी जरा पक्षपात छोडी विचार करो ? ईश्वर कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थइ शके छे ? कारण के पृथ्वी, आकाश, चन्द्र सूर्य इत्यादि तो द्रव्यार्थिक नयना मतथी अनादि छे पछी तेने वास्ते पुछवु थाय के आ कोणें बनाव्या ? तो हवे अमे पुछियें छियें, ईश्वरने कोणें बनाव्या ? जो कहेशो के ईश्वरने तो कोइयें बनाव्या नथी, ते तो अनादिथी बन्या बनेलाज छे, तो पछी पृथ्वी प्रमुख केटला एक पदार्थो पण बन्या बनेला अनादिथीज छे एम मानवामां शु खल्ला आवे छे ?

खरडज्ञानी कहे छे के—स्वभावथी जगत्‌नी उत्पत्ति जे माने छे तेना मतमा आ दोष आवे छे जो पृथ्वी स्वभावथी थाय छे तो तेनो कर्त्ता तेमज नियता होय नहि, वली आ पृथ्वीथी जुदी दश कोश उपर आकाशमा पोतानी मेले बीजी पृथ्वी थइ जात,जे आज सुधी बनी नथी तेथी एम जणाय छे के ईश्वर कर्त्ता छे

उत्तरपक्ष – आप कांइ विचार करो छो के नहि ? जो विचारशो तो पूर्वोक्त केहेवु अयुक्त लागशे कारण के अमे कहियें छियें के पृथ्वी विगेरे अनादि छे, कोइयें बनावेल नथी, अने तमे कहो छो के आकाशमां उंचे दश कोशने अंतरे बीजी पृथ्वी केम नथी बनती ? हवे विचारो के आ तमारो सवाल समजणवालो छे ? आ तमारा प्रश्नना उत्तरमा कोइ एम पुछे के जो ईश्वर स्वभावथी बन्या होय तो ईश्वरथी अलग बीजा ईश्वर केम उत्पन्न थता नथी ? जो एम कहो के ईश्वर अनादि छे तेथी बीजा नवा ईश्वर केम बने ? तेवी रीतें अमे पण कही शकिये छियें के पृथ्वी अनादि छे,नवी नथी बनती,तो पछी दश कोश आकाशमा केम बने ?

पूर्वपक्ष – जो वस्तु पोते पोतानी मेलेज बनीजाय तो सर्वपरमाणु एकठा केम मली जता नथी?अथवा एकेक थइने विखरीपण केम जता नथी?

उत्तरपक्ष – जड कांइ अमारी आज्ञा मानता नथी के अमारा केहेवाथी एकठा थइने एकरूप थइ जाय, अथवा एक एक थइ विखरी जाय, पूर्वोक्त पांच निमित्त ज्यां मलवाना हशे त्यां एकत्र थशे, ज्यां निमित्त नहि मले त्यां एकठा थशे नहि

पूर्वपक्ष –सर्व परमाणुओने एकत्र मलवामा पांचनिमित्त केम मलतानथी?

उत्तरपक्षः– अनादि संसारनी जे नियतिरूप मर्यादा छे ते कदापि अन्यथा थती नथी. जो कदी थाय तो, संसारमां जे जीवो जन्म लहे छे ते सर्वे स्त्रीनाज, अथवा पुरुषनाज रूपथी केम उत्पन्न न थाय ? जो एम कहो के जेवां जेवां जेणे कर्म कर्यां होय तेवां तेवांज तेने फल मले छे, पछी फक्त स्त्री आदि स्वरूपथीज केम उत्पन्न थाय ? तो हवे अमे पुछियें छियें के, सर्वजीवोयें स्त्री होवानां के पुरुष होवानां जुदां जुदां कर्म केम कर्यां ? एकसरखां कर्म केम न कर्यां ? उत्तरमां एम केहेशो के, संसारमां ए सनातनथी रीत छे के सर्वजीव सरखां कर्म कदापि करता नथी; त्यारे तो परमाणुमां पण सनातनथी एज स्वभाव छे के एकत्र कदापि मलवुं नहि, तेमज एकएक थइ विखराइ पण जवुं नहि. हे पूर्वपक्षि! आ तमारा ईश्वर जे जगत् रचेछे ते तमारा केहेवाथी, अगाऊ अनंत सृष्टिउं रची चुक्या छे, तेमज एकेक जीवोने अशुभकर्मोनां फल अनंतवार दइ चुक्या छे, तो पण ते जीवो आजसुधी पाप कर्याज करे छे, तो हवे तेउने शिक्षा करवाथी ईश्वरने शुं लाभ थयो ? के अनंत कालथी आ विडंबनामां पडी रह्या छे ? वली ईश्वरने सृष्टि रचवानुं पण शुं प्रयोजन हतुं ?

पूर्वपक्षः– ईश्वरने सृष्टि नहि रचवानुं शुं प्रयोजन हतुं ?

उत्तरपक्षः– वाह रे अज्ञशिरोमणि ! आ तमे शुं उत्तर आप्यो ? शुं आ तमारा उत्तरथी विद्वान् माणस उपहास नहि करे ? ईश्वर जो सृष्टि रचे तो ईश्वरताज नष्ट थइ जाय; आ वृत्तांत, उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें.

पूर्वपक्षः– ईश्वरनी जे शक्तिउं छे ते सर्वे पोत पोतानुं काम करेछे, जेम आंख देखवानुं काम करेछे, कान सांभलवानुं काम करेछे, तेवी रीतें ईश्वरमां जे रचनाशक्ति छे, ते रचना करवाथीज सफल थायछे, ते वास्ते जगत् रचेछे.

उत्तरपक्षः–जो तमे ईश्वरने सर्व शक्तिमान् मान्या तो ईश्वरनी सर्व शक्तिउं सफल थवी जोइये. पछी तो ईश्वर एक सुंदर पुरुषनुं रूप रचीने १ जगत्नी सर्व सुंदर सुंदर स्त्रियो साथे भोग करे,२ चोर बनी चोरी करे, ३ विश्वास घातिपणुं करे, ४ जीवहत्या करे, ५ जूठ बोले, ६ अ-

न्याय करे, ७ अवतार लइ गोपियो साथे कल्लोल करे, ८ कुब्जा साथे जोग करे, ए बीजानी स्त्रीने भगवी लइ जाय, १० शिरपर जटा राखे, ११ त्रण आंख बनावे, १२ बेलपर चढे, १३ शरीरपर विभूति लगावे, १४ एक स्त्रीने वामार्द्धांगमां राखे, १५ कोइ मुनिनी पासे नागा थइ नाचे, १६ कोइने वरदान आपे, १७ कोइने शाप दे, १८ चार मुख बनावी एक स्त्री राखे, १९ पोतानी पुत्री साथे जोग करे, २० संग्राम करे, २१ स्त्रीने चोरी लइ जाय तो पछी ते स्त्रीने माटे रोतो फरे, २२ एक पोतानो भाइ बनावे, पछी ज्यारे संग्राममां तेने शस्त्र लागे, त्यारे भाइना दुःखथी बहु रोवे, २३ पोते पोताने अज्ञानी समजे, २४ भाइनी चिकित्सा वास्ते वैद्य बोलावे, २५ सर्व काइ खाय, २६ पीवे, २७ नाचे, २८ कुदे, २९ रोवे, ३० पीटे, पछी, ३१ निर्मल, ३२ ज्योति स्वरूप, ३३ निरहंकार, ३४ सर्व व्यापक, बनी बेसे इत्यादि शक्तिओ ईश्वरमां छे के नहि ? जो छे तो, पूर्वोक्त सर्व काम ईश्वरने करवां पडशे, जो नहि करे तो ईश्वरनी सर्व शक्तिओ सफल नहि थवानी ? पछी तो ईश्वर महादुःखी थइ जशे कारण के जेने नेत्र तो मलेलां छे, अने तेने देखवानु न मले तो, ते केवो दुःखी थाय छे ? जो एम कहो के पूर्वोक्त अयोग्य शक्तिओ ईश्वरमां नथी, तो तो सर्व शक्तिमान् ईश्वर छे एम कदापि न केहेवुं जोइयें जो एम कहो के योग्य शक्तिओनी अपेक्षायें अमे सर्वशक्तिमान् मानियें छियें, तो तो जगत् रचवानी शक्ति पण अयोग्यज छे, ते पण परमात्मामां नथी ते शक्तिनी अयोग्यता, उपर लखी आव्या छियें तथा हे पूर्वपक्षि ! ज्यारे ईश्वरें प्रथम सृष्टि रची हती, त्यारे स्त्री, पुरुषो तो न होतां, हवे विचारो के माता पिता विना मनुष्य केम उत्पन्न थयां हशे ?

पूर्वपक्ष —ज्यारे ईश्वरें सृष्टि रची हती, त्यारेज बहुपुरुष, तेमज बहु स्त्रियो, माता पिता विना रच्यां हतां,त्यारपछी गर्भथी उत्पन्न थवा लाग्यां

उत्तरपक्ष —आ प्रमाणरहित केहेवुं कोइपण विद्वान् मानशे नहि कारण के माता पिता विना कदापि पुत्र उत्पन्न थइ शकतो नथी जो कदी ईश्वरें प्रथम माता पिता विना पुरुष, स्त्री उत्पन्न कर्यां हतां तो आज पण घडयां घडाव्यां, बन्यां बनाव्यां स्त्री पुरुष केम नथी मोकलता? गर्भधारण करावयां, स्त्रीपुरुषनां मैथुन करावयां, गर्भवासनां दुःख जो

गवाववां, योनियंत्रद्वारा खेंची कढाववां, इत्यादि संकट शावास्ते रच्यां ? ईश्वरें अनंतवार सृष्टि रची, अने प्रलय कर्यो, त्यारे तो थाक्या नहि तो शुं मनुष्योनेज बनाववाथी थाक चडवानो छे ? के घडेला घडावेला बनेला बनावेला मोकली शकता नथी ? माता पिता विना पुत्र उत्पन्न थाय ए कदापि बनी शकतुं नथी, ते हेतुथी जगत्नो प्रवाह अनादिथी तेवीज रीतें तरतमंता रूपें चालतो आवेलो सिद्ध थाय छे.

पूर्वपक्ष—जो कदी ईश्वर सर्व वस्तुना कर्ता न होय, अने जीवज कर्त्ता होय तो तो जीव पोतेज शरीर धारण करी लेशे. वली शरीरने कदापि छोडशे नहि, पोते पोतानां सारां फल भोगवी लेशे, अने कदी मरशे नहि.

उत्तरपक्षः—आपें जे कह्युं ते सर्व कर्मने वश छे, परंतु जीवने आधीन नथी, जो एम कहो के कर्मपण जीवेंज कर्यां हतां, त्यारे अशुभ कर्म जीवें केम कर्यां ? कारण के कोइपण पोतानुं बुरुं करतां नथी; आ बातनो उत्तर तो अपाइ गयो छे, परंतु तमारी समजण थोडी छे तेथी समजता नथी. कारण के जीवोनी जे जे शुभ अशुभ अवस्था छे, ते सर्व कर्मोनुं फल छे. वली जीव, कर्म करवामां तो प्रायः स्वतंत्रज छे, परंतु फल भोगववामां स्ववश नथी. कारण के जेम कोइ जीव धनुष्यथी तीर चलावे अने पछी पकडवा चाहे तो ते जेम तेनामां सामर्थ्य नथी, तेमज कोई जीव विष खाय, ते खावामां तो स्ववश छे परंतु ते विषना वेगने रोकवामां जेम समर्थ नथी, तेम कर्म करवामां तो जीव प्रायः स्वतंत्र छे परंतु फल भोगववामां परवश छे. वली जेम वर्त्तमान कालमां रेलगाडी, तथा तार जीवोए बनावेला छे ते चालती रेलगाडी तथा जता तारना वेगने, जेटलो वखत तेनी कलनी प्रेरणा शक्ति बंध पडती नथी तेटलो वखत, कोइ जीव रोकी शकता नथी, तेवीज रीतें कर्मफलना वेगने रोकवामां जीवपण समर्थ नथी. वली जीवने भवांतरमां कोण लई जाय छे ? तथा जीवना शरीरनी रचना, आंखोना पडदा, अनेक प्रकारना रंग बेरंगी, हाड, चामडी, लोही, वीर्य इत्यादि रचना कोण रचेछे ? तेनुं पूर्ण स्वरूप ज्यां (१४८) कर्म प्रकृतिनुं स्वरूप लखशुं त्यांथी जाणवुं. ते हेतुथी ईश्वर जगत् कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थता नथी. विशेष

१सारासार—नहाना मोहोटा उंचनीच वा न्यूनाधिक—के समविषम सुखिदुःखी. २स्वतंत्र.

रीतें जगत्कर्त्ता ईश्वरनुं खंडन जाणवुं होय तो (१) श्रीसंमतितर्क, (२) द्वादशसार नयचक्र, (३) स्याद्वादरत्नाकर, (४) अनेकांतजय पताका, (५) शास्त्रसमुच्चयस्याद्वादकल्पलता, (६) स्याद्वादमञ्जरी, (७) स्याद्वादरत्नाकरावतारिका, (८) सूत्रकृतांग, (९) नंदीसिद्धांत, (१०) शब्दांभोनिधिगंध हस्ति महाभाष्य, (११) प्रमाणसमुच्चय, (१२) प्रमाणपरीक्षा, (१३) प्रमाणमीमांसा, (१४) आप्तमीमांसा, (१५) प्रमेय कमलमार्त्तंड, (१६) प्रमेयदिनमार्तंड, (१७) न्यायावतार, (१८) धर्मसंग्रहणी, (१९) तत्त्वार्थ, (२०) षड्दर्शनसमुच्चय इत्यादि जैनमतना ग्रंथ जोई लेवा ते कारणथी जे कामी, क्रोधी, कपटी, धूर्त्त, परस्त्री गामी, स्वस्त्रीगामी, नाचनारा, गानारा, बजावनारा, रोपीटकरनारा, भस्म लगावनारा, माला जपनारा, संग्राम करनारा, डमरु आदि बाजां वगाडनारा, वरदान अथवा शाप देनारा, विनाप्रयोजन अनेक संकटमां पडनारा, इत्यादि अढारे दूषणसहित छे ते कुदेव छे तेने ईश्वर मानवा तेज मिथ्यात्व छे आ कुदेवोने माननारा पछरनी नाव उपर बेठा छे ते कारणथी लखवानुं प्रयोजन एटलुंज छे के कुदेवने कदापि अर्हंत भगवत परमेश्वर मानवा नहि

इतिश्री तपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्यमुन्यानंदविजयात्माराम विरचितजैनतत्त्वादर्शभाषांतरेकुदेवनिर्णयनामाद्वितीयपरिछेदःसंपूर्ण ॥२॥

॥ अथ तृतीयपरिछेदप्रारंभ ॥

त्रीजा परिछेदमां गुरुतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें जैनमतमां गुरुनां लक्षण आ प्रमाणे लखेलां छे — महाव्रतधराधीरा, भैक्षमात्रोपजीविन ॥ सामायिकस्थाधर्मोप, देशकागुरवोमता ॥ १ ॥ अर्थ —अहिंसादि, पांच महाव्रत धारण करनारा तथा पालनारा, अने आपत्ति समये धैर्य राखनारा, पोताना धारण करेला व्रतमां दूषण लगावी कलंकित नहि करनारा, तथा बेंतालीश दूषणरहित माधुकरी भिक्षावृत्ति करी, पोताना चारित्र धर्मना, तथा शरीरना निर्वाहवास्ते भोजन करनारा, भोजन पण पुरू पेट भरी नहि करनारा, भोजनने वास्ते अन्न, पाणी रात्रिमां नहि राखनारा, तथा धर्म साधनना उपकरण वर्जी बीजो काइ पण

संग्रह नहि करनारा, धन, धान्य, सुवर्ण, रौप्य, मणि, मोती, प्रवालादि कांइपण परिग्रह नहि राखनारा, तथा राग द्वेषना परिणामरहित, माध्यस्थवृत्तिथी सदा वर्तनारा, तथा जीवोना उद्धारवास्ते, अर्हत भगवंत परमेश्वरें सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप धर्म, स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण करेल छे, तेनो भव्यजीवोने उपदेश करनारा, परंतु ज्योतिष शास्त्र, अष्टांगनिमित्तशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति-सेवाप्रमुख अनेक शास्त्र, जेथी धर्ममां बाधा पहोंचे तेवां शास्त्रोनो उपदेश नहि करनारा, कारण के लौकिक शास्त्रो बुद्धिमान् पुरुषो वर्त्तमानमां पण बहु अध्ययन करे छे, तेमज सांसारिक विद्यानां नवीन, नवीन अनेक पुस्तको बनावेछे. तथा पाश्चात्त्य पुरुषोनी बुद्धि जोइ आ देशना लोको पण सांसारिक विद्यामां बहुज निपुण थाय छे, अने ते कारणथी जीवोने धर्म पामवो बहुज मुश्केल थायछे, तेथी फक्त धर्मनोज उपदेश करनारा, एवा लक्षणवाला गुरु जैनमतमां छे अर्थात् जैनमतमां गुरुनां एवां लक्षणो छे.

प्रथम पांच महाव्रत साधुने धारण करवां कह्यां छे ते पांच महाव्रत कयां छे ? ते कहियें छियें. अहिंसासूनृताऽस्तेय, ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः ॥ पंचभिः पंचभिर्युक्ता, भावनाभिर्विमुक्तये ॥ २ ॥ अर्थः–(१) अहिंसा (जीवदया) (२) सूनृत (सत्यवचन बोलवुं) (३) अस्तेय (साधुने उचित, आप्या विना वस्तु न लेवी ते) (४) ब्रह्मचर्य पालवुं (५) सर्व परिग्रहनो त्याग. ए पांच महाव्रत छे, तथा आ पांच महाव्रतोमां एकेक महाव्रतनी पांच पांच भावना छे. साधु आ पांच महाव्रत, तथा पचीश भावना, मोक्षने वास्ते पाले.

आ पांच महाव्रतमांथी प्रथम महाव्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. न यत् प्रमादयोगेन, जीवितव्यपरोपणं ॥ त्रसानां स्थावराणां च, तदहिंसाव्रतं मतं ॥ ३ ॥ अर्थः–त्रस, (द्वींद्रियादि) अने स्थावर, (पृथ्वीकाय) (अप्काय-तेउकाय-वाउकाय-वनस्पतिकाय) आ सर्व जीवोने प्रमादवश थइ मारे नहि. प्रमादनां लक्षणो; राग, द्वेष, असावधानपणुं, अज्ञान, मन वचन कायानुं चंचलपणुं, धर्मनेविषे अनादर इत्यादि. प्रमादने वश थइ जे प्राणातिपात करवो, तेनो जे त्याग, तेनुं नाम अहिंसा व्रत छे.

वीजा महाव्रतनु स्वरूप लखिये छियें प्रिय पथ्य वचस्तथ्य, सूनृतव्रत मुच्यते ॥ तत्तथ्यमपिनो तथ्यमप्रिय चाहित च यत् ॥ ४ ॥ जे वचन सा जलवाथी बीजा जीव हर्ष पामे,ते वचनने प्रियवचन कहियें,तथा जे वचन जीवोने पथ्यकारि होय, परिणाम सुदर होय, अर्थात् जे वचनथी जीवने जविष्यमां वहुज सारु थाय, तथा जे वचन सत्य होय, एवु वचन जे बोलवु ते सूनृत व्रत कहियें, अने जे वचन अप्रिय तथा अहितकारि होय ते सत्य होय तो पण सत्य नथी आ व्रतविषे काइक विशेष ल खियेछियें जे वचन व्यवहारमां जलें सत्यज होय, परतु ते जो बीजा जीवने दु खदायक होय तो ते वचन साधु न बोले जेम के काणाने काणो केहेवो, चोरने चोर केहेवो, कुष्टीने कुष्टी केहेवो, इत्यादि, वली जे वचन जीवोने जविष्यमां अनर्थकारक होय तेपण वसुराजानी पेठे बोले नहि जो आ बने वचनो बोले तो ते साधुने सूनृत व्रतमां कलंक लागी जाय, कारण के आ बने वचनो असत्यमांज गणेला छे

हवे त्रीजु महाव्रत लखियें छियें अनादानमदत्तस्या,ऽस्तेयव्रतमुदीरित ॥ बाह्या प्राणानृणामर्थो, हरता त हताहि ते ॥ ५ ॥ अर्थ —अदत्त मालेकना आप्या विना लई लेवु तेनो जे नियम ते अस्तेय व्रत कहियें नामातर अचोरीव्रत अदत्तादान, चार प्रकारनु छे (१) जे वस्तु साधु ने लेवा योग्य छे, जेम के अचित्त, जीवरहित वस्तु, तृण, काष्ठ, पाषाणादि, ते तेना स्वामिना पुछ्या विना लई लेवी, ते स्वामि अदत्त (२) तथा जेम कोई घेट्ट, बकरी, गाय प्रमुख जीव, जेनो स्वामी बीजा हिंसकजीवने तेनी किंमत लई आपे, अथवा किंमत विना आपे, अने ले नारें आपेली वस्तु लीधी छे, परंतु ते जीवें पोतानु शरीर आपेलु नथी, ते हेतुथी जीवअदत्त (३) तथा आधाकर्मादि आहार प्रमुख जे जे वस्तु,अचित्त, जीवरहित पण छे, अने आपेली पण ते वस्तुना स्वामियें ज छे, परतु तीर्थंकर जगवतें निषेध करी छे पछी जो साधु ते वस्तुने ग्रहण करे तो तीर्थंकर अदत्त (४) तथा जे वस्तु निर्दोष छे, जेम के वस्त्र आहारादि, अने ते वस्तुना स्वामियें ते आपेली छे, तेमज तीर्थंकर जगवतें तेनो निषेध पण करेलो नथी, छतांपि गुरुनी आज्ञाविना ते वस्तुने जो साधु लहे तो अदत्त आ व्रतमां आ चारे प्रकारनुं अदत्त

न लेवुं. जेटलां व्रत, नियम छे, ते सर्वे अहिंसा व्रतनी रक्षावास्ते वाड समान छे, आ त्रीजा व्रतना पालनथी, अहिंसा व्रतनीज रक्षा थाय छे; अने जो त्रीजुं व्रत न पाले तो अहिंसा व्रतने दूषण लागे छे, कारण ए छे के लक्ष्मी जे छे ते मनुष्योना वाह्य प्राण छे. ज्यारे मनुष्य कोइनी चोरी करे छे, त्यारे निश्चयथी ते तेना प्राणोनोज नाश करे छे. ते कारणथी चोरी करवी ते महापाप छे. सर्व चोरीनो जे त्याग, तेनुंज नाम त्रीजुं अदत्तादान त्यागरूप महाव्रत छे.

हवे चोथा महाव्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. दिव्यौदारिककामानां, कृतानुमतिकारितैः ॥ मनोवाक्कायतस्त्यागो, ब्रह्माष्टादशधा मतम् ॥ ६ ॥ अर्थः—दिव्य (देवताना) वैक्रिय शरीर संबंधी जे कामभोग, तथा औदारिक (तिर्यंच, मनुष्यना) शरीर संबंधी जे काम भोग, अर्थात् वैक्रिय तेमज औदारिक ए बंने शरीरनी साथे विषयसेवन करवुं, तेमज बीजाउने विषयसेवन कराववां, तेमज विषयसेवन जे करे तेने अनुमति आपवी, आ छ भेद, मनथी, वचनथी, तेमज कायाथी ए रीतें अढार प्रकारथी मैथुनसेवननो जे त्याग तेने ब्रह्मचर्य व्रत कहियें छियें.

हवे पांचमुं महाव्रत लखियें छियें. सर्वभावेषु मूर्छायाः, स्त्यागः स्यादपरिग्रहः ॥ यदि सत्स्वपि जीयेत, मूर्छया चित्तविप्लवः ॥ ७ ॥ अर्थः—संपूर्ण जे सारा भाव पदार्थ, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप, तेनेविषे जे मूर्छा- ममत्वभाव- मोह, तेनो जे त्याग, ते अपरिग्रह व्रत कहियें. जेनी पासे पोताना शरीर विना बीजी कांइ वस्तु नथी तेने पण निष्परिग्रह पणुं छे एम न कहियें, परंतु जेने, सर्व वस्तुउ उपरथी मूर्छा-ममत्व-मोह गयेलो होय तेनेज निष्परिग्रही कहियें. कारण के जेनी पासे वस्तु कोइ नथी, परंतु नथी एवी वस्तुनी चाहना जेने लागी रही छे ते त्यागी नहि. जो ज्ञानद्वारा मूर्छा त्याग्या विना त्यागी थवातुं होय तो कुतरा तेमज गधेडा पण त्यागी थवा जोइयें. सबब जे पुरुष ममत्वरहित छे ते निष्परिग्रही छे. पछी तेनी पासे धर्मसाधन करवानां केटलां एक उपकरण पण छे तो पण मूर्छाना अभावथी ते परिग्रह नथी.

हवे पूर्वोक्त एकेक महाव्रतनी पांच पांच भावना लखियें छियें. भावनाभिर्भावितानि, पंचभिः पंचभिः क्रमात् ॥ महाव्रतानि नो कस्य, सा-

धयत्यव्यय पदम् ॥ १ ॥ अर्थ – आ पांच महाव्रतोनी पचीशभावनाथी जे कोइ ते ते महाव्रतने रंजित (वासित) करे, अर्थात् पांच पांच भावनापूर्वक अखंड महाव्रत पाळे तो एवो कोइ जीव नथी के तेने ते महाव्रत मोक्ष पद न प्राप्त करावे ?

हवे प्रथम महाव्रतनी पांच भावना लखियें छियें मनोगुप्त्येषणा दाने, र्याभि समितिभि सदा ॥ दृष्टान्नपानग्रहणे, नाहिंसां भावयेत् सुधी ॥ १ ॥ अर्थ – मनने पापना काममां न प्रवर्त्तावे, परंतु पापना काममांथी खेंची लीए तेनु नाम मनोगुप्ति छे जो मनने पाप काममां प्रवर्त्तावे, अने बाह्य वृत्तिथी हिंसा न पण करे तो पण प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी पेठे सातमा नरकमां गमन करवा योग्य पापकर्म उत्पन्न करे छे ते कारणथी मुनियें अवश्य मनोगुप्ति करवी जोइयें ए प्रथम भावना तथा एषणा समिति–आहारादि चारे वस्तु, आधाकर्मादि बेंतालीश दोषरहित लहे बेंतालीश दूषणोनु संपूर्ण स्वरूप जोवुं होय तो पिंडनिर्युक्ति शास्त्र (७०००) श्लोक प्रमाण छे ते जोइ लेवु ए बीजी भावना तथा आदाननिक्षेप- पात्र, दंड, फलक प्रमुख जे कांइ लेवुं पडे, तथा भूमि उपर राखवुं पडे, ते प्रथम तो नेत्रथी देखीने, रजोहरणथी पुजीने, पछी लहे तेमज राखे, कारण के विंछी, सर्पादि अनेक झेरी जीव, जो ते उपकरण उपर बेठा होय तो ते करडे, अने बीजी विचारा अनाथ जीव बेठा होय तो हाथना स्पर्शथी ते मरी जाय, अने तेथी जीवहत्यानु पाप लागे, ते वास्ते जे काम करे ते यत्नपूर्वक करे. ए त्रीजी भावना तथा ज्यारे चालवानी जरूर पडे त्यारे पोतानी आंखथी चार हाथ प्रमाण जमीन देखीने चाले, जे नीचुं जोइने चाले छे, तेने केटला एक गुण तथा लाभ प्राप्त थाय छे,प्रथम तो पगने ठोकर लागती नथी, बीजु, जेने परिग्रहनो त्याग न होय तेने पडीगयेला पैसा तेमज रूपैया आदि मली जाय, त्रीजु, कोइनी वहु, दीकरी सन्मुख नजर करतो नथी तेथी उत्तम मनुष्य छे, एम लोकमां प्रसिद्ध थाय, चोथु जीवनी रक्षा करवाथी धर्मनी प्राप्ति थाय छे इत्यादि ए चोथी भावना तथा जे अन्न पाणी साधु लहे ते प्रकाशवाली जग्यामा लहे, अंधकारवाली जग्यामां न लहे, कारण के अंधकारवाली जग्यामां एक तो जीव

नजरे पडता नथी, वळी साप, विंछी करडवानो जय रहे छे. तथा गृहस्थनुं कांइ आजूषण प्रमुख गयुं होय तो तेना मनमां शंका उत्पन्न थाय के, कोण जाणे अंधारामां साधुज लइ गया होय? वळी अंधारामां सुंदर साधुने देखीने कदाचित् कोइ उत्कट विकारवाळी स्त्री उप्र स्पर्श करे, अने ते वखते बीजा देखता होय तो धर्मनी अत्यंत निंदा थाय, वळी साधुनुं मन पण अंधारामां स्त्रीने देखीने ज्रष्ट थाय, साधु स्त्रीने पकडे, स्त्री पोकार करे, एटले विशेष धर्मनी हानि थाय; साधुउ उपर अप्रीति थाय, ते कारणथी अंधकारवाळी जग्यामां साधु अन्नादि न लहे. ए पांचमी जावना.

हवे बीजा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छियें. हास्यलोजजय क्रोध, प्रत्याख्यानैर्निरंतरम् ॥ आलोच्य जाषणमपि, जावयेत् सूनृतं व्रतं ॥ १ ॥ अर्थः—प्रथम कोइनी हांसी न करे, हांसीनो त्याग करे, कारण के जे पुरुष बीजानी हांसी करशे, ते अवश्य जुठुं बोलशे. परनी हांसी करवी ते महा अनर्थनुं कारण छे. श्रीहेमचंद्रसूरिकृत रामायणमां लख्युं छे के, रावणनी बेन शूर्पनखानी श्रीरामचंद्र तेमज लक्ष्मणजीये हांसी करी तेथी शूर्पनखा क्रोधायमान थइ, पोताना जाइ रावणनी पासे गइ; अने सीतानुं वर्णन कर्युं, पछी रावणें सीतानुं हरण कर्युं, मोटुं युद्ध थयुं, जेनी आज लोको नकल बनावे छे. आ सारी रामायणनुं निमित्त शूर्पनखानी हांसी छे. ते वास्ते परहास्यनो त्याग करे. प्रथम जावना. बीजो, लोजनो त्याग करे, कारण के जे लोजी हशे ते अवश्य पोताना लाजने वास्ते जूठुं बोलशे. ए बीजी जावना. तथा जय न करवो, कारण के जयवंत पुरुष पण जूठुं बोली दीये छे. ए त्रीजी जावना. तथा क्रोध करवानो त्याग करे, कारण के जे पुरुष क्रोधवश थशे ते बीजानां छतां, अछतां दूषणो अवश्य बोलशे, तेथी क्रोधत्यागरूप चोथी जावना. तथा प्रथम मनमां विचार करी पछी बोले, कारण के विचार विना बोलशे ते अवश्य जूठुं बोलशे, ते वास्ते विचारपूर्वक बोलवुं ते पांचमी जावना.

हवे त्रीजा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छियें. आलोच्यावग्रहयाञ्चा,ऽजीक्ष्णावग्रहयाचनं ॥ एतावन्मात्रमेवैत, दित्यवग्रहधारणं ॥ १ ॥

समानधार्मिकेभ्यश्च, तथावग्रहयाचन ॥ अनुज्ञापि तथा नाम्ना, सनम स्तेयभावना ॥ २ ॥ अर्थ –जे मकानमां साधुने रेहेवु होय, ते मकानना स्वामिनी प्रथम आज्ञा लेवी, मकाननो मालेक आज छे एम जाणीने आज्ञा लेवी जो स्वामिनी आज्ञाविना रहे तो स्तेय लागे तेमज घरनो मालेक कदाचित् रात्रिमां क्रोधवश थइ साधुने बहार काढे तो रात्रिमां क्यां जवुं ? इत्यादि अनेक क्लेश उत्पन्न थाय, ते वास्ते मकानना मालेकनी आज्ञा लइ ते मकानमां रेहेवुं ए प्रथम भावना उपाश्रयना स्वामिनी वारवार आज्ञा लेवी, कारण के कोइ साधु कदाचित् रोगी थइ जाय, त्यारे जगल पुरीषमूत्र करवाने अवश्य जगा जोइयें गृहस्वामिनी आज्ञाविना जो तेना मकानमां मलमूत्र करे तो चोरी लागे ते वास्ते गृहस्वामिनी वारंवार आज्ञा लेवी ए बीजी भावना तथा उपाश्रयनी भूमिनी मर्यादा करी लहे के अमुक जग्यासुधी अमने आपनी आज्ञा छे, जो मर्यादा न करे तो अधिक भूमि उपयोगमां लेवाथी चोरी लागे छे ते वास्ते प्रथमज मर्यादा करे ए त्रीजी भावना तथा जे साधु समानधर्मी होय, अने ते कोइ जग्यामां प्रथम उतरेला छे, पछी बीजा साधु जो ते मकानमां उतरवा चाहे तो प्रथमना साधुनी आज्ञा विना उतरे नहि जो प्रथमना साधुनी आज्ञा न लहे तो स्वधर्मी अदत्त लागे ए चोथी भावना तथा साधु जे कांइ अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, शिष्यादि लहे, ते सर्वे गुरुनी आज्ञाथी लहे, जो गुरुनी आज्ञा विना कांइ वस्तु लहे तो गुरु अदत्त लागे ए पाचमी भावना

हवे चोथा व्रतनी पांच भावना लखियें छियें स्त्रीषंढपशुमद्वेस्मा, सनकुड्यांतरोज्झनात् ॥ सरागस्त्रीकथात्यागात्, प्राग्रतस्मृतिवर्जनात् ॥ १ ॥ स्त्रीरम्यांगेक्षणस्वांग, संस्कारपरिवर्जनात् ॥ प्रणीतात्यशनत्यागात्, ब्रह्मचर्यं तु भावयेत् ॥ २ ॥ अर्थ –जे घरमा, आसनमां के भींतने अतरे देवी अथवा मनुष्यनी स्त्री वसती होय, अथवा देवांगना के मनुष्य स्त्रीनी लेपमय के चित्रामण प्रमुखनी मूर्त्ति होय, तथा जे घरमां नपुसक वेदवाला रेहेता होय, तथा जे मकानमां पशु, गाय, महिषी, घोडी, बकरी, गाडरी प्रमुख तिर्यंच स्त्री राखवामा आवती होय, तथा जे मकानमां कामसेवन करनारी स्त्रीना शब्द तथा बीजा मोह उत्पन्न करनारा

शब्द तथा तेना आभूषणोना शब्द श्रवण थता होय, ते मकानमां तथा तेनी एक भींतने अंतरे साधु न रहे. ए प्रथम भावना. तथा सराग (प्रेमसहित) स्त्रीनी साथे वार्त्तालाप न करे, अथवा रागवाली स्त्री साथे वार्त्ता न करे, तथा स्त्रीना, देश, जाति, कुल, वेष, भाषा, स्नेह श्रृंगार प्रमुखनी कथा सर्वथा न करे; कारण के रागवाली स्त्रीनी साथे जे पुरुष स्नेहसहित कामशास्त्र प्रमुखनी वार्त्ता करशे ते अवश्य विकार भावने प्राप्त थशे, ते वास्ते सरागस्त्री साथे कथा न करे. ए बीजी भावना. तथा दीक्षा लीधा पहेलां गृहस्थावासमां स्त्रीनी साथे जे कामक्रीडा, वदनचुंबन, चोरासी कामासनथी विषयसेवन प्रमुख क्रीडा करी होय, तेने फरी मनमां कोइ वखत स्मरण न करे, कारण के पूर्वक्रीडा स्मरण रूप इंधनथी कामाग्नि फरी धुंधवा लागी जाय छे. ए त्रीजी भावना. तथा अविवेकी मनुष्योने देखवा, तेमज वांछवा योग्य स्त्रीनां अंगोपांग, मुख, नयन, स्तन, जंघा, होठ प्रमुख तेने सरागदृष्टिथी जोवां, तथा अपूर्व विस्मय रसना पूरमां मग्न थइ आंख फाडी स्त्री सन्मुख जोवुं, इत्यादि वर्जे; परंतु रागरहित दृष्टिथी जो कदाचित् देखवामां आवी जाय तो दोष नहि. तथा पोताना शरीरने सुधारे, स्नान, विलेपन, धूपथी सुगंधित करे, नख, दांत, केश, समारे अने चक्षुनी कंगी, सूरमाथी विभूषा करे, इत्यादि शरीरसंस्कार न करे. कारण के स्त्रीनां रमणीय अंगोपांग देखवाथी, दिवानी शिखामां जेम पतंगिउं भस्म थाय छे, तेम कामी पुरुष पण कामाग्निमां भस्म थाय छे. आ शरीर सर्व अशुचिनुं मूल छे, तेने शृंगार करवो ते अज्ञानता छे. जेम मलीन वस्तुनी कोथली उपर चंदननुं लेपन करवामां आवे तो शुं ते कोथली सुगंधमय थाय छे? तेवुंज आ शरीर छे. वली आ शरीर अंते स्मशाननी मूठीभर राख थई जाय छे तो शावास्ते तेनी विभूषा करवामां व्यर्थ काल गमाववो जोइयें? ए चोथी भावना. तथा प्रणीत, स्निग्ध, मधुरादि रस, तेनो अधिक आहार करवो, तथा रूक्षभोजन पण संपूर्ण पेट भरी खावुं, आ बंने प्रकारना आहारनो त्याग करे; कारण के जे पुरुष, निरंतर स्निग्ध, मधुर रसनो आहार करशे ते जरुर धातुपुष्ट थशे, पछी वेद उदयथी अवश्य कुशील सेवन करशे. तेमज भिक्षावृत्तिमां रूक्षभोजन पण प्रमाणथी अधिक करवाथी काम उ-

त्पन्न थइ जाय छे, तेमज अधिक खावाथी शरीरने पीडा उत्पन्न थाय छे, वली विषूचिकाप्रमुख रोग थाय छे, ते वास्ते प्रमाणथी अधिक भोजन पण न करे पूर्वे पुरुषोए खावानी मर्यादा आ प्रमाणें कही छे, यत ॥ अद्धमसणस्स सव्व, जणस्स कुज्जा दवस्स दोभागे ॥ वाउपविआरणठा, छब्भाय ऊणग कुज्जा ॥ १ ॥ भावार्थ – मतिपूर्वक पोताना उदरना छ भाग करवा, तेमांथी त्रणभाग अन्नथी, अने बे भाग पाणीथी पूरवा, अने एक भाग खाली राखवो जेथी श्वासोश्वास सुखें सुखें प्राप्त थया करे ए पाचमी भावना

हवे पांचमा महाव्रतनी पाच भावना लखियें छियें स्पर्शे रसे च गंधे च, रूपे शब्दे च हारिणि॥ पचसु इंद्रियार्थेषु गाढ गार्ध्यस्य वर्जनं ॥१॥ एतेष्वेवामनोज्ञेषु, सर्वथा द्वेषवर्जनं ॥ आर्किचन्यव्रतस्यैव, भावना पच कीर्त्तिता ॥ २ ॥ अर्थ—स्पर्शादि मनोहर पांचे विषयोमां जे अत्यत गृद्धिपणु ते वर्जवु तेमज स्पर्शादि अमनोज्ञ पांचे विषयोमां द्वेष न क रवो ए पांचमा महाव्रतनी पांच भावना पूर्वोक्त पाच महाव्रत, ते मज पच्चीश भावना जेमा होय ते, तथा चरणसित्तरी अने करणसित्तरी संयुक्त जे होय ते जैनमतमां गुरु कहेल छे

हवे चरणसित्तरीना सित्तेर भेद लखिये छियें यत ॥ वयसमण धम्म संजम, वेयावच्च च बभ गुत्तीओ॥नाणाइ तिय तवको,हनिग्गहाइ चरण मेय ॥ १ ॥ अर्थ –पांच प्रकारना व्रत, दश प्रकारना श्रमणधर्म, सत्तर प्रकारना संयम, दश प्रकारनां वैयावृत्त्य, नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यगुप्ति, त्रण प्रकारें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, बार प्रकारना क्रोधादिनिग्रह, ए सर्वमली सित्तेर भेद थया तेमांथी पांच व्रतनुं स्वरूप भावनासंयुक्त उ पर बतावेल छे

हवे दशप्रकारें श्रमणधर्म लखियें छियें यत ॥ खतिय मद्दवज्जव, मु- त्तीतव संजमेय बोधव्वा ॥ सच्च सोयं आकिं, चणं च बभं च जइधम्मो ॥१॥ खति (क्षमा) कदापि सामर्थ्य होय अथवा न होय तोपण बीजानां दुर्वचन सहन करवाना परिणाम–मनोवृत्ति, तेनु नाम क्षमा छे अर्थात् सर्वथा क्रोधनो त्याग, ते क्षमा (२) मार्दव-कोमलपणु अहकाररहितपणु, एवा जे भाव, अथवा कर्म ते मार्दव, नम्र थइ अभिमाननो त्याग करवो ते

(३) आर्जव-मनवचन कायाथी सरल तेनो जे भाव अथवा कर्म ते आर्जव मनवचन कायानी कुटिलतानो अभाव. (४) मुत्तीमोचनं–बाह्याभ्यंतरथी तृष्णानो त्याग, लोभनो त्याग ते मुक्ति. (५) तप–रसादि धातु अथवा अष्टप्रकारनां कर्म जेनाथी भस्म थाय ते अशनादि बार प्रकारें तप. (६) संयम-आश्रवनी त्यागवृत्ति (७) सत्यं–मृषावादविरति, जूठनो त्याग (८) शौच-संयमवृत्तिमां कलंकनो अभाव. (९) आकिंचन– किंचित्मात्र द्रव्यनुं पोतानी पासे नहि होवापणुं(१०) ब्रह्मचर्य– सर्वथा मैथुननो अभाव. आ दश प्रकारना यतिधर्म जाणवा. वली मतांतरथी दशप्रकारें यतिधर्म आ रीतें कहेछे. यतः ॥ खंती मुत्ती अज्जव, मद्दव तहलाघवे तवे चेव ॥ संजम वियोग किंचण, बोधव्वे बंभचेरेय ॥ १ ॥ अर्थनी सुगमताथी विस्तार कर्यो नथी.

हवे सत्तर भेद संयमना लखिये छियें. यतः॥ पंचासवा विरमणं, पंचिंदिय निग्गहो कसाय जउ ॥ दंडत्तयस्स विरइ, सत्तरसहा संजमो होइ ॥ १ ॥ अथवा ॥ पुढवि दग अगणिमारुय, वणसइ खिति चउ पणिंदि अजीवा ॥ पहुप्पेह पमज्जण, परिठवण मणो वइ काए ॥२॥ अर्थः– ॥ उत्पन्न करियें कर्म जेनाथी ते आश्रव- तेना पांच प्रकार, पांच महाव्रतमां बताव्या छे ते (१) हिंसा (२) मृषा (३) चोरी (४) मैथुन (५) परिग्रह. आ पांचे आश्रवनो त्याग करे. तथा स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु तेमज श्रोत्र. आ पांचे इंद्रियोना स्पर्शादि पांचे विषयोविषे लंपटपणुं त्यागे. तथा क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चारे कषायने जीते. ए चारेना उदयने निष्फल करे, तेमज नहि उदय पाम्या होय तेने उत्पन्न न करे. तथा जीवनी चारित्रधर्मरूप लक्ष्मी जेनाथी दंडाय एवा खोटा मन वचन कायारूप जे त्रण दंड तेनी विरति करे. ए सत्तर भेद संयमना बताव्या. हवे प्रकारांतरथी संयमना सत्तर भेद बतावियें छियें. (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) पवन, (५) वनस्पति, (६) द्वींद्रियजीव, (७) त्रींद्रियजीव, (८) चतुरिंद्रियजीव, (९) पंचेंद्रियजीव. पूर्वोक्त नवविध जीवोनी, मन, वचन अने कायाथी, करवी, कराववी अने करनारने अनुमोदवारूप हिंसावृत्तिनो त्याग, ते नव प्रकारना संयम– तेमां सरंभ, समारंभ, आरंभ तेनी समज आ छे. प्राणीना प्राणना विनाश करवानो संकल्प करवो ते

सरंभ, जीवना प्राणने परिताप उपजाववो याने पीडा करवी ते समारंभ, तथा जीवोना प्राणनो विध्वस करवो ते आरंभ, तथा (१०) अजीवसयम, जे अजीव वस्तुने राखवाथी संयममां कलंक लागे जेमके मांस, मदिरा, सुवर्णप्रमुख धातु, मोतीप्रमुख रत्न, अकुशादि शस्त्र, इत्यादि अजीव वस्तु राखवाथी संयममा कलंक लागे, तेथी तेवी अजीव वस्तु न राखवी, अने अजीवरूप पुस्तक, तथा शरीर उपकरणादि, ते आ दूपमकाल प्र प्रमुख दोपथी, बुद्धि, आयु, श्रद्धा, संवेग, उद्यम, बल इत्यादि सर्व हीन थइ गयेल छे विद्यास्मरण रहेली नथी ते कारणथी आ कालमा पुस्तक राखवां, ते प्रतिलेखणा, प्रमार्जनपूर्वक यत्नथी राखवां तथा (११) प्रेक्षासंयम—नेत्रथी देखी, बीज, हरिप्रमुख जीवरहित स्थानमां सुवु, बेसवु, चालवु इत्यादि करवु ते तथा (१२) उपेक्षासंयम— गृहस्थने पापनो व्यापार करतां उपदेश करवो के आ काम तमे आवी रीतें करो हे; अथवा कोइ साधु संयमथी पलायमान थया होय तेने हितपूर्वक उपदेश करवो ते, तथा पार्श्वस्थादि साधु जेउ समाचारीथी भ्रष्ट थया होय, तेमज तेउ कोइ अनुचित काम करी रह्या होय, तेउने उपदेश करीश तो तेउ मानवाना नथी, एम कोइ साधु मनमां जाणी उदासीन रहे ते— तथा (१३) प्रमार्जन संयम— अवलोकन करेला स्थानमां वस्त्र, पात्रादि जो लेवां अथवा राखवां पडे तो प्रथम रजोहरणादिथी प्रमार्जन करीने पछी लेवां, राखवा के सुवुं, बेसवु करे ते तथा (१४) परिष्ठापना संयम— ज्ञास,पाणी, वस्त्र, पात्रादि जेमा जीव पडी गया होय तेने जीवरहित शुद्ध भूमिकामा शास्त्रोक्तविधिथी जे परठववा ते तथा (१५) मन संयम—मनमा द्रोह, ईर्ष्या, अभिमान न करवां, अने धर्मध्यानादिमां मन प्रवृत्त करवु ते तथा (१६) वचनसंयम हिंसाकारी कठोरवचन न बोलवां, अने शुभवचननु उच्चारण करवुं ते तथा (१७) कायासंयम-गमनागमन करवामां, तथा अवश्य करवा योग्य कामोमा उपयोगपूर्वक कायाने प्रवर्त्तावी ते आ सत्तर भेद संयमना जाणवा

हवे वैय्यावृत्त्यना दश भेद कहियें छियें आयरिय उवद्याय, तवस्सि सेहे गिलाण साहुसु ॥ समणोन्न संघ कुलगण, वेयावच्च हवइ दसहा ॥ १ ॥ अर्थ —(१) ज्ञानादि पांच आचारने पाले ते आचार्य, तथा सेविये

जे ते आचार्य. तथा (२) जेनी पासे आवीने अध्ययन करीयें ते उपाध्याय. तथा (३) तप जे करे ते तपस्वी. तथा (४) जेणें नवुं साधुपणुं अंगीकार कर्युं होय ते शिष्य. तथा (५) ज्वरादि रोगवाला जे साधु ते ग्लान. तथा (६) धर्मथी रूगनारने स्थिर करे ते स्थविर. तथा (७) जे साधुनी पोताना सरखी समाचारी होय ते समनोज्ञ. तथा (८) साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ए चारेनो जे समुदाय ते संघ. तथा (९) बहु एक सरखा गछोना, सजातिउना जे समूह ते कुल, चंद्रादि. तथा (१०) एक आचार्यनी वाचना वाला साधुउना समूह ते गण, गछ, कौटिकादि. पूर्वोक्त आचार्यादि दशोने अन्न, पाणी, वस्त्र, पात्र, मकान, (१) पीठ, (२) फलके, (३) संस्तारक प्रमुख धर्म साधनोथी जे साहाय्य करवुं, शुश्रूषा करवी, तथा जंगलमां रोग उत्पन्न थवाथी औषध करवां, तथा नाना प्रकारना उपसर्गोथी पालना करवी तेनुं नाम वैय्यावृत्त छे.

हवे जे शीलवान् साधु नव वाडसहित शील पाले तेने नवविध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति कहे छे. ते लखियें छियें. यतः ॥ वसहि कह निसिविंदिय, कुड्डंतर पुव्वकीलिय पणीए ॥ अइमायाहार विभूसणाइ नव बंभ गुत्तीउ ॥ १ ॥ अर्थः— १ (वसहि) वस्ति- जे ब्रह्मचारी साधु होय ते स्त्री, पशु, पंडकसंयुक्त जे वस्ति होय त्यां न रहे. तेमां प्रथम स्त्री, बे प्रकारनी छे, एक देवी, बीजी "मानुषी" मनुष्यणी; ते बंनेना वे वे भेद छे, एक असल, बीजी तेनी मूर्त्ति के चित्रामनी मूर्त्ति. आ बंने प्रकारनी स्त्री न होय ते वस्तीमां रहे. तथा पशु जे तिर्यंचणी, गाय, कुतरी, पाडी, घोडी, बकरी, घेटी प्रमुख जे वस्तिमां नहि रहेती होय त्यां रहे. तथा पंडक. नपुंसक, त्रीजा वेदवाला, अत्यंत मोहमय काम करनारा, स्त्री अने पुरुष बंनेनी साथे विषय सेवनारा, जे वस्तिमां रेहेता होय त्यां ब्रह्मचारी न रहे. कारण के आ त्रणे संयुक्त वस्तिमां रेहेतां थकां तेउनी काम विकारनी चेष्टा देखवाथी, ब्रह्मचारीना मनमां विकार उत्पन्न थवाथी ब्रह्मचर्यने बाधा थाय छे. जेम उंदर तेमज बिलाडी एक जगामां रहे तो उंदरने सुख नहि, तेमज आ त्रणे संयुक्त वस्तिमां रेहेवाथी शीलवानूने शियलमां उपद्रव थाय. आ प्रथम ब्रह्मचर्यगुप्ति.

१ पाटला, २ पाटियुं. ३ संथाराआदि.

(कह) कथा केवल स्त्रियोनेज, तथा एकली स्त्रीने धर्मदेशना व चनना प्रबंधरूप कथा न कहे, तथा स्त्रीनी कथा न करे ॥ यथा ॥ क र्णाटी सुरतोपचारचतुरा, लाटी विदग्धा प्रिया ॥ इत्यादि कथा न करे कारण के आ कथा राग उत्पन्न करवानो हेतु छे तथा स्त्रीना, देश, जाति, कुल, वेष, भाषा, गति, विभ्रम, इंगित, हास्य, लीला, कटाक्ष, स्नेह, रति, कलह, शृंगार इत्यादि जे विषय रसनी पोषण करनारी कामिनीनी कथा ते कदी न करे, जो करे तो अवश्य मुनिनु मन पण विकार पामे आ बीजी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति

३ (निसिज्ज) आसन– स्त्रियोनी साथे एक आसनपर न वेसवुं, तथा जे जगा अथवा आसनथी स्त्री उठी होय ते आसन अथवा स्था नमा वे घडी सुधी साधु न वेसे, कारण के ते जग्यामां तत्काल वेस वाथी स्त्रीनी स्मृति थाय छे, तेमज स्त्रीना वेसवाथी शय्या अथवा आ सन, मेलथी मलिन थवाथी स्त्रीना स्पर्शवाला आसनाविना स्पर्शथी वि कार उत्पन्न थाय छे आ त्रीजी ब्रह्मचर्यगुप्ति

४ (इंदिय) इंद्रिय, अविवेकी लोकोने देखवा योग्य स्त्रियोनां अं गोपांग जे नाक, स्तन, जघा प्रमुख तेउने ब्रह्मचारी साधु अपूर्व रसमां मग्न थइने, नेत्र फाडीने देखे नहि कदाचित् दृष्टि पडी जाय तो पछी एवी चिंतवना पण न करे के वाह शु विशाल सुंदर लोचन छे! वाह शु नासिका सीधी छे! तथा छवा योग्य बंने स्तन छे! जो स्त्रीनां पू र्वोक्त अंगोपांगनु एकाग्र रसमा मग्न थइ चिंतवन करे तो अवश्य मो हाधीन थइ मन विकार प्राप्त थाय आ चोथी ब्रह्मचर्यगुप्ति

५ (कुडुंतर) कुड्यांतर जे भींत, तट्टी के कनातने अंतरे स्त्री पुरुष मैथुन सेवन करतां होय, तेमज तेउना शब्द संभलाता होय, त्यां ब्रह्म चारी साधु न रहे आ पांचमी गुप्ति

(पुव्वकीलिय) पूर्वक्रीडा पूर्वे गृहस्थ अवस्थामां स्त्रीनी साथे जे वि षय, भोग, क्रीडा, करी, होय, तेनु स्मरण न करे जो करे तो कामाग्नि प्रज्वलित थाय आ छठी गुप्ति

(पणीय) प्रणीत अति चिकाशवाला, मीठा दूध, दहीं, प्रमुख अति

१ आंतर अने बाह्य–मानस तथा शारीर, हाव भावादि चष्टित

धातुपुष्ट करनार आहार निरंतर न करे. जो करे तो वीर्यनी वृद्धि थवाथी अवश्य वेदोदय थाय, पछी जरूर विषयसेवन करे, कारण के जीर्ण कोथलीमां विशेष रूपैया ज्ञरियें तो जरुर फाटी जाय. आ सातमी गुप्ति.

(अइमायाहार) अतिमात्राहार. ते रूक्ष, लुखी निक्षा पण प्रमाणथी अधिक न खाय, कारण के अधिक खावाथी पण विकार थइ जाय छे, तेमज शरीरने विषूचिकादि पीडा थवानुं कारण छे. आ आठमी गुप्ति.

(विज्ञूसणाइ) विज्ञूषणादि, शरीरनी विज्ञूषा, ते स्नान, विलेपन, धूप, नख, दांत, केश, जेमनी सुंदरता वास्ते करवा, समारवा, तथा विज्ञूषा वास्ते तिलक करवुं, सुरमो, काजल आखमां सारवा, तथा सुकोमल करवा सारु हाथ, पग, साबु तेल प्रमुखथी मसली गरमपाणीथी धोवां, इत्यादि शरीरनी विज्ञूषा न करे. आ नवमी ब्रह्मचर्यगुप्ति. आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा माटे नव वाड छे.

हवे ज्ञानादि त्रण कहियें छियें. यथार्थ वस्तुनो जे यथार्थ बोध करे ते ज्ञान. ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय तथा क्षयोपशम थवाथी उत्पन्न थयो जे वोध, तेनां हेतु जे द्वादशांग, तेमज द्वादश उपांग, तथा प्रकीर्णक जे उत्तराध्ययनादि ते सर्व ज्ञान कहियें. तथा बीजुं दर्शन–१ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, ए मोक्ष, आ जीवादि नवतत्त्वनुं जे स्वरूप तेमां श्रद्धा (रुचि) करवी. जेम के ए नवतत्त्व सत्य छे, मिथ्या नथी. एवी तत्त्वरुचि तेनुं नाम दर्शन. तथा त्रीजुं सर्वपापना व्यापारोथी ज्ञान, श्रद्धानपूर्वक निवृत्त थवुं तेनुं नाम चारित्र छे. तेमां देशविरति चारित्र तो ज्यां गृहस्थाश्रम धर्मनुं स्वरूप लखशुं त्यांथी जाणवुं; अने जे सर्वविरति चारित्र छे तेनुं स्वरूप तो आ गुरुतत्त्व वर्णनमां लख्या करियें छियें.

हवे बार प्रकारना तपनुं स्वरूप लखियें छियें. यतः ॥ अणसण मूणोयरिया, वित्तीसंखेवण रसच्चाउ ॥ काय कलेसो संली, णयाय बज्ञो तवो होई ॥ १ ॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सज्ञाउ ॥ जमणं उस्सग्गो विय, अप्तिंतरउ तवो होइ ॥ २ ॥ अर्थः–१ अनशन व्रत करवां २ ऊणोदरी–थोडुं खावुं ३ वृत्तिसंक्षेप–अनेक प्रकारना अन्निग्रह करवा ४ रसत्याग–दूध, दहीं, घी, तेल, गोल, मीठां पक्वान्न तेउनो त्याग करवो.

५ कायक्लेश–वीरासन, वज्रासन, प्रमुख अनेकतरेथी कायाने कष्ट आपवुं. ६ संलीनता–पांचे इन्द्रियोने पोत पोताना विषयोथी रोकवी आ ठ प्रकारें बाह्यतप १ प्रायश्चित्त–जे कांइ अयोग्य काम कर्युं होय ते गुरुनी पासे जे प्रमाणे कर्युं होय ते प्रमाणे प्रगटपणे केहेवुं, पछी ते पापनी निवृत्तिवास्ते गुरुपासे यथायोग्य दंम लेवो, अने भविष्यमां फरी ते पाप न करवु तेनुं नाम प्रायश्चित्त तप ठे, २ विनय–पोतानाथी गुणाधिकनु बहु मान करवु ते ३ वैयावृत्त्य पोतानाथी गुणाधिकनी भक्ति करवी ते ४ स्वाध्याय (१) पोते भणवु बीजाउने भणाववु (२) संशय उत्पन्न थयां थकां गुरुने पुछवु (३) पोते अध्ययन करेलु वारंवार स्मरणमां लाववु (४) जे कांइ अध्ययन कर्युं होय तेना तात्पर्यनु एकाग्र चित्तथी चिंतवन करवुं (५)धर्मकथा करवी ते संक्षेपमां–वांचना,पृछना,परावर्त्तना,अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, ए पांच रूपें ठे ५ ध्यान १ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान आ चारमां आर्त्त अने रौद्रध्यान तजवां अने धर्म अने शुक्लध्यान अंगीकार करवां ६ व्युत्सर्ग सर्व उपाधिउनो त्याग करवो ते आ ठ प्रकारें आभ्यंतर तप सर्व मली बार प्रकारनां तप ठे

क्रोध, मान, माया, अने लोभ आ चारेनो निग्रह करवो ए प्रमाणे पांच महाव्रत,दश श्रमणधर्म, सत्तर भेदें संयम, दशप्रकारें वैय्यावृत्त्य,नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, त्रण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, बार प्रकारें तप, क्रोधादि चार निग्रह, सर्वमली सित्तेर भेद चारित्रना ठे ते वास्ते तेने चरणसित्तरी कहेठे

हवे करणसित्तरीना भेद लखियें ठियें यत ॥ पिंमविसोही समिई, भावण पडिमाय इंदियनिरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीउं, अभिग्गह चेव करण तु ॥ १ ॥ अर्थ पिंमविशुद्धि १ आहार, २ उपाश्रय, ३ वस्त्र, ४ पात्र आ चार, वस्तुउने साधु बेंतालीश दूषणरहित लहे तेनुं नाम पिंमविशुद्धि ठे बेंतालीश दोषनु संपूर्ण स्वरूप जोवुं होय तो पिंडनिर्युक्तिनामा ग्रंथ भद्रबाहुस्वामिकृत ठे तेनी मलयगिरिसूरिकृत टीका सात हजार श्लोक प्रमाण ठे ते, तथा पिंमविशुद्धि ग्रंथ जिनवल्लभ सूरिकृत ठे तेनी जिनपति सूरिकृत टीका ठे ते तथा प्रवचनसारोद्धार श्रीनेमिचन्द्र सूरिकृतसूत्र तथा तेनी सिद्धसेनसूरिकृत टीका ठे ते तथा श्रीहेमचन्द्रसूरिकृत योगशास्त्र अवलोकन करवां

हवे पांच समितिनुं स्वरूप लखिये छियें. प्रथम इर्यासमिति. चालवानुं नाम इर्या केहेवाय छे, अने सम्यक् आगमने अनुसार जे प्रवृत्ति, चेष्टा करवी ते समिति कहियें. त्रस स्थावरजीवोने अन्नयदान आपनार जे मुनि, ते, प्रयोजन निमित्तें चालवुं पडे त्यारे केवीरीतें चाले ? प्रथम तो प्रसिद्ध रस्ते चाले, जे रस्तो सूर्यना किरणोथी तपेलो होय प्रांशुक-जीवरहित होय, तथा स्त्री, पुरुषना संघट्टरहित होय, ते रस्ते जीवोनी रक्षानिमित्तें अथवा पोताना शरीरनी रक्षानिमित्तें पगना अंगुठाथी चार हाथ प्रमाण नूमिका आगल देखीने चाले. तेनुं नाम इर्यासमिति छे. ते प्रमाणे साधु जो चाले, तेमज बीजुं काम करे, ते काममां कदाचित् कोइ जीव मरी पण जाय तो पण साधुने पाप लागतुं नथी, कारण के तेनो उपयोग बहुज शुद्ध छे. तथा २ नाषासमिति. पापसहित नाषा, तथा कठोरनाषा जेम के तुं धूर्त्त छे, कामी छे, राक्षस छे, एवा चार्वाकप्रमुख बोले तेवा शब्दो तथा निंदनीय शब्दो न बोले. परंतु बीजाने सुखदायक, बोलवामां अल्प, बहु प्रयोजनने साधनार, अने संदेहविनानां एवां वचन बोले ते नाषासमिति. तथा ३ बेंतालीश दूषणरहित आहारादि ग्रहण करे ते एषणासमिति. तथा ४ आसन, संस्तारक, पीठ, फलक, वस्त्र, पात्र, दंमादि आंखथी देखीने उपयोगपूर्वक लेवां, राखवां, करवां ते आदाननिक्षेप समिति. तथा ५ पुरीष, प्रस्रवण, थूंक, श्लेष्म, शरीर मल, वस्त्र, अन्न, पाणी जे शरीरने उपयोगनां न होय ते सर्वने जीवरहित नूमिकामां स्थापन करे ते; पांचमी परिस्थापना समिति. आ पांच समिति कही.

हवे बार नावना लखियें छियें. प्रथम अनित्य नावना, बीजी अशरण नावना, त्रीजी संसार नावना, चोथी एकत्वनावना, पांचमी अन्यत्वनावना, छठी अशुचिनावना, सातमी आश्रवनावना, आठमी संवरनावना, नवमी निर्जरानावना, दशमी लोकस्वनावनावना, अग्यारमी बोधिदुर्लन नावना, बारमी धर्मना कथन करनारा अरिहंत छे. आ बार नावना रात्रियें तथा दिवसें जेवी रीतें नाववा योग्य छे तेवी रीतें अन्यास करवो. आ बार नावनानुं कांइक स्वरूप लखियें छियें.

१ अनित्य नावना- जेनुं शरीर वज्रसमान, सुंदर तेमज कठण हतुं,

ते पण अनित्यरूप राक्षसना जक्ष थया, तो पछी केळना गर्न समान नि सार जे जीवोनां शरीर छे ते आ अनित्यरूप राक्षसथी केवी रीतें बचशे ? वली लोको बिलाडीनी पेठे आनंदित थइने दूधनी पेठे विषय सुखनो स्वाद लहेछे, परतु लाकडीना मारने देखता नथी, जावार्थ ए छे के, विषयजोगमा मग्न थइ आनद तो माने छे, परतु जन्मांतरमां नरकपतनरूप संकटथी डरता नथी वली जीवोनां शरीर पाणीना परपोटा समान, छे, तथा जीवित ध्वजासमान चंचल छे, लावण्य, स्त्री, परिवार, आखनी पांपण जेम चचल छे, युवावस्था हाथीना कानना पेठे चचल छे, स्वामिपणु स्वप्ननी श्रेणी समान छे, लक्ष्मी वीजली जेम चपल छे, एवी रीतें सर्व पदार्थोनु अनित्यपणु विचारता, प्यारा स्त्री पुत्रादि मरी जाय तो पण पोताना मनमा शोक न करे, अने जे मूर्ख जीव, सर्व जावने नित्य मानेछे ते जीर्ण पादडानी कुंपडीनो नाश थवाथी पण रात दिवस रुदन करेछे ते कारणथी तृष्णानो नाश करी ममत्व रहित थइ शुद्धबुद्धिवाला जीव अनित्यजावना जावे

२ अशरणजावना पिता, माता, पुत्र, जार्या प्रमुख विद्यमानछतां, अत्यंत आधि व्याधिना समूहरूप शृंखलामां बंधायेला रुदन करता जीवोने कर्मरूप योद्धा, यमराज (काल) ना मुखमा प्रक्षेप करतां थका (फेंकेछे त्यारे) बहुज दुःख थाय छे जे लोक शरणरहित अनाथ छे, ते शु करशे ? तथा नाना प्रकारना शास्त्रविषयोने जाणनारा, तथा अनेक प्रकारना मत्र, यन्त्रोनी क्रिया जाणनारा, तथा ज्योतिष विद्याना जाणनारा, तथा अनेक प्रकारनी औषधि, रसायन प्रमुख वैद्यक शास्त्रनी तमाम क्रियामा कुशल, एवा विद्वानोनी कुशलता तथा क्रिया, काळनी सामे काइपण करवामा समर्थ थइ नहि तथा नाना प्रकारना शस्त्रोवाला शूरवीर योद्धाओनी सेनाथी परिवेष्टित, (चो तरफ वीटायेला) तथा नानाप्रकारना मदकर हाथीओनी जेने थाड छे, एवा इन्द्र, वासुदेव, चक्रवर्त्तिसमान बलवान् पण काळना घरमां खेंचाता चाल्या जाय छे अत्यत दिलगीरी के प्राणियोने कोइनु शरण नथी तथा पृथ्वीनु छत्र अने मेरुनो दड करवाने समर्थ, तेमज जेने अल्पपण क्लेश न

१ सांकल या बेडी

होतो एवा अनंत बलवान् तीर्थकरपण लोकोने कालथी बचाववाने समर्थ नथी तो पछी बीजो कोण समर्थ छे? स्त्री, पुत्र मित्रादिना स्नेहरूप भूतने दूर करवा वास्ते शुद्धमति जीव अशरण भावना भावे.

३ संसारभावना कहियेंछियें. बुद्धिमान् तेमज बुद्धिहीन, सुखी तेमज दुःखी, रूपवान् तेमज कुरूपवान्, स्वामी तेमज सेवक, वैरी, राजा तेमज प्रजा इत्यादि देवतामनुष्य, तिर्यंच, नारकिना अनेक प्रकारना कर्मवशथी वेष धारण करीने आ संसाररूप अखाडामां आ जीव नाटक करेछे. तथा महारंभ, मांसभक्षण, मदिरापानादि कारणोथी अनेक प्रकारनां पापनो बंध करीने, महाअंधकारवाली नरकभूमिकामां जइ पडे छे, त्यां अंगछेदन, अग्निप्रज्वलनादि क्लेशरूप महादुःख जे जीवने थाय छे ते दुःखोनुं स्वरूप केवली पण कथन करी शकता नथी. आ नरकगति कही.तथा कपट,जुठुं बोलवुं इत्यादि कारणोथी प्राणी तिर्यंचगतिमां सिंह, वाघ, हाथी, मृग, बेल, बकरी प्रमुखनां शरीर धारण करेछे. तथा ते गतिमां क्षुधा, तृषा, वध, बंधन, ताडन, तर्जन, रोग, हलवहन इत्यादि जे दुःख सदा ते जीवोने सहन करवां पडेछे ते केहेवाने कोण समर्थ छे? आ तिर्यंच गति कही.

तथा खाद्य[१], अखाद्य[२], विवेकशून्यता, मनमां लज्जानो अभाव, मा, बेन, दीकरी गमन करवामां एक समानता,निःशंकता[३] वल्लभ छे ज्यां, एवा अनार्य मनुष्यमां, निरंतर जीवघात, मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमनादि अत्यंत कनिष्ठ पापकर्म महादुःख उत्पन्न करनार ज्यां थया करे छे,तथा आर्यदेशमां पण क्षत्रिय, ब्राह्मणादि, अज्ञान, दरिद्रता, कष्ट, दौर्भाग्य पणुं रोगादिथी पीडित छे, तथा पराधीनता, मानभंग, सेवकभावप्रमुख दुःख, निरंतर भोगववां पडेछे ज्यां, तथा अग्निमां अत्यंत तपावेली सुइओ, जेम एक एक रोममां एक एक सूइ कोइ जुवान पुरुषने परोववामां आवे तेम ते सघली, समकालें चारे बाजुए परोववामां आवे तेथी जे दुःख उत्पन्न थाय तेनाथी आठ गणुं दुःख स्त्रीना गर्भमां ज्यारे उत्पन्न थाय छे त्यारे भोगवे छे, ते दुःखथी अनंतगणुं दुःख जन्मसमयें भोगवे छे, तथा बाल अवस्थामां मल, मूत्र, धूलमां आलोटवुं. तथा मूर्खता

१ भक्ष्य. २ अभक्ष्य ३ निर्भयपणुं.

ते पण अनित्यरूप राक्षसना भक्ष थया, तो पछी केळना गर्भ समान निःसार जे जीवोना शरीर छे ते आ अनित्यरूप राक्षसथी केवी रीतें बचशे ? वळी लोको बिलाडीनी पेठे आनंदित थइने दूधनी पेठे विषय सुखनो स्वाद लहेछे, परंतु लाकडीना मारने देखता नथी, भावार्थ ए छे के, विषयभोगमां मग्न थइ आनंद तो माने छे, परंतु जन्मांतरमां नरकपतनरूप संकटथी डरता नथी वळी जीवोनां शरीर पाणीना परपोटा समान, छे, तथा जीवित ध्वजासमान चपल छे, लावण्य, स्त्री, परिवार, आखनी पांपण जेम चचल छे, युवावस्था हाथीना काननी पेठे चपल छे, स्वामिपणु स्वप्ननी श्रेणी समान छे, लक्ष्मी वीजळी जेम चपल छे, एवी रीतें सर्व पदार्थोनु अनित्यपणु विचारतां, प्यारा स्त्री पुत्रादि मरी जाय तो पण पोताना मनमां शोक न करे, अने जे मूर्ख जीव, सर्व भावने नित्य मानेछे ते जीर्ण पांदडानी कुपडीनो नाश थवाथी पण रात दिवस रुदन करेछे ते कारणथी तृष्णानो नाश करी ममत्व रहित थइ शुद्धबुद्धिवाळा जीव अनित्यभावना भावे

२ अशरणभावना पिता, माता, पुत्र, भार्या प्रमुख विद्यमानछतां, अत्यंत आधि व्याधिना समूहरूप शृंखलामां बधायेला रुदन करता जीवोने कर्मरूप योद्धा, यमराज (काल) ना मुखमां प्रक्षेप करतां थकां (फेंकेछे त्यारे) बहुज दुःख थाय छे जे लोक शरणरहित अनाथ छे, ते शु करशे ? तथा नाना प्रकारना शास्त्रविषयोने जाणनारा, तथा अनेक प्रकारना मंत्र, यंत्रोनी क्रिया जाणनारा, तथा ज्योतिष विद्याना जाणनारा, तथा अनेक प्रकारनी औषधि, रसायन प्रमुख वैद्यक शास्त्रनी तमाम क्रियामा कुशल, एवा विद्वानोनी कुशलता तथा क्रिया, काळनी सामे कांइपण करवामां समर्थ थइ नहि तथा नाना प्रकारना शस्त्रोवाळा शूरवीर योद्धाउंनी सेनाथी परिवेष्टित, (चो तरफ वींटायेला) तथा नानाप्रकारना मदझर हाथीउंनी जेने थाट छे, एवा इंद्र, वासुदेव, चक्रवर्त्तिसमान बलवान् पण काळना घरमां खेंचाता चाल्या जाय छे अत्यंत विलगीरी के प्राणियोने कोइनु शरण नथी तथा पृथ्वीनु छत्र अने मेरुनो दंड करवाने समर्थ, तेमज जेने अल्पपण क्लेश न

१ सांकळ या बेडी

उपन्नोग, सुगंध, लेपनप्रमुखथी शरीरनी पुष्टि इछवी ते पण व्यर्थ छे. कदाचित् आ शरीरने कोइ लाकडी प्रमुखथी मार मारे तो पण समता राखी सहन करवुं जोइये. जे पुरुष अन्यत्वन्नावना न्नावे तेने शरीर, धन, पुत्रादिना वियोगथी दुःख शोक थतां नथी. आ पांचमी अन्यत्व न्नावना कही.

६ अशुचि न्नावना कहिये छियें. जेम लूणनी खाणमां जे पदार्थ पडे छे ते लूण थइ जायछे, तेम आ कायामां जे आहारप्रमुख पडेछे ते मलरूप थइ जाय छे, एवी आ काया अपवित्र छे, तथा रुधिर अने शुक्र (वीर्य) बंनेना मेलापथी आ काया (गर्न्न) उत्पन्न थाय छे, जरा (उर) विंटाएली होय छे, माता जे आहारप्रमुख ग्रहण करेछे तेना रसथीज आ गर्न्न वृद्धि पामे छे, एवा आ देहने कोण बुद्धिमान् पवित्र मानेछे? तथा मिष्ट स्वाद, अने सुगंधमय मोदक, दुध, दहिं प्रमुख षड्रस, इक्षुरस, कमोद प्रमुख धान्य, घेबर प्रमुख मिष्टान्न, तथा आम्र प्रमुख फल जे खावामां आवे छे ते तत्काल मलरूप थइ जाय छे, एवी आ अशुचि कायाने, महामोहांध पुरुष पवित्र मानेछे. तथा पाणीना सो घडाथी स्नान करीने तथा सुगंधमय पुष्प, कस्तूरि प्रमुख द्रव्यो लगावीने, उपरनी चामडी तो केटलो एक वखत मुग्ध जीव शुचि सुगंधमय करे छे, परंतु मध्य न्नागमां रहेलो विष्टानो कोठो केम पवित्र करी शके तेम छे? तथा अत्यंत आनंदनी वृद्धि करनारां द्रव्योथी मघमघायमान थइ रहेली दिशा, तथा चंदन, कस्तूरि, कर्पूर, अगर, कुंकुम प्रमुख वस्तुउ पण आ शरीरनो तेमनी साथे संबंध थाय छे, त्यारे अल्पकालमां दुर्गंधरूप थइ जाय छे, तो पछी विचारो के आ कायाने कोण बुद्धिमान् पवित्र माने? ए प्रमाणेनी अशुचिरूपता आ शरीरनी विचारीने बुद्धिमान् पुरुष आ शरीरनी ममता न करे. आ छठी अशुचिन्नावना कही.

७ आश्रवन्नावना कहियें छियें. मन, वचन, अने कायाना योगथी शुन्नाशुन्नकर्म जे जीव ग्रहण करे छे, तेनुं नाम आश्रव, जिनेश्वर न्नगवान् कहे छे. सर्व जीवोविषे मैत्री न्नावना, गुणाधिक जीवोमां प्रमोदन्नावना, अविनीत शिष्यादिमां मध्यस्थ न्नावना, अने दुःखी जीवोमां करुणान्ना-

प्रमुख तथा युवावस्थामां धन उपार्जन करवानु दुःख, इष्ट वस्तुनो वियोग, अनिष्ट वस्तुनो संयोग इत्यादि, तथा वृद्धावस्थामां शरीरनु कंपवुं, नेत्रनुं बलहीनपणु, तथा श्वास, खांसी प्रमुख अनेक व्याधिथी महादुःखोनु उत्पन्न थवुं इत्यादि ज्यां निरंतर छे त्या एवी कइ दशा छे के प्राणी सुख प्राप्त करे ? आ मनुष्यगति कही तथा सम्यक् दर्शनादि पामवाथी जे जीव देवता थाय छे ते पण शोक, विषाद, मत्सर, भय, अल्प ऋद्धिथी इर्ष्या, काम, मद, क्षुधा प्रमुखथी पीडित थवाथी पोतानु आयुष्य दीन मनवाळा थइने पूर्ण करे छे आ देवगति कही आ प्रमाणे मोक्षाभिलाषी जीव संसारभावना भावे

४ एकत्वभावना कहियें छियें जीव एकलोज उत्पन्न थाय छे, अने एकलोज मरण पामे छे, एकलोज कर्म करे छे, अने एकलोज तेनु फल भोगवे छे वली जीवें अत्यंत कष्ट भोगवी जे धन उपार्जन करेलु छे ते धन तो स्त्री, मित्र,पुत्र,बंधु प्रमुख खाइ जशे, अने जे पाप कर्म ते धन उपार्जन करवामां बांध्या छे तेनु फल तो तेने एकलानेज नरक, तिर्यंच गतिमां जइने भोगववुं पडेछे आ केवु आश्चर्य छे ? तथा आ जीव, आ देहने वास्ते, रात दिन अटन करे छे, दीनपणु धारण करे छे, धर्मथी भ्रष्ट थाय छे, पोताना हितमां ठगाय छे, न्यायथी दूर रहेछे इत्यादि अनेक कृत्य करे छे, परतु आ देह, आत्मानी साथे परभवमां एक पगला जेटली जगा सूधी पण ते साथे आवशे नहि हवे विचार करो के आ देह शुं करशे ? शु मदद आपशे ? वली सगां वाहालां सर्व पोत पोताना स्वार्थमां तत्पर छे, वास्तवमा कोइ तारु नथी, ते वास्ते हे बुद्धिमन् ! तु पोताना हितने माटे धर्म करवामा प्रयत्न करय, आ प्रमाणे एकत्व भावना भावे

५ अन्यत्वभावना कहियें छियें आ संसारमा तु कोइनो नथी अने कोइ तारु नथी माता, पिता, स्त्री, पुत्र, भाइ प्रमुख सगां तथा संबधियो, ज्या सुधी ताराथी तेउंनी कार्यसिद्धि थाय छे त्यां सुधी तुं तेउंना प्राण समान वाहालो छे तेम तेउं मानशे परतु स्वार्थसिद्धिमां भग थये जाणे एक बीजाने लेशमात्र संबंध नथी एम भासन थता वेर भाव पण उत्पन्न थशे वली आ देहने छोडी जीव परलोकमां जाय छे तेथी आ शरीरथी जीव भिन्न छे तेम छता अनेक प्रकारनां खान, पान, भोग,

जीते, ए रीतें जे जीव संवरभावना भावे तेने मोक्षरूप लक्ष्मी अवश्य वशवर्तिनी थाय छे. आ प्रमाणे संवरभावना कही.

ए हवे निर्जरा भावना कहियें छियें. संसारनी हेतुभूत जे कर्मनी संतति तेनो अतिशयथी जे नाश करे ते निर्जरा कहेवाय छे. निर्जरा बे प्रकारनी छे. सकाम निर्जरा तथा अकाम निर्जरा. तेमांथी सकाम निर्जरा तो उपशांत चित्तवाला साधुने होय छे, अने बीजा जीवोने अकाम निर्जरा होय छे. बीजा जीवोने जे अकाम निर्जरा थाय छे ते कर्मनो पाक स्वयमेव थाय छे तेथी तथा उपायथी पण कर्मनो नाश थायछे. जेम आम्रफल पोतानी मेलेज वृक्षनी डालीपर विद्यमान छतां पाकी जाय छे, अने कोद्रवादि परालनी अंदर दाखल करवाथी पण पाकी जाय छे. तेवीज रीतें निर्जरा पण बे प्रकारनी छे. अमारा कर्मनी निर्जरा थाय एवा आशयवाला जीव जे तप प्रमुख करे छे तेउने सकाम निर्जरा थाय छे, अने एकेंद्रियादि जे जीव छे तेउने विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु शीतोष्ण, वर्षा, दहन, छेदन, वध, बंधन, प्रमुख कष्ट भोगववाथी जे कर्म निर्जरा थाय छे. तेनुं नाम अकाम निर्जरा छे. ए प्रमाणे तपप्रमुख करीने निर्जरानी वृद्धि करे, एम नवमी निर्जरा भावना भावे. इति.

१० हवे लोकस्वभाव भावना कहियें छियें. आ पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा, तेमज नरक, स्वर्ग, लोकाकाश सर्व मली एकलोक केहेवायछे. जैनमतना सिद्धांतमां ते संपूर्ण लोकनो आकार आ प्रमाणे बतावेलो छे. जेम कोई पुरुष जामो पेहेरीने पोतानी कमरमां बंने हाथ लगाडी, पग पसारी उभो होय, तेनो जेवो आकार होय तेवो आ लोकनो आकार छे. षड्द्रव्यथी पूर्ण छे, उत्पत्ति, स्थिति तेमज लय ए त्रणे स्वरूपसंयुक्त छे, अनादि अनंतछे, कोइनो रचेल नथी, उर्ध्वलोक, अधोलोक तेमज तिर्छालोक, एवा तेना त्रण स्वरूपमां सर्व जीव पुद्गल तेनी अंदर प्रवर्त्ते छे, बहार कांइ नथी, बहार तो फक्त एक आकाश छे ते आकाश पण अनंत छे, आ आकाशनुं नाम जैनशास्त्रमां अलोक लखेलछे. अधोलोकमां जुदी जुदी नीचे उपर सात पृथ्वी छे, तेमां नरकवासी जीव रहेछे, अने कोइ जगाए भवनपति तथा व्यंतरपण रहेछे, तिर्छालोकमां मनुष्य, तिर्यंच तेमज व्यंतर रहेछे, उर्ध्वलोकमां देवता रहेछे, विशेषथी लोकस्वरूप जाणवुं होय तो

वना आ चारे भावनाओथी जे जीवोनां अंत करण निरंतर वासित होय, ते पुण्यवान् जीवो बेंतालीश प्रकारनां पुण्य उपार्जन करे छे, अने आर्त ध्यान, रौद्रध्यान, पाच प्रकारनां मिथ्यात्व, सोल प्रकारना कषाय, पांच प्रकारना विषय, तेओनाथी जेओना अंत करण वासित होय ते व्यासी प्रकारनां पापकर्म उपार्जन करेछे तथा सर्वज्ञ अर्हत् भगवंत, गुरु, सिद्धांत द्वादशांग, चार प्रकारना संघ इत्यादिना जे गुणानुवाद कीर्त्तन करेछे ते मज हितकारी सत्यवचन बोलेछे ते जीव शुभकर्म उपार्जन करेछे तथा श्रीसंघ, देव, गुरु, धर्म तथा धर्मि प्रमुखना जे अवर्णवाद बोले, तथा असत्य अने कपोलकल्पित मतनो जे उपदेश करेछे ते जीव अशुभकर्म उपार्जन करे छे, तथा जे जीव वीतराग देवनी चंदन पुष्पादिथी पूजा करे, तथा साधुनी भक्ति, विश्रामण प्रमुख, करे तथा पापथी काया गो पवे ते जीव शुभकर्म उपार्जन करे छे तथा जे जीव, मांसभक्षण, सुरापान, जीवघात, चोरी, जुगार, परस्त्रीगमनादि करे ते अशुभ कर्म उपार्जन करे छे ए अनुक्रमथी मन, वचन, कायाथी शुभाशुभ आश्रव उपार्जन कराय छे आ प्रकारें आश्रवभावना जे जीव भावे ते अनर्थ परंपरानो त्याग करेछे अने महानंदस्वरूप मोक्षने देनारी, दु ख दावानल पर मेघसमान एवी शर्मावलि (नित्यसुखश्रेणी) अंगीकार करेछे आ प्रमाणे सातमी आश्रवभावना कही

८ संवरभावना कहियें छियें आश्रवनो निरोध ते संवर ते संवर बे प्रकारथी छे एक सर्वसंवर तथा बीजो देशसंवर, तेमा सर्वसंवर तो अयोगी केवलीमां होय छे, अने देशसंवर एक बे इत्यादि आश्र वनो त्याग करनारमा होय छे वली संवरना बीजा बे प्रकार छे एक द्रव्यसंवर तथा बीजो भावसंवर तेमां जे कर्म पुद्गल आश्रवथी जीव ग्रहण करेछे तेओने देशथी अथवा सर्वथी आवता रोकवा ते द्रव्यसंवर, अने भवहेतु क्रियानो त्याग करवारूप आत्माना जे शुभ अध्यवसाय, ते भावसंवर जे बुद्धिमान् मिथ्यात्व, अविरति, कषाय प्रमुख आश्रवोनो निरोध करे, अने आर्त, रौद्र ध्यान तजी धर्म, शुक्लध्यान ध्यावे, क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने मृदुताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोभ ने संतोषथी जीते, इंद्रियोना इष्ट अनिष्ट विषयोने राग द्वेष त्यागवाथी

थो, जे धर्म करे छे ते पण धर्माभास छे, धर्म नथी; ते कारणथी तेमनां वचन केम प्रमाण थइ शके? तेमज कुतीर्थिउना जे जे शास्त्रोमां कंइ कंइ स्थलें दया, सत्यता प्रमुखनां कथन छे ते पण केहेवाज मात्र छे; परंतु तत्वथी ते पण कांइ नथी, कारण के यथार्थ तेमनुं स्वरूप तेउ जाणता जेम नथी, तेम यथार्थ पालता पण नथी. प्रथम तो ते शास्त्रोना जे उपदेशक छे ते सर्वे कामाग्निमां प्रज्वलित हता. आ वात सर्वसुज्ञजनोने विदितछे. ते कारणथी अर्हंत जगवंतज सत्यार्थना उपदेशक छे. वली महामदझर हाथियोनी घटाप्रमुख संपत्तिवालुं राज्य पामवुं, तेमज सर्वजनोने आनंद आपनारी संपदा पामवी, तेमज चंद्रमा समान निर्मलगुणोनो समूह पामवो, तेमज उत्कृष्ट सौजाग्यनो विस्तार पामवो. आ सर्वे धर्मनोज प्रजाव छे. तथा समुद्र, जलकल्लोलथी पृथ्वीपर पोतानी मर्यादा मुकी फरतो नथी, तेमज मेघ सर्वे पृथ्वीने जलथी रेलम छेलम करतो नथी, तेमज चंद्र, सूर्य जे उदय पामे छे, तेमज अंधकारनो नाश करेछे ते सर्व प्रजाव जयवंत धर्मनोज छे. जेने कोइ बंधु नथी, मित्र नथी, नाथ नथी, जे रोगीने वैद्य नथी, जेनी पासे धन नथी, तेमज जेनामां गुण नथी, ते सर्वना बंधु, मित्र, नाथ, वैद्य, तथा गुणनो निधान धर्म छे. वली अरिहंतनो कथन करेलो जे धर्म छे ते महापथ्य छे. एवी रीतें जे जव्यजीव मनमां विचारे ते धर्ममां बहु दृढ थाय. एकज निर्मल धर्म जाववाने जे जीव निरंतर जावे ते सर्व पाप कर्मनो नाश करीने, अनेक जीवोने उपदेश द्वारा सुखी करीने परम पद (मुक्ति) प्राप्त करे छे, तो पछी जे बारे जावना जावे तेने परमपद प्राप्त थवामां शुं आश्चर्य छे? इति बार जावना.

हवे बार प्रतिमानुं स्वरूप कहियें छियें. एक मासथी लइ सात मासनी वृद्धि करवी, एम सात प्रतिमा थाय छे. जेम के प्रथम एक मासनी, बीजी बे मासनी, एम एकेक मासनी वृद्धि करतां सातमी सातमासनी थाय छे. आठमी सात दिनरातनी, नवमी सात दिनरातनी, दशमी सातदिनरातनी, अग्यारमी एक दिन रातनी अने बारमी प्रतिमा एक रात्रि प्रमाण होय छे. प्रतिमा– अजिग्रह, प्रतिज्ञा आ एकज नाम छे.

जे साधुउ आ बारे प्रतिमानो अंगीकार करी शकेछे, तेउनुं स्वरूप

१ धर्म सरखो भासे पण तत्वविचारें जोतां कल्पित.

लोकनाडी द्वात्रिंशति तथा लोकप्रकाश ग्रंथ¹ जोइ लेवा आ प्रमाणे लोक स्वरूपनु चिंतन करी लोकस्वरूपजावना जावे

११ हवे बोधि दुर्लभ जावना कहिये छियें पृथ्वी, पाणी अग्नि, वायु, वनस्पति, तेमां पोतानां करेलां क्लिष्टकर्मथी जीव परिभ्रमण करेछे, आ जयानक संसारमां अनंतानंत पुद्गलपरावर्त्तन करतां थका आ जीव अकामनिर्जराथी, तेमज पुण्य उपार्जन करवाथी, बेंद्रिय, त्रींद्रिय, चउरिंद्रिय, पचेंद्रियरूप त्रसपणु पामेछे, परंतु आर्यक्षेत्र, सुजाति, उत्तमकुल, रोगरहित शरीर, संपत्ति, राज्यसुख, हलुकर्मिपणुं, तथा तत्त्वातत्त्वनुं विवेचन करनारी, बोध बीजने रोपनारी, कर्मक्षय करी मोक्ष सुखने प्राप्त करावनारी एवी श्रीसर्वज्ञ अरिहंत जगवतनी देशनानो लाज थवो बहुज दुर्लज छे जो जीवें एकवार पण सम्यक्त्वरूप बोधिनु पालन कर्युं होत तो आटला कालसुधी कदापि ते संसारमां पर्यटन न करत जे अतीत कालमां सिद्ध थया, वर्तमान कालमां सिद्ध थायछे अने अनागत कालमां सिद्ध थशे, ते सर्व बोधिनुंज माहात्म्य छे ते कारणथी जव्यजीवें बोधिनी प्राप्ति करवामां यत्न करवो जोइयें, कारण के केटलाएक जीवोयें द्रव्य चारित्र तो अनंतवार प्राप्त कर्यां, परतु बोधिविना ते सर्व निष्फल थयां आ प्रमाणे बोधि दुर्लज जावना जावे

१२ धर्मकथाना केहेनारा अरिहंत छे ए जावना लखियें छियें जे पुरुष परहित करवामां उद्यमी छे, तथा वीतराग छे, ते कदापि कोइपण स्थलें जूठ बोलशे नहि ते कारणथी तेना कथन करेला धर्ममांज सत्यता छे एवा तो लोकालोकने केवल ज्ञानथी प्रकाश करनार अरिहंतज होइ शके छे, बीजा नहि क्षांत्यादि दश प्रकारना धर्मने जिनेश्वर जगवान् केहेता थका ते धर्मनु साधन करनारा जीव संसारसमुद्रमां डुबता नथी अरिहंतनी वाणी पूर्वापर अविरुद्ध छे वली तेना वचनमां हिंसानो उपदेश नथी वचन फक्त निर्जराने वास्ते कहे छे बीजाना उपदेश विना विचित्र तरेहथी कहे छे कुतीर्थिकोनां वचनो सर्व सद्गतिनां वैरी छे, कारण के यज्ञादिमां पशुवधरूप हिंसाथी कलंकित छे, पूर्वापर विरोधी छे, निरर्थक वचनो पण बहु छे तेकारणथी कुतीर्थि

१ विरोधरहित या अव्याबाध–निर्दोष

यो, जे धर्म करे छे ते पण धर्माभास छे, धर्म नथी; ते कारणथी तेमनां वचन केम प्रमाण थइ शके? तेमज कुतीर्थिउना जे जे शास्त्रोमां कंइ कंइ स्थलें दया, सत्यता प्रमुखनां कथन छे ते पण केहेवाज मात्र छे; परंतु तत्वथी ते पण कांइ नथी, कारण के यथार्थ तेमनुं स्वरूप तेउ जाणता जेम नथी, तेम यथार्थ पालता पण नथी. प्रथम तो ते शास्त्रोना जे उपदेशक छे ते सर्वे कामाग्निमां प्रज्वलित हता. आ वात सर्वसुज्ञजनोने विदितछे. ते कारणथी अर्हंत भगवंतज सत्यार्थना उपदेशक छे. वली महामदझर हाथियोनी घटाप्रमुख संपत्तिवालुं राज्य पामवुं, तेमज सर्वजनोने आनंद आपनारी संपदा पामवी, तेमज चंद्रमा समान निर्मलगुणोनो समूह पामवो, तेमज उत्कृष्ट सौभाग्यनो विस्तार पामवो. आ सर्वे धर्मनोज प्रभाव छे. तथा समुद्र, जलकल्लोलथी पृथ्वीपर पोतानी मर्यादा मुकी फरतो नथी, तेमज मेघ सर्वे पृथ्वीने जलथी रेलम छेलम करतो नथी, तेमज चंद्र, सूर्य जे उदय पामे छे, तेमज अंधकारनो नाश करेछे ते सर्व प्रभाव जयवंत धर्मनोज छे. जेने कोइ बंधु नथी, मित्र नथी, नाथ नथी, जे रोगीने वैद्य नथी, जेनी पासे धन नथी, तेमज जेनामां गुण नथी, ते सर्वना बंधु, मित्र, नाथ, वैद्य, तथा गुणनो निधान धर्म छे. वली अरिहंतनो कथन करेलो जे धर्म छे ते महापथ्य छे. एवी रीतें जे भव्यजीव मनमां विचारे ते धर्ममां बहु दृढ थाय. एकज निर्मल धर्म भाववाने जे जीव निरंतर भावे ते सर्व पाप कर्मनो नाश करीने, अनेक जीवोने उपदेश द्वारा सुखी करीने परम पद (मुक्ति) प्राप्त करे छे, तो पछी जे बारे भावना भावे तेने परमपद प्राप्त थवामां शुं आश्चर्य छे? इति बार भावना.

हवे बार प्रतिमानुं स्वरूप कहियें छियें. एक मासथी लइ सात मासनी वृद्धि करवी, एम सात प्रतिमा थाय छे. जेम के प्रथम एक मासनी, बीजी बे मासनी, एम एकेक मासनी वृद्धि करतां सातमी सातमासनी थाय छे. आठमी सात दिनरातनी, नवमी सात दिनरातनी, दशमी सातदिनरातनी, अग्यारमी एक दिन रातनी अने बारमी प्रतिमा एक रात्रि प्रमाण होय छे. प्रतिमा– अभिग्रह, प्रतिज्ञा आ एकज नाम छे.

जे साधुउ आ बारे प्रतिमानो अंगीकार करी शकेछे, तेउनुं स्वरूप

१ धर्म सरखो भासे पण तत्वविचारें जोतां कल्पित.

वलियें ठियें " संहननधृतियुक्त " जेनु संहनन वज्र ऋषभ नाराच होय, ते परीषह सहन करवामां समर्थ होय ठे, "धृति" जेने चित्तनु स्वस्थपणु होय, ते रति, अरतिथी पीडित थता नथी "महासत्त्व" जे महासत्त्ववंत होय, ते अनुकूल, प्रतिकूल उपसर्ग सहन करवामां वि षाद धरता नथी " जावितात्मा " जेनु अंत करण सद्भावनाथी वा सित होय, ते प्रतिमा वहन करी शके ठे ते जावना पांच ठे तेनुं वि स्तारयुक्त स्वरूप व्यवहारजाष्यनी टीकाथी जाणवु ते जावना केवी रीतें जावे ? जेम आगममां ठे तेम, तथा गुरु आचार्य आज्ञा आपे तेम जो गुरु पोते प्रतिमा अंगीकार करे तो, नवीन आचार्य स्थापन करीने तेनी आज्ञाथी, तथा गछनी आज्ञा लहने करे. तथा प्रथम पोताना गछ मांज रहीने प्रतिमा अंगीकार करवानु प्रतिकर्म करे ते प्रतिकर्म आ ठे—

मासादि सात जे प्रतिमा ठे तेठेनां प्रतिकर्मपण तेटलांज ठे वर्षाकालमां ए प्रतिमा अंगीकार करी शकाती नथी, तेमज प्रतिकर्म पण व र्षाकालमां करवुं नहि प्रथमनी बे प्रतिमा एक वर्षमां, त्रीजी एकवर्षमां, चोथी एकवर्षमां, बाकी पांचमी, ठठी, सातमी आ त्रणे प्रतिमाठेनां ए कवर्षमां प्रतिकर्म अने एक वर्षमां प्रतिमा, एम नववर्षमां सात प्रति मा समाप्त कराय ठे

हवे जे आ प्रतिमा अंगीकार करे ठे, तेठेने केटलुं ज्ञान होय ठे ? यावत् किंचित् न्यून दश पूर्व होय ठे, कारण के जेने संपूर्ण दश पूर्वनी विद्या होय ठे तेनुं वचन अमोघ होय ठे ते वास्ते तेठेए धर्मोपदेश आ पवो जोइये तेठेना उपदेशथी अनेक जव्य जीवो उपर उपकार तेमज तीर्थनी वृद्धि थवाथी प्रतिमादि कल्प करवा जोइये वली प्रतिमा अं गीकार करनाराठेनु जघन्यज्ञान नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु, जेनु नाम आ- चार वस्तु ठे, त्यां सुधी ठे तेटलु ज्ञान सूत्र तथा अर्थ बनेथी पूर्ण होय ठे, कारण के निरतिशयज्ञानी होय तो कालादिक जाणी शके नहि त था "व्युत्सृष्ट" शरीरनी सार संजाल त्यागे, देवता प्रमुखना उपसर्ग सहे, जिनकल्पिनी पेठे उपसर्ग सहन करे, तथा एषणा, पिंमग्रहणप्रकार, जिक्षाग्रहणविधि, गछथी आहार लेहेवुं, इत्यादि बाकीनुं वर्णन प्रवचन सारोद्धारनी बृहद्वृत्तिथी जोइ लेवुं आ बार प्रतिमा कही

हवे इंद्रियनिरोध कहियें छियें. "स्पर्शनं रसना घ्राणं चक्षुः श्रोत्रं चेति" आ पांच इंद्रिय, तथा स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, शब्द, आ पांच पूर्वोक्त इंद्रियना यथाक्रम विषय छे. आ पांचे विषयोनो निरोध करवो, कारण के जो ते वशवर्त्ती नहि रहे तो अत्यंत अनर्थकारक तेमज क्लेशसागरमां डुबाडनारा थशे. ॥ यदभ्यधायि ॥ आर्या ॥ सक्तः शब्दे हरिणः, स्पर्शे नागोरसे च वारिचरः ॥ कृपणपतंगोरूपे, भुजगो गंधेन च विनष्टः ॥ १ ॥ पंचसु सक्ताः पंच, विनष्टायत्र गृहीतपरमार्थाः ॥ एकः पंचसु सक्तः, प्रयाति भस्मांततां मूढः ॥ २ ॥ तुरगैरिव तरतरलै, र्दुर्दांतैरिंद्रियैः समाकृष्य ॥ उन्मार्गे नीयंते, तमोघने दुःखदे जीवः ॥ ३ ॥ अनुष्टुप् ॥ इंद्रियाणां जये तस्मा, द्यत्नः कार्यः सुबुद्धिभिः ॥ तज्जयोयेन भविनां, परत्रेह च शर्मणे ॥ ४ ॥ प्रतिलेखना जैनसाधुउंमां प्रसिद्ध छे तेथी विस्तारथी लखेल नथी.

हवे त्रण गुप्ति लखियें छियें. मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति. आ त्रण गुप्तिनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. अशुभ मन वचन कायानो निरोध करवो अने शुभ मन वचन कायानी प्रवृत्ति करवी. तेमां मनोगुप्ति त्रण प्रकारनी छे. आर्त्त, रौद्रध्यानानुबंधी, कल्पनानो वियोग, ते प्रथम मनोगुप्ति, शास्त्रानुसार, परलोकने साधनारी, धर्मध्यानानुबंधवाली माध्यस्थ परिणति करवी ते बीजी मनोगुप्ति, अने संपूर्ण शुभाशुभ मनोवृत्तिनो निरोध, अयोगी गुणस्थान अवस्थामां स्वात्मारामरूपता, ए त्रीजी मनोगुप्ति.

वचनगुप्ति बे प्रकारनी छे. मुख, नेत्र, भ्रूविकार, आंगली छोडन, उंचा थवुं, खांसी खावी, हुंकारा करवा, पथ्थर फेंकवा, इत्यादि हेतुथी पोतानुं सूचन करावबुं वर्जवुं, ए प्रथम वचनगुप्ति, कारण के जो चेष्टा द्वारा सर्वकांइ सूचवी दइए तो मौन रेहेवुं व्यर्थ छे. बोलवुं, बीजाना प्रश्ननो लोकथी तेमज आगमथी अविरोध होय तेवो उत्तर देवो, तेमज बोलवुं ते पण मुखपासे वस्त्रादि राखी यत्न पूर्वक बोलवुं, ते बीजी वचनगुप्ति. आ बंने भेदोथी वचननो निरोध, तेमज सम्यग्भाषणरूप वचनगुप्ति जाणवी.

कायगुप्ति बे प्रकारे छे. एक, चेष्टानो निषेध, बीजी आगमानुसारें चेष्टानो नियम करवो. तेमां देवता तथा मनुष्यादिना उपसर्गमां क्षुधा

तृषादि परीसहोनो संजव थये थके कायोत्सर्ग प्रमुख करीने कायाने निश्चल करवी, तथा अयोगी अवस्थामां सर्वथा कायानी चेष्टानो जे निरोध करवो, ते प्रथम कायगुप्ति तथा गुरुथी प्रछन्नशरीर संस्तारक, नूम्यादि प्रतिलेखन, प्रमार्जनादि, जेम शास्त्रमां कहेल छे, तेवी रीतें क्रियाकलापपूर्वक शयनादि साधुयें करवां, शयनासन लेवा, राखवा, आ सर्व कृत्योमां स्वछंद चेष्टानो त्याग करवो, मर्यादासहित कायानी चेष्टा करवी, ते बीजी कायगुप्ति

हवे अजिग्रह, प्रतिज्ञा लखियें छियें ते अजिग्रह ज्व्य, क्षेत्र, काल तथा नावथी चार प्रकारें छे तेनो विस्तार प्रवचनसारोद्धारवृत्तिमां छे आहारप्रमुखनां बेंतालीश दूषण, शास्त्रमां बतावेल छे, तोपण पिंम, शय्या, वस्त्र, पात्र, आ चारज वस्तु सदोष न ग्रहण करवी तेथी ते चार दूषण, तथा पांच समिति, बार नावना, बार प्रतिमा, पांच इन्द्रियनिरोध, पचीश प्रतिलेखना, त्रण गुप्ति, चार अजिग्रह ए सर्व मली सित्तेर करणसित्तरीना नेद कहे छे

प्रश्न – चरणसित्तरी तेमज करणसित्तरी आ बनेमां शुं विशेष छे ?

उत्तर – जे नित्य करवुं ते चरण, अने प्रयोजन थयां थकां करीलेवुं अने प्रयोजन न होय त्यारे न करवु ते करण, आ तेउमां नेद छे ए प्रमाणे चरणसित्तरी तथा करणसित्तरीना नेद समाप्त थया

इत्यादि जैनमतना गुरुतत्त्वनुं स्वरूप लखवामां लाखो श्लोक लखाई जाय तो पण संपूर्ण तेनु स्वरूप जाणी शकाय नहि, ते वास्ते संक्षेपमांज स्वरूप बताव्युं छे जो विशेष जाणवानी इच्छा होय तो, श्री उंघनिर्युक्ति, श्री आचारांग, दशवैकालिक, बृहत्कल्पनाष्यवृत्ति, पचकल्पचूर्णी, जितकल्पवृत्ति, महाकल्पसूत्र, कल्पसूत्र, निशीथ नाष्यचूर्णी, महानिशीथसूत्र, ईत्यादि पदविनाग समाचारीनां शास्त्र जोइ लेवां

प्रश्न – जैनमतना शास्त्रोमा गुरुनुं स्वरूप जेवु लखेल छे, तेवी वृत्तिवाला जैनना कोइपण साधु देखवामां आवता नथी, तो पछी जैनमतना साधुउने आ कालमां गुरु केम मानवा जोइयें ?

उत्तर – आपें कोई गीतार्थनो परिचय कर्यो लागतो नथी, तेमज जैनमतना चरणकरणानुयोगना शास्त्रनु अध्ययन पण कर्युं होय तेम ला

गतुं नथी, अथवा तो कोइ गीतार्थ गुरुना मुखारविंदथी वचनामृतनुं पान पण कखुं लागतुं नथी, जो आपें पूर्वोक्त कांइपण कखुं होत तो आपने ते बाबतनो संशय कदापि न उत्पन्न थयो होत. जैनमतमां छ प्रकारना निर्ग्रंथ कहेला छे. आ कालमां जैनमतना जे साधुउ छे ते पूर्वोक्त छ प्रकारमध्येथी बे प्रकारना छे, कारण के श्री जगवतीसूत्रना पचीशमा शतकना छछा उद्देशामां लख्युं छे के पांचमा कालमां बे प्रकारना निर्ग्रंथ होशे, तेउनाथी तीर्थ प्रवर्त्तशे. कषायकुशील निर्ग्रंथ तो कोईमां परिणाम अपेक्षा होशे, मुख्य तो बेज रहेशे. वली जैनशास्त्रमां जे गुरुनी वृत्ति लखी छे, ते प्रायः उत्सर्गमार्गनी अपेक्षा छे, अने आ कालमां तो प्रायः अपवाद मार्गनी प्रवृत्ति छे, तेथी उत्सर्गवृत्तिवाला मुनि आ कालमां केवी रीतें होय ? कोइपण रीतें होई शकेज नहि, कारण के, नथी तेवुं वज्रऋषजनाराच संहनन,के नथी तेवुं मनोबल; नथी तेवी जीवोनी श्रद्धा, के नथी तेवो देशकाल, के नथी धैर्य, तो हवे आ कालमां तेवी उत्सर्गवृत्ति जीव केम करी शके ?

प्रश्नः– जो तेवी वृत्ति आ कालमां नथी तो तेउने साधुपण केम केहेवा जोईयें ?

उत्तरः– आ आपनुं कहेवुं बहुज बेसमजनुं छे. कारण के व्यवहार सूत्रजाष्यमां लख्युं छे केः–गाथा पोक्करिणी आयारे, आणयण ते गाय गीयछे ॥ आयरिय उएए, आहरण हुंति नायवा ॥ १ ॥ सब परिणा छक्काय, अहिगमो पिंड उत्तरिक्षाए ॥ रूखे वसहे जूहे, जोहे सोहीय पुक्करिणी ॥ २ ॥ "दारगाहादो" आ बंने द्वारगाथानुं व्याख्यान जाष्यकारें पंदर जाष्यगाथाथी करेल छे. जो जाष्यगाथा जोवानी इछा होयतो व्यवहारजाष्यमां जोइ लेवी. अहियां तो ते पंदर गाथानो अर्थ जाषा (जाषांतर) मां लखियें छियें. पूर्वकालमां जेवी सुगंधमय फूलोवाली पुष्करिणी वावडीयो हती, तेवा फूलोवाली हाल नथी, परंतु पुष्करिणी वावडीयो तो छे,लोको आ सामान्य वावडीयोथी पोतानुं काम करेछे ॥ १ ॥ तथा संपूर्ण आचारप्रकल्प नवमा पूर्वमां हतुं, आ नवमा पूर्वमांथी उद्धार करीने पूज्यपाद वैशाखगणियें निशीथसूत्र रच्युं तो शुं आ निशीथने आचारप्रकल्प, न केहेवुं जोइयें ?॥२॥ पूर्वकालमां तालोद्घा-

टिनी अवस्वापिनी आदि विद्याना धारक चोर हता, अने आ काळमां तेवी विद्या तो नथी तो शु चोरी करनारने हाल चोर न केहेवा जोइयें ? ॥३॥ पूर्वकाळमां चौदे पूर्वना पठन करनारने गीतार्थ केहेता हता, तो आ काळमां जघन्य आचारप्रकल्प निशीथ, अने मध्यम आचारप्रकल्प ब्रहत्कल्पनां अध्ययन करनारने शु गीतार्थ न केहेवा जोइयें ? ॥ ४ ॥ पूर्वकाळमा श्रीआचारांगनुं शस्त्रप्रज्ञा अध्ययन जणवाथी, छेदोपस्थापनीय चारित्रमां स्थापन करता हता, तो शु हाल दशवैकालिकनुं छ जीवनीय अध्ययन जणवाथी स्थापन न करवा जोइयें ? ॥ ५ ॥ बीजा ब्रह्मचर्यना पांचमा उद्देशामा जे आमगंधी सूत्र छे ते सूत्रने अनुसारें पूर्वे मुनि आहारग्रहण करता हता, तो शु हाल पिंडैषणा अध्ययन अनुसारें न ग्रहण करी शके ? ॥६॥ पूर्वे आचारांग पठी उत्तराध्ययन जणता हता तो शु हाल दशवैकालिक पठी न अध्ययन करी शके ? ॥ ७ ॥ पूर्वे मत्तांगादि दशप्रकारना वृक्ष हता, तो शुं हाल आवावि वृक्ष न केहेवा जोइयें ? ॥ ८ ॥ पूर्वे बहु गायोना समूहवाळा नवगोपने गोवाळ केहेता हता, तो शु हाल थोडी गायोवाळाने गोवाळ न केहेवा जोइयें ? ॥९॥ पूर्वे सहस्रमल्ल योद्धा हता, तो शु हाल कोइने योद्धो न केहेवो जोइयें ? ॥ १० ॥ पूर्वे छमासी तपनु प्रायश्चित्त हतुं तो तेने बदले हाल नीवी प्रमुखनु प्रायश्चित्त न लेवु जोइयें ? ॥ ११ ॥ एवी रीतें जो पूर्वकाळना मुनियोनी वृत्ति हाल नथी तो शु तेओने आचार्य अथवा साधु न केहेवा जोइयें ? परंतु जरुर साधु मानवा जोइयें तथा जीवानुशासन सूत्रनी वृत्तिमा पण लख्यु छे के पांचमा काळमां साधु पूर्वोक्त प्रकारना होय तो पण तेओने संयमी केहेवा जोइयें तथा निशीथमा पण लख्यु छे ॥ भाष्यगाथा ॥ जासंजमया जीवे, सुतावमूले गुणुत्तर गुणाय ॥ इत्तरियछेय सजम, नियठबर्ड सा पडिसेवी ॥१ ॥ आ गाथानी चूर्णीनो अर्थ – छकायना जीवोविषे ज्यां सुधी दयाना परिणाम हशे, त्यां सुधी बकुश निर्ग्रंथ तेमज प्रतिसेवना निर्ग्रंथ रहेशे, ते कारणथी प्रवचनशून्य तेमज चारित्ररहित, पचमकाळ कदापि नहि होय ? वळी मूलउत्तर गुणोमां दूषण लागवाथी चारित्र तत्काळ नष्ट थतु नथी मूलगुणजगमा बे दृष्टात छे, उत्तरगुणजगमां मंडपनु दृष्टात छे

निश्चयनयथी, एक व्रतनो भंग थयो तो, सर्वव्रतनो भंग थाय छे, परंतु व्यवहारनयना मतथी तो जे व्रतनो भंग थयो होय, तेनोज भंग गणाय, बीजानो नहि; ते कारणथी बहु अतिचार लागवाथी संयम जतुं नथी; परंतु जो कुशील सेवे, तेमज धन राखे, अने काचुं सचित्त पाणी प्रवचन अनपेक्ष पीये, ते साधु नहि; ज्यां सुधी छेक प्रायश्चित्त लागे त्यां सुधी संयम सर्वथा जतो नथी. वली आ कालमां साधु नथी एम जे माने छे ते मिथ्यादृष्टि छे, कारण के स्थानांग सूत्रमां लख्युं छे के बहु अतिचार लागता देखीने, तेमज आलोचना, प्रायश्चित्त कोइने यं-थार्थ लेता देता नहि देखवाथी, कोइ एम कहे छे. हाल कोइ साधु नथी ते चारित्रभेदिनी विकथाना करनार छे. तथा श्रीभगवतीसूत्रना पचीशमा शतकना छठ्ठा उद्देशाना संग्रहणीकारश्रीमान् अभय देवसूरि, आ बंने निर्ग्रंथोनुं जे स्वरूप छे ते लखेछे. ॥ गाथा ॥ बउसं सवलं कव्वर; मेगठंतमिह जस्स चारित्तं ॥ अइयारपंकभावा, सोबउसो होइ निग्गंथो ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ बकुश, शबल, कर्बुर, आ त्रणे एकार्थवाची[1] छे, अतिचाररूप पंक लागवाथी एवुं जेनुं चारित्र छे ते बकुशनामा निर्ग्रंथ छे. आ भारतवर्षमां आ कालमां बकुश अने कुशील, ए बे निर्ग्रंथछे; बाकीना त्रणनो विच्छेद थयेल छे ॥ तथा चोक्तं परममुनिभिः ॥ बकुश कुशीला दोपुण, जातिछंतावहोहंति इति ॥ अर्थः—बकुश, कुशील ए बे प्रकारना निर्ग्रंथ ज्यां सुधी तीर्थ रहेशे त्यां सुधी रहेशे.

बकुश निर्ग्रंथना बे भेद छे, ते कहियें छियें. वस्त्र पात्रादि उपकरणनी जे विभूषा करे ते उपकरणबकुश, तथा हाथ पग नख मुखादि देहना अवयवोनी जे विभूषा करे ते शरीरबकुश. आ बे भेदना वली पांच भेद छे. ॥ गाथा ॥ उवगरण सरीरेसु,सोडुहा डुविहोवि होइ पंचविहो॥ अभोग अणाभोग, असंवुड संवुडे सुहुमे ॥१॥ अर्थः—प्रथमना बे पदोनो अर्थ उपर लखेलो छे पाछलना बे पदोनो अर्थ लखियें छियें. साधुने आ करवा योग्य नथी, एम जाणतां छतां पण जे ते कामने करे ते आभोग बकुश, अने जे अजाणपणाथी करे ते अनाभोगबकुश. मूल तथा उत्तर गुणमां जे गुप्तपणे छाना दोष लगावे ते संवृत बकुश, तथा मूल उ-

---

[1] एक अर्थना कहेनार.

तर गुणोमां जे प्रगट दूषण लगावे ते असवृत बकुश नेत्र, नासिका,मु खादिना जे मल दूर करे ते सूक्ष्म बकुश ए पांच भेद कह्या

हवे उपकरणबकुशनुं स्वरूप लखियें छियें ॥ गाथा ॥ जो उपगरणे, बउसो, सो धुवइश्च पाउसे विवछई ॥ ईछईय लण्हयाई, किंचिविभूसाई भुंजईय ॥ १ ॥ व्याख्या – उपकरणबकुश वर्षाऋतु विना पण जलथकी रथी वस्त्र धोवे छे, वर्षाऋतुमां तो सर्व गच्छवासी साधुउने आज्ञा छे, व र्षाऋतु पेहेलां जो एकवार पोतानां सर्व उपकरण जलद्वारथी धोई लहे नहि तो वर्षाऋतुमां मलना संसर्गथी निगोदादि जीवोनी उत्पत्ति थई जाय वली बकुश निर्ग्रंथ वर्षाऋतु विना अन्यऋतुउमां पण जलद्वारथी वस्त्रादि धोई लहे छे, तेमज सुंदर, सुकुमाल वस्त्रनी पण वांछा राखेछे, तेमज उपकरण विभूषा अर्थात् शोभाने वास्ते पण कांइक पेहेरेछे ॥ गाथा ॥ तह्पत्त दडयाइ, घठमठं सिणेह कय तेय ॥ धारेइ विभूसा ए, बहुंच बछेई उवगरणं ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ पात्र, दंडप्रमुख बहुज घ सीने सुकमाल करे, तथा घी, तेल प्रमुख चोपडीने तेजवंत चमकदार करी राखे, तेमज विभूषामाटे बहुज उपकरण राखवाने चाहे अर्थात् राखे

हवे शरीर बकुशनु स्वरूप लखियें छियें ॥ गाथा ॥ देह बउसो अक जे, करचरण नहाइय विभूसेइ ॥ दुविहोवि इमोइढ्ढि, इछइ परिवार प जिईय ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ शरीरबकुश कारण विना पण हाथ, पग, न खादिनी विभूषा करे, जलादिथी धोवे ए प्रमाणे उपकरण तेमज शरीर बकुश निर्ग्रंथ परिवारप्रमुखनी ऋद्धि वांछेछे ॥ गाथा ॥ पंडिच्च तवा इ कय, जसंच इछेइ तमि तुस्सइय ॥ सुहसीलो नयबाढ, जयइ अहोर त्तकिरियासु ॥ १ ॥ व्याख्या –पण्डितपणाथी तथा तपादिथी यशनी इछा करे ते यशनो लाभ थवाथी अत्यंत खुशी थाय, तेमज सुखशीलि यो थाय, तेमज दिनरातनी समाचारी, क्रियामां बहु उद्यमी पण न होय ॥ गाथा ॥ परिवारोय असंजम, अविविचो होइ किंचि एयस्स । घसीय पाद तिल्लाई, मासणि किच्चरिय केसो ॥ १ ॥ व्याख्या –तेनो जे परिवार होय ते असंयमी होय, वस्त्रपात्रादि मोहथी दूर करे नहि, हाथ, पग तेल सावु विगेरेथी चोपडी सुकोमल राखे, तेमज दाढी, मूछ अने मस्त कना वाल कातरथी कापे अर्थात् लोचने बदले अस्त्रा अथवा कातरथी

वाल दूर करे, परंतु लोच करे नहि. ॥ गाथा ॥ तह देसछेयारि, देहिं सबलेहिं संजुउ बउसो ॥ मोह खयछमप्पु, ठिउय सुत्तंमि नणियं च ॥ १ ॥ व्याख्याः—तथा देशछेद, सर्वछेद योग्य दोषोथी जेनुं चारित्र कर्बुर छे, परंतु जेना मनमां मोहक्षय करवानी इछा छे, अर्थात् मनमां संयम पालवानो उत्साह छे, परंतु संपूर्ण संयम पाली शकता नथी. आ पूर्वोक्त कृत्योथी संयुक्त होय तेने बकुश निर्ग्रंथ कहियें. वली सूत्रमां जे कहेलुं छे ते हवे लखियें छियें ॥ गाथा ॥ उवगरण देह चुस्का, रिद्धि रस गारवासिया निच्चं ॥ बहु सबल छेय जुत्ता, निग्गंथा बउसा नणिया ॥ १ ॥ आनोगो जाणंतो, करेइ दोसं अयाणमण नोगे ॥ मूलुत्तरे हि संवुड, विवरिय असंवुडो होइ ॥ २ ॥ अछि मुह मज्जमाणो, होइ अहा सुहमउ तहा बउसो ॥ सीलं चरणं जंजस्स, कुछियं सो इह कुसीलो ॥ ३ ॥ पडिसेवणा कसाए, डुहा कुसीलो डुहावि पंचविहो ॥ नाणे दंसण चरणे, तवेय अह सुहुमए चेव ॥ ४ ॥ इहनाणाइ कुसीलो उवजीवं होइ नाण पन्निईए ॥ अह सुहुमो पुणतुस्सइ, एस तव सत्ति संसए ॥ ५ ॥ व्याख्या—उपकरण, देह शुद्ध राखे, रस, ऋद्धि अने शाता, आ त्रणे गारवमां नित्य मग्न रहे, उपकरणोथी अविविक्त रहे परिवार जेनो छेद योग्य, सबल चारित्रसंयुक्त होय, ते निर्ग्रंथ बकुश कहेवाय छे ॥१॥ साधुउने आ करवा योग्य नथी एम जाणतां छतां पण जे ते काम करेछे तेने आनोगबकुश कहियें, अने जे अजाणपणाथी अकृत्य करे तेने अनानोगबकुश कहियें, मूल उत्तर गुणोथी संयुक्त छे, लोक एम जाणे पण छे, परंतु गुप्त दोष लगावे छे तेने संवृतबकुश कहियें, अने जे प्रगटपणे मूल उत्तर गुणमां दोष लगावे तनेअसंवृतबकुश कहियें ॥ २ ॥ तथा जे आंख, मुख प्रमुख मांजे, मलादि दूर करे, तेने यथासूक्ष्म बकुश कहियें. आ बकुशना पांच नेद कह्या.

हवे कुशील निर्ग्रंथनुं स्वरूप लखियें छियें. शील अर्थात् चारित्र, ते चारित्र जेनुं कुत्सित होय ते कुशील निर्ग्रंथ, तेना बे नेद छे ॥ ३ ॥ प्रतिसेवनाकुशील तथा कषायकुशील, संज्वलन कषायोथी कुशील होय ते कषायकुशील. आ बंनेना वली पांच नेद छे ते कहिये छियें. १ ज्ञान

२ दर्शन ३ चारित्र ४ तप ५ यथासूक्ष्म ॥४॥ जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप, आ चारे आजीविकाने वास्ते करे ते ज्ञानादिकुशील याने चारे " तिसेवनाकुशील, तथा आ तपस्वी छे इत्यादि पोतानी प्रशसा श्रवण करी खुशी थाय ते पांचमा यथासूक्ष्म प्रतिसेवनाकुशील जाणवा तथा जे ज्ञान, दर्शन, तप प्रमुखनो सज्वलन कषायना उदयथी व्यापार करे, ते ज्ञान, दर्शन, चारित्रना कषाय कुशील जाणवा जे कषायकुशील छे ते कषायने वश थईने शाप दीएछे मनथी जे क्रोध प्रमुखनुं सेवन करे ते यथा सूक्ष्मकषायकुशील, अथवा कषायथी जे ज्ञान प्रमुखनी विराधना करे ते ज्ञानादि कुशील जाणवा कोइ आचार्य, तप कुशीलना स्थानमा लिंगकुशील कहे छे आ वे प्रकारना निर्ग्रंथ पांचमा आरा पर्यंत रहेशे जे कोई आ तरेहना साधुने साधु अथवा गुरु न माने ते जीव मिथ्यादृष्टि, बहुल ससारी, जिनमतना उत्थापक छे एवा मिथ्यादृष्टिनी सगत पण करवी योग्य नथी

इतिश्रीतपागच्छीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्यमुन्यानंदविजयात्मारामविरचितजैनतत्त्वादर्शभाषांतरेगुरुतत्त्वनिर्णयनामा तृतीय परिछेद सपूर्ण ।

॥ अथ चतुर्थपरिछेदप्रारंभ ॥

आ चोथा परिछेदमां कुगुरु तत्वनु स्वरूप लखिये छियें ॥ श्लोक ॥ सर्वाभिलाषिण सर्व, भोजिन सपरिग्रहा ॥ अब्रह्मचारिणोमिथ्यो, पदेशागुरवोमता ॥ १ ॥ अर्थ – स्त्री, धन, धान्य, सुवर्ण, रुपाआदि सर्व धातु, तथा क्षेत्र, घर, हाट, हवेली प्रमुख सर्व स्थावर मिलकत तथा चतुष्पदादि अनेकप्रकारनां पशु, आ सर्वनी अभिलाषा करवानो जेनो स्वभाव छे ते सर्वाभिलाषी, तथा सर्व मद्यमासादि बावीश अभक्ष्य, तथा बत्रीश अनंतकाय, तथा अन्य अनुचित आहारादि, आ सर्वनु भोजन करवानो जेनो स्वभाव छे ते सर्वभोजिन , तथा पुत्र, कलत्र, पुत्री प्रमुख सहवर्तमान प्रवर्त्ते ते सपरिग्रही, अने तेज कारणथी अब्रह्मचारी, जे अब्रह्मचारी, होय छे ते महादोषवान् होय छे तेथी अब्रह्मचारी एवो आ श्लोकमां जूदो उपन्यास करेलो छे वली अगुरुपणानु असाधारण

कारण कहियें छियें, मिथ्योपदेशाः, मिथ्या (वितथ) आसना उपदेश विनानो धर्मनो उपदेश छे जेनो ते अगुरु छे. अहियां कोई एवी शंका करे के धर्मना उपदेशदाता गुरु छे, छतां पण निःपरिग्रहादि गुणोनुं ते उपदेशदातामां शामाटे अस्तित्व होवुं जोइयें? ते शंका दूर करवाना हेतुथी विशेष लखियें छियें.

॥ श्लोक ॥ परिग्रहारंभमग्ना, स्तारयेयुः कथं परान् ॥ स्वयं दरिद्रो नपर, मीश्वरीकर्त्तुमीश्वरः ॥ २ ॥ अर्थः—परिग्रह- स्त्री प्रमुख अने आरंभ- जीवहिंसा अर्थात् सर्वाभिलाषी तथा सर्वभोजी आ बंने विषयोमां जे मग्न छे, अर्थात् आ बंने विषयरूप भवसमुद्रमां जे डुबेला छे, ते बीजा जीवोने केवीरीतें संसार सागरमांथी तारी शके तेम छे? दृष्टांत के जे पुरुष पोतेज दरिद्र छे ते बीजाने धनवान् केवी रीतें करी शके तेम छे? हवे प्रथम श्लोकना चोथा पदमां "मिथ्योपदेशागुरवोमताः" जे छे ते पदनो अर्थ विस्तारथी लखियें छियें. कुगुरुनो उपदेश आ प्रमाणे मिथ्या छे. आ मिथ्या उपदेशना स्वरूपमां प्रथम त्रणसे त्रेसठ मतनुं स्वरूप लखियें छियें. एकसो एंशी मत क्रियावादिना छे. तथा चोराशी मत अक्रियावादिना छे, तथा सडसठ मत अज्ञानवादिना छे, अने बत्रीश मत विनयवादिना छे, ए रीतें त्रणसे त्रेसठ मत थाय छे.

प्रथम क्रियावादिना मतनुं स्वरूप कहियें छियें. क्रियावादी कहेछे के कर्त्ताविना पुण्यबंधादिलक्षणरूप क्रिया थती नथी तेथी क्रिया, आत्मानीसाथे समवायसंबंधवाली छे. ए प्रमाणे तेमनो मत छे. क्रियावादी आत्मा प्रमुख नव पदार्थोने एकांत अस्ति स्वरूपपणे माने छे, आ क्रियावादिना एकसो एंशीमत, नीचे मुजब जाणी लेवा. १ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ बंध, ५ संवर, ६ निर्जरा ७ पुण्य, ८ अपुण्य, ९ मोक्ष, आ नव पदार्थ अनुक्रमें पत्रादिपर लखवा; पछी जीव पदार्थना नीचे स्वतः तेमज परतः आ बे भेद स्थापन करवा. आ स्वतः परतः नीचे वली जुदा जुदा नित्य तेमज अनित्य एवा बे भेद स्थापन करवा; पछी नित्य, अनित्य आ बंनेनी नीचे जुदा जुदा १ काल, २ ईश्वर, ३ आत्मा, ४ नियति ५ स्वभाव, आ पांच स्थापन करवा, त्यारबाद विकल्प करीलेवा, ते नीचे मुजब—यंत्रस्थापना.

जीव			
स्वत		परत	
नित्य	अनित्य	नित्य	अनित्य
१ काल	१ काल	१ काल	१ काल
२ ईश्वर	२ ईश्वर	२ ईश्वर	२ ईश्वर
३ आत्मा	३ आत्मा	३ आत्मा	३ आत्मा
४ नियति	४ नियति	४ नियति	४ नियति
५ स्वभाव	५ स्वभाव	५ स्वभाव	५ स्वभाव

विकल्प करवानी रीत कहियें छियें अस्ति जीव स्वतोनित्य कालत इत्येकोविकल्पः ॥ १ ॥ अर्थः--आ आत्मा निश्चयें सस्वरूपथी कालथी उत्पन्न थयेल छे कालवादिना मतनो आ विकल्पछे कालवादी, कालथी ज जगतनी उत्पत्ति, स्थिति, तेमज लय माने छे वली कालवादी कहे छे के चंपक, अशोक, सहकार, निंब, जंबु, कदंबादि जे वनस्पति छे, तेउनी उपर फुलोनु लागवुं, फलप्रमुखनु थवावुं ते कालविना थइ शकतुं नथी, तथा हिमकणसंयुक्त शीतनु पडवुं, तथा नक्षत्रगर्भनु धारण, वरसादनु वरसवु इत्यादि कालविना होतु नथी, वली छ ऋतुओना विभाग, तथा बाल, कुमार, यौवन, वृद्धादि अवस्था, तेपण कालविना थइ शकती नथी, जे जे प्रतिनियत काल विभागादि छे, ते सर्वनो कालज नियता छे, जो कालने नियंता न मानियें तो कोइ वस्तुनी व्यवस्था थशे नहि कारण के जेम कोइ पुरुष मग रांधे छे, ते मगपण कालविना रंधाइ जाता नथी, नहि तो हांडली तथा इंधन प्रमुख सामग्रीना संयोगथी प्रथम समयमाज मग केम न रंधाइ जाय ? ते कारणथी जे कर्त्ता छे ते काल ज छे तथा चोक्तं ॥ न कालव्यतिरेकेण गर्भबालशुभादिकं ॥ यत् किंचिज्जायते लोके, तदसौ कारणं किल ॥ १ ॥ किंचित् कालादृते नैव, मुद्गपक्तिरपीक्ष्यते ॥ स्थाल्यादिसन्निधानेऽपि, ततः कालादसौ मता ॥ २ ॥ कालाभावे च गर्भादि, सर्वं स्यादव्यवस्थया ॥ परेष्टहेतु सद्भाव, मात्रादेव तदुद्भवात् ॥ ३ ॥ आ श्लोकोनो भावार्थ उपर ल खेलो छे तथा ॥ काल पचति भूतानि, काल संहरते प्रजा ॥ काल सुप्तेषु जागर्त्ति, कालोहि दुरतिक्रम ॥ ४ ॥ अहिया पर इष्ट हेतुना स

भाव मात्रादिथी बीजाओए जे एम मानेल छे के स्त्री पुरुषना संयोग मात्र हेतुथी गर्भनी उत्पत्ति थायछे तो एक वर्ष वयना स्त्री पुरुषना संयोगथी केम गर्भनी उत्पत्ति थती नथी ते कारणथी कालज गर्भनी उत्पत्तिनो हेतु छे. तेमज स्त्रीने गर्भ उत्पन्न थवामां ऋतुकाल होवो जोइये, ते विना स्त्री पुरुषना संयोगथी गर्भ केम उत्पन्न थतो नथी? वली कालज पकावे छे तथा पृथ्वी आदि भूतोने परिणामांतर प्रत्ये कालज पहोचाडे छे. तेमज पूर्व पर्यायथी पर्यायांतरमां लोकोने कालज स्थापन करे छे. वली सुप्त अवस्था प्राप्त थयेला प्राणियोनी रक्षापण कालज करेछे, ते कारणथी प्रत्यक्ष छे के काल दुरतिक्रम छे. कालने दूर करवामां कोइ समर्थ नथी, आ कालवादिनो विकल्प छे.

तेविजरीतें बीजा विकल्प पण जाणी लेवा. परंतु कालने स्थानकें ईश्वरनी योजना करवी, "यथा अस्ति जीवः स्वतो नित्यः ईश्वरतः" जीव पोताना स्वरूपथी नित्य छे, परंतु ईश्वर उत्पन्न करे छे. कारण के ईश्वरवादी सर्व जगत् ईश्वरनुंज करेलुं माने छे. जेने १ ज्ञान, २ वैराग्य, ३ धर्म, ४ ऐश्वर्य, आ चारे स्वतः सिद्ध होय, तेमज जे, जीवोना स्वर्ग, नरक, मोक्षादि गमनमां प्रेरक होय तेने ईश्वर कहियें. यथा॥ ज्ञानमप्रतिघं यस्य, वैराग्यं च जगत्पतेः ॥ ऐश्वर्यं चैव धर्मश्च, सहसिद्धं चतुष्टयं ॥ १ ॥ अज्ञोजंतुरनीशोय, मात्मनः सुखदुःखयोः ॥ ईश्वरप्रेरितोगच्छेत्, स्वर्गं वाश्वभ्रमेव वा ॥ २ ॥ इत्यादि.

त्रीजो विकल्प आत्मवादियोनो छे. "पुरुष एवेदं सर्वमित्यादि" जे काइ देखाय छे ते सर्व पुरुषज छे एम आत्मवादियोनो मत छे.

चोथो विकल्प नियतवादियोनो छे. नियतवादियो कहे छे के पदार्थोमां एक एवुं सामर्थ्य छे के जे सामर्थ्यथी सर्व पदार्थ पोत पोताना स्वरूपनियमोथी तेवाने तेवाज बन्या रहेछे, परंतु अन्यथापणे थता नथी. वली तेज बतावियें छियें. जे पदार्थ जे कालमां जेनाथी थाय छे, ते पदार्थ तेज कालमां, तेनाथी नियतरूपें थतो मालम पडेछे. तेम जो न होय तो कार्य कारण भावनी व्यवस्था नियामकना अभावथी कदापि थायज नहि. ते कारणथी कार्यनियतताथी उपर मुजब प्रतीत थती जे नियति तेने प्रमाण पंथमां कुशल एवो कयो पुरुष बाध करी शके छे?

जो नियति बाधित थई जाय तो बीजे स्थले प्रमाण मिथ्या थई जशे तथा चोक्त ॥ नियतेनैवरूपेण, सर्वे भावा भवति यत् ॥ ततो नियति जायेते, तत्स्वरूपानुवधतः॥ १ ॥ यद्यदेव यतो यावत्, तत्तदेव ततस्तथा । नियत जायते न्यायात्, कप्नां बाधितु क्षम ॥ २ ॥ आ बने श्लोकनो अर्थ उपर लख्यो छे

पांचमो विकल्प स्वभाववादियोनो छे स्वभाववादियो कहे छे के आ संसारमां सर्व पदार्थ स्वभावथीज उत्पन्न थाय छे ते कहे छे के माटीथी घट थाय छे, परतु वस्त्र थतु नथी, तेमज ततुओथी वस्त्र थाय छे परतु घटादि थता नथी, आ जे मर्यादापूर्वक थवु छे ते स्वभाव विना कदापि थई शकतु नथी ते कारणथी जगत्मां जे कांई थाय छे ते सर्व स्वभावथीज थाय छे वली बीजा कार्य तो दूर रह्यो परतु आ जे मगनु रंधावु छे, ते पण स्वभावविना थतु नथी, कारण के हांडी, इंधन, काल प्रमुख सामग्री विद्यमान छतां (कांगडु) करडु मग रधाता नथी याने पाकता (चढता) नथी, ते कारणथी जे जेना सद्भावें विद्यमान होय, तेमज अ सद्भावें अविद्यमान होय ते ते अन्वयव्यतिरेकथी तेना कर्त्ता छे, स भावथीज मग रंधाय छे तेथी स्वभावज सर्व वस्तुनो हेतु छे

आ पांच विकल्प स्वत ईश पदथी होय छे, तेवीज रीतें पांच परत ईशपदथी उपलब्ध थाय छे परत शब्दनो अर्थ एवो छे के, पर पदार्थो थी व्यावृत्तरूपें आ आत्मा निश्चयथी छे तेवी रीतें नित्य शब्दथी दश विकल्प थाय छे, तेमज अनित्य पदथी पण दश विकल्प थाय छे बने एक ठा करवाथी वीश थाय छे आ वीश विकल्प जीव पदार्थ साथे थाय छे, तेवीज रीतें अजीवादि नवे पदार्थ साथे जुदा जुदा वीश विकल्प जाणी लेवा, एटले वीशने नवथी गुणतां एकसो एंशी मत क्रियावादिना थाय छे

हवे अक्रियावादिना चोराशी मत लखियें छियें अक्रियावादी कहे छे के पुण्य, पापरूप क्रिया काइ नथी कारण के पुण्य, पापरूपादि क्रिया तो स्थिर पदार्थोने लागे छे, अने जगत्मा स्थिर पदार्थ तो कोइ छे नहि, कारण के उत्पत्ति अनतरज पदार्थनो विनाश थतो जाय छे तथा श्लोक ॥ क्षणिका सर्वसंस्कारा, अस्थिराणा कुत क्रिया ॥ भूति र्येषा क्रिया सैव, कारक सैव चोच्यते ॥१॥ अर्थ – सर्वसंस्कार पदार्थ क्ष

णिक छे, तेथी अस्थिर पदार्थोने पुण्यपापादि क्रिया क्यांथी होय ? पदार्थोनुं जे होवुं, तेज क्रिया छे, तेज कारक छे, ते कारणथी पुण्यपापादि क्रिया नथी. आ अक्रियावादी आत्माने मानता नथी. तेना चोराशी मत जाणवानी आ रीत छे. १ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ संवर, ५ निर्जरा, ६ बंध, ७ मोक्ष, आ सात पदार्थ लखवा, पछी जीवादि साते पदार्थोनी नीचे जुदा जुदा स्व तेमज पर आ बे विकल्प लखवा, पछी आ बंनेनी नीचे जुदा जुदा १ काल, २ ईश्वर, ३ आत्मा, ४ नियति, ५ स्वभाव, ६ यदृछा, आ छ लखवा. अहियां नित्य, अनित्य आ बे विकल्प नहि लख्या तेनुं कारण ए छे के ज्यारे आत्मादि पदार्थज नथी त्यारे तेना नित्य, अनित्यनो संभवज केम होय ? तथा यदृछावादी जे छे ते सर्व नास्तिक अक्रियावादी छे, ते कारणथी क्रियावादी यदृछावादी नथी. तेज कारणथी क्रियावादिना मतमां यदृछा पद ग्रहण करेल नथी. आ मतना चोराशी भेद आवी रीतें जाणवा ते कहियें छियें.

" नास्ति जीवः स्वतः कालत इत्येको विकल्पः " नथी जीव पोताना स्वरूपें कालथी उत्पन्न थयेल, आ एक विकल्प, तेवीज रीतें ईश्वरादिथी लईने यदृछा पर्यंत सर्वे छ विकल्प थया, तेना अर्थ पूर्ववत् जाणवा, परंतु एटलुं विशेष के आ मतमां यदृछावादी अधिक छे.

प्रश्नः– यदृछावादिउनो शुं मत छे ?

उत्तरः– जे पदार्थोने संताननी अपेक्षा नियत, कार्य कारण भावें मानता नथी, परंतु जे कांइ थाय छे ते यदृछाथी थाय छे, अर्थात् कार्य कारण भाव नथी, परंतु यदृछाथीज थाय छे एम जे कहे छे ते यदृछावादि छे. वली तेउ कहे छे के पदार्थोनो पोत पोतामां कार्यकारणभावनो नियमज नथी, कारण के कार्यकारणभाव प्रमाणपूर्वक ग्रहण थई शकाताज नथी. जेम मृतकमेंडक (देडका) थी मेंडक उत्पन्न थायछे, तेमज गोबरथी पण मेंडक उत्पन्न थाय छे; अग्निथी अग्नि उत्पन्न थाय छे, तेमज अरणिना काष्ठथी पण अग्नि उत्पन्न थाय छे; धूमाडाथी धूमाडो उत्पन्न थाय छे तेमज अग्निथी पण धूमाडो उत्पन्न थाय छे; कदलीना कंदथी केलां उत्पन्न थाय छे, तेमज केलांना बीजथी पण केलां उत्पन्न

थाय छे, बीजथी वटवृक्ष उत्पन्न थाय छे तेमज वटवृक्षनी शाखाथी पण वट वृक्ष उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी नियमपूर्वक कार्यकारणभाव कोइ पण जगाये देखवामां आवता नथी तेथी यदृछाथी कोइ जगे कांइ तो कोई जगे कांई एम थाय छे, एम मानवु जोईयें, कारण के जो एम जाणुं के जे कांइ थाय छे ते यदृछाथी थाय छे तो बुद्धिमान् पुरुषें कार्यकारण भावने शावास्ते मानवा जोइयें तेमज आत्माने क्लेश करवो जोइये जेम स्वतःनी साथे छ विकल्प करवा तेमज परत नी साथे पण छ विकल्प करवा तेथी रीतें चार विकल्प थया ते चारेने जीवादि सात पदार्थो साथे गुणतां चोराशी भेद अक्रियावादिना थाय छे

हवे त्रीजा अज्ञानवादिना भेद कहियें छियें शुंकुं ज्ञान छे जेनुं ते अज्ञानवादि जाणवा, अथवा अज्ञानथी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानवादी, अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञान सारी वस्तु नथी कारण के जो ज्ञान हशे तो परस्पर विवाद थशे, जो विवाद थशे तो चित्त मलिन थशे, ज्यारे चित्त मलिन थयुं, त्यारे संसारनी वृद्धि थई जेम के कोइ पुरुषें कोइ वस्तु विरुद्ध कही, ज्ञानियें ते सांजलीने ज्ञानना अभिमानथी, बहुज मलिन चित्तथी ते पुरुषनी साथे विवाद करवो शरु कर्यो, विवाद करतां थकां अत्यत तीव्र मलिन चित्त थयुं तथा अहंकार वध्यो, ते चित्तनी मलिनता तथा अहंकारथी महापापकर्म उत्पन्न कर्यां, ते पापथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थई ते कारणथी ज्ञान सारी वस्तु नथी, अने जो पोताने अज्ञानी मानिये तो अहंकारनो संभव थतो नथी, तेमज बीजाउनी उपर चित्तनु मलिनपणुं पण थतु नथी, तेथी कर्मनो बंध पण थतो नथी वली जे कार्य विचारपूर्वक करियें तेमा महाकर्मनो बंध थाय छे तेनु फल पण महाभयानक प्राप्त थाय छे, अने जे काम मनना व्यापार विना करिये, तेमज मनना व्यापार विना कोइ जीवनो वध पण करियें तो तेनु फल अवश्यमेव भोगववामां आवतु नथी, अने ते काम मां जे कांइ कर्मबंध थाय छे, ते पण चुनागछी वाली भित उपर रेतीनी मुष्टिना संबंधवत् स्पर्शमात्र थाय छे, परंतु बंध थतो नथी ते कारणथी मोक्षगामि पुरुषोने अज्ञानज अंगीकार करवुं श्रेय छे, परंतु ज्ञान अंगीकार करवु श्रेयस्कर नथी आ अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञानने अमे मानी

पण लइयें, जो ज्ञाननो निश्चय करवानी समर्थता होय ? कारण के प्रथम तो ज्ञान सिद्धज थई शकतुं नथी. जूओ जे जे मतावलंबी पुरुष छे, ते सर्व परस्पर भिन्नज ज्ञान अंगीकार करे छे. ते कारणथी निश्चय करवामां केम समर्थ होय, के आ मतनुं ज्ञान सम्यक् छे अने आ मतनुं ज्ञान सम्यक् नथी ? जो एम कहो के सकल वस्तु समूहना साक्षात्कारी एवा ज्ञानवाला जे भगवान् छे तेना उपदेशथी जे ज्ञान थाय ते सम्यक् ज्ञान छे, अने तेना शिवाय बीजा मत छे तेनुं ज्ञान सम्यक् नथी, कारण के तेना मतमां जे ज्ञान छे ते सर्वज्ञनुं कथन करेल नथी.

अज्ञानवादी कहे छे के–आपनुं केहेवुं तो सत्य छे, परंतु सकल वस्तुसमूहना साक्षात् करनारा ज्ञानी, सुगत, ईश्वर, विष्णु ब्रह्मादिने अमे मानियें ? के भगवान् वर्धमान महावीर स्वामिने अमे मानियें ? वली एज संशय रह्यो, निश्चय थयो नहि के कोण सर्वज्ञ छे ? जो एम कहो के जे भगवानना चरण कमलने सर्व देवता, इंद्र परस्पर अहंपूर्वकविशिष्टविशिष्टतर विभूतिद्युतिथी[1] संयुक्त सैंकडो विमानोमां बेसी सकल आकाश मंडलने आछादित करता थका, पृथ्वीपर उतरी पूजता हता ते भगवान् वर्धमान स्वामी सर्वज्ञ छे, परंतु सुगत, शंकर, विष्णु ब्रह्मादि नहि; कारण के सुगतादि सर्व अल्पबुद्धिवाला मनुष्य थया छे, परंतु सर्वज्ञ देव थया नथी, जो सुगतादि सर्वज्ञ थया होत तो तेओनी पण देवता, इंद्रें, पूजा करी होत, परंतु कोईनी देवता, इंद्रें पूजा करी नथी, ते कारणथी सुगतादि सर्वज्ञ थया नथी. हे जैन! आ जे सघलुं तमे कह्युं ते पोताना मतना रागथी कह्युं छे; परंतु ते वातथी इष्ट सिद्धि थती नथी. कारण के वर्धमान स्वामिनी देवता, इंद्र देवलोकथी आवीने पूजा करता हता, आ तमारुं केहेवुं अमे केम साचु मानी शकियें? भगवान् श्री महावीर स्वामिने थयांने आज बहुकाल व्यतीत थई गयो, वली तेना सर्वज्ञ होवामां कांइ पण साधक प्रमाण नथी. जो कहो के संप्रदायथी अर्थात् महावीरना शासनथी महावीर सर्वज्ञ सिद्ध थाय छे, तो तेमां एवो तर्क थशे के आ, जे तमारो संप्रदाय छे ते कोण जाणे कोई धूर्त्तनो चलावेलो हशे ? के कोइ सत्पुरुषनो चलावेलो हशे ?

१ कांतिवाप्रकाशके ऐश्वर्यप्रद्योतथी.

थाय छे, बीजथी वटवृक्ष उत्पन्न थाय छे तेमज वटवृक्षनी शाखाथी पण वट वृक्ष उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी नियमपूर्वक कार्यकारणभाव कोइ पण जगाये देखवामां आवता नथी तेथी यदृछाथी कोइ जगे कांइ तो कोई जगे कांई एम थाय छे, एम मानवु जोईये, कारण के जो एम जाणु के जे कांइ थाय छे ते यदृछाथी थाय छे तो बुद्धिमान् पुरुषें कार्यकारण भावने शावास्ते मानवा जोइयें तेमज आत्माने क्लेश करवो जोइये जेम स्वत'नी साथे ७ विकल्प करवा तेमज परत'नी साथे पण ७ विकल्प करवा तेथी रीतें चार विकल्प थया ते चारेने जीवादि सात पदार्थो साथे गुणता चोराशी भेद अक्रियावादिना थाय छे

हवे त्रीजा अज्ञानवादिना भेद कहियें छियें कुंकु ज्ञान छे जेनुं ते अज्ञानवादि जाणवा, अथवा अज्ञानथी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानवादी, अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञान सारी वस्तु नथी कारण के जो ज्ञान हशे तो परस्पर विवाद थशे, जो विवाद थशे तो चित्त मलिन थशे, ज्यारे चित्त मलिन थयु, त्यारे संसारनी वृद्धि थई जेम के कोइ पुरुषें कोइ वस्तु विरुद्ध कही, ज्ञानियें ते सांभलीने ज्ञानना अभिमानथी, थयुज मलिन चित्तथी ते पुरुषनी साथे विवाद करवो शरु कर्यो, विवाद करतां थकां अत्यंत तीव्र मलिन चित्त थयुं तथा अहंकार वध्यो, ते चित्तनी मलिनता तथा अहंकारथी महापापकर्म उत्पन्न कर्यां, ते पापथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थई ते कारणथी ज्ञान सारी वस्तु नथी, अने जो पोताने अज्ञानी मानिये तो अहंकारनो संभव थतो नथी, तेमज बीजाउनी उपर चित्तनु मलिनपणुं पण थतुं नथी, तेथी कर्मनो बंध पण थतो नथी वली जे कार्य विचारपूर्वक करियें तेमां महाकर्मनो बंध थाय छे तेनु फल पण महाभयानक प्राप्त थाय छे, अने जे काम मनना व्यापार विना करिये, तेमज मनना व्यापार विना कोइ जीवनो वध पण करियें तो तेनु फल अवश्यमेव भोगववामां आवतु नथी, अने ते काममां जे कांइ कर्मबंध थाय छे, ते पण चुनागछी वाली भिंत उपर रेतीनी मुष्टिना संबंधवत् स्पर्शमात्र थाय छे, परंतु बंध थतो नथी ते कारणथी मोक्षगामि पुरुषोने अज्ञानज अंगीकार करवु श्रेय छे, परतु ज्ञान अंगीकार करवुं श्रेयस्कर नथी आ अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञानने अमे मानी

शास्त्रोना आज अर्थ छे, बीजा नथी. आ पण तमारुं केहेवुं अयुक्त छे, कारण के गौतमादि पण छद्मस्थ हता, अने छद्मस्थने बीजानी चित्त वृत्तिनुं ज्ञान होतुं नथी, बीजानी चित्तवृत्तिनी समज तो अतींद्रिय ज्ञाननो विषय छे. छद्मस्थ तो इंद्रियद्वारा जाणी शके छे, इंद्रियज्ञानी सर्वज्ञना अभिप्रायने केवी रीतें जाणी शके के सर्वज्ञनो आज अभिप्राय छे ? आ अभिप्रायथी सर्वज्ञें आ शब्द कह्यो छे ? ते वास्ते भगवानना अभिप्राय तो गौतमादि जाणी शकता न होता, केवल जे वर्णावली भगवान् केहेता हता तेज वर्णावलि भगवाननी पाछल गौतमादि उच्चारण करता आव्या छे, परंतु भगवाननो अभिप्राय कोइयें जाणेलो नथी. जेम आर्यदेशोत्पन्न पुरुषनो शब्दोच्चार श्रवण करी म्लेछ पण तेवोज शब्दोच्चार करी शके छे, परंतु तात्पर्य कांइ जाणता नथी, तेवीज रीतें गौतमादि, महावीर स्वामिना अनुवादक हता; परंतु तेमना अभिप्राय जाणता न होता, ते कारणथी सम्यक् ज्ञान कोइ मतमां सिद्ध थतुं नथी; एक तो ज्ञान थवाथी, पुरुष अभिमानथी बहुज कर्म बांधीने दीर्घसंसारी थई जाय छे, बीजुं सम्यक्ज्ञान कोइ मतमां छेज नहि, तेथी अज्ञानज श्रेय छे. ए प्रमाणें अज्ञानवादिनी श्रद्धा छे. ते अज्ञानी सडसठ प्रकारना छे. तेने जाणवानो आ उपाय छे. जीवादि नव पदार्थ कोइ पत्र पर लखवा, अने दशमा स्थानमां उत्पत्ति लखवी, जीवादि नवे पदार्थ नीचे जुदां जुदां सत्त्वादि सात पद स्थापन करवां, ते सात पद आ छे– १ सत्त्वं, २ असत्त्वं, ३ सदसत्त्वं, ४ अवाच्यत्वं, ५ सदवाच्यत्वं, ६ असदवाच्यत्वं, ७ सदसदवाच्यत्वं. हवे १ सत्त्वं–ते स्वरूपथी विद्यमानपणुं, २ असत्त्वं– पररूपथी अविद्यमानपणुं, ३ सदसत्त्वं– ते स्वरूपथी तथा पररूपथी विद्यमानपणुं, तेमां अगर जो के सर्व वस्तु स्वपर रूपथी निरंतर स्वभावथी सदसत्स्वभाव छे, तो पण कोईक जगाये कदाचित् उद्भूतरूपथी विवक्षा करवामां आवे, ते हेतुथी आ त्रण विकल्प थाय छे, तथा अवाच्यत्वं ते तेजसत्व, असत्त्व ज्यारे युगपत्[1] एक शब्दथी केहेवानी इछा करियें, त्यारे तेनो वाचक कोईपण शब्द नथी तेथी अवाच्यत्वं, आ चारे विकल्पनुं सकलादेशा एवुं नाम कहियें, का-

१ एक कालावच्छिन्न.

अमे तेमां शु जाणी शकीये ? ते कारणथी सिद्ध करनारु कोइ पण प्र
माण नथी, अने प्रमाण विना अमे मानियें तो प्रेक्षावान् शेना ? व
ली मायावान् पुरुष पोते सर्वज्ञ होता नथी तो पण पोते पोताने जगत्
मां सर्वज्ञ थयेला प्रगट करी दीयेछे इन्द्रजालनी सत्तावीश पीठ छे,
तेमांथी केटलीएक पीठना पाठक पोते पोतानु तीर्थंकरनुं रूप, तेमज
इन्द्र, देवता पूजा करता होय, एम बनावी शके छे, तो पछी देवताओना
आगमन, पूजा देखवाथी सर्वज्ञपणु केम सिद्ध थाय, जेथी श्रीमहावीर
स्वामिने अमे सर्वज्ञ मानियें ? तमारा मतना आचार्य सामंतभद्रस्तु
तिकार पण कहेछे के ॥ श्लोक ॥ देवागमनजोयान, चामरादिविभू
तय ॥ मायाविष्वपि दृश्यते, ह्यतस्त्वमसि नोमहान् ॥ १ ॥ भावार्थ –
देवताओनां आगमन, आकाशमा चालवु, छत्र चामरादि विभूति, आ
सर्वे आडंबर इंद्रजालीआमा पण थई शके छे, ते हेतुथी हे भगवन् ! तु
अमोने महान् स्तुति करवा योग्य नथी वली हे जैन ! तमारा केहेवा
थी महावीरज सर्वज्ञ होय, तो पण आ जे आचारांगादि शास्त्र छे ते
महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे एम केवी रीतें जाणी शकियें ?
शु जाणीयें के कोई धूर्त्ते रचीने महावीरनुं नाम राखी लीधु होय ? कारण
के आ वात इन्द्रियज्ञाननो विषय नथी, अने अतींद्रिय ज्ञाननी सिद्धि
मां कोई पण प्रमाण नथी

वली कदी एम पण हो के आचारांगादि शास्त्र तो महावीर सर्वज्ञ
नांज कथन करेलां छे तो पण श्रीमहावीर स्वामिना कथन करेला शा
स्त्रनो आज अभिप्राय छे, आज अर्थ छे, बीजो अर्थ नहि, एम केम
जाणी शकाय ? कारण के शब्दना अनेक अर्थ छे, ते आ जगत्मां प्रगट
सांभलवामां आवे छे शुं जाणियें आज अक्षरोथी श्रीमहावीर स्वामियें
कोइ अन्यज अर्थ कह्या होय, अने तमारी समजणमा तेज अक्षरोथी
कांई जुदाज अर्थ भासन थता होय ? हवे तेनो निश्चय केवीरीतें थाय
के आ अक्षरोना आज अर्थ भगवानें कह्या छे जो तमे एवी रीतें मा
नी लीधु होय के भगवानना समयमां गौतमादि मुनि हता, तेओए भ
गवानना मुखारविंदथी साक्षात् जे अर्थ श्रवण कर्या हता, तेज अर्थ
आज पर्यंत परंपराथी चाल्या आवे छे, तेज कारणथी आचारांगादि

हुं पण किंचित् मात्र, पूर्वाचार्योनी युक्तियो आ स्थले ज्ञाषाग्रंथमां लखुंछुं.

प्रथम, कालवादी कहे छे के, सर्व वस्तुनो कालज कर्त्ता छे, तेनुं खंरुन लखुं छुं. हे कालवादि ! आ जे काल छे ते शुं १ एक स्वज्ञाव नित्य व्यापी छे ? २ किंवा समयादिरूपथी परिणामी छे ? जो प्रथम पक्ष मानशो तो ते अयुक्त छे, कारण के एवा कालने सिद्ध करनारुं कोईपण प्रमाण नथी. जेवो प्रथम पक्षमां तमे काल मान्यो छे, तेवो काल प्रत्यक्ष प्रमाणथी उपलब्ध थतो नथी, तेमज एवा कालनुं कोइ लिंग पण अविनाज्ञावरूप देखातुं नथी, ते कारणथी अनुमानथी पण सिद्ध थतुं नथी.

पूर्वपक्षः–केवीरीतें अविनाज्ञाव लिंगनो अज्ञाव कहो छो ? कारण के ज्ञरत रामचंद्रादिविषे पूर्वापर व्यवहार देखाय छे, ते पूर्वापर व्यवहार वस्तुरूप मात्र निमित्त नथी; जो वस्तुरूप मात्र निमित्त होय तो वर्तमानकालमां वस्तुरूपना विद्यमानपणाथी तेवो व्यवहार होवो जोइयें. ते कारणथी जेणेकरीने आ ज्ञरत रामादिविषे पूर्वापर व्यवहार छे, ते काल छे, तेवीज रीतें, पूर्वकालयोगी, पूर्वज्ञरतचक्रवर्त्ती, अपरकालयोगी, अपर रामादि.

उत्तरपक्षिनो तर्कः–जो ज्ञरत रामादिविषे पूर्वापर कालना योगथी पूर्वापर व्यवहार छे, तो कालनो पूर्वापर व्यवहार केम सिद्ध थशे ?

पूर्वपक्षिनुं समाधानः–कालनो जे पूर्वापर व्यवहार छे ते अन्य बीजा कालना योगथी छे.

उत्तरपक्षः–जो बीजा कालना योगथी प्रथम कालनो पूर्वापर व्यवहार छे, तो बीजा कालनो पूर्वापर व्यवहार, त्रीजा कालना योगथी थयो, एम करतां करतां अनवस्था दूषणनो प्रसंग आवेछे.

पूर्वपक्षः–ए दूषण अमने लागतुं नथी, कारण के अमे तो ते कालनाज स्वयमेव पूर्वापर विज्ञाग मानिये छियें. बीजा कालादि योगथी मानता नथी. ॥ श्लोक ॥ पूर्वकालादियोगी यः, पूर्वादिव्यपदेशज्ञाक् ॥ पूर्वापरत्वं तस्यापि, स्वरूपादेव नान्यतः ॥ १ ॥ अर्थ–जो पूर्वापर कालना योगी ज्ञरत रामादि छे तो ज्ञरत रामादि पूर्वापर व्यपदेशवाला छे, अने कालना जे पूर्वापर विज्ञाग छे ते स्वतःज छे, परंतु अन्य कालादि योगथी नथी.

उत्तरपक्षः–हे पूर्वपक्षि ! आ तमारुं केहेवुं कंठ लगी मदिरा पीनार

रण के आ चारे सकल वस्तु विषयने ग्रहण करे छे ५ वली जो एक भागमां सत्, अने बीजा भागमां अवाच्य, युगपत् विवक्षा करियें तो सदवाच्यत्व, ६ जो एक भागमां असत् अने बीजा भागमां अवाच्य, तो असदवाच्यत्व, तथा ७ जो एकभागमां सत्य, बीजा भागमां असत्य, त्रीजा भागमां अवाच्य युगपत् कल्पना करियें तो सदसदवाच्यत्व आ साते विकल्पोथी बीजा विकल्प कोई पण नथी जो कदी कोई करी ले तो तेनो ते सातना अंतरमांज समावेश थई जशे, परंतु सातथी अधिक विकल्प कदापि थशे नहि आ साते विकल्पने नवगुणा करे त्यारे त्रेसठ थाय छे, अने १ सत्वं, २ असत्व, ३ सदसत्व, ४ अवाच्यत्व, आ उत्पत्तिना चार विकल्प आविधी होय छे ते त्रेसठमां प्रक्षेप करियें, त्यारे सडसठ मत अज्ञानवादिना थाय छे हवे आ साते विकल्पोना अर्थ लखियें छियें कोण जाणे छे के जीव सत्य छे, आ एक विकल्प जीव सत् छे एम कोईपण जाणतु नथी, कारण के तेने ग्रहण करनारु कोई प्रमाण नथी कदाचित् कोई जाणी पण लहे के जीव सत् छे तो तेथी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थई, कारण के ज्यारे ज्ञान थशे, त्यारे अभिनिवेश, अभिमान, चित्तमलिनता, विवाद, झघडा विगेरे अनेक, लोकोना प्रसंगमां वधी जशे, पछी ज्ञानवान् बहुज कर्म बांधी दीर्घतर संसारी थशे आ प्रमाणे बीजा विकल्पनो पण अर्थ जाणी लेवो इति

हवे विनयवादिनो मत कहियें छियें विनयथी जे प्रवर्त्ते ते वैनयिका आ विनयवादिनां लिंग तेमज शास्त्र नथी तेऊ केवल विनयथीज मोक्ष माने छे विनयवादियोना बत्रीश मत छे ते आ प्रमाणे १ सुर, २ राजा, ३ जाति, ४ ज्ञाति, ५ स्थविर, ६ अधम, ७ माता ८ पिता, आ आठेनो मन, वचन, कायाथी, तेमज देशकालपूर्वक उचित दान दईने विनय करवो आ चार साथे आठ गुणा करता बत्रीश भेद थया इति

ए प्रमाणे सर्वमली त्रणसे त्रेसठ मत थया आ सर्व मतधारी तेमज तेनी प्ररूपणा करनारा, सर्वे कुगुरु छे, कारण के आ सर्वे मतो मिथ्या दृष्टियोना छे सर्व एकांतवादि छे, वली स्याद्वादरूप अमृतस्वादथी रहित छे, तेउनां मानेलां तत्त्व, प्रमाणथी बाधित छे, आ सर्वमतोनु पूर्वाचार्योयें अनेकयुक्तियोथी खंडन करेल छे भव्यजीवोने जाणवा वास्ते,

हुं पण किंचित् मात्र, पूर्वाचार्योनी युक्तियो आ स्थले जाषाग्रंथमां लखुंछुं.

प्रथम, कालवादी कहे छे के, सर्व वस्तुनो कालज कर्त्ता छे, तेनुं खंरुन लखुं छुं. हे कालवादि ! आ जे काल छे ते शुं १ एक स्वजाव नित्य व्यापी छे ? २ किंवा समयादिरूपथी परिणामी छे ? जो प्रथम पक्ष मानशो तो ते अयुक्त छे, कारण के एवा कालने सिद्ध करनारुं कोईपण प्रमाण नथी. जेवो प्रथम पक्षमां तमे काल मान्यो छे, तेवो काल प्रत्यक्ष प्रमाणथी उपलब्ध थतो नथी, तेमज एवा कालनुं कोइ लिंग पण अविनाजावरूप देखातुं नथी, ते कारणथी अनुमानथी पण सिद्ध थतुं नथी.

पूर्वपक्षः—केवीरीतें अविनाजाव लिंगनो अजाव कहो छो ? कारण के जरत रामचंद्रादिविषे पूर्वापर व्यवहार देखाय छे, ते पूर्वापर व्यवहार वस्तुरूप मात्र निमित्त नथी; जो वस्तुरूप मात्र निमित्त होय तो वर्तमानकालमां वस्तुरूपना विद्यमानपणाथी तेवो व्यवहार होवो जोइयें. ते कारणथी जेणेकरीने आ जरत रामादिविषे पूर्वापर व्यवहार छे, ते काल छे, तेवीज रीतें, पूर्वकालयोगी, पूर्वजरतचक्रवर्त्ती, अपरकालयोगी, अपर रामादि.

उत्तरपक्षिनो तर्कः—जो जरत रामादिविषे पूर्वापर कालना योगथी पूर्वापर व्यवहार छे, तो कालनो पूर्वापर व्यवहार केम सिद्ध थशे ?

पूर्वपक्षिनुं समाधानः—कालनो जे पूर्वापर व्यवहार छे ते अन्य बीजा कालना योगथी छे.

उत्तरपक्षः—जो बीजा कालना योगथी प्रथम कालनो पूर्वापर व्यवहार छे, तो बीजा कालनो पूर्वापर व्यवहार, त्रीजा कालना योगथी थयो, एम करतां करतां अनवस्था दूषणनो प्रसंग आवेछे.

पूर्वपक्षः—ए दूषण अमने लागतुं नथी, कारण के अमे तो ते कालनाज स्वयमेव पूर्वापर विजाग मानिये छियें. बीजा कालादि योगथी मानता नथी. ॥ श्लोक ॥ पूर्वकालादियोगी यः, पूर्वादिव्यपदेशजाक् ॥ पूर्वापरत्वं तस्यापि, स्वरूपादेव नान्यतः ॥ १ ॥ अर्थ—जो पूर्वापर कालना योगी जरत रामादि छे तो जरत रामादि पूर्वापर व्यपदेशवाला छे, अने कालना जे पूर्वापर विजाग छे ते स्वतःज छे, परंतु अन्य कालादि योगथी नथी.

उत्तरपक्षः—हे पूर्वपक्षि ! आ तमारुं केहेवुं कंठ लगी मदिरा पीनार

मदिरापानिना प्रलाप जेवुं छे कारण के तमे प्रथम पक्षमां काल एकांत एक नित्य व्यापी मानेल छे, तो हवे केवी रीतें ते कालनो पूर्वापर व्यवहार होय ?

पूर्वपक्षः—सहचारिना संगथी एक वस्तुनो पण पूर्वापर कल्पनामात्र व्यवहार थइ शके छे जेम सहचारि जरतादिना पूर्वापर व्यवहार छे, तेवीज रीतें जरतादि सहचारियोना संगथी कालनो पण कल्पनामात्र पूर्वापर व्यपदेश थाय छे सहचारियोथी व्यपदेश, सर्व तार्किकोना म तमां प्रसिद्ध छे यथा, " मचा क्रोशंतीति " जेम मचा गालो दीयेछे

उत्तरपक्षः—आ पण असमंजस कथन छे कारण के आ कथनमा इत रेतर दोषनो प्रसंग आवे छे ते कहियें छियें सहचारि जरतादिनो का लना योगथी पूर्वापर व्यवहार थयो, अने कालनो पूर्वापर व्यवहार, सहचारि जरतादिना योगथी थयो, जो एक सिद्ध नहि थाय तो बीजु पण सिद्ध नहि थाय उक्तं च ॥ एकस्वव्यापितायां हि, पूर्वादित्वं कथ जवेत् ॥ सहचारिवशात्तच्चे, दन्योन्याश्रयतागम ॥ १ ॥ सहचारिणां हि पूर्वत्वं, पूर्वकालसमागमात् ॥ कालस्य पूर्वादित्व च, सहचार्यदिया गत ॥ २ ॥ प्रागसिद्धावेकस्य, कथमन्यस्य सिद्धिरिति ॥ ते कारणथी प्रथम पक्ष श्रेय नथी

जो बीजो पक्ष मानशो तो ते पण अयुक्त छे कारण के समयादि रूप परिणामी कालविषे काल एकज छे तोपण विचित्रपणुं उपलब्ध थाय छे जुओ एक कालमां मगने रांधतां कोइ रंधाय छे, कोइ रधाता नथी, तथा समकाल एक राजानी नोकरी करतां थकां एक नोकरने अल्प कालमांज नोकरीनु फल मली जाय छे, अने बीजाने बहु काल व्यतीत थया छतां पण तेवुं फल मलतुं नथी, तथा समकालें खेती क रतां छतां एक खेडुतने बहु धान्य उत्पन्न थाय छे, अने बीजाने अल्प थगडेलु तेमज खंडित उत्पन्न थाय छे, तथा समकालें कोडीउंनी मूठी जरीने जमीन उपर नांखियें तो केटलीएक कोडीउं चत्ती पडे छे, अने केटलीएक उधी पडे छे हवे जो कालज एकलु कारण होय तो सर्व मग एकज कालमा रंधाया जोइयें, परंतु तेम थतुं नथी, इत्यादि, ते कारणथी नि केवल कालज जगतनी विचित्रतानो कर्त्ता नथी परंतु

कालादि सामग्रीना मलवाथी कर्म कारण छे, आ सिद्ध पक्ष छे. इति प्रथम कालवादिना मतनुं खंडन.

बीजा ईश्वरवादी अने त्रीजा अद्वैतवादी आ मतोनुं खंडन ईश्वरवादमां लखी आव्या छिये, त्यांथी जाणी लेवुं.

हवे चोथो मत नियतिवादियोनो छे तेनुं खंडन लखियें छियें. नियतिवादी कहे छे के सर्व पदार्थना कर्त्ता नियति छे. जे तत्त्वांतर थाय ते नियति केहेवाय. ते नियति पण ताडन पामती अति जीर्ण वस्त्रनी पेठे विचाररूप ताडनाने नहि सहन करी शकती सेंकडो कटकाने प्राप्त थाय छे. ते कहियें छियें. हे नियतवादि! तमारुं जे नियतिनाम तत्त्वांतर छे ते भावरूप छे के अभावरूप छे? जो कहो के भावरूप छे तो पछी एकरूप छे के अनेकरूप छे? जो कहो के एकरूप छे, तो वली नित्य छे के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो पदार्थोनी उत्पत्ति आदिमां केवीरीतें हेतुरूप छे? कारण के जे नित्य होय छे ते कोइनुं पण कारण थइ शकतुं नथी. कारण के जे नित्य छे ते सर्व कालमां एकरूप होय छे. नित्यनुं लक्षण–"अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावतया नित्यत्वस्य व्यावर्णात्" एवुं छे. जे क्षरे नहि, तेमज उत्पन्न पण न थाय, स्थिर एक स्वभावथी रहे ते नित्य. हवे जो नियति ते नित्यरूपथी जो कार्य उत्पन्न करे तो तो हमेशां तेजरूपथी कार्य उत्पन्न करे, कारण के तेना स्वरूपमां कांइपण विशेष नथी एकज रूप छे, अने हमेशां तेजरूपथी तो कार्य उत्पन्न करती नथी, कारण के कदी एक जातनुं तो कदी बीजी जातनुं कार्य उत्पन्न थतुं देखियें छियें. वली एक बीजी पण वात ए छे के जे बीजा, त्रीजा, आदि क्षणमां नियतिने कार्य करवानुं छे, ते सर्व कार्य प्रथम क्षणमांज उत्पन्न करी लेवुं जोइये, कारण के ते नियतिनो जे नित्य करणस्वभाव बीजा, त्रीजा आदि क्षणमां छे ते स्वभाव प्रथमक्षणमां पण विद्यमान छे. जो प्रथम क्षणमां द्वितीयादि क्षणवर्ती कार्य करवानी शक्ति न होय तो द्वितीयादि क्षणमां पण कार्य न थवुं जोइये. कारण के प्रथम द्वितीयादि क्षणमां कांइ पण विशेष नथी. जो प्रथम द्वितीयादि क्षणमां नियतिना रूपमां परस्पर विशेष मानशो तो तो स्वाभाविक रीतें नियतिना रूपमां अनित्यता आवी जशे. "अताद-

वस्यमनित्यतां भ्रम इति वचनप्रामाण्यात्" जे जेवु होय ते तेवु न रहे ते अनित्य ते वचन प्रमाणथी तेने श्रमे अनित्य कहियें छियें

पूर्वपक्ष –नियति नित्य, विशेष रहितज छे, तो पण ते ते सहकारिनी अपेक्षाथी कार्य उत्पन्न करे छे, अने जे सहकारि छे ते प्रतिनियत देश कालवालां छे, ते कारणथी सहकारिना योगथी कार्य अनुक्रमें थाय छे

उत्तरपक्ष –श्रा पण तमारु केहेवु असमीचीन छे कारण के सहकारि जे छे, ते पण नियतिथीज प्राप्त थाय छे, अने नियति जे छे ते प्रथम क्षणमां पण तेने करनार स्वभाववाली छे, जो द्वितीयादि क्षणमां बीजा स्वभाववाली नियति मानशो तो तो नित्यपणानो नाश थशे ते कारणथी प्रथम क्षणमां सर्व सहकारियोनो संभव होवाथी प्रथम क्षणमाज सर्व कार्य करवानो प्रसंग थयो वली एक बीजी वात छे के सहकारिछंना विद्यमानपणाथी कार्य थयु, अने सहकारिछंना न होवापणाथी कार्य न थयुं, त्यारे तो सहकारिछंज अन्वयव्यतिरेक न्यायथी कारण छे, एम कल्पना करवी जोइयें, परतु नियति कारण थइ नहि,कारण के नियतिमां व्यतिरेकनो असंभव छे उक्त च ॥ श्लोक ॥ हेतुनान्वयपूर्वेण, व्यतिरेकेण सिद्ध्यति ॥ नित्यस्याव्यतिरेकस्य, कुतोहेतुत्वसंभव ॥ १ ॥ हवे जो पूर्वोक्त दूषणोना भयथी अनित्य पक्ष मानशो तो तो ते नियतिनां दरेक क्षणे अन्य अन्य रूप थवाथी नियति बहुरूप थइ गइ अने तमे जे नियति एकरूप मानी हती ते तमारी प्रतिज्ञाने व्याघात थवानो प्रसंग श्राव्यो वली जे पदार्थ क्षणक्षयी होय छे, ते कोइनुं कार्य कारण थइ शकतुं नथी वली एक बीजी पण वात छे के, जो नियति एकरूप होय तो तेनाथी जे कार्य उत्पन्न थाय ते सर्व एकरूपज होवां जोइयें कारण के कारणनो भेद थया विना कार्यमां कदापि भेद थइ शकतो नथी जो तेम थइ जाय तो ते कार्यभेद निर्हेतुकज थवानो, अने हेतुविना कोइ कार्यनो भेद नथी जो नियति अनेकरूप मानशो तो तो ते नियतिथी अन्य अनेकरूपी विशेषण विना नियति नानारूप कदापि नहि थाय जेम के वरसादनुं पाणी, काली, पीली, उखर जमीनना संबध विना अनेकरूप थइ शकतु नथी यदुक्त ॥ "विशेषणं

विना यस्मा, न्न तुल्यानां विशिष्टतेति वचनप्रामाण्यात्" ते कारणथी अवश्य ते नियतिथी अन्य नानारूप विशेषण नियतिना ज्ञेद मानवा जोइयें. ते अनेकरूप विशेषणोनुं होवुं ते शुं ते नियतिथीज थाय छे के कोइ बीजाथी थाय छे ? जो कहो के नियतिथीज थाय छे तो ते नियति स्वतः एकरूप होवाथी ते नियतिथी उत्पन्न थयेला विशेषणोनी अनेक रूपता केवी रीतें थाय ?

जो विचित्र कार्यनी अन्यथा अनुपपत्तिथी नियति पण विचित्ररूपज मानशो, तो नियतिनी विचित्रता बहु विशेषणो विना नहि थाय, ते कारणथी ते नियति विषे विशेष्य अनेक अंगीकार करवा जोइये. हवे ते विशेषणोना जे ज्ञाव छे ते, ते नियतिथीज थाय छे के कोइ बीजाथी? इत्यादि. तेज फरी आव्युं. ते कारणथी अनवस्था दूषण लागेछे.

हवे जो एम कहो के बीजाथी थाय छे, तो ते पक्ष पण अयुक्त छे. कारण के नियति विना बीजा कोइने तमे हेतु मानेला नथी, तेथी आ तमारुं केहेवुं कांई कामनुं नथी. वली एम मानशो के नियति अनेक रूप छे, तो तमारा मतना बे वेरी विकल्प अमे तमारी सन्मुख खडा करिये छियें. जो तमारी नियति अनेकरूपछे तो मूर्त्त छे के अमूर्त्त छे ? जो कहो के मूर्त्त छे तो नामांतरथी कर्मनोज अंगीकार कस्यो. कारण के कर्म पुज्ञलरूप होवाथी मूर्त्तपण छे अने अनेकरूप पण छे. तो तो तमारो अने अमारो एक मत थइ गयो. कारण के अमे जेने कर्म मानियें छियें, तेज कर्मने नामांतरथी तमे नियति मानी लीधी; परंतु वस्तु एकज छे. जो नियतिने अमूर्त्त मानशो तो ते अमूर्त्त होवाथी सुखदुःखनो हेतु थशे नहि. जेम के आकाश अमूर्त्त छे परंतु सुखदुःखनो हेतु नथी. पुज्ञलज मूर्त्त होवाथी सुखदुःखनो हेतु थइ शकेछे. जो तमे एम केहेशो के आकाशपण देशज्ञेदथी सुखदुःखनो हेतु थाय छे. जेम के मारवाड देशमां आकाश दुःखदायक छे, अने बीजा जलवाला देशोमां सुखदायक छे. आ पण तमारुं केहेवुं असत् छे. ते मारवाड आदि देशोमां पण आकाशमां रहेला जे पुज्ञलो छे ते पुज्ञलथीज सुख दुःख थाय छे. जेम के मरुस्थल प्रायः जलथी रहित छे. अने रेती घणीज छे, तेथी रस्ते चालतां पग रेतीथी घसाय छे, जेथी परसेवो बहुज

थाय छे वली उनालामां सूर्यना किरणोथी रेती बहुज तपी जाय छे त्यारे चालतां बहुज संताप थाय छे, अने पाणीपण पुरु पीवाने मलतु नथी, तेथी खोदीने काढतां अनेक प्रयत्न करवा पडे छे ते कारणथी ते देशोमां बहुज दुःख छे, अने सजल देशोमां तेवा कारणो नथी तेथी तेवां दुःख पण नथी, आ हेतुथी पुरुलज सुखदुःखना हेतु छे, परंतु आकाश नथी

जो नियतिने अभावरूप मानशो तो तेपण तमारो पक्ष अयुक्त छे कारण के अभाव जे छे ते तुछरूप छे, शक्तिरहित छे, अने कार्य करवामां समर्थ नथी जुओ के कटक कुंमलादिनो जे अभाव छे ते कटक कुंमल उत्पन्न करवाने समर्थ नथी, अने तेमज देखवामां आवे छे जो कटक कुंमलादिनो अभाव कटक कुंमलादि उत्पन्न करे तो तो जगत्मां कोइ दरिद्रि रहे नहि

पूर्वपक्ष —घटाभाव जे छे ते मृत्पिंड छे, ते माटीना पिंडथी घट उत्पन्न थाय छे, तो पछी अमारा केहेवामां अयुक्तता शी छे? माटीनो पिंड तुछरूप नथी, कारण के ते पोताना स्वरूपथी विद्यमान छे, तो पछी अभाव पदार्थनी उत्पत्तिमां हेतु केम न थइ शके?

उत्तरपक्ष —आ पण तमारो पक्ष असमीचीन छे, कारण के माटीना पिंडनु जे भावस्वरूप छे ते भाव अभावने अरसपरसमा विरोध होवाथी अभाव स्वरूप थइ शकतुं नथी कारण के जो भावरूप छे तो अभाव केम थाय? अने जो अभावरूप छे तो भावरूप केम थाय? जो एम कहो के स्वस्वरूप अपेक्षायें भावरूप छे अने परस्वरूप अपेक्षायें अभाव रूप छे ते वास्ते भाव अभाव बनेनां जुदां निमित्त होवाथी कांइपण दूषण नथी आ केहेवाथी तो माटीनु पिंड, भाव अभावरूप अनेकांतात्मिकरूपें तमने प्राप्त थयु, परंतु आ अनेकांतात्मिकपणु जैनोनाज मतमां शोभे छे कारण के जैनमतवालाज सर्व वस्तुने स्वपरभावादि स्वरूपथी अनेकांतात्मिक माने छे, परंतु ते तमारा सरखा एकांतमदमस्त मतवालाओने शोभतु नथी, जो एम कहो के माटीना पिंडमां जे पररूपनो अभाव छे, ते तो कल्पित छे, अने जे भावरूप छे ते तात्त्विक छे, ते कारणथी अनेकांतात्मिकवाद अमारा मतमा आवतो नथी, तो तो ते माटीना पिंडथी घट केम थशे? कारण के ते मृत्पिंडमां परमार्थथी घ

टना प्रागभावनो अभाव छे. जो प्रागभाव विना पण ते मृत्पिंडथी घट थइ जाय तो तो सूत्रपिंडादिथी पण घट केम न थाय? जेवो मृत्पिंडमां घट प्रागभावनो अभाव छे, तेवोज सूत्रपिंडादिमां पण घट प्रागभावनो अभाव छे. तथा ते मृत्पिंडथी खरशृंग केम थइ जतां नथी? ते कारणथी पूर्वोक्त तमारुं केहेवुं कांइ नहि एवुं छे. तथा तमे जे कह्युं हतुं के जे वस्तु जे अवसरे जेनाथी थाय छे. तेज वस्तु कालांतरें पण तेज अवसरें तेनाथी नियतिरूपथी थती देखाय छे. आ जे तमारूं केहेवुं छे ते वास्तविक छे. कारण के कारणसामग्रीना अनादि नियमोथी कार्य पण तेज अवसरें तेनाथी नियतरूपेंज थाय छे. ज्यारे कारणशक्तिना नियमथी कार्य थइ गयुं, त्यारे प्रमाणपंथनो कुशल कोण एवो प्रेक्षावान् छे के प्रमाणथी बाधित नियतिनो अंगीकार करे इति नियतिखंडनं ॥

हवे पांचमा स्वभाववादिनुं खंडन लखियें छियें. स्वभाववादी एम कहे छे के, आ संसारमां सर्व भाव पदार्थ स्वभावथीज उत्पन्न थाय छे. आ स्वभाववादिउंनो मत नियतिवादना खंडनथीज खंडन थइ गयो. कारण के जे दूषणो नियतिवादिना मतमां कहेलां छे ते सर्व दूषणो प्रायः आ मतमां पण समानज छे. जेम के आ जे तमारो स्वभाव छे ते भावरूप छे के अभावरूप छे? जो कहो के भावरूप छे तो एकरूप छे के अनेकरूप छे? इत्यादि सर्व दूषण नियतिनी जेम केहेवां.

एक बीजी पण वात छे के स्वभाव आत्माना भावने कहे छे. ते स्वभाव कार्यगतहेतु छे के कारणगत हेतु छे? कार्यगत तो नथी, कारण के ज्यारे कार्य थइ जशे, त्यारे कार्यगत स्वभाव थशे, परंतु कार्य थयाविना कार्यगत स्वभाव केम थाय अने जो कार्य थइ गयुं तो तेनो हेतु स्वभाव केम थाय? जे जेनो अलब्ध लाभ संपादन करवामां समर्थ होय ते तेनो हेतु छे, अने कार्य तो निष्पन्न थवाथी आत्मलाभ प्राप्त थयो छे; नहि तो ते स्वभावनेज अभावनो प्रसंग थइ जशे, त्यारे तो ते स्वभाव कार्यनो हेतु केवीरीतें थशे? जो कहो के कारणगत हेतु छे तो ते तो अमने पण संमत छे. ते स्वभाव प्रतिकारण भिन्न छे, तेथीज माटीथी घट थाय छे, परंतु पट थतुं नथी, माटीना पिंडमां पटादि थवानो स्वभाव नथी. तेवीज रीतें तंतुउंथी पटज थाय छे, घटादि थता नथी,

कारण के तंतुओंमा घट थवानो स्वभाव नथी ते कारणथी जे तमे कह्यु हतुं के माटीथी घटज थाय छे, पटादि थता नथी, ते तो सर्व कारण गत स्वभाव मानवाथी सिद्ध थयेलानेज सिद्ध कर्युं छे आ पक्ष अमारा मतने बाधक नथी वली तमे जे कह्युं हतु के मगमां रंधावानो स्वभाव छे, कागडु (कोरडु) मा नथी, इत्यादि तेपण कारणगत स्वभाव अंगीकार करतांज सर्व समीचीन थइ जायछे, जेम के एक कागडु मग छे ते स्वकारणवशथी तेवा रूपवालो थयेल छे, हांडी, इंधन, कालादि सामग्रीनो संयोग छे तो पण रंधातो नथी, अने स्वभाव जे छे ते कारणथी अभेद छे तेथी सर्व वस्तु सकारणज छे आ पक्ष सिद्ध छे इति क्रियावादिना मतनु खंडन

हवे अक्रियावादिओना मतमा जे यदृच्छावादिछे तेओनु एवुं केहेवु छे के वस्तुओना नियमपूर्वक कार्य कारणभाव नथी इत्यादि ते तेमनु केहेवु कार्यकारणना विवेचनवाली बुद्धिना रहितपणाने सूचवे छे कारण के कार्यकारणने प्रतिनियतपणानो संभव छे ते कहियेंछियें शालुक (देडका) थी शालुक उत्पन्न थायछे ते निरंतर शालुकथीज थायछे, परतु गोबर (छाण) थी थता नथी, अने गोबरथी जे शालुक उत्पन्न थायछे, ते निरंतर गोबरथीज उत्पन्न थायछे, परतु शालुकथी थता नथी वली आ बने जातनां देडकाओ शक्तिवर्णादि विचित्र,ताथी तेमजपरस्पर जात्यंतर होवाथी एकरूप पण नथी वली अग्निथी जे अग्नि उत्पन्न थायछे तेपण निरंतर अग्निथीज उत्पन्न थायछे, परतु अरणीना काष्ठथी उत्पन्न थतो नथी, अने अरणीना काष्ठथी जे अग्नि उत्पन्न थायछे ते निरंतर अरणीना काष्ठथीज उत्पन्न थायछे परतु अग्निथी उत्पन्न थतो नथी वली बीजथी केला उत्पन्न थवां इत्यादि अनेक थायतोमां परस्पर भिन्नता होवाथी तेनो खुलासो पण तेजछे वली एक हकीकत बनी छे के जे केला कंदथी उत्पन्न थायछे तेपण परमार्थथी तो बीजथीज थायछे, एटले परपराए तो बीजज कारण छे तेमीज रीत वट आदिनी शाखापण एकदेशथी उत्पन्न थती छता परमार्थथी तो बीजथीज उत्पन्न थायछे विशेष हकीकत बनी छे के शाखाथी जे शाखा उत्पन्न थाय छे ते उत्पन्न थनारी शाखानी हेतु शाखा छे एम लोक व्यवहार मानता नथी, कारण के वटनुं बीजज सर्व शाखा, प्रशाखा

समुदायरूप वडनुं कारण छे एम जगत्मां प्रसिद्ध छे; तेवीज रीतें शाखाना एक ज्ञागथी उत्पन्न थयेल वड, परमार्थथी मूल, ते वडशाखारूपज छे, तेथी ते मूल पण वीजथीज उत्पन्न थयेल मानवुं जोइये ते कारणथी कोइपण स्थलें कार्यकारणजाव व्यजिचारी नथी. इति यदृच्छावादिमतखंडन.

हवे अज्ञानवादिना मतनुं खंडन लखिये छियें. अज्ञानवादी कहेछे के ज्ञान श्रेय नथी, कारण के ज्यारे ज्ञान थायछे, त्यारे परस्पर विवादना योगथी चित्तमां क्लेश थवाना कारणथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थाय छे. इत्यादि. अज्ञानवादिउनुं आ कथन मूर्खतासूचक छे. जुउ के वीजी वात तो दूर रही परंतु प्रथम अमे आपने वे सवाल पुछिये छियें, मुख्य ए छे के ज्ञाननो तमे जे निषेध करोछो ते शुं ज्ञानथी करोछो के अज्ञानथी करोछो? जो कहो के ज्ञानथी करियें छियें, तोपछी केम कही शको के अज्ञान श्रेयछे? आ कथनथी तो ज्ञानज श्रेय थयुं ज्ञानविना अज्ञानने स्थापन करवाने कोइ समर्थ नथी. जो पूर्वोक्त कथन स्वीकारशो तो तमारी प्रतिज्ञाने व्याघातनो प्रसंग आवशे. जो केहेशो के अज्ञानथी निषेध करिये छियें तो तेपण अयुक्त छे, कारण के अज्ञानमां ज्ञानने निषेध करवानुं सामर्थ्य नथी. कारण के अज्ञानमां कोइनेपण सिद्ध करवानी के बाध करवानी शक्ति नथी; ज्यारे अज्ञानमां ज्ञानने निषेध करवानुं सामर्थ्य नथी त्यारे ज्ञानज श्रेयछे एम सिद्ध थयुं, वली तमे कह्युं छे के ज्यारे ज्ञान थायछे त्यारे परस्पर विवादना योगथी चित्त, क्लेशादि जावने प्राप्त करेछे, तेपण आपनुं विना विचारनुं कथन छे. अमे परमार्थथी ज्ञानी तेनेज कहियें छियें के जेनो आत्मा विवेकथी पवित्र होय; अने जे ज्ञानno गर्व न करे, तेमज अल्पज्ञानी थइ कंठ लगी मदिरापान करनारनी जेम उन्मत्त वचनो बोले अने सर्व जगत्ने तृण सदृश माने, ते परमार्थथी अज्ञानीज छे, कारण के तेने ज्ञाननुं फल प्राप्त थयुं नथी. ज्ञाननुं फल तो रागद्वेषादि दूषणोनो त्यागजावछे. ज्यारे तेम थयुं नहि त्यारे परमार्थथी तेनामां ज्ञानज नथी. उक्तं च ॥ तज्ज्ञानमेव न जवति, यस्मिन्नुदिते विजाति रागगणः ॥ तमसः कुतोस्ति शक्ति, र्दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुम् ॥१॥ एवा ज्ञानी विवेकथी पवित्र आत्मावावाला परजीवोने हित करवामां एकांत रसिया होय. एवा ज्ञानी कदापि विवाद करशे, तो पण प-

रजीवोना उपकार वास्तेज विवाद करशे, अने राजा आदि निपुण बुद्धि वाला परीक्षकोनी परिषद् (सभा) माज करशे, अन्यथा करशे नहि तीर्थंकर गणधरादियें एवी रीतें वाद करवाने फरमान करेल छे ज्यारे ते आज्ञा मुजब वाद थशे त्यारे चित्तनी मलिनता, के कर्मनो बंध, के तेथी थती दीर्घतर संसारनी वृद्धि केवी रीतें थशे? ज्ञानवान्नो जे वाद छे ते केवल वादि नरपति आदि परीक्षकोना अज्ञानने दूर करवा वास्तेछे स म्यक्ज्ञान प्रगट थवाथी अत्यत उपकार थायछे ते कारणथी ज्ञानज श्रेय छे

वली अज्ञानवादी कहे छे के तीव्र अध्यवसायथी जे कर्म उत्पन्न था य छे, तेनाथी दारुणविपाक फल थाय छे, ते तो अमे मानियें छियें, परंतु अशुभ अध्यवसायनो हेतु ज्ञान नथी अने अज्ञान तो अशुभ अध्यवसायनो हेतु देखवामां आवे छे फक्त एटली वात छे के ज्ञान विद्यमान छतां कदाचित् कर्मदोषथी अकार्यमां प्रवृत्ति पण थाय तो पण ज्ञानना बलथी क्षणे क्षणे संवेग भावनाथी तीव्र अशुद्ध परिणाम थता नथी, ते तो अनुभवाय छे

जेम कोइ पुरुष राजाआविना दुष्ट फरमानथी विषमिश्रित अन्न, जाणतां छतां पण मनमां भयभीत थइ जमशे, तेवीजरीतें सम्यक्ज्ञानी पण कथंचित् कर्मदोषथी अकार्यपण आचरशे, तो पण संसारनां दुःखो थी तेनु मन भयभीत थशे, परंतु निःशंक थशे नहि अने संसारथी भ यभीत थवुं तेनुज नाम संवेग छे तेथी संवेगवान् तीव्र अशुभ अध्य वसायवाला थता नथी वली तमे जे कह्यु हतुं के अज्ञानज सत्पुरुषोने मोक्ष प्राप्त करवा वास्ते श्रेय छे, परतु ज्ञान श्रेय नथी, ते कथनपण मूढतासूचक छे जेनु नामज अज्ञान छे ते श्रेय केवीरीतें करी शके छे? वली तमे कह्युं हतुं के अमे ज्ञानने मानी पण लहियें, जो ज्ञाननो नि श्चय करवामां कोइ समर्थ होय तो, आ पण मूर्खवचन छे अगर जो के सर्वमतवाला परस्पर भिन्नज ज्ञान अंगीकार करे छे, तो पण जेनु व चन दृष्टेष्टबाधित नथी, तेमज पूर्वापर व्याहृत नथी, तेज सम्यक् रूप जाणवुं तेवुं वचन तो भगवाननुज कहेलु होइ शकेछे तेज प्रमाण छे बीजानु नहि वली कह्यु हतु के बौद्धपण पोताना बुद्ध भगवानने सर्वज्ञ

माने छे, इत्यादि. तेपण असत् छे, कारण के दृष्टेष्टथी तेउनां वचन बाधित छे. तेनुं स्वरूप आगल लखवामां आवशे.

वली तमे कह्युं हतुं के वर्धमानस्वामी नले सर्वज्ञ होय, परंतु ते वर्धमान स्वामिनां कथन करेलां आज आचारांग आदि शास्त्र छे. तेनी केम प्रतीति थाय? आ तमारी शंकानो पण खुलासो थइ गयो, कारण के बीजा कोइनुं एवुं दृष्टेष्टबाधारहित वचन नथी.

वली तमे कह्युं हतुं के, आचारांग आदि शास्त्र जे छे ते वर्धमान स्वामि सर्वज्ञनां कथन करेलां छे तोपण वर्धमान स्वामिना उपदेशनो आज अर्थ छे, अन्य नथी, इत्यादि. तेपण अयुक्त छे. कारण के नगवान्, वीतराग छे, अने जे वीतराग होय छे ते कोइने कपट उपदेश दइ नूलावो खवरावता नथी; कारण के विप्रतारणहेतु[1] जे रागादि दोषनो समूह, ते नगवानमां नथी. वली सर्वज्ञ जे होय छे ते जाणेछे के आ शिष्य विपरीत समज्यो छे अने आ सम्यक् समज्यो छे. तेथी जे विपरीत समज्यो होय तेने मना करे. अने नगवानें गौतमादिने मना करी नथी तेथी सिद्ध थाय छे के गौतमादिए जे जाणेल छे ते सम्यक् जाणेलुं छे. वली जे कह्युं हतुं के गौतमादि छद्मस्थ छे इत्यादि. तेपण असार छे, कारण के छद्मस्थपण उक्त रीतिथी नगवानना उपदेशथीज यथार्थ वक्ता निश्चयें थइ शके छे. तेमज विचित्र अर्थोवाला शब्द पण नगवानेंज कहेल छे. ते शब्द जेवुं जेवुं प्रकरण होय तेवा तेवा अर्थना प्रतिपादक थइ शके छे. ते कारणथी कांइपण तेमां दूषण नथी. कारण के ते ते प्रकरणने अनुसारें तेवो तेवो अर्थ निश्चयपूर्वक थइ शके छे, अने गौतमादिए जे जे स्थलें जे जे शब्दनो जेवो जेवो अर्थ करेल छे, ते नगवानें निषेध करेल नथी, ते उपरथी जणाय छे के गौतमादिए यथार्थ जाणेलुं छे; अने शब्दोना अर्थपण यथार्थज करेला छे. अने जे कांइ गौतमादियें कहेलुं छे तेना अर्थनो पण आचार्योनी अविछिन्न परंपराथी आज पर्यंत तेवोज बोध थाय छे. एम तो नज केहेवुं के आचार्योनी परंपरा अमने प्रमाण नथी? कारण के अविपरीत याने सम्यक् अर्थ कथन करनारी आचार्योनी परंपराने जूठी ठरावववाने कोइ पण समर्थ नथी.

---

१ ठगवाना कारण रूप.

वली एक एवो सवाल ठे के तमारो जे मत ठे ते आगममूल ठे के अनागममूल ठे ? जो कहो के आगममूल ठे तो तो आचार्योनी परंपरा केवी रीतें अप्रामाणिक थइ शके ठे ? आचार्योनी परपरा विना आगमनो अर्थज केवी रीतें जाणी शकाय ? जो कहो के अनागममूल ठे, तो तो उन्मत्तना विचित्र वचननी पेठे प्रामाणिक थशे नहि

पूर्वपक्ष – अगर जो अमारो मत अनागममूल ठे तोपण युक्तिसं युक्त ठे तेथी अमे मानियें ठियें

उत्तरपक्ष – अहो "कुरत स्वदर्शनानुराग " केवो पोताना मतउपर तीव्र राग ठे कारण के आ पूर्वापरविरुद्ध भाषण ते अज्ञान मतनुं दूषण हशे ?

पूर्वपक्ष – केवीरीतें अमारु बोलवुं पूर्वापरविरुद्ध ठे

उत्तरपक्ष – युक्तियो जे होय ठे ते ज्ञानमूलज होय ठे, अने तमे तो अज्ञाननेज श्रेय मानो ठो, तो पठी तमारा मतमां युक्तियो सत्व केवी रीतें होवानो संभव ठे ? तेथी तमे पूर्वापरविरुद्ध अर्थना भाषक ठो, ते कारणथी तमारो मत कांइ पण कामनो नथी इति अज्ञानवादिमतखंडन

हवे विनयवादिना मतनु खंडन लखियेंठियें जे विनयथीज मुक्ति माने ठे तेपण मोक्षथी एकांतवादीज ठे जे मुक्तिमार्गमां प्रवर्त्तनारा ठे ते ठंनो जे विनय करवो, तेज विनय मुक्तिनु अंग ठे

अने " सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गइति वचनात्" मुक्तिमार्ग तो सम्यग् दर्शन, ज्ञान, अने चारित्ररूप ठे, एम तत्त्वार्थ सूत्रनु प्रमाण ठे तेकारणथी ज्ञान आदिनो तथा ज्ञान आदिना आधारभूत बहुश्रुत आदि जे पुरुष ठे, तेठंनो विनय, बहुमान, तथा ज्ञान आदिनी वृद्धि करवी ते परंपराए मुक्तिनुं अंग थइ शके ठे परतु सुर, नृपति आदिनो विनय तो संसारनो हेतु ठे कारण के जे जेनो विनय करे ठे, ते तेना गुणोनु बहुमान करेठे अने सुर, नृपति प्रमुखमां विषयभोग प्रधान गुण ठे ज्यारे तेठंनो विनय कर्यो त्यारे तो विनय करनारें भोगोने बहुमान आप्यु, अने ज्यारे भोगोने बहुमान आप्यु त्यारे दीर्घ संसार मार्गनी प्रवृत्ति करी ते कारणथी एकांत विनयथी जे मुक्ति मानेठे तेपण असत् वादीठे कारण के ज्ञान आदिथी रहित साक्षात् मुक्तिनु अंग नथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रथी रहित पुरुष, केवल पादपतन आदि विनयथी मुक्ति

प्राप्त करी शकतो नथी, परंतु ज्ञानआदिसहित होय तोज प्राप्त करी शकेछे. तेथी ज्ञान आदिज साक्षात् मुक्तिनां अंग थयां, विनय नहि.

पूर्वपक्षः– अमे केम जणियें के ज्ञान आदिज मुक्तिनां अंग छे?

उत्तरपक्षः– आ संसारमां मिथ्यात्व, अज्ञान, अने अविरति, आ त्रणथी आत्माने कर्मवर्गणानो संबंध थाय छे. अने कर्मनो जे क्षय थवो तेज मुक्ति छे. "मुक्तिः कर्मक्षयादिति वचनप्रामाण्यात्" अने कर्मनो क्षय तो त्यारे थशे के ज्यारे कर्मबंधनां कारणोनो उछेद थशे, अने कर्मनां कारण तो मिथ्यात्व आदि उपर बतावेलां त्रण छे. तेथी मिथ्यात्वना प्रतिपक्षि सम्यक्दर्शन, अज्ञानना प्रतिपक्षि सम्यक्ज्ञान, अने अविरतिना प्रतिपक्षी सम्यक् चारित्र, जे छे, तेउनी सेवा करतां थकां ज्यारे ते त्रणे प्रकर्ष नावने प्राप्त थशे, त्यारेज कर्मनां कारणो सर्वथा दूर थशे, अने ज्यारे कारणो दूर थशे, त्यारे निर्मूल कर्मोछेद थवाथी मुक्ति थशे. ते कारणथी ज्ञान आदिज मुक्तिनां अंग छे, परंतु विनय मात्र नथी. अने ज्ञान आदिनो विनय, ते परंपराथी मुक्तिनुं अंग छे, परंतु सक्षात् मुक्तिना हेतु तो ज्ञान आदिज छे- अने जैनशास्त्रमां कइक स्थलें "सर्वकल्याणनाजनं विनयः" एम जे लखेलुं छे ते ज्ञान आदिनी प्रवृत्ति निमित्तें छे. अने जो विनयवादीपण ए प्रमाणे माने तो विनयवादीपण अमारा मतमांज प्रवर्त्ते छे. अने विवादनो अनाव थाय छे. इति विनयवादिमतखंमन. आ समुच्चय (३६३) मतनुं किंचित्मात्रस्वरूप लखेल छे.

हवे नव्यजीवोने शीघ्रबोध थवावास्ते षड्दर्शनोनुं कांइक स्वरूप लखियें छियें. तेमां प्रथम बौद्धदर्शननुं स्वरूप कहियें छियें. बौद्धमतमां गुरुनुं लिंग आ प्रमाणे छे. १ मस्तकमुंडित २ चर्मआसन ३ कमंमलु ४ धातुरक्त वस्त्र, आ तेउनो वेष छे. अने शौचक्रिया अतिशय छे. कोमल शय्यापर सुवुं, सवारमां उठी पेय पीवुं, मध्याह्नकालें नात खावो, दिवसना बीजा नागमां पाणी पीवुं, द्राक्ष, खांड, साकर, खावी अर्धरात्रिमां मरण थाय तो मोक्ष; आ बौद्धोनुं वर्त्तन छे. तथा मनगमतां नोजन करवां, मनगमती शय्यापर सुवुं, आसनपर बेसवुं, स्थानमां रेहेवुं, एवी सुंदर सामग्रीथी मुनि सुंदर ध्यान करी शकेछे, तथा निक्षापात्रमां जे कांइ पडे ते सर्व शुद्ध एम मानी मांसपण खाइ जाय छे, अने ब्र-

ह्मचर्यादि पोतानी क्रियामां बहुज दृढ होय छे आ तेउंनो आचार छे १ धर्म, २ बुद्ध, ३ संघ, आ त्रणने रत्नत्रय कहेछे, अने शासनना विघ्नने नाशकरनारी तारा देवी छे एम माने छे तेमज विपस्यादि सात बौद्ध अवतार, जेउंनी मूर्त्तिउंना कंठमां त्रण त्रण रेखानां चिह्न होय छे, तेउंने भगवान् माने छे, सर्वज्ञ माने छे

वली बुद्ध भगवानने जे जे नामथी वर्णन करे छे ते लखियें छियें, १ बुद्ध, २ सुगत, ३ धर्म्मधातु, ४ त्रिकालवित् ५ जिन, ६ बोधिसत्व, ७ महाबोधी, ८ आर्य, ९ शास्ता, १० तथागत, ११ पंचज्ञान, १२ षडभिज्ञ, १३ दशार्ह, १४ दशभूमिग, १५ चतुर्स्त्रिंशज्जातकज्ञ, १६ दशपारमिताधर, १७ द्वादशाक्ष, १८ दशबल, १९ त्रिकाय, २० श्रीघन, २१ अद्वय २२ समंतभद्र, २३ संगुप्त, २४ दयाकूर्च, २५ विनायक, २६ मारजित्, २७ लोकजित्, २८ मुखजित्, २९ धर्मराज, ३० विज्ञानमात्रक, ३१ महामैत्र, ३२ मुनींद्र आ बत्रीश नाम बुद्ध भगवानना कहेछे वली सात बुद्धपण माने छे १ विपशी, २ शिखी, ३ विश्वभू ४ क्रकुछंद, ५ कांचन, ६ काश्यप, ७ शाक्यसिंह छेल्ला शाक्यसिंह बुद्धनां नाम १ शाकसिंह, २ अर्कबांधव, ३ राहुलसू ४ सर्वार्थसिद्ध, ५ गोतम, ६ मायासुत, ७ शुद्धोदनसुत, ८ देवदत्ताग्रज तथा १ भिक्षु, २ सोगत, ३ शाक्य, ४ शोद्धोदनी, ५ सुगत, ६ तथागत, आ शून्यवादि बौद्धनां नाम छे तथा १ शौद्धादनी, २ धर्मोत्तर, ३ अर्चट, ४ धर्मकीर्त्ति, ५ प्रज्ञाकर, ६ दिग्नाग, ७ रामट इत्यादि तेमना ग्रंथ करनारा गुरु छे तथा १ तर्कभाषा, २ न्यायबिंदु, ३ हेतुबिंदु, ४ अर्चट, ५ तर्ककर्मलशैल, ६ न्यायप्रवेश, ७ ज्ञानपार इत्यादि तेउंनां तर्कशास्त्रोनां नाम छे तथा बौद्धोनी चार शाखा छे १ वैभाषिक, २ सौत्रांतिक ३ योगाचार, ४ माध्यमिक

हवे बौद्धमतनुं स्वरूप लखियें छियें बौद्ध चार वस्तु माने छे १ दुःख, २ समुदाय, ३ मार्ग, ४ निरोध तेमां जे दुःख छे ते पांच स्कंधरूप छे तेना नाम १ ज्ञान स्कंध, २ वेदना स्कंध, ३ संज्ञा स्कंध, ४ संस्कार स्कंध, ५ रूप स्कंध आ पांच विना आत्मा आदि बीजो कोइपण पदार्थ नथी आ पांच स्कंधनो अर्थ, १ रूपविज्ञानं, रसविज्ञानं, इत्यादि निर्विकल्प जे विज्ञान छे, ते ज्ञान स्कंध २ सुखादुःखा, अदुःखसुखा,

आ वेदना स्कंध छे, आ वेदना पूर्वकृत कर्मथी थायछे. ३ सविकल्पक ज्ञान ते संज्ञास्कंध. ४ पुण्य, अपुण्यादि धर्म समुदाय ते संस्कार स्कंध, आ संस्कारना प्रबोधथी पूर्व अनुनवनुं स्मरणादि थाय छे. ५ पृथ्वी, धातु आदि, तेमज रूपादि, आ रूपस्कंध छे. आ पांचेथी न्यारो आत्मादि कोई पदार्थ नथी. आ पांचे स्कंध, सर्व एक क्षणमात्र रहे छे, नित्य नथी, तेम विशेष वखत पण रेहेनारां नथी. आ दुःख तत्वना पांच नेद कह्या.

हवे दुःख तत्वनां कारणनूत समुदाय तत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. आ जगत्मां रागद्वेषनो जे समूह उत्पन्न थाय छे, ते रागद्वेषनो समूह केवो छे ? "आत्मा आत्मीयनावाख्यः" आ हुं छुं आ मारुं छे, एवो जे संबंध, तथा आ परछे, आ परनी वस्तु छे, एवो जे संबंध तेज छे नाम जेनुं, तेनाथी जे राग द्वेषादि उत्पन्न थाय छे, तेनुं नाम समुदाय तत्व छे. आ दुःख अने समुदाय बेज संसारनी प्रवृत्तिना हेतु छे.

आ बंनेना विपक्षीनूत १ मार्ग, २ निरोध, तत्व छे; तेनुं स्वरूप लखियें छियें. " परमनिःकृष्टं कालं क्षणं " क्षणमां जे थाय ते क्षणिक छे. सर्व पदार्थ क्षण मात्र रही नाश पामे छे. आत्मा के कोई सर्वकाल स्थायीनथी. पूर्व क्षणनो नाश थवाथी तेना सरखो उत्तरक्षण उत्पन्न थाय छे. पूर्व ज्ञानमां उत्पन्न थयेली वासना ते उत्तर ज्ञानमां शक्ति छे. अने क्षणोनी परंपरापूर्वक जे मानसी प्रतीति थाय तेनुं नाम मार्ग्ग छे. ते निरोधनुं कारण जाणवुं. हवे निरोध तत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. निरोध एटले मोक्ष. चित्तनी जे निःक्लेश अवस्था तेनुं नाम निरोध छे. नामांतरथी मोक्ष केहेवाय छे. आ दुःखादि चारेने आर्यसत्व कहे छे. अने आ जे चारे तत्व अनंतर कहेल छे ते सौत्रांतिक बौद्धमतनी अपेक्षाथी छे.

हवे जो नेदरहित समुच्चय बौद्धमतनी विवक्षा करियें तो बौद्धमतमां बार पदार्थ छे. तेमां १ श्रोत्र, २ चक्षु, ३ घ्राण, ४ रसन, ५ स्पर्शन, आ पांच इंद्रिय, अने पांच इंद्रियना पांच विषय, तथा १ चित्त, १ शब्दायतन. धर्म जे सुख दुःखादि तेनुं जे आयतन (घर). ते शुं छे. आ सर्व बारतत्वनुं नाम आयतन कहे छे. अने आ बारे आयतन क्षणिक छे. पूर्वोक्त प्रकारें चार आयतन सौत्रांतिक मतनां, अने सामान्य प्रकारें बार आयतन बौद्धमतनां कह्यां. बौद्धमतमां प्रमाण बे छे. एक प्र-

त्यक्ष, बीजु अनुमान आ बे प्रमाणज माने छे इतिसंक्षेपमात्र बौद्धदर्शनं

हवे नैयायिकदर्शन लखियें छियें नैयायिकमतनु बीजुं नाम गौतम मत पण छे आ नैयायिकोना गुरु १ दंड राखे छे, २ मोटी कोपीन पेहेरेछे, ३ कांबली ओढेछे, ४ जटा राखेछे, ५ शरीरें भस्म लगावेछे, ६ नीरस आहार करेछे, ७ खभापर तुंबी राखेछे, ८ प्राय वनमां रहेछे, ९ आतिथ्य कर्ममा तत्पर होय छे, १०कंद मूल, फल खाय छे, ११ केटलाएक स्त्री राखेछे, अने केटलाएक स्त्री राखता नथी,१२ जे स्त्री राखता नथी ते उत्तम गणायछे, १३ पचाग्नि तापेछे,१४ जटामा प्राणलिंग धरे छे,१५ उत्तर सयम अवस्था ज्यारे प्राप्त थाय छे त्यारे नग्न थई परिभ्रमण करेछे, १६ सवारमां दांत, हाथ, पग विगेरे धोई शिवनु ध्यान करेछे, १७ भस्म त्रण त्रण वखत अगने स्पर्श करे छे, १८ भक्तजन तेओने वदना करे, ते " ॐ नम शिवाय कहेछे, १९ गुरुभाईने शिवाय नम एम कहे छे, तेओनु एम पण केहेवुं छे के जे पुरुष शैवी दीक्षा बार वर्ष सुधी पाली पछी ते छोडी दीये, अने दास दासी थई जाय तो पण निर्वाण पद प्राप्त करेछे तेओना देव शकर छे, ते शकर सर्व सृष्टिना संहारकर्त्ता छे

शकरना अढार अवतार माने छे, तेनां नाम लखिये छियें १ नकुलीश, २ कौशिक, ३ गार्ग्य, ४ मैत्र, ५ कौरुष, ६ ईशान, ७ अपरगार्ग्य, ८ कपिलाक्ष, ९ मनुष्यक, १० अपरकुशिक, ११ अत्रि, १२ पिंगलाक्ष, १३ पुष्पक, १४ बृहदाचार्य, १५ अगस्ति, १६ संतान, १७ राशिकर, १८ विद्यागुरु आ अढार तेना तीर्थेशछे तेनी बहुज सेवा करेछे, तेनो पूजन, प्रणिधानविधि तेना शास्त्रथी जाणी लेवो

अक्षपाद मुनि अर्थात् गौतममुनि तेमना गुरुछे तेना मतमां भरट पूजनीय छे, ते कहेछे के, देवतानी सन्मुखरही नमस्कार न करवो नैयायिक मतमा जेवु लिंग, वेष देवादि स्वरूपछे, तेवुज वैशेषिक मतमां पण छे कारणके नैयायिक, वैशेषिक मतनां प्रमाण तथा तत्वोमां थोडोज भेद छे तेवास्ते आ बंने मत सरखाज छे आ बने तपस्वी कहेवाय छे अने तेना शैवादिक चार भेद छे १ शैव, २ पाशुपत, ३ महाव्रतधर ४ कालमुख तेना अवांतर भेद भरट, भक्तलैंगिक, तापसादि छे, भरटादिओने व्रत ग्रहणमां ब्राह्मणादि वर्णोनो नियम नथी, परंतु जेनी शिवविषे भक्ति

होय, ते व्रती भरटादि थायछे, परंतु नैयायिक सदा शिवभक्त होवाथी तेउंनुं नाम शैव केहेवाय छे, अने वैशेषिको पाशुपत केहेवाय छे.

आ नैयायिकोना मतमां १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ शब्द, आ चार प्रमाण छे अने तेउ १ प्रमाण, २ प्रमेय, ३ संशय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत,६सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ए निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंडा, १३ हेत्वाभास, १४ छल, १५ जाति, १६ निग्रहस्थान. आ सोल पदार्थ मानेछे. तेनो विस्तार अतिशय होवाथी अहिंयां करेल नथी. आत्यंतिक दुःखोनो जे वियोग तेने मोक्ष कहेछे. तेना अक्षपाद मुनिकृत न्यायसूत्र, २ वात्स्यायनमुनिकृत भाष्य, ३ उद्योतकर मुनिकृत न्यायवार्तिक, ४ वाचस्पतिकृत तात्पर्यटीका, ५ उदयनकृत तात्पर्यपरिशुद्धि ६ श्रीकंठाभयतिलकोपाध्यायकृत न्यायालंकारवृत्ति, ७ भासर्वज्ञप्रणीत न्यायसार, तेनापर अढार टीका छे, तेमां न्यायभूषण नामनी टीका प्रसिद्ध छे ८ जयंतरचित न्यायकलिका, ए न्यायकुसुमांजलि. आ नैयायिकना तर्कग्रंथछे. इति नैयायिकमतसंक्षेपवर्णन.

हवे वैशेषिकमत पण अत्र लखियें छियें. वैशेषिक मत नैयायिक तुल्य छे, परंतु विशेष एटलो छे के आ मतवाला बे प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान. अने तत्व छ माने छे. १ द्रव्य,२ गुण,३ कर्म,४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय. आ छ भावरूप मानेछे. तेउंनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवुं होय तो वैशेषिक मतना ग्रंथो तथा तपगछाचार्य श्रीगुणरत्नसूरिविरचित, षड्दर्शनसमुच्चय ग्रंथनी टीका जोवी. वैशेषिक मतना तर्कग्रंथ १ श्रीधर आचार्यकृत कंदली ६००० श्लोक. २ वैशेषिक सूत्र ३००० श्लोक, ३ प्रशस्तकरभाष्य ७०० श्लोक, ४ व्योमशिवाचार्यकृत व्योममती टीका ए००० श्लोक, ५ उदयनकृत किरणावली ६००० श्लोक, ६ श्रीवत्स आचार्यकृत लीलावती टीका ५००० श्लोक ७ आत्रेय तंत्र, हाल विछेद गयेलछे. वैशेषिक मतवाला कहेछे के शिवजीए उलूकनुं रूप धरीने कणाद मुनिपासे वैशेषिक मत प्रकाश कर्यो. तेथी तेनुं बीजुं नाम औलुक्य पण छे. इति वैशेषिकमतवर्णन.

हवे सांख्य मत लखियें छियें. सांख्य मतना साधुउंनुं स्वरूप जाणवा माटे प्रथम तो तेमनां लिंगादि लखियें छियें. तेउ त्रिदंडी पण होय छे,

कोपीन पेहेरे छे, धातुरक्त वस्त्र राखे छे, कोई शिरपर शिखा राखे छे, कोई जटा राखे छे, कोई मस्तक पर क्षौरमुंडकरावे छे, मृगचर्मनु आसन राखे छे, ब्राह्मणना घरनुं अन्न खाय छे, कोई पांचज ग्रास खाय छे, बार अक्षरनो जाप करे छे, तेठंना भक्त ज्यारे गुरुने वंदना करेछे त्यारे " ॐ नमो नारायणाय " एम कहे छे, त्यारे गुरु तेठंने " नमो नारा, ए आ- एम कहे छे, अने महाभारतमां जेनु नाम " बीटा " लखेल छे एक बी मुखवस्त्रिका मुखना नि श्वासना निरोध वास्ते राखे छे, जेथी मुखे उत्तम थी जीवहिंसा न थाय ॥ श्लोक ॥ ते प्राणादनुयातेन, श्वासेनैके संयम तव ॥ हन्यंते शतशो ब्रह्म, अणुमात्राक्षरवादिन ॥१॥ सांख्य गुरु धर्मा ना जीवोनी दया वास्ते पाणी गळवा सारु पोतानी पासे गळणुं राखे अने पोताना भक्तोने पाणी गळवा सारु त्रीश आंगल लांबु अने बी आंगल पोहोळु अने जाडु एवु गळणुं राखवानो उपदेश करेछे वळ जे जीव पाणी गळवा पछी निकळे ते तेज पाणीमां पाछा प्रक्षेप करे छे कारण के मीठापाणीना पूरा खारा पाणीमां मरी जाय छे, अने खार पाणीना पूरा मीठा पाणीमां मरी जाय छे तेथी जुदां जुदां पाणी एक ठां करता नथी पाणीना सूक्ष्म एक बिंदुमां जेटला जीव छे ते जीव काया जो भ्रमर समान धनाववामां आवे तो ते जीवो त्रण लोकमां माय नहि आ तेठंनो पाणी गळवानो विचार छे

सांख्य बे प्रकारना छे, एक प्राचीन, बीजा नवीन नवीननु बीजु पातंजलपण छे प्राचीन सांख्य ईश्वरने मानता नथी नवीन सां ईश्वरने माने छे जे निरीश्वर छे ते नारायणने पर माने छे, अने जे आचार्य छे ते विष्णु प्रतिष्ठाकारक चैतन्यप्रमुख शब्दोथी केहे छे सांख्य मतनुं स्वरूप बतावनारा आचार्यनां नाम कपिल, आसुरि पंचशिख, भार्गव, उलूक, ईश्वर, कृष्ण तेठं शास्त्रकर्त्ता छे सांख्यमत ल ला कापिलपण केहेवाय छे तथा कपिलनु परमर्षि एवु बीजु नाम छे, तेथी तेठं पारमर्षा पण केहेवाय छे बनारसमां तेठं संख्याबंध छे मास उपवास पण करे छे ब्राह्मण जे छे ते अर्चिमार्गथी विरुद्ध धूममार्गानु गामी छे, अने सांख्य अर्चिमार्गानुयायी छे, ब्राह्मणोने वेद पर प्यार छे तेथी यज्ञमार्गानुयायी छे, अने सांख्य हिंसाथी पूर्ण, एवा जे वेद ते

नाथी निवर्त्तेला छे. अध्यात्मवादी सांख्य पोताना मतनो महिमा आ प्रमाणे माने छे ॥ श्लोक ॥ हस पिब च खाद मोदं, नित्यं भुंक्ष्व च जो- गान् यथाऽभिकामं ॥ यदि विदितं कपिलमतं, तत् प्राप्स्यसि मोक्षसौ- ख्यमचिरेण ॥ १ ॥ एम माठर शास्त्रना प्रांतमां लखेलुं छे. अर्थः– जो कपिलमत जाण्यो होय तो पछी हसो, खेलो, पीओ, खाओ, सदा रहो, जेवी रुचि थाय तेवा सदा जोग जोगवो तो पण तमने अ- कालमां मुक्ति, सुखें प्राप्त थशे. तेमना बीजा शास्त्रमां पण कह्युं के ॥ श्लोक ॥ पंचविंशतितत्त्वज्ञो, यत्र तत्राश्रमे रतः ॥ शिखी मुंडी जटी वापि, मुच्यते नात्र संशयः ॥ १ ॥ अर्थः– पचवीश तत्त्वने जाण- नार, पछी चाहे ते कोई आश्रममां रहेतो होय, के शिखावालो होय, वा मुंडित होय, के जटा राखे, तो पण ते उपाधिथी मुक्त थाय तेमां संशय नथी.

सांख्य मतमां सर्व सांख्य पचीश तत्त्व माने छे. ज्यारे पुरुष त्रण दुःखथी हणाय छे, त्यारे ते त्रण दुःखने दूर करवा वास्ते तेने जिज्ञासा उत्पन्न थाय छे. ते त्रण दुःखनां नाम १ आध्यात्मिक, २ आधिदैविक, ३ अधिभौतिक; आध्यात्मिक दुःख बे प्रकारनुं छे. १ शारीरिक २ मान- सिक. तेमां वायु, पित्त, श्लेष्म, आ त्रणनी विषमताथी शरीरमां जे अ- तिसारादि रोग थाय छे ते शारीरिक, अने काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, इत्यादि, विषयो जोवाथी जे थाय ते मानसिक. आ बंने आभ्यंतर उपायथी दूर थई शके छे तेथी ते आध्यात्मिक दुःख केहेवाय छे. २ आ धिभौतिक, तथा ३ आधिदैविक, आ बंने बाह्य उपायथी दूरकरी शका- यछे तेमां जे दुःख मनुष्य, पशु, पक्षी, मृग सर्पादि, स्थावरादिना निमित्तथी थाय छे ते आधिभौतिक, अने जे यक्ष, राक्षस, भूतादिना प्रवेशथी, तथा महामारी, अनावृष्टि अतिवृष्टि इत्यादिथी थायछे ते आधिदैविक केहेवायछे. आ त्रण दुःखथी, रज परिणामना भेदथी पीडाईने दुःख दूर करवा वास्ते तत्त्व जाणवानी इछा थाय छे ते पचीश प्रकारनां छे.

प्रथम पचीश तत्त्वोनुं स्वरूप लखियेंछियें. तेमां प्रथम सत्त्वादि गुणोनुं रूप कहियेंछियें. ते त्रण गुण छे. १ सत्त्व गुण, सुखलक्षण, २ रजोगुण दुःखलक्षण, ३ तमोगुण, मोहलक्षण; आ त्रण गुणनां त्रण लिंग छे. १ स-

स्वगुणनु चिह्न प्रसन्नता, २ रजोगुणनुं चिह्न संताप, ३ तमोगुणनु चिह्न दीनपणु हवे १ प्रसाद, २ बुद्धिपाटव, ३ लाघव, ४ प्रश्रय ५ अनभिष्वंग, ६ अद्वेष, ७ प्रीत्यादि, आ सत्वगुणनां कार्यलिंग छे, १ ताप, २ शोष, ३ भेद ४ चलचित्त, ५ स्तम्भ, ६ उद्वेग, आ रजोगुणनां कार्यलिंग छे तथा १ दैन्य, २ मोह, ३ मरण, ४ असादन, ५ बीभत्सा, ६ ज्ञान गौरवादि, ७ आ तमोगुणनां कार्यलिंग छे कार्योथी सत्वादि गुणनो भास थाय छे तथा लोकमां जे कांइ सुख उपलब्ध थाय छे, जेम के १ आर्जव, २ मार्दव, ३ सत्य, ४ शौच, ५ लज्जा, ६ बुद्धि, ७ क्षमा, ८ अनुकंपा, प्रसादादि, आ सर्व सत्त्वगुणनां कार्य छे, तेमज जे कांइ दुःख उत्पन्न थाय छे जेम के १ द्वेष, २ द्रोह, ३ मत्सर ४ निंदावचन, ५ बंधन, तापादिस्थान, आ सर्व रजोगुणनां कार्य छे, तेमज जे कांइ मोह उपलब्ध थाय छे, जेमके १ अज्ञान, २ मद, ३ आलस्य, ४ भय, ५ दैन्य, ६ कृपणता, ७ नास्तिकता, ८ विषाद, ९ उन्माद, स्वप्नादि आ सर्व तमोगुणना कार्य छे आ सत्त्वादि परस्पर उपकारी त्रण गुणोथी सर्व जगत व्याप्त छे, परंतु ऊर्ध्वलोकमां देवताओमां प्रधानपणे सत्वगुण छे, अने अधोलोक तिर्यंच, नरकविषे प्रधानपणे तमोगुण छे, तथा मनुष्यमां प्रधानपणे रजोगुणछे आ त्रणे गुणोनी जे सम अवस्था तेनु नाम प्रकृतिछे ते प्रकृतिनां अपरनाम प्रधान, अव्यक्त एमपण छे प्रकृति नित्यस्वरूप छे " अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावं कूटस्थ नित्यं " आ नित्यनु लक्षण छे तथा आ प्रकृति जे छे, ते अन्वय, असाधारणी, अशब्दा, अस्पर्शा अरसा, अगंधा, अव्यया, केटलेक थाय छे जे मूल सांख्यछे ते दरेक आत्मानी साथ जुदा जुदा प्रधान मानेछे, अने जे नवीन सांख्यछे ते सर्व आत्माओमां एक, नित्य, प्रधान मानेछे प्रकृति अने आत्माना संयोगथी सृष्टि थाय छे, ते कारणथी सृष्टि थवानो क्रम लखियें छियें

ते प्रकृतिथी बुद्धि उत्पन्न थायछे गाय आदि सन्मुख देखायछे, घोडो नथी, तथा आ स्थाणु छे, पुरुष नथी, एवो जे निश्चयरूप अध्यवसाय थाय छे तेनेबुद्धि कहेछे बीजुं तेनु नाम महत्तपण कहेछे ते बुद्धिनां आठ रूप छे १ धर्म, २ ज्ञान, ३ वैराग्य, ४ ऐश्वर्य, आचार सात्त्विक

---

१ सुकुंकाष्ठ

बुद्धिनां रूपछे . तथा १ अधर्म, २ अज्ञान, ३ अवैराग्य, ४ अनैश्वर्य, आचार तामसी बुद्धिरूपछे. ते बुद्धिथी अहंकार उत्पन्न थायछे. ते अहंकारथी सोल गुणनो समूह उत्पन्न थाय छे ते सोल गुण आ छे. १ स्पर्शनं, त्वक्, २ रसनं जिव्हा, ३ घ्राणं, नासिका, ४ चक्षुः, लोचन, ५श्रोत्रं, श्रवण, आ पांचेने बुद्धींद्रिय कहेछे, कारण के आ पांचे पोत पोताना विषयने जाणेछे. तथा पांच कर्मेंद्रियछे. १ पायु, गुदा, २ उपस्थ, पुरुष स्त्रीनुं चिह्न ३ वच, कंठादि आठस्थानथी उच्चाराय ते शब्द, ४ हाथ, ५ पग, आ पांचेथी पांच काम थायछे, १ मलोत्सर्ग, २ संजोग ३ वचन, ४ ग्रहण, ५ चलन, ते कारणथी आ पांचने कर्मेंद्रिय कहेछे. ११ मन, मन ज्यारे बुद्धींद्रियने मलेछे, त्यारे बुद्धींद्रियरूप थइ जायछे; अने कर्मेंद्रियने मलेछे त्यारे कर्मेंद्रियरूप थइ जायछे. आ मन जे छे ते संकल्पवृत्तिछे. तथा अहंकारथी पांच तन्मात्रा जेनी सूक्ष्म संज्ञा छे ते उत्पन्न थायछे. १ रूप तन्मात्रा, ते शुक्लकृष्णादि रूपविशेष, २ रसतन्मात्रा, ते तिक्तादि रस विशेष, ३ गंधतन्मात्रा, ते सुरभ्यादि गंधविशेष, ४ शब्दतन्मात्रा, ते मधुरादि शब्दविशेष, ५ स्पर्शतन्मात्रा, ते मृदुकाठिन्यादि स्पर्शविशेष, आ षोडशक गण छे. हवे पांचतन्मात्राउथी पांचभूत उत्पन्न थायछे, ते कहेछे. १ रूप तन्मात्राथी अग्नि उत्पन्न थायछे, २ रसतन्मात्राथी जल उत्पन्न थायछे, ३ गंध तन्मात्राथी पृथ्वी उत्पन्न थायछे, ४ शब्द तन्मात्राथी आकाश उत्पन्न थायछे ५ स्पर्श तन्मात्राथी वायु उत्पन्न थायछे एम पांच तन्मात्राओथी पंच भूत उत्पन्न थायछे. एम सर्व मली चोवीश तत्व प्रधान निवेदन कर्यां. "अने अकर्त्ता विगुण भोक्ता" एवुं पुरुष तत्व पचीशमुं नित्य चिद्रूप मानेछे. चोवीश तत्व रूप प्रधान. १ प्रकृति- २ महान्, ३ अहंकार ८ पांच ज्ञानेंद्रिय, १३ पांच कर्मेंद्रिय, १४ मन, १९ पांच तन्मात्रा, २४ पांच भूत. एम चोवीश तत्व छे. तेमांथी प्रथम जे प्रकृति छे ते अनुत्पन्न होवाथी बुद्धि आदि सात प्रथमनां कारण छे, अने सोल पाछलनां कार्य छे, तेथी प्रथमनी सात प्रकृति विकृति केहेवाय छे, अने षोडशकगण कार्यरूप होवाथी विकृतिरूपछे; अने पुरुष जे छे ते न प्रकृति, न विकृति छे. नथी कोइथी उत्पन्न थयेल के नथी कोइने उत्पन्न करतो, ते कारणथी तेवो छे. ॥ तथाचेश्वरः कृष्णः

सांख्यसप्ततौ ॥ " मूलप्रकृतिरविकृति, र्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त ॥ पोडशकश्च विकारो, न प्रकृतिर्नविकृति पुरुष इति ॥ अर्थ -ईश्वर कृष्ण, सांख्य मतना आचार्य सांख्यसप्ततिग्रंथमां लखेछे के मूलप्रकृति अविकृति छे महत् आदि सात प्रकृतिविकृति छे, पोडशक विकार वि कृति छे, अने पुरुष न प्रकृति, न विकृतिछे तथा महदादि, प्रकृतिना विकार छे, ते व्यक्त थइने फरी अव्यक्तपण थइ जाय छे ते अनित्यहोवाथी पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थइ जायछे, अने प्रकृति अविकृति रूप होवाथी पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थती नथी तथा महत् आदिनु अने प्रकृतिनु स्वरूप सांख्य मतवाला आ प्रमाणे मानेछे १ हेतुमत्, २ अनित्य, ३ अव्यापक,४ सक्रिय, ५ अनेक, ६ आश्रित, ७ लिंग, ८ सावयव, ९ परतंत्र, १० व्यक्त प्रकृति तेनाथी विपरीत छे १ हेतुमत्, कारण वाला छे, महत् आदि, २ अनित्य, उत्पत्ति धर्मवालाछे, ३ अव्यापक, बुद्धि आदि अव्यापि छे, सर्वगत नथी, ४ सक्रिय, अध्यवसायसंयुक्त वर्तेछे, ते हेतुथी क्रिया सहित, सव्यापार चालवा वालाछे, ५ अनेक, त्रेवीश प्रकारना छे, तेथी, ६ आश्रित आत्माना उपकार वास्ते प्रधानने अवलंबीने रहेछे ७ लिंग, जे जेमांथी उत्पन्न थायछे ते तेमांज लय पामे छे, "लयकृयं गच्छतीति लिंग," पांच भूत, पांच तन्मात्राउंमां लय पामेछे, पाच तन्मात्रा, दश इंद्रिय, अने मन, अहंकारमां लयपामेछे, अहंकार बुद्धिमा लयपामेछे, अने बुद्धि प्रकृतिमां लयपामेछे, प्रकृतिनो कोइमां पण लय थतो नथी ८ सावयव, शब्द रूप, रस, गध, स्पर्शादि संयुक्त छे, ९ परतंत्र, कारणने आधीन होवाथी, १० व्यक्त, तेवीज रीतें महदादि व्यक्त छे; प्रकृति तेनाथी विपरीत, सुगम छे आ अल्पमात्र स्वरूप बतावेल छे, विस्तारथी जाणवु होयतो सांख्य सप्तति आदि शास्त्रो जोवा

हवे पचीशमा पुरुष तत्वनु स्वरूप कहियें छियें पुरुष " अकर्त्ता गुणोभोक्ता, नित्यचिदभ्युपेतश्च ' छे पुरुषतत्व आत्माने कहे छे १ आत्मा, विषय सुखादिनां कारण पुण्यादि करतो नथी तेथी " अकर्त्ता छे, कारण के आत्मा तृणमात्र पण तोडवाने समर्थ नथी, अने कर्त्ता प्रकृति छे, कारण के प्रकृतिमां प्रवृत्तिस्वभाव छे, तथा २ " विगुण " सत्त्वादि गुणरहित छे, कारण के सत्त्वादि प्रकृतिना धर्म छे, तथा ३ " भो

क्ता " आत्मा नोक्ता, नोगवनार छे, नोक्ता पण साक्षात् नथी, परंतु प्रकृतिना विकारनूत उनय मुख दर्पणाकार जे बुद्धि छे, तेमां संक्रमण थयां थकां निर्मल आत्मस्वरूपविषे सुख फुःखोना प्रतिबिंब उदय मात्रथी नोक्ता केहेवाय छे. " बुद्ध्यवसितमर्थं पुरुषश्चेतत " इतिवचनात्॥ जेम जासुस फुलनी समीप रेहेवाना कारणथी स्फटिकमां रक्तादि केहेवामां आवे छे, तेम प्रकृतिना निकट संबंधथी पुरुषपण सुख फुःखोनो नोक्ता केहेवाय छे. सांख्य मतना वादमहार्णवमां पण कहे छे " बुद्धिदर्पणसंक्रांतं, समर्थप्रतिबिंबकं ॥ द्वितीयं दर्पणं कल्पे, पुंसिअध्यारोहति ॥ १ ॥ तदेव नोक्तृत्वमस्य नत्वात्मनोविकारापत्तिरिति ॥ आनो तात्पर्य उपर बतावेल छे.

तथा कपिलनो शिष्य आसुरिपण कहे छे ॥ श्लोक ॥ विवक्तेदृक्परिणतौ, बुद्धौ नोगोऽस्य कथ्यते ॥ प्रतिबिंबोदयः स्वछे, यथा चंद्रमसोंनसि ॥ १ ॥ तथा विंध्यवासी सांख्याचार्य आत्माने तेवीज रीतें नोक्ता कहे छे. पुरुष अविकृत आत्माज छे, स्वनिर्नास अचेतन मन कर्त्ता छे. ते मननी निकटताथी उपाधि स्फटिकवत् देखाय छे; "नित्या या चिच्चेतना तयाऽन्युपेतः" आ केहेवाथी पुरुषज चैतन्यस्वरूप छे. " नतु ज्ञानस्य " परंतु ज्ञान नथी, कारण के ज्ञाननो धर्म बुद्धि छे. तथा पतंजलि पण एमज कहे छे. तथा " पुमान् " आ जे एक वचन छे ते जातिनी अपेक्षाथी छे; परंतु आत्मा अनंत छे, कारण के जन्म मरणादि कारणोना नियम, तथा धर्मादि अनेक प्रवृत्ति देखवामां आवे छे. ते सर्वे अनंत आत्मा सर्वगत तेमज नित्य छे. ॥ उक्तं च ॥ अमूर्त्तिश्चेतनो नोगी, नित्यः सर्वगतोऽक्रियः ॥ अकर्त्ता निर्गुणः सूक्ष्म, आत्मा कापिलदर्शनइति॥

सांख्यमत त्रण प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द. ते मतनुं नाम सांख्य अथवा शांख्य शा वास्ते कहे छे ? तेनो हेतु एवो छे के, संख्या प्रकृति तत्त्व पचीश रूप तेने जे जाणे अथवा नणे. ते सांख्य. तथा जो तालु शकारथी बोलियें तो शांख्य एम केहेवाय. तेउना मतमां शंखध्वनि छे एम वृद्धोनो आम्नाय छे तेथी शांख्य नाम छे. वली शंख नामे कोई आद्य पुरुष थया छे. "तस्यापत्यं पौत्रादिरिति गर्गा

दित्वादय स्त्री प्रत्यये शांख्या पामि इव दर्शनं शांख्य शांख वा " ॥ इति सांख्यमतसंक्षेपवर्णनं

हवे मीमांसकमत लखियें छियें तेनु बीजुं नाम जैमिनीय पण कहे छे आ मतवाला सांख्यमतनी पेठे एकदंडी, त्रिदंडी होय छे, धातुरक्त वस्त्र पहेरे छे मृगचर्मासन पर वेसे छे, कमंडल राखेछे, शिरमुंडित कराववेछे, संन्यासी प्रमुखद्विज आ मतमां होय छे, वेद तेमना गुरु छे, परंतु बीजा कोई वक्ता गुरु नथी ते पोते पोताने संन्यस्त संन्यस्त कहे छे, यज्ञोपवीतने धोईने त्रणवार तेनु जल पीयेछे आ मीमांसक वे प्रकारना छे, एक याज्ञिकादि, ते पूर्वमीमांसक छे, अने बीजा उत्तरमीमांसावादी छे याज्ञिकादि, कुकर्मना तजनार, यजनादि षट्कर्मना करनार, ब्रह्म सूत्रना धारक, गृहस्थाश्रममां स्थित, शूद्रनु अन्नादि तजनार छे, तेना पण वे भेद छे, एक भट्ट, बीजा प्रभाकर, भट्ट छ प्रमाण माने छे, अने प्रभाकर पांच प्रमाण माने छे उत्तरमीमासक वेदान्ति छे, ब्रह्म अद्वैत माने छे " सर्वमेवेदं ब्रह्मेति भाषते " तेपर प्रमाण आपे छे के एक आत्मा सर्वशरीरोमा उपलब्ध थाय छे ॥ श्लोक ॥ एक एवहि भूतात्म भूते भूते व्यवस्थित ॥ एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ १ इति वचनात् ॥ " पुरुष एवेदं सर्वयद्भूत यच्चभाव्यमिति वचनात् ॥ आ त्मामाज लयथवु तेनुं नाम मुक्ति छे बीजी काइ मुक्ति नथी ते मीमांसक द्विजज जेनुनाम भगवत् छे, ते चार प्रकारना छे, १ कुटीचर, २ बहूदक ३ हस, ४ परमहस तेमा १ त्रिदंडी, सशिखा, ब्रह्मसूत्री, गृहत्यागी, यजमान, परिग्रही, एकवार पुत्रना घरमा भोजन करे छे, कुटीमा वसेछ तेने कुटीचर कहेछे, २ तुल्यवेष, पूर्वोक्त विप्रना घरमां नीरस भिक्षा भोजी विष्णुजापपर नदीना तीरपर रहे छे, तेने बहूदक कहे छे, ३ ब्रह्मसूत्र, शिखारहित, कषाय वस्त्र, दंडधारी, गाममां एकरात्रि अने नगरमा त्रण रात्रि रहे छे, अग्नि ज्यारे धूमरहित थाय त्यारे ब्राह्मणना घरमां भोजन करे छे अने तपथी शरीर शोषण करी, देशोमां फरता रहे छे, तेने हंस कहे छे हंसनेज ज्यारे ज्ञान थाय छे, त्यारे चारे वर्णना घरमां भोजन करे छे, पोतानी इच्छायी दंड राखे छे, ईशान दिशा सन्मुख जाय छे जो शक्तिहीन थई जाय तो अनशन ग्रहण करे छ, ४ वेदांत एकध्यायी, ते

परमहंस-केहेवाय छे; आ चारेमां पूर्वथी परस्पर अधिक चारे केवल ब्र-ह्माद्वैतवाद साधवामां व्यसनी छे, इत्यादि आ मततुं स्वरूप छे.

हवे पूर्वमीमांसावादिउनो मत विशेषथी लखियें छियें. जैमिनीय वाला कहे छे के, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी वीतराग, सृष्टिआदिना कर्त्ता, आ पूर्वोक्त विशेषणयुक्त कोइपण देव नथी, के जे देवनुं वचन प्रामाणिक होय, प्रथम तो देवज कोइ वक्ता नथी, के जेनुं कहेलुं वचन प्रमाण थाय. अनुमानथी पुरुष सर्वज्ञ नथी, मनुष्य होवाथी, रथ्यापुरुषवत्.

पूर्वपक्षः- किंकर थई जेनी सुर, असुर सेवा करेछे, तेमज त्रण लोकमां ऐश्वर्यना सूचक, छत्र, चामरादि जेनी विभूति छे, ते सर्वज्ञ केम न होई शके?

उत्तरपक्षः-आ विभूति तो इंद्रजालीआ पण रची शके छे, ते वातना साक्षी जैनमतना सामंतभद्र आचार्य पण छे ॥ श्लोक॥ देवागमनभोयान, चामरादिविभूतयः ॥ मायाविष्वपि दृश्यंते, ह्यतस्त्वमसि नो महान्.

पूर्वपक्षः- जेम अनादि सुवर्णनो मेल, क्षार प्रमुख अग्नि पुटादि क्रियाविशेषथी शोधातां, सुवर्ण सर्वथा निर्मल थई जाय छे, तेम आत्मा पण निरंतर ज्ञानादि अभ्यासथी निर्मल थवाथी तेने सर्वज्ञपणांनो संभव केम न होय? अवश्य होयज.

उत्तरपक्षः-आ तमारुं केहेवुं ठीक नथी; कारण के अभ्यास करवाथी शुद्धिनी तरतमताज थाय छे, परंतु परम प्रकर्ष अवस्था थती नथी, कारण के जे पुरुष चालवानो अभ्यास करे, अर्थात् कूदवानो, छलंग मारवानो, ठेकडो मारवानो अभ्यास करे,ते दशहाथ वीशहाथ कुदी शकशे, परंतु सो योजन कूदवानी शक्ति ते कदापि मेलवी शकशे नहि, अने सर्व लोक कूदी जवानो अभ्यास तो कदापि तेनाथी थइ शकशे नहि. तेवीज रीतें आत्मापण अभ्यासद्वारा सर्वज्ञ थइ शकतो नथी.

पूर्वपक्षः- मनुष्यने सर्वज्ञता भले न होय, परंतु ब्रह्मा विष्णु, महेश्वरादिने तो सर्वज्ञता होय छे, कारण के तेमने तो जगत् ईश्वर माने छे. ते वात कुमारिल पण कहे छे. "दिव्य देह होवाथी" ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तेउने सर्वज्ञता होय , मनुष्यने सर्वज्ञता केवीरीतें होय?

उत्तरपक्षः-जे रागद्वेषमां मग्न छे निग्रह अनुग्रहमां ग्रस्तछे, काम सेवनमां तत्पर छे, एवा लक्षणवाला ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, सर्वज्ञ केवी

रीतें होइ शके छे ? कारण के प्रत्यक्ष प्रमाण तो सर्वज्ञसाधक नथी, कारण के तेतो (इन्द्रियो) वर्तमान वस्तुनेज ग्रहण करेछे, अने अनुमानथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकज प्रवृत्त थइ शके छे, तेमज आगम पण सर्वज्ञनी सिद्धि करनारू कोइ नथी, कारण के आगम सर्वे विवादास्पद छे, वली उपमान पण नथी, कारण के बीजा सर्वज्ञ कोइ होय तो उपमान बने, तेवीज रीतें अर्थापत्तिथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अन्यथा अनुपपद्यमान एवो कोइ पदार्थ नथी, जे होवाथी सर्वज्ञ सिद्ध थाय ज्यारे भावग्राहक पांचे प्रमाणथी सर्वज्ञ सिद्ध न थया, त्यारे सर्वज्ञ अभाव प्रमाणना विषय थया सर्वज्ञ प्रत्यक्षादि गोचरने अतिक्रांत होवाथी, शशशृंगवत् ज्यारे कोइ देव सर्वज्ञ नथी, अने तेवा सर्वज्ञ देवनु कथन करेलु ज्यारे कोइ शास्त्र नथी, त्यारे अतींद्रिय अर्थनुं ज्ञान केम थाय ? एवी मनमां आशंका करीने जेमिनि कहे छे के " तस्मात् " ते कारणथी अतींद्रिय इन्द्रियोना विषयरहित जे, आत्मा, धर्म अधर्म, काल, स्वर्ग, नरक, परमाणु प्रमुख पदार्थो छे, तेउना करतेल आमेलकवत् साक्षात् देखनार कोइ नथी ते हेतुथी नित्य जे वेदवाक्य छे, तेनाथीज यथार्थ तत्त्वनो निश्चय थाय छे कारण के वेद, अपौरुपेय छे, अर्थात् कोइयें रचेला नथी, अनादि नित्य छे, ते वेदवचनोथी अतींद्रिय पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे, परतु कोइ सर्वज्ञना कहेला आगमथी थतुं नथी, कारण के सर्वज्ञ कोइपण पूर्व कालमां थया नथी, वर्त्तमानमां छे नहि, अने भविष्यमां थवाना नथी ॥ यथाहुस्ते ॥ अतींद्रियाणामर्थानां, साक्षात् द्रष्टा न विद्यते ॥ वचनेनहि नित्येन, य पश्यति सपश्यति ॥ १ ॥

प्रश्न —अपौरुपेय वेदना अर्थ केवीरीतें जाणी शकाय ?

उत्तर — अमारी परंपरा जे अव्यवछिन्न छे तेनाथी जाणी शकाय छे, ते कारणथी तथा सर्वज्ञादिनो अभाव होवाथी प्रथम वेदनाज पाठ प्रयत्नथी करवा जोइयें वेद चार छे, १ ऋग्, २ यजुष, ३ साम, ४ अथर्व ए चारनो पाठ करी, पछी धर्मजिज्ञासा करवी जोइये ? धर्म अतींद्रि

१ विवादना स्थानरूप २ बीज प्रकारे ३ उपपन्न नहि (सिद्धन) थयेला ४ हथेलीमां ५ आमलानी पेठ

य छे. वली धर्म छे ते केवो छे ? तथा क्या प्रमाणथी जाणियें ? एवी जे जाणवानी इछा, तेनुं नाम जिज्ञासा छे. ते जिज्ञासा केवी छे ते जिज्ञासा धर्म साधवानो उपाय छे, तेनुं नाम नोदना छे, ते नोदनानां निमित्त बेछे, एक जनक, बीजो ग्राहक छे. अहियां ग्राहक निमित्त जाणवुं. तेनुंज विशेष स्वरूप कहियेंछियें.

श्रेयः साधकद्रव्यादिविषे जीवोने प्रेरियें जेनाथी, ते नोदना, वेद वचननी करेली प्रेरणा छे ॥ इत्यर्थः ॥ धर्म नोदनाथी जणाय छे. ते कारणथी नोदनालक्षण धर्म छे, धर्म अतींद्रिय होवाथी नोदनाथीज जाणियें छियें. प्रत्यक्षादि वीजा कोइ प्रमाणथी जाणी शकातो नथी, कारण के प्रत्यक्षादि विद्यमाननाज उपलंभक छे. अने धर्म कर्त्तव्यतारूप छे अने कर्त्तव्यता त्रणेकाल स्वभाव वाली छे ते कर्त्तव्यतानुं ज्ञान नोदनाज उत्पन्न करी शके छे. आ मीमांसकोनो अभ्युपगम छे.

हवे नोदनानुं व्याख्यान करियें छियें. अग्निहोत्र, सर्व जीवोनी अहिंसा, दानादि क्रिया ते करवावास्ते जे प्रवर्त्तक, प्रेरक वेदोनां वचन छे. तेज नोदना छे. जेम के " अग्निहोत्रं जुहूयात् स्वर्गकामः" एवां जे प्रवर्त्तक वेदवचन छे, ते नोदना जाणवी. यथा ॥ " न हिंस्यात् सर्वभूतानि, तथा नवै हिंस्रो भवेत् " आ वचनोथी प्रेर्यां थकां द्रव्य, गुण, कर्मोथी हवनादिविषे जे प्रवृत्त थवुं, ते धर्म छे, अने आ वेदवचनो प्रेर्यां थकां पण जे न प्रवर्त्ते, अथवा विपरीत प्रवर्त्ते, तेने नरकादि अनिष्टफल थायछे. शाबरभाष्यमां पण एमज कहेल छे.

आ जैमिनीय छ प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द, ४ उपमान, ५ अर्थापत्ति, ६ अभाव. तेउनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवुं होय तो षड्दर्शन समुच्चयनी टीका जोवी. इति संक्षेपथी मीमांसकमत.

आ पांच दर्शन आस्तिक केहेवाय छे, अने छहुं जैनदर्शन छे. तेनुंस्वरूप आगलना परिछेदमां लखवामां आवशे. नास्तिकमत दर्शनमां नथी. "नास्तिकं तु न दर्शनमिति राजशेखरसूरिकृतषड्दर्शनसमुच्चयवचनात्" ॥ तो पण भव्य जीवोने जाणवा वास्ते तेनु कांइक स्वरूप लखियें छियें.

कपाली, भस्म लगावनार, योगी, ब्राह्मणादि, अंत्य जातिना लोक जेउने लोको वाममार्गी कहेछे, तेउ, तथा कौलिक इत्यादि नास्तिक

ठे, तेना मतनुं नाम नास्तिक चार्वाक ठे तेठे जीव, पुण्य पापादि कांई मानता नथी, चार जौतिक देह माने ठे, तेमज सर्वजगत्ने पण चार जौतिक मानेठे

वली केटला एक चार्वाक एक देशी, आकाशने पांचमुं जूत माने ठे पचजूतात्मक जगत् ठे एम कहे ठे जूतोथीज मद्य शक्तिमत् चैतन्य उत्पन्न थाय ठे एम तेउंनो मत ठे पाणीना परपोटानी जेम, शरीर ठे तेज जीव ठे एम तेउंनु मानवु ठें आ मतवाला मद्य, मांस, खायठे, माता, वेहेन, दिकरी आदि जे अगम्यठे, तेउंनी साथे गमन करे ठे ते नास्तिक वामी, दरेक वरसे एक दिवस सर्वे, एकस्थलें एकठा थायठे स्त्रीउंने नम्न करी तेउंनी योनिनी पूजा करेठे, तेमज विषय सेवनपण करेठे इत्यादि, एवां बुरां काम करेठे के आ पुस्तकमां तेनु वर्णन करतां मने शरम लागे ठे तेथी लखेल नथी ते नास्तिक कामसेवन उपरांत वीजो धर्म मानता नथी, मतलब के कामनेज धर्म मानेठे

आ मतनी उत्पत्ति जैनमतना शीलतरंगिणी नामना शास्त्रमां जे प्रमाणे लखेलीठे ते प्रमाणे कहियें ठियें बृहस्पति नामनो एक ब्राह्मण हतो तेनु बीजुं नाम देवव्यास हतु तेने एक वेहेन हती ते बाल्यावस्थामां विधवा थइ हती जेना आश्रयथी पोतानी जींदगी संपूर्ण करे एवुं कोइ तेणीना सासराना घरमां साधन न होतुं, तेथी निराधार थइने पोताना जाइना घरमां आवी रही ते अत्यंत स्वरूपवती तेमज यौवनवती हती, आ समये बृहस्पतिनी पत्नी मृत्यु पामी हती, बृहस्पतिने कामवासनाथी पीडा थावा लागी, तेथी विषयासक्त थवाने लीधे पोतानी वेहेननी साथे विषयसेवन करवानी इछा थइ विधवा वेहेनने प्रार्थना करी के हे वेहेन ? मारी साथे तु विषयसेवन कस्य, त्यारे तेनी वेहेन कहुं के हे जाइ? आ वात उजयलोकविरुद्ध ठे, तेथी केम करी शकु ? कारण के प्रथम तो हु तारी वेहेन छु तेथी जाइनी साथे विषयजोग करुं तो अवश्य हु नरकमां जाउ, अने आ वातजो जगत्मां प्रसिद्ध थाय तो, सर्वलोकने धिक्कार पात्र थाउ एवी वात श्रवण करी बृहस्पतिए पोताना मनमां विचार कस्यो के, ज्यां सुधी तेणीना मनमांथी पाप, तेमज नरकादि दुःखनो जय दूर थशे नहि, त्यांसुधी ते मारी साथे कदापि संजोग

करशे नहि. एवो विचार करी पोते बृहस्पतिसूत्रनी रचना करी. ते सूत्रोथी, पुण्य पाप, स्वर्ग नरकनो अन्नाव सिद्ध करी, पोतानी बेहेनने ते शास्त्र श्रवण करावी प्रतिबोध कस्यो. ते बोधथी तेनी बेहेनें विचार कस्यो के आ शरीर ज्यारे पांचन्नौतिक ठे, अने आ शरीरथी अतिरिक्त एवो आत्मा नामें बीजो कोइ पदार्थ नथी, त्यारे पुण्य पाप, नरक स्वर्ग कांइपण सिद्ध थतुं नथी. तेथी हवे आ मूर्ख लोकोनी शरम राखी मारी यौवन अवस्था शामाटे वृ॰॰ गुमावुं. एम निश्चय करी पोताना न्नाइनी साथे विषय न्नोग करवामां ॰॰यंत लुब्ध थइ गइ. ज्यारे लोकोना जाणवामां आ हकीकतआवी, त्यारे लोको तेउनी बहुज निंदा करवा लाग्या. ते सांन्नली बृहस्पतियें निर्लज्ज थइ लोकोने नास्तिक मतनो उपदेश करवो शरु कर्यो. ते उपदेशथी जे अत्यंतविषयी तथा अज्ञानी हता, तेउ तेना शिष्य थया. केटलोएक काल व्यतीत थयापठी तेना शिष्यो पोताना मतनुं बहुमान करवा वास्ते केहेवा लग्या के, आ अमारो मत देवताउना गुरु जे बृहस्पति नामना आकाशमां ग्रहठे तेमनो प्रवर्त्तावेलो ठे. बृहस्पति करतां बीजो कोइ विशेष बुद्धिमान् नथी, तेथी अमारो मत सत्य ठे. आ बृहस्पतिनी उत्पत्ति अमारा चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामिनी पेहेलां थयेली सिद्ध ठे; कारण के श्रीमहावीर स्वामियें कथन करेला शास्त्रोमां चार्वाक मतनुं निरूपण करेलुं ठे. चार्वाक मतनी उत्पत्ति ए प्रमाणे ठे. तेमनां नाम चार्वाक, लोकायितादि ठे "चर्व अदने चर्वंति, न्नक्षयंति तत्त्वतोनमन्यंते पुण्यपापादिकं परोक्षवस्तुजातमिति चार्वाकाः" मयाकश्यामाकेत्यादि सिद्ध, ठे. उणादिदंडकेन शब्दनिपातनं. लोका निर्विचाराः सामान्यालोकास्तद्वदाचरंति स्मेति लोकायिताः लोकायितकाइत्यपि ॥ बृहस्पतिप्रणीतमतत्त्वेन बार्हस्पत्याश्चेति" चर्व धातु न्नक्षण अर्थमां ठे. चर्वण (न्नक्षण) करे अर्थात् जे पुण्य पापादि परोक्ष वस्तु समूहने न माने ते चार्वाक, मयाक श्यामाक इत्यादि सिद्धठे. श्रीहेमव्याकरणना उणादि दंडक प्रयोगथी निपातथी सिद्धठे. तथा लोक निर्विचारी ठे, सामान्य लोकोनी पेठे जे आचरण कर्या करेठे ते लोकायिता लोकायितका एम पण केहेवाय ठे. तेमज बृहस्पतिनी प्ररूपणाथी ते मतनुं नाम बार्हस्पत्य पण कहेठे.

हवे चार्वाकना मतनु स्वरूप लखियें ठियें नास्तिक एम कहेछे के परलोकमां गमन करनार जीव, चेतनालक्षण कांइ ठे नहि पांच भूतथी जे चेतन उत्पन्न थायठे, ते पण भूतोनो नाश थतां अहींयांज नाश पामी जाय ठे जो जीव परलोकथी आव्यो होय तो परलोकनु ते स्मरण होवुं जोइये, परंतु ते तो थतु नथी, ते कारणथी जीव परलोकथी आव्यो नथी तेमज परलोकमां जानारपण नथी तथा जीवस्थानमां जो देव शब्द स्थापन करियें तो सर्वज्ञादिविशेषणविशिष्ट कोइ देव नथी, तथा मोक्षपण नथी, धर्म अधर्म नथी, पुण्य पाप नथी, पुण्य पापनु जे फल स्वर्ग नरक, तेपण नथी "तथाच तन्मत ॥ एतावानेव लोकोय, यावानिंद्रिय गोचर ॥ भद्रे वृकपदं पश्य, यद्वदन्त्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥ अर्थ —जेटलो प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे,तेटलोज मनुष्यलोकठे कारण के जे पदार्थ इंद्रियोथी ग्रहण थायठे तेज पदार्थछे, ते उपरांत बीजा कोइ पदार्थ नथी ज्यारे लोक शब्दनो उच्चार करियें त्यारे लोकमां जे विद्यमान पदार्थछे तेज ग्रहण करवा, अने जे आ लोकथी पर एवा जीव, पुण्य, पाप, अने तेनां फल स्वर्ग, नरकादि ठे एम मानेछे ते अप्रत्यक्ष होवाथी, असत्यछे जो अप्रत्यक्षपण मानियें तो शशशृंग, वन्ध्यापुत्र आदिपण मानवा जोइयें पांच प्रकारें प्रत्यक्षथी अनुक्रमें १ मृदु कठोरादि वस्तु, २ तिक्त कटु कषायादि द्रव्य, ३ सुरभि दुरभिरूप गंध, ४ भू, भूधर, भुवन, भूरुह, स्तंभ, कुंभ, अंभोरुहादि, नर, पशु, श्वापदादि, स्थावर, जंगम पदार्थोना समूह, ५ विविध, वेणु वीणादिनी ध्वनि, आ पांच विना बीजी कोइपण वस्तुनी प्रतीति थती नथी पांच भूतोथी व्यतिरिक्त नरक, स्वर्गमां गमन करनार एवो जीवज ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध न थयो, त्यारे जीवनां सुख दुःखनां कारण धर्म, अधर्म, अने ते धर्म, अधर्मनि, उत्कृष्ट फल भोगववानी भूमि, स्वर्ग नरक, तथा सर्वथा पुण्य पापनो क्षयथवाथी उत्पन्न थनारू जे मोक्षसुख तेनु जे वर्णन, ते सघलुं वर्णन आकाशमां चित्रामण करवा जेवुंठे कारण के जीवनो नथी कोइयें स्पर्श कर्यो, नथी कोइयें तेनो स्वाद लइने स्वाद चाख्यो, नथी कोइयें तेने सूंघ्यो, नथी कोइयें तेने दीठो, के नथी कोइयें तेने शब्दवत् सांभल्यो, तेम ठतां मूढमति शा वास्ते, जीवने मानीने, स्वर्गादि सुखोनी इच्छाकरी, मस्तक, दाढी, मूठ मुंडावी

अनेक प्रकारनां दुष्कर तप तपी, शीत, आतप, सहन करी फोगट आ शरीरने संकटोमां नाखी मनुष्यजन्म खराब करी रह्याछे ? आ तेमनी समजणनुंज दुःखछे. ॥ तदुक्तं ॥ तपांसि यातनाश्चित्राः, संयमोन्नोग वंचना ॥ अग्निहोत्रादिकं कर्म, बालक्रीडेव लक्ष्यते ॥ १ ॥ यावज्जीवं सुखं जीवेत्, तावद्वैषयिकं सुखं ॥ नस्मीनूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥ अर्थः– सुगम छे, सारांश उपर बताव्यो छे. इत्यादि कारणथी सिद्ध थाय छे के जे इंद्रियगोचर (इंद्रयगम्य प्रत्यक्षछे) तेज तात्विक छे. सारांश बीजां सुख कल्पित छे.

हवे जे परोक्ष, अनुमान, आगम प्रमाण आदिथी जीव, अने पुण्य पाप आदिनुं स्थापन करे छे, तेमज स्थापन करवामां कोई पण रीतें ह-ठता नथी, तेउने प्रतिबोध करवा वास्ते दृष्टांत कहे छे. “ नद्रे वृकपदं पश्येत्यत्रायं संप्रदायः ” कोई पुरुष नास्तिक मतथी, अथवा सत्य अंतःकरणथी पोतानी नार्याने आस्तिक मतविषे दृढ प्रतिज्ञावाली जाणीने पोतानी शास्त्रोक्त युक्तियोथी निरंतर प्रतिबोध करे छे, ज्यारे तेणीने प्र-तिबोध लाग्यो नहि, त्यारे तेना पतियें विचार कर्यो के हवे उपायथी तेणीने प्रतिबोध लागे तेम छे, एम पोताना चित्तमां चिंतवन करीने रा-त्रिना पाछलना पहोरमां ते स्त्रीनी साथे नगरथी बहार निकली, पत्नीने केहेवा लाग्यो, हे वल्लने ! नगरमां वसनारा जे लोको परोक्ष पदार्थोने अनुमान आदि प्रमाणोथी सिद्ध करे छे, अने लोकोमां पोताने बहुश्रुत कहेवरावे छे, तेउनी चतुराई हवे अवलोकन कर. एम कही, नगरना दरवाजाथी चोकसुधी झीणी धूलमां पोताना हाथथी वरुना पंजाना आ-कार पाडीदीधा. प्रातःकालमां ते वरुना पंजा देखीने बहुलोको राजमा-र्गमां एकठा थईगया. तेटलामां बहुश्रुत पण त्यां आवीगया. ते बहुश्रुत लोकोने केहेवा लाग्या के हे नाईयो ! वरुना पगोनी अन्यथा अनुपत्ति-थी, निश्चयें कोईक वरु रात्रिमां वनथी अहींया आव्युं हतुं. आ सांन-ली नास्तिकमति पोतानी पत्नीने ए प्रमाणे केहेनारने बतावी, केहेवा लाग्यो के हे नद्रे ! “ वृकपदं ” (वरुनापंजा) तुं जो. जे पंजाने वरुना पंजा अबहुश्रुत कहे छे. लोकरुढिथी आ लोक बहुश्रुत कहेवरावे छे, परंतु परमार्थथी तेउ महागोछ छे. कारण के तेउ परमार्थ तो कांई जाण-

ता नथी केवल देखा देखी रोलो करवा लागी रह्या छे, परमार्थथी तो तेउनु वचन मानवा योग्य नथी तेवीज रीतें घणा मतवाला धार्मिक, ठग (धूतारा) बीजाउने ठगवामां तत्पर एवा तेउ कांइक अनुमान, आगमादिथी दृढपणें जीवादि पदार्थनी अस्ति सिद्ध करीने जोला लोकने वृथाज स्वर्गादि सुखोनो लोज देखाडी जक्ष्यअजक्ष्य, गम्य अगम्य, हेय उपादेय, आदि संकटोमां नाखे छे घणु मूर्ख लोकोने धार्मिकपणानो व्यामोह उत्पन्न करेछे, तेथी बुद्धिमानोये तेमनां वचन न मानवां जोइये ते सांजली ते स्त्री पोताना पतिनां सर्व वचन मानवा लागी, तेथी तेणे पोतानी पत्नीने जे उपदेश कर्यो ते हवे लखियें छियें

॥ श्लोक ॥ पिब खाद च चारुलोचने, यदतीत वरगात्रि तन्न ते ॥ नहि जीरु गत निवर्त्तते, समुदायमात्रमिद कलेवरं ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ हे सुंदरलोचन वालि ! तु पेय अपेयनी व्यवस्था तजी दइ मदिरापान कर्य, न केवल मदिराज पी, परंतु जक्ष्य अजक्ष्यनी दरकार कर्या विना मांसादि पण खा, तेमज गम्य अगम्यनो विचार दूर करी जोगोने जोगवी पोतानी युवावस्था सफल कर्य यौवनादि जे कांइ व्यतीत थई गयेल छे ते, हे वरगात्रि ! हे प्रधानांगि (उत्तमांगि !) फरी तने मलवाना नथी अत्यत काम राग जणाववा वास्ते बहु संबोधन पद कहेलां छे, तेथी पुनरुक्ति दोष नथी कोइनी आशंका मनमां लाविने बृहस्पति मतवाला कहेछे के पोतानी इच्छाथी जे खान, पान, जोग, विलास करशे, तेउने परलोकमा कष्टपरंपरा पामवा सुलज थशे, अने जे सुकृत करशे तेउने सुख यौवनादि जवांतरमां पामवा सुलज थशे, आ प्रमाणेनी परनी आशंका दूर करवा वास्ते बृहस्पति कहे छे के हे जीरु ! बीजाना केहेवा मात्रथी नरकादि दुःखोनी प्राप्ति नथी आ लोकना यौवनादिथी निवृत्त थवु, अर्थात् आ लोकमां विषयजोगथी यौवननु सुख न जोगवु, अने परलोकमां अमने यौवनादि सुख फरी मलशे, एम परलोकना सुखनी इच्छाथी, तप, चारित्रादि कष्ट क्रिया करीने जे आ लोकना सुखनी उपेक्षा करे छे तेउ महामूढ छे

यदि शुजाशुज कर्मना योगथी आ जीवने अवश्य परलोकमां पण स्वकर्म हेतुक सुखदुःखादि वेदना थशे, एवि आशंका करनारनी शंका

मनमां लाविने बृहस्पति कहे छे के समुदायजूत चारेनो संयोगमात्र ज आ कलेवर (शरीर) छे; परंतु चारे जूतोना संयोगमात्रथी जुदो, बीजो नवांतरमां जावावालो, शुजाशुज कर्मविपाकने जोगववा वालो एवो जीव नामनो कोइ पदार्थ नथी; अने चारे जूतनो जे संयोग छे ते विजलिना प्रकाशनी पेठे क्षणमात्रमां नाश पामी जाय छे. ते कारणथी परलोकनो जय तजी दे. हे हरिणाक्षि ! जेम मन माने तेम खा, पी जोग विलास कस्य.

हवे प्रमेय प्रमाण बंने कहे छे. ॥ श्लोक ॥ पृथ्वी जलं तथा तेजो, वायुर्जूतचतुष्टयं ॥ आधारोजूमिरेतेषां, मानं त्वक्षजमेव हि ॥ १ ॥ अर्थः १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, आ चार जूत छे. आ चारेनी आधार पृथ्वी छे. अने कोई जगाये एवो पण पाठ छे के " चैतन्यजूमि रेतेषां " आ चारेने चैतन्यजूमि कहे छे, आ चारेना एकत्र रसथी चैतन्य उत्पन्न थाय छे. वली आ चार्वाकमतमां, आ चारे जूत, प्रमाणनी जूमिका, प्रमाणनो विषय तात्विक छे. तेमज आ चार्वाकमतमां प्रमाण तो एक प्रत्यक्षज छे.

हवे जूतचतुष्टयथी देहने चेतनता केम प्राप्त थाय छे ? एवी आशंका मनमां लावी कहे छे. ॥ श्लोक ॥ पृथ्व्यादिजूतसंहत्या, तथा देहपरीणतेः ॥ मदशक्तिः सुरांगेज्यो, यद्धत्तद्धच्चिदात्मनि ॥ १ ॥ अर्थः—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, तेउना संयोगथी थयेलो देह परिणाम, ते देहमां,जेम मदिरानां अंगोथी उन्मादशक्ति उत्पन्न थाय छे तेम, चैतन्यशक्ति उत्पन्न थाय छे. परंतु देहथी अन्य जीव पदार्थ कोइ छे नहि. आदि शब्दथी पर्वतादि सर्वपदार्थ चारे जूतोथीज उत्पन्न थाय छे. ते कारणथी दृष्ट सुखनो त्याग न करवो. अने अदृष्टसुख वास्ते प्रवृत्त थवुं, आ तो लोकोनी मोटी मूर्खता छे, तेमज शांतरसमां मग्न थइ मोक्ष सुखनुं वर्णन करेछे ते पण महामूढ छे. कारण के मैथुनसेवनथी बीजो कोइ पण धर्म नथी तेमज कोइ मोक्ष नथी, तेमज सुख नथी. इति चार्वाक मत संक्षेपवर्णन.

पूर्वोक्त मतोनुं जे वर्णन करेल छे, तेउना उपदेशक सर्व कुगुरु छे.कारण के तेउना मत युक्ति प्रमाणथी खंडित थइजाय छे. तेमज तेउ पूर्वापरव्याहत अने विरोधी छे.

पूर्वपक्ष –अहो जैन ! अरिहतनां कहेलां तत्वो उपर तमने अत्यंत राग छे, तेथी तमे पोतानो मत निर्दोष ठरावो छो, अने अमारा मतने पूर्वापरविरोधी कहो छो, परंतु अमारा मतमां काइपण पूर्वापरव्याहत पणु नथी, कारण के अमारो मत तदन निर्दोष छे तेथी अमारा मतमां कलंक देवुं ते अमृतना पुजमां मशीनु (वा माखीनुं अग) बिंदु नाखवा समान छे

उत्तरपक्ष –देवानुप्रियो ! तमे पोत पोताना मतनो पक्षपात छोडी, मध्यस्थपणुं अवलंबन करी, निरभिमानता अगीकार करी, तेमज सुन्दर बुद्धि धारण करी श्रवण करो हुं तमारा मतोमां पूर्वापरव्याहतपणु बतावुं छु प्रथम बौद्ध मतमां पूर्वापरविरोध बताववो शरू करियें छियें

बौद्धमतमां सर्व पदार्थ क्षणभंगुर कहीने पछी आ प्रमाणे कह्यु छे "नाननुकृतान्वयव्यतिरेकं कारणं नाकारणं विषय इति" अर्थ – ज्ञान, अर्थ विद्यमान छतांज उत्पन्न थाय छे, परंतु अर्थ विना थतुं नथी एवीरीतें अनुकृत अन्वय व्यतिरेक अर्थ ज्ञानने छे, अने कारण जेयकी अर्थज्ञान उत्पन्न थाय छे, ते कारणनेज विषय करे छे आ केहेवाथी अर्थने बे क्षण स्थितिवालो कह्यो ते आ प्रमाणे अर्थरूप कारणथी ज्ञान कार्य उत्पन्न थाय छे, अने एकज समयमां कारण, कार्य, उत्पन्न थतां नथी, त्यारे तो ज्ञान पोताना जनक अर्थनेज ग्रहण करे छे "नापर नाकारणं विषय इति वचनात्" ॥ ज्यारे ए प्रमाणे थयु त्यारे तो अर्थने बे समयनी स्थिति स्वाभाविकरीतें थइ गइ अने बौद्धमतमां बे समय स्थितिवालो कोइ पदार्थ नथी एक तो आ पूर्वापरविरोध छे

तथा "नाकारणं विषय इत्युक्त" जे पदार्थ ज्ञाननी उत्पत्तिमां कारण नथी, ते पदार्थने ज्ञान विषयपण करतु नथी एम कह्या छतां फरी योगिप्रत्यक्षज्ञानने अतीत अनागत पदार्थोनु जाणनार कहेल छे, अने अतीत पदार्थ तो नष्ट थइगयेल छे, तथा अनागत पदार्थ उत्पन्न थया थयेल नथी, ते कारणथी अतीत, अनागत पदार्थ ज्ञानना कारण थइ शकता नथी, तो आ कारणने योगिप्रत्यक्षना विषय केहेवां, आ बीजो पूर्वापरविरोध छे

तेवीज रीतें साध्य साधनोनी व्याप्ति, तेमज ग्राह्कव्याप्ति ग्रहण क-

रावनारने, कारणपणाना अन्नावथी त्रिकालगत अर्थने विषय कहेनारने केम पूर्वापर व्याघात थशे नहि ? कारण के कारणनेज प्रमाणनो विषय मानेल छे. ते वास्ते त्रीजो पूर्वापर विरोध छे.

तथा क्षणक्षय अंगीकार करवामां जेनो काल भिन्न भिन्न छे, एवा जे अन्वयव्यतिरेक, तेनी प्रतिपत्तिनो संन्नव थतो नथी, त्यारे तो साध्य साधनोनी त्रिकाल विषयव्याप्तिग्रहणमाननारने पूर्वापर व्याहति केम नहि ? आ चोथो पूर्वापरविरोध छे.

तथा सर्व पदार्थोने क्षणक्षयी मानीने पछी बुद्धे एम कह्युं छे. ॥ श्लोक ॥ इत एकन्वते कल्पे, शक्त्या मे पुरुषोहतः ॥ तेन कर्मविपाकेन, पादे विद्धोस्मि भिक्षवः॥ १ ॥ आ श्लोकमां जन्मांतर विषयमां शब्दनो प्रयोग क्षणक्षयविरुद्ध बोलतां थकां बुद्धने पूर्वापरविरोध केम न केहेवो जोइयें आ पांचमो पूर्वापरविरोध छे.

तथा निरंश सर्व वस्तु छे एम प्रथम कहीने पछी फरी " हिंसाविरतिदानचित्तस्व संवेदनं अरुस्वगतं सद्रूव्य चेतनत्वस्वर्गप्रापण शक्त्यादिकं गृह्णदपि स्वर्गप्रापणशक्त्यादेरंशस्येति सांशतां पश्चाद्रूदतः सौगतस्य कथं पूर्वापरविरुद्धं वचोन स्यात्" ए छहो विरोध छे.

तेवीज रीतें निर्विकल्पक प्रत्यक्ष प्रमाण नीलादि वस्तुउने सर्वप्रकारथी ग्रहण करतां बतां नीलादि अंशविषे निर्णय उत्पन्न करे छे, परंतु नीलादि अर्थगत क्षणक्षय अंशविषय निर्णय उत्पन्न करता नथी, एम सांशताने केहेतां थकां सौगतने पूर्वापरवचनविरोध सुबोधज छे. आ सातमो विरोध छे.

तथा हेतुने त्रण रूपवाला माने छे, अने संशयने बे उल्लेखवाला माने छे तेमज कहे छे, बतां सांश वस्तुने मानता नथी, आ पण आठमो पूर्वापरविरोध छे.

तथा परस्पर नहि मलेला परमाणु निकटसंबंधवाला एकत्र थइने घटादिरूपपणे प्रतिन्नास थायछे, परंतु पोतपोतामां अंगांगीन्नावरूपें कोइपण कार्य आरंन्न करता नथी. आ बौद्धोनो मतछे. तेमां दूषण ए छे के परमाणुउ पोतपोतानामां नहि मली जवाथी घटनो एकन्नाग ज्यारे अमे हाथथी पकडियें त्यारे संपूर्ण घटने नहि रेहेवुं जोइयें. तथा घटने एक न्ना-

गथी उगावता घटनो एक जागज उगवो जोइये, परंतु संपूर्णघट नहि उगवो जोइयें तथा ज्यारे घटने तेनो कांठोप करी अमे खेंचीयें, त्यारे घटनो एकदेशज अमारीपासे आववो जोइए, परंतु संपूर्ण घट न आववो जोइये, अने जलादिधारणरूप घटने अर्थक्रियालक्षण सत्व, अंगीकार करवा थकी सौगतोए परमाणुर्जनु मलवु मानेलछे, अने तेना मतमां परमाणुर्जनु मलवुं छे नहि, ते कारणथी आ नवमो पूर्वापरविरोध छे इत्यादि बौद्धमतमां अनेक पूर्वापरविरोधछे

हवे बौद्धमतनुं थोडु खडन पण लखियें छियें बौद्धोनो एवो मत छे के सर्व पदार्थ नैरात्म्य छे, अर्थात् आत्मस्वरूपें, पोताना स्वरूपथी सदा स्थिर रेहेवावाला नथी, एवी जे जावना, तेनुं नाम नैरात्म्यजावना छे नैरात्म्यजावना रागादि क्लेशोनो नाश करनारी छे जुर्ज ज्यारे नैरात्म्यजावना थशे त्यारे पोताने पोताविषे, तथा पुत्र, जाई, जार्या, आदिविषे पण आत्मीय अजिनिवेश नहि थाय, अर्थात् "आ मारां छे" एवो मोह नहि थाय कारण के जे पोताने उपकारी छे ते आत्मीय छे, अने जे पोताने प्रतिघातक छे ते द्वेष छे ज्यारे आत्माज नथी, परंतु पूर्वापर क्षण तुटेलार्जनु अनुसंधान छे, अने पूर्व पूर्व हेतुथी प्रतिबद्ध ज्ञान क्षण, तेज तेवी रीतें उत्पन्न थाय छे, त्यारे कोण कोनो उपकारक तथा उपघातक छे ? कारण के क्षणो, क्षणमात्र रेहेवाथी परमार्थथी उपकार, अनुपकार करीशकता नथी ते वास्ते तत्ववेदियोने पोताना पुत्रादिमां आत्मीय अजिनिवेश नथी तेमज वेरीयोविषे द्वेष नथी अने लोकोने अनात्मीय पदार्थोमां जे आत्मीय अजिनिवेश छे, ते अतत्त्वमूल होवाथी अनादि वासनाना परिपाकें करेल छे एम जाणवु

प्रश्न —जो परमार्थथी उपकार्युपकारक जाव नथी तो एम केम कहो छो के जगवान् सुगत करुणावडे सर्व जीवोना उपकारवास्ते देशना आपता हवा ? अने क्षणिकपणुं पण जो एकांतज छे तो तो तत्ववेत्ता पण एक क्षणपछी नाश पाम्या, अने तत्ववेत्ता पण जाणता हता के हु जूतकालमा हतो नहि अने जविष्यमा होवानो नथी, तो पछी मोक्षवास्ते शा माटे यत्न करे ?

उत्तर —तमे जे कह्यु ते अमारो अजिप्राय नहि जाणवाथी अयुक्त छे

जगवान् प्राचीन अवस्थाविषे अवस्थित छे, अने सकल जगत्ने राग-द्वेषादिदुःखोथी संकुल जाणतां थकां, केवीरीतें आ सर्व जगत्नुं दुःख माराथी दूर थाय एवी दया उत्पन्न थवाथी नैरात्म्य क्षणिकत्वादि जाणतां छतांपण ते उपकार करवा योग्य जीवोने निःक्लेशक्षण उत्पन्न करवावास्ते स्वप्रजाहितकर राजानीपेठे पोतानी संतति बुद्धिविषे, सकल जगत् साक्षात् करवाने समर्थ एवी पोतानी संततिगत विशिष्टक्षणनी उत्पत्तिवास्ते यत्न आरंज करेछे. कारण के सफल जगत् साक्षात्कार कस्याविना सर्वने अक्षणविधान उपकार करवो अशक्य थाय तेथी समुत्पन्न केवल ज्ञान पूर्वस्थापन कृपाना विशेष संस्कारवशथी जगवान् कृतार्थज छे तोपण देशना देवामां प्रवृत्त थायछे. तेथी ते देशना सांजलीने निर्मल बुद्धिथी नैरात्म्यतत्त्व विचारतां थकां जीवनेजावनाप्रकर्ष विशेषथी वैराग्य उत्पन्न थायछे, तेथी अनुक्रमें मुक्तिलाज थायछे. अने जे आत्माने मानेछे तेने मुक्तिनो संजव नथी, कारण के परमार्थथी आत्मा विद्यमान ते आत्मा स्नेहना वशथी ते आत्माने सुखी थवानी तृष्णा थशे, अने तृष्णाने वश थवाथी सुखनां साधनोविषे ते प्रवृत्त थशे, एम ज्यारे गुणोमां राग करशे, ते रागथी ज्यांसुधी आत्माजिनिवेश रहेशे त्यांसुधी संसार छे. ॥ आह च ॥ श्लोक ॥ ये पश्यंत्यात्मानं, तत्रास्याहमिति शाश्वतः स्नेहः ॥ स्नेहात् सुखेषु तृष्यति, तृष्णा दोषांस्तिरस्कुरुते ॥ १ ॥ गुणदर्शि परितृष्यन्, ममेति तत्साधनान्युपादत्ते ॥ तेनात्माजिनिवेशो, यावत्तावत्ससंसारः ॥ २ ॥ इति बौद्धमत पूर्वपक्ष.

हवे जैनमतनी तरफथी उत्तरपक्षः— आ सर्व कहेवुं तमारा अंतःकरणमां वासकरेला महामोहना विलासनुं सूचक छे. आत्मानो अजाव थतां बंध मोक्षादिनुं एकाधिकरणत्व नहि थाय ते बतावियें छियें.

हे बौद्धो! तमे आत्मा मानता नथी, परंतु पूर्वापर क्षण तूटेलानुं अनुसंधान ज्ञान क्षणोनेज मानोछो. ज्यारे एम मानशो त्यारे बंध अन्यने थयो, अने मुक्ति अन्यनी थइ; क्षुधा अन्यने लागी, तृप्ति अन्यने थइ; अनुजव अन्यने थयो, अने स्मरण अन्यने थयुं; जुलाब अन्यें लीधो, अने रोगरहित अन्य थयो; तपःक्लेश अन्यने थयो, अने स्वर्गादिफल अन्यने प्राप्त थयुं; अन्यासनी प्रवृत्ति अन्यने थइ, अने अन्यासनुं फल

अन्यने थयु, आ सर्व हकीकत अतिप्रसंग होवाथी युक्तियुक्त नथी जो एम कहो के सताननी अपेक्षाथी बध, मोक्षादिनुं एक अधिकरण थइ केछे, तो तेपण ठिक नथी कारण के संतानपण तमारा मतमां थइ शकतां नथी जुओ संतान जे छे ते सतानिथी भिन्नछे के अभिन्नछे? जो कहो के भिन्नछे तो पछी बे विकल्प अमे तमने सोंपियें छियें ते संतान नित्य छे के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो तेने बध मोक्षादिनो संभव नथी, कारण के सर्वकाल एकस्वभाव होवाथी तेनी अवस्था विचित्र थइ शकती नथी अने तमेतो नित्य मानता नथी " सर्वं क्षणिकमिति वचनात्" हवे जो कहो के अनित्य छे तो तो तेज प्राचीन बधमोक्षादि वैय्यधिकरण दूषण प्राप्त थयु जो कहो के अभिन्न छे, तो तो तेनाथी अभिन्न होवाथी तेना स्वरूपनी पेठे संतानिज थया, संतान थया नहि ज्यारे एम थया त्यारे तो तदवस्थज पूर्वनु दूषण छे जो कहो के क्षणथी अन्य संतान कोइ नथी परंतु जे कार्यकारणभाव प्रबंधथी क्षण भावछे, तेज संतान छे, ते वास्ते दोष नथी, आ पण तमारु केहेवु अयुक्त छे, कारण के तमारा मतमां कार्यकारणभावपण घटतो नथी तेज बतावियें छियें प्रतीत्यसमुत्पादमात्र कार्यकारणभाव छे, तेथी यथाविवक्षित घटक्षण अनंतर घटक्षण छे, तेमज पटादिक्षणपण छे, अने जेम घटक्षणथी पेहेला अनतर विवक्षित घटक्षण छे तेमज पटादिक्षणपण छे, त्यारे तो केवीरीतें प्रतिनियत कार्यकारणभावनो अवगम थाय ?

एक बीजुं पण दूषण छे ते ए छे के कारणथी जे कार्य उत्पन्न थाय छे, ते सत् उत्पन्न थाय छे के असत् उत्पन्न थाय छे ? जो कहो के सत् उत्पन्न थाय छे तो कार्योत्पत्तिकालमा पण कारण सत् थयु, त्यारे तो कार्य कारणने समकालतानो प्रसंग थन्यो, अने एककालमां बे पदार्थोना कार्यकारणभाव मान्या नथी, नहि तो माता पुत्रनो व्यवहार पण नशे नहि घटपटादिने पण परस्पर कार्यकारणभावनो प्रसंग थइ जशे जो असत् पक्ष मानशो तो तेपण अयुक्त छे, कारण के जे असत् छे, ते कार्य थइ शकतु नथी नहि तो खरशृंगथीपण कार्य उत्पन्न थवु जोइये वली अत्यंताभाव, प्रध्वंसाभाव, बंने जगाए वस्तुसत्तानो संभव होवाथी, आ बनेनुं काइपण विशेष थयु नहि, जो कहो के प्रध्वंसा

ज्ञावमां वस्तु हती, ते कारणथी हेतु छे, त्यारे तो ज्यारे हती त्यारे हेतु न होतो, अन्यदा हेतु थयो, एम तो वहु सारी तत्वव्यवस्था थइ.

वली एक वीजी वात छे के– तद्भावे ज्ञाव एवा अवगममां कार्य कारणज्ञावनो अवगम छे, ते जो तद्भावे ज्ञाव छे, ते शुं प्रत्यक्षथी प्रतीत थाय छे के अनुमानथी प्रतीत थाय छे? प्रत्यक्षथी तो प्रतीत थतो नथी, कारण के पूर्ववस्तुगत प्रत्यक्षथी पूर्ववस्तु परिछिन्न थइ, अने उत्तर वस्तुगतथी उत्तरवस्तु परिछिन्न थइ, अने आ वंनेनुं अनुसंधान करनार त्रीजुं स्वरूप तो कोइ मानता नथी, ते कारणथी ते अनंतर तेनो ज्ञाव छे, एवो केम अवगम थाय? ते तो तेने पण प्रत्यक्षपूर्वक होवाथी अनुमानथी पण न थाय, अने अनुमान तो लिंगलिंगिसंवंधग्रहणपूर्वक प्रवृत्त थाय छे, अने लिंगलिंगिनो संवंध तो प्रत्यक्षथी ग्राह्य छे, जो अनुमानथी संवंधग्रहण करियें, तो अनवस्था दूषण आवे छे; अने कार्य कारणज्ञावविषे प्रत्यक्ष प्रवृत्त थतुं नथी, ते कारणथी अनुमाननी पण प्रवृत्ति नथी. तेवीजरीतें ज्ञानना वंनेक्षणोना परस्पर कार्यकारणज्ञावनो अवगमपण निषेध थयो जाणवो. त्यांपण स्वसंवेदनथी पोतपोताना रूप ग्रहणमां परस्परस्वरूप अनवधारणथी तदनंतर हुं उत्पन्न थयो छुं, अने हुं तेनो जनक छुं, एवी अवगति नहि होवाथी तमारा मतमां कार्य कारणज्ञाव नथी, तेमज तेनो अवगमपण नथी, तेथी, एक संतति पतित थवाथी वंधमोक्षनुं एकाधिकरण छे, आ केहेवुं तमारुं मृषा छे. आ केहेवाथी जे कहेछे के उपादेय उपादान क्षणोनो परस्पर वास्यवासकज्ञाव होवाथी, उत्तरोत्तर विशिष्ट विशिष्टतर क्षणोत्पत्तिथी मुक्तिनो संज्ञव छे, तेपण उपादेय उपादान ज्ञावना उक्तरीतिथी अनुपपद्यमान होवाथी प्रतिक्षिप्त जाणवां; अने जे वास्यवासकज्ञाव कहेल छे, तेपण तलफूलनीपेठे एककालमां वंने होय त्यारे होइ शके छे. "उक्तं चान्यैरपि" "अवस्थिताहि वास्यंते, ज्ञावाज्ञावैरवस्थितैः" तो केवीरीतें उपादेय उपादान क्षण वंनेने परस्पर असाहित्य होवाथी वास्यवासकज्ञाव होय? उक्तं च ॥ वास्यवासकयोश्चैव, मसाहित्यान्नवासता ॥ पूर्वक्षणैरनुत्पन्नो, वास्यते नोत्तरः क्षणः ॥ १ ॥ उत्तरेण विनष्टत्व, न्न च पूर्वस्य वासना ॥ इति ॥

एक वीजी वात एवी छे के वासना वासकथी ज्ञिन्न छे के अज्ञिन्न छे?

जो कहो के भिन्न छे तो तो ते वासनायें करी शून्य होवाथी अन्यने वस्तु अतरवत् कदापि वासित करशे नहि जो कहो के अभिन्न छे तो तो वा स्यक्षणमा वासनानो संक्रम कदापि थशे नहि तेथी रीतें तेना स्वरूपनी पेठे तेनाथी अभिन्न होवाथी वासकनी पण संक्रांति छे जो कहो के सं क्रांति छे तो अन्वयनो प्रसंग आवशे, तेथी तमारुं केहेवु कोइपण का मनु नथी, अने तमे जे कह्यु हतु के सकलजगत् रागद्वेषादि दुःखसं कुल जाणतां थका सकल जगत्नो दुःखोथी केवीरीतें हु उद्धार करु ? इत्यादि आ पण पूर्वापर असंबंध छे कारण के तमारो क्षणिक मतज पूर्वापर लुटेलो परमार्थथी असत् छे वली क्षणोनुं रेहेवानु कालमान ए क परमाणुना व्यतिक्रममात्र छे ते कारणथी उत्पत्तिथी व्यतिरिक्त तेनी कोइ क्रिया उपपद्यमान थती नथी "भूतिर्येषां क्रियासैव, कारक सैव चोच्यते" इति वचनात् ॥ तेथी ज्ञानक्षणोनुं उत्पत्ति अनंतर गमनथी, अवस्थान नथी, पूर्वापर क्षणोथी अनुगम नथी, ते कारणथी तेउने पर स्परस्वरूप अवधारण नथी, तेमज उत्पत्ति अनतर कोइ व्यापार नथी, तो केवीरीतें मारी सन्मुख आ अर्थ साक्षात् प्रतिभासे छे ? आ प्रकारें अर्थनो निश्चयमात्र करवामा पण अनेकक्षणोनो संभव छे, अनुस्यूत (संतति रूप) थइ उत्पन्न थाय छे अने ते संततिरूपना अभावथी स कल जगत् रागद्वेषादि दुःखसंकुलतानो क्यांथी विचार होय ? अने दीर्घकालना अनुसंधानथी शास्त्रार्थनु चिंतवन पण क्यांथी होय ? जेना प्रभावथी सम्यक् उपाय जाणीने विशेष दयाथी मोक्षवास्ते घटना थाय ?

पूर्वपक्ष – आ जे सर्व व्यवहार छे ते ज्ञानक्षणोनी संततिनी अपे क्षायी छे, पछी तमे शा वास्ते आ पक्षमा दूषण आपो छो ?

उत्तरपक्ष – सुकुमारप्रज्ञोदेवानांप्रिय सदैव सप्तघटिकामध्यमि ष्टान्नभोजनमनोज्ञाशयनीयशयनाभ्यासेन सुखैधितो" परतु वस्तुना य थार्थतत्त्वविचारवामा तमारी बुद्धि कुशल थइ नथी तेथी अमारु केहेवु तमारी समजमां आवतुं नथी कारण के ज्ञानसंततिविषे पण तेज दूषण छे जे अमे उपर कहेल छे तेज यताविये छिये वैकल्पिक तेमज अवै कल्पिक जे ज्ञानक्षण छे, ते परस्पर अनुगमना अभावथी परस्पर स्वरूप जाणती नथी, अने क्षणमात्र उपरात रेहेती नथी, त्यारे हवे केवी रीतें

पूर्वापर अनुसंधानरूप दीर्घकालिक सकल जगत् दुःखिपणानो विचार शास्त्रविचारणरूप आ व्यवहार होय? आंख मीचीने जरा विचारो तो सही? इत्यादि. बौद्धमतनुं खंडन. नंदिसिद्धांत, संमतितर्क, द्वादशारनयचक्र, अनेकांतजयपताका, स्याद्वादरत्नाकर, स्याद्वादरत्नावतारिका प्रमुख अनेक शास्त्रोमां बहु सारीरीतें करेल छे. ते जोइलेवुं. इति बौद्धमतखंडन॥

हवे नैयायिकमतमां पूर्वापर व्याहतपणुं छे ते कांइक लखियें छियें. सत्तायोगथी सत्त्व छे एम कहीने सामान्य, विशेष, समवाय, आ पदार्थोने सत्ताना योग विनाज सत् केहेनारने पूर्वापरवचन व्याहतपणुं केम न थाय?

२ ज्ञान पोते पोताने जाणतुं नथी, पोताने पोताविषे क्रियानो विरोध छे, ते कारणथी; एम कहीने फरी कहेछे के ईश्वरनुं जे ज्ञान छे ते पोते पोताने जाणेछे, अने स्वात्माविषे क्रियाना विरोध मानता नथी, तो हवे केम स्ववचनविरोध न थयो?

३ वली दीपक जे छे ते पोते पोतानो प्रकाश करनार छे, अने अहिंयां स्वात्मविषे क्रियाविरोध मानता नथी, आ पूर्वापर वचन व्याहतछे.

४ बीजाने ठगवावास्ते छल, जाति, निग्रहस्थान, तेउने तत्वरूपपणाथी उपदेश करतां थकां अक्षपादऋषिनुं वैराग्यवर्णन एवुं छे के जेम अंधकारने प्रकाशवालुं केहेवुं तेना सदृश आ केम पूर्वापरव्याहत नहि.

५ आकाशने निरवयवी स्वीकारीने फरी तेनो गुण जे शब्द छे ते एकदेशमां सुणावी आपे छे, सर्वत्र नहि. तेथी तो आकाशने सांशता थइ गइ. आ पूर्वापरव्याहतपणुं छे.

६ सत्ता योगथी सत्त्व छे, अने योग सर्व वस्तुउमां सांशता होवाथी थाय छे, अने सामान्यने निरंश एक माने छे. आ पूर्वापरव्याहत वचन केम नहि?

७ समवाय, नित्य एक स्वज्ञाव माने छे, अने सर्व समवायी पदार्थोनी साथे संबंध नैयत्य (स्वसत्ता)थी थवाथी समवाय, अनेक अनेक स्वज्ञाववालो थइगयो. आथी तो पूर्वापरविरोध थयो.

८ "अर्थवत् प्रमाणं" अर्थ सहकारी छे जेनो ते अर्थवत् प्रमाण, एम कहीने फरी योगिप्रत्यक्षने अतीतादि अर्थ विषय कहेनारने केम

पूर्वापर विरोध न होय ? कारण के अतीतादि जे छे ते विनष्ट, अनुत्पन्न होवाथी सहकारी थइ शकता नथी

९ तथा स्मृति गृहीतग्राहि होवाथी प्रमाण मानता नथी " अनर्थजन्यत्वेन " अर्थ विना होवाथी, तेमज गृहीतग्राही होवाथी प्रमाण नथी, अने धारावाही ज्ञान तो गृहीतग्राही छे, तेने पण अप्रमाणता होवी जोइयें परतु धारावाहि ज्ञानने नैयायिक तेमज वैशेषिक प्रमाण माने छे अने स्मृतिने अनर्थजन्य होवाथी ज्यारे अप्रमाण मानी, त्यारे अतीत अनागत अनुमानपण अनर्थजन्य होवाथी प्रमाण न थयां, अने अनुमानने शब्दनी पेठे त्रिकालविषयक माने छे, कारण के धुमाडाथी वर्त्तमान अग्नि अनुमेय छे, अने मेघोन्नतिथी थवानी वृष्टि, तेमज नदीनुं पूर देखवाथी थयेली वृष्टिनु अनुमान, आ बंने अनर्थजन्य छे, तो पछी धारावाहि ज्ञान, अने अनर्थजन्य अनुमान, आ बनेने तो प्रमाण मानवा, अने स्मृतिने प्रमाण नहि मानवी, आ पूर्वापरविरोध छे

१० ईश्वरनु सर्वार्थविषय प्रत्यक्ष ज्ञान, इन्द्रियार्थसन्निकर्षनिरपे मानोछो ? के इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न मानोछो ? जो एम कहो के इन्द्रियार्थसन्निकर्षनिरपेक्ष मानियें छियें, तो ता " इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमित्यत्र सूत्रे " सन्निकर्षोपादान निरर्थक थशे, कारण के ईश्वरप्रत्यक्षज्ञान सन्निकर्ष विना पण थइ शके छे, जो एम कहो के ईश्वरप्रत्यक्षज्ञान, इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न मानियेंछियें, तो तो ईश्वरना मनने अणुमात्र प्रमाण होवाथी युगपत् सर्वपदार्थोनी साथे संयोग नहि थशे; त्यारे तो ईश्वर ज्यारे एक पदार्थने जाणशे, त्यारे बीजो पदार्थ विद्यमान छतां पण तेने जाणी शकशे नहि, तेथी तो अमारी जेम ईश्वरने सर्वज्ञता कदापि प्राप्त थशे नहि, कारण के सर्व पदार्थोनी युगपत् सन्निकर्ष तो थइ शकतो नथी, जो एम कहो के सर्व अनुक्रमें जाणवाथी सर्वज्ञ छे, तो तो दीर्घकालें सर्वपदार्थोने जाणवा ईश्वरनी जेम अमने पण सर्वज्ञ केहेवा जोइयें वली एक बीजी व छे के, अतीत, अनागत पदार्थ जे छे ते विनष्ट, अनुत्पन्न होवाथी म साथे तेनो सन्निकर्ष थइ शकतो नथी, अने वर्तमान पदार्थनो सन्निकर्ष थाय छे, तथा अतीत अनागत पदार्थ तो ते अवसरे असत् छे, तेथी

हेश्वरनुं ज्ञान केवीरीतें अतीत अनागत अर्थनुं ग्राहक होइ शके? अने तमे तो ईश्वरनुं ज्ञान सर्वार्थग्राहक मानो छो, तेथी पूर्वापरविरोध सहज थइ गयो. तेवीज रीतें योगियोने पण सर्वार्थग्राहक ज्ञाननो दुर्धर विरोध जाणी लेवो.

११ कार्यद्रव्य प्रथम उत्पन्न थवाथी तेनुं रूप पाछलथी उत्पन्न थाय छे, आश्रय विना गुण केवीरीतें उत्पन्न थइशके? एम केहेवा अनंतर कहेछे के कार्यद्रव्यनो विनाश थया पछी तेना रूपनो नाश थाय छे. आ पूर्वापर विरोध छे, कारण के ज्यारे कार्यद्रव्यनो नाश थयो त्यारे आश्रय विना रूप केवीरीतें रही शक्युं?

नैयायिक तेमज वैशेषिक जगत्ना कर्त्ता ईश्वरने माने छे. आ पण तेउनुं एक महामूढतानुं चिह्न छे; कारण के ईश्वर, जगत्ना कर्त्ता कोइपण प्रमाणथी सिद्ध थइ शकता नथी. आ हकीकतनुं बीजा परिछेदमां बहुज विस्तारथी वर्णन करेलुं छे, तो पण भव्य जीवने बोध थवा वास्ते थोडो विस्तार अहियां पण करियें छियें.

केटलाएक कहेछे के, साधुउपर उपकारवास्ते तेमज दुष्टोनो संहार करवावास्ते ईश्वर युगयुगमां अवतार धारण करेछे; तेमज सुगतादि केटलाएक एम कहेछे के, मोक्ष प्राप्त कर्या पछी पोताना तीर्थने क्लेशमां देखीने भगवान् फरी अवतार धारण करेछे. यथा ॥ ज्ञानिनो धर्मतीर्थस्य, कर्त्तारः परमं पदं ॥ गत्वा गछंतिभूयोपि, भवं तीर्थनिकारतइति ॥ १ ॥ जे फरी संसारमां अवतार लहेछे, ते परमार्थथी मोक्षरूप थयाज नथी, कारण के तेनां सर्व कर्म क्षय थयां नथी. जो मोहादि कर्म क्षय थयां, होय तो ते पोताना मतनो तिरस्कार देखीने शावास्ते पीडा पामे? तेमज अवतार धारण करे? जो साधुउना उपकार अर्थे तेमज दुष्टोना संहार वास्ते अवतार लहेछे, एम होय तो तो ते असमर्थ थया, कारण के अवतार लीधा विना ते काम करी शकता नथी, जो करी शकता होत तो, गर्भावासमां शा वास्ते पडे? ते उपरथी साबीत थायछे के तेनां सर्व कर्म क्षय थयां नथी, जो क्षय थयां होत तो कदापि अवतार लेत नहि ॥यदुक्तं॥ दग्धे बीजे यथात्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥ कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति भवांकुरः ॥ १ ॥ उक्तं च श्रीसिद्धसेनदिवाकरपादैरपि ॥ भवाभिगामुकानां,

प्रवलमोहविजृम्भित ॥ श्लोक ॥ दग्धेंधन पुनरुपैति भव प्रमथ्य, निर्वाणमप्यनवधारितभीरनिष्ट ॥ मुक्त स्वय कृततनुश्च परार्थशूर, स्वच्छासन प्रतिहतेष्विह मोहराज्य ॥ १ ॥ इत्यलं विस्तरेण ॥

पूर्वपक्ष —सुगतादि, ईश्वर भले न होय, परतु सृष्टिना कर्त्ता तो महादेव ईश्वर छे, ते केम मानता नथी ?

उत्तरपक्ष —जगत्कर्त्ता ईश्वरनी सिद्धिमा प्रमाणनो अभाव छे, ते कारणथी मानता नथी

पूर्वपक्ष —जगत्कर्त्तानी सिद्धिमां प्रमाण छे पृथिव्यादि कोइ बुद्धिमाननां करेलां छे घटादि जेम कार्यरूप होवाथी, आ हेतु असिद्ध नथी पृथिव्यादि सावयव होवाथी कार्यत्वनी प्रसिद्धि होवाथी, तेमज जुओ पृथिवी, पर्वत, वृक्षादि सर्व सावयव होवाथी घटवत् कार्यरूप छे, वली आ हेतु विरुद्ध पण नथी, निश्चयपूर्वक करेला घटादिविषे कार्यत्वहेतु देखवाथी, वली जेनो कर्त्ता नथी तेनाथी व्यावृत्त होवाथी अनेकांतिक पण नथी, तेमज प्रत्यक्ष आगमपूर्वक अबाधित विषय होवाथी कालात्ययापदिष्ट पण नथी, आ निर्दोष हेतुथी जगत्कर्त्ता ईश्वर सिद्ध थाय छे

उत्तरपक्षः— प्रथम पृथिव्यादि बुद्धिमाननां बनावेलां छे, आ सिद्ध करवा वास्ते कार्यत्वहेतु जे तमे कहोछो, ते हेतु शु सावयवत्व छे ? के प्राग्वत् सकारणसत्ता समवाय छे ? के "कृत" एवा प्रत्ययनो विषयत्व छे ? के विकारित्व छे ? जो एम कहो के सावयवत्वस्वरूप छे, तो आ सावयवपणु शुं अवयवोविषे वर्त्तमानत्व छे ? के अवयवोथी आरभ्यमाणत्व छे ? के प्रदेशत्व छे ? के सावयव एवी बुद्धिविषयत्व छे ?

प्रथम पक्षविषे अवयव सामान्य होवाथी आ हेतु अनेकांतिक छे तथा अवयवोविषे वर्त्तमान पण निरवयव तेमज अकार्य कहे छे, तथा बीजा पक्षमां हेतु साध्य समान छे जेवी रीतें पृथिवी आदिने कार्यत्व साध्य छे, तेवीजरीतें परमाणु आदिने अवयव आरभ्यत्व छे त्रीजा पक्षमां आकाशनी साथे हेतु अनेकांतिक छे, कारण के आकाश प्रदेशवालुं छे, परंतु कार्य नथी चोथा पक्षमां आकाशनी साथे हेतु व्यभि

चारी छे, कारण के जे व्यापक होय छे, ते निरवयव होता नथी, अने जे निरवयव होय छे ते परमाणुवत् व्यापक होता नथी.

तथा प्रागसतः (असत्थी पूर्वे) स्वकारण सत्ता समवाय कार्यत्व पण नथी, कारण के तेनां लक्षणनो अभाव होवाथी तेनुं नित्यपणुं छे. जो तेनुं लक्षण हशे तो तो पृथ्वी आदिना कार्यत्वने पण नित्यतानो प्रसंग आवशे, त्यारे तो बुद्धिमानतुं बनावेल केवीरीतें सिद्ध करशो ? एक बीजुं पण दूषण ए छेके योगियोना सर्व कर्मक्षय थयां थकां पक्षांतपातिविषे अप्रवृत्त होवाथी आ हेतु असिद्ध छे, कारण के सत्ता, स्वकारणसमवाय आ बंनेना अभावथी, योगिप्रत्यक्ष प्रध्वंसाभावरूप थइ जायछे.

तथा "कृतं" एवा प्रत्ययनुं जे विषयत्वछे, ते पण कार्यत्व थइ शकतुं नथी. खनन उत्सेचनादिथी कृतं आकाशं एवां अकार्य आकाशमांपण वर्त्तमान होवाथी अनेकांतिक छे.

तथा विकारत्वने पण कार्यत्वनो अनुषंग छे. सत् वस्तुनो जे अन्यभाव, ते विकारित्व छे, तो तो ईश्वरने पण विकारित्व पणुं छे, अपर बुद्धिमत् हेतुकत्व प्रसंग आववाथी अनवस्था थइ जशे. जो एम कहो के ईश्वर विकारी नथी, तो तो कार्यनुं कारित्वपणुं दुर्घट छे. एवी रीतें कार्यस्वरूपने विचारतां थकां उपपद्यमान होवाथी "कार्यत्वात्" आ हेतु असिद्ध छे. वली एक बीजुं दूषण ए छे के कदी थाय कदी न थाय, तेने लोकमां कार्यत्वनी प्रसिद्धि छे, परंतु आ जगत् तो तमारा महेश्वरनी पेठे सदा सत्य होवाथी तेनुं केवीरीतें कार्यत्व होय?

पूर्वपक्षः– ते जगत्नी अंतर्गत तृणादिने कार्यत्व होवाथी जगत्ने पण कार्यत्व छे.

उत्तरपक्षः– महेश्वर अंतर्गत बुद्धि आदिने तथा परमाणु आदि अंतर्गत पाकज रूपादिने कार्यत्वरूप होवाथी, महेश्वरने तथा परमाणु आदिने कार्यत्वनो अनुषंग थशे, त्यारे तो आ ईश्वरने बुद्धिमत् हेतुकत्व प्रसंगथी अनवस्था दूषण आवेछे, तथा अपसिद्धांतनो अनुषंग थायछे. तथा हे ईश्वरवादि! जेम तेम करी जगत्ने कार्यत्वपणुं भले हो, परंतु कार्यमात्र हेतु तमे अहियां मानेल छे ? के कार्यविशेष हेतु मानेलछे.

जो प्रथमपक्ष मानशो तो तो तेथी बुद्धिमत् कर्तृविशेषसिद्धि नथी, कारण के तेनी साथे व्याप्तिनी सिद्धि नथी, परन्तु कर्तृ सामान्यनी सिद्धि थायछे जो एमज मानशो तो तो हेतु अकिंचित्कर छे साध्यनी विरुद्ध साधवाथी हेतु विरुद्ध छे, ते कारणथी कार्यत्वकृत बुद्धि उत्पादक बुद्धिमत् कर्त्तानी गमक नथी, अने जो सर्व सारूप्यमात्रथी गमकत्व होय तो तो बाष्प आदिने पण अग्नि प्रति गमकत्वनो प्रसंग थशे, अने महेश्वर आत्मत्वपणे सर्वजीव सदृश होवाथी १ संसारिपणानो, २ किंचित्सत्वपणानो, ३ संपूर्ण जगत्ना अकर्तृत्वपणाना अनुमापकनो तेने अनुषंग छे, कारण के तुल्य आक्षेप समाधान होवाथी, ते कारणथी बाष्प तेमज धूम आ बंने कोइ अंशे साम्य पण छे, तोपण कांइक एवुं विशेष छे के जेथी धूम अग्निनो गमक छे, परंतु बाष्पादि नथी तेवीज रीतें पृथ्वी आदिने बीजां कार्योथी पण कांइक विशेष अंगीकार करो

जो बीजो पक्ष मानशो तो हेतु असिद्ध छे, कार्यविशेषना अभावथी अथवा जीर्णकूप प्रासाद आदिनी पेठे अक्रिया देखनारानेपण कृत बुद्धि उत्पादकनो प्रसंग छे, जो एम कहो के समारोपथी प्रसंग थतो नथी, तोपण बने जगाए एक सदृश होवाथी केम थतो नथी? बंने जगाए कर्त्ताने अतींद्रियत्वना अविशेषथी

पूर्वपक्ष – प्रामाणिकने अहियां कृतबुद्धि छे

उत्तरपक्षः– केवीरीतें त्यां तेने कृतत्वनो अवगम होय? अनुमानथी अथवा अनुमानांतरथी आद्य पक्षमां परस्पर आश्रय दूषणछे जुठं सिद्ध विशेषण हेतुथी आ अनुमाननुं उत्थान छे, तेनुं उत्थान थवाथी हेतुना विशेषणनी सिद्धि छे, अने बीजापक्षमां अनुमानांतरने पण सविशेषण हेतुथी उत्थान थशे, त्यांपण अनुमानांतरथी तेनी सिद्धिछे एवी रीतें अनवस्था दूषण आवेछे ते कारणथी कृतबुद्धि उत्पादकस्वरूप विशेषण सिद्धि नथी, त्यारे तो विशेषण असिद्ध हेतु छे

वली जे कहेछे के खातप्रतिपूरित पृथ्वीना दृष्टांतथी कृतकोने आत्मविषें कृतबुद्धि उत्पादकत्वनो अभाव छे, तेपण असत् छे त्यां आकृति घृचागादि सारूप्यने तेना उत्पादकना अभावथी, तेना अनुत्पादकनी उत्पत्तिथी वली एम पण न केहेवुं के पृथ्वी आदिमांपण अकृत्रिम संस्थान

सारूप्यछे, जेनाथी आकृतिमत्त्वबुद्धि उत्पन्न थायछे, तेनेज न मानवाथी अपसिद्धांतनी प्रसक्ति थशे, एवी रीतें कृतबुद्धि उत्पादकत्वरूप विशेषण असिद्ध थवाथी हेतुविशेषण असिद्ध छे, ते सिद्ध थाउं तोपण आ हेतु घटादिनी पेठे शरीरादिविशेषनेज बुद्धिमत्कर्त्ताने अहियां साधवाथी हेतुविरुद्ध छे.

प्रश्नः– एवीरीतें दृष्टांत दार्ष्टांतिक साम्य अन्वेषणमां सर्व जगाए हेतुउंनी अनुपपत्ति थशे.

उत्तरः– एम नथी, धूमादि अनुमानथी महानसथी वीजा साधारण अग्निनी प्रतिपत्तिथी; अहियांपण एवीजरीतें बुद्धिमत् सामान्य प्रसिद्धिथी हेतुविरोध नथी, एमपण केहेवुं अयुक्तछे, कारण के दृश्यविशेष आधारनेज ते सामान्यने कार्यत्वहेतुनी प्रसिद्धि छे, परंतु अदृश्यविशेष आधारने नथी, तेनी स्वप्नामांपण प्रतिपत्ति नथी. ते सामान्यवालाने खरशृंग आधार छे. तेवास्ते जेवा कारणथी जेवुं कार्य उपलब्ध थायछे, तेवुंज अनुमान करवुं योग्य छे. यथावत् धर्मात्मक अग्निथी यावत् धर्मात्मकस्य धूमनीउत्पत्ति छे, सुदृढ प्रमाणथी प्रतिपन्नछे, तेवाज धूमथी तेवाज अग्निनुं अनुमान छे. एम कहीने साध्य साधन बंनेने विशेषणथी व्याप्तिविषे ग्रहण करतां थकां सर्व अनुमाननी उछेद प्रसक्ति छे. इत्यादि जे केहेवुं छे तेपण खंडन थयुं.

तथा बीजने वाव्याविना जे तृणादि उत्पन्न थायछे, तेनी साथे आ कार्यत्वहेतु व्यभिचारी छे. अनेक कार्य देखवामां आवेछे, तेउंमांथी केटलांएकतो बुद्धिमान्नां करेलां देखायछे, जेमके घटादि.

वली केटलांएक तेनाथी विपरीत देखायछे, जेम के वाव्याविनानां तृणादि. जो एम कहो के अमे सर्वने पक्षमां लइ लेशुं, तो तो "सश्यामस्तत्पुत्रत्वादितरतत्पुत्रवत् " इत्यादि पण गमक होवां जोइये, पछी तो कोईपण हेतु व्यभिचारी थशे नहि ज्यां ज्यां व्यभिचार थशे, त्यां त्यां तेने पक्षमां करी लेशे. तथा आ हेतु ईश्वर बुद्धि आदिथीपण व्यभिचारी छे, ईश्वर बुद्धि आदिने कार्यत्व थयां थकांपण समवायि कारणथी ईश्वरादिथी भिन्न बुद्धिमत् पूर्वकत्वना अभावथी. जो अहींयां पण एवीरीतें मानशो तो अनवस्था दूषण आवशे. तथा आ कार्यत्वहेतु कालात्ययापदिष्ट पण छे. वाव्याविना उत्पन्न थयेलां तृणादिविषे बुद्धि-

मत् कर्त्ताने अभाव प्रत्यक्ष प्रमाणथी, अग्निना अनुष्णत्व साध्यविषे द्र
व्यत्व हेतुवत् मालम पडेछे

प्रश्न – अङ्कुर तृणादिनापण अदृश्य ईश्वर कर्त्ताछे

उत्तर – आ पण ठीक नथी त्यां अदृश्य ईश्वरनु होवु आज प्रमाण
थीछे? के कोइ बीजा प्रमाणथी छे ? प्रथम पक्षमां चक्रक दूषण छे आ
प्रमाणथी तेनो सद्भाव सिद्ध थाय, तो अदृश्य होनार ईश्वरना अनुप
लंजनी सिद्धि थाय, तेनी सिद्धि थता कालात्ययापदिष्टनो अभाव सिद्ध
थाय, तेनी पछी आ प्रमाणनी सिद्धि थाय, बीजो पक्ष तो अयुक्तछे ई
श्वरना भाव अवेदिक प्रमाणना अभावथी होय, त्यां प्रमाणनो सद्भाव
तोपण १ईश्वर अदृश्य होवामां शु शरीरनु अविद्यमानपणु कारण छे?
२ के विद्यादि प्रभावछे? ३ के जातिविशेषछे? प्रथम पक्षमां अशरीरी
होवाथी मुक्त आत्मावत् कर्त्तापणानी अनुपपत्ति छे

प्रश्नः– शरीरनो अभाव छता पण ज्ञानेच्छा प्रयत्न आश्रयत्वथी शरीर
उत्पन्न करीने ईश्वर कर्त्ता थइ शकेछे

उत्तर – आ पण आपनु विना विचारनुज केहेवुं छे, कारण के शरीर संब
धथीज तेनी प्रेरणा थवाथी शरीरनो अभाव थतां मुक्त आत्मानी पेठे
तेनो असंभव थवाथी तेमज शरीरना अभावथी ज्ञानादि आश्रयत्वनो
पण असंभव छे, तेनी उत्पत्तिमां तेने निमित्त थवाथी अन्यथा मुक्तात्माने
पण तेनी उत्पत्ति थशे वली विद्यादि प्रभाव अदृश्यपणामां हेतु थतां
सर्वदा तो नहि, परंतु कोइक वखत तो देखावा जोइये कारणके विद्या
वान् सदा अदृश्य रेहेता नथी पिशाचादिनी पेठे जातिविशेष पण अदृ
श्यमां हेतु नथी, कारण के ईश्वर एकछे, एकमां जाति होती नथी, जाति
भेद जे थायछे, ते अनेकव्यक्तिनिष्ठ थायछे ईश्वर दृश्य अथवा अदृ
श्य भले होय, परंतु १ शु सत्ता मात्रथी? २ के ज्ञानवत्त्व होवाथी?
३ के ज्ञानेच्छा प्रयत्नवत्त्व होवाथी? ४ के तत्पूर्वक व्यापारथी? ५ के ऐ
श्वर्यथी पृथिव्यादिनु कारण छे ?

प्रथम पक्षमां कुलाल आदिनेपण सत्त्व अविशेष होवाथी जगत्क
र्त्तानो अनुषग थशे बीजा पक्षमां योगियोनेपण जगत्कर्त्तानी आपत्ति
आवशे त्रीजो पक्ष ठीक नथी, कारण के अशरीरने प्रयत्नज ज्ञानादि

आश्रयत्वनो प्रतिषेध करेलछे. चोथानोपण संभवनथी, कारण के अशरीरनो कायवचनना व्यापारपणानो असंभव छे; अने ऐश्वर्यपण शुं ज्ञातपणुंछे? के कर्त्तापणुंछे? के बीजुं कांइछे? जो कहो के ज्ञातपणुंछे, तो शुं ज्ञातृत्व मात्रछे? के सर्वज्ञातृपणुंछे ? प्रथम पक्षमां तो ज्ञाताज थशे, परंतु ईश्वर थशे नहि, अमारा सरखा बीजा ज्ञाताउनी जेम. बीजा पक्षमां, सर्वज्ञपणुं तो तेने थशे, परंतु सुगतादि जेम ईश्वरपणुं नहि थाय.

हवे जो एम कहो के कर्त्तृत्वपणुंछे, तो तो कुंभकारादिनेपण अनेक कार्य करवाथी ऐश्वर्यनी प्रसक्ति थशे, अने इछा प्रयत्न विना बीजी कोइपण वस्तु ईश्वरना ऐश्वर्यने बंधनकारक नथी.

एक बीजी वात ए छे के, ईश्वरने जगत् बनाववामां शुं यथारुचि प्रवृत्तिछे? के कर्मवशथी ते जगत् बनावेछे? के दयाथी बनावेछे? के क्रीडावास्ते बनावेछे? के निग्रह अनुग्रह करवावास्ते बनावेछे ? के स्वभावें बनावेछे? प्रथम पक्षमां, कदाचित् बीजी तरेहनी सृष्टि थइ जशे. बीजा पक्षमां, ईश्वरनी स्वतंत्रतानो नाश थशे. त्रीजा पक्षमां, सर्व जगत् सुखीज करवुं जोइये.

पूर्वपक्षः– ईश्वर शुं करे? जेवां जेवां जीवोए कर्म करेलां छे, तेवां तेवां दुःख सुख ते कर्मना कारणथी ईश्वर तेउने आपेछे.

उत्तरपक्षः– त्यारे तेमां ईश्वरनो पुरुषार्थ शुं? जो कर्मनीज अपेक्षाथी कर्त्ताछे, तो तो ईश्वरनी कल्पना करीने शुं करवुंछे? कर्मनाज बलथी सर्व कांइथइजशे. चोथा, पांचमा पक्षमां, ईश्वर, रागी द्वेषी थइ जशे, त्यारे तो ईश्वर केवीरीतें सिद्ध थशे? जुउ. क्रीडा करवाथी बालकनी पेठे ईश्वर रागवान् छे, अने निग्रह, अनुग्रह करवाथी राजानी पेठे ईश्वर रागी, द्वेषीछे.

जो एम कहो के ईश्वरनो स्वभावज जगत् रचवानो छे, तो तो जगत् स्वभावथीज थयेल छे एम मानी ल्यो. हवे ईश्वरनी कल्पना शा वास्ते करो छो ? ते वास्ते कार्यत्वहेतु बुद्धिमत्कर्त्ता ईश्वरने सिद्ध कर्त्ता नथी. तेज कारणथी नैयायिक, वैशेषिक जे जगत्कर्त्ता ईश्वरने माने छे ते अज्ञानतासूचक छे. विशेषथी जगत् कर्त्ता ईश्वरनुं खंडन जोवुं होय तो सम्मतितर्क ग्रंथ जुउ.

हवे नैयायिक जे सोल पदार्थ माने छे, ते पण बालकनो खेल छे, सो-

ल पदार्थ घटता नथी सोल पदार्थनां नाम– १ प्रमाण २ प्रमेय, ३ सं शय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत, ६ सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ९ निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंडा, १३ हेत्वाभास, १४ छल, १५ जाति, १६ निग्रहस्थान

हेय उपादेय प्रवृत्तिरूपें पदार्थोनी जेनाथी परिछित्ति करियें ते प्र माण "तत्प्रमीयतेऽनेनेति प्रमाणं" ते प्रमाण १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ शब्द, आ चार प्रकारे छे "तत्रेंद्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मक प्रत्यक्षं इति गौतमसूत्र" भावार्थ – इंद्रिय अने अर्थना संबंधथी जे उत्पन्न थयेल, व्यपदेशरहि त, व्यभिचाररहित, निश्चयात्मक, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे प्रत्यक्ष प्रमाणनु आ लक्षण सत्य नथी ज्यां आत्मा अर्थ ग्रहण प्रति साक्षात् व्यापारियें तेज प्रत्यक्ष प्रमाण छे ते अवधि, मनःपर्यव, अने केवल छे, अने नैयायिकोयें जे प्रत्यक्ष बतावेल छे ते तो उपाधिद्वारा प्रवृत्ति थवाथी अनुमाननी पेठे परोक्ष छे जो उपचारें प्रत्यक्ष मानियें तो तो वास्तविक छे, परंतु तत्त्वचिंतामां उपचारनो व्यापार थइ शकतो नथी

अनुमान प्रमाण त्रण प्रकारें माने छे १ पूर्ववत्, २ शेषवत्, ३ सामा न्यतोदृष्ट कारणथी कार्यनुं जे अनुमान ते पूर्ववत्, कार्यथी कारणनु जे अनुमान ते शेषवत् तथा एक आम्र वृक्ष फलरूप देखीने, जगत्मां आम्रवृक्षो फलरूप थयेला छे, एम जाणवु, अथवा देवदत्तादिमां गति पूर्वक स्थानथी, स्थानांतरनी प्राप्ति देखीने सूर्यमां पण गतिनुं अनुमान करवु ते, सामान्यतोदृष्ट छे त्यां पण अन्यथानुपपत्तिज गमक छे, का रणादि नथी, कारण के अन्यथानुपपत्ति विना कारणने कार्यप्रति व्य भिचार थाय छे, अने ज्यां अन्यथानुपपत्ति छे त्यां कार्य कारणादि वि नापण गमक भाव देखियें छियें ते बतावियें छियें कृत्तिकाने देखवाथी अनुमान थाय छे के रोहिणीनो उदय थशे ॥ श्लोक ॥ अन्यथानुप पन्नत्व, यत्र तत्र त्रयेण किं ॥ नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किं ॥ ॥ १ ॥ तथा एक बीजी वात ए छे के, ज्यारे नैयायिकनुं करेलु प्रत्यक्ष प्रमाणज प्रमाण न थयुं तो अनुमान जे प्रत्यक्षपूर्वक छे ते केवी रीतें प्रमाण होय ? तथा "प्रसिद्धसाधर्म्यात्" अर्थात् प्रसिद्ध सा धर्म्यथी जे साध्यनुं साधन छे ते उपमान प्रमाण छे जेवी गाय छे तेवुं

रोळ छे. अहींयां पण संज्ञा संज्ञी संबंधनी प्रतिपत्ति उपमाननो अर्थ छे. तेमज अन्यथानुपपत्ति सिद्ध थवाथी उपमाननो पण अनुमानमां अंतरज्ञाविज छे, परंतु पृथक् प्रमाण नथी. जो एम कहो के अहींयां अन्यथानुपपत्ति नथी, तो तो व्यभिचारी होवाथी उपमान प्रमाणज नथी. शाब्द पण सर्वे, प्रमाण नथी. परंतु आप्तप्रणीत जे आगम छे, तेज प्रमाण छे; अने अर्हंत विना बीजा कोइ आप्त नथी, ते वातनो निर्णय देखवो होय तो सम्मतितर्क, नंदीसिद्धांत, आप्तमीमांसादि शास्त्र जोइ लेवां. वळी एक बीजी वात ए छे के आ चारे प्रमाण, आत्मानुं ज्ञान छे; अने ज्ञान वस्तुना गुणोने पृथक् पदार्थ मानियें, तो तो रूप रसादिने पण पृथक् पदार्थ मानवा जोइयें. जो एम कहो के प्रमेय ग्रहण करवाथी, तेमज इंद्रियार्थ होवाथी तेपण ग्रहण कराय छे. आ पण तमारुं केहेवुं युक्तियुक्त नथी; कारण के द्रव्यथी पृथक् गुणोनो अभाव छे. द्रव्यग्रहण करवामां गुणोनुं ग्रहण थइ जाय छे ए सिद्ध छे. ते कारणथी गुणने पृथक् पदार्थ मानवा वास्तविक नथी.

२ प्रमेयना भेद, १ आत्मा, २ शरीर, ३ इंद्रिय, ४ अर्थ, ५ बुद्धि, ६ मन, ७ प्रवृत्ति, ८ दोष, ए प्रेत्यभाव, १० फल, ११ दुःख, १२ अपवर्ग. १ आत्मा सर्वनो द्रष्टा तेमज भोक्ता छे; अने इछा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, ज्ञान, तेछनाथी अनुमेय छे, ते तो अमे जीवतत्वमां ग्रहण करेल छे. २ शरीर आत्मानुं भोगायतन छे, इंद्रिय भोगनां साधन छे ३-४ इंद्रिय अर्थ (विषय) भोग्य छे, ते पण शरीरादि जीव अजीवग्रहणरूपें अमे ग्रहण करेल छे. ५ बुद्धि, ते उपयोगरूप ज्ञानविशेष छे, तेनो जीवस्वरूप ग्रहण करवामां समास थाय छे. अर्थात् जीवतत्वमां ते आवी जाय छे. ६ मन, ते सर्व विषय अंतःकरण छे. युगपत् ज्ञाननुं न होवुं ते मननुं लिंग छे, तेमां द्रव्यमन पौद्गलिक छे, तेनो अजीव तत्वमां समावेश थाय छे. अने भाव मन, ज्ञानरूप आत्मानो गुण छे, ते जीवतत्वमां ग्रहण कराय छे. ७ आत्मानी इछानुं नाम प्रवृत्ति छे, ते सुख दुःख थवानुं कारण छे, ते ज्ञानरूप होवाथी तेनो जीवतत्वमां समास थाय छे. ८ आत्माना अध्यवसाय, जे राग, द्वेष, मोहादि दोष छे, ते दोष पण जीवना अभिप्रायरूप होवाथी तेनो जीवतत्वमां समावेश थाय छे. ते वास्ते पृथ-

क् पदार्थ नथी ए प्रेत्यभाव, परलोकनो सद्भाव, ते पण जीव अजीव वि ना बीजु कांइ पण छे नहि, १० फल, जे सुख दु:खनुं भोगववुं, तेनोपण जीवना गुणमां अतर्भाव छे, तेथी पृथक् पदार्थ मानवुं वास्तविक नथी ११ दु:ख, आ पण फलथी जुदु नथी १२ जन्म मरणप्रबंध उच्छेदरूपें सर्व दु:खनुं दूर करवुं, ते मोक्षनुं लक्षण छे, ते अपवर्ग तो अमे नवतत्त्वमां मानेल छे

३ आ शुं छे ? एवा अनिश्चयरूप प्रत्ययने संशय कहे छे, ते पण निर्णय ज्ञानवत् आत्मानोज गुण छे

४ जेनाथी प्रयुक्त थया थकां प्रवर्त्ते छे, तेनु नाम प्रयोजन छे, ते पण इच्छाविशेष होवाथी आत्मानो गुण छे

५ अविप्रतिपत्ति विषयमां प्राप्त जे अर्थ ते दृष्टांत छे, ते पण जीव अजीव पदार्थथी पृथक् नथी, तेथी न्यारो पदार्थ नथी, कारण के अवयव ग्रहण करवामां तेनु पण ग्रहण थइ जशे

६ सिद्धांत चार प्रकारेछे १ सर्वतंत्राविरुद्ध सर्व शास्त्रोमां अविरुद्ध जेम के स्पर्शनादि इन्द्रियछे, अने स्पर्शादि इन्द्रियार्थछे, तथा प्रमाणथी प्रमेयनु ग्रहण थायछे २ समानतन्त्रसिद्ध परतन्त्रासिद्ध प्रतितन्त्रासिद्धांत जेमके सांख्य मतवाळानो असत् आत्मलाभ प्राप्त थतो नथी, अने सत्‌नो सर्वथा विनाश नथी ३ अधिकरणसिद्धांत, जेनी सिद्धि थतां बीजापण अर्थ अनुषगथी सिद्ध थइ जाय ते ४ "अपरीक्षितार्थाभ्युपगमस्वात्तद्विशेषपरीक्षणमभ्युपगमसिद्धांत" जेमके कोइयें कह्यु के, शब्द शु वस्तुछे? कोइक कहेछे, शब्द द्रव्यछे ते शब्द नित्यछे? के अनित्यछे ? इत्यादि विचार आ चारे प्रकारना सिद्धांत ज्ञानविशेषथी अतिरिक्त नथी, अने ज्ञानविशेष, आत्मानो गुणछे, गुणिने ग्रहण करवाथी ग्रहण करेलछे तेथी पृथक् पदार्थ नथी

७ अवयवा, प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, आ पांचे अवयवने जो शब्दमात्र मानियें तो तो पुद्गलरूप होवाथी तेनो अजीवतत्त्वमां समावेश थायछे, अने जो ज्ञानरूप मानियें तो जीवतत्त्वमां तेनो समावेश थायछे तेथी तेमने पृथक् पदार्थ केहेवा ठीक नथी

जो ज्ञानविशेषने पृथक् पदार्थ मानियें तो तो पदार्थ अनेक थइ जशे, कारण के ज्ञानविशेष अनेक प्रकारना छे.

८ संशयथी उपरांत नवितव्यता प्रत्ययरूप सत् अर्थ पर्यालोचनात्मक तेने तर्क कहेछे. जेमके आ स्थाणु अथवा पुरुष जरूर हशे. आ पण ज्ञानविशेषजछे; ज्ञानविशेष ज्ञाताथी अभिन्नछे, तेथी पृथक् पदार्थ कल्पवो वास्तविक नथी.

ए संशय, तेमज तर्कथी उत्तरकालनावि निश्चयात्मक एवुं जे ज्ञान, तेनुं नाम निर्णय छे. आ पण ज्ञानविशेषछे अने निश्चयरूप होवाथी, प्रत्यक्षादि प्रमाणना अंतर्नाव थवाथी पृथक् पदार्थ कल्पवो वास्तविक नथी.

१०–११–१२ वाद, जल्प, वितंडा, प्रमाण तर्क साधन उपालंन सिद्धांत अविरुद्ध पंच अवयवसंयुक्त पक्ष, प्रतिपक्षनुं जे ग्रहण करवुं तेनुं नाम वादछे. ते वादतत्व शिष्य अने आचार्यनो ज्ञानवास्ते थायछे. तथा तेज वाद बीजाने जीतवावास्ते, तेनीसाथे छल, जाति निग्रहस्थानथी साधन उपालंन ते जल्पछे. तथा ते वादज प्रतिपक्षस्थापनारूपेंज वितंडा छे. आ वाद, जल्प, वितंडा ए त्रणेनो नेदज थइ शकतो नथी; कारण के तत्वनुं चिंतवन करवामां तत्वना निर्णयार्थें वाद करवो जोइयें, परंतु छल, जाति आदिथी तत्वनो निश्चय थइ शकतो नथी; कारण के छलादि बीजाने ठगवावास्ते करवामां आवेछे. तेनाथी तत्वनिर्णयनी प्राप्ति थइ शक्ती नथी. जो तेउनो नेदपण मानशो, तोपण तेउ पदार्थ थइ शकता नथी. कारण के जे परमार्थथी वस्तु छे, तेज पदार्थछे. वाद तो पुरुषनी इछाने आधीन छे, नियतरूप नथी, ते कारणथी पदार्थ नथी. वली कुकडां, कुतरां, मेढां एउना वादमांपण पक्ष, प्रतिपक्ष ग्रहण करियें तो तेउनेपण तत्वज्ञाननी प्राप्ति थवी जोइयें; परंतु ते तो तमे मानता नथी, तेथी वाद, जल्प, वितंडा, पदार्थ नथी.

१३ हेत्वानास १ असिद्ध, २ अनेकांतिक, ३ विरुद्ध. आ त्रण प्रकारेंछे. हेतु तो नथी, परंतु हेतुनी जेम नासन थायछे, तेथी हेत्वानास कहेछे. ज्यारे सम्यक् हेतुउनीज तत्व व्यवस्थिति नथी, त्यारे हेत्वानासोनुं तो केहेवुंज शुं? कारणके जे नियत स्वरूपथी रहे ते वस्तुछे, अने

हेतु तो कोइ साध्य वस्तुमां हेतु छे, अने बीजी साध्य वस्तुमां अहेतुछे, ते कारणथी नियत स्वरूपवालो नथी

१४–१५–१६ छल, जाति, निग्रहस्थान आ त्रणे पदार्थ नथी कारण के आ त्रणे वास्तवमां कपटरूपछे जेउंए तेमने तत्वरूपें कथन करेल छे, तेउंना ज्ञान, वैराग्यमाटे शुं कहेवुं ? आ संसारमां जे चोरी, ठगाइ हाथफेरी प्रमुख शिखवे, तेउंनेपण तत्वज्ञानना उपदेशक मानवा सरखुंछे, ए प्रमाणे नैयायिक मतना सोल पदार्थनुं खंडन समजवुं विशेष जाणवा इछनारें न्यायकुमुदचन्द्र अवलोकन करवो आ खंडन सूत्रकृतांग सिद्धांतथी लखेल छे जुंउं धारमुं अध्ययन इति नैयायिकदर्शनखंडन

हवे वैशेषिकमतखंडन लखियें छियें वैशेषिकनां कहेलां तत्व पण तत्व नथी तेउंए १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, एम छ तत्व मान्यां छे तेमां द्रव्य नव छे, १ पृथिवी, २ अप्, ३ तेज, ४ वायु, ५ आकाश, ६ काल, ७ दिक्, ८ आत्मा, ए मन प्रथमनां चारे द्रव्योने भिन्न भिन्न द्रव्य मान्यां छे ते वास्तविक नथी, कारण के परमाणु जे छे ते प्रयोग विश्रसाथी पृथिवी आदिना रूप पर्णे परिणमे पण छे, तो पण पोताना द्रव्यपणांने तजता नथी, अने अति प्रसंग होवाथी अवस्थाभेदें द्रव्यना भेद मानवा ते योग्य नथी वली आकाश तथा कालने तो अमे पण द्रव्य मानियें छियें, अने दिशा तो आकाशनुं अवयव भूत छे तेथी पृथक् द्रव्य नथी आत्मा शरीरमात्रव्यापी उपयोग लक्षण तेने अमे द्रव्य मानियें छियें द्रव्यमन पुद्गलद्रव्य अन्तर्भावि छे, अने भावमन जीवनो गुण होवाथी, आत्मा अतर्भावी छे वैशेषिक कहे छे के जेम पृथिवीत्वना योगथी पृथिवी छे, इत्यादि आ पण तेउंनुं केहेवुं स्वप्रक्रियामात्र छे कारण के पृथिवीथी अन्य बीजुं कोई पृथिवीपणुं नथी, जेना योगथी पृथ्वी थाय परंतु सर्व जे काइ छे ते सामान्य विशेषात्मक छे, नरसिंहाकारवत् उभयस्वभाव छे

नान्वय सहि भेदत्वा,न्नाभेदोन्वयवृत्तित ॥ मृद्भेदद्वयसंसर्ग, वृत्ति जात्यतरं घट ॥ १ ॥ भावार्थ – घटमा मृत्तिकानो अन्वय नथी, पृथुबुध्न उदराकारादि हेतुथी भेद छे, तेमज अन्वयवर्त्ति होवाथी घटनो मृत्तिकाथी एकांत भेद पण नथी, अर्थात् घट मृत्तिका रूपज छे अन्वय

व्यतिरेक बंनेना मलवाथी घट जात्यंतर रूप छे, अर्थात् मृत्तिकाथी कथं चित् नेदान्नेदरूप छे. यथा ॥ न नरः सिंहरूपत्वा, न्न सिंहोनररूपतः ॥ शब्दविज्ञानकार्याणां, नेदोजात्यंतरं हि सः ॥ १ ॥ नावार्थः—सिंहरूप होवाथी नर नथी, अने नररूप होवाथी सिंहपण नथी, तो शुं छे? १ शब्द, २ विज्ञान, ३ कार्य, तेउना नेद होवाथी नरसिंह, त्रीजी जातिछे.

२ रूप, रस, गंध, स्पर्श, तेउनी रूपि द्रव्यमां प्रवृत्ति छे, अने विशेष गुण छे, तथा १ संख्या, २ परिमाण, ३ पृथक्त्व, ४ संयोग, ५ विनाग, ६ परत्व, ७ अपरत्व, आ सामान्य गुण छे, तेउनी सर्वद्रव्यमां प्रवृत्ति छे. तथा १ बुद्धि, २ सुख, ३ दुःख, ४ इछा, ५ द्वेष, ६ प्रयत्न, ७ धर्म, ८ अधर्म, ९ संस्कार, आ आत्माना गुण छे. तथा गुरुत्व पृथ्वी तथा जलमां छे, द्रव्यत्व पृथ्वी, जल, तेमज अग्निमां छे, स्नेह जलमांज छे, वेगनाम संस्कार ते मूर्त्त द्रव्योमांज छे, अने शब्द आकाशनो गुण छे. तेमां संख्यादि सामान्य गुण रूपादि पेठे द्रव्यस्वनाव होवाथी परउपाधिथी गुणज नथी. वली गुण जो द्रव्यथी पृथक् थइ जाय तो द्रव्यना स्वरूपनो नाश थइ जशे. "गुणपर्यायवत् द्रव्यं" आ केहेवाथी गुण द्रव्यथी निन्न नथी. द्रव्यग्रहण करवामां गुणनुं ग्रहण थइ जाय छे, तेज युक्त छे परंतु गुणने पृथक् पदार्थ मानवो, युक्त नथी. तथा शब्द आकाशनो गुण नथी, कारण के ते तो पौद्गलिक छे, अने आकाश तो अमूर्त्त छे. बाकी जे वैशेषिकें कहेल छे ते प्रक्रियामात्र छे, साधन दूषणोनुं अंग नथी.

३ कर्म पण गुणनी पेठे पृथक् पदार्थ मानवो अयुक्त छे.

४ सामान्य बे प्रकारें छे. एक पर, बीजुं अपर. तेमां पर सामान्य महासत्ता नाम छे. द्रव्यादि त्रण पदार्थोमां व्यापि छे, अने अपर ते द्रव्यत्व, गुणत्व, कर्मत्वादि छे. तेमां महासत्ताने पृथक् पदार्थ मानवुं अयुक्त छे; कारण के सत्तामां जे सत् प्रत्यय छे, ते शुं कोइ बीजी सत्ताना योगथी छे? के स्वरूपथी छे? जो कहो के बीजी सत्ताना योगथी छे तो ते सत्तामां सत्प्रत्यय वली बीजी सत्ताना योगथी होवो जोइयें. एम करतां अनवस्था दूषण आवे छे. वली जो कहो के स्वरूपथी, सत् छे तो तो द्रव्यादि पण स्वरूपथी सत् छे. त्यारे हवे बकराना, गलाना स्तनोनी पेठे निष्फल सत्तानी कल्पना करवानुं शुं प्रयोजन छे. वली द्रव्यादि स-

हेतु तो कोइ साध्य वस्तुमां हेतु छे, अने बीजी साध्य वस्तुमां अहेतुछे, ते कारणथी नियत स्वरूपवालो नथी

१४-१५-१६ छल, जाति, निग्रहस्थान आ त्रणे पदार्थ नथी कारण के आ त्रणे वास्तवमां कपटरूपछे जेथी तेमने तत्त्वरूपे कथन करेल छे, तेथीना ज्ञान, वैराग्यमाटे शु कहेवु ? आ संसारमां जे चोरी, ठगाइ, हाथफेरी प्रमुख शिखवे, तेथीनेपण तत्त्वज्ञानना उपदेशक मानवा सरखुछे, ए प्रमाणे नैयायिक मतना सोल पदार्थनु खंडन समजवु विशेष जाणवा इच्छनारे न्यायकुमुदचंद्र अवलोकन करवो आ खंडन सूत्रकृतांग सिद्धांतथी लखेल छे जुओ बारमुं अध्ययन इति नैयायिकदर्शनखंडन

हवे वैशेषिकमतखंडन लखियें छियें वैशेषिकनां कहेलां तत्त्व पण तत्त्व नथी तेथीए १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, एम छ तत्त्व मान्यां छे तेमां द्रव्य नव छे, १ पृथिवी, २ अप्, ३ तेज, ४ वायु, ५ आकाश, ६ काल, ७ दिक्, ८ आत्मा, ९ मन प्रथमनां चारे द्रव्योने भिन्न भिन्न द्रव्य मान्यां छे ते वास्तविक नथी, कारण के परमाणु जे छे ते प्रयोग विश्रसाथी पृथिवी आदिना रूप पर्ये परिणमे पण छे, तो पण पोताना द्रव्यपणांने तजता नथी, अने अति प्रसग होवाथी अवस्थाओने द्रव्यना भेद मानवा ते योग्य नथी वली आकाश तथा कालने तो अमे पण द्रव्य मानियें छियें, अने दिशा तो आकाशनु अवयव भूत छे तेथी पृथक् द्रव्य नथी आत्मा शरीरमात्रव्यापी उपयोग लक्षण तेने अमे द्रव्य मानियें छियें द्रव्यमन पुद्गलद्रव्य अतर्भावि छे, अने भावमन जीवनो गुण होवाथी, आत्मा अतर्भावी छे वैशेषिक कहे छे के जेम पृथिवीत्वना योगथी पृथिवी छे, इत्यादि आ पण तेथीनु केहेवु स्वप्रक्रियामात्र छे कारण के पृथिवीथी अन्य बीजु कोई पृथिवीपणु नथी, जेना योगथी पृथ्वी थाय परतु सर्व जे कांइ छे ते सामान्य विशेषात्मक छे, नरसिंहाकारवत् उभयस्वभाव छे

नान्वय सहि भेदत्वा,न्नाभेदोन्वयवृत्तित ॥ मृद्भेदद्वयसंसर्ग, वृत्ति जात्यतरं घट ॥ १ ॥ भावार्थ— घटमा मृत्तिकानो अन्वय नथी, पृथु बुध्न उदराकारादि हेतुथी भेद छे, तेमज अन्वयवर्त्ति होवाथी घटनो मृत्तिकाथी एकांत भेद पण नथी, अर्थात् घट मृत्तिका रूपज छे अन्वय

व्यतिरेक बंनेना मलवाथी घट जात्यंतर रूप ठे, अर्थात् मृत्तिकाथी कथं चित् नेदानेदरूप ठे. यथा ॥ न नरः सिंहरूपत्वा, न्न सिंहोनररूपतः ॥ शब्दविज्ञानकार्याणां, नेदोजात्यंतरं हि सः ॥ १ ॥ नावार्थः—सिंहरूप होवाथी नर नथी, अने नररूप होवाथी सिंहपण नथी, तो शुं ठे? १ शब्द, २ विज्ञान, ३ कार्य, तेउना नेद होवाथी नरसिंह, त्रीजी जातिठे.

२ रूप, रस, गंध, स्पर्श, तेउनी रूपि ड्रव्यमां प्रवृत्ति ठे, अने विशेष गुण ठे, तथा १ संख्या, २ परिमाण, ३ पृथक्त्व, ४ संयोग, ५ विनाग, ६ परत्व, ७ अपरत्व, आ सामान्य गुण ठे, तेउनी सर्वड्रव्यमां प्रवृत्ति ठे. तथा १ बुद्धि, २ सुख, ३ डुःख, ४ इठा, ५ द्वेष, ६ प्रयत्न, ७ धर्म, ८ अधर्म, ए संस्कार, आ आत्माना गुण ठे. तथा गुरुत्व पृथ्वी तथा जलमां ठे, ड्रव्यत्व पृथ्वी, जल, तेमज अग्निमां ठे, स्नेह जलमांज ठे, वेगनाम संस्कार ते मूर्त्त ड्रव्योमांज ठे, अने शब्द आकाशनो गुण ठे. तेमां संख्यादि सामान्य गुण रूपादि पेठे ड्रव्यस्वनाव होवाथी परउपाधिथी गुणज नथी. वली गुण जो ड्रव्यथी पृथक् थइ जाय तो ड्रव्यना स्वरूपनो नाश थइ जशे. “ गुणपर्यायवत् ड्रव्यं ” आ केहेवाथी गुण ड्रव्यथी निन्न नथी. ड्रव्यग्रहण करवामां गुणनुं ग्रहण थइ जाय ठे, तेज युक्त ठे परंतु गुणने पृथक् पदार्थ मानवो, युक्त नथी. तथा शब्द आकाशनो गुण नथी, कारण के ते तो पौद्‌गलिक ठे, अने आकाश तो अमूर्त्त ठे. बाकी जे वैशेषिकें कहेल ठे ते प्रक्रियामात्र ठे, साधन दूषणोनुं अंग नथी.

३ कर्म पण गुणनी पेठे पृथक् पदार्थ मानवो अयुक्त ठे.

४ सामान्य बे प्रकारें ठे. एक पर, बीजुं अपर. तेमां पर सामान्य महासत्ता नाम ठे. ड्रव्यादि त्रण पदार्थोमां व्यापि ठे, अने अपर ते ड्रव्यत्व, गुणत्व, कर्मत्वादि ठे. तेमां महासत्ताने पृथक् पदार्थ मानवुं अयुक्त ठे; कारण के सत्तामां जे सत् प्रत्यय ठे, ते शुं कोई बीजी सत्ताना योगथी ठे? के स्वरूपथी ठे? जो कहो के बीजी सत्ताना योगथी ठे तो ते सत्तामां सत्प्रत्यय वली बीजी सत्ताना योगथी होवो जोइयें. एम करतां अनवस्था दूषण आवे ठे. वली जो कहो के स्वरूपथी, सत् ठे तो तो ड्रव्यादि पण स्वरूपथी सत् ठे. त्यारे हवे बकराना, गलाना स्तनोनी पेठे निष्फल सत्तानी कल्पना करवानुं शुं प्रयोजन ठे. वली ड्रव्यादि स-

सत्ताना योगथीज सत् केहेवाय छे ? के सत्तासंबंध विनाज सत्स्वरूप छे ? जो कहो के स्वत ज सत्स्वरूप छे, तो सत्तानी कल्पना करवी व्यर्थ छे जो कहो के सत्ताना योगथी सत् छे तो तो शशविषाणपण सत्ताना योगथी सत् होवा जोइयें यथा ॥ स्वतोऽर्थाः संतु सत्ताव, स्सत्तया किं सदात्मना ॥ असदात्मसु नेषा स्या, स्सर्वथातिप्रसंगत ॥ ५८॥ इत्या दि आ दूषणो तुल्य योगक्षेम होवाथी अपर सामान्यमांपण छे जोडी दे वां वली अमे पण वस्तुने सामान्य विशेषरूप होवाथी तेने कथंचित् सामान्यरूप मानियेंज छियें ते वास्ते द्रव्यग्रहण करवामां द्रव्य सामान्यनु ग्रहण थइगयु, तेहेतुथी सामान्य, द्रव्यथी पृथक् पदार्थ कल्पवो

५ विशेष अत्यंत व्यावृत्ति बुद्धिनो हेतु होवाथी कणादवैशेषिकोए माने ला छे हवे जुओ ते विशेषमां जे विशेषबुद्धि छे, ते अपर विशेषथी छे ! के स्वत ज स्वरूपथी छे ? अपर विशेषहेतु तो छे नही, अनव स्था, तेमज विशेषमां विशेषनो अंगीकार नथी जो आ कहो के स्वत ज वि शेषबुद्धिनो हेतु छे, तो पछी विशेषोने द्रव्यथी अतिरिक्त पदार्थ क ल्पवा व्यर्थ छे अने द्रव्यथी अव्यतिरिक्त विशेषोने, सर्व वस्तुने सा मान्य विशेषात्मक होवाथी, अमे पण मानियें छियें

६ समवाय, अयुतसिद्ध आधार आधेयभूतोनो जे इह प्रत्ययनो हेतु छे, ते समवाय केहेवाय छे वली समवाय नित्य तेमज एक छे, एम वैशेषिक माने छे ते समवाय नित्य होवाथी, समवायी पण नित्य होवा जोईयें जो समवायी अनित्य छे, तो समवाय पण अनित्य होवो जोइये ? कारण के समवायनो आधार समवायी छे तथा समवाय एक होवाथी समवायी पण एकज होवो जोइयें अथवा समवायी अनेक होवाथी समवाय पण अनेक होवा जोइयें वली समवाय जे पदार्थोनो समवायी संबंध करे छे, ते समवाय ते पदार्थोनी साथे पोतानो संबंध बीजा समवायना योगथी करे छे ? के पोतेज पोतानो संबंध करे छे ? जो कहो के बीजा समवायथी करे छे, तो तो अनवस्था दूषण छे, अने समवायपण बीजो छे नहि जो कहो के पोतानो संबंध करे छे, तो तो गुण क्रियादि पण द्रव्यथी स्वरूपें तथा अविष्वंग भावसंबंधथी संबंधी छे तो हवे समवाय कल्पवो पण व्यर्थ छे

एवीरीतें वैशेषिक मतमां पण सम्यक् पदार्थोनुं कथन आप्तोक्त नथी. तथा नैयायिक, वैशेषिक मतमां जे मोक्ष माने छे तेपण प्रेक्षावानोने मानवा योग्य नथी. तेउं तो ज्यारे आत्मा ज्ञानथी रहित थाय, अर्थात् जडरूप थइजाय, त्यारे आत्मानो मोक्ष मानेछे. एवा मोक्षने कयो बुद्धिमान् उपादेय माने? कारण के एवो कोण बुद्धिमान् होय के सर्वसुख तेमज ज्ञानथी रहित थइ पाषाणतुल्य पोतानो आत्मा करवा चाहे? तेकारणथी कोइयें वैशेषिकनुं उपहास्य पण करेल छे. यथा ॥ श्लोक॥ वरं वृंदावने रम्ये, क्रोष्टुत्वमभिवांछति ॥ न तु वैशेषिकीं मुक्तिं, गौतमोगंतुमिछति ॥ १ ॥ स्वर्गनां सुख उपाधिसहितछे, अवधिवालां छे, तेमज परिमित आनंदरूप छे, अने मोक्ष तो निरुपाधिक, निरवधिक, अपरिमित आनंद ज्ञानसुखस्वरूप, विचक्षण पुरुष कहेछे. जो मोक्ष होवुं पाषाण तुल्य छे, तो एवो मोक्ष प्राप्त करवानुं कांइ प्रयोजन नथी. तेनाथी तो संसारज सारो छे के जे संसारमां दुःखमिश्रित सुख भोगववामां आवेछे. जरा विचार तो करो के थोडा सुखने भोगववुं ते सारूं छे? के सर्वसुखनो उछेद सारो छे? इत्यादि विशेष चर्चा, स्याद्वादमंजरीनी टीकाथी जाणवी. ते कारणथी नैयायिक, वैशेषिक बंने मत उपादेय नथी.

हवे सांख्यमतनुं खंडन लखियें छियें. सांख्यमत वास्तविक नथी. जुउं. परस्परविरोधी एवां सत्व, रज, तमोगुणोनुं प्रकृति रूपोनुं गुणीविना एकत्र अवस्थान अर्थात् रेहेवुं ते युक्त नथी. जेम कृष्ण, श्वेतादि गुण, गुणिविना एकत्र रही शकता नथी तथा महत् आदि विकार होवामां, प्रकृतिमां विषमता उत्पन्न करनार कोइपण कारण नथी; कारण के प्रकृति विना बीजी कोइ वस्तु सांख्य मानता नथी. आत्माने अकर्त्ता, अकिंचित्कर मानेछे. जो स्वभावथी वैषम्य मानशो, तो निर्हेतुकतानी आपत्ति आवशे, कारण के कार्य कदी होय, अने कदी न होय, ते हेतु विना थइ शकतां नथी. तेमज खरशृंगादि जे नित्य असत् छे, अने आकाशादि जे नित्य सत्छे ते हेतुथी नथी. यथा ॥ नित्यसत्त्वमसत्त्वं वा, हेतोरन्यानपेक्षणात् ॥ अपेक्षातोहिभावानां, कदाचित्त्वसंभवः॥ १ ॥

वली स्वभाव प्रकृतिथी भिन्न छे? के अभिन्न छे? भिन्न तो नथी,

कारण के प्रकृति विना सांख्योए बीजी कांइवस्तु मानेली नथी जो कशो के अभिन्न छे तो तो प्रकृति छे, स्वभाव नथी

वली महत् तेमज अहंकार ज्ञानथी भिन्न अमे देखता नथी जुओ बुद्धि अध्यवसायमात्र छे, अने अहंकार हुं सुखी, हुं दुःखी, एवा स्वरूपवालो छे आ बनेमां चिद्रूप होवाथी आत्मानुं गुणपणुं छे, परंतु जड रूप प्रकृतिनो विकार नथी

वली तन्मात्राथी भूतोनी जे उत्पत्ति मानेछे, जेम के १ गंधतन्मात्राथी पृथ्वी, २ रसतन्मात्राथी जल, ३ रूपतन्मात्राथी अग्नि, ४ स्पर्शतन्मात्राथी वायु, ५ शब्द तन्मात्राथी आकाश, आ तेओनुं मानवुं युक्त नथी जो बाह्य भूतनी अपेक्षाथी कहेता होतो अयुक्तछे आ बाह्य पांच भूतो निरंतर विद्यमान होवाथी तेनी उत्पत्ति नथी "न कदाचिदनीदृश जगत् इतिवचनात्" अर्थात् आ जगत् प्रवाहथी अनादि कालथी एवुंज चाल्युं आवे छे

जो एम कहोके दरेक शरीरनी अपेक्षाए अमे मानियें छियें तेओमां, त्वचा, हाड, कठणलक्षणा पृथिवीछे, श्लेष्म, रुधिर, द्रव लक्षण जल छे, पक्ति (जठर) लक्षण अग्नि छे, पानापान (श्वासोश्वास) लक्षण वायु छे, सुषिर (पोलाण) लक्षण आकाश छे आ पण केहेवुं ठीक नथी, कारण के तेमां पण केटलाएक शरीरोनी उत्पत्ति पितानुं शुक्र अने माताना रुधिरथी थायछे, त्यां तन्मात्राओनो गंधपण नथी, अने अदृष्ट वस्तुओने कारण कल्पवामां अतिप्रसंग दूषण छे वली इन्द्रों, उद्भिज्ज, अंकुरादिनी उत्पत्ति पण बीजी वस्तुओथी थती देखवामां आवेछे ते कारणथी महद्, अहंकार आदिनी उत्पत्ति सांख्योए जे पोतानी प्रक्रियाथी मानी छे, ते युक्तिरहित मानी छे केवल पोताना मतना रागथीज मानेली छे, वली आत्माने अकर्त्ता माने छे, तेथी तो कृतनाश, अकृत अभ्यागमनुं दूषण आवेछे, तेमज बंध मोक्षनो अभाव थायछे, अने निर्गुण होवाथी आत्मा ज्ञानशून्य थइ जायछे पूर्वोक्त सर्व युक्तिहीन होवाथी बालप्रलापमात्र छे

हवे सांख्यमतना मोक्षनो विचार करियें "प्रकृति पुरुषांतरपरिज्ञानात् मुक्ति" अर्थात् प्रकृति पुरुषथी अन्य छे एवुं ज्यारे ज्ञान थाय छे, त्यारे मुक्ति थायछे यथा ॥ शुद्धचैतन्यरूपोयं, पुरुष पुरुषार्थत ॥ प्रकृत्यंतरमज्ञात्वा, मोहात्संसारमाश्रित ॥ २ ॥ भावार्थ– पुरुष परमार्थथी शुद्ध

चैतन्यरूप छे. पोते पोताने प्रकृतिथी एकमेक समजेछे. आ मोहथी संसारने आश्रित थइ रहेल छे. ते हेतुथी प्रकृति सुखादिस्वभावथी ज्यांसुधि विवेकपूर्वक ग्रहण करशे नहि, त्यांसुधि मुक्ति नथी; तेमज केवलज्ञाननो उदय थवाथीज मुक्ति छे, ए पण असत् छे. कारण के आत्मा एकांत नित्यछे, अने सुखादि, उत्पाद, व्यय स्वभाववालां छे; त्यारे तो विरुद्ध धर्म संसर्गथी आत्माथी प्रकृतिनो भेद प्रतीतज छे, तो हवे मुक्ति केम नहि?

हवे ते तो संसारी विचार करतो नथी, तेवास्ते मुक्ति नथी, जो एम कहेशो तो तो तमारा केहेवाथी कदापि मुक्ति थशे नहि. एवो विवेक अध्यवसाय संसारिने कदापि थइ शकतो नथी, तेज बतावियें छियें.

ज्यां सुधी संसारी छे. त्यां सुधी विवेक परिभावनाथी संसारीपणुं दूर थतुं नथी. तेवास्ते विवेक अध्यवसायना अभावथी कदापि संसारथी छुटवानुं नथी.

तथा आ सृष्टि पेहेलां तो केवल आत्मा छे, एम तमे मानो छो, तो पछी आत्माने संसार क्यांथी लपटायो? जो कहो के निर्मल आत्माने संसार लपटाय छे, तो तो मोक्ष थया पछी पण संसार लपटाशे; हवे विचारो के मोक्ष शुं थयो? केवल विटंबना थइ.

पूर्वपक्षः—सृष्टि पेहेलां आत्माने दिदृक्षा थइ, ते दिदृक्षाना जोरथी प्रधाननी साथे पोतानुं एकरूप देखायुं; तेथी संसारी थयो. ज्यारे प्रकृतिनुं दुष्टपणुं ध्यानमां आव्युं, त्यारे प्रकृतिथी वैराग्य थयो. पछी प्रकृति विषे दिदृक्षा न रही, त्यारे संसारपण न रह्यो.

उत्तरपक्षः—आ तमारुं केहेवुं स्वकृतांतविरुद्ध होवाथी अयुक्त छे. जुओ. दिदृक्षा, देखवानी अभिलाषानुं नाम छे. ते अभिलाषा पूर्वें देखेला पदार्थोमां तेना स्मरणथी थाय छे. प्रकृति तो पूर्वें कदापि तेणे देखी नथी, तो केवीरीतें तेनेविषे स्मरण अभिलाषा होय? जो एम कहो के अनादि वासनाना बलथी प्रकृतिमांज स्मरण अभिलाषा छे, तोपण असत् छे, कारण के वासनापण प्रकृतिनो विकार होवाथी प्रकृति पेहेलां न होती. जो एम कहो के वासना आत्माना स्वभावरूप छे. तोतो आत्मस्वरूपनी जेम वासनानो कदापि अभाव थशे नहि, अने मोक्षपण क-

थापि थशे नहि, ए प्रमाणे सांख्य मतपण बाळकना खेलसमान थयो इति सांख्यमतखंडन

हवे मीमांसक मतनु खंडन लखतां, तेना मतनु स्वरूप तो पूर्वे बता वेल छे, अने वेदांतियोना ब्रह्म (अद्वैत) नुं खंडन ईश्वरवादमां बी जा परिछेदमां विस्तारपूर्वक करेलु छे, तेथी आ स्थले वर्णन करेलुं न थी इति मीमांसकमत

हवे जैमिनीय मतनु खंडन लखियेंछियें, जैमिनीय कहे छे के "हिंसागार्ध्यात्" जे हिंसा इन्द्रियोना रसवास्ते, अथवा कुव्यसन निमित्ते करियें तेज हिंसा अधर्मनो हेतु छे प्रमादना उदयथी कसाइ, माछिउनी जेम अने वेदोमां जे हिंसा कही छे ते हिंसा नथी, परतु धर्मनो हेतु छे, देवता, अतिथि, पितृउनी प्रीति संपादक होवाथी, तथाविध पूजा उपचारनी पेठे वली आ प्रीतिनु संपादन करवु असिद्ध नथी कारण के कारीरी प्रमुख यज्ञोना स्वसाध्य विषे वृष्टि आदि फलोनु जे अव्यभिचारिपणु छे, ते यज्ञ करवाथी जे देवता तृप्त थाय छे, ते वृष्टि आदिनो हेतु छे तेथीजरीतें "त्रिपुरार्णववर्णित छगल" अर्थात् बकराना मांसनो होम करवाथी परराज्यनु जे वश थवुं छे, तेपण तेमांसनी आहुतियोथी तृप्त थयेला देवताउनोज प्रभाव छे, अने अतिथि प्रति पण "मधु संपर्कसंस्कारादिसमास्वादजा" प्रत्यक्षज देखाय छे अने पितृउने माटे जे श्राद्ध करवामां आवे छे, ते श्राद्धथी पितृउ तृप्त थतां, स्वसंताननी वृद्धि प्रत्यक्षज देखाय छे वली ते बाबतमां आगम पण प्रमाण आपेछे आगममां देवनी प्रीतिवास्ते, अश्वमेध, नरमेध, गोमेध, आदि यज्ञ करवा कहेल छे, अने अतिथिविषय "महोक्ष वा महाजं वा, श्रोत्रियाय प्रकल्पयेदिति" एवुं कहेलुं छे वली पितृउनी प्रीति वास्ते आ प्रमाणें लखेलुं छे

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन, त्रीन् मासान् हारिणेन तु ॥ औरभ्रेणाथ चतुर, शाकुनेनेह पंच तु ॥ १ ॥ षण्मासश्छागमांसेन, पार्षतेनेह सप्त वै । अष्टावेणस्य मांसेन, रौरवेण नवैव तु ॥ २ ॥ दशमासांस्तु तृप्यति, वराहमहिषामिषै ॥ शशकूर्मयोर्मांसेन, मासानेकादशैव तु ॥ ३ ॥ संवत्सर तु गव्येन, पयसा पायसेन तु ॥ वार्ध्रीणसस्य मांसेन, तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ ४ ॥ आ श्लोक स्मृतिना छे अर्थः—जो

पितृउने मत्स्यनुं मांस आपे तो, पितृउ बे माससुधी तृप्त रहेछे. जो हरिणनुं मांस आपे तो, त्रणमाससुधी तृप्त रहेछे, जो मेंढानुं मांस तेउने आपे तो, चारमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, जो जंगली कुकडानुं मांस तेउने आपे तो, पांचमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, जो बकरानुं मांस तेउने आपे तो, छमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, पृषत्‌बिंदुयुक्त जे हरिण होय, ते पार्षत कहेवायछे, तेनुं मांस जो पितृउने देवामां आवे तो, पितृउ सातमास सुधी तृप्त रहेछे, जो एणमृगनुं मांस देवामां आवेतो, आठमास-सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो मोटा काला मृगनुं मांस देवामां आवे तो, नवमाससुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो सूअर, अने महिषनुं मांस देवामां आवेतो, दशमास सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो ससला अने काचबा बंनेनुं मांस देवामां आवे तो, अग्यार मास सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो गायनुं दुध अथवा खीर देवामां आवे तो, बार माससुधी पितरो तृप्त रहेछे, अने बहुज बूढा थयला लांवा कानवाला धोला बकरानुं मांस आपवामां आवे तो, बार वर्षसुधी पितरो तृप्त रहेछे. आ प्रमाणे मीमांसको माने छे.

हवे तेनुं खंडन लखियें छियें. हे मीमांसक? वेदोमां जे हिंसा कहिछे, ते धर्मना हेतुरूप कदापि थइ शकेछे? तमारा केहेवामां प्रत्यक्ष स्ववचन विरोध छे. जुउ. जो धर्मनो हेतु छे, तो हिंसा केवी रीतें छे? जो हिंसा छे, तो धर्मनो हेतु ते केवी रीतें थइ शकेछे? यथा ॥ श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यतां ॥ आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ॥ १ ॥ इत्यादि. जो धर्म कहेलो छे, तो हिंसा केवी रीतें धर्म थइ शकेछे? कारण के मातापण छे, अने ते वंध्यापण छे, एम कदी थइ शकतुं नथी.

पूर्वपक्षः—हिंसा कारणछे, अने धर्म तेनुं कार्य छे.

उत्तरपक्षः—आ तमारूं केहेवुं असत् छे. कारण के जे जेनी साथे अन्वय व्यतिरेकवालुं होय छे, ते तेनुं कार्य थायछे. जेम माटीना पिंड प्रमुखनुं घटादि कार्यछे, तेम धर्म कांइ हिंसाज करवाथी थतो नथी, कारण के तप, दान, स्वाध्याय प्रमुखपण धर्मनां कारण छे.

पूर्वपक्षः—अमे सामान्य हिंसाने मानता नथी, परंतु विशिष्ट हिंसा-नेज धर्म कहियेंछियें. विशिष्ट हिंसा तेज छे, जे वेदोमां करवी कही छे.

उत्तरपक्षः—जो वेदनी हिंसा धर्मनी हेतु छे, तो शुं जे जीव यज्ञादिमां

मारवामां आवेछे, ते मरता नथी? ते कारणथी धर्म छे? अथवा शु मरण समये तेउने आर्त्तध्याननो अजाव छे? ते कारणथी धर्म छे? अथवा जे जीव यज्ञादिमां मारवामां आवेछे ते मरीने स्वर्ग प्राप्त करेछे? ते कारणथी धर्मछे? प्रथम पक्ष तो वास्तविक नथी, कारण के प्राणनो त्याग करतां तो ते जीवने प्रत्यक्ष देखियें छियें बीजो पक्ष पण असत् छे, कारण के बीजाना मननु ध्यान डुर्लक्ष्य छे, ते कारणथी आर्त्तध्याननो अजाव कहेवो, तेपण परमार्थशून्य वचनमात्र छे, आर्त्तध्याननो अजाव तो शु थवानो हतो परंतु अरे डुःखी छियें ? छे कोइ करुणासागर के अमने छोडावे? एम पोतानी जाषामां कहेतां कहेतां पोतानी जाषाथी विरस अरराट करता, दीनमुखवाला, तेमज चक्षु फाडी चारे दिशाए जोतां, इत्यादि चिह्न देखवाथी, ते विचाराउनुं आर्त्तध्यान स्पष्ट उपलब्ध थाय छे

पूर्वपक्ष – जेम लोढानो गोलो पाणीमां डुबी जाय छे, तेनां जो पातला पतरां करवामां आवे तो ते जेम पाणीमां नहि डुबतां तरे छे, तेम ज जेम विष मृत्यु पमाडनार छे, तो पण मन्त्रोथी संस्कार करतां थकां गुणकारि थाय छे, तथा जेम अग्नि दाहकस्वजाववालो छे, तो पण सत्यशीलादिना प्रजावथी दाहक थतो नथी, तेवीज रीतें वेदमन्त्रादिथी संस्कार पामेली हिंसा दोषनु कारण नथी तेमज वेदोक्त हिंसा निंदनीय कदापि नथी, कारण के ते हिंसा करनारा याज्ञिक ब्राह्मणो जगत्मा पूजनीय देखाय छे

उत्तरपक्ष – पूर्वोक्त समारु सर्व कथन असत् छे, कारण के जेटलां दृष्टांत तमे कह्यां ते सर्व वैषम्य छे, तेथी सिद्धि काइपण थई शकती नथी लोढानो गोलो पतरारूप थई जल उपर जे तरे छे ते परिणामांतर थवाथी तरे छे, इत्यादि, परंतु वेदमन्त्रोथी संस्कार करीने ज्यारे पशुउने मारवामा आवे छे, त्यारे तेउमां परिणामातर शुं थाय छे ? शु ते परिणामातरथी, ते पशुउने मारता डुःख थतु नथी ? डुःखथी तो तेउं प्रगट अरराट शब्द करे छे तो एवे लोहपत्रनु दृष्टात केवी रीतें समीचीन थइ शके छे ?

पूर्वपक्ष– यज्ञमां जे पशु मारवामां आवे छे, ते सर्व देवता थई जाय छे, आ यज्ञ करवामा परोपकार छे

उत्तरपक्षः– आ कथनमां प्रमाण शुं छे ? प्रत्यक्ष प्रमाण तो नथी, कारण के ते तो इंद्रिय संबंध वर्त्तमान वस्तुनुं ग्राहक छे. “ संबंधोवर्त्तमानं च, गृह्यते चक्षुरादिनेति वचनात्. ” तेमज अनुमान पण नथी, कारण के तत्प्रतिबद्ध लिंग कोइपण देखातुं नथी. वली आगम प्रमाण पण नथी, कारण के आगम तो झगडानुं घर छे, तेथी तमारुं कथन सिद्ध थयुं नहि. तथा अर्थापत्ति अने उपमान आ बंने अनुमाननी अंतर्गत छे, तेथी अनुमानना खंडनथी ते बंनेनुं पण खंडन थइ गयुं.

पूर्वपक्षः– जेम तमे जिनमंदिर बनावतां पृथ्वीकायादि जीवोनी हिंसा थतां परिणामविशेषथी तेने पुण्यरूपें कल्पोछो, तेम अमे पण यज्ञमां जे हिंसा कराय छे, ते पुण्यनिमित्त थाय छे, एम मानियें छियें, कारण के वेदोक्त विधि विधानरूप परिणामविशेष अहींयां पण निःसंदेह होवाथी केम पुण्य न थाय ?

उत्तरपक्षः– परिणामविशेष पण तेज, पुण्यनुं कारण थाय के ज्यां बीजो कोइ उपाय न होय, तेमज यत्नाथी प्रवृत्ति होय. तेवी प्रवृत्ति जिनमंदिरमां थइ शके छे. वली जिनमंदिर विना श्री भगवान्नी प्रतिमा रही शकती नथी, जे स्थानमां प्रतिमा राखवामां आवे तेनुं नाम जिनमंदिर छे. जो कहो के जिनप्रतिमा पूजवाथी शुं लाभ छे ? तो अमारो सवाल ए छे के पुस्तकमां ककारादि अक्षर लखोछो, ते लखवाथी शुं लाभ छे ? जो कहो के ककारादि अक्षरोनी स्थापना देखवाथी वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, तो तेवीजरीतें जिनप्रतिमा देखवाथी जिनेश्वर भगवान्ना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे. जो कहो के प्रतिमा तो कारीगरें पाषाणनी बनावी छे, तेथी शुं ज्ञान थाय छे? तो अमे पुछियेंछियें के वेद, कुरान, इंजील प्रमुख पुस्तक लिखारीउए शाही तेमज कागलोथी बनावेलां छे, तेउनाथी शुं ज्ञान थाय छे ? जो कहो के ज्ञान तो अमारी समजणथी थाय छे, अक्षरोनी स्थापना अमारा ज्ञाननुं निमित्त कारण छे; तेवीज रीतें जिनेश्वर देवना स्वरूपनुं ज्ञान तो अमारी समजणथी थाय छे, परंतु ते स्वरूपनुं निमित्त कारण प्रतिमा छे. कारण के जो बुद्धिमान् पुरुष, कोइ वस्तुनो नकशो अर्थात् चित्र नहि देखे तो ते वस्तुनुं स्वरूप कदापि जाणी शकशे नहि. ते कारणथी जे बुद्धिमान् छे ते अवश्य स्थापना माने छे.

जो एम कहो के परमेश्वर तो निराकार, ज्योति स्वरूप,सर्वव्यापक छे तेनी मूर्त्ति केवीरीतें बनी शके ?

उत्तर – आ तमारु केहेवुं अवास्तविक छे कारण के जो तमे परमेश्वरनु रूप, आकार, (मूर्त्ति) मानता नथी, तो तो वेद, कुरान, इंजील तेओने परमेश्वरनां वचन मानवां केवीरीतें सत्य थइ शके छे ? मुखविना साक्षरशब्द कदापि थइ शकता नथी

जो कहो के ईश्वर मुख विनाज शब्द करी शके छे, तो ते वातमां कांइ प्रमाण नथी ते कारणथी साक्षर शब्द मुखविना निकळता नथी, अने शरीर विना मुख होतु नथी, तेवास्ते जो कोइ वादी कोइ पुस्तकने ईश्वरवचन मानशे, तो जरुर तेने ईश्वरनु मुख तेमज शरीर मानवुं पडशे, अने ज्यारे शरीर मानशे, त्यारे भगवान्नी प्रतिमा पण जरुर मानवी पडशे, ज्यारे प्रतिमा मानवी सिद्ध थइ, त्यारे मंदिरपण जरुर बनाववु पडशे ते कारणथी जिनमंदिर बनाववु ते अवश्य कर्त्तव्य छे व ली जिनमदिर बनावनारा यत्नापूर्वक बनावे छे, तेमज जिनमदिर बनावतां पृथ्वीकायादि जीव जे अस्पष्ट चैतन्य छे, तेओनी हिंसा थतां अल्प पाप अने बहु निर्जरा छे, तेथी जिनमदिर तथा जिनप्रतिमा अवश्य उपादेय छे वली तमारा मतनां श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास प्रमुखमां यम, नियमादिथी पण स्वर्गप्राप्ति कही छे, तो पछी कृपण, दीन, अनाथ एवा पचेंद्रिय जीवोनो वध यज्ञमां शा वास्ते करो छो ? तमे निरपराधी, कृपण, दीन, अनाथ जीवोनो यज्ञादिमां वध करोछो तेथी तो सिद्ध थाय छे के तमे तमारा सर्वपुण्यनो नाश करी दुर्गतिमां जशो तमारा शुभ परिणाम थवा ते अत्यत दुर्लभ छे

जो कहो के जिनमदिर बनाववामां पण हिंसा थाय छे, ते कारणथी ते बनाववामां पण पुण्य नथी

उत्तरपक्ष –आ तमारु केहेवुं अयुक्त छे, कारण के जिनमंदिर तेमज जिनप्रतिमा देखवाथी, तेमना दर्शनथी, तेमज भगवान्ना गुणानुरागथी अनेक भव्यजीवोने बोधिलाभ (सम्यक्त्व) थाय छे वली पूजातिशय देखवाथी मन प्रसाद थाय छे, मन प्रसादथी समाधि थाय छे, अनुक्रमें निःश्रेयस अर्थात् मोक्षनी प्राप्ति थाय छे ॥ तथा च भगवान् पंचलिंगी

कारः ॥ पुढवाइयाण जइविहु, होइ विणासो जिणालयाहिंतो ॥ तव्वि-
सयावि सुदिठिस्स, नियम उंअत्थि अणुकंपा ॥ १ ॥ ए आहिं तो बुद्धा,
विरिया रस्कंति जेण पुढवाई ॥ इत्तो निव्वाणगया, अवाहया आजवम-
णंतं ॥ २ ॥ रोगसिरावेहोइव, सुविज्ञ किरियाव सुप्पउत्ताउ ॥ परिणाम
सुंदरच्चिय, चिठासे वाह जोगेवित्ति ॥ ३ ॥ भावार्थः– यद्यपि जिनमंदिर
बनाववामां पृथिवीकायादि जीवोनी हिंसा थाय छे, तोपण सम्यक् दृष्टि
जीवोनी ते जीवो उपर निश्चयपूर्वक अनुकंपा छे ॥ १ ॥ तेउनी हिंसाथी
निवृत्त थइने ज्ञानियो निर्वाण पामेला छे. केवा निर्वाणने? अनंतकाल-
सुधी रेहेनारा अव्याबाध सुखमय निर्वाणने ॥ २ ॥ जेम रोगिनी नाडी
प्रमुखने बहुज कालथी वैद्य विंधे छे, ते वैद्यना प्रयोगमां परिणामनी
सुंदरताथी कदाचित् ते रोगी मरणपण पामे तोपण वैद्यने जेम पाप नथी,
तेमज जिनमंदिर बनाववामां यत्नपूर्वक प्रवर्त्तता पुरुषोने, ते जीवो उ-
पर अनुकंपाज छे, अने वेदकथन मुजब वध करवामां किंचित् मात्र प-
ण पुण्य अमे देखता नथी.

पूर्वपक्षः– ब्राह्मणोने पुरोडाश (यज्ञमां होमवानुं बलिदान) आदि
प्रदान करवाथी पुण्यानुबंधी गुण थाय छे.

उत्तरपक्षः–आ तमारूं केहेवुं वास्तविक नथी. कारण के पवित्र सुव-
र्णादिप्रदान मात्रथी पण पुण्यउपार्जननो संभव थायछे, अने कृपण, दीन
अनाथ, पशुगणने मारवां, तेमज तेउना मांसनुं दान करवुं, आ केवल त-
मारी निर्दयता तेमज मांसलोलुपताज बतावी आपेछे.

पूर्वपक्षः–अमे निःकेवल प्रदानमात्रज पशुवध क्रियानुं फल मानता
नथी, परंतु भूति (लक्ष्मी) आदिपण प्राप्त थायछे. यदाह श्रुतिः "श्वेत-
वायव्यमजमालभेत भूतिकामइत्यादि" भावार्थः–श्वेतवर्णना बकराने,
जेनो स्वामीवायु देवताछे, एवा बकराने आलभेत हिंसेत् अर्थात् मारे,
कोण मारे? लक्ष्मीना कामी मारे.

उत्तरपक्षः–आ तमारूं केहेवुं पण व्यभिचार पिशाचथी ग्रस्त थवाथी
अप्रामाणिक छे. कारण के भूति (लक्ष्मी) अन्य उपायथी पण साध्यमानछे.

पूर्वपक्षः– परंतु यज्ञमां बकराप्रमुख जे मारवामां आवेछे, ते मरीने
देवगति प्राप्त करेछे, आ यज्ञमां मरनार जीवो उपर उपकार छे.

उत्तरपक्ष –आ तमारु केहेवुं पण प्रमाणना अभावथी वचनमात्र छे, कारण के यज्ञमां मारवामा आवेला पशुओमांथी कोइ पण सजातिनो लाज थवाथी हर्षवत थइ आ लोकमा पाछो आवी स्वर्गना सुखनु निरूपण करतो देखातो नथी

पूर्वपक्ष–आ कथनमा आगम प्रमाण छे यथा ॥ औषध्य पशवोवृक्षा, स्तिर्यंच पक्षिणस्तथा ॥ यज्ञार्थं निधन प्राप्ता प्राप्नुयत्युच्छ्रित पुनरित्यादि॥ भावार्थ –औषधी, अजादि पशु, किंजल्क (कमलनाफुलमरिहेनार) आदि पक्षी, जेओनो यज्ञमा होम करवामा आवेछे, तेओ उन्नति प्राप्त करेछे

उत्तरपक्ष –आ पण तमारुं केहेवुं वास्तविक नथी तमारु आगम पौरुपेय छे के अपौरुपेय छे, इत्यादि विकल्पोनु हवे पछी खडन करवामां आवशे वली श्रौत (वैदिक) विधिथी पशुओने मारवाथी जो स्वर्ग प्राप्ति थती होय तो तो कसाइ प्रमुख पण स्वर्गवासी थइ जशे तथाच पठन्ति पारमर्षा ॥ यूपं छित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमं ॥ यद्येव गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ १ ॥ वली जो अपरिचित, अस्पष्टचैतन्य, अनुपकारी पशुओने मारवाथी स्वर्गप्राप्ति थती होय तो, परिचित, स्पष्ट चैतन्य, तेमज परमोपकारी मातपितादिने मारवाथी याज्ञिकोने तेनाथी विशेष पदनी प्राप्ति थशे तेथी तेमपण करवुं जोइयें

पूर्वपक्ष –"अचिंत्योहि मणिमत्रौपधीना प्रभावइति वचनात्" ते कारणथी वेदना मत्रोनी अचिंत्य शक्ति होवाथी ते मंत्रोथी संस्कार करा येला पशुने मारवाथी अवश्य स्वर्गप्राप्ति थायछे

उत्तरपक्ष –आ कथन पण व्यभिचारी छे कारण के आ लोकमां जेम विवाह,गर्भाधान,जन्मसमयादिविषे ते मत्रोनो व्यभिचार देखवामां आवेछे,तेम अदृष्ट स्वर्ग आदिमां पण तेओना व्यभिचारनु अनुमान करियें छियें कारण के वेदोक्तमंत्रोथी संस्कार करायेला विवाहनी अनतरज स्त्री, विधवा, अल्पायुष्य, दरिद्रताप्रमुख उपद्रवथी वियोगी रहेली, देखवा मां आवेछे तेमज वेदमंत्रोना संस्कार विना पण केटलापक विवाह (लग्न) करनारा सुखी, धनवान् इत्यादि देखवामां आवेछे

पूर्वपक्ष–जे विवाहआदिमां विधवा आदि थइ जायछे, त्यां क्रियाना वैगुण्य (खामी) थी विसंवाद (विरुद्धता) थायछे

उत्तरपक्षः—आ तमारा केहेवाथी ते संशय कदी दूर थशे नहि. शुं त्यां क्रियानुं वैगुण्य विसंवादनो हेतुछे? के वेदमंत्रोनी असमर्थता विसंवादनो हेतु छे?

पूर्वपक्षः—जेम तमारा मतमां "आरोग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दितु" इत्यादि वचनोनुं कालांतरेंज फल चाहोछो, तेम अमारा अभिमत वेदवचनोना फलनी पण आ लोकमां कल्पना करता नथी, परंतु लोकांतरमांज तेनुं फल थायछे, ते कारणथी विवाह आदिना उपालंभनो अवकाश नथी.

उत्तरपक्षः—अहो विचित्रवादि! जेम वर्त्तमान जन्मविषे विवाह आदिमां प्रयुक्त मंत्रसंस्कारथी तेनुं फल भविष्य जन्ममां थाय छे, तेमज बीजा, त्रीजा आदिजन्ममां पण विवाहआदिना पुण्यहेतु मानवाथी अनंतभवोनुं अनुसंधान थशे, एम तो कदापि संसारनी समाप्ति जेम थशे नहि, तेम कोइने मोक्षप्राप्ति पण थशे नहि. तेथी सिद्ध थयुं के वेदज अपर्यवसित (अनंत) संसार वल्लरी (वेल) नुं मूल छे. जैननी आरोग्यादि प्रार्थना, असत्य, अमृषा भाषा छे, परिणाम विशुद्धिनुं कारण होवाथी दोष कर्ता नथी; कारण के तेमां भावआरोग्य प्रमुखनी जे विवक्षा छे, अने ते आरोग्यपणुं, चतुर्गति संसाररूप भावरोगने क्षय करवारूप होवाथी, उत्तम फल छे; तेने वास्ते जे प्रार्थना करवी ते विवेकवान्ने केम आदरवा योग्य न होय? एम पण न केहेवुं के परिणामशुद्धिथी ते फलनी प्राप्ति नथी, कारण के सर्ववादिओने भावशुद्धिथी फल पामवामां विवाद नथी, वली एमपण न कहेवुं के वेदविहित हिंसा बुरी नथी, कारण के सम्यक्दर्शन, ज्ञानसंपन्न, अर्चिर्मार्गप्रतिपन्न वेदांतवादियोयें पण तेने निंदी छे. "तथाच तत्त्वदर्शिनः पठन्ति ॥ श्लोक॥ देवोपहारव्याजेन, यज्ञव्याजेन वाथवा ॥ घ्नंति जंतून् गतघृणा, घोरां ते यांति दुर्गतिं ॥ १ ॥ वेदांतिकाअप्याहुः ॥ अंधे तमसि मज्जामः, पशुभिर्ये यजामहे ॥ हिंसा नाम भवेद्धर्मो, न भूतोन भविष्यति ॥ तथा अग्निर्मामेतस्मात् हिंसाकृतादेनसोमुंचतुछांदसत्वान्मोचयतु इत्यर्थः" व्यासेनाप्युक्तं॥ ज्ञानपालिपरिक्षिप्ते, ब्रह्मचर्यदयांभसि ॥ स्नात्वातिविमले तीर्थे, पाप पंकापहारिणि ॥ १ ॥ ध्यानाग्नौ जीवकुंडस्थे, दयामारुतदीपिते ॥ असत

कर्म समिरक्षेपे, रग्निहोत्र कुरूत्तम ॥ २ ॥ कषायपशुनिर्दुष्टे, धर्मकामार्थ नाशके ॥ शममन्त्रहुतैर्यज्ञ, विधेहि विहित बुधैः ॥३॥ प्राणिघातात्तुयोधर्म, मीहते मूढमानस ॥ सवांछति सुधावृष्टि, कृष्णाहिमुखकोटरात् ॥४॥ इ०

वली यज्ञ करनाराओ पूजाय छे एम जे तमे कह्यो छो ते पण असार छे, कारण के अज्ञानि जनोज तेओनी पूजा करे छे, परंतु बुद्धिमान् करता नथी, मूर्खोनु पूजन अप्रामाणिक छे, कारण के मूर्ख तो कुतरा, गधेडाने पण पूजेछे

वली तमे कह्यु के वेदविहिता हिंसा, देवता, अतिथि, पितृप्रीतिसंपादक होवाथी दोषरूप थती नथी, आ पण असत्य छे, कारण के देवताओने तो संकल्पमात्रथीज अभिमत आहारना रसनो स्वाद प्राप्त थइ जाय छे, वली देवताओना शरीर वैक्रिय रूप छे, ते तमारी जुगुप्सित प शुमासादि आहुति लेवाने इच्छावान् थताज नथी जो देवताओने पण केवल आहारी मानशो, तो देवताओनां शरीर तमे जे मंत्रमय मान्यां छे, तेने विरोध आवशे, तेमज अभ्युपगम (करेला निर्णय)ने बाध आवशे, देवताओनां शरीर मन्त्रमय तमारा मतमां असिद्ध नथी "चतुर्थ्यंत पदमेव देवता इति जैमिनीयवचनप्रामाण्यात् ॥ तथाच ॥ मृगेंद्र शब्देतरस्ये यु गपद्भिन्नदेशेषु यष्टेषु न सा प्रयाति सांनिध्य मूर्त्तत्वादस्मदादिवदिति "

तथा जे वस्तुनी आहुति देवताओने आपो छो, ते तो भस्म भावमात्र थई जाय छे, तो पछी देवता शुं ते भस्म अर्थात् राख खाय छे ? तेथी तमारु कहेवु प्रलापमात्र छे

वली आ जे त्रेताग्नि छे ते तेत्रीश क्रोड देवताओनुं मुख छे, " अग्नि मुखावै देवा इति श्रुते " त्यारे तो उत्तम, मध्यम, अधम सर्व देवता एकज मुखथी खानारा सिद्ध थया, सर्वे पोतपोतामां जूठ (अजीठुं) खानारा बनी गया, तेथी तो अनार्योथी पण अधिक थईगया,कारण के अनार्यो जो के एकपात्रमां एकठा खाय छे, परंतु एक मुखथी खाता नथी

वली एक शरीरमां अनेक मुख छे, ए वात तो अमे आगल पण सांभलता हतो, परंतु अनेक शरीरोनु एक मुख, आ तो मोटुं आश्चर्य छे, ज्यारे सर्व देवताओनु एक मुख मान्यु, त्यारे कोईपुरुषें जो एक देवतानुं पूजादिथी आराधन कर्युं, अने बीजा देवताओनी निंदा करी विराधना

करी, तो तो एक मुखथी युगपत् अनुग्रह, निग्रह वाक्यना उच्चारणमांज व्यभिचारनो प्रसंग आवशे.

वली मुख देहनो नवमो भाग छे, ज्यारे देवताउनां मुखज दाहात्मक छे, त्यारे एकेक. देवतानुं शरीर दाहात्मक होवाथी त्रणे भुवन भस्मीभूत थईजवां जोइयें ? आटली चर्चाथी सखुं.

वली कारीरी यज्ञादिमां वृष्टयादि फलनो जे अव्यभिचार छे, ते फलमां आहुतिथी संतुष्ट थयेला देवतानो अनुग्रह जे तमे कहोछो ते पण अनेकांतिक छे, कोइस्थलें व्यभिचार पण देखवामां आवे छे. ज्यां व्यभिचार नथी, त्यां पण आहुतिनुं भोजन करवाथी अनुग्रह नथी, परंतु ते देवताविशेष, अतिशय ज्ञानी छे, पोताने उद्देशीने करेला पूजा उपचारने देखीने, पोताना स्थानमांज स्थित थया थका, पूजा करनारउपर प्रसन्न थईने, तेनुं कार्य पोतानी इच्छाथी करी आपे छे. अनुपयोगथी नहि जाणता, अथवा जाणता थका पण, पूजकना अभाग्यथी कार्य नथी पण करता ? कारण के द्रव्य, क्षेत्र, काल भावआदिनी सहायताथी कार्यनुं थवुं नजरे पडेछे; अने ते जे पूजा उपचार छे, ते निःकेवल पशुउनाज मारवाथी थई शके छे एम नथी, परंतु बीजी रीतें पण थइ शके-छे, तो पछी जेनुं फल एक पापरूपज छे एवी सौनिक (कसाइ) वृत्ति करवाथी शुं लाभ छे ?

वली जे छगल अर्थात् बकरानुं मांस होमवाथी परराज्य वश करनारी सिद्धादि देवीने संतुष्ट करवानुं जे अनुमान छे, तेमां शुं आश्चर्य छे ? केटलाएक क्षुद्र देवताउ तेवीज रीतें संतुष्ट थाय छे, त्यां पण ते दुष्ट देवता पोतानी पूजा देखीने राजी थाय छे, परंतु मलिन मांस खावाथी राजी थता नथी. जो कदी होम करेली वस्तुने खाता होय तो निंबपत्र कडवांतेल, आरनाल (बाकला) धूमांश आदि होम करेलां द्रव्य पण तेउनुं भोजन थई जशे. वाह ! शुं तमारा देवता सुंदर भोजन करे छे ?

वली अतिथिनी परोणागत सुंदर संस्कार करेला पक्वान्न आदिथी पण थई शके छे, तो पछी तेउने वास्ते महोक्ष, महाजादिनी कल्पना करवी, ते निःकेवल तमारी निर्विवेकता बतावी आपे छे.

वली श्राद्धादि करवाथी पितरोनी जे प्रीति मानो छो, ते पण अने-

कांतिक छे, कारण के केटलायक श्राद्ध करता नथी तो पण तेउनी संतान वृद्धि देखवामां आवे छे जुक्तनाटोलानी जेवी वृद्धि देखाय छे तेथी श्राद्ध आदि जे करवु छे, ते मुग्ध लोकोने विप्रतारण (ठगवा) मात्रज फल थाय छे जे पितरो लोकांतर पामेला छे, ते पोताना शुभ अशुभ कर्मोने अनुसारे देव, नारकादि गतियोमां सुख दुःख भोगवी रह्या छे, तो पछी तेउं पुत्र प्रमुखें आपेला पिंडोने केवी रीतें भोगववानी इच्छा करी शके छे ? " तथाच युष्मयूथिन पठन्ति ॥ मृतानामपि जंतूनां, श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणं ॥ तन्निर्वाणप्रदीपस्य, स्नेहः संवर्द्धयेच्छिखामिति ॥

तथा श्राद्ध करवाथी ते पितरोने पुण्य केवीरीतें पहोचे छे ? कारण के पुण्यतो बीजाए करेलु छे, वली पुण्य पोते जड रूप छे, तथा पगरहित छे, तेथी पितरोने पहोंची शकतुं नथी जो कहो के उद्देश तो पितरोनो छे, परंतु पुण्य, श्राद्धकरनारा पुत्रादिने थाय छे, ते पण केहेवुं वास्तविक नथी पुत्रादिने पुण्य थतु नथी, तेनु कारण ए छे के पुत्रादिना मनमां वासना एवी नथी के जे कार्य अमे करियें छियें तेनु फल अमने मले, तो पछी पुण्यनी भावना विना पुण्य फल मलतुं नथी ते कारणथी पितरो के पुत्रादि कोइने श्राद्ध करवानु फल मलतुं नथी, परंतु अधरथीज त्रिशंकुना दृष्टांतनी पेठे विलीन थई जाय छे

वली पापानुबंधि जे पुण्य छे, 'ते तत्त्वथी पापरूपज छे' जो कहो के ब्राह्मण जे काइ खाय छे, ते पितरोने गमे छे, ते वात सत्य छे एवी प्रतीति तो तमनेज थती हशे, अमारी नजरमां तो ब्राह्मणोनु मोटु पेट थयेलु आवे छे, परंतु तेउंना पेटमा प्रवेश करीने, पितरो खाता होय एम कदापि देखता नथी भोजन अवसरे ब्राह्मणोना उदरमां प्रवेश करता पितरोनुं कांइपण चिह्न अमारी दृष्टिए पडतु नथी केवल ब्राह्मणोज तृप्त थता देखियें छियें

वली तमे कह्यु हतु के अमारी पासे आगम प्रमाण छे, तो पुछियें छियें के, ते तमारु आगम पौरुषेय छे ? के अपौरुषेय छे ? जो कहो के पौरुषेय छे, तो शु ते सर्वज्ञनु करेलुं छे ? के असर्वज्ञनु करेलु छे ? जो प्रथम पक्ष मानशो तो तमारा मतने व्याहति थशे, कारण के तमारो आ सिद्धांत छे " अतींद्रियाणामर्थानां, साक्षाद्द्रष्टा न विद्यते ॥ नित्ये

न्योवेदवाक्येभ्यो, यथार्थत्वविनिश्चयः ॥ १ ॥ सारांश के अतींद्रिय पदार्थोनो कोइ साक्षात् द्रष्टा नथी. बीजो पक्ष मानशो तो दूषणवालो (असर्वज्ञ) कर्त्तानां शास्त्रो उपर विश्वास थतो नथी. जो कहो के अपौरुषेय छे, तो संभवज थइ शकतो नथी. स्वरूप निराकरणथी घोडाना शृंगरूप पुरुष क्रियानुगत तेनुं रूप छे, सारांश के पुरुषक्रिया विना ते केवी रीतें थइ शके छे ? ते कारणथी जे साक्षर वचन छे, ते पौरुषेयज छे, कुमार संभवादि वचननी जेम. वेद पण वचनात्मकज छे " तथा चाहुः ॥ ताल्वादिजन्मा ननु वर्णवर्गो, वर्णात्मकोवेद इति स्फुटं च ॥ पुंसश्च ताल्वादिरतः कथं स्या, दपौरुषेयोयमिति प्रतीतिः ॥ १ ॥ इति " श्रुतिने अपौरुषेय अंगीकार करी, तो पण तदर्थव्याख्याने पौरुषेयज अंगीकार करी छे. अन्यथा " अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः " तेनो अर्थ " स्वमांसं भक्षयेत् इति " एम नियामकना अभावथी केम न थई जाय ? ते कारणथी शास्त्रने पौरुषेयज मानवां ते श्रेय छे. तमारा हठथी कदी वेद अपौरुषेय मानियें, तो तेथी वेदनी प्रमाणता थशे नहीं, कारण के प्रमाणता आप्त पुरुषने आधीन छे. ज्यारे वेद प्रमाण न थया, त्यारे ते वेदनुं कथन, तथावेदानुसारिणी स्मृतियो पण प्रमाणभूत थयां नहीं, तेथी हिंसामय यज्ञ तथा श्राद्धादिविधि पण प्रमाणथी विरुद्ध थया.

पूर्वपक्षः– " न हिंस्यात् सर्वभूतानि " इत्यादिथी जे हिंसानो निषेध करेलो छे, ते औत्सर्गिकमार्ग छे, अर्थात् सामान्य विधि छे, अने वेदविहिता जे हिंसा छे ते अपवाद मार्ग छे. अर्थात् विशेष विधि छे. ते कारणथी, तथा अपवाद उत्सर्गथी बलवान् होवाथी वेदविहिता हिंसा दोषनुं कारण नथी " उत्सर्गापवादयोरपवादविधिर्बलीयानिति न्यायात् " तमारा जैनमतमां पण हिंसाना एकांत निषेध नथी. केटलांएक कारणोमां पृथ्वीकायादि जीवोनी हिंसा करवानी आज्ञा छे. वली ज्यारे साधु रोग पीडित थाय छे, तेमज असमर्थ अने ग्लान थाय छे, त्यारे आधाकर्मादि आहार ग्रहण करवानी पण आज्ञा छे, तेवीज रीतें अमारा मतमां याज्ञिकी हिंसा देवता, अतिथिनी प्रीतिवास्ते पुष्ट आलंबनरूप होवाथी अपवादरूप छे, ते कारणथी तेमां दोष नथी.

उत्तरपक्षः– अन्यकार्यवास्ते उत्सर्गवाक्य, अने अन्यकार्यवास्ते अप-

वादवाक्य, केहेवा, ते उत्सर्ग, अपवाद कदी पण थइ शकता नथी परंतु जे अर्थवास्ते शास्त्रमा उत्सर्ग कहेल होय तेज अर्थवास्ते अपवाद केहेवो जोइये, त्यारेंज उत्सर्ग अपवाद थइशके ठे ते घने उन्नत निम्नादि (उंचा नीचां) व्यवहारवत् परस्पर सापेक्ष होवाथी एक अर्थना साधक थइ शके ठे जेम के जैनोए संयम पालवा अर्थे नवकोटि विशुद्ध आ हार ग्रहण करवो, ते उत्सर्गमार्ग ठे तेवीज रीतें द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी आपत्तिमां पडता गत्यतरना अन्नावथी, पचकादि यत्नापूर्वक अ नेषणीय आहारादिने ग्रहणकरवा ते अपवादमार्ग ठे, तेपण संयम पाल वाने वास्तेज ठे एमपण न केहेवुं के जेसाधुने मरणज एक शरण ठे, तेने गत्यंतर अन्नावनी असिद्धि ठे ॥ उक्त चार्षिपि ॥ सवत्थ संजम सं जमाउं, अप्पाणमेवरखिज्ज ॥ मुच्चइ अइ वायाउं, पुणो विसोहीनया विरइ ॥१॥ इत्या गमात् ॥ जावार्थः—सर्वरीतें संयम पालवो, जो सयममा दूषण लागवाथी प्रा णनी रक्षा थती होय तो संयममां दूपण पण लगावीने रक्षण करवु, प्रा ण रेहेवाथी प्रायश्चित्तद्वारा ते पापथी मुक्त थइ शुद्ध थवाशे, अने अ विरतिपणु पण रहेशे नहि वली आयुर्वेदमां पण कह्यु ठे के, जे वस्तु कोइ रोगमां कोइ अवस्थामां अपथ्य ठे, तेज वस्तु तेज रोगमा वीजी अवस्थामा देश, काल जोइ आपे तो पथ्य ठे देशादि अपेक्षाए ज्वरवा लाने दहीं पण खावा देवामां आवे ठे तथा च वैद्या ॥ कालाविरोधि निर्दिष्ट, ज्वरादौ लंघनं हित ॥ क्षतेऽनिलश्रमक्रोध , शोककामकृतज्वरात् ॥ १ ॥ जेम प्रथम अपथ्यनो परिहार करवो, अने वीजी अवस्थामा ते नेज भोगववं, आ घने प्रसंगें रोगनु निवारण करवानुं प्रयोजन ठे तेथी एम सिद्ध थाय ठे के एकज वस्तुविषयक उत्सर्ग अपवाद ठे

तमारो उत्सर्ग एक अर्थवास्ते ठे, अने, अवपाद वीजा अर्थ वास्ते ठे जुउ "न हिंस्यात् सर्वभूतानि" आ जे उत्सर्ग ठे, ते दुर्गतिना निषे ध वास्ते ठे, अने जे तमारी अपवाद, हिंसा ठे, ते देवता, अतिथि, पि तृउंनी प्रीतिसंपादन अर्थे ठे ते कारणथी परस्पर निरपेक्ष होवाथी, उत्सर्ग, अपवाद विधि थइ शकता नथी हवे विचारो के तमारो अप वाद, उत्सर्गविधिथी केवीरीतें बलवान् थइ शके ठे ?

एम पण न कहेवु के वैदिक हिंसानो जे विधि ठे, ते स्वर्गहेतु हो

वाथी, दुर्गतिना निषेधवास्तेज छे. वैदिक हिंसा स्वर्गनो हेतु नथी. ते उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें. वैदिक हिंसा विना पण स्वर्गप्राप्ति थइ शके छे. गत्यंतरना अनावमांज अपवाद थइ शके छे. यज्ञ करवाथी स्वर्गनो निषेध थाय छे, एम अमेज मात्र कहेता नथी, परंतु व्यासजी पण कहे छे. यदाह व्यासमहर्षिः ॥ पूजया विपुलं राज्य, मग्निकार्येण संपदः ॥ तपः पापविशुद्ध्यर्थ, ज्ञानं ध्यानं च मुक्तिदं ॥ १ ॥ अहियां अग्निकार्य शब्दवाच्यना यागादि विधि उपायांतरथी जे संपत् साध्य छे, तेनोज हेतु कहेतां थकां, आचार्य ते यागने सुगतिनो हेतुज कदर्थन करी गया छे, तथा तेज व्यासजी नाव अग्निहोत्र " ज्ञान पाली " इत्यादि श्लोकोथी स्थापन करी गया छे. इति मीमांसकमतखंडन. ॥ ५ ॥

हवे चार्वाकमतनुं खंडन लखियेंछियें. चार्वाक कहेछे के आत्माज नथी. तेथी मतावलंबी पुरुषो शा वास्ते वचन कलह करे छे? ज्यारे आत्मानोज अनाव छे, त्यारे जैन, बौद्ध, सांख्य, नैयायिक, वैशेषिक, तेमज जैमिनीय, आ जे छ दर्शनो छे, तेउ शा वास्ते निःकेवल लोकोने भ्रममां नाखीने नोगविलासथी छोडावे छे? वास्तवमां आत्मा एवी कोइ वस्तुज नथी, ते कारणथी अमारो मत सुंदर छे. जो आत्मा होय तो तेनी सिद्धि बतावो?

उत्तरपक्षः– प्रतिप्राणी स्वसंवेदन प्रमाण चैतन्यनी अन्यथा अनुपपत्तिथी सिद्ध छे. जुउ. आ जे चैतन्य छे, ते नूतोनो धर्म नथी, जो नूतोनो धर्म होय, तो तो पृथिवीनी कठिनतानी पेठे सर्व कालें, सर्व स्थलें उपलब्ध थवो जोइयें, ते सर्वदा उपलब्ध थतो नथी, कारण के लोष्टादिमां, तेमज मृत अवस्थामां चैतन्य उपलब्ध थतुं नथी.

पूर्वपक्षः– लोष्टादिमां, तेमज मृत अवस्थामां पण चैतन्य छे, केवल शक्ति रूपें छे, ते कारणथी उपलब्ध थतुं नथी.

उत्तरपक्षः–बे विकल्प न उल्लंघन करवाथी आ तमारुं कहेवुं अयुक्त छे. जुउ. ते शक्ति चैतन्यथी विलक्षण छे? के चैतन्यज छे? जो कहो के विलक्षण छे, तो तो शक्तिरूपें चैतन्य छे एम कहो नहि. कारण के पट विद्यमान छतां, पटरूपें घट रहेतोज नथी " आह च ॥ प्रज्ञाकरगुप्तोपि ॥ रूपांतरेण यदित, त्तदेवास्तीति मारटीः ॥ चैतन्यादन्यरूपस्य, नावे तद्विद्यते कथम् ॥ १ ॥ जो बीजो पक्ष मानशो तो तो चैतन्यज ने शा-

कि छे पछी ते शक्ति उपलब्ध केम थती नथी ? जो कहो के आवृत थवाथी उपलब्ध थती नथी, तो ते पण ठीक नथी, कारण के आवृति शब्दनो अर्थ आवरण छे ते आवरण शु विवक्षित परिणामनो अभाव छे ? के परिणामांतर छे ? के भूतोथी अतिरिक्त बीजी वस्तु छे ? तेमां, विवक्षित परिणामनो अभाव तो नथी कारण के एकांत तुच्छ होवाथी ते विवक्षित परिणाम अभावने आवरण शक्ति नथी, अन्यथा तेनुं अ तुच्छरूप होवाथी, ते पण भावरूप थइ जाय ज्यारे भावरूप थाय, त्यारे पृथिवी आदिमांथी अन्यतम थाय, कारण के "पृथिव्यादीनि भूतानि तत्त्वमिति वचनात्" अने पृथिवी आदि जे भूत छे ते चैतन्यनां व्यजक छे, परंतु आवरक नथी, तेथी, केवीरीतें आवरणपणु सिद्ध थाय ?

जो कहो के परिणामांतर छे, तो तेपण अयुक्त छे, कारण के परिणामांतर पण भूतस्वभाव होवाथी भूतोनी पेठे चैतन्यव्यंजकज थइ शके छे, आवरक थइ शकतुं नथी

जो कहो के भूतोथी अतिरिक्त वस्तु छे, तो ते कहेवुं बहुज असंगत छे कारण के भूतोथी अतिरिक्त (न्यारी) वस्तु मानवाथी "च त्वार्येव पृथ्व्यादिभूतानि" तत्त्वसंख्याने व्याघात थइ जशे

वली जुओ के आ जे चैतन्य छे ते एक एक भूतनो धर्म छे ? के सर्व भूतसमुदायनो धर्म छे ? एक एक भूतनो धर्म तो लागतो नथी, कारण के एक एक भूतमां देखातो नथी, तेमज एक एक परमाणुमां संवेदन उपलब्ध थतु नथी जो दरेक परमाणुमां होय तो पुरुष, सहस्र चैतन्य वृदनी पेठे परस्परभिन्नस्वभाव थाय, परतु एकरूप चैतन्य नज थाय, अने देखवामा तो एकरूप आवे छे "अहं पश्यामि" अर्थात् हुं देखुं छु हुं करूछु, एवो सकल शरीर अधिष्ठाता एक उपलब्ध थाय छे

जो समुदायनो धर्म मानो तो पण प्रत्येकमां अभाव होवाथी असत् छे कारण के जे प्रत्येक अवस्थामां असत् छे, ते समुदायमां थइ शकतुं नथी जेम रेती समूहमांथी तेल

जो कहो के मद्यांगोमा मदशक्ति नथी समुदायमा थइ जायछे, तेम चैतन्यपण थइ जाय तो, शु दोष छे ? आ पण अयुक्त छे कारण के प्रत्येक मद्य अंगमां मदशक्ति अनुयायी माधुर्यादि गुण देखाय छे, जुओ

माधुर्यादि इक्षुरसमां धातकी फूलोथी थोडी विकलता उत्पादक शक्ति देखियें छियें, तेवी रीतें चैतन्य, सामान्य प्रकारथी भूतोमां उपलब्ध थतुं नथी ; तो केवीरीतें भूतसमुदायथी चैतन्य थइ शकेछे? प्रत्येकमां असत् छे ते समुदायमां थइ जाय तो, सर्व समुदायथी सर्व कांइ बनी-जवां जोइयें. ए अति प्रसंग थशे.

वली जो तमे चैतन्यने धर्म मानेल छे, तो धर्मने अनुरूप धर्मीपण अवश्य मानवो जोइशे. जो अनुरूप नहि मानशो तो तो जल अने कठिनता आ बंनेने धर्म, धर्मि मानवा जोशे. एमपण न कहेशो के भूतज धर्मि छे, कारण के भूत, चैतन्यथी विलक्षण छे. जुओ. चैतन्य बोधस्वरूप, तेमज अमूर्त्त छे; अने भूत तेनाथी विलक्षण छे; तो केवीरीतें तेओनो परस्पर धर्म, धर्मिभाव थइ शकेछे? वली आ चैतन्य भूतोनुं कार्यपण नथी, कारण के अत्यंत विलक्षण होवाथी कार्यकारणभाव कदापि थइ शकतो नथी. उक्तं च ॥ काठिन्याबोधरूपाणि, भूतान्यध्यक्षसिद्धितः॥ चेतना च न तद्रूपा, सा कथं तत्फलं भवेत् ॥ १ ॥

वली जो चैतन्य भूतकार्य होय, तो तो सर्वजगत् प्राणिमय होवुं जोइयें. जो कहो के परिणतिविशेष सद्भावना अभावथी सकल जगत् प्राणिमय थइ जतुं नथी, तो ते परिणतिविशेष सद्भाव सर्वत्र शा वस्ते थतो नथी? ते परिणति पण भूतमात्र निमित्तज छे, तो केवी रीतें तेनुं कोइ स्थलें होवुं न होवुं सिद्ध थइ शकेछे? वली ते परिणतिविशेष केवा स्वरूपवालो छे? जो कहो के कठिनादिरूप छे, कारण के घुणादि जंतु काष्ठादिमां उत्पन्न थता देखियें छियें, ते कारणथी ज्यां कठिनत्वादि विशेष छे, ते प्राणिमय छे, बीजा नहि. आ पण व्यभिचार देखवाथी असत् छे. जुओ. अशिष्टपण कठिनत्वादि विशेष छतां कोइ स्थलें होयछे, अने कोइ स्थलें होता नथी, अने कोइस्थलें कठिनत्वादि विशेष विनापण संस्वेदज घन आकाशमां संमूर्छिम उत्पन्न थायछे.

वली केटलाएक जीव समानयोनिकपण विचित्रवर्ण संस्थानवाला देखाय छे. जुओ. गोबरआदि एकयोनिवालां पण केटलांएक कालां शरीरवालां तो केटलांएक पीलां शरीरवालां होयछे, बीजां विचित्रवर्णवालां होयछे. संस्थानपण तेओनां परस्पर भिन्न छे. जो भूतमात्रनिमित्त चैतन्य

होय तो सो एकयोनिवालां सर्व एकवर्ण, संस्थानवालां होवां जोइयें परंतु तेम सो थतां नथी ते कारणथी आत्माज तेवा तेवा कर्मना वश थी तेवा उत्पन्न थायछे एम निश्चयें मानवु जोइयें

जो कहो के आत्मा होय तो गमनागमन करतां केम न उपलब्ध थवो जोइयें? कारणके केवल देह विद्यमानज संवेदन उपलब्ध थायछे, अने देहनो अभाव थतां भस्म अवस्थामां देखातो नथी, ते कारणथी आत्मा नथी, परंतु संवेदनमात्रज एक छे, ते संवेदन देहनु कार्य छे, देहमांज आश्रित छे भींतना चित्रनी जेम चित्र भींत विना रही शकतु नथी, तेमज बीजी भींतपर संक्रमण पण थइ शकतु नथी, अने भींतनी सायेज तेनो विनाश थायछे संवेदननु पण तेवीज रीतें जाणी लेवुं आ कथनपण असत् छे कारणके आत्मा स्वरूपथी अमूर्त्त छे, अने आंतर शरीर अति सूक्ष्म छे, तेकारणथी दृष्टिगोचर नथी तडुक्तं ॥ अतराजावदेहोपि, सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यते ॥ निष्क्रामन् प्रविशन् वात्मा, नाजावोऽनीक्षणादपि॥ ॥ १ ॥ ते कारणथी आंत शरीरयुक्त पण आत्मा, जता आवतां देखातो नथी, परंतु लिंगथी उपलब्ध थायछे जुर्ज तत्काल उत्पन्न थयेला कृमि जीवने पण पोताना शरीरविषे ममत्व थायछे घातकने जाणीने दोडी जायछे, जेने जेनेविषे ममत्व छे, ते पूर्व ममत्व अभ्यास पूर्वक छे तेवुंज देखायछे केम के ज्या सुधी कोइ वस्तुना गुण दोष जाणता नथी, त्यां सुधी ते वस्तुमां कोइने पण ममत्व थतु नथी ते कारणथी जन्मनी आदिमां जे शरीरपर ममत्व छे, ते शरीर परिशीलन अभ्यासपूर्वक संस्कार निबंधन छे ते सबबथी आत्मानु जन्मांतरथी आववुं सिद्ध थायछे उक्तं च ॥ शरीरग्रहरूपस्य, चेतसः संजवो यदा ॥ जन्मादौ देहिनां दृष्ट, किन्न जन्मांतरा गति ॥ १ ॥

हवे आगति प्रत्यक्षथी देखाती नथी, तो केवीरीतें तेनो अनुमानथी बोध थाय? आ तमारा केहेवाथी कांइ दूषण आवतु नथी कारण के अनुमेय अर्थविषे प्रत्यक्षनी प्रवृत्ति थइ शकती नथी परस्पर विषयने परिहार करीने प्रत्यक्ष, अनुमाननु प्रवर्त्तवु बुद्धिमान लोको मानेछे हवे तमारु दूषण केवीरीतें लागेछे? आह च ॥ अनुमेयेस्ति नाध्यक्ष, मिति केषाग्रडुष्टता ॥ अध्यक्षस्यानुमानस्य, विषयो विषयो नहि ॥ १ ॥

वली जे चित्रनुं दृष्टांत तमे आप्युं छे, ते पण विषम होवाथी अयुक्त छे. जुर्ज. चित्र तो अचेतन, तथा गमनस्वनावरहित छे. आत्मा तो चैतन्य छे, तथा कर्मवशथी गमनागमन करे छे, तो केवीरीतें दृष्टांत तेमज दार्ष्टांतिकनी साम्यता थई ? जेम देवदत्त कोइ विवक्षित गाममां केटलाएक दिवस रहीने, पछी बीजे गाम जई रहे छे, तेम आत्मा पण विवक्षित नवमां देहनो त्याग करी नवांतरमां देह रचीने रहे छे.

वली तमे कह्युं के संवेदन देहनुं कार्य छे ते पण वास्तविक नथी. कारण के चक्षुरादि इंद्रियद्वारा उत्पन्न थवाथी चाक्षुषादि संवेदन कथंचित् देहथी पण उत्पन्न थाय छे, परंतु जे मानस ज्ञान छे, ते केवी रीतें देहनुं कार्य थई शकेछे ? तथा ते मानसज्ञान देहथी उत्पद्यमान थतुं होय तो, इंद्रिय रूपथी उत्पन्न थाय छे ? के अनिंद्रिय रूपथी उत्पन्न थाय छे ? के केश नखादि लक्षणथी उत्पन्न थाय छे ? प्रथम पक्ष तो ठीक नथी. जो इंद्रियरूपथी उत्पन्न थतुं होय, तो तो इंद्रिय बुद्धिवत् वर्त्तमामान अर्थनुंज ग्राहक होवुं जोइयें. इंद्रियज्ञान वर्त्तमान अर्थनेज ग्रहण करी शके छे, ते सामर्थ्यथी उत्पन्न थतुं मानस ज्ञान पण इंद्रिय ज्ञानवत् वर्त्तमान अर्थनेज ग्रहण करी शकशे.

हवे ज्यारे चक्षु रूप विषय व्यापार करे छे, त्यारेज रूपविज्ञान उत्पन्न थाय छे, बीजे वखते थतुं नथी. हवे ते रूपविज्ञान वर्त्तमान अर्थ विषय छे, कारण के वर्त्तमान अर्थ विषयज चक्षुनो व्यापार थाय छे. अने रूपविषयव्यावृत्तिना अनावमां मनोज्ञान छे, ते कारणथी ते नियत कालविषयक नथी. तेवीज रीतें बीजी इंद्रियोमां पण जाणी लेवुं. हवे केवीरीतें मनोज्ञानने वर्त्तमान अर्थग्रहण प्रसक्ति होय ? उक्तं च ॥ अक्षव्यापारमाश्रित्य, नवदक्षजमिष्यते ॥ तद्व्यापारोन तत्रेति, कथमक्षनवं नवेत् ॥ १ ॥

जो कहो के अनिंद्रिय रूपथी छे, तो पण ते अचेतन होवाथी अयुक्त छे. वली केश नखादि तो मनोज्ञानथी स्फुरित चिद्रूप उपलब्धज थतो नथी, तो केवीरीतें तेउंनाथी मनोज्ञान होय ? आह च ॥ चेतयंतो न दृश्यंते, केशश्मश्रुनखादयः ॥ ततस्तेन्यो मनोज्ञानं, नवतीत्यति साहसं॥१॥

जो केशनखादिथी प्रतिबद्ध मनोज्ञान होय तो तो तेउंनो उछेद थतां

मनोज्ञान मूलबीज रहेशे नहि वली केशनखादिनो उपघात थतां ज्ञानपण उपहत थवुं जोईयें ? परतु ते तो थतु नथी, ते कारणथी श्री जो पक्ष पण ठीक नथी

वली बीजी वात ए छे के मनोज्ञानमां सूक्ष्म अर्थ पृथक् करणपणु तेमज स्मृतिपाटवादि जे विशेष छे, ते अन्वयव्यतिरेकथी अन्यासपूर्वक देखाय छे जुओ तेज शास्त्र इहां, अपोहादि प्रकारथी जो वारंवार विचारियें, तो सूक्ष्म, सूक्ष्मतर अर्थावबोध उल्लास थाय छे, अने स्मृति पाटव अपूर्व वृद्धि पामे छे एवीरीतें एकशास्त्रविषे अन्यास करतां करतां सूक्ष्मार्थ स्पष्टीकरण शक्ति थतां, तेमज स्मृतिपाटव वधतां, अन्य शास्त्रोमां पण स्वाजाविक रीतें सूक्ष्म अर्थावबोध तेमज स्मृतिपाटव उल्लास पामे छे, ए प्रमाणे अन्यासहेतुक सूक्ष्मार्थ स्पष्टीकरणादि मनोज्ञानमां विशेष देखिये छियें वली कोइने अन्यास विना पण देखियें छियें ते वास्ते अवश्य परलोकनो अन्यास हेतु छे शा कारणथी ? कारणनी साथे कार्यनु अन्यथा अनुपपन्नपणु छे, ते प्रतिबंधथी तेना अदृष्ट कारणनी पण सिद्धि छे ते कारणथी जीवनुं परलोक गमन सिद्ध थायछे

वली देह, क्षयोपशमनो हेतु छे, तेथी देहने पण कथंचित् ज्ञाननो उपकारी अमे मानियें छियें देह दूर थवाथी सर्वथा ज्ञाननी निवृत्ति थती नथी जेम के अग्निथी घटमां कांइक विशेपता थाय छे, परंतु अग्निथी घटमां कांइक विशेपता थाय छे, परंतु अग्निनी निवृत्ति थतां, घटनो मूलबीज उछेद थतो नथी केवल कांइक विशेष छे ते दूर थई जाय छे, जेम के सुवर्णनी द्रवता तेवी रीतें अहींयापण देहनी निवृत्ति थतां तत्प्रतिबद्ध कांइक ज्ञानविशेप निवृत्त थाय छे, परंतु ज्ञाननो समूल उछेद थतो नथी जो देहनेज ज्ञाननु निमित्त मानशो, तेमज देहनी निवृत्ति थतां ज्ञाननी निवृत्ति मानशो, तो तो स्मशानमां देह भस्म थतां तो ज्ञान नाश पामे, परतु देह विद्यमान छतां मृत अवस्थामां केम होतु नथी ?

जो कहो के प्राण अपान पण ज्ञानना हेतु छे तेओना अजावथी ज्ञान रहेतु नथी ते कहेवुपण वास्तविक नथी कारण के प्राण अपान ज्ञानना हेतु थइ शकता नथी, परंतु ज्ञानबीजतेओनी प्रवृत्ति थाय छे जुओ ज्यारे

प्राण अपान करनारो मंद करवानी इछा करे छे, त्यारे मंद थाय छे, अने ज्यारे दीर्घनी इछा करे छे, त्यारे दीर्घ थाय छे. जो देहमात्र नैमित्तिक प्राणापान होय, अने प्राणापान नैमित्तिक विज्ञान होय, तो तो इछाने आधीनपणे प्राणापाननी प्रवृत्ति थशे नहि. कारण के जेनुं निमित्त देह छे, एवी जे उज्वलता तेमज श्यामता, ते इछाने आधीन थइ प्रवृत्त थती नथी. जो प्राणापान ज्ञाननुं निमित्त होय, तो प्राणापान मंद तेमज दीर्घ थवाथी, ज्ञानपण अल्प तेमज विशेष थवुं जोइयें. कारण के जेनुं कारण हीन अथवा अधिक थशे, तेनुं कार्यपण हीन अथवा अधिक थशे. जेम माटीनो पिंड मोटो अथवा नानो हशे, तो घट पण मोटो अथवा नानो थशे. नहि तो ते कारण थशे नहि. तमने पण प्राणापान न्यून अधिक थवाथी, ज्ञान न्यून अधिक थतुं नथी. परंतु तेथी उलटुं थतुं तो देखाय छे. कारण के मरण अवस्थामां प्राणापान अधिक थाय छे तो पण विज्ञान घटी जाय छे.

जो कहो के मरण अवस्थामां वातपित्तादि दोषोथी देह विगुणी थई जवाथी प्राणापाननी वृद्धि थतां पण ज्ञाननी वृद्धि थती नथी. तेवीज रीतें मृतअवस्थामां पण देह विगुणीभूत थवाथी चैतन्य नथी. आ पण तमारुं कथन असमीचीन छे. जो एम थाय तो तो मरीजनारां पण जीवतां थवां जोईयें ॥ तथा हि ॥ "मृतस्य दोषाः समीभवंति" अर्थात् मरण पछी वातपित्तादि दोष रहेता नथी, अने ज्वरादि विकार न देखावाथी दोषोनुं अविद्यमानपणुं प्रतीत थाय छे. वळी दोषोनुं जे समपणुं छे तेज आरोग्यता छे, "तेषां समत्वमारोग्यं क्षयवृद्धिविपर्ययः" ॥ इति वचनात् ॥ आरोग्यलाभथी देहने फरीथी जीवतां थवुं जोईयें, नहि तो देह कारणज नथी. चित्तनी साथे देहने अन्वय व्यतिरेक नथी. जो मरेलो जीवतो थाय तो अमे पण देहने कारण मानी लहियें.

पूर्वपक्षः– आ फरी जीवतां थई उठवानो प्रसंग तमारो अयुक्त छे. कारण के, अगर जो के दोष तो देहने वैगुण्यें करीने निवृत्त थइ गयेल छे, तो पण वैगुण्यपणानो परिणाम निवृत्त थतो नथी. जेम के अग्निथी काष्ठमां करायेलो विकार, अग्नि निवृत्त थया छतां पण ते निवृत्त थतो नथी.

उत्तरपक्षः– आ तमारुं केहेवुं अयुक्त छे. कारण के विकारपण बे प्र-

कारना छे एक विकार निवृत्त थइ जाय छे, अने बीजो निवृत्त थतो नथी निवृत्त विकार जेम के अग्निकृत सुवर्णमा द्रवता अनिवृत्त विकार जेम के अग्निकृत काष्ठमां श्यामता वायुआदि जे दोष छे, ते निवृत्त विकार छे चिकित्सा प्रयोगथी देखियें छियें जो वायुआदि दोषपण अनिवृत्त विकार होय तो तो चिकित्सा विफल थई जाय एमपण न कहेवु के मरणनी पहेला दोष निवृत्तविकार आरंभक छे, अने मरण समये दोष अनिवृत्त विकार आरंभक छे, कारण के एकने एकज जगाए निवृत्त, अनिवृत्तरूप बने विकार थइ शकता नथी

पूर्वपक्ष —व्याधि बेप्रकारना छें, एम लोकमां प्रसिद्ध छे एक साध्य, बीजा असाध्य साध्यव्याधि, चिकित्साथी दूर थइ जायछे असाध्य, चिकित्साथी दूर थता नथी हवे तुर्ह बे प्रकारना व्याधि सिद्ध छे के केम?

उत्तरपक्ष —आ कथन असत् छे तमारा मतपूर्वक असाध्य व्याधिज थइशके नहि व्याधिनु असाध्यपणुं, आयुना क्षयपणाथी थायछे, कारणके ते व्याधिमां वैद्यनो योग, तथा समान औषध छता पण कोइ मरी जायछे, अने कोइ मरतु नथी, अने जे प्रकृतिस्थ कर्मोना उदयथी चित्रादि व्याधिछे, ते हजार औषधोथी पण साध्य थइ शकता नथी आ बंने प्रकारना व्याधिनु स्वरूप परमेश्वरनां वचन जाणनाराओना मतमांज सिद्ध छे, परतु तमारा भूतमात्र तत्त्ववादियोना मतमां सिद्ध थइ शकतु नथी दोषकृत विकार दूर करवामा, वैद्यना तेमज समर्थ औषधिना अभावथी व्याधि वृद्धिमान थइ जायछे, त्यारे ते व्याधि असाध्य थइ जायछे, अने तेथी सर्व आयुष्यनो अपक्रम अर्थात् क्षय ते करी नांखेछे, केटला एक दोषो उपशांत थवाथी अकस्मात् मृत्यु पामे छे अने केटलाएक अत्यतदुष्ट दोषोथी पीडातां छतापण मृत्यु पामता नथी आ वात तमारा मतमां सिद्ध थइ शकती नथी आह च ॥ दोषस्योपशमेप्यस्ति, मरण कस्यचित् पुन ॥ जीवन दोषदुष्टत्वे,ऽप्येतन्न स्यान्नवन्मते॥१॥ अमारा मतमा तो ज्यांसुधी आयुष्य होय, त्या सुधी दोषोथी पीडाताछता पण प्राणी जीवतो रहेछे, अने ज्यारे आयुःक्षय थइ जायछे, त्यारे दोषोना विकार विनापण मृत्यु पामेछे ते कारणथी देह ज्ञाननु निमित्तनथी

वली एक सवाल छे के, देहने जे तमे ज्ञाननुं कारण मानो छो, तेशु

सहकारि कारण मानोछो? के उपादान कारण मानो छो? जो सहकारि कारण मानोछो तो तो अमे पण देहने क्षयोपशमनो हेतु तो मानियें छियें, कथंचित् विज्ञाननो हेतु मानियेंछियें. जो उपादान कारण मानशो तो तो अयुक्तछे. उपादान कारण तो ते थइ शके, जे कारण विकारि थतां कार्यपण विकारि थइ जाय, जेम के मृत्तिका तेमज घट; अने अहिंयां तो देह विकार पामतां छतां पण संवेदन विकार पामतो नथी; तेमज देह विकार पाम्या विनापण जय शोकादिथी, संवेदन विकार पामेलो देखायछे. ते कारणथी देह संवेदननुं याने ज्ञाननुं उपादान कारण थइ शकतो नथी. उक्तं च ॥ अधिकृत्य हि यद्वस्तु, यः पदार्थोविकार्यते ॥ उपादानं न तत्तस्य, युक्तं गोगवयादिवत् ॥ १ ॥ आ केहेवाथी जे कहेछे के मातापितानुं चैतन्य, पुत्रना चैतन्यनुं उपादान कारण छे, तेपण खंडन थइ जायछे. जुओ. मातापिता विकारी थतां पुत्र विकारी थतो नथी; अने जे जेनुं उपादान कारण छे, ते ते कार्यथी अजेद होयछे, जेमके माटी तथा घट. जो माता, पितानां चैतन्य, पुत्रनां चैतन्यथी अजेदरूप होय तो तो, पुत्रनुं चैतन्य, पण माता पिताना चैतन्यथी अजेद थवुं जोइयें. तेम नथी, तेथी तमारूं कथन प्रमाणरहित छे. ए प्रमाणे सर्व हेतु जोतां जूतोनो धर्म, अथवा जूतोनुं कार्य चैतन्य नथी. परंतु आत्मा स्वतः सिद्ध छे. विशेषथी चार्वाकमतनुं खंडन जोवुं होय तो संमतितर्क तथा स्याद्वादरत्नाकरादि ग्रंथो जोइ लेवा. इति चार्वाकमत खंडन. आ परिछेदमां कुगुरुनां जे लक्षणो कह्यां छे, ते चाहेतो जैनना साधुमां होय के चाहे तोअन्यमतना साधुउमां होय, ते सर्वने कुगुरु कहेवा जोइयें.

इति श्रीतपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविनयशिष्यमुन्यानंदविजयात्माराम विरचितजैनतत्त्वादर्शगुर्जरजाषांतरे कुगुरुस्वरूपनिर्णयनामा चतुर्थः परिछेदः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम परिछेद प्रारंजः ॥

पांचमा परिछेदमां धर्मतत्त्वनुं स्वरूप लखियेंछियें. दुर्गतिमां पडतां जीवने धारण करी राखे, अर्थात् दुर्गति प्राप्त न थवा दे ते धर्म कहेवाय छे. धर्मना त्रण जेद छे. १ सम्यक्ज्ञान, २ सम्यक् दर्शन, ३ सम्यक्चारित्र. प्रथम सम्यक् ज्ञाननुं स्वरूप संक्षेपथी लखियें छियें. यथा ॥ य-

थावस्थिततत्त्वानां, संक्षेपाद्विस्तरेण वा ॥ योवबोधस्तमत्राहु, सम्यक् ज्ञान मनीषिण ॥ १ ॥ अर्थ —यथावस्थित नयप्रमाणयुक्त प्रतिष्ठित छे स्वरूप जेनु एवां जे जीव, अजीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, बध, मोक्षरूप सात तत्त्व, प्रकारांतरें पुण्य, पाप अधिक होवाथी नवतत्त्व, तेनो जे अवबोध अर्थात् ज्ञान, ते सम्यक् ज्ञान जाणवुं ते ज्ञान क्षयोपशमविशेष थी कोइ जीवने संक्षेपथी, तेमज कोइ जीवने विस्तारपूर्वक थाय छे ते नवतत्त्वमांहेना प्रथमजीवतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें, जीव कहो अथवा आत्मा कहो आ बने एकज वस्तुना नाम छे

प्रश्न —जैनमतमां आत्मानु शुं लक्षण छे ?

उत्तर —चैतन्य लक्षण छे

प्रश्न – जैनमतमां जीव, प्राणी, आत्मा कोने कहेछे, जरा विस्तारथी स्वरूप बतावो ?

उत्तर —य कर्त्ता कर्मभेदाना, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥ ससर्त्ता परिनिर्वाता, सह्यात्मा नान्यलक्षण ॥ १ ॥ भावार्थ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद अने योगथी कलुषित, अर्थात् मलीन थइने वेदनी आदि कर्मोनो कर्त्ता, तथा ते करेला कर्मोना सुखदुःखादि फल तेनो भोक्ता, तथा नरक, तिर्यंच आदि गतिविषे कर्मोना विपाकना उदयथी भ्रमणकरनार, तेमज सम्यक् दर्शनादि रत्नत्रयीथी उत्कृष्ट पुरुषार्थपूर्वक संपूर्ण कर्मांशने दूर करनार अर्थात् निर्वाण प्राप्त करनार तेज आत्मा छे, तेज प्राणी छे, तेज जीव छे जुओ नदीसूत्र आत्मानी सिद्धि चार्वाकमतखंडनमां लखी आव्याछियें जो विशेषथी आत्मानी सिद्धि जोवी होय तो शब्दांभोनिधि, गंधहस्तिमहाभाष्य जोवां आत्मा सर्वव्यापी पण नथी एकांत नित्य, कूटस्थपण नथी एकांत अनित्य क्षणिकपण नथी परतु शरीरमात्रव्यापी कथचित् नित्यानित्यरूप छे तेनुं खंडन मंडन विस्तारथी जोवु होय तो स्याद्वादरत्नाकर, रत्नाकरावतारिका, अनेकांतजयपताका प्रमुख शास्त्रथी अवलोकन करवु अहींया विस्तार करवाथी ग्रथ वधि जाय, तेमज वांचनार आलस करे ते सबबथी, विशेष वर्णन कर्युं नथी

जीव वे प्रकारना छे एक मुक्तरूप, बीजा संसारी बने प्रकारना जीव अनादि अनत छे ज्ञान, दर्शन तेउनुं लक्षण छे मुक्तस्वरूप आत्मा (परमा

त्मा) सर्व एक स्वभाव छे. जन्मादि क्लेशोथी वर्जित छे. अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य, अनंत आनंदमय स्वस्वरूपमां स्थित छे. निर्विकार निरंजन, ज्योतिःस्वरूप छे.

संसारी जीव बे प्रकारना छे. एक स्थावर. बीजा त्रस. स्थावरना पांच भेद छे. १ पृथिवीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय. वली त्रसना चार भेद छे. १ द्वींद्रिय, २ त्रींद्रिय, ३ चतुरिंद्रिय, ४ पंचेंद्रिय. स्थावर सर्व एक स्पर्शेंद्रिय वालाज छे. शंख, गंडोला, जलो, चंदणग, कृमि, अलसीयां प्रमुख जीव, एक स्पर्शेंद्रिय अर्थात् शरीर, तेमज रसनेंद्रिय अर्थात् मुख, एम बे इंद्रियवाला छे. मांकड, जू, कीडी, घीमेल, उधी, मंकोडाप्रमुखजीव, पूर्वोक्त बे इंद्रिय, तथा एकनासिका, एम त्रण इंद्रियवालां छे. मांखी, मछर, डांस, कंसारी, वींछी, तीड, भमरा प्रमुख जीव पूर्वोक्त त्रण इंद्रिय तथा एक चक्षु एम चार इंद्रियवालां छे. नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ए पंचेंद्रिय जीव छे. स्पर्शन, रसना, घ्राण नेत्र, कान, आ पांचेंद्रियवालां छे. स्थावर जीव पण बे प्रकारना छे. एक सूक्ष्म नामकर्मना उदयथी. सूक्ष्म. बीजा बादर नामकर्मना उदयथी, बादर. स्थावर तथा त्रस जीव, समुच्चय छपर्याप्ति वालां छे, छपर्याप्तिनां नाम. १ आहार पर्याप्ति, २ शरीरपर्याप्ति, ३ इंद्रियपर्याप्ति, ४ श्वासोछ्वास पर्याप्ति, ५ भाषापर्याप्ति, ६ मनःपर्याप्ति.

हवे पर्याप्तिनुं स्वरूप लखियेंछियें. पर्याप्ति अर्थात् शक्ति १ आहार ग्रहण करवानी जे शक्ति, ते आहारपर्याप्ति, २ शरीर रचवानी जे शक्ति, ते शरीरपर्याप्ति, ३ इंद्रिय करवानी शक्ति, ते इंद्रियपर्याप्ति छे, एम छए पर्याप्तिनुं स्वरूप जाणवुं. पूर्वोक्त छ पर्याप्तिमध्येथी जे जे जीवने जेटली जेटली पर्याप्ति होवी जोइये. ते करतां उछी पर्याप्ति होय तो ते जीव अपर्याप्ति कहेवाय छे, स्थावर जीवमां प्रथमनी चार पर्याप्ति छे, बे इंद्रियवाला, त्रण इंद्रियवाला, अने चार इंद्रियवाला जीवोमां मनविना पांचपर्याप्ति छे. पंचेंद्रिय जीवमां छ पर्याप्ति छे. १ पृथिवीकाय, २ जलकाय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, आ चारेमां असंख्य जीव छे. वनस्पति कायना बे प्रकार छे. प्रत्येक वनस्पतिकायमां असंख्य जीव छे, साधारण वनस्पतिकायमां अनंतजीव छे. स्थावर तथा त्रसजीवना जघन्य (१४) भेद

छे, मध्यम (५६३) भेद छे, अने उत्कृष्ट अनंत भेद छे मध्यमना भेदो मां (१४) भेद नरकगतिवाळांना छे, (४८) भेद तिर्यंच गतिवाळांना छे, (३०३) भेद मनुष्य गतिवाळाना छे, (१९८) भेद देवगतिवाळाना छे मध्यमना सर्व मळी एम (५६३) भेद छे तेछनु विस्तारथी स्वरूप जोवुं होय तो प्रज्ञापन्नसिद्धांत, तथा जीवविचार प्रकरण आदि शास्त्रो जोवां

प्रश्नः– हे जैन ? बे इंद्रियादि जीव तो जीवलक्षणसंयुक्त होवा थी जीव सिद्ध थाय छे परंतु पृथिवी आदि पांच स्थावरोमां अमे जीव केवी रीतें मानियें ? पृथिवी आदिमां जीवनुं कांइ पण चिह्न उपलब्ध थतु नथी

उत्तरपक्ष– अगर जो पृथिवी आदिमां जीवनु प्रगट चिह्न देखातु न थी, तो पण अव्यक्त रूपें जीवनु चिह्न छे तेथी जीव सिद्ध थाय छे जेम धत्तुराथी, अने मदिरापान आदिना निस्साथी मूर्छित थयेला जीवमां अव्यक्तलिंग थइ जवा छतां जीवपणुं छे, तेम पृथिवी आदिमां पण जीवपणु मानवु जोइये

प्रश्नः– मदिरानी मूर्छामां श्वासोश्वास देखवाथी अव्यक्तपणामां पण चेतना लिग छे, परंतु पृथिवी आदिमां तेवुं चेतनताउं लिंग कांइ पण नथी, तेथी तेछने केम चैतन्य मानवामां आवे ?

उत्तरपक्ष– तमे कहो छो तेवुं चैतन्य नथी, परतु पृथ्वीकायमां आयमां, स्वआकारमा रहेलां लवण, विद्रुम, पाषाण आदिमां, अर्श मास अंकुरनी जेम समानजातीय अकुर उत्पत्तिपणुं छे वनस्पति जेम चेतनपणानु चिह्न छे ते कारणथी अव्यक्त उपयोगादिलक्षण होवाथी पृथ्वी सचेत न छे एम सिद्ध थाय छे

प्रश्न –विद्रुम पाषाणादि पृथ्वी कठणरूप छे सघव कठिनरूप होवा थी पृथ्वी सचेतन केम होइशके ?

उत्तर –जेम शरीरमां अस्थि अर्थात् हाड अनुगत छे, ते कठण छे तो पण सचेतन छे तेम जीवानुगत पृथ्वीनु शरीरपण सचेतन छे, वळी पृथ्वी, अप्, तेज वायु, वनस्पति, तेछना शरीर जीव सहित छे, छेद्य, भेद्य, उत्क्षेप्य, भोग्य, घ्रेय, रसनीय, स्पृश्य द्रव्य होवाथी साजा (घवदना गळांनी नीचेनी फूल ' गलधी ') तथा विषाण (शींगडां) नीपेछे संघातवत्

पृथिवी आदिमां छेद्यत्वादि जे देखियें छियें, तेने कोइ पण गोपवी शकतुं नथी. वली एमपण न कहेवुं के पृथिवी आदिनां जीवशरीर जे साधवां छे ते अनिष्ट छे, कारण के सर्व पुद्गल द्रव्यने द्रव्यशरीर एम पण मानियेंछियें. तेमां जीवसहित, तथा जीवरहित जे विशेष छे ते आ प्रमाणे छे; शस्त्रथी अनुपरत जे पृथिवी आदि छे, ते हाथ पगना संघातवत् संघात न होवाथी कदाचित् सचेतन छे, तेवीज रीतें शस्त्रथी उपहत थवाथी हाथ आदि पेठे अचेतनपण छे, ते अचेतनज छे.

प्रश्नः– प्रश्रवणवत् अर्थात् मूत्रनी पेठे जीवनुं लक्षण न होवाथी जल जीव नथी.

उत्तरपक्षः– हेतु असिद्ध होवाथी, आ पण कहेवुं वास्तविक नथी. जुओ. हाथीनुं शरीर कलल अवस्थामां (तरत उत्पन्न थयेली स्थितिमां) द्रवरूप तेमज सचेतनरूप देखाय छे. तेवीज रीतें जलमां पण जाणवुं. वली इंडामां रसमात्र छे, परंतु अवयव कोइपण उत्पन्न थयेल नथी, तेमज व्यक्त हाथपगादि पण नथी, तो पण सचेतन छे, ते उपमाए जलपण सचेतन छे. आ तेमां प्रयोग छे. द्रवरूप होवाथी शस्त्रथी अनुपहत थकुं हाथीना शरीरना उपादानभूत कललवत् जल सचेतन छे. आ हेतुमां विशेषणना उपादानथी अर्थात् ग्रहणथी प्रश्रवण दूधादिमां व्यभिचार नथी. तथा अनुपहतद्रव्य होवाथी इंडामां रहेला कललवत् जल सात्मक छे. वली हिमादि कोइक अवस्थामां अप्काय होवाथी बीजा उदकनी जेम सचेतन छे तथा कोइ जगाए भूमि खोदवाथी स्वाभाविक संभव होवाथी मेंडकवत् जल सचेतन छे. तेमज आकाशमां उत्पन्न थतुं जल, वादलादि विकारथी थयेलुं स्वतःज उत्पन्न थइने पडवाथी मत्स्यवत् सचेतन छे. तथा शीतकालमां नदीप्रमुखमां बहु शीत पडतां, बहु, अने अल्प शीत पडतां अल्प, उष्मा देखाय छे, ते उष्मा सजीव हेतुकज छे. अल्प विशेष मलेलां मनुष्योना शरीरोनी जेम अल्प बहु उष्मा थाय छे. जलमां शीतस्पर्शज छे एम वैशेषिक कहे छे. तथा शीत कालमां शीत बहुज पडवाथी प्रातःकालमां तलाव आदिनी पश्चिम दिशामां उभा रही, तलाव आदि जोइयें, तो ते तलावमांथी निकलतो बाष्पसमूह देखाय छे; तेपण जीव हेतुकज छे. तेनो प्रयोग एवो छे के शीतकालमां

जे वाष्प थाय छे, ते उष्ण स्पर्शवाली वस्तुथी थाय छे शीतजलथी से चनकरेला शीतकालमां मनुष्य शरीरनी वाष्पनी जेम वली उकरडामा कूडा कचवरमांथी धूआ (वाष्प) निकले छे, त्या पण आमे पृथ्वीकायना जीव मानियेंछियें आ हेतुओथी जल सजीव सिद्ध थाय छे

प्रश्न – तेजस्कायमां जीव केवीरीतें सिद्ध थाय छे ?

उत्तरपक्ष – जेम रात्रिमां खद्योत (आगीआ कीडा) नु शरीर जीवशक्तिथी बनेलु प्रकाशवान् छे, तेम अंगारादिपण प्रकाशमान होवाथी सचेतन छे तथा जेम ज्वरनी उष्मा जीवना प्रयोग विना अर्थात् अस्तित्व विना होती नथी, तेम अग्निमां पण जीवविना गरमी थती नथी जुओ के मृतकशरीरमा ज्वर कदापि होतो नथी एवा अन्वयव्यतिरेकथी अग्नि सचेतन जाणवो वली प्रयोग आ छे, आत्माना संयोगथी प्रगट थयो छे अंगाराप्रमुखने प्रकाश परिणाम, शरीरस्थ होवाथी खद्योत शरीर परिणामवत् तथा आत्मा सयोगपूर्वक शरीरस्थ होवाथी ज्वर उष्मवत् अंगाराप्रमुखमां उष्णता छे एमपण न कहेवुं के सूर्यनी उष्मा साथे अनेकांतिक हेतु छे सूर्यमा जे उष्मा छे ते पण आत्मसंयोग पूर्वकज आमे मानियेंछियें तथा अग्नि सचेतन छे, कारण के यथायोग्य आहार करवाथी वृद्धि आदि विकार मालम पडवाथी पुरुषना शरीरनी जेम इत्यादि लक्षणोथी अग्नि सचेतन छे

प्रश्न – वायुकाय (पवन) मां जीवसत्ता केवी रीतें सिद्ध करो छो ?

उत्तरपक्ष – जेम देवताओनां शरीर शक्ति प्रभावथी, तेमज मनुष्योनां शरीर अंजनादि विद्यामंत्रना प्रभावथी, अदृश्य थइजवाथी नेत्रथी देखाता नथी, तोपण विद्यमान चेतनावाला छे, तेम वायुकाय सूक्ष्म परिणाम होवाथी, परमाणुनी जेम, नेत्रथी देखातां नथी तोपण विद्यमान चेतनावाला छे तेमज अग्निथी दग्ध पाषाणखंडगत अग्निवत्, प्रयोग आ छे बीजाओनी प्रेरणाविना, नियमपूर्वक तिर्यक् गति होवाथी वायु चेतनावान् छे गवाश्वादिवत् तिर्यक् गतिना नियमथी, परमाणुनी साथे व्यभिचार नथी वली शस्त्रथी अनुपहत होवाथी वायु सचेतन छे

वनस्पतिकायमां तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी जीव सिद्धज छे ते कारणथी अहिंया तेनो विस्तार कर्यो नथी सर्वज्ञना कथन करेलां आगमपण पू

थिवी जल, अग्नि, पवन, वनस्पतिमां जीवसत्ता कहे छे. तेम छतां कदापि कोइ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, तेमज पंचेंद्रियमां पण जीव नहि माने तो तेउनी अमान्यताथी अमने कांइ हानि नथी. आ संक्षेपथी जीवस्वरूप वर्णन कर्युं, विस्तारनी अभिलाषावालाए जैनसिद्धांत जोवा.

हवे बीजुं अजीवतत्व कहियेंछियें. अजीवनां लक्षणो जीवनां लक्षणोथी विपरीत छे. जे ज्ञानथी रहित होय, रूप, रस, गंध, स्पर्शवाला होय, नर, अमरादिगतिमां न गमन करनार होय, ज्ञानावरणीयादि कर्मना कर्त्ता न होय, तेमज ते कर्मफलना भोक्ता न होय, अने जडस्वरूप होय, ते अजीव छे. ते अजीवना पांच प्रकार छे. १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ काल.

१ धर्मास्तिकायनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. जेम मत्स्यना संचारनुं अपेक्षाकारण पाणी छे, तेम जीव तथा पुद्गलने गतिपणे परिणमतां जे अपेक्षाकारण होय ते धर्मास्तिकाय छे. यद्यपि जीव तथा पुद्गल स्वशक्तिथी चाले छे, परं तु तेउने गतिसहायक गुणप्रदाता धर्मास्तिकाय पदार्थ छे. ते लोकव्यापी छे, नित्य छे, अवस्थित छे, अरूपीछे असंख्यप्रदेशी छे. ज्यां सुधी आ धर्मास्तिकाय द्रव्य छे, त्यांसुधी लोकनी मर्यादा छे. जो धर्मास्तिकाय द्रव्य न मानियें, तो लोक अलोकनी मर्यादा रहे नही. ज्यां सुधी धर्मास्तिकाय द्रव्य वर्त्तेछे, त्यांसुधी जीव, पुद्गल गति करेछे. तेनुं संपूर्ण स्वरूप जैनमतना ग्रंथो अध्ययन कर्या शीवाय जाणी शकाय नहि.

२बीजुं अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे. तेनुं स्वरूप धर्मास्तिकाय सदृश जाणवुं, परंतु तफावत ए छे के, आ द्रव्य जीव, पुद्गलने स्थिति सहायक छे जेम पंथीजन रस्तामां चालतां थाकी जायछे, त्यारे विश्राम लेवा सारू वृक्षादिनी छायामां बेसेछे, ते प्रसंगें स्थिति तो पोतेज करेछे, परंतु आश्रय विना स्थिति थइ शकती नथी, तेम जीव पुद्गल गतिकरतां करतां स्थिति करवा प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करेछे, परंतु अपेक्षाकारणरूप वृक्षनी छाया जेम अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे.

३ त्रीजुं आकाशास्तिकाय द्रव्य छे. तेनुं स्वरूप पण धर्मास्तिकाय सदृश छे. परंतु विशेष आ प्रमाणे छे. आ द्रव्य लोकालोकव्यापीछे अवकाशदानलक्षण छे. जीव, पुद्गलने रहेवामां अवकाश आपेछे. आ

अपेद्रव्य एक बीजामा मली गयेलांछे ज्यांसुधी आकाशास्तिकाय, धर्मा स्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय छे, त्यासुधी लोक छे, अने ज्या केवल आ काशास्तिकाय छे, अने बीजु काइ नथी, ते अलोक छे

चोथु पुद्गलास्तिकाय द्रव्य छे परमाणुओनु नाम पण पुद्गल छे, तेमज परमाणुओना समूहना घट, पटादि कार्य छे, तेओने पण पुद्गलज कहेछे एक परमाणुमां, एकवर्ण, एकरस, एकगध, बे स्पर्श छे, कार्य तेनु लिंग छे वर्णथी वर्णांतर, रसथी रसातर, गधथी गधातर, अने स्पर्शथी स्पर्शां तर थइ जायछे परमाणु द्रव्यरूपें अनादि अनंत छे, पर्यायरूपें सादि सात छे परमाणुओना जे कार्य छे, तेओमा कोइकतो प्रवाहथी अनादि अ नत छे, अने कोइ सादि सात छे जे जडरूप देखाय छे, ते सर्व परमा णुओनां कार्य छे सुकेली वनस्पति, तेमज अग्निप्रमुख शस्त्रोथी परिणा मातर प्राप्त थयेला पृथिवी आदि सर्व पुद्गल छे समुच्चय पुद्गल द्रव्यमां, पाच वर्ण, पाच रस, बे गध, आठ स्पर्श, पाच सस्थान, छे कालो, ली लो, रातो, पीलो, धोलो, आ पांच वर्ण छे तीखो, कडवो, कपायेलो, खाटो, मीठो, आ पांच रस छे सुगध, दुर्गंध, आ बे गध छे खरखरो, सुवालो, हलवो, भारे, टाढो, उनो, चीकणो अने लूखो आ आठ स्पर्श छे तेना विशेषवर्णादि थाय छे, ते सर्व एक बीजाना मेलापथी थाय छे, पुद्गलोमा अनत शक्ति छे, अनत स्वभाव छे १ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, इत्यादि ते ते निमित्तोना मलवाथी विचित्र परिणाम तेना थाय छे

५ पाचमु कालद्रव्य छे ते प्रसिद्धछे आ पाचे द्रव्य अजीव छे इति

हवे पाच निमित्तनु स्वरूप लखियेंछियें १ काल, २ स्वभाव, ३ नि यति, ४ पूर्वकृत, ५ पुरुषकार, तेओनु स्वरूप श्रीसिद्धसेन दिवाकर आ चार्यकृत सम्मतितर्क ग्रथमा विस्तारथी बतावेल छे ते पांचमाथी जो एकने माने तो ते मिथ्याज्ञान, अने मिथ्या दृष्ट छे जो पाचेना समवा यने माने तो सम्यक ज्ञान तथा सम्यक् दृष्ट छे आ पाचे निमित्तमांहेना १ काल, २ स्वभाव, ३ नियति, आ त्रण निमित्तोनु स्वरूप क्रियावादिना मतमां लखी आव्या छियें, ४ पूर्वकृत (कर्म) नु स्वरूप आगल कर्म स्वरूपनो निरूपण करवामां आवशे त्या करवामा आवशे ५ पुरुषकार, ते जीवोनो उद्यम छे, आ पाचे निमित्तोथी जगत् प्रवृत्ति निवृत्ति थइ

रहीछे. आ पांच निमित्तोथीज जीव नरकादि गतियोमां जायछे; तेमज सुख दुःखनां फल ज्ञोगवे छे. आ पांच निमित्त विना फल प्रदाता ईश्वरादि कोइ पण नथी, जो कोइ वादि आ पांच निमित्तोना समवायने ईश्वर माने, तो तो अमे पण ईश्वर कर्त्ता मानी लेशुं, कारण के जैनमतनी तत्त्वगीतामां लखेलुं छे के, द्रव्यमां जे अनादिद्रव्यत्व शक्ति छे, तेज सर्वपदार्थोने उत्पन्न करेछे, तेमज लय करेछे, ते शक्ति चैतन्य अचैतन्यादि अनंत स्वज्ञाववाली छे तेने ईश्वर कर्त्ता मानवाथी जैनमतने कांइ हानि थती नथी.

३ हवे पुण्यतत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. "येन शुज्ञप्रकृत्या आत्मकं कर्म जीवान् सुखं ददाति तत् पुण्यं" इत्यादि जेणे करी अर्थात् जे शुज्ञ प्रकृतिथी पोते करेलां कर्म जीवोने सुख आपे छे ते पुण्य. पुण्य उपार्जन करवानां नव कारण छे, "उक्तं च स्थानांगे" अन्नपुन्ने पाणपुन्ने लेणपुन्ने सयणपुन्ने मणपुन्ने वयपुन्ने कायपुन्ने नमोक्कारपुन्ने इति सूत्रं ॥ व्याख्या १ पात्रने अन्ननुं दान आपवाथी जे तीर्थकरनामादि पुण्य प्रकृतिनो बंध थाय ते अन्नपुण्य छे, तेवीजरीतें २ पीवाने जल आपवुं, ३ वस्त्र आपवां, ४ रहेवाने स्थानक आपवां ५ सुवा, वेसवाने आसन आपवां, ६ गुणीजनने देखी मनमां संतोष, खुशी मानवी, ७ गुणिजनोनी वचनथी प्रशंसा करवी कायाथी पर्युपासनां अर्थात् सेवा करवी ए गुणि जनोने नमस्कार करवो आ पुण्य उपार्जन करवानी वावतो कही, ते कांइ जैनमतवालाउने देवावास्ते कही, एटलुंज नहि परंतु कोइपण मतवालो अथवा कोइपण दान देवायोग्य प्राणी होय, तेने अनुकंपाथी जे कोइ दान आपे ते अवश्य पुण्य उपार्जन करे परंतु तफावत एटलो छे, के पात्रने जे दान आपवामां आवशे, ते पुण्य तेमज मोक्ष बंनेनो हेतु थशे, अने अनुकंपाथी जे बीजाने दान देवामां आवशे, ते केवल पुण्य उपार्जन करवानोज हेतु थशे. जैनमतना कोइ शास्त्रमां पुण्य करवानो निषेध नथी कारण के जैनमतज्ञ ऋषज्ञदेवादि चोवीश तीर्थंकरो थयेला छे; तेउए दीक्षा लेतां पहेलां एकक्रोड आठ लाख सोनैया दिन दिन प्रति एकवर्षसुधी दान आपेल छे. ते कारणथी जैनमतमां प्रथम दान-

धर्म छे जैनमतना शास्त्रमा बीजी केटलीएक रीतथी पुण्य उपार्जन थायछे एम लखेलु छे

४ हवे पुण्यना फल बेंतालीश प्रकारें भोगववामां आवेछे ते बेंतालीश प्रकार लखियेंछियें १ जेना उदयथी जीव शाता भोगवे छे ते शाता वेदनीय, २ जेना उदयथी जीव क्षत्रियादि उचा कुलमां उत्पन्न थाय छे ते उच्चगोत्र, ३ जेना उदयथी जीव मनुष्यगतिमां उत्पन्न थाय छे ते मनुष्य गति, ४ जेना उदयथी जीव देवगतिमा उत्पन्न थाय छे ते देवगति, ५ वक्रगतिए पराभवमा जता, बलदने नाथ घालीने सिद्धो चलाववानी जेम, जे उपजवाने स्थानकें जीवने पहोंचाडे तेने आनुपूर्वी कहे छे मनुष्य गतिमां जीवने लाववाने उदयमां आवे ते मनुष्यानुपूर्वी, ६ देवानुपूर्वी, ७ जेना उदयथी जीव पचेंद्रियपणु पामे छे ते पचेंद्रियजाति, हवे पांच जातना शरीर कहियेंछियें ८ जेना उदयथी जीव औदारिक वर्गणानां पुद्गलो ग्रहण करीने औदारिक शरीरनी रचना करे छे, अर्थात् औदारिक शरीरपणे परिणमावे छे, ते औदारिक शरीर, तेवीजरीतें ९ वैक्रियशरीर १० आहारक शरीर, ११ तैजसशरीर, १२ कार्मणशरीर, एम पाच शरीरनी प्रकृतिओनो अर्थ समजवो तथा अगोपाग त्रण छे तेमा अग, शिरप्रमुख, उपाग, आगली प्रमुख, बाकीना अगोपांग छे जेम के १ शिर, २ छाति, ३ पेट, ४ पीठ, ५-६ •बने हाथ ७-८ बने साथल, आ आठ अग छे, आगली प्रमुख उपाग छे, नखादि अगोपांग छे जेना उदयथी जीवने प्रथमना त्रण शरीरना अगोपागनी उत्पत्ति थाय, तेनां नाम, १३ औदारिक अगोपाग, १४ वैक्रिय अगोपाग, १५ आहारक अगोपांग, १६ जेना उदयथी जीव प्रथमनुं सहनन जेनु नाम वज्रऋषभ नाराच छे, ते प्राप्त करे छे, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे वज्रनाम कीलिका (खीली) छे, तथा ऋषभ पटले परिवेष्टन पट्ट अर्थात् उपर लपेटवाना हाडरूप पाटो, तथा नाराच, ते मर्कटबध, आ त्रणे रूपथी जे उपलक्षित छे तेने वज्रऋषभ नाराच संहनन कहे छे, हाडना संचय सामर्थ्यनु नाम संहनन छे आ सहनन औदारिक शरीरवालाओमाज होय छे १७ जेना उदयथी जीवने प्रथमना समचतुरस्र सस्थाननी प्राप्ति थाय, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे सम अर्थात् तुल्य, जेनु शरीर चारे बाजुथी तुल्य, लक्षणयुक्त, प्रमाण

सहित, सुंदर आकार, पोताना आंगल प्रमाणे एकसो आठ आंगल प्रमाणशरीर थाय ते; हवे वर्ण, रस, गंध, अने स्पर्श, कहियें छियें. १७ कृष्णादिवर्ण, १९ तिक्तादिरस, २० सुरभ्यादिगंध, २१ मृडु आदि स्पर्श, जेना उदयथी शुभ होय, २२ जेना उदयथी मध्यम वजनदार शरीरनी प्राप्ति थाय, अर्थात् लोहनी जेम अत्यंत भारे नहि, अने आकडाना कपासनी जेम अति हलकुं पण नहि, परंतु मध्यमपरिणामी होय, तेने अगुरु लघु नामकर्म कहीयें. २३ जेना उदयथी बीजाने हणीशके, तथा शरीरनी आकृति एवी होय के जेने देखीने बीजाउने अभिभव अर्थात् असामर्थ्यता थाय ते पराघातनामकर्म कहीयें, २४ जेना उदयथी उश्वासनलब्धि, अर्थात् श्वासोश्वास लेवानी शक्ति जीवने थाय छे, ते उश्वासनामकर्म, २५ जेना उदयथी जीवनुं शरीर प्रकाशवालुं तथा सूर्यना बिंबनी जेम बीजाने ताप उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय छे, ते आतपनामकर्म, २६ जेना उदयथी चंद्रबिंबनी जेम शीतलताने उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय, ते उद्योतनाम कर्म; २७ जेना उदयथी जीवने विहायस्नाम आकाश, तेमां जे गति, ते विहायोगति, ते गति राजहंससदृश होय, ते सुविहायोगति नामकर्म, २८ जेना उदयथी जीवने शरीरनां अंगोपांग आदिने नियतस्थानमां स्थापन करनार सूत्रधार (कारीगर) समान, अर्थात् नसो, जाल, मस्तकनी खोपरी, हाड, चक्षु, कान, केश, नखादि शरीरना सर्व अवयवो योग्यस्थानें रचनार नामकर्मनी प्राप्ति थाय ते निर्माणनामकर्म, २९ जेना उदयथी जीवने त्रसपणानी प्राप्ति थाय, ते त्रसनामकर्म, उष्णप्रमुखथी तप्त थतां विवक्षित स्थान तजी छाया प्रमुखमां गति करे, तेमज द्वींद्रियादि पर्यायनां फल भोगवे, ते त्रस. ३० जेना उदयथी जीव बादर (स्थूल) शरीरवालो थाय, ते बादर नामकर्म, ३१ जेना उदयथी जीव पूर्वे कहेली छ पर्याप्ति पूर्ण करे छे, ते पर्याप्त नामकर्म, ३२ जेना उदयथी एक एक जीवने एक एक शरीर प्राप्त थाय छे, ते प्रत्येक नामकर्म, ३३ जेना उदयथी जीवने हाडप्रमुख अवयवो स्थिर, निश्चल होय छे, ते स्थिरनामकर्म, ३४ जेना उदयथी जीवने मस्तकप्रमुख अवयवो शुभ होय छे. ते शुभनामकर्म. ३५ जेना उदयथी सौभाग्यवान्

अर्थात् सर्वलोकने प्रिय जीव थाय, ते सुभगनामकर्म, ३६ जेना उद यथी जीवनो स्वर कोयलनी सदृश मीठाशवाळो थाय ते सुस्वरनाम कर्म, ३७ जेना उदयथी जीवनु वचन उपादेय अर्थात् सर्वलोकने मान नीय थाय, ते आदेयनामकर्म, ३० जेना उदयथी विशिष्ट कीर्त्ति तथा यश जगत्मा जीवनी विस्तार पामे ते यश कीर्त्तिनामकर्म, ३९ जेना उ दयथी जीवनी चोसठ इन्द्रो पूजा करे, तेमज त्रिभुवनमां पूज्यपणुं जे नाथी जीवने प्राप्त थाय, तेमज धर्म तीर्थनी प्रवर्त्तना जेनाथी थाय, ते तीर्थंकर नामकर्म, ४० तिर्यंचोनुं आयु, ४१ मनुष्यआयु, ४२ देव आयु, आ त्रण आयुनी प्रकृति आयुकर्मनी छे जेना उदयथी जीव ते ते ग तिमां जइ ते ते भवमां स्थिति करे छे, आ बेतालीश प्रकारथी पुण्य फल जीवने भोगववामां आवे छे

४ हवे पापतत्त्वनु स्वरूप लखियें छियें पेनाशुभप्रकृत्या आत्मकं कर्म जीवान् दुःख ददाति तत् पाप " जे अशुभप्रकृतिथी पोते करेलां कर्म जीवोने दुःख आपे ते पाप, तेमज आत्माना आनंदरसने पीये (भक्ष करे) ते पाप तथा पुण्यथी विपरीत, ते पाप, आ पाप नरकादिफल प्रवर्त्तक होवाथी अशुभ छे, पुण्यनी जेम तेनो आत्मानी साथेज संबंध छे, कर्म पुद्गलरूप छे अगर जो के बंधतत्त्व अंतर्भूतज पुण्यपापा छे, तो पण तेउं नु स्वरूप पृथक् पृथक् नानाविध, परमतभेदनिरासार्थ कहेवामां आवेलुं छे परमतभेद आ प्रमाणे छे केटलाएक मतवाळा कहेछे के केवल एक पुण्यज छे, परंतु पाप नथी, कोइमतवादी कहेछे के एक पापज छे, पुण्य नथी वली कोइ मतवादी एम पण कहेछे के मेचकमणि जेम पुण्य पाप बने परस्पर अनुविद्ध स्वरूपछे, तेथी मिश्र सुखदुःखफलना हेतु छे, ते कारणथी साधारण पुण्यपाप एकवस्तुज छे, वली केटलाएक कहेछे के मूलथी कर्मज नथी जगत्मां सर्व विचित्रता स्वभावथीज सिद्ध छे पूर्वे क्त सर्वमतो मिथ्या छे कारण के सुख दुःख बंने पृथक् पृथक् अनुभव वामां आवेछे ते कारणथी तेउंना कारणभूत पुण्य पाप पण स्वतंत्रज अगीकार करवा योग्य छे, परतु एकलुं पुण्य, के एकलु पाप, के एकलुं पुण्यपाप मिश्र मानवुं ठीक नथी

कर्मध्वभाववादी नास्तिक तेमजवेदांती कहे छे के पुण्यपाप, आका

शनां फुलसमान असत् छे, सत् नथी तो हवे पुण्यपापनां फल जोगववानां स्थान स्वर्ग, नरक केम मानी शकाय ?

उत्तरपक्षः— पुण्यपापनो अजाव मानशो तो सुख दुःख निर्हेतुक उत्पन्न मानवां पडशे, तेम मानवामां प्रत्यक्ष विरोध आवे छे. जुर्ड. मनुष्य पणुं सदृश छे, परंतु कोइ स्वामीछे, कोइ सेवकछे; कोइ लाखोनां उदर पोषण करेछे, कोइ पोतानुं पण उदर पोषण करी शकतो नथी; कोइ देवतानी पेठे निरंतर सुख जोगविलास करे छे, कोइ नारकीनी पेठे निरंतर दुःख जोगवी रह्या छे. ते कारणथी अनुजूयमान सुख दुःखना निबंधनजूत पुण्य पाप अवश्य मानवां जोइयें. ज्यारे पुण्य पाप मान्यां, त्यारे तेर्डना अत्यंत उत्कृष्ट फल जोगववानां स्थान स्वर्ग, नरक पण मानवां जोइशे. जो तेम नहि मानशो तो अर्द्धजरतीय न्यायनो प्रसंग आवशे, अर्धुं शरीर वृद्ध, अर्धुं जुवान. ते बाबतमां प्रयोग अर्थात् अनुमानपण छे. सुख दुःख कारणपूर्वक छे, अंकुर जेम कार्य होवाथी, तेवास्ते जे सुख दुःखनां कारण छे, ते मानवां जोइयें, जेम अंकुरनां बीज.

पूर्वपक्षः—नीलादि जे मूर्त्त पदार्थ छे, ते स्वप्रतिजासि अमूर्त्त ज्ञाननां जेम कारण छे, तेम अन्न, फूलमाला, चंदन, स्त्रीप्रमुख मूर्त्त दृश्यमानज सुख अमूर्त्तनां कारण छे, सर्प, विष, कंडू (खस) आदि दुःखनां कारण छे. तो हवे शावास्ते अदृश्य पुण्यपापनी कल्पना करोछो ?

उत्तरपक्षः—आ तमारूं कहेवुं अयुक्त छे, कारण के ते कथनमां व्यजिचार छे. जुर्ड. बे पुरुषोनी पासे तुल्य साधन छे, तोपण फलमां अत्यंत तफावत देखवामां आवेछे. तुल्य अन्नादि जोगववामांपण कोइने आह्लाद (हर्ष) तथा शरीरपुष्टि थायछे, अने बीजाने रोगोत्पत्ति थायछे. आ फलजेद अवश्य सकारणछे; नहितो नित्य सत् नित्य असत् थवुं जोइयें, कारण के जे वस्तु (कार्य) कदी थाय, कदी न थाय, ते कारणविना कदापि तेम थतां नथी, अथवा कारणानुमानथी कार्य, पुण्य पाप जाणी शकायछे, त्यां कारणानुमान आ छे, दानादि शुज क्रियानां, तेमज हिंसादि अशुज क्रियानां फलजूत कार्य, कृष्यादि क्रियावत् कारण होवाथी छे. जे आ क्रियार्डनां फलजूत कार्य छे, ते पुण्य पाप जाणवां. जेम खेती करवानी क्रियानां फल, कमोद, जुवार, घर्ड प्रमुख छे.

पूर्वपक्ष —जेम कृष्यादि क्रियानां दृष्ट फल कमोद प्रमुखछे, तेम दानादि, तेमज पशुहिंसादि क्रियानां दृष्टफल श्लाघा, मांसजक्षण, निर्दयता आदिछे, तो हवे शावास्ते अदृष्ट पुण्यपापनां फल कल्पवां जोइयें? कारणके जनसमुदाय विशेषें करी दृष्ट फलमांज प्रवृत्त थायछे, खेती, वेपार प्रमुख हिंसादि क्रियामां बहु लोको प्रवर्त्ते छे, अने अदृष्ट दान फलादि क्रियामां थोडा लोक प्रवर्त्तेछे ते कारणथी कृषि हिंसादि अशुन्न क्रियार्जनां अदृष्ट फल पापरूप अमे मानता नथी

उत्तरपक्ष —जो आ तमारूं कथन वास्तविक होय, तो तो परजवमा फलना अजावथी मरण अनतरज सर्व जीव प्रयत्नविना मोक्ष प्राप्त करशे तथा संसार प्राय शून्य थइ जशे, संसारमां कोइपण फु खी होशे नहि, मात्र दानादि शुन्न क्रियाना करनारा, तेमज तेनां फल जोगवनारा रहेशे, परंतु तेम नथी, संसारमां फु खी बहुज देखवामा आवेछे, अने सुखी थोडाज देखायछे, ते कारणथी साबीत थायछे के कृषि, वाणिज्य, हिंसादि क्रिया निबधन अदृष्ट पापरूप फल फु खी जीवोने छे, अने दानादि अदृष्ट पुण्यफल सुखी जीवोने छे

प्रश्न —जे सुखीछे ते हिंसादि क्रियाथी, अने जे फुःखीछे ते दानादि क्रियाथी एम केम न बने?

उत्तर —एम बनतु नथी, कारणके हिंसादि अशुन्न क्रिया करनारा बहु छे, अनेदानादि शुन्न क्रिया करनारा थोडाछे, आ कारण अनुमानछे हवे कार्य अनुमान कहिये छियें जीवोमां आत्मत्व समान छता नर पशु आदि देहोमां कारणनी विचित्रताथी कार्य विचित्र देखायछे, जेमके घटनां दंड, चक्र, चीवरादि सामग्री संयुक्त कुजकार, हवे एम पण कहेवाय के, देखाय छे जे माता, पिता ते आ देहना कारण छे, परंतु पुण्य पाप नथी, कारण के मातापिता एकज छे छतापि पुत्रोना देहोमा विचित्रता देखायछे, आ विचित्रता, अदृष्ट (शुजाशुज कर्म) विना थइ शकती नथी ते कारणथी जे शुन्न देह छे, ते पुण्यनु कार्य छे, अने अशुन्न देहछे ते पापनु कार्यछे, आ कार्यानुमान सिद्धछे सर्वज्ञ वचनप्रमाणथी पुण्यपापनीसत्ता पण सिद्धछे विशेष जाणवानी इछावाळाए विशेषावश्यकनी टीका जोवी

पाप, प्राणातिपात आदि अढार पापस्थानकोथी बधायछे, अने ते

च्याशी प्रकारथी जोगववामां आवेछे. ते च्याशी प्रकार आ प्रमाणे छे. पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय, नव दर्शनावरण, छवीश मोहनीय प्रकृति, चोत्रीश नामकर्मप्रकृति, एक अशाता वेदनी, एक नरकायु. एक नीचगोत्र, सर्व मली च्याशी प्रकार थया तेउंनुं विस्तारथी स्वरूप लखियेंछियें.

ज्ञानावरण कर्मनी पांच प्रकृति छे. ज्ञानना पांच प्रकार छे १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, आ वंने अजिलाप प्लावितार्थ (वाणीतर्क) ग्रहण रूप ज्ञान छे. ३ अवधिज्ञान, इंद्रियोनी अपेक्षाविना आत्माने रूपी विषयक साक्षात् अर्थग्रहण करनारुं ज्ञान, ४ मनः पर्यवज्ञान, मनमां चिंतित अर्थने साक्षात् ग्रहण करनारुं ज्ञान, ५ केवलज्ञान, लोकालोकना सकल पदार्थस्वरूपजासन करनारुं ज्ञान. आ पांचे ज्ञानना जे आवरण ते ज्ञानावरण छे, १ मतिज्ञानावरण, २ श्रुतज्ञानावरण, ३ अवधिज्ञानावरण, ४ मनः पर्यवज्ञानावरण, ५ केवलज्ञान आवरण. १ जेना उदयथी जीव मतिहीन, निःप्रतिजा होय ते मतिज्ञानावरण, २ जेना उदयथी जीवने कांइपण जणतां न आवडे ते श्रुतज्ञानावरण, ३ जेना उदयथी अवधिज्ञान न थाय, ते अवधिज्ञानावरण, ४ जेना उदयथी मनः पर्यवज्ञान न थाय ते मनःपर्यवज्ञानावरण, ५ जेना उदयथी केवल ज्ञान न थाय ते केवलज्ञानावरण.

हवे अंतराय कर्मनी पांच प्रकृति कहियें छियें. १ जेना उदयथी, आपवानी वस्तु पण छे, गुणवान् पात्र पण छे, दाननुं फल पण आपनार जाणे छे, परंतु दान आपी शकतो नथी, ते दानांतराय, २ जेना उदयथी, देवा योग्य वस्तु पण छे, दातारपण बहुज प्रसिद्ध छे, मागनारपण मागवामां अत्यंत कुशल छे छतांपि मागनारने कांइ पण न मले, ते लाजांतराय, ३ जेना उदयथी, एकवार जोगववायोग्य वस्तु आहारादि विद्यमान पण छे, परंतु जीवथी जोगवी न शकाय, ते जोगांतराय, ४ जेना उदयथी, वारंवार जोगववा योग्य वस्तु शयन, अंगनादि विद्यमान पण छे, परंतु जीवथी जोगवी न शकाय, ते उपजोगांतराय, ५ जेना उदयथी युवान, रोगरहित, पुष्टांग, तथा बलवान् छतां पण पोतानी शक्ति फोरवी शकाय नहि, ते वीर्यांतराय.

हवे दर्शनावरण कर्मनी नव प्रकृति कहियें छीयें. सामान्य अवबो-

धनु नाम दर्शन छे, तेनु जे आवरण ते दर्शनावरण दर्शनावरणना नव भेद मध्येथी प्रथमना चार भेद मूलथीज दर्शन लब्धिना आवरक छे जेम के १ चक्षुर्दर्शनावरण, २ अचक्षुर्दर्शनावरण, ३ अवधिदर्शनावरण, ४ केवलदर्शनावरण, तथा निद्रा पांच छे, ते आवरण क्षयोपशमथी लब्ध आत्मलाभनी दर्शनलब्धियोने आवरक छे तेउनु विशेषस्वरूप आ प्रमाणे छे चक्षुथी सामान्यग्राही जे बोध, ते चक्षुदर्शन, जेना उदयथी ते लब्धिनो जे व्याघात थाय, ते चक्षुदर्शनावरण, तेमज जेना उदयथी चक्षु विना चार इन्द्रिय, तथा मनथी पोत पोताना विषयनु जे सामान्यपणे ग्रहण थाय, एवा अचक्षुदर्शननु जे आच्छादन थाय, ते अचक्षुदर्शनावरण, जेना उदयथी सामान्यपणे जे रूपि द्रव्यनु मर्यादा पूर्वक ग्रहण थाय छे, एवा अवधिज्ञाननु जे आच्छादन थाय ते अवधिदर्शनावरण, जेना उदयथी समस्त वस्तुनु सामान्यपणे, घर प्रधान क्षायकजावें प्रगट थवाथी देखवुं थाय ते केवल दर्शन, तेनु जे आच्छादन थाय ते केवलदर्शनावरण चैतन्यने सर्व प्रकारें अतिकुत्सित करे, सामान्य ग्रहणरूप दर्शन उपयोग तेनो विघ्न करे ते निद्रा जाणवी तेना पाच भेद छे १ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ स्त्यानर्द्धि १ जेमा चपटी वगाडतां निद्रा लेनार जागी उठे ते सुखप्रतिबोध निद्रा, २ जेमा घणुज हलाववाथी, कपडा खेंचवाथी, निद्रा लेनार दुःखें जागे, अर्थात् जेथी अतिशय निद्रा आवे ते निद्रानिद्रा, ते कर्मप्रकृतिना नाम पण तेज छे, ३ बेठा बेठा तथा उभा उभां जीवने जे निद्रा आवे ते प्रचला, ४ चालता, चालता जीवने जे निद्रा आवे ते प्रचला प्रचला, ५ स्त्याना नाम पिंडीभूत, ते पिंडीभूत थइ छे ऋद्धि अर्थात् आत्मशक्ति जे निद्रामां ते स्त्यानर्द्धि ते निद्रामां जीवने वासुदेवना बलथी अर्ध बल थाय छे, आ निद्रामां जीव चेष्टाव्यापार कार्य पण करे छे, परंतु ते कार्यनु तेने काइ भान रहेतु नथी पाठकनी अपेक्षाए निद्रानी कर्मप्रकृतिनां नाम पण तेज छे

हवे मोहनीय कर्मनी प्रकृति लखिये छियें तत्त्वार्थ श्रद्धानने जे विपरीत करे ते मोहनीय छे तेमां १ मिथ्यात्वरूप जे मोह ते मिथ्यात्व मोहनीय कहीय मिथ्यात्व मोहकर्मनी उत्तर प्रकृति छे यद्यपि मिथ्यात्व

१ अभिग्रहिक, २ अनभिग्रहिक, ३ सांशयिक, ४ अभिनिवेशिक, ५ अनाभोगादि, अनेक प्रकारथी छे, तो पण यथावस्थित वस्तुतत्वना अश्रद्धानथी सर्व भेदो एक मिथ्यात्वरूपज गणाय छे, मिथ्यात्व, मोहनीय कर्मनी प्रथम प्रकृति छे; तथा कषाय मोहनीयना सोल भेद छे. कारण के क्रोधादि पण तत्वश्रद्धानथी आत्माने भ्रष्ट करे छे. ते सोल भेद आ प्रमाणे छे. १ अनंतानुबंधी क्रोध, २ अनंतानुबंधीमान, ३ अनंतानुबंधीमाया, ४ अनंतानुबंधीलोभ, तेवीजरीतें ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तेमज प्रत्याखानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा ४ संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, सर्व मली सोल कषाय मोहनीय छे.

जे क्रोधादि अनंत संसारनां मूल कारण छे, तथा जेनुं अनंत भवानुबंधिशील छे, तेमां जेनो स्वभाव एवो छे के जेवी पछरनी रेखा, जेनी साथे क्केश थाय, तेनी साथे ते ज्यां सुधी जीवे त्यां सुधी रोष छोडे नहि, ते अनंतानुबंधी क्रोध छे. तथा जे मान, पछरना स्थंभनी जेम कदापि नमे नहि, तथा जे माया, वांसनी जडसमान कदापि सरल न होय, तथा जे लोभ कृमीना रंगसमान कदापि दूर न थाय एवा जे क्रोध, मान, माया अने लोभयुक्त परिणाम, तेनुं नाम अनंतानुबंधि क्रोधादि कर्म प्रकृति छे. तथा अप्रत्याख्यान, जेमां नञ् अल्पार्थ वास्ते छे, तेथी, जेना उदयथी थोडुं पण प्रत्याख्यान थतुं नथी, तेने अप्रत्याख्यान कहे छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे, क्रोध पृथ्वीनी रेखा समान, मान हाडना स्थंभ समान, माया बकराना शींग समान, लोभ कर्दमना डाघ समान, तेनी स्थिति एक वर्षनी छे. तथा जेना उदयथी सर्व विरतिपणुं जीवने प्राप्त न थाय, ते प्रत्याख्यानावरण कषाय छे. तेमां क्रोध, रेणु (धूल) नी रेखा समान, मान काष्ठना स्थंभ समान, माया गोमूत्रनी धारावाही समान, लोभ खंजनना रंग समान, तेनी स्थिति चार मासनी छे. तेमज जेना उदयथी केवलज्ञान प्राप्त न थाय ते संज्वलन कषाय छे, तेमां क्रोध, पाणीमां लींटी समान, मान नेतरना स्थंभसमान, माया वांसनी छोल समान, लोभ हलदरना रंग समान, तेनी स्थिति पंदर दिवसनी छे. ए प्रमाणे संक्षेपथी सोल कषायनुं स्वरूप छे.

हवे नव नोकषायनुं स्वरूप लखियें छियें. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद,

हास्य, रति, अरति, शोक, जय, जुगुप्सा, आ नव नोकषाय मोहनीय प्रकृतिछे नो एटले सहकारीपणु कषायने जे सहायकारी थाय ते नो कषाय कहेवाय छे तेनु स्वरूप कहीयें छियें १ जेम पित्तना उदयथी मिठी वस्तुनीअजिलाषायायछे, तेम जेना उदयथी स्त्री पुरुषनी अजिलाषा करे छे, ते स्त्रीवेद उदय, आ वेद उदय फुफक (धुणीना) अग्नि समानछे, जेम धुणीनो अग्नि खोजवाथी वधतो जायछे, तेम स्त्रीना स्तन कक्षास्पर्शथी स्त्रीवेद प्रबल उदय पामेछे तथा २ जेम कफना उदयथी खाटी वस्तुनी अजिलाषा थायछे, तेम जेना उदयथी पुरुष, स्त्रीनी अजिलाषा करेछे, ते पुरुषवेद उदय, आ वेद उदय तृणना अग्नि समानछे, जेम तृणनो अग्नि एकजवार प्रज्वलित थइ, तत्काल शांतपण थइ जायछे, तेम पुरुषवेद तत्काल एकवार उदय थायछे, अने तत्काल शांतपण थायछे तथा ३ जेम पित्त अने कफना उदयथी खाटी मीठी वस्तुनी अजिलाषा थायछे, तेम जेना उदयथी स्त्री तेमज पुरुष बन्नेनी अजिलाषा थायछे ते नपुसक-वेद छे आ वेदनो उदय नगरदाहना अग्निसमानछे तथा ४ जेना उदयथी निमित्तसह, तेमज निमित्तविना पण हसवुं आवे, ते हास्य, मोहकर्म नी प्रकृतिछे तथा ५ जेना उदयथी रमणीय वस्तुउमा जीव रमे, खुशी थाय, ते रतिनामा मोहकर्मनी प्रकृति छे तथा ६ जेना उदयथी रतिथी विपरीतपणु थाय ते अरतिनामा मोहकर्मनी प्रकृतिछे तथा ७ जेना उदयथी प्रियवियोगादिमां विकल मन, ग्लानि, क्रदन, परिदेवनादि जीव करे, ते शोकनाम मोहकर्मनी प्रकृति छे तथा ८ जेना उदयथी सनिमित्ततया निमित्त विना जीवने बीक (जीति) लागे ते जयनामा मोहकर्मनी प्रकृति छे तथा ए जेना उदयथी गदी, मलीन वस्तु देखवाथी नाक चढाववु थाय, ते जुगुप्सानामा मोहकर्मनी प्रकृति छे सर्व मली बीसतालीश जेद कह्या

हवे नामकर्मनी चोत्रीश प्रकृति पापरूप छे, तेना नाम कहियें छियें १ नरकगति, २ तिर्यंचगति, ३ नरकानुपूर्वी, ४ तिर्यंचानुपूर्वी, ५ एकेंद्रिय जाति, ६ द्वींद्रिय जाति, ७ त्रींद्रियजाति, ८ चतुरिंद्रिय जाति, १३ पाच संहनन, १८ पांच संस्थान, १९ अप्रशस्तवर्ण, २० अप्रशस्त गध, २१ अप्रशस्तरस, २२ अप्रशस्तस्पर्श, २३ उपघात, २४ कुविहायोगति,

२५ स्थावर, २६ सूक्ष्म, २७ अपर्याप्त, २८ साधारण, २९ अस्थिर, ३० अशुभ, ३१ असुभग, ३२ दुःस्वर, ३३ अनादेय, ३४ अयशःकीर्त्ति.

तेउनुं स्वरूप आ प्रमाणे. १ जेना उदयथी जीवनुं नारकीनाम पडे, तथा नरक स्थानमां जाय ते नरकगति, २ तेवीज रीतें तिर्यंचगति पण जाणवी, ३ जेना उदयथी नरकगतिमां जतां जीवने बे समयादि विग्रहगतिथी अनुश्रेणीमां नियत गमन परिणति थाय, ते नरकगतिने सहचारी होवाथी नरकानुपूर्वी कहेवाय, ४ तेवीज रीतें तिर्यंचानुपूर्वीपण जाणवी. ५ जेना उदयथी पृथिवी, जल, अग्नि, पवन, वनस्पति, मां जीव उत्पन्न थाय ते एकेंद्रिय जाति. ६ जेना उदयथी जीवने बे इंद्रिय प्राप्त थाय ते द्वींद्रियजाति, ७ तेवीज रीतें त्रींद्रियजाति, ८ तेमज चतुरिंद्रिय जाति.

१३ प्रथम संहनन वर्जिने बाकीनां पांच संहनन, ऋषभनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलिका सेवार्त्त छे, तेनुं स्वरूप कहियें छियें. ऋषभपरिवेष्टनपट्टः नाराचउभयतोमर्कटबंधः" जेमां बंने पासें बे हाडोने मर्कट बंधथी बांधीने पट्टनी आकृति समान हाडनी पट्टी उपर विंटेलि होय ते ऋषभनाराच संहनन छे; तथा जेमां वज्रऋषभहीन, बंने पासें मर्कटबंध होय, ते नाराच संहनन छे, तथा जेमां एक पासें मर्कटबंध, अने बीजे पासें, खीलीथी वींधेलुं हाड होय, ते अर्धनाराच संहनन छे, तथा जेमां ऋषभनाराच, बंनेथी वर्जित, मात्र कीलिकाथी वींधेलां बंने हाड, एवो जे हाडनो संचय, ते कीलिका संहनन छे, तथा जेमां बंने हाडकां स्पर्शमात्र लक्षणयुक्तछे, अने चंपी मुठी करावबाथी जेमां आर्त्ति (पीडा) थाय, ते सेवार्त्त संहनन छे.

१८ आद्य संस्थान वर्जिने, बाकीनां पांच संस्थाननुं स्वरूप कहियें छियें. १ न्यग्रोधपरिमंडल, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ हुंडक. तेमां १ न्यग्रोधवत् अर्थात् वडवृक्षनी जेम परिमंडल, ते न्यग्रोध परिमंडल, जेम वडनुं झाड उपरना भागमां संपूर्ण अवयववाळुं होयछे, अने नीचेना भागमां तेवुं होतुं नथी, तेम जेनो नाभिनी उपरनो विस्तार संपूर्ण लक्षणवाळो, अने नीचेनो तेवा लक्षणसंयुक्त नहि ते न्यग्रोध परिमंडल संस्थान. तथा २ सादि, आ संस्थानमां नाभिनी नीचेना शरीरनो भाग सुंदराकार लक्षणो संयुक्त. परंतु नाभिनी उपरनो भाग निर्लक्षणी, ते सादिसंस्थान,

तथा ३ हाथ, पग, मस्तक, ग्रीवा यथोक्त लक्षणादियुक्त अने बाकीनो शरीरनो कोठो अर्थात् उदरादि मध्यजाग लक्षणादि रहित, ते वामन संस्थान, तथा ४ उदरादि लक्षणसंयुक्त, अने हाथ पगादि लक्षणो रहित ते कुब्ज संस्थान, तथा ५ जेमां शरीरनु एकपण अवयव सुंदर न होय ते हुंड संस्थान, जाणवां

२२ जेना उदयथी वर्णादि चारे अप्रशस्त होय, तेनु स्वरूप कहियें छियें जेनु दर्शन अतिबीजत्स छे, एवा कृष्णादि वर्णवाला प्राणियो थाय छे, ते अप्रशस्त वर्णनाम, ते वर्ण पांचप्रकारना छे, तेणें करी जे जीव युक्त होय, ते अप्रशस्तवर्ण नाम, तथा जेना उदयथी मुएला तेमज सडेला उदरादिनी दुर्गंध जेवी गंध जे प्राणियोना शरीरमां होय ते अप्रशस्त गंध नाम, तथा जेना उदयथी प्राणियोना शरीरमां रसनेंद्रियने दुःखदायी स्वजाववाला एलीआ जेवा कडवा तिखाआदि असार रस होय, ते अप्रशस्तरसनाम, तथा जेना उदयथी स्पर्शेंद्रियने उपतापना हेतुरूप एवा कर्कशादि स्पर्शविशेष जीवोना देहमां होय ते अप्रशस्त स्पर्शनाम जाणवा

२३ जेना उदयथी पोतानाज शरीरना अवयवोथी प्रतिजिह्वा, (पडजीनी) गलवु, मेदवृद्धि थवी, अतिलांबा थवुं, चोर दांतादि शरीरमां वधवाथी शरीरने पीडा आपे, ते उपघातनाम, तथा २४ जेना उदयथी जीवोनी स्वर तथा उटना जेवी चाल थाय, ते कुविहायोगति, तथा २५ जेना उदयथी पृथिवीआदि एकेंद्रियमा जीव उत्पन्न थाय ते स्थावर नाम, तथा २६ जेना उदयथी लोकव्यापि सूक्ष्म, पृथिवी कायादिमां जीव उत्पन्न थाय, ते सूक्ष्मनाम, तथा २७ जेना उदयथी आहारप्रमुख पूर्वोक्त पर्याप्ति पुरी न थाय, ते अपर्याप्तनाम, तथा २८ जेना उदयथी अनंतजीवोनु साधारण एक शरीर होय, ते साधारणनाम, तथा २९ जेना उदयथी जिह्वादि अवयवो शरीरमां अस्थिर होय, ते अस्थिरनाम, तथा ३० जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अवयवो अशुभ होय, ते अशुभनाम, तेनु कारण ए छे के, कोइनो हाथ लागी जाय तो ते रोष करतो नथी, परंतु पग लागवाथी क्रोध करे छे, ३१ जेना उदयथी जीवने जे जे देखे, तेने ते जीव अनिष्ट लागे, उद्वेगकारी लागे ते असुजगनाम, ३२ जेना उदयथी जीवनो स्वर कठोर, अप्रिय, घोघरा जेवो लागे, ते दुःस्व

र नाम, ३३ जेना उदयथी जीव सप्रमाण, युक्तियुक्त बोले तोपण तेनुं कहेवुं कोइ न माने, ते अनादेयनाम, ३४ जेना उदयथी जीव, ज्ञान, विज्ञान, विनय, दानादिगुणयुक्त छे, तोपण जगत्मां तेनी॰यशः कीर्त्तिने बदले निंदा प्रमुख थाय ते अयशःकीर्त्ति नाम. एरीते जाणवी.

जेना उदयथी जातिप्रमुखथी विकल, जीव थाय छे, ते नीचगोत्र.जेउ चांमाल ढेढ ज्ञंगी वाघरी प्रमुख जातिमां जन्मेछे ते नीचगोत्रवाला कहेवायछे "कुलं गूयते संशब्द्यतेऽनेन हीनोयमजातिरित्यादिशब्दैरिति गोत्रं कुलं नीचमिति विशेषणाऽन्यथानुपपत्त्या नीचैर्गोत्रमित्यर्थः"

प्रश्नः– नीचगोत्रना उदय, नीचकुलमां जन्मवुं, जीवोनी साथे खानपान न करवां, तेउनी छूत मानवी, अने निंदा जुगुप्सा करवी; पूर्वोक्त तमे जे मानोछो तथा करोछो, ते तमारी मोटी अज्ञानता छे, कारण के मनुष्यत्वधर्ममां सहु सरखां छे, हाथपगादि अवयवो पण सरखां छे, तो हवे एकने उंच मानवो, अने बीजाने नीच मानवो, आ मान्यता ब्राह्मण तथा जैनिउए ज्ञारतवर्षमां बहुकालथी बहुज जूदी करी राखी छे, ए मान्यतामां मुक्तिनुं शुं अंग छे ? वली जुउ ज्ञरतखंडवासी जैन, हिंदुउ शिवाय सर्व अन्यदेशोना वसनाराउ, कोइनेपण उंच नीच गणता नथी, सर्व एकसाथे खानपानकरवामां बुरुं मानता नथी, तेथी तमारी मान्यता, मूढता अर्थात् अंधपरंपरावाली छे, वास्तवमां कोइ उंच नीच नथी.

उत्तरः–आ तमारुं कथन, अमारो हेतु नहि समजवाथी बे समजवालुं छे. अमारो अज्ञिप्राय एवो छे के आ जगत्मां जे कांइ थाय छे ते निमित्तविना थतुं नथी. जुउ. आ जे ज्ञिल्ल, कोली, वाघरी, थोरी, ज्ञंगी, ढेढ, चंडाल, कसाइप्रमुख असत्य जातिना लोक गाममां, गामबहार, के जंगलोमां रहेछे, तेउ अनेक प्रकारनां हिंसायुक्त अनाचरणीय कामो निरंतर करे छे, तेउ अतिदुर्गंधि शरीरवाला, अतिबीज्ञत्स वचन बोलनारां, तेमज महाबुरां कर्मनुं चिंतवन करनारां, तथा अतिकनिष्ठ आहार करनारां, हमेशां प्रवर्ते छे, पूर्वोक्त सर्व तेउने नीच गणवानां निमित्त छे, हवे ते निमित्तोने जो तमे मानता न हो, तो तमे आत्मस्वरूप नहि समजवाथी नास्तिक छो, अने ते नास्तिक विचारवालाउनुं खंडन तो अमे पूर्वे लखी आव्या छियें. जो कहो के ते निमित्तोने अमे मानि-

चेहियें, तो तो तेओनां एवी असभ्यजाति तथा कुलमा उत्पन्न थवानां कारणो पण मानवां जोइयें जे कर्मना उदयथी एवा कुल, जातिमां तेओ उत्पन्न थाय छे, ते कर्मनु नामज नीच गोत्र कर्म छे, आ नीचगोत्रना अधा वधी बीजापण घणुपाप प्रकृतिओनो उदय थाय छे, जेथी तेओ क्लेशादि दुःखो अत्यत पामे छे, बुद्धिहीनता, क्रोधयुक्त स्वभाव, निर्दयता, कुत्सित आहार, पशुओनी जेम जगलवास, धर्मकर्मथी पराङ्मुख, सत्संगरहित, गम्यागम्यविवेकरहित, भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेयविचारशून्य, आ सर्वनु मुख्य कारण नीचगोत्र छे जेम धनवान् तेमज निर्धन अनेक बाबतोमा एकसरखा थता नथी, तेम नीचगोत्रवाळां उंचगोत्रवाळां साथे समान थइ शकतां नथी

जो एम कहो के विलायतमां सर्व एकसरखां छे, तो ते वातमां अमे आश्चर्य मानता नथी, कारण के ज्यां सर्व जीवोना, गोत्रकर्मनो एकस रखो बंध होय, त्यां सर्व एकसरखा थइ शके छे, अने मान्यता पण स र्वेनी एकसरखी थाय छे, परतु ज्यां उचनीचपणानी मान्यता, पूर्वोक्त कारणसर थाय छे, त्यां उंचनीच गोत्रनो व्यवहारपण अवश्य थाय छे परतु असभ्य, हीन जातिओने जे बुरी (जुदी) माने छे, तेओने अमे बु द्धिमान् कहेता नथी, कारण के अमारो एवो निश्चय छे के बुराइ तो खोटां कर्म करवाथी थाय छे जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य थइ बुरां काम, जेवा के जीवहिंसा, असत्यता, चोरी, परस्त्रीगमन, परनिंदा, विश्वासघात, कृतघ्नता, मांसभक्षण, मदिरापान, जुगार प्रमुख करशे, तेओने अवश्य अमे बुरां मानशु, अने नीचजातिवाळां हशे, छतापि जो तेओ सुकर्म जे वा के, दया, सत्य, चोरीनो त्याग, परस्त्रीत्याग इत्यादि करशे तो तेओने अमे उत्तम मानीशु हवे विचारो के अमारी समज बुरी केवीरीते होइ शके छे ? वली नीचगोत्रवाळां साथे जे खानपाननो व्यवहार राखता नथी, तेनु कारण तो कुलरुढि छे, अने तेओनी जे निंदा करे छे तेओ तो महाअज्ञानी छे, कारण के अमारो सिद्धांत एवो छे के निंदा कोइनी पण करवी न जोइये, वली तेओनी जे दूत माने छे तेपण कुलाचार छे, वली एक एवु पण कारण छे के, जो के मनुष्यत्व धर्मथी सर्व सरखां छे, तोपण जेम माता, बहेन, दीकरी, भार्या, सर्व स्त्रीत्व स्वरूपें समान छे, तोपण

तेउमां गम्य अगम्यनो विचार छे, तेवीजरीतें उंचनीचपणाना विभागनो विचार छे. आ व्यवहार ब्राह्मण तथा जैनियोये चलाव्यो नथी, परंतु ते जीवोना भलां, बुरां कर्मोना उदयथी चालेलो छे. आ प्रमाणे परस्पर जातियोमां खान पान नहिं करवानो व्यवहार मिसर देशमां पण हतो, तेथी सिद्ध थाय छे के उंच नीच गोत्रना प्रभावथीज उंच नीच जाति, कुल थाय छे.

तथा आयुकर्मनी नरक आयुनी प्रकृति पापमां गणायछे. नरकशब्दनी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे. "नरान् प्रकृष्टपापफलभोगाय गुरुपापकारिणः प्राणिनोनरानित्युपलक्षणत्वात् कायंति शब्दयंतीति नरकास्तेष्वायुस्तद्भवप्रायोग्यसकलकर्मप्रकृतिविपाकानुभवकारणं प्राणधारणं यत्तन्नरकायुष्कं तद्विपाकवेद्यकर्मप्रकृतिरपि नरकायुष्कमिति ॥"

तथा वेदनीकर्मनी अशाता वेदनी पापप्रकृतिमां गणायछे. अशाता नाम दुःखनुं छे, जेना उदयथी जीव दुःख भोगवे छे ते अशातावेदनी छे. आ प्रमाणे.

ज्ञानावरण पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरण नव, मोहनी छवीश, नामकर्मनी चोत्रीश, नीच गोत्र एक, नरकायु एक, अशातावेदनी एक, सर्व मली ब्याशीभेदें पापफल भोगववामां आवेछे. इति.

हवे आश्रवतत्त्वनुं स्वरूप लखियें छियें. "आश्रवन्ति, आगछन्ति कर्माणि जीवेषु येन सआश्रवः" जेनाथी जीवोने कर्मनी प्राप्ति थाय ते आश्रव १ असत् देव, २ असत् गुरु, ३ असत् धर्म, तेउविषे सत् देव, सत् गुरु अने सत् धर्म एवी जे रुचि ते मिथ्यात्व, तथा हिंसादिथी न निवर्त्तवुं, ते अविरति, तथा मद्यप्रमुख ते प्रमाद, तथा क्रोधादि ते कषाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग, आ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, पांचे पुनर्बंधक जीवना ज्ञानावरणीय आदि कर्मना बंधना हेतु छे, तेउने जैनमतमां आश्रव कहेछे. ते मिथ्यात्वादि शुभाशुभ कर्मबंधना हेतु होवाथी तेज आश्रव छे. आ तात्पर्य छे.

प्रश्नः—प्रथम, बंधोनो अभाव छतां, आश्रवनी उत्पत्ति केम होय? जो कहो के आश्रवथी पहेलां बंध छे, तो तो ते बंध पण आश्रवहेतु

विना थइ शकतो नथी कारण के जे जेनो हेतु छे, ते तेनो अभाव छता थइ शकतो नथी, जो होय तो, अतिप्रसंग दूषण आवशे

उत्तर–आ कहेवुं असत् छे, कारणके आश्रवने पूर्वबंधनी अपेक्षाए कार्यपणुं छे, अने उत्तरबंध अपेक्षाए कारणपणु छे, तेवीजरीतें बंधने पण पूर्वउत्तर आश्रवनी अपेक्षाए कार्यत्व, कारणत्व जाणवुं, बीजांकुरनी जेम बंध, आश्रव बनेने परस्पर कार्यकारणभावनो संबंध छे, तेथी अहींयां इतरेतर दूषण नथी प्रवाह अपेक्षाए बने अनादि छे

आश्रव पुण्यपापनो बंधहेतु होवाथी बे प्रकारें छे आ बने प्रकारना मिथ्यात्वादि उत्तर भेदोना उत्कर्ष, अपकर्ष अर्थात् अधिक, न्यूनपणाथी अनेक प्रकार छे आ शुभाशुभ मन, वचन, कायाना व्यापार रूप आश्रवनी सिद्धि पोताना आत्मामां स्वसंवेदनादि प्रत्यक्षथी छे, अने बीजाउमां वचन अने कायाना व्यापारनी प्रत्यक्षथी सिद्धि छे, बाकीनाउनी तेना कार्यथी उत्पन्न थता अनुमानथी जाणवी, तेमज आप्तप्रणीत आगमथी पण जाणवी

आश्रवना उत्तरभेद बेंतालिश छे पाच इन्द्रिय चार कषाय, पांच अव्रत, पचीशक्रिया, त्रणयोग

जीवरूप तलावमां, कर्मरूप पाणी जेनाथी आवे, ते आश्रव कहेवाय, ते मां प्रथम तो पांच इन्द्रिय छे तेनु स्वरूप कहिये छियें १ "स्पृश्यते" स्वविषय स्पर्शलक्षण, जेनाथी, ते स्पर्शनेंद्रिय, २ "रस्यते आस्वाद्यते रसोऽनयेति" आस्वादिये, रस लहियें जेनाथी, ते रसना (जिह्वा) इंद्रिय, ३ सूंघीए गंध जेनाथी, ते घ्राणेंद्रिय, ४ चक्षु ते नेत्रेंद्रिय, ५ सांभलीये शब्द जेनाथी, ते श्रोत्रेंद्रिय मूलभेदनी अपेक्षाथी आ पांच इंद्रिय, आश्रवना पांच कारण छे

"क्रुध्यति कुप्यति" सचेतन, अचेतन वस्तुउ उपर जेणें करी प्राणी, सनिमित्त, निर्निमित्त कोप करे ते क्रोध मोहनीयकर्म छे, तेनो उदय ते पण क्रोध छे तथा मान ते मृदुतानो अभाव, तेना बे प्रकार छे प्राप्त थयेली वस्तुउवडे जे अहंकार थाय ते मद, अने अप्राप्त छतां अहंकारी वृत्ति ते मान ते मदना आठ प्रकार छे १ जातिमद, २ कुलमद, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ ज्ञानमद, ६ लाभमद, ७ तपमद, ८ ऐश्वर्यमद,

१ पोतानी माताना पक्षनो अहंकार करे, जेम के मारी माता मोटा घर-वालानी दीकरी छे, इत्यादि. एवीरीतें पोताने उंचा मानी श्लाघा करे अने बीजाउनी ते बाबतमां निंदा करे ते जातिमद. २ पोताना पिताना पक्षनुं अभिमान करे, जेमके मारा पितानुं कुल उंचुं छे, अने बीजाउनी ते बाबतमां निंदा करे, ते कुलमद. ३ पोताना बलनुं अभिमान करे, अने बीजाना बलनी निंदा करे ते बलमद. ४ पोताना रूपनुं अभिमान करे, अने बीजाना रूपनी निंदा करे ते रूपमद. ५ पोताने महाज्ञानी माने, अने बीजाने तुच्छमति माने ते ज्ञानमद, ६ तप करीने अभिमानथी पोताना मनमां माने के मारा समान कोइ तपस्वी नथी ते तपमद. ७ पोते पोताने मोटो नशीबदार माने, अने बीजाने हीनपुण्यवाला समजे ते लाभमद. ८ पोतानी ठकुराइनुं अभिमाल करे. अने बीजाने घास फुस समान गणे ते ऐश्वर्यमद. ते प्रमाणे मानना पण समजवा. तथा "मयति गच्छति" जायछे जे जे विकारोथी बीजाने ठगवावास्ते जीव ते माया कहेवाय छे. तथा जेनाथी परधन प्राप्त करवामां जीवने गृद्धिपणुं होय, ते लोभ कहेवाय छे ते चारे कषाय कहेवाय छे.

हवे पांच अव्रतनुं स्वरूप कहियें छियें. पांच इंद्रिय, त्रण बल, मनबल, वचन बल, कायबल, तथा श्वासोच्छ्वास अने आयु, आ दश प्राण छे. दश प्राणना योगथी जीवने पण प्राण कहिये. ते प्राणोनो जे वध अर्थात् नाश ते प्रथम प्राणवध याने जीवहिंसा जाणवी. २ मृषावाद अर्थात् जुठुं बोलवुं. ३ अदत्तादान अर्थात् बीजानी वस्तु चोरी लेवी. ४ मैथुन (अब्रह्मसेवन) स्त्री पुरुषनुं जोडुं ते मिथुन, ते बंनेना मेलापथी जे कर्म थाय ते मैथुन. ५ परिग्रह सर्व बाजुएथी ग्रहण याने एकत्र करीयें, चार गतिनां निबंधन कर्म जेनाथी ते परिग्रह. आ पांच अव्रतना चार चार भांगा छे तेनुं स्वरूप लखिये छियें.

प्रथम हिंसाना चार भांगानुं स्वरूप, १ द्रव्यें हिंसा, परंतु भावें नहि, २ द्रव्यें हिंसा नहि, परंतु भावें छे, ३ द्रव्यें हिंसा अने भावें पण हिंसा, ४ द्रव्यें हिंसा नहि, अने भावें पण नहि. प्रथमना भंगनुं स्वरूप एवुं छे के साधुने समाचारी, प्रतिलेखना करतां, मार्गमां विहार करतां, नदी प्रमुख उतरतां, नावमांबेसी नदी ओलंगता, नदीमां साध्वी आदिने

तणाता, कादतां, वरसाद वरसते थडील जतां, ग्लान साधुलेनी वरसाद मा सधुशकाने परठवता, गुरुनां शरीरने वातप्रमुख व्याधिने प्रसंगें तथा थाक लागवाथी मुठी चपीकरतां जे हिंसा थाय छे ते द्रव्यहिंसा छे तथा श्रावकोने पण जिनमदिर यनावतां, जिनपुजा करता साधर्मिवा त्सल्य करतां, तीर्थयात्रा करता, रथयात्रा करतां, अष्टाह्मह्होत्सव करतां, प्रतिष्ठा तेमज अजन शलाका करतां, भगवान् तेमज गुरूनी सन्मुख सामैयु करी जतां, इत्यादि कर्तव्य करतां जे हिंसा थाय छे ते सर्वे द्रव्यहिंसा छे, परंतु भावहिंसा नथी तेनु फल अल्प पाप अने बहु निर्जरा छे, एम श्रीभगवतीसुत्रमां कहेलु छे आ हिंसा थाय छे ते प्रसंगे साधुआदिना परिणाम बहुज सुदर छे, माठा अध्यवसाय नथी, अने उपयोगयुक्त वर्त्तन छे तेथी द्रव्यहिंसा छे

प्रश्न —यज्ञादिमां गौ, अश्वप्रमुख जीव मारवामां आवेछे, तेपण द्रव्य हिंसा केम नहि? तेनो उत्तर मीमांसक मतखडनमां लखेलो छे

बीजा भंगनुं स्वरूप एवुं छे के जे पुरुष उपरथी तो शांतरूप देखाय छे, परंतु तेना अत करणना अध्यवसाय महामलीन, हिंसामय छे, जेम के तेनी चाहना एवी थाय के, मारा शत्रुनु मरण थाय, तेना कुटुंबमां मरकी चाले, तेना घरमां आग लागे, ते नदीमा डुबी जाय, तेना पुत्र स्त्रीनो नाश थाय, तथा बीजा अनेक प्रकारें जीवहिंसा करवानां काम नो संकल्प विकल्प करे, तेवा विचारोमां प्रवर्त्तवाथी, हिंसा तो करतो नथी, तेथी द्रव्यें हिंसा नथी, परंतुतेना अध्यवसाय हिंसामय होवाथी ते भावें हिंसा छे, अने तेथी ते जीव हिंसक छे तेनु फल अनंताकाल सुधी संसारमां परिभ्रमण करवु तेज छे

त्रीजा भंगमां इद्रियोना विषयोमां तेमज कपायमां अत्यत रुद्ध थइ जीवहिंसा करवी, जेमके कसाइ थवु, शिकार करवा, विश्वासघातप्रमुख करी जीव जाय तेवां काम करवा, तथा पदर कर्मादान प्रमुख अनाचरणीय जीव हिंसाना काम करवां, अने तेथी लाभ थतां मनमां आनद मानवो आ द्रव्यें हिंसा तथा भावें पण हिंसा छे,तेनु फल, संसार परिभ्रमण तथा दुर्गति छे

चोथा ज्ञंगमां ऊव्यें पण हिंसा नहि, अने जावें पण हिंसा नहि. आ ज्ञंगशून्य छे. आ ज्ञंगवालो जीव संसारमां कोइ पण न होय.

मृषावादना पण चार ज्ञंग छे. तेनुं स्वरूप कहियें छियें. १ साधु रस्तामां चाल्या जायछे, तेनी आगल थइ जंगलनी गायो तथा मृग प्रमुखनुं टोलुं चाल्युं जायछे. टोलानी शोध करतो कोइ शिकारी बंडुक प्रमुख शस्त्र लइ चाल्यो आवे छे, ते शिकारी ते जीवोनो शिकार करवा वास्ते साधुने पुछे छे के तमे अमुक जीवोने जता देख्या छे? साधु ते शिकारीना सवालनो जवाव नहि देतां मौन रहे छे. शिकारी जवाव मेलववासारू साधुपर हुमलो करे छे. तथा मारेछे, तेवे प्रसंगे साधु कहे छे के में तो टोलाने जतां देखेल नथी. यद्यपि साधुनुं आ बोलवुं ऊव्यें जूठुं छे, परंतु जावें जूठुं नथी, कारण के जे इंडियोना जोगने वास्ते तेमज लोजादि कषायथी जूठुं बोले छे तेज जावें जूठुं छे, परंतु साधुनुं जूठुं बोलवुं तो निरपराधी प्राणीउनी दयावास्तेज थयेलुं छे, तेथी वास्तवमां ते मृषावाद नथी.

बीजा ज्ञंगमां कोइ मनुष्य मुखथी तो कांइ बोलतो नथी, परंतु बीजाने ठगवावास्ते मनमां अनेक विकल्प करेछे. आ ऊव्यथी मृषावाद नथी परंतु जावें मृषावाद छे. त्रीजाज्ञंगमां मुखथी असत्यवचनो बोले छे, अने अंतःकरणमां छलकपट करवाना मलीन अध्यवसाय पण छे. आ ऊव्यें तथा जावें मृषावाद छे. चोथो ज्ञंग पूर्ववत् शून्य छे.

हवे चोरीना चार ज्ञंगनुं स्वरूप कहियें छियें. प्रथम ज्ञंगमां—एक स्त्री शीलवंती छे, तेनो शील ज्ञंग करवा कोइ ऊष्ट परिणामवालो राजा ते स्त्रीने पकडी पोताना कवजामां राखेछे, ते हकीकत कोइ धर्मि पुरुषना जाणवामां आवतां, ते स्त्रीना शीलनुं रक्षण करवावास्ते, ते स्त्रीने, ते पुरुष, ते राजाना कवजामांथी राज्य वहार लइ जाय तो व्यवहारथी तो ते राजानी ते पुरुषें आज्ञाज्ञंगरूप चोरी करी छे, परंतु वास्तवमां ते चोरी नथी. वली कोइपुरुष पोताना घरमां ऊव्य राखी, घरनां द्वार बंध करी परदेश गयेल छे, गाममां चोरनो उपद्रव थवाथी, ते परदेश गयेला सख्सनुं ऊव्य चोराइ जशे, एम तेना कोइ हितचिंतकने लागवाथी, रात्रिने समये ते परदेश गयेलाना घरनां द्वार खोली तेनु सघलुं ऊव्य,

ते पोताने घेर पाछो आवेथी तेने आपवानी बुद्धिपूर्वक लइ, पोताना घरमां राखेछे, आ दृष्टांतमां बीजानु द्रव्य, तेनी रजा शिवाय, तेना कब जामांथी लइ लेवाथी द्रव्यें चोरी थायछे, परतु धदध्यानतनो अभाव होवाथी भावेंचोरी थती नथी तेवीरीतें बीजी बाबतमां पण समजवुं

बीजाभंगमां कोइ पुरुष चोरी तो करतो नथी, परंतु चोरी करवाना अध्यवसाय तेना मनमा थया करेछे, ते द्रव्यथी चोरी नहि; परतु भावें चोरी छे वली वीतराग सर्वज्ञ परमात्मानी आज्ञाना भंग करनाराओने पण भावचोर कहेलाछे त्रीजा भंगमां, कोइ पुरुष चोरी करेछे, तेमज तेनो अध्यवसाय पण चोरी करवानो छे ते द्रव्यें तथा भावें चोरी छे चोथो भंग पूर्ववत् शून्य छे

हवे मैथुनना चारभंग कहियें छियें जे साधु जलमां रुवती साध्वीने देखीने, तेने काढवाने वास्ते पकडे, तेमज कोइ गृहस्थ उचेथी पडीजती कोइ स्त्रीने तेना रक्षणार्थे पकडे, तेमज कोइगांडी थइ गयेली नुकशान करती स्त्रीने पकडे, तेवा प्रसंगोमां पकडवुं ते द्रव्यें मैथुन छे परंतु भावें नथी बीजा भंगमां—कोइ पुरुष, स्त्रीने भोगवतो नथी, परंतु तेना मनमां स्त्रीसेवन करवानी अभिलाषा बहुज रह्या करेछे, ते द्रव्यें मैथुन नहि, परंतु भावें मैथुन छे त्रीजा भंगमां—स्त्रीसाथे मैथुन अभिलाषापूर्वक करवुं ते द्रव्यें तथा भावें मैथुन छे चोथो भग पूर्ववत् शून्य छे

हवे परिग्रहना चार भंग कहियें छियें कायोत्सर्गमां स्थित रहेला कोइ मुनिना गलामां कोइ सख्स हारादि आभूषण पहेरावी दे, ते जो इने बीजा अजाण्या पुरुषो, मुनिने परिग्रहवाला धारे, परंतु मुनिने ते पदार्थपरपरिग्रहबुद्धि नथी तेवा प्रसंगमां द्रव्यें परिग्रह कहेवाय, परंतु मुनि भावें परिग्रही नथी बीजा भंगमां—कोइपुरुष पासे एक कोडी पण नथी परतु धन मेलववानी बहुज अभिलाषा रह्या करे, ते भावें परिग्रही छे द्रव्यें नहि त्रीजा भंगमां—धनपण पासे होय, अने धन मेलववानी अभिलाषा पण रह्या करे, ते द्रव्यें तथा भावें परिग्रही छे चोथो भंग पूर्ववत् शून्य छे सर्वभंगमा बीजो तथा त्रीजो भंग निश्चयथी अविरतिरूप छे

हवे पचीश क्रियानुं स्वरूप लखियें छियें १ शरीरथी जे क्रिया थया

करे, ते कायिकी क्रिया. २ कसाइ प्रमुख शस्त्रथी परजीवोने उपघात करी पोताना आत्माने नरकगतिमां जवाना अधिकारी करे ते अधिकरण क्रिया. ३ जीव तथा अजीव उपर द्वेषनी चिंतवना करवी ते प्राद्वेषिकी क्रिया. ४ पोताने तथा परने जे परिताप उपजाववो ते पारितापनिकी क्रिया. ५ एकेंद्रिय प्रमुख जीवोने हणवा तथा हणाववानी जे क्रिया ते प्राणातिपातिकी क्रिया. ६ पृथ्वीकायादि जीवना उपघात कराववा तथा करवा सारू कर्षण प्रमुख करवुं, कराववुं ते आरंभिकी क्रिया. ७ धनधान्यादि नवविध परिग्रह मेलवतां, तथा तेना रक्षणसारू मूर्छाना परिणाम वनेला राखवा सारू जे क्रिया करवी पडे ते पारिग्रहिकी क्रिया. ८ बीजाने ठगवा सारू कपट युक्त जे क्रिया करवी पडे ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ए जिनवचन असद्दहतां विपरीत प्ररूपणा प्रमुख करवाथकी जे क्रिया लागे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० संयमने विघातकारक कषायोना उदयथी पच्चखाण कीधा विना जे सर्ववस्तुनी क्रिया लागे ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया. ११ कौतुकेंकरी अश्वादि जोवां तेमज रागादि कलुषित चित्तथी जीव, अजीवने जोवा ते दृष्टिकी क्रिया. १२ राग, द्वेष, मोह संयुक्त चित्तथी स्त्री आदिना शरीरने स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया. १३ जीव तथा अजीवसंवंधी जे राग द्वेष थाय, जेम के बीजाने घेर हस्ती, घोडा, वस्त्र प्रमुख देखी द्वेष धरे, जे ए वस्तुउ तेनी पासे क्यांथी? एम चिंतवता कर्म बंध करे ते प्रातित्यकी क्रिया. १४ पोताना अश्वप्रमुखने जोवावास्ते आवेला स्त्री पुरूषोने प्रशंसा करता जोइने हर्ष धारण करे, तेमज स्त्री प्रमुखने भोजन करवा आवतां जे क्रिया लागे ते, अथवा दुध, दहीं, घी, तेल प्रमुखनां भाजन उघाडां रहेतां तेमां त्रस जीव आवी पडे. ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया. १५ परउपदेशित पापमां लांवा वखतसुधी प्रवर्तवुं, तथा पापना भावथी अनुमोदना करवी ते नैसृष्टिकी क्रिया, १६ कोइ पुरुष अत्यंत अभिमानथी उइकेराइने क्रोधित चित्त थयो थको, जे काम नोकरपासे कराववा जेवुं होय ते पोताना हाथथी करे ते स्वहस्तिकी क्रिया. १७ अर्हंत भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंधन करीने पोतानी बुद्धिथी जीवाजीवादि सूक्ष्म पदार्थोनी प्ररूपणा करवासारू जे क्रिया करे ते आज्ञापनिकी क्रिया. १८ बीजाना अछतां खोटां आचरणो

प्रगट करवां, तेमनी पूजानो नाश करवो, तेम करवाथी जे उत्पन्न थाय ते वैदारणिकी क्रिया १९ जे उपयोगथी विपरीत ते अनाजोग, तेनाथी उपलक्षित जे क्रिया ते अनाजोगक्रिया देख्या विना तेमज पूजन, प्रमार्जन कर्याविना जींत तेमज जूमि प्रमुखउपर शरीरादिनो निक्षेप करवो ते अनाजोगक्रिया २० पोतानी तेमज परनी अपेक्षा तेनु नाम अवकांक्षा छे, तेनाथी जे विपरीत ते अनवकांक्षा, तेज कारण छे जेनु ते अनवकांक्षा प्रत्ययिकी क्रिया, तात्पर्य एमछे के, जिनोक्त कर्त्तव्य विधियोमां जे पोताने तेमज परने जे क्रिया हिंसकारी होय तेमां प्रमादने वश थइ जे आदर न करवो ते अनवकांक्षा प्रत्ययिकी क्रिया २१ चालवा, दोडवा प्रमुख कायाना व्यापार, तथा हिंसाकारी, कठोर जूठ बोलवाना वचनना व्यापार, अने परद्रोह, ईर्ष्या, अजिमानादि मनोव्यापार, ए त्रणेनु जे करवुं ते प्रयोग क्रिया २२ जेनाथी विषयग्रहण करियें ते समुदान इन्द्रिय तेनी जे क्रिया, देश तेमज सर्व उपघातरूप व्यापार ते समुदान क्रिया कोइ एवुं मोटुं पाप करियें के जेथी आठे कर्मनुं समुदायपणे ग्रहण थाय ते समुदान क्रिया २३ माया तेमज लोजथी जे क्रिया थाय ते प्रेम प्रत्ययिकी क्रिया २४ क्रोध तेमज मानथी जे क्रिया थाय, ते द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया २५ चालवाथी जे क्रिया लागे ते ईर्यापथिकी क्रिया आ क्रिया वीतरागने लागे छे तेमज अप्रमत्त मुनियोने पण लागे छे

हवे आ पचीश क्रियानु व्याख्यान करियें छियें १ कायिकी क्रिया बे प्रकानी छे, एक अनुपरता कायिकी क्रिया अने बीजी अनुपयुक्त कायिकी क्रिया, तेमां अत्यत दुष्ट एवा मिथ्यादृष्टि जीवोनो, मन वचननी अपेक्षा रहित परजीवने पीडा कारक कायानो उद्यम ते प्रथम जेद तथा प्रमत्त संयतनो उपयोग विना अनेक कर्तव्य रूप कायानो व्यापार ते बीजो जेद २ आधिकरणिकी क्रियाना बे प्रकार छे एक संयोजना, बीजी निवर्त्तना तेमां विप, गरल, फांसी, धनुप, यन्त्र, तलवार, प्रमुख शस्त्रोने, जीवोने मारवावास्ते संयोजन अर्थात् एकत्र करवां, जेम धनुपने तीरनो मेलाप करवो इत्यादि, ते प्रथम जेद, तथा तलवार, तोमर, शक्ति, तोप, बघुक इत्यादिने नवां सरस बनाववां, ते बीजो जेद ३ जे निमित्तथी क्रोध उत्पन्न थाय ते निमित्त जीव तथा अजीव बे छे तेमां जीव ते प्राणी,

अने अजीवमां खुंटो, कांटो, पथ्थर प्रमुख, तेउना उपर द्वेष करे ते प्रदोष क्रिया. ४ पोताना हाथथी, तेमज बीजाना हाथें जीवोने मार मारवो पीटवो ते परितापना, तेना बे भेद छे. पुत्रकलत्रादिना वियोगथी दुःखी थइने पोताने हाथें छाती तेमज शिर कुटवुं ते प्रथम भेद. तथा पुत्र, शिष्यादिने मार मारवो ते बीजो भेद. ५ प्राणातिपातिकी क्रिया बे प्रकारे छे. एक तो पोताने हाथे पोतानो घात करवो जेम के कुवामां पडी मरवुं, पर्वतउपरथी गरीपडवुं, अग्निमां झंपापात करवो, झेर खावुं प्रमुख स्वात्मघातिकी क्रिया ते महापापरूप क्रिया छे ते प्रथम भेद. तथा कषायने आधीन थइ बीजा जीवोनो नाश करवो ते बीजो भेद. ६ जीव अजीवनो आरंभ करवो जेथी पृथ्वी कायादि छकायना जीवोनो उपघात थाय, एवां लक्षणो जे क्रियामां होय ते आरंभिकी क्रिया. ७ जीव अजीवनो परिग्रह करवो, तेनामां अत्यंत मूर्छा राखी प्रवर्त्तवुं ते परिग्रहिकी क्रिया ८ माया (कपट) गुप्तरीतें स्वार्थवृत्ति साधवी ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ए विपरीत वस्तुनुं श्रद्धान तेज छे निमित्त जेनुं, ते मिथ्यात्त्वदर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० जीवने हणवाना, तेमज मद्यमांसादि पिवा खावानो जेमां त्याग नहि, एवा जे असंयति जीवनी क्रिया ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया. ११ घोडाप्रमुख जीव तथा रथप्रमुख अजीवोने जोवा वास्ते जवुं ते दृष्टिकी क्रिया. १२ जीव, अजीव, स्त्री, पुतली आदिने रागथी स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया. १३ जीवनी तेमज अजीवनी अपेक्षाथी जे कर्मबंध थाय ते प्रातीत्यकी क्रिया. १४ जीव ते पुत्र, स्त्री, भाइप्रमुख, अने अजीव ते, घर, आभूषण प्रमुख तेउने जोवासारू लोको आवे, तेउनी प्रशंसाथी ते वस्तुउनो स्वामी हर्षित थाय ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया. १५ जीव मनुष्यादि, अजीव पथ्थरादि तेउने फेंकवा ते नैस्पृष्टिकी क्रिया १६ पोताना हाथथी जीव तेमज अजीवनी प्रतिमाने ताडन प्रमुख करे ते स्वहस्तिकी क्रिया. १७ जीव, अजीवनी मिथ्या प्ररूपणा करवी, तेमज जीव, अजीवने मंत्रथी बोलाववां ते आज्ञापनिकी क्रिया १८ जीव, अजीवने विदारवा, ते वैदारणिकी क्रिया. १ए उपयोग विना वस्तु लेवी, तेमज भूमि प्रमुख उपर मुकवी ते अनाभोग क्रिया. २० इह लोक विरुद्ध तेमज परलोकविरुद्ध चोरी, परस्त्रीगमनादि दुराचण सेववां,

मनमां करवु नहि ते अनवकांक्षा प्रत्यय क्रिया २२ अष्टविध कर्मपर माणुउनुं जे ग्रहण करवु ते समुदान क्रिया २३ रागजनक वीणादिना शब्दादिनो भोग करवो ते प्रेमप्रत्ययिकी क्रिया २४ पोताउपर तेमज परउपर द्वेष करवो ते द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया २५ मात्र योगोथी जे क्रिया लागे ते केवली तेमज अप्रमत्त मुनिनी इर्या पथिकी क्रिया आ पचीश क्रियानु बहुज संक्षेपथी स्वरूप कहेलु छे विस्तारथी जाणवानी अभिलाषावालाए शब्दांभोनिधि गंधहस्तिमहाभाष्य जोवां आ पचीश क्रियाउमां केटलीएक जोतां एकसरखी लागे, परंतु ते एक सरखी नथी दरेकनु स्वरूप तदन पृथक् पृथक् छे

हवे त्रण योगनु स्वरूप लखियें छियें १ मननो व्यापार ते मनोयोग २ वचननो व्यापार ते वचनयोग ३ कायानो व्यापार ते काययोग एप्र माणे सर्व मली आश्रवना बेंतालीश भेद थया तेनाथी जीवने शुभाशुभ कर्मनी आमदानी थायछे इति

हवे संवरतत्वनु स्वरूप लखियें छियें पूर्वोक्त आश्रवथी जीवने आवतां कर्मने रोकनार अर्थात् आश्रवनुं रूधन करनार ते संवर छे ते संवरना सत्तावन भेद छे पांच समिति, त्रण गुप्ति, दश यतिधर्म, बार भावना, बावीश परिसह, पांच चारित्र, सर्व मली सत्तावन थया तेमांथी पांच समिति, त्रण गुप्ति, दशविध यतिधर्म, अने बार भावनानु स्वरूप तो गुरूतत्व वर्णनमां लखि आव्या छिये तेथी त्यांथी जाणवुं.

हवे बावीश परीसहनु स्वरूप लखियें छियें १ क्षुधा परिसह क्षुधा एटले भूख भूखनी वेदना सर्ववेदनाथी अधिक छे ज्यारे भूख लागे, त्यारे पोतानी प्रतिज्ञाथी भंग थाय नहि तेमज आर्त्तध्यान पण करे नहि सम्यक् परिणामें क्षुधा सहन करे, २ तेमज पिपासा जे तृषा तेपण सम्यक् परिणामें सहन करे ३ शीतपरीसह ज्यारे अत्यत शीत पडे, त्यारे पण अकल्पनिक वस्त्रोनी वांछा न करे. जेवां जीर्णप्राय वस्त्र होय तेनाथी टाढ सहन करे, अग्नि तापे नहीं, सम्यक् प्रकारें शीतसहन करे, ४ उष्ण परीसह–सूर्यना सख्त तडकामां पण चालतां थकां उपानह प्रमुखनी वांछा करे नहि, तेमज सख्त गरमी, उकलाट छतां पवनपखानी इछा करे नहीं, परतु सम्यक् प्रकारें आताप सहन करे.५ दश मशकपरीसह डांस तथा

मछर अने मांकड प्रमुख करडे त्यारे धूमाडो करी, तथा उष्णजल प्रमुख रेडी तेउनुं निवारण न करे परंतु सम्यक् परिणामें तेउए करेली वेदना सहन करे. ५ अचेल परीसह–सर्वथा वस्त्रनो अन्नाव, ते अचेल परीसह नहि; वस्त्रादि पण आगममां जे प्रमाणे राखवाने कह्यां छे तेप्रमाणे राखे तो ते परिग्रह नहि. वस्त्रादि उपर मूर्छा रह्या करे तो ते परिग्रह छे. उक्तं च ॥ जंपि वछंच पायं च, कंबलं पायपुछणं ॥ सोपि संजम लज्जाठा, धारिंति परि हरंति य ॥ १ ॥ नसो परिग्गहो वुत्तो, नाइ पुत्तेण ताइणा ॥ मुछा परिग्गहो वुत्तो, इइवुत्तं महेसणत्ति ॥ २ ॥ चेलनाम वस्त्रनुं छे, ते शीर्ण अर्थात् फाटेलां तेमज जीर्ण होय, तोपण अकल्पनिक वस्त्र न लहे, ते अचेल परिसह. ७ अरतिपरीसह. संयम पालतां अरति जे उत्पन्न थाय ते सम्यक् प्रकारे सहन करे, ते सहन करवानो उपाय श्रीदशवैकालिकनी प्रथम चूलामां अढार वस्तुनुं स्वरूप चिंतवन करवुं, ते छे, तेथी अरति दूर थाय छे. ७ स्त्रीपरीसह. स्त्रियोनां अंगोपांग, संस्थान, मुखाकृति, हास्य, विनोद, सौंदर्यता प्रमुखनुं मनमां चिंतवन न करे, स्त्रियोने मोक्ष मार्गमां अर्गला समान जाणी तेउना तरफ विकार बुद्धिथी नेत्र फेरवे नहि. ए चर्यापरीसह. चर्या एटले चालवुं, घररहित, ग्राम नगरादिमां अनियतवास, ममत्वरहित मासकल्पादि करवा ते. १० निषद्यापरीसह. निषद्या एटले रहेवानुं स्थान, जे स्थान स्त्री, पंडग रहित होय ते स्थानमां रहेतां थकां इष्ट अनिष्ट उपसर्ग थाय तोपण पोताना मनमां चारित्रथी चलायमान न थाय ते. ११ शय्यापरीसह. जेने विषे शयन करीए ते शय्या, संस्तारक, वसति; संस्तारक एटले सुवानुं आसन, ते शय्या तथा आसन, कोमल, कठिन, उंचुं, नींचुं, धूल, कांकरावालुं अथवा कुडी जगामां होय, तेमज वसति एटले स्थान, शीत अथवा गरमीवालुं होय तो पण मनमां उद्वेग न करे अने दुःख सम्यक् प्रकारें सहन करे ते. १२ आक्रोश परीसह. कोइ अनिष्ट वचन कहे त्यारे विचारे के, ते पुरुष साची वातने वास्ते मने अनिष्ट कहेछे, तेथी तेना उपर मारे कोप करवो ते वास्तविक नथी. कारण के ते सख्स मारो हितचिंतक होवाथी मने शिखामण आपेछे. तेथी हवेथी मारे तेवी नूल करवी नहि. जो ते सख्स जुठी वात जाणी मने अनिष्ट कहेछे, तो पण

ते वात जूठी होवाथी मारे तेना उपर कोप करवो वास्तविक नथी एम विचारी सम्यक् प्रकारे सहन करे. १३ वधपरीसह हस्तादिथी कोइ मार मारे तो सम्यक् परीणामे सहन करे, जेम के आ मारु शरीर अवश्य एकवखत नाश पामवानु छे

तेथी जे सख्स मने ताडन करेछे, तेथी जे दुःख मने थाय छे, ते मारा करेलां कर्मनु फल छे, ते तो फक्त निमित्तमात्र छे, एम विचारी वध पर्ता सुधी सहन करे ते १४ याचनापरीसह याचना एटले मागवु साधुने, अन्न, वस्त्रादि सर्व वस्तुओ मागवाथीज मलेछे, तेथी तेवी बुद्धिथी सम्यक् प्रकारें परीसह सहन करे १५ अलाभपरीसह साधुने कोइवस्तुनी इछा थइ छे, ते वस्तु गृहस्थना घरमां घणु छे, साधु मागवा गया, परंतु गृहस्थें आपी नहि, साधु मनमां खेद धरे नहि, तेमज नहि आपनारनुं बुरू पण चिंतवे नहि, तेमज कठोरवचनपण तेने कहे नहि, समता धारण करे, मनमां विचारे के आजे न मली तो आवती काले मली जशे इत्यादि १५ रोग परीसह ज्वर अतिसारादि रोग ज्यारे थाय, त्यारे जे साधु गछ बहार होय, ते तो औषध पण न खाय, अने जे साधु गछवासी होय ते गुरु लाघवता विचारीने शास्त्रमा कहेली रीत मुजब औषधोपचार करे, अने रोग सम्यक् विचारणाथी सहन करे १७ तृणस्पर्शपरीसह दर्जादि कठोर तृणनो स्पर्श सम्यक् प्रकारें सहे १८ मलपरीसह साधुना शरीरमां परसेवो थवाथी रजप्रमुख शरीरे लागी कठिन मेल चोटी जाय छे, तेमांथी उनालाना तापथी ते मेल पललतां दुर्गंध उत्पन्न थवाथी उद्वेग थाय, तोपण स्नानादिथी शरीरनी विभूषा साधु न करे ते १९ सत्कारपरीसह सेवक जनोए वस्त्र, अन्न, पानादिथी साधुने घणुज सत्कार कर्यो होय, तोपण मनमां अभिमान न करे, तेमज बीजा मतना साधुओनी तेमना भक्तलोक पूजा भक्ति करे छे, अने जैनमतना साधुनी कोइ दरकार पण करतु नथी एम जाणे तोपण मनमां विषाद न करे ते २० प्रज्ञापरीसह अत्यंत बुद्धिशाली थया छतां मनमां अभिमान न करे, तेमज अल्पबुद्धिवंत छतां "हुं महामूर्ख छु, सर्वने पराभवनु स्थान छुं" एवी दीनता तेमज शोक मनमां लावे नहि २१ अज्ञानपरीसह में चौद पूर्वनुं अथवा तो अगीयार अंगनु अध्ययन कर्युं छे,

तेमज उपांग, छेद, प्रकरण प्रमुख अनेकग्रंथो मने कंठस्थ छे, तथा हुं ज्ञाननो समुद्र बुं एम साधु अभिमान न करे, अथवा हुं आगम ज्ञानरहित बुं धिक्कार छे निरक्षर कुक्षिंभर एवा मने एवी दीनता पण न करे; परंतु विचार करे के निःकेवल ज्ञानावरण कर्मना क्षयोपशमथी मारूं आ स्वरूप छे, स्वकृतकर्मनुं फल छे, कां तो भोगवतां दूर थशे, अथवा तो तप अनुष्ठानथी दूर थशे? एम विचारपूर्वक परीसह सहे. २२ दर्शनपरीसह, शास्त्रमां देवता तथा तेमना इंद्र सांभलवामां आवेछे, परंतु प्रसंगे सहाय कोइ करतुं नथी, तेथी शुं खबर पडे के देवता के इंद्र छे? के नहि? तेमज अन्यमतवालांउनी ऋद्धि, वृद्धि देखीने जिनोक्त तत्वमां संदेह न करे, तेमज मनमां विकलता न पामे ते. आ बावीश परीसह सहन करतां साधु संवरभावी कहेवाय छे. तेनुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होय तो श्रीशांतिसूरिकृत उत्तराध्ययन सूत्रनी वृहद्वृत्ति, तथा तत्त्वार्थसूत्रनी वृत्ति अवलोकन करवी.

हवे पांच प्रकारना चारित्र लखियें छियें. १ सामायक चारित्र, २ छे. दोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहार विशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र, ५ यथाख्यात चारित्र. आ पांच चारित्रना धारण करनारा साधु पण पांच प्रकारना छे. आ कालमां प्रथमना वे प्रकारना चारित्रने धारण करनार साधु छे. त्रण प्रकारना पाछलनां चारित्र विछेद गयां छे. आ पांचे चारित्रनुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होयतो देवाचार्यकृत नवतत्त्वप्रकरणनी टीका, तथा श्रीभगवती, अने पन्नवणा सूत्रनी वृत्ति जोवी. संवरना एप्रमाणे आश्रवने रोकनार सत्तावन भेद थया.

हवे निर्जरातत्त्वनुं स्वरूप लखियें छियें. जेनाथी जीवनी साथे बंधायेला कर्म देशथी तेमज सर्वथी क्षय थाय, ते निर्जरा. ते निर्जरा जेनाथी अर्थात् जे साधनथी थाय तेनुं नाम तप छे. ते तपना बार प्रकार छे. तेनुं संक्षेपथी स्वरूप गुरुतत्त्व निर्णयमां कथन करेलुं छे, विस्तारथी जोवानी इछावालाए, नवतत्त्व प्रकरण वृत्ति, श्रीवर्द्धमानसूरिकृत आचारदिनकर शास्त्र, श्रीरत्नशेखरसूरिकृत आचारप्रदीप, श्रीभगवती सूत्र तथा श्रीउववाइ सूत्र जोवां. इति निर्जरातत्त्व.

हवे बंधतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें. बंधना चार प्रकार छे, १ प्रकृति-

बंध, २ स्थितिबंध, ३ अनुभाग (रस) बंध, ४ प्रदेशबंध, जीव प्रदेश अने कर्म पुद्गलोनु परस्पर दुध अने पाणी जेम एकत्र मळी जवु ते बंध कहेवाय छे बंध शब्द बंदीवान वाचक छे जेम बंधवो केदमां स्वतंत्र रही शकतो नथी, तेम आत्मा ज्ञानावरणीयादि कर्म जंजीरथी स्वतंत्र रही शकतो नथी आ कर्मबंधमा छ विकल्पो छे, ते कहिये छियें

१ कोइ वादी कहेछे के, जीव निर्मल, पुण्यपापना बंधरहित हतो, पछी पुण्यपापनो तेने बंध थयो छे आ प्रथम विकल्प छे आ विकल्प मिथ्या छे, कारण के निर्मलजीव कर्मनो बंध करी शकतो नथी वळी कर्म विना संसारमां उत्पन्न पण थइ शकतो नथी जो निर्मल जीव कर्मनो बंध करे, तो तो मोक्षस्थ जीवपण कर्मनो बंध करी ले जो मोक्षस्थ जीवने कर्म बंध थयो, तो मोक्षनो अभाव थयो जो मोक्ष नहि, तो मोक्षना उपाय जे शास्त्र तेमज शास्त्रना बनावनारा सर्व मिथ्यावादी थशे तेमज सेउं नास्तिकमति बनी जशे वळी एम पण छे के निर्मल आत्मा संसारमां शरीरना अभावथी कर्मबंध केवीरीतें करी शकशे?

२ बीजो विकल्प कर्म पहेलां हतां, अने जीव पछीथी बन्योछे, आ विकल्प पण मिथ्या छे, कारण के जीव विना कर्म कोणें कर्यां हतां, केमके कर्त्ता विना कर्म थइशकता नथी वळी प्रथमना कर्मोनु फल पण आ जीवने मळी शके नहि, कारण के से कर्म तेनां करेलां नथी जो कर्म कर्या विना कर्मनु फल मळे तो अतिप्रसंग दूषण आवे, तेमज कर्म कर्या विना ईश्वरपण कर्म फल भोगववावास्ते नरककुंभमा जइ पडशे वळी जीव पाछळथी बन्योकेवीरीतें? जीवनु उपादान कारण तो कोइ नथी जो कहो के ईश्वर जीवनु उपादान कारण छे, तो कारण समान कार्य पण थवुं जोइयें जेम ईश्वर निर्मल, निष्पाप, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी छे, तेम जीव होवो जोइये परतु जीव तेवो नथी वळी जो ईश्वर जीवोनुं उपादान् कारण होय, तो तो ईश्वरज जीवो बनीने अनेक प्रकारना क्लेश तथा जन्ममरण, गर्भावासादि दुःखोने भोगवनार थया हवे जुउं ईश्वरें पोतेज पोताना पगमां आ कुहाडो शावास्ते मार्यो? पूर्णानंद पद छोडीने संसारनी विडंबनामां केम फसाया? वळी पोते पोताने निष्पाप करवा वास्ते वेदादिशास्त्रद्वारा अनेक तरेहथी तपजपादि क्लेश करवा,

शावास्ते वताव्या? ते कारणथी सिद्ध थायछे के पूर्वोक्त सर्वकथन अज्ञानतासूचक छे.

३ त्रीजो विकल्प. जीव अने कर्म वंने एकसाथे उत्पन्न थयां. आ विकल्पपण मिथ्या छे. कारण के जे वस्तुउ समकाले उत्पन्न थायछे, ते परस्पर कार्यकारणरूप थइ शकती नथी. जो कर्म जीवनां करेलां सिद्ध न थयां तो कर्मफलपण जीव भोगवशे नहि. आ प्रत्यक्षविरोध छे; कारण के जीव तो कर्म भोगवता देखिये छियें. वली आ पक्षमां जीव तथा कर्मनुं कोइ उपादान कारण नथी. तेथी आ विकल्पपण असत्य छे.

४ चोथो विकल्प. जीव तो छे, परंतु जीवने कर्म नथी आपण मिथ्या छे. कारण के जो जीवने कर्म नथी तो जीव सुखदुःख केवीरीतें भोगवी शके? कर्म विना संसारनी विचित्रता कदापि थइ शकशे नहि, ते कारणथी आ विकल्पपण मिथ्या छे.

५ पांचमो विकल्प जीव तेमज कर्म, वंने नथी. आ विकल्प तदन असत्य छे. ज्यारे जीवज नथी, त्यारे जीव अने कर्म नथी एम कहेनार कोण छे? एम कहेनार जीव छे? के कोइ वीजो छे? सबब आ स्ववचन विरोध छे तेथी आ पक्षपण मिथ्या छे.

६ छठो विकल्प, जीव अने कर्म, आ वंने अनादि, अपश्चानुपूर्वी छे.

प्रश्नः— जो जीव अने कर्म वंने अनादि छे, तो जीवनी जेम कर्मनो पण कदापि नाश न थवो जोइयें?

उत्तरः— कर्म जे अनादि छे ते प्रवाह अनादि छे, ते कारणथी तेनो क्षय थइ जाय छे.

प्रश्नः— तमे जे वंध कहोछो ते निर्हेतुक छे? के सहेतुक छे? जो कहो के निर्हेतुक छे, तो तो "नित्यसत्वं" अथवा "नित्य असत्वं" थइ जशे, कारण के जे वस्तुनो हेतु नथी ते आकाशवत् नित्य सत् होय छे, अथवा खरशृंगवत् नित्य असत् होय छे. तेमज निर्हेतुक होवाथी मोक्षनो अभाव थइजशे. जो कहो के सहेतुक छे, तो कहो के ते वंधनो शुं हेतु छे?

उत्तरपक्षः— आ वंधना मूलहेतु चार छे, अने उत्तर हेतु सत्तावन छे. प्रथम चारप्रकारनो वंध कहिएछीए. ते चारमां प्रथम तो प्रकृतिवंध

छे ते प्रकृति कइ कइ छे? तेमज तेनो बंध शुं छे? जुओ मूलप्रकृति आठ छे १ मत्यादि ज्ञाननुं जे आवरण, आच्छादन, ते ज्ञानावरण २ सामान्य बोध, चक्षुआदिनुं जे आवरण ते दर्शनावरण ३ सुख दुःख वेदियें (जोगवियें) ते वेदनीय ४ मोहे, जीवने विचित्रता प्राप्त करावे ते मोह ५ सर्वथा जे कर्म चाल्यां जाय "एति याति चेत्यायु" जेना उदयथी जीव जीवे छे ते आयु ६ नमावे, जे शुजाशुज गत्यादि रूपें आत्माने, ते नामकर्म ७ गोत्र शब्दनी उत्पत्ति आ प्रमाणे छे "गा वाच त्रायत इति गोत्रं" जेना उदयथी जीव उंच नीच कुलवालो कहेवाय छे, ते गोत्र ८ अतर एटले वचमा आववु, लाजादिना वचमा आववु, अर्थात् दान, लाजादि जीवने प्राप्त थता न थवा दे, ते अतराय आ आठ स्वजावरूप कर्म, जे जीवनी साथे क्षीर, नीरनीपेठे मिथ्यात्वादि हेतुओथी बंधाइ जाय तेनु नाम प्रकृतिबंध छे २ तेज आठ प्रकृतियोनी स्थिति अर्थात् कालमर्यादा, जेम के आ प्रकृति आटला वखतसुधी आत्मानी साथे रहेशे, पछी नहि रहे, जेनाथी एवी स्थिति थाय ते स्थितिबंध ३ तेज आठ प्रकृतियोमां तीव्र, मंद रस जे करे, ते अनुजागबंध ४ कर्म प्रदेशनुं जे प्रमाण, जेम के आटला परमाणु आ प्रकृतिमां छे, ते परमाणुओनो आत्मानी साथे जे बंध ते प्रदेशबंध

हवे ते चार प्रकारनां बंधनो विस्तारथी बोध थवा लाडवानु दृष्टांत लखियेंछियें जेम कोइ लाडवो त्रिकटुनो बनावेलो होय अर्थात् सुंठ, पीपर, अने मरीनो बनावेलो होय, ते त्रिकटुथी बनेली वस्तुनो स्वजाव वायुने हरण करवानो छे, तेथीज रीतें शीतद्रव्योथी बनेली वस्तुओनो स्वजाव पित्तहरण करवानो छे, तथा अरडुसो अने क्षारादि वस्तुओनो स्वजाव कफहरण करवानो छे, तेजप्रमाणे कर्मोनो पण स्वजाव छे, कोइ कर्मनो ज्ञानावरण स्वजाव छे, तो कोइनो दर्शनावरणस्वजाव छे, ते प्रकृति (स्वजाव) बंध २ कोइ लाडवो एक दिवस रही बगडी जाय छे कोइ बे दिवस, कोइ चार, छ, आठ, दश, पदर तो कोइ पक्ष, मास सुधी रहे छे अने पछी बगडे छे, तेथीजरीतें कोइ कर्मनी स्थिति अतर्मुहूर्त्त, तो कोइनी प्रहर, दिवस, पक्ष, मास यावत् सीत्तेर कोटाकोटी सागरोपमसुधीनी छे, ते प्रमाणे स्थिति करी फल दइ चाली जाय छे, ते

स्थितिबंध. ३ जेम कोइ लाडवानो रस कडवो तो कोइनो मीठो, कषायलो छे, तेमज कोइ कर्मनो रस सुखरूप तो कोइनो दुःखरूप; संसारमां जे जे अवस्था जीवोनी थया करे छे ते ते सर्वे कर्मना अनुभाग (रस) थीज थाय छे, ते रसबंध. ४ जेम कोइ लाडवो वजनमां पांच तोलानो. तो कोइ पाशेर, अडधो शेर, शेरनो होय छे, तेम कोइ कर्मना प्रदेश गणतरीमां थोडा तो कोइ घणा एम होय छे, ते प्रदेशबंध आ दृष्टांत कर्मग्रंथनुं छे.

हवे बंधहेतुओनुं स्वरूप लखियेंछियें. १ मिथ्यात्व, ते तत्त्वार्थ श्रद्धानरहित थवुं. २ अविरति, ते पापथी निवृत्त थवाना परिणामनो अभाव. ३ कषाय, तेमां कष अर्थात् संसार अथवा कर्म, तेनो जे आय कहेतां लाभ ते कषाय, क्रोध, मान माया, लोभरूप. ४ योग, ते मन, वचन, कायानो व्यापार. आ चारनो विस्तार, सत्तावन भेद छे.

हवे ते उत्तरहेतु सत्तावननुं स्वरूप लखियेंछियें, १ मिथ्यात्वना पांच प्रकार छे. १ अभिग्रहमिथ्यात्व, २ अनभिग्रहमिथ्यात्व, ३ अभिनिवेश मिथ्वात्व, ४ संशयमिथ्यात्व, ५ अनाभोगमिथ्यात्व.

१ अभिग्रहमिथ्यात्वनुं स्वरूप. जीव एम जाणे के, जे कांइ हुं समजेलो छुं ते सत्य छे, बीजानी समज ठीक नथी, एम मनमां धारी सत्य, असत्यनी परीक्षा करवानी मनमां अभिलाषा नहि, तेमज सत्य असत्य स्वरूपनो निरधार करवानो विचार पण नहि. आ मिथ्यात्व दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारकोने होय छे, ते पोताना मनमां एम विचारे छे के मत अमे अंगीकार कर्यो छे ते सत्य छे, बीजा सर्वमत असत्य छे एवा जेना परिणाम ते अभिग्रहमिथ्यात्व.

२ अनभिग्रहमिथ्यात्व. जीव एम माने के सर्वमतो सारा छे, सर्व मतोथी मोक्षप्राप्ति थाय छे, तेथी कोइ पण मतने बुरो कहेवो ते वास्तविक नथी सर्वेने नमस्कार करवा. आ मिथ्यात्व सर्व बाल गोपालादि जेओए कोइपण दर्शनने अंगीकार करेल नथी तेओने छे. कारण के तेओ अमृत तथा विष बंनेने एकसरखुं माननारा छे.

३ अभिनिवेशमिथ्यात्व. जे पुरुष जाणीने जूठुं बोले, जेम के प्रथम तो स्मृतिदोषथी, वा अज्ञानताथी, शास्त्रार्थमां भूलपडी, पछी कोइ वि-

ळान् कहे के तमे श्रा वातमां श्रा प्रमाणे जूख खाउंछो ते प्रमाणे बराबर पोताना जाणवामा श्रावतां उतां, पोतें कहेखा श्रसत्यवादमां कदाग्रह ग्रहण करे, जात्यादि श्रजिमानथी वारवार कहेखा छतां न माने, विरुद्ध स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियो बनावीने, पोताना कथन करेखा मतने सिद्ध करे, वादमां हार पामे तोपण मत मुके नहि एवा कदाग्रहवाखा जीव, श्रतिपापी, तेमज बहुखसंसारी थाय छे एवु मिथ्यात्व प्राय जे जैनी जैनमतने विपरीत कथन करे छे तेनामां थइ जाय छे तेवा कदाग्रही गोष्ठामहिख प्रमुख थाय छे जाष्यकार श्री श्रजयदेवसूरि नवांगीवृत्तिकारक, नवतत्वप्रकरणना जाष्यमां कहेछे के "गोठा माहिलमाइणं, ज श्रजिनिविसितु तयं" श्रादिशब्दथी बोटिक शिवजूतिने पण श्रजिनिवेशिक मिथ्यात्ववाखा जाणवा

४ संशयमिथ्यात्व ते जिनोक्त तत्त्वमां शंका करवी, जेम के जीव श्रसंख्य प्रदेशी छे? के नथी? इत्यादि एवीरीतें सर्व पदार्थमां शंका करवी, तेनाथी जे उत्पन्न थाय ते सांशयिक मिथ्यात्व "तदाह जाष्यकृत्॥ सांशयिकं मिथ्यात्वं तदशेषया शकासंदेहोजिनोक्ततत्वेष्विति"॥ संशय मिथ्यात्व होवानां कारणो श्रीजिनजद्रगणि क्षमाश्रमण ध्यानशतकमां लखे छे के प्रथम तो जैनमत स्याद्वादरूप श्रनंतनयात्मक छे, ते कारणथी समजबोज कठिन छे, तेमज सप्तजंगीनुं सकलादेशी, विकलादेशी स्वरूप, श्रष्टपक्ष, सातसें नयस्वरूप, चार निक्षेप, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, तथा १ उत्सर्ग, २ अपवाद, ३ उत्सर्गापवाद, ४ श्रपवादोत्सर्ग, ५ उत्सर्गोत्सर्ग, ६ श्रपवादापवाद, तथा विधिवाद, चारित्रानुवाद, इत्यादि श्रनतनय श्रपेक्षाए जैनमतनां शास्त्र कथन करेलां छे, ज्यां सुधी जे श्रपेक्षाथी जे शास्त्रस्वरूप कथन करेलु छे ते श्रपेक्षाथी ते स्वरूपने न समजे, त्या सुधी जैनमतनी यथार्थ समज पामवी श्रतिकठिन छे, तेवी समजण पामवावास्ते बहुज निर्मलबुद्धि जोइये ते प्राय थोडा जीवोने छे, तेमज शास्त्रना श्रर्थ बतावनारा संपूर्ण विद्वान् गुरु जोइए, ते देखाता नथी इत्यादि निमित्तोथी संशयमिथ्यात्व थाय छे

५ श्रनाजोगमिथ्यात्व जे जीवोने उपयोग नथी के धर्म, श्रधर्म शु वस्तु छे? एवा जे विकलेंद्रियादि जीव, तेउने श्रनाजोगमिथ्यात्व होय छे

ए प्रमाणे मिथ्यात्वना पांच ज्ञेद छे, तेउना पण वीजा अनेक ज्ञेद थाय छे, परंतु ते सर्वे आ पांचनी अंतर्ज्ञूत समजवा. ते आ प्रकारे छे.

१ प्ररूपणामिथ्यात्व. जिनवाणीरूप जे सूत्र, निर्युक्ति, ज्ञाष्य, चूर्णी, टीका, तेनाथी विपरीत प्ररूपणा करवी ते.

२ प्रवर्त्तनामिथ्यात्व. जे काम मिथ्यादृष्टि जीवो धर्म जाणीने करे छे, तेउनी देखादेखीए, तेउना करवा मुजव करे ते.

३ परिणाममिथ्यात्व. मनना परिणाम विपरीत रहे, मनमां कदाग्रह होय ते टले नहि, तेमज शुरू शास्त्रार्थ माने नहि ते.

४ प्रदेशमिथ्यात्व. मिथ्यात्वना प्रदेश जे सत्तामां छे, तेनुं नाम प्रदेशमिथ्यात्व, आ चार ज्ञेदोना पण अनेक ज्ञेद छे, तेमांथी केटला एक लखियेंछियें

१ धर्म जे वीतराग, सर्वज्ञें प्ररूपेलो छे, तेने अधर्म माने. २ जे हिंसा प्रवृत्ति प्रमुख आश्रवमय अशुरू अधर्म छे, तेने धर्ममाने, ३ जे सत्यमार्ग छे तेने मिथ्यात्व (असत्य) मार्ग माने. ४ जे विषयियोनो मार्ग छे तेने सत्यमार्ग माने. ५ जे साधु सत्तावीश गुणें विराजमान छे तेने असाधु कहे, ६ जे आरंज्ञ परिग्रह, कषायमां रक्त, तेमज जेना उपदेशथी लोकोने सांसारिक विषयोमां मस्तपणुं, कुवासना, कुबुरू इत्यादि उत्पन्न थाय, एवा पछरनी नावसमान अन्यलिंगी कुलिंगी, तेमने साधु कहे. ७ छकायना जीवोमां अजीवपणुं माने. ८ सुवर्ण, काष्ट प्रमुख अजीवने जीव माने. ए मूर्त्तपदार्थोने अमूर्त्त माने. १० अमूर्त्त पदार्थोने मूर्त्त माने. आ दशज्ञेदमिथ्यात्वना छे.

वली छ ज्ञेद मिथ्यात्वना छे ते कहियें छियें. १ लौकिकदेव, २ लौकिक गुरु, ३ लौकिक पर्व, ४ लोकोत्तर देव, ५ लोकोत्तर गुरु, ६ लोकोत्तर पर्व.

१ लौकिक देवगत मिथ्यात्व. जे देव रागद्वेषथी ज्ञरेला छे, एक उपर कृपावान् थाय छे, बीजानो विनाश करे छे, स्त्रीना ज्ञोगविलासमां मग्न छे, जेणें अनेक प्रकारनां शस्त्र धारण करेलां छे, पोतानी ऐश्वर्यताना जे अज्ञिमानी छे, जेना हाथमां जपमाला छे, सावद्यज्ञोग ज्ञोगवे छे, पंचेंद्रियवध चाहाय छे, एवा देवने परमेश्वर मानवा, परमेश्वरना अंश अवतार मानवा, तेउनुं पूजन करवुं. इत्यादि. ते लौकिक देवगत मि-

थ्यात्व ठे तेना अनेक भेद ठे, तेनु स्वरूप मिथात्वसित्तेरी प्रमुख ग्रंथथी जाणवुं

२ लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व जे अढार पापस्थाकोनु सेवन करे, नव प्रकारना परिग्रह राखे, गृहस्थाश्रम पाले, स्त्री, पुत्रपरिवारवाला होय कुलिंगीहोय, मनःकल्पित नवा नवा वेष बनावी स्वकपोलकल्पित मत चलावे, श्रागघर राखे, बाह्य परिग्रह तो कदाच त्यागेल होय, तो पण अन्यतर ग्रंथिर्हमा मग्न होय, तजे नहि, गुरुनाम धरावी मंडल परिवारे विचरे, जेनी अनादिनी भूल मटेली न होय, जेने शुद्धसाध्यनी पिछान न होय तेवाठने गुरु माने, तेठनु बहु मान करे, तेठने मोक्षप्रदाता जाणी दान दे, तेठने परम पात्र जाणे, एवाज जीवना परिणाम ते लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व ठे

३ लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व १ आजापडवो, २ प्रेतबीज, ३ गुरुत्रीज, ४ गणेशचोथ, ५ नागपांचम, ६ जोलणांठठ, ७ शीली सातम, ८ बुध अष्टमी, ए नोली नवमी, १० विजयदशमी, ११ व्रत एकादशी, १२ वत्स बारश, १३ धनतेरश, १४ अनंतचौदश, १५ अमावास्या, १६ सोमवती अमावास्या, १७ रक्षाबंध, नालीएरी पुनम, १८ होली, १ए आदित्यवारादि, २० सोमप्रदोष, २१ उत्तरायण, २२ अन्य संक्राति, २३ ग्रहण, २४ नवरात्रि, २५ श्राद्ध, २६ पीपलेपाणी सेचन, २७ अश्व, गर्दजपूजन, २८ गोत्राटी, २ए अन्नकूट, ३० वसुरा, ३१ स्मशानपूजन, ३२ कबरमेला, इत्यादि अनेक लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व ठे

४ लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व ते देव श्री अरिहंत, धर्मना आकर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार, परमपूज्य, सकलदोषरहित, एवा शुद्ध, निरंजन देवनी स्थापना रूप जे प्रतिमा, तेनी पासे, आ लोकना अनेकप्रकारना पौद्गलिक सुखजोग मेलववानी वाठा करे, जेम के, हे जगवन्! जो आ मारुं काम थशे तो, तमारी मोटी पूजा, आंगी रचावीश, ठत्र चडावीश, दीपमाल, रोशनी करावीश, इत्यादि, तेमज परजवमां मने आपनी जक्ति पूजाथी इंद्र, चक्रवर्त्तिपणुं, तथा देव, नरपतिनी पदवी प्राप्त थाय इत्यादि, तथा मारा तथा पुत्र स्त्री प्रमुखना रोग प्रमुखनो नाश थाय इत्यादि पौद्गलिक सुखवास्ते, तेमज डुःखना

निवारणवास्ते ज्ञावपूर्वक वीतराग देवने मानवा, ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व ठे. दृष्टांत. जे पुरुष चिंतामणी रत्ननो दातार होय, तेनी पासे काचना कटकानी मांगणी करवी ते जेम हास्यास्पद तेमज अज्ञानता ठे, ते समान आ इछा ठे, तेथी अयोग्य ठे, जेने कर्मप्रकृति स्वरूपनुं ज्ञान तेमज अनुज्जव न होय तेज एवी मागणी करे ठे.

५ लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व पोते निर्गुणी ठतां साधुनो वेष राखे, जीववाणीने उछापी, पोताने मनःकल्पित उपदेश आपे सूत्रना साचा अर्थने त्रोडे, एवा उत्सूत्रना प्ररूपक तेउने गुरु जाणी, तेउनुं बहुमान ज्ञक्ति पूजा करवी ते तथा जे साधु गुणवान् होय, तपस्वी होय, चारित्रपात्र होय, आचारवंत, तेमज यथोक्तक्रियावंत होय, तेमनी आ लोकना सुखवास्ते, तेमज परलोकना पौजलिक सुखवास्ते, सेवा करे बहुमान करे, मनमां एम पण जाणे के जो तेमनी बहु सारी रीतें सेवा करीश तो तेमनी मेहेरबानीथी, धन ऋद्धि स्त्रीपुत्रादि परिवार मने प्राप्त थशे, एवा परिणाम ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व.

६ लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व. जिनेश्वर ज्ञगवानना पांच कल्याणकनी तिथियोने दिनें, तथा बीजा पर्वने दिने, धन, स्त्री, पुत्रादिवास्ते तप, जपादि धर्मकरणी करवी ते लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व ठे. इत्यादि मिथ्यात्वना अनेक ज्ञेद ठे, परंतु ते सर्वे पूर्वोक्त अज्ञिग्रहादि मिथ्यात्वमां अंतर्ज्ञूत ठे.

हवे बार प्रकारनी अविरतिनुं स्वरूप कहियें ठियें. पांच इंद्रिय, अने ठठुं मन, तेमज ठ काय, मली बार प्रकार ठे, तेमनुं स्वरूप एवुं ठे के, पांचे इंद्रियोने पोत पोताना विषयोमां प्रवर्त्ताववी, ते पांच तथा कोइ पण पापमय वस्तुथी मननो निरोध न करवो ते, तथा ठ जीवनिकायनी हिंसामां प्रवृत्ति करवी, ते सर्व मली बार अविरति ठे.

हवे कषाय बंधना पचीश ज्ञेदनुं स्वरूप कहियें ठियें. अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, तथा अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, तथा प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, तथा संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, मली सोल, तथा नव नोकषाय, १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ ज्ञय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ स्त्रीवेद, ८ पुरुषवेद, ए नपुंसकवेद

वळी पचीश कषाय, संसार स्थितिना मूल कारणो छे, तेमनु विस्तारथी कथन आगल करेलु छे

हवे योगनामें बंध हेतुनु स्वरूप लखियें छियें ते मन, वचन, काय, एम योगना त्रण प्रकार छे आ त्रणना उत्तर भेद पंदर छे मनोयोगना चार भेद, वचनयोगना चार भेद तथा काययोगना सात भेद सर्व मळी पंदर भेद छे

मननाम अंतःकरणनुं छे, तेना चार प्रकार छे १ सत्य मनोयोग, २ असत्य मनोयोग, ३ मिश्र मनोयोग, ४ व्यवहार मनोयोग, मन शु वस्तु छे ? कायाना व्यापारथी पुद्गल ग्रहण करीने, ते पुद्गलोने चिंतन धर्म रूपें काढवां ते द्रव्यमन छे, अने ते पुद्गलोना संयोगथी जे ज्ञान उत्पन्न थाय तेनु नाम भावमन छे ते ज्ञानथी व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने ते व्यवहारथी मन पण सत्यादि व्यपदेशने प्राप्त थाय छे वळी उपचारें द्रव्यमन पण ज्ञायक छे वळी मन शब्दथी मनोयोग, तेनो इंद्रियावरण कर्मना क्षयोपशमथी उत्पन्न थयु जे मनोज्ञान, तेनाथी परिणत आत्मा ने बलाधान करवावाळी मनोवर्गणाना संबंधथी उत्पन्न थयु जे वीर्य विशेष, ते अहींया मन जाणवुं तेवीज रीतें वचनयोग, ते वचननी वर्गणा अर्थात् परमाणुउंनो समूह, ते वचन वर्गणाथी उत्पन्न थयु जे सामर्थ्य विशेष, आत्मानी परिणति, ते वचनयोग जाणवा ते मनोयोग तथा वचनयोगना मळी आठ प्रकार छे

प्रथम मनमां जे सत्य व्यवहारनु चिंतवन करवुं, ते सत्यमन, जेमके जीवादि पदार्थ द्रव्यरूपें नित्य, पर्यायरूपें अनित्य, एम अनेकांतपणें चिंतववु, ते सत्यमनोयोग तेनाथी विपरीतपणे जीवादि पदार्थोनु स्वरूप वचन निरपेक्षपणे चिंतववु, तेमज धर्म नथी, पुण्यपाप नथी स्वर्ग नरक नथी इत्यादि चिंतवन करवु ते असत्य मनोयोग तेवीजरीतें सत्यचिंतवन वचनरूपें बोलवुं ते सत्यवचनयोग, अने असत्यचिंतवन वचनरूपें बोलवुं ते असत्यवचनयोग तथा कांइक असत्य, जेम के आ गाममां आजे दश जन्म्या, तथा दश मुआ, तेमां कांइक साचुं अने कांइक जुठु चिंतवन करवुं तथा गोवर्गने देखीने चिंतववुं के आ सर्व गायो छे, पछी तेमां बळद पण होय ते मिश्रमनोयोग, अने ते प्रमाणे

बोलवुं ते मिश्र वचन योग. तथा आमंत्रणा, याचना, जेम के हरिचंद्र अहिंयां आवे, दामोदर आ वस्तु आपे, इत्यादि जे चिंतववुं, तेथी जिनवचन विरोधाय नहि, तेथीअसत्यपण नहि, अने आराधक पण नहि, तेथी सत्यपण नहि. जेथी ए प्रमाणे चिंतवन करवुं ते व्यवहार मनोयोग अर्थात् असत्य मृषा मनोयोग, अने तेज प्रमाणें बोलवुं. ते व्यवहार वचनयोग. ए प्रमाणे मनोयोग तथा वचनयोगना आठ भेद थया.

हवे सत्यवचनना दशप्रकार छे तेनुं स्वरूप कहिएछिए. १ जनपद सत्य, जे देशमां जे वस्तुने जे नामथी बोलता होय, ते देशमां ते नाम सत्य छे, जेम के कोकणदेशमां पाणीने पिछ कहेछे, कोइ देशमां मोटा पुरुषने बेटो कहे छे, वली बेटाने काको कहे छे, पिताने भाइ कहेछे, सासुने आइ कहेछे, इत्यादि. ते जनपद सत्य छे. २ सम्मत सत्य, जेम के पंकथी (कादवथी) मेडक, शेवाल, कमलादि उत्पन्न थाय छे, तोपण पंकज शब्दें कमलज विद्वान् पुरुषोए सम्मत करेल छे, परंतु मेडक, शेवाल तेउ मानता नथी. ३ स्थापना सत्य, जे प्रतिमा जेनी होय, तेने तेना नामथी बोलवी ते स्थापना सत्य, जेम के महावीर, पार्श्वनाथजी आदि अर्हंतनी प्रतिमा होय, ते प्रतिमाने, महावीर, पार्श्वनाथजी कहे तो ते सत्य छे, परंतु तेने पथ्थर कहेनार मृषावादी छे; जेम के शाहीथी कागल उपर अक्षरोनी स्थापना करवाथी. तेउने ऋग्, यजु, साम, अथर्व वेद कहेवाय छे, तेमज आचारांगादि अंग कहेवाय छे, तथा काष्ठना आकारविशेषने कमाड कहेवाय छे, इंट, चुना, पथ्थरना आकार विशेषने स्थंभ कहेवाय छे; पुस्तकमां त्रिकोणादि चित्र काढ्यां होय, तेने आर्यावर्त्त, भरतखंड, हिंदुस्थान, अमेरिका इत्यादि कहेवाय छे, तथा श्याहीथी कागलपर आकृति करवाथी ककार, खकार कहेवाय छे. ए प्रमाणे बोलवुं ते सत्य छे. ए प्रमाणेनी स्थापनाउ जोवाथी मनुष्यनी कार्य सिद्धि अवश्य थाय छे, ते सर्वने अनुभव थयेल छे. ए प्रमाणे सिद्धि थती न होय तो मनुष्यो स्थापना शावास्ते करे? ते कारणथी महावीर तथा पार्श्वनाथजीनी प्रतिमाने श्रीमहावीर तथा श्रीपार्श्वनाथजी कहेवा ते स्थापना सत्य छे, तेमां विशेष ए छे के, जे देव शुद्ध छे, तेनी स्थापना पण शुद्ध छे, अने जे देव शुद्ध नथी, तेनी स्थापना पण शुद्ध नथी;

परंतु ते स्थापनाने, ते देव कहेवा ते वात सत्य छे ४ नाम सत्य, कोइ पुरुषें पोताना पुत्रनु नाम कुलवर्द्धन राखेलु छे, अने जे दिवसथी ते पुत्रनो जन्म थयेल छे, ते दिवसथी तेना कुलनो नाश थतो जाय छे, तो पण ते पुत्रने कुलवर्द्धन नामथी बोलावे तो ते सत्य छे ५ रूप सत्य कदापि गुणोथी भ्रष्ट होय तो पण साधुना वेषवालाने साधु कहे तो ते सत्य छे ६ प्रतीत अर्थात् अपेक्षा सत्य जेम के मध्यमानी अपेक्षाए अनामिका आंगलीने नानी कहेवी ते ७ व्यवहार सत्य जेम के पर्वत बले छे, रस्तो चाले छे, इत्यादि ८ भावसत्य जेम के तोतामां पांच रंग छे, तोपण तोताने लीला रंगवालो कहेवो इत्यादि ए योगसत्य जेम के दंडना योगथी दंडी कहेवो, इत्यादि १० उपमा सत्य जेम के मुख, चंद्र समान छे, इत्यादि दशप्रकारनां सत्य छे

हवे दशप्रकारनां जूठ कहियेंछियें १ क्रोधमिश्रित अर्थात् क्रोधने वश थइ वचन बोलवां ते असत्य, २ मानना उदयथी बोलवां, ३ मायाना उदयथी बोलवां, ४ लोभना उदयथी बोलवां, ५ रागना वचनथी बोलवां, ६ द्वेषना उदयथी बोलवां, ७ हास्यने वश थइ बोलवां, ८ भयने वश थइ बोलवां, ए विकथा करवी, १० जे बोलवाथी जीवनी हिंसा थाय आ दश प्रकारनां असत्य वचन छे

हवे दश प्रकारनां मिश्रवचन कहियेंछियें, १ उत्पन्न मिश्रित जेम के खबर विना कहेवुं के आजे आ गाममां दशबालक जन्म्या छे, इत्यादि २ विगतमिश्रित, जेम के खबर विना कहेवुं के आजे आ गाममां दशमाणस मुआं छे, इत्यादि ३ उत्पन्न विगत मिश्रित जेम के खबर विना कहेवु के आजे आ गाममा दश जन्म्या छे, अने दशज मुआ छे, ४ जीवमिश्रित ते जीव अजीवना राशिने कहेवुं के आ जीव छे ५ अजीव मिश्रित ते अजीवना राशिने कहेवु के आ अजीव छे ६ जीवाजीवमिश्रित ते जीव अजीव बन्ने माटे मिश्रभाषा बोलवी ते ७ अनंतमिश्रित ते मूल आदि अवयवोमां केटलीएक जगाए अनंत जीव छे, अने कोइजगाए प्रत्येक जीव छे, तेउने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहेवु ते, ८ प्रत्येक मिश्रित ते प्रत्येकजीवोने अनंतकाय कहेवा ते ए अद्धामिश्रित ते बे घडी तडको थया छता कहे के दिवस उग्यो छे १० अद्धा

मिश्रित. एक घडीरात्रि गइ होय तथापि कहेके दिवसनो उदय छे. आ दश प्रकारनां मिश्रवचनो छे.

हवे व्यवहार वचनना बार भेद कहियेंछियें. १ आमंत्रण करवुं के हे भगवन्! २ आज्ञापना, ते आ काम करो, आ वस्तु लावो, ३ याचना–आ वस्तु आपशो, ४ पृछना–आ गाम जवानो रस्तो कयो छे? ५ प्रज्ञापना–धर्मस्वरूप आ प्रमाणे छे. ६ प्रत्याख्यानी–आ काम अमने करवुं कल्पे नहि. ७ इछानुलोम–यथा सुखं. ८ अनभिगृहीत–ते वातनी मने खबर नहि. ए अभिगृहीत–मने ते वातनी खबर छे. १० संशय–तेनुं स्वरूप एम केम होय? ११ स्पष्ट प्रगट अर्थ कहेवा. १२ अस्पष्ट अप्रगट अर्थ कहेवा.

हवे काययोगना सातभेदनुं स्वरूप कहियेछियें–काययोग अर्थात् आत्माना निवासभूत पुद्गल द्रव्य घटित, जेम वृद्ध तथा दुर्बलने अवष्टंभभूत लाकडी छे, तेम विषम काममां जेना योगथी जीवना वीर्यनुं परिणाम सामर्थ्य; जेम अग्निना संयोगथी घडानी रक्तता थाय छे, तेवीजरीतें आत्माने कायाना करण संबंधथी वीर्यपरिणाम छे. आ काययोगना सात भेद. १ औदारिक काययोग, २ औदारिक मिश्र काययोग, ३ वैक्रिय काययोग, ४ वैक्रिय मिश्र काययोग, ५ आहारक काययोग, ६ आहारक मिश्र काययोग, ७ कार्मण काययोग. प्रथमना बे काययोग, मनुष्य अने तिर्यंचमां होय छे. त्रीजो चोथो काययोग स्वर्गवासी देवताउमां होय छे. पांचमो, छठो काययोग चौदपूर्वधर साधुउमां होय छे. सातमो काययोग, जीव ज्यारे काल करी परभव गमन करे छे, त्यारे रस्तामां तेनी साथे होय छे; तेमज समुद्घात अवस्थामां केवलीने होय छे; आहार पाचन करवामां समर्थ एवुं तैजस शरीर, कार्मण योगनी अंतर्भूत होवाथी तेनुं पृथक् ग्रहण करवामां आव्युं नथी. ए प्रमाणे सात भेद काययोगना बताव्या. सर्व मली बंधतत्वना उत्तरभेद सत्तावन थया.

हवे मोक्ष तत्वनुं स्वरूप कहियेंछियें. प्रथम मोक्षनी व्याख्या कहियेंछियें. "जीवस्य कृत्स्नकर्मक्षयेण यत्स्वरूपावस्थानं तन्मोक्ष उच्यते" ॥ भावार्थः–जीवनां ज्ञानावरणादि सर्वकर्मनो क्षय थवाथी तेनुं जे स्वरूप अवस्थान ते मोक्ष छे. ते मोक्ष, जीवनो धर्म छे. अने धर्म, धर्मी क-

थचित् अभेद होवाथी, धर्मी जे सिद्ध, तेनी जे प्ररूपणा ते पण मोक्ष प्ररूपणा छे, कारण के मोक्ष जे छे ते जीवपर्याय छे, ते जीवपर्याय कथंचित् सिद्ध जीवथी अभिन्न छे, जीवना पर्याय सर्वथा जीवथी भिन्न थइ शकता नथी यदुक्त ॥ द्रव्य पर्यायवियुत, पर्यायाद्रव्यवर्जिता ॥ क कदा केन किंरूपा, दृष्टा मानेन केन वेति ॥ १ ॥ भावार्थ–द्रव्य पर्यायोथी रहित, अने पर्यायो द्रव्यथी रहित एम कोइ जगाए, कोइ अवसरें, कोइ प्रमाणे, कोइरूपें कोइपुरुषें देखेल छे ?

हवे सिद्धोनु स्वरूप नवप्रकारें, सूत्रकार तेमज भाष्यकार कहे छे १ सत्पदप्ररूपणा, २ द्रव्यप्रमाण, ३ क्षेत्र, ४ स्पर्शना, ५ काल, ६ अंतर, ७ भाग, ८ भाव, ए अल्पबहुत्व आ नव द्वार छे १ सत्पदप्ररूपणा द्वार मोक्षपद सत्पद छे, विद्यमान पद छे, छतु पद छे, शा कारणथी ? एक पद छे तेथी, कारण के जगत्मा जेटला एकपदवाची घटपटादि पदार्थ छे, ते सर्व अवश्य छता छे, अने जे जे बे बे पदवाची पदार्थ छे, ते ते पदार्थ छता पण छे, अने अछता पण छे जेम अश्वशृंग, वन्ध्यापुत्र, आकाशकुसुम आ बे पदनां नाम छे ते अछता छे, तेमज गोशृंग, राजपुत्र, केतकीकुसुम, आ बे पदनां नाम छता छे ते न्यायें मोक्षपद एकपदवाची होवाथी विद्यमान पद छे ते मोक्षपद याने सिद्धपद गति आदि चौद पदोमा जोडवा जेम के १ गति पाच छे, १ नरकगति, २ तिर्यग्गति, ३ मनुष्यगति, ४ देवगति, ५ सिद्धगति, तेमा सिद्धगति शिवाय बाकीनी चारगतिमा सिद्ध नथी यद्यपि १ कर्म सिद्ध, २ शिल्पसिद्ध, ३ विद्यासिद्ध, ४ मंत्रसिद्ध, ५ योगसिद्ध, ६ आगमसिद्ध, ७ अर्थसिद्ध, ८ यात्रासिद्ध, ए अभिप्रायसिद्ध, १० तप सिद्ध, ११ कर्मक्षयसिद्ध एम अनेक प्रकारना सिद्ध, आवश्यक निर्युक्तिकारें कथन करेल छे, तो पण अहींयांतो जे कर्मक्षयथी सिद्ध थया छे तेनोज अधिकार छे तेऊनेज मोक्ष पर्याय छे, बीजाऊने नहि २ इंद्रियो पाच छे, एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पचेंद्रिय, आ पांचे प्रकारमा सिद्ध नथी, कारण के शरीरनो सर्वथा नाश थाय छे त्यारे सिद्ध थवाय छे, ज्यां शरीर छे, त्यां इंद्रियो छे, सिद्धने शरीर नथी तेथी ते अतींद्रिय छे ३ छकाय १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वाउकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रस

काय, आ छए कायमां सिद्धपणुं नथी, कारण के सिद्ध कायरहित छे अर्थात् अशरीरी छे. ४ योग. त्रणप्रकारें योग छे, मन, वचन, काययोग; तेमां केवल काययोग एकेंद्रिय जीवने छे, अने द्वींद्रियादिथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यंत जीवने, काययोग तथा वचनयोग छे, अने संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त जीवने त्रणे योग छे, आ त्रणे योगमां सिद्धपणुं नथी, अने सिद्ध तो मन वचन, काययोगनो अभाव थाय छे त्यारे थवाय छे तेथी सिद्ध अयोगी छे. ५ वेद. त्रणप्रकारें छे, स्त्री, पुरुष, नपुंसक, आ त्रणे वेदमां सिद्धपणांनो अभाव छे, त्रणे वेदनो क्षय करवामां आवे त्यारे सिद्धपणुं प्राप्त थाय छे, तेथी सिद्ध अवेदी छे. ६ कषाय. चार प्रकारें छे. क्रोध, मान, माया, लोभ. आ चारेनो अभाव थाय त्यारे सिद्धपणुं प्राप्त थाय छे तेथी सिद्ध अकषायी छे. ७ ज्ञान. ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, आ पांच प्रकारें ज्ञान छे, अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, आ त्रण अज्ञान छे, तेमां प्रथमना चार ज्ञानमां अने त्रण अज्ञानमां सिद्धपणुं नथी, एक केवल ज्ञानमां सिद्धपणुं छे, ते केवलज्ञान अहियां सिद्धपणानुं जाणवुं, परंतु सयोगी अवस्थानुं नहि. ८ चारित्र. सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात, आ पांच चारित्र, तेमज तेना प्रतिपक्षी देशसंयम तथा असंयम; ते पांचे चारित्रमां तेमज बंने विपक्षमां सिद्धपणुं नथी, कारण के ते सर्वे शरीर विद्यमान होय छे, त्यारे होय छे, अने सिद्ध तो शरीररहित छे. ए दर्शन, चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवल, आ चार दर्शनोमां प्रथमना त्रणमां सिद्धपणुं नथी, परंतु केवल दर्शनमां केवलज्ञाननी पेठे सिद्धपणुं छे. १० लेश्या. कृष्ण, नील कापोत, तेजु, पद्म, शुक्ल, आ छए लेश्यामां सिद्धपणुं नथी, कारण के लेश्या भवस्थजीवनो पर्याय छे, अने सिद्ध अलेशी छे. ११ भव्य, अभव्य, आ बंने अवस्थामां सिद्धपणुं नथी, कारण के जेने सिद्धपदनी प्राप्ति थशे ते भव्यजीव कहेवाय छे, अने सिद्धोने नवी पदवी तो कांइ प्राप्त करवानी नथी, तेथी भव्यपणुं सिद्धमां नथी. वली जेने सिद्ध थवानी योग्यता कोइपणकालमां न होय ते अभव्य कहेवाय छे, सिद्धना जीव एवा नथी, कारण के अतीतकालमां तेउमां एवी योग्यता हती, तेथी सिद्ध अभव्य

पण नथी सिद्ध, नो भव्य, नो अभव्य छे, एम आप्तवचन छे १२ सम्यक्त्व–क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम, सास्वादन अने वेदक, आ पांच प्रकार सम्यक्त्वना छे तेओना विपक्षी, मिथ्यात्व अने मिश्र छे तेओमांथी क्षायिक वर्जीने चार सम्यक्त्वमां तेमज मिथ्यात्व अने मिश्रमा सिद्धपणु नथी, कारण के ते सर्वे क्षयोपशमिकादि भाववर्ती छे, अने क्षायिक सम्यक्त्वमां सिद्धपणु छे, परतु क्षायिक सम्यक्त्व पण बे तरेहनु छे, एकशुद्ध, बीजु अशुद्ध, तेमां शुद्ध, अपाय, सत् द्रव्य रहित, भवस्थ केवलीउने छे, अने सिद्ध परमात्मा शुद्ध स्वभावरूप सम्यक्दृष्टि छे, सादि अपर्यवसान छे, अने अशुद्ध अपाय सहचारी श्रेणिकादिनु वे क्षायिक, सादि सपर्यवसान छे, तेमा अशुद्ध क्षायिकमां सिद्धपणु नथी, कारण के तेने अपाय सहचारी छे, अने शुद्ध क्षायिकमा सिद्धपणु छे, कारण के सिद्धपणामा क्षायिक सम्यक्त्व विद्यमान छे अपाय नाम मतिज्ञानांशनुं छे, अने सत् द्रव्य, शुद्ध सम्यक्त्वना दलियानु नाम छे, ए बनेनो अभाव थाय छे, त्यारे शुद्ध क्षायिक सम्यक्त्व थाय छे १३ संज्ञा–त्रण प्रकारे छे १ हेतुवादोपदेशिनी, २ दृष्टिवादोपदेशिनी, ३ दीर्घकालिकी आ त्रणमां दीर्घकालिकी संज्ञाथी जे संज्ञी छे, तेज व्यवहारमा प्राय ग्रहण कराय छे जेने संज्ञा होय ते संज्ञी, जेम के आ में कर्युं छे, आ करु छु, आ करीश, एम त्रिकाल विषयवाला, मनोविज्ञानवाला जे जीव छे, तेउज संज्ञी कहेवाय छे तेउनाथी जेउ विपरीत छे तेउ असंज्ञी कहेवाय छे, आ संज्ञी, असंज्ञी बनेमा सिद्ध पद नथी, कारण के सिद्ध तो नो संज्ञी, नो असंज्ञी छे १४ आहार–त्रण प्रकारना छे, १ उज आहार, २ लोम आहार ३ प्रक्षेप आहार, आ त्रणे आहारमां सिद्धपणुं नथी, कारण के सिद्ध अणाहारी छे इति

२ द्रव्यप्रमाण द्वार, गणतरीमा सिद्धना जीव अनत छे ३ क्षेत्रद्वार ते आकाशना एकदेशमां सर्व सिद्धोनु स्थान छे, ते आकाश देशनुं प्रमाण शु छे? धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्य ज्यांसुधि छे, त्यां सुधी लोक छे एवो जे लोक तेना आकाशना असंख्यमा भाग जेवा भागमां सिद्ध रहे छे ४ स्पर्शना द्वार–जेटला आकाश भागमां सिद्ध रहे छे, तेनाथी स्पर्शना भाग किंचित् अधिक छे ५ कालद्वार–एक सिद्ध आश्री सादि

अनंतकाल, अने सर्वसिद्ध आश्री अनादि अनंतकाल जाणवो. ६ अंतरद्वार–सिद्धोनी वचमां अंतर नथी, सर्व सिद्धो मली एक रूपवत् रहे छे, ७ नागद्वार–सर्वसिद्ध, सर्व जीवराशिने अनंतमे नागे छे. ८ नावद्वार–सिद्धोनो क्षायिक पारिणामिक नाव छे, बाकीना नाव नथी. ए अल्पबहुत्वद्वार–ते सर्वथी थोडा अनंतर सिद्ध छे. जेने सिद्ध थयां, एक समय थयो होय ते अनंतर सिद्ध कहेवाय छे. परंपरसिद्ध अनंत गणा थयाछे. सिद्ध होवामां उत्कृष्ट अंतरकाल छ मास छे. ए प्रमाणे मोक्षतत्वनुं स्वरूप संक्षेप मात्र कह्युं. कांइक विशेष स्वरूप हवे पछीना परिछेदमां चौद गुणस्थानकना वर्णनमां वतावयामां आवशे. विस्तारथी जाणवानी इछावालाए, नंदीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र, सिद्धप्राभृतसूत्र, सिद्ध पंचाशिका, देवाचार्यकृत नवतत्वप्रकरणवृत्ति, ग्रंथो जोवा. इति श्रीतपागछीयमुनिश्री बुद्धिविजयशिष्य मुन्यानंदविजयात्मारामविरचितजैनतत्वादर्शगुर्जरनाषांतरे नवतत्वस्वरूपनिर्णयनामा पंचमः परिछेदः संपूर्णः॥

॥ अथ षष्ठपरिछेदप्रारंनः ॥

आ परिछेदमां चौद गुणस्थानकोनुं स्वरूप किंचित् मात्र लखियें छियें. जैनमतमां नव्य जीवोने शिवमंदिर चडवा वास्ते गुणोनी श्रेणी, तेज निसरणीछे. ते गुणश्रेणीरूप निसरणीमां पगधरणरूप, गुणोथी गुणांतर प्राप्तिरूप, जे स्थान अर्थात् नूमिका छे, ते चौद छे. तेनां नाम. १ मिथ्यात्व गुणस्थानक, २ सास्वादन गुणस्थानक, ३ मिश्र गुणस्थानक, ४ अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक, ५ देशविरति गुणस्थानक, ६ प्रमत्तसंयत गुणस्थानक, ७ अप्रमत्त बादरगुणस्थानक, ८ अपूर्वकरण गुणस्थानक, ए अनिवृत्तबादर गुणस्थानक, १० सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक, ११ उपशांतमोह गुणस्थानक, १२ क्षीणमोह गुणस्थानक, १३ सयोगिकेवलि गुणस्थानक, १४ अयोगि केवलि गुणस्थानक.

प्रथम मिथ्यात्वगुणस्थानकनुं स्वरूप लखियेंछिये. तेमां पण प्रथम व्यक्त मिथ्यात्वनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. जे स्पष्ट चैतन्य, संज्ञी पंचेंद्रिय जीवनी अदेव, अगुरु, अधर्म, तेउमां अनुक्रमें, देव गुरु, धर्मनी बुद्धि, ते व्यक्तमिथ्यात्व छे. उपलक्षणथी, जीवादि नव पदार्थोमां जीवनी श्रद्धानो अनाव, जिनोक्त तत्वथी विपरीत प्ररूपणा, जिनोक्त तत्व-

स्वरूपमां संशय तथा जिनोक्ततत्त्वमां दूषणोनो आरोप इत्यादि, व्यक्त मिथ्यात्व ठे तथा आभिग्रहिकादि जे पांच मिथ्यात्व ठे, तेमांथी अनाभोगिक मिथ्यात्व अव्यक्त मिथ्यात्व ठे, अने बाकीनां चार व्यक्त मिथ्यात्व ठे, तथा "अधम्मे धम्मसन्ना इत्यादि" दश प्रकारनां जे मिथ्यात्व ठे, ते सर्व व्यक्त मिथ्यात्व ठे बीजु अनादि कालथी मोहनीय प्रकृतिरूप मिथ्यात्व, आत्माना सत् दर्शनरूप गुणनुं आछादक, जीवनी साथे निरतर अविनाभावि ते अव्यक्त मिथ्यात्व ठे

हवे मिथ्यात्व गुणस्थानक शा कारणथी कहेवामां आवे ठे, ते बतावियेठियें अनादि अव्यक्त मिथ्यात्व, अव्यवहार राशिवर्ती जीवमां निरंतर होय ठे, ते जीवने व्यक्त मिथ्यात्वनी बुद्धिनी जे प्राप्ति तेज मिथ्यात्व गुणस्थानक ठे

प्रश्न –मिथ्यात्व गुणस्थानकमां सर्व जीवोनां स्थान मले ठे, एम जैनशास्त्रनु कथन ठे, उतांपि व्यक्त मिथ्यात्वनी बुद्धिने गुणस्थानरूपता कहो ठो तेनुं शु कारण ठे ?

उत्तर –सर्वजाव सर्व जीवोए पूर्वे अनंतवार प्राप्त करेला ठे, ते वचन प्रमाणथी जे प्राप्तव्यक्तमिथ्यात्वबुद्धिवाला जीवो व्यवहार राशिवर्ती ठे तेवोज प्रथम गुणस्थानकवाला कहेवाय ठे परंतु अव्यवहार राशिवर्त्ति जीव तेवा नथी, कारण के तेठ अव्यक्तमिथ्यात्ववाला ठे, ते कारणथी दोष नथी

हवे मिथ्यात्वरूप दूषणनु स्वरूप कहियेंठियें जेम कोइ मनुष्य मदिराना उन्मादथी नष्टचैतन्य थवाथी हित, अहित कांइ पण जाणतो नथी, तेवीज रीतें मिथ्यात्ववासित जीव सम्यक् धर्म अधर्म जाणतो नथी ॥ यदाह ॥ मिथ्यात्वेनालीढचित्तानितांतं, तत्वातत्व जानते नैव जीवा ॥ किं जात्यंधा कुत्रचिद्वस्तुजाते, रम्यारम्य व्यक्तमासादयेयुः ॥ १ ॥ जावार्थ –जेम जन्मांध पुरुषो वस्तुठंनी जाति, तेमज रम्य अरम्य स्वरूपने जाणी शकतो नथी, तेमज मिथ्यात्वथी जे जीवोनां अतःकरण वासित ठे, ते तत्वात्वना स्वरूपने बिलकुल जाणि शकता नथी

हवे मिथ्यात्वनी स्थिति कहियेठियें अजव्य जीवोनी अपेक्षाए, तेमज सामान्य प्रकारें अव्यक्त मिथ्यात्वनी स्थिति अनादि अनंत ठे, व

व्यजीवोनी अपेक्षाए तेज स्थिति अनादि सांत छे. आ स्थिति सामान्य प्रकारें बतावी छे, हवे जो मिथ्यात्व गुणस्थानकनी स्थिति विचारियें तो भव्यजीवोनी अपेक्षाए अनादि सांत छे, तेमज सादि सांत पण छे, अने अभव्य जीवोनी अपेक्षाए अनादि अनंत छे. ज्यारे मिथ्यात्व गुणस्थानकमां जीव वर्त्ते छे, त्यारे एकसो वीश वंध प्रायोग्य कर्म प्रकृतियोमांथी १ तीर्थकरनाम कर्मनी प्रकृति, २ आहारक शरीर, ३ आहारक अंगोपांग, आ त्रण प्रकृतिनो वंध करतो नथी. बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो वंध करे छे; तथा एकसो बावीश कर्मप्रकृति जे उदय प्रायोग्य छे, तेमांथी १ मिश्र मोहनीय, २ सम्यक्त्व मोहनीय, ३ आहारक शरीर, ४ आहारक उपांग, ५ तीर्थकरनाम, आ पांच प्रकृति शिवाय, बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो तेने उदय छे, अने एकसो अडतालीश कर्म प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे सास्वादन गुणस्थानकनुं स्वरूप लखिए छीयें. तेमां प्रथम आ गुणस्थानकनुं कारणभूत उपशम सम्यक्त्व छे, तेनुं स्वरूप कहीए छियें. जीवमां अनादिकालथी रहेला मिथ्यात्व कर्मनी उपशांति थवाथी, ग्रंथिभेदकरणकाल पछी औपशमिक सम्यक्त्व, जीवने प्राप्त थाय छे. आ सामान्यस्वरूप कथन कर्युं. विशेषस्वरूप आ प्रमाणे छे. औपशमिक सम्यक्त्व वे प्रकारनुं छे. १ अंतरकरण औपशमिक सम्यक्त्व, २ स्वश्रेणीगत अर्थात् उपशमश्रेणीगत औपशमिक सम्यक्त्व. हवे अपूर्वकरण करीने जेणें ग्रंथिभेद कर्यो छे, ते मिथ्यात्व कर्म पुद्गलनी राशिना त्रण पुंज करे छे, ते त्रण पुंज आ प्रमाणे छे. १ शुद्ध, २ अर्द्धशुद्ध, ३ अशुद्ध, तेमां शुद्ध पुंज सम्यक्त्व मोहनीय छे, अर्द्धशुद्ध पुंज मिश्रमोहनीय छे, अने अशुद्धपुंज मिथ्यात्वमोहनीय छे. १ जेम मदन कोद्रवा, जे खावाथी मीणो चडे, तेने खांडी, तुस उतारी, छाण पाणी दइ, शुद्ध करतां, ते कोद्रव खाधाथी, जेम खानारने विशेष मादकता न थाय, तेम जीवने विकल करे, जेथी संदेह, विपर्यय अने मूढताथी जीवतत्वनी परीक्षा करी शके नहि, एवां जे मिथ्यात्वनां दल, तेने यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अने अनिवृत्तिकरण ए त्रणकरणना प्रयोगें शोधतां ते दलनो मात्र एकठाणीउं रस रहे, जेथी जीवतत्वनी परीक्षा विषे मुंझाय नहि, परंतु आत्मस्व-

भावरूप औपशमिक तेमज क्षायिक सम्यक्त्व, तेने उदयें न होय, अने सूक्ष्मपदार्थनेविषे देश शकायें मेल उपजावे तेथी ते शुद्धदल (पुंज) नु नाम सम्यक्त्व मोहनीय छे २ जे मिथ्यात्वदल अर्द्धखाड्या मदनकोद्रवानी पेठे अर्द्धविशुद्ध जे दल, जेथी बेठाणीउं रसमात्र रहे, अने तेम थवाथी जीवने तत्त्वरुचि न होय, अने अतत्त्वरुचि पण न होय, एवी मिश्ररुचि जे कर्मदल उपजावे ते मिश्र मोहनीय कर्म छे ३ अशुद्धपुंज, ते जेवो बांध्यो हतो तेवोज चोठाणीउं, त्रण ठाणीउं तेमज बेठाणीउंरस जे अनुपहत सर्वघाति रसयुक्त कर्मदल, तुषसहित अणखांड्या मदन कोद्रवानी पेठे उन्मादजन्य होवाथी, तत्त्वसद्दहणामा विपर्यास पणुं करे तेथी ते दल (पुंज) नु नाम मिथ्यात्व मोहनीय छे आ त्रण पुंज जे जीव करे नहि, परंतु उदय आवेला मिथ्यात्वने जे क्षय करे छे, अने जे उदय नथी आव्या तेने उपशमावे छे, एवा अंतर्मुहूर्त्त काल सुधी सर्वथा मिथ्यात्वना अवेदक जीवने अंतरकरणमां औपशमिक सम्यक्त्व थाय छे, आ प्रथमभेद छे तथा उपशम श्रेणि प्रतिपन्नने मिथ्यात्व अनंतानुबंधीनो उपशम थतां स्वश्रेणिगत औपशमिक सम्यक्त्व थाय छे, ते बीजो भेद आ बने प्रकारनु उपशम सम्यक्त्व, सास्वादननी उत्पत्तिमां मूल कारण छे

हवे सास्वादननु स्वरूप लखिये छियें औपशमिक सम्यक्त्ववालो जीव, शांत थयेला अनंतानुबंधी चारे कषायोमांथी क्रोधादि एक पण उदय पाम्या पछी औपशमिकरूप गिरिशिखरथी पडतां, ज्यां सुधी मिथ्यात्वरूप भूतलने प्राप्त थतो नथी, त्यां सुधी, एक समयथी लइने छ आवलिका सुधी सास्वादन गुणस्थानवर्त्ती होय छे

प्रश्न – उपर वृद्धि प्राप्ति रूप प्रथम, तेमज मिश्रादि गुणस्थानोना उत्तरोत्तर चढ़ता रूपोने तो गुणस्थानकपणुं योग्य छे, परंतु सम्यक्त्वथी पडनार सास्वादनने गुणस्थानपणानो केम संभव होय?

उत्तर–मिथ्यात्व गुणस्थानकनी अपेक्षाए सास्वादन पण उर्ध्व आरोहण रूप होवाथी गुणस्थान छे वली मिथ्यात्व गुण अभव्य जीवोने पण थाय छे, परंतु सास्वादन तो भव्य जीवोनेज थइ शके छे भव्य जीवोमां पण जेओनुं संसार, अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन जेटलो बाकी रह्यो

होय, तेउनेज थाय छे, ते कारणथी सास्वादनने पण मिथ्यात्व गुणस्थानकथी आरोहणरूप गुणस्थानकत्व थइ शके छे. सास्वादन गुणमां वर्ततो जीव १ मिथ्यात्व, ४ नरकत्रिक, ८ एकेंद्रियादि जातिचार, ए आतपनाम, १० स्थावर नाम, ११ सूक्ष्म नाम, १२ अपर्याप्त नाम, १३ साधारणनाम, १४ हुंडक संस्थान, १५ सेवार्त्तसंहनन, १६ नपुंसक वेद. आ सोल प्रकृतिनो बंधव्यवछेद करे छे, बाकीनी एकसो एक प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा ३ सूक्ष्मत्रिक, ४ आतप, ५ मिथ्यात्वोदय, ६ नरकानुपूर्वी, आ छ प्रकृतिनो उदय व्यवछेद होवाथी १११ प्रकृति वेदे छे, तथा तीर्थंकर नामनी सत्ता विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे त्रीजा मिश्रगुणस्थानकनुं स्वरूप लखियें छियें. दर्शनमोहनीय प्रकृतिरूप मिश्रमोहकर्मना उदयथी जीवविषये जे समकाल, समरूपें, सम्यक्त्व मिथ्यात्वना मलवाथी अंतर्मुहूर्तसुधी मिश्रित भाव ते मिश्रगुणस्थानक कहेवाय छे. जे जीव सम्यक्त्व मिथ्यात्व बंनेना एकत्र मलवाथी मिश्रभावमां वर्त्ते छे, ते मिश्रगुणस्थानस्थ कहेवाय छे; कारण के मिश्रपणुं जे छे ते बंनेना मेलापनुं एक जात्यंतररूप छे ते बंने भावोनुं जात्यंतर एक रूप होवामां दृष्टांत आ प्रमाणे छे. जेम घोडी तथा गधेडाना संयोगथी जात्यंतर खच्चर उत्पन्न थाय छे, तथा जेम साकर अने दहींना मेलापथी जात्यंतर शिखंड उत्पन्न थाय छे, तेम जीवने, सर्वज्ञ तेमज असर्वज्ञ, बंनेना कहेला धर्मोमां समबुद्धिथी एकसरखी श्रद्धा उत्पन्न थाय, ते जात्यंतर भेदात्मक होवाथी मिश्रगुणस्थानक थाय छे, ज्यारे जीव मिश्र गुणस्थानस्थ होय छे, त्यारे परभवना आयुनो बंध करतो नथी, तेमज मिश्रगुणस्थानकमां छतां जीव मृत्यु पण पामतो नथी, क्यां तो सम्यक् दृष्टि थइ सम्यक् दृष्टि गुणस्थानकमां आवी मरे छे, अथवा तो कुदृष्टि थइ मिथ्यात्वगुणस्थानमां पाछो जइ मरे छे. आ मिश्रनी जेम बारमा क्षीणमोह, तेमज तेरमा सयोगी गुणस्थानोमां पण जीव मृत्यु पामतो नथी. बाकीना अगियार गुणस्थानकोमां जीव मृत्यु पामे छे. वली मिथ्यात्व, सास्वादन अने अविरति सम्यक्दृष्टि, आ त्रण गुणस्थानकोज जीवनी साथे परभवमां जाय छे. बाकी अगियार जातां नथी. तथा जे जीवोए मिथ्यात्वादि गुणस्थानोमां पूर्वे आयु बांधेल छे, अने पछी तेउने

जो मिश्रगुणस्थान प्राप्त थाय छे,तो ज्यारे तेओ मरे छे त्यारे जे गुणस्थानमां तेओए आयु बांधेल छे, ते गुणस्थानमा जइने तेओ मरेछे, अने तेओनी गतिपण मृत्यु पामेलाना गुणस्थानकने अनुसारें थाय छे वली मिश्रगुणस्थानकवाला जीव, १ तिर्यंच गति, २ तिर्यंचायु, ३ तिर्यंचानुपूर्वी, ६ स्त्यानर्द्धित्रिक, ७ दुर्भग, ८ दुःस्वर, ९ अनादेय, १३ अनंतानुबंधी चार, १७ मध्यनां चार संस्थान, २१ मध्यनां चार संहनन, २२ नीचगोत्र, २३ उद्योतनाम, २४ अप्रशस्त विहायोगति, २५ स्त्री वेद आ पच्चीश प्रकृतिनो बंधव्यवच्छेद करेछे, तथा मनुष्यायु अने देवायु आ बने आयुष्यना बंध करता नथी, आ सत्तावीश प्रकृतिविना बाकीनी चम्मोतेर प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा ४ अनंतानुबंधी चार, ५ स्थावरनाम, ६ एकेंद्रिय, ९ विकलत्रिक, तेओनो उदय व्यवच्छेद थवाथी, तेमज मनुष्यानुपूर्वी, अने तिर्यगानुपूर्वी आ बनेनो उदय न होवाथी, एकसो प्रकृतिनो उदय वेदेछे, अने पूर्वोक्त १४७ प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे चोथा अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानकनु स्वरूप लखियेछियें तेमा प्रथम सम्यक्त्व प्राप्तिनु स्वरूप आ प्रमाणे छे संज्ञी पंचेंद्रिय जव्य जीवने यथोक्त तत्त्व, यथावत् सर्ववित्प्रणीत तत्त्वोमां, जीवादि पदार्थोमां, निसर्गथी अर्थात् पुर्वजव अन्यासविशेषथी उत्पन्न थयो जे अत्यंत निर्मल गुणात्मकरूपस्वजाव, ते स्वजावथी, अथवा गुरुना उपदेशश्रवणथी, रुचिजावना जे प्रगट—उत्पन्न थाय छे, ते सम्यक्त्व, सम्यक्श्रद्धान लक्षण कहेवाय छे यदाह ॥ रुचिर्जिनोक्ततत्वेषु, सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥ जायते तन्निसर्गेण, गुरोरधिगमेन वा ॥ १ ॥ हवे अविरति सम्यक्दृष्टिपणानी उत्पत्ति कहियेछियें बीजो कषाय जेनु नाम अप्रत्याख्यान छे, एवा जे क्रोध, मान, माया, लोज, जेना उदयथी दूर रह्यु छे विरतिपणु, ते कारणथी केवल सम्यक्त्वमात्र जेओने होय, एवा गुणस्थानवाला जीवोने, चोथुं अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक होय छे तात्पर्य ए छे के, जेम कोइ पुरुष, न्यायोपार्जित धन, जोग, विलास, सौंदर्यतायुक्त उत्तमकुलमां जन्म्यो छे, परतु दुरंत जुगारआदि दुर्व्यसनो सेवन करता, अनेक अन्यायि कार्यो करवाथी, अपराधी थतां तेने राज्यवर्ग थाने शिक्षा जोगवतां, जेनाथी अजिमान खंडन थयु छे, एवा

जे कोटवालादि, तेउनाथी विडंवना पामतां, पोतानां व्यसनजनित कर्मोने विरूप जाणी, पोताना कुलनी सुंदरसुख संपत्तिनी अभिलाषा पण करे छे, तो पण कोटवालोथी बुटीने पूर्वोक्तसुखनो श्वासोछ्वासपण जेम लइ शकतो नथी, तेम आ जीव पण अविरतिपणाने बुरा कर्मनुं फल जाणे छे, अने विरतिना सुंदरसुखनी अभिलाषा पण करे छे, परंतु कोटवाल समान वीजा कषायना वंधनथी छुटवानेज हिंमत पण करी शकतो नथी, अने अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानकनो अनुभव करे छे.

हवे चोथा गुणस्थानकनी स्थिति कहियेछियें. आ गुणस्थानकनी उत्कृष्टी स्थिति तेत्रीश सागरोपमथी कांइक अधिक छे. ते सर्वार्थ सिद्धादि विमानवासिउंनी स्थिति तथा मनुष्यायु अधिकनी, अपेक्षाए छे. वली आ सम्यक्त्व जीवने अर्धपुद्गल परावर्त्तन संसार वाकी रहे छे, त्यारे प्राप्त थाय छे, ते पहेलां थतुं नथी.

हवे सम्यक् दृष्टिनां लक्षण कहियेछियें. १ दुःखी जीवोनां दुःख दूर करवानी जे चिंता, तेनुं नाम अनुकंपा छे. २ कोइ कारणथी क्रोध उत्पन्न पण थइ जाय, तो पण तीव्र अनुशय अर्थात् वैरभावनो अभाव जेनाथी रहे छे तेनुं नाम प्रशम छे. ३ शिवमंदिर चडवावास्ते सोपान समान, सम्यग् ज्ञानादि साधनोमां उत्साह लक्षण अर्थात् मोक्षाभिलाष तेनुं नाम संवेग छे. ४ अत्यंत कुत्सिततर अर्थात् अत्यंत कनिष्ठ एवा संसार रूप बंदीखानामांथी निकलवा वास्ते परम वैराग्यरूप दरवाननी सेवना करवी तेनुं नाम निर्वेद छे. ५ श्री सर्वज्ञप्रणीत समस्तभावोनुं यथार्थ चिंतवन तेनुं नाम आस्तिक्यता छे. आ पांच लक्षण जे जीवमां होय ते भव्यजीव सम्यक् दर्शनथी अलंकृत होय छे.

हवे सम्यक्दृष्टि गुणस्थानवर्त्ति जीवोनुं गतिस्वरूप कहियेछियें. तेमां प्रथम, जीवना परिणाम विशेषरूप जे करण, तेना त्रण प्रकार छे. १ यथाप्रवृत्तिकरण, २ अपूर्वकरण, ३ अनिवृत्तिकरण, पर्वतमांथी निकलती नदीना जलथी आलोड्यमान पछरनी जेम घोलना घंचना न्यायें, जीव आयुकर्म शिवाय बाकीनां साते कर्मनी स्थिति किंचित् उणी एक कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण जे अध्यवसाय विशेषथी करी, ग्रंथिदेश सुधी आवे छे, ते यथाप्रवृत्तिकरण कहेवाय छे, तथा २ जे पूर्वें अप्राप्त एवा अ-

व्यवसाय विशेषथी जे ग्रंथिने, घननिबिड रागद्वेष परिणति रूप कहे छे ते ग्रंथिने भेदवानो जे आरम्भ, ते अपूर्वकरण कहेवाय छे तथा ३ जे अध्यवसायविशेषथी ग्रंथिभेद करीने अनिवृत्त थकां परमआनंद जनक सम्यक्त्व प्राप्त करे छे तेनु नाम अनिवृत्तिकरण छे आ त्रणे करणनु स्वरूप श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणआचार्य आवश्यकना शुद्धांजो निधि गंधहस्ती महाभाष्यमां त्रण पथीजनना दृष्टांतथी आ प्रमाणे व्याख्यान करे छे त्रण पथीजनो एक नगर जवा सारु निकलतां जंगलना उज्जड रस्तापर चाल्या जता हता चालता चालतां विकाल वेला थइ गइ अर्थात् सूर्यअस्त थयो पथीजनो मनमां वहुज डरवा लाग्या तेटलामा तत्काल वे चोर तेउनी नजीक आवी पहोंच्या चोरोने देखी त्रण मांहेनो एक पथी जन डरीजवाथी दोडी पाछो भागी गयो एकने बने चोरोए पकडी लीधो, अने त्रीजो पथीजन बने चोरो साथे लडतां लडतां तेउने मारी कुटीने मुकाम नगरें पहोंची गयो आ दृष्टांतने दार्ष्टांत (सिद्धात) रूप आ प्रमाणे घटाववु उजड जंगल ते मनुष्यभव छे, कर्मोनी स्थिति ते लांबो रस्तो छे, भयनु स्थानक ते गांठ छे, रागद्वेष ते बंने चोर छे, नगर ते मोक्षस्थान छे जे पुरुष चोरथी डरी पाछो भागी गयो, तेनी संसारमा परिभ्रमण करवानी स्थिति अधिक छे, जे पुरुषने चोरोए पकडी लीधो, तेमज चोरथी छुटायो ते पण दु:खी तेमज परिभ्रमण करनार छे, अने जे पुरुष चोरोने मारी कुटी नगर पहोंचीगयो ते सम्यक्दृष्टि मोक्षनगर पहोंचनार तथा सुख प्राप्त करनार छे

हवे कीडीउना दृष्टांतथी त्रण करणनु स्वरूप कहियेछियें जेम कीडीउनो समूह बिलमाथी निकली एक खुटानी आसपास फर्या करे छे, ते माथी केटलीएक कीडिउं खुंटा उपर चडे छे, अने केटलीएक खुटा उपर पहोंचता पाख आववाथी उडी चाली जाय छे, तेवी रीतें आ त्रण करणनी बाबतमा पण जाणी लेवु ज्यारे जीवो यथाप्रवृत्ति करण करीने ग्रंथि देशने प्राप्त थाय छे, अने अपूर्वकरण करी ग्रंथिनो भेद करे छे, त्यारे ग्रंथिभेदकर्या पछी कोइक जीव मिथ्यात्व पुद्गलनी राशिने वेहेंचीने १ मिथ्यात्वमोह, २ मिश्रमोह, ३ सम्यक्त्वमोह, रूप त्रण पुंज करे छे, अने ज्यारे अनिवृत्तिकरण करी विशुद्धमान थतां, उदय आवेला मि

थ्यात्वनो क्षय करे, अने नहि उदय आवेला मिथ्यात्वने उपशमावे, त्यारे क्षयोपशमिक सम्यक्त्वनी तेउने प्राप्ति थाय छे. ज्यारे जीवोने क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न थाय छे, त्यारे मनुष्यगति अने देवगतिनी प्राप्ति थाय छे. तथा अपूर्वकरण करीने, जेउए त्रण पुंज कर्या छे, एवा जीवो चोथा गुणस्थानकथीज क्षपकपणानो जो आरंभ करेछे, तो अनंतानुबंधी चार कषाय तथा मिथ्यात्व मोह, अने सम्यक्त्व मोह, रूप त्रण पुंज ए सातेनो क्षय करतां तेउने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. हवे ते क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव जो ते वखते अबद्धायु होय तो तेज भवमां मोक्ष प्राप्त करे छे, अने जो आयुनो बंध कर्या पछी क्षायिक सम्यक्त्ववान् थया होय तो त्रीजा भवमां मोक्ष पामे छे, अने जो असंख्यात वर्ष जीवनारा मनुष्य, वा तिर्यंचनुं आयु बांध्या पछी क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थयुं होय तो चोथे भवे मोक्ष प्राप्त करे छे.

हवे अविरति गुणस्थानवर्त्ती जीवनां कृत्य लखियें छियें. व्रतनियम तो तेउने कांइपण होतुं नथी, परंतु देवश्रीवीतराग, भगवान्, परत्मानी तथा पूर्वोक्त लक्षणवाला गुरुमहाराजनी तथा चतुर्विध श्रीसंघनी पूजा, भक्ति, नमस्कार, वात्सल्यादि कृत्यो करे छे, तथा प्राभाविक श्रावक होवाथी शासननी उन्नति तथा शासननी प्रभावना करे छे. चतुर्थ गुणस्थानकवालो जीव, १ तीर्थंकर नामकर्म, २ मनुष्यायु, ३ देवायु, आ त्रण, प्रकृति त्रीजा गुणस्थानवालाथी अधिक बांधे छे, तेथी सत्तोतेर प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा मिश्र मोहनो व्यवछेद थवाथी,अने चार आनुपूर्वी, तथा सम्यक्त्व मोहनो उदय थवाथी, एकसो चार कर्मप्रकृतिने वेदेछे. क्षायिक सम्यक्त्ववालाने १३० कर्मप्रकृतिनी सत्ता होय छे.अने उपशम सम्यक्त्ववालाने चोथा गुणस्थानकथी ते अग्यारमा गुणस्थानकपर्यंत १४० कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे, अने क्षायिक सम्यक्त्ववालाने जे जे गुणस्थानकमां जेटली जेटली कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे ते यथानुक्रम लखवामां आवशे.

हवे पांचमा देशविरति गुणस्थानकनुं स्वरूप लखीयें छीयें. सम्यक् तत्त्वावबोधथी उत्पन्न थयो जे वैराग्य, ते वैराग्यथी जीवने सर्व विरतिपणानी वांछा थायछे, परंतु सर्व विरतिघातक प्रत्याख्यान नामना कषायना उदयथी तेनामां सर्वविरतिपणुं अंगीकार करवानुं सामर्थ्य होतुं

नथी, परंतु जघन्य, मध्यम उत्कृष्टरूप देशविरति ते थइ शकेछे जघन्य देशविरतिपणामां आकुट्टि स्थूलहिंसा प्रमुखनो त्याग, मद्यमासादि परिहार, तेमज पचपरमेष्ठि नमस्कार स्मरणादि छे यदाह ॥ आउट्टि थूलहिंसाइ, मद्यमसाइ चायर्ज ॥ जहन्नो सावर्ज होइ, जो नमुक्कार धारर्ड ॥ १ ॥ तथा मध्यम देशविरति अक्षुद्रादि न्यायसंपन्न वैभवादि धर्मयोग्यताना गुणोसहित, तथा गृहस्थ उचित षट्कर्मधर्ममां तत्पर, द्वादश व्रतना पालक, सदाचारवान्, एवा होय ते मध्यम श्रावक जाणवा तथा उत्कृष्ट देशविरति सचित्तआहारना त्यागी होय, प्रतिदिन एकासणु करे, ब्रह्मचारी होय, महाव्रत अंगीकार करवानी इच्छावाला होय, अने गृहस्थनो धधो त्यागेलो होय ते उत्तम श्रावक जाणवा आ त्रण प्रकारनी विरतिमांथी एकपण प्रकारनी विरति होय ते श्रावक कहेवाय छे देशविरति गुणस्थानकनी उत्कृष्टी स्थिति देशउणी कोटिपूर्वनी छे

हवे देशविरतिपणामा ध्याननो संभव कहीयें छियें आ गुणस्थानकवाला जीवोमा १ अनिष्टयोगार्त्त, २ इष्टयोगार्त्त, ३ रोगचिंतार्त्त, ४ अग्रशोचार्त्त, आ चार पादरूप आर्त्तध्यान, तथा १ हिंसानंदरौद्र, २ मृषानदरौद्र, ३ चौर्यानंदरौद्र, ४ संरक्षणानदरौद्र, आ चार पादरूप रौद्रध्यान, मद होय छे जेम जेम देशविरतिपणु विशेष थतु जायछे तेम तेम आर्त्त रौद्रध्यान मद मदतर थतु जाय छे वली जेम जेम देशविरतिपणु अधिक थतु जाय छे, तेम तेम धर्मध्यान अधिक अधिक थतु जाय छे, परतु मध्यमरूपेंज रहेछे, उत्कृष्ट धर्मध्यान देशविरतिपणामा होतु नथी जो उत्कृष्ट धर्मध्यान थइ जाय तो, सर्व विरतिपणु थइ जाय

प्रश्न —पाचमा गुनस्थानमा धर्मध्यान केवी तरेहनु होय?

उत्तर – गृहस्थधर्म उचित षट्कर्म, एकादश प्रतिमा, तथा श्रावक व्रतपालनरूप होय षट्कर्म आ प्रमाणे छे १ तीर्थंकर भगवंत वीतराग सर्वज्ञनी प्रतिमाद्वारा पूजा करवी, २ गुरुनी सेवा करवी, ३ स्वाध्याय, ४ संयम (इन्द्रियदमन) ५ तप, ६ दान यदाह ॥ देवपूजा, गुरूपास्तिः, स्वाध्याय संयमस्तप ॥ दान चेति गृहस्थाना, षट्कर्माणि दिने दिने ॥ १ ॥ तथा प्रतिमा ते अभिग्रहविशेषने कहेवामा आवे छे ॥ गाथा ॥ दंसण वयसामाइय, पोसहपडिमा अबंज सचित्ते ॥ आरंजपेस उद्दिठ, व

जाए समण नूए य ॥१॥ प्रतिमानुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होय तो श्रीपंचाशक नामा शास्त्रमां प्रतिमा पंचाशक जोवुं तथा श्रावकनां व्रत बार छे. तेनुं विस्तारथी कथन हवे पछी करवामां आवशे. आषट्कर्म एकादश प्रतिमा अने बार व्रत पालवामां मध्यम, धर्मध्यान होय छे. देशविरति गुणस्थानस्थ जीव, अप्रत्याख्यान चार कषाय, मनुष्यगति, मनुष्यायु, मनुष्यापूर्वी, आद्यसंहनन, औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, सर्व मली दशकर्मप्रकृतिनो बंधव्यवछेद करवाथी, सडसठ कर्म प्रकृतिनो बंध करे-छे. तथा अप्रत्याख्यान चार, मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यचानुपूर्वी, नरकत्रिक, देवत्रिक, वैक्रियद्विक, दुर्नग, अनादेय, अयशःकीर्त्ति, आ सत्तर कर्म प्रकृतिनो उदयव्यवछेद थवाथी सत्याशी कर्म प्रकृतिनुं फल जोगवे छे, अने एकसो आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता छे.

पांचमा गुणस्थान उपरनां जे जे गुणस्थानको छे तेमांथी तेरमुं गुणस्थानक बाद करीने बाकीनां सर्व गुणस्थानकोनी पृथक् पृथक् अंतर्मुहूर्त्तमात्र स्थिति छे, अने छठुं तथा सातमुं गुणस्थानक हिंडोला समान होवाथी तेनुं उत्कृष्ट कालमान देश उणुं पूर्व कोटि वर्ष छे.

हवे छठा प्रमत्त संयत गुणस्थानकनुं स्वरूप लखियेछियें. सर्व विरति साधु छठा प्रमत्त गुणस्थानकवाला होय छे, ते साधु केवा होय छे? अहिंसादि पांचमहाव्रतना धारक होय छे. ते साधु प्रमत्त शा कारणथी थाय छे? प्रमादसेवन करवाथी प्रमत्त थाय छे. ते प्रमाद पांच प्रकारे छे. ॥ गाथा ॥ मज्जं विषय कसाय, निद्दा विगहीय पंचवी नणिया ॥ ए ए पंच पमाया, जीवं पाडंति संसारे ॥ १ ॥ नावार्थः— मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, तेमज विकथा, आ पांच प्रमाद छे. ते जीवने संसारमां नाखे छे. जे साधु आ पांच प्रमादसंयुक्त होय, तथा जो तेने संज्वलन चोथा कषायनो उदय होय, तो महाव्रतधारक साधु पण अंतर्मुहूर्त सुधी अवश्य सप्रमाद होवाथी प्रमत्त थाय छे. जो अंतर्मुहूर्त्तथी उपरांत प्रमाद सहित वर्ते तो ते प्रमत्त गुणस्थानकथी पण नीचे पडी जाय छे, जो अंतर्मुहूर्तमां प्रमाद रहित थाय तो फरी अप्रमत्त गुणस्थानमां आरोहण करे छे.

हवे प्रमत्त संयत गुणस्थानमां ध्याननो संनव कहियेछियें. आ गुण-

स्थानमां मुख्य तो आर्त्तध्यान छे, उपलक्षणथी रौद्रध्याननो पण संभव छे, कारण के हास्यादि छ नोकषायनु प्रवर्त्तवु छे तथा आज्ञा आदि आलंबनयुक्त धर्मध्याननी गौणता छे धर्मध्यानना चार पाद छे १ आज्ञा, २ अपाय, ३ विपाक, ४ संस्थान, यथा ॥ आज्ञापायविपाकानां, संस्थानस्य विचिंतनात् ॥ इत्थं वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यानं चतुर्विध ॥ १ ॥ सर्वज्ञ अर्हंत भगवंतें जे कांइ कथन करेल छे, ते सर्व सत्य छे, मारी समजमां जे जे वस्तुस्वरूप यथार्थ आवतु नथी, तेनुं मुख्य कारण मारी बुद्धिनी मंदता छे, वली दुषम कालना प्रभावथी तेमज संशय परास्त करनारा गुरुना अभावथी इत्यादि अनेक कारणोथी जिनेश्वर भगवानें कथन करेला तत्त्वनी सूक्ष्मता मारी समजमां आवती नथी, परतु अर्हंत भगवतनुं कथन निःस्वार्थि, एकांत हितकारक, तथा मृषा बोलवाना निमित्त विनानु इत्यादि जे चिंतवन करवु ते आज्ञाविचयनामा प्रथम भेद छे २ राग द्वेष कषायादि जे आश्रव छे, तेनाथी इहलोक परलोकमां अपाय (कष्ट) उत्पन्न थाय छे, ते महाअनर्थना हेतु छे, एवु जे चिंतवन करवुं ते अपायविचयनामा बीजो भेद छे ३ क्षणे क्षणे कर्मफलोदय जे विचित्ररूप उत्पन्न थाय छे, तेनाथी सुखदु खादि भोगवतां, हर्ष, शोक नहि करता, पूर्वकृत कर्मनो विपाक छे इत्यादि जे चिंतववु ते विपाक विचयनामा त्रीजो भेद छे ४ आ लोक अनादि अनत छे सर्व पदार्थ उत्पाद, व्यय, ध्रुवरूप छे, तथा पुरुषाकार लोकनु संस्थान छे, एवु जे चिंतवन करवु ते संस्थानविचय नामा चोथो भेद छे इत्यादि आलंबनयुक्त धर्म ध्याननी गौणता प्रमत्त गुणस्थानमां छे, परंतु सप्रमाद होवाथी मुख्यता नथी

हवे जो कोइ प्रमत्त गुणस्थानमां निरालंबन धर्मध्यान कहेता होय तो तेनो निषेध करेलो छे, जिनभास्कर (जिनसूर्य) एम कहीगया छे के, ज्यां सुधी साधु प्रमादसंयुक्त होय, त्यांसुधी तेने निरालंबन धर्मध्यान होतु नथी कारण के प्रमत्तगुणस्थानमां मध्यम धर्मध्याननी पण गौणता कही छे, मुख्यता कही नथी, ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानमां निरालंबन धर्मध्याननो संभव नथी

हवे जेठ आ अर्थ (कथन) नो स्वीकार न करे तेने कहिये छियें

के जे साधु सप्रमादी थइने आवश्यक, सामायिकादि षडावश्यक साधक अनुष्ठाननो परिहार करीने, निश्चल, निरालंबन धर्मध्याननो आश्रय करे, ते साधु मिथ्यात्व मोहित ज्ञावथी मूढ थयो थको, श्रीसर्वज्ञ प्रणीत जैनागम (सिद्धांत) जाणतो नथी. ते व्यवहारनो त्याग करी दूर बेठो छे, अने निश्चयने प्राप्त करी शक्यो नथी; अने जे जैन सिद्धांतना ज्ञाता छे, तेउं तो व्यवहारपूर्वक निश्चयने साधे छे. यदाह ॥ जइ जिणमयं पवज्जह, तामा विवहारनिच्छए मुयह ॥ विवहार नउं छे ए, तिच्छुच्छेउं जउं ज्ञणिउं ॥ १ ॥ अर्थः— जो जैनमतने अंगीकार करता हो, तेमज जैनमतना साधु थता हो तो व्यवहार, निश्चयनो त्याग करो नहि, जो व्यवहारनो उच्छेद करशो तो तीर्थनो उच्छेद थइ जशे, आ कथन उपर दृष्टांत कहीये छियें. कोइ पुरुष पोताना घरमां निरंतर बाजरानी रोटली खाय छे, एकाद दिवस कोइ गृहस्थें तेने निमंत्रण करी अपूर्व मिष्टान्न आहारनुं ज्ञोजन कराव्युं. आ मिष्टान्न आहारथी स्वादनो लोलुपी थइने ते पोताना घरनी बाजरानी रोटली निःस्वाद जाणी खातो नथी, अने अंतःकरणमां दुःप्राप्य मिष्टान्ननी अज्ञिलाषा करी रह्यो छे, मिष्टान्न मलतुं नथी, अने बाजरानी रोटली अरुचिकर थवाथी खातो नथी, तेथी उज्ञयज्रष्ट थइ अंते दुःखी थाय छे, तेवीज रीतें आ जीव पण कदाग्रहरूप ज्रूत वलगी जवाथी प्रमत्त गुणस्थानसाध्य स्थूलमात्र पुण्य पुष्टिनां कारण, षडावश्यकादि कष्टक्रिया करतो नथी, अने कदाचित् प्रमत्त गुणस्थानमां जेनो लाज्ञ छे, एवुं निर्विकल्प मनोजनित, समाधिरूप निरालंबन, ध्यानांश अमृत आहारतुल्य प्राप्त थाय छे, तेनाथी उत्पन्न थयो जे परमानंद सुखस्वाद, ते चित्तमां रेहेवाथी प्रमत्त गुणस्थानगत षडावश्यकादि कष्टक्रियाकर्म बाजरानी रोटली समान जाणी, तेनुं सम्यक् रीतें आराधन करतो नथी, अने मिष्टान्न तुल्य निरालंबन ध्यानांश तो प्रथम संहननना अज्ञावथी प्राप्त करी शकतो नथी, तेथी आवश्यकादि क्रिया नहि करवाथी उज्ञयज्रष्ट थाय छे. आ पंचम कालमां महामुनि, ऋषिउंए निरालंबन ध्याननो मनोरथज करेलो छे ॥ तथा च पूर्वमहर्षयः ॥ चेतोवृत्तिनिरोधनेन करणग्रामं विधायोद्वशं । तत् संहृत्य गतागतं च मरुतो धैर्यं समा-

श्रित्य च ॥ पर्यंकेन मया शिवाय विधिवत्, स्थित्वैक भूभृद्दरी मध्य स्थेन कदाचिदर्पितदृशा, स्थातव्यमतर्मुख ॥ १ ॥ चित्ते निश्चलतांगते प्रशमिते, रागादि निद्रामदे । विद्राणेऽक्षकदंबके विघटिते, ध्वांतभ्रमा रंजके ॥ आनंदे प्रविजृंभिते पुरपते, ज्ञाने समुन्मीलिते । मां रक्ष्यंति कदा वनस्थमभितो दुष्टाशया श्वापदा ॥ २ ॥ तथा श्रीसूरप्रजाचार्या चित्तावदातैर्भवदागमानां, वा भेष जैरागरुज निवर्त्त्य ॥ मया कदा प्रौ ढसमाधिलक्ष्मी, इत्यादि ॥ तथा श्रीहेमचंद्रसूरय ॥ वनपद्मासनासीन, क्रोडस्थितमृगार्भकं ॥ कदा घ्रास्यति वक्त्रे मा, चरतो मृगयूथपा ॥ १॥ शत्रौ मित्रे तृणे स्त्रैणे, हेम्नेऽश्मनि मणौ मृदि ॥ मोक्षे भवे भविष्यामि, निर्विशेषमति कदा ॥ २ ॥ भावार्थ – चित्तवृत्तिनो निरोध करीने, इं द्रियसमूह अने तेना विषयोने दूर करीने पवन अर्थात् श्वासोश्वासनी गत्यागतिनु रोधन करीने, धैर्यतानु अवलंबन करीने, पद्मासन बेसीने, कल्याण करवा निमित्ते, विधियुक्त, कोइ, पर्वतनी कंदरा (गुफा) मां बेसीने, एकवस्तु उपर स्थिर दृष्टि करी मुजने अतर्मुख रहेवुं योग्य छे ॥ १ ॥ चित्त निश्चल थतां, राग, द्वेष, कषाय, निद्रा अने मद शांत थतां इंद्रियसमूहकृत विकार दूर थतां, भ्रमारंजक अंधकार प्रलय थतां, ज्ञा ननो प्रकाश थतां, अने आनंद प्रगट वृद्धिमान् थतां, आत्म अवस्थामां स्थित एवा मारा जीवने वनमां रहेता, दुष्टाशयवाला सिंह क्यारे रक्षा करशे ? ॥ २ ॥ वली श्रीसूरप्रजाचार्य पण कहे छे, हे भगवन् ! तमारा आगम रूप भेषजथी, राग रूप रोगनिवर्त्तवाथी, निर्मल चित्तयुक्त थये, क्यारे एवो दिवस आवशे के जे दिवसे हु समाधिरूप लक्ष्मीनु वर्णन करीश ? इत्यादि तथा श्री हेमचंद्र सूरि कहे छे के, वनमां पद्मास नथी बेठां थका, मारा खोलामां मृगनुं बच्चु आवी बेसे, अने हरणनो स्वामि काखियार मारा मुखने सूघे, ते समये हुं मारी समाधिमां नि श्चल रहु ॥ १ ॥ तथा शत्रुमां, मित्रमा, तृणमां, स्त्रियोमां सुवर्णमां ते मज पाषाणमा, मणिमां तेमज माटिमा, अने मोक्षमां तेमज संसा रमां एकसरखी मतिवालो क्यारे हु थइश ? ॥ २ ॥ तेवीजरीतें मंत्री वस्तुपाल, तथा परमतमां भर्तृहरिए पण मनोरथ करेला छे, अने म नोरथ जे लोक करे छे ते दुःप्राप्य वस्तुनोज करे छे जे वस्तु कष्टविना

सुखे मलती होय तेनो मनोरथ कोइ पण करतुं नथी. जे निरंतर मिष्टान्न खाय छे, अने मोटुं राज्य नोगवे छे, ते कदापि मिष्टान्न नोजन तथा राज्य नोगववानो मनोरथ करता नथी. ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानस्थ विवेकि पुरुषोए, परमसंवेग नावथी अप्रमत्त गुणस्थानकनो स्पर्श कर्यो होय ते पण सर्व प्रकारें परम शुद्ध परमात्मतत्व संवित्तिनो मनोरथ करवो, परंतु षट्कर्म, षडावश्यकादि व्यवहार क्रियानो परिहार न करवो, अने जे मूढ (अज्ञानी) योग ग्रहथी ग्रस्त छे, तेमज सदाचार व्यवहारथी पराङ्मुख छे, तेनो योगपण कांइ कामनो नथी, तेमज तेनो आ लोक पण नथी, अने परलोक पण नथी, अर्थात् ते जीवो जडात्मा होवाथी उन्नयज्रष्ट थाय छे ॥ यतः ॥ ये तु योगग्रहग्रस्ताः, सदाचार पराङ्मुखाः ॥ एष तेषां च योगोऽपि, न लोकोपि जडात्मनां ॥ १ ॥ इत्यादि. ते कारणथी साधुयें दिवसे तेमज रात्रिमां जे जे दूषणो तेमने लाग्यां होय, तेनो उछेद करवा वास्ते अवश्य षडावश्यकादि क्रिया करवी जोइयें. ज्यां सुधी उपरनां गुणस्थानकोथी साध्य जे निरालंबन ध्यान छे, ते प्राप्त न थाय, त्यां सुधी करवी जोइयें.

प्रमत्त गुणस्थानस्थ जीव, चार प्रत्याख्याननो बंध व्यवछेद होवाथी त्रेसठ प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा तिर्यग्गति, तिर्यगानुपूर्वी, नीचगोत्र, उद्योत तथा प्रत्याख्यान चार आ आठप्रकृतिनो उदय व्यवछेद थवाथी अने आहारक शरीर तेमज आहारक अंगोपांगनो उदय होवाथी एकाशी प्रकृति वेदे छे, अने एकसो आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे सातमा अप्रमत्तगुणस्थानकनुं स्वरूप लखिये छियें. पांच महाव्रतधारी साधु पांच प्रमादना अनावें, अप्रमत्तगुणस्थानस्थ होयछे. तेने संज्वलन चार कषायनो, तेमज नोकषायनो पण उदय मंद होयछे, तात्पर्य के, संज्वलन कषाय तेमज नोकषायनो जेवो जेवो मंद उदय होय तेवो तेवो साधु अप्रमत्त होय. यदाह ॥ यथा यथा न रोचंते, विषयाः सुलना अपि ॥ तथा तथा समायाति, संवित्तौ तत्वमुत्तमं ॥ १ ॥ यथा यथा समायाति, संवित्तौ तत्वमुत्तमं ॥ तथा तथा न रोचंते, विषयाः सुलना अपि ॥ २ ॥ अर्थः—जेम जेम सुखें प्राप्त थता विषयो रुचता नथी, तेम तेम उत्तमतत्त्व संवित्तिनो लान थतो जाय छे, तथा जेम जेम उत्त-

मतत्व संविचिनो लाभ थतो जाय छे, तेम तेम सुखें प्राप्त थता विषयो रुचता नथी वली अप्रमत्तगुणस्थानकवाळा जीव जेम जेम मोहनीयकर्मनो उपशम करवामां तेमज क्षय करवामां निपुण थता जाय छे तेम तेम सद्ध्यानो आरंभ करे छे

दूर कर्योछे सर्वप्रमाद जेणें एवा जे जीव, तथा पंचमहाव्रतधारक साधु, अष्टादश सहस्र शीलांग लक्षण संयुक्त, सदागमअभ्यासी ज्ञानवान् एकाग्रध्यानवान् (ज्ञान ध्यान रूप धन होवाथी) मौनी मौनवान् (कारण के मौनवान्ज ध्यानरूप धनवान् होइ शके छे) एवा पवित्रमुनि पुर्वोक्त सम्यक्त्वमोह, मिश्रमोह, मिथ्यात्वमोह अने अनंतानुबंधी चार, आ सात प्रकृति विना एकवीश प्रकृतिरूप मोहनीय कर्मने उपशम करवामां तेमज क्षय करवामां ज्यारे सन्मुख थायछे, त्यारे सालंबन ध्यान तजीने निरालंबन ध्यानमां प्रवेश करवानो आरंभ करेछे आ निरालंबन ध्यानमां प्रवेश करनारा योगी त्रण प्रकारना छे १ यथा प्रारंभका, २ तन्निष्ठा, ३ निष्पन्नयोगा ॥ यदाह ॥ सम्यग् नैसर्गिकीं वा, विरतिपरिणतिं, प्राप्य सांसर्गिकीं वा ॥ क्वाप्येकांते निविष्टा., कपिचपलचलन्मानसस्तन्निनाय, शश्वच्छ्वासाग्रपाली, घनघटितदृशो, धीरवीरासनस्था । ये निष्पापा समाधे, र्विदधति विधिनाऽरंभमारंभकास्ते ॥ १ ॥ कुर्वाणोमरुतासनेंद्रियमन· क्षुत्तर्पनिद्राजय।योंत जल्पति रूपणानिरसकृत,तत्त्व समभ्यस्यति ॥ सत्वानामुपरि प्रमोदकरुणा मैत्रीर्भृशं मन्यते। ध्यानाधिष्ठित चेष्टयाऽभ्युदयते, तस्येह तन्निष्ठता ॥ २ ॥ उपरतबहिरंतर्जल्पकल्लोलमाले, ललदविकलविद्या पद्मिनीपूर्णमध्ये ॥ सततममृतमंतर्मानसे यस्य हंस., पिबति निरुपलेप सोत्र निष्पन्नयोगी ॥ ३ ॥

हवे अप्रमत्तगुणस्थानमां ध्याननो संभव कहीये छियें, सर्वज्ञनु कथन करेलु धर्मध्यान मैत्रीप्रमुख अनेक भेदरूप छे ॥ यदाह ॥ मैत्र्यादिभिश्चतुर्भेद, यदाज्ञादि चतुर्विध ॥ रूपस्थादि चतुर्द्धा वा, धर्मध्यानं प्रकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ मैत्रीप्रमोद कारुण्य, माध्यस्थानि नियोजयेत् ॥ धर्मध्यानमुपस्कर्तुं, तद्धि तस्य रसायन ॥ २ ॥ आज्ञापायविपाकानां, संस्थानस्य विचिंतनात् ॥ इत्थ वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यान प्रकीर्त्तित ॥ ३ ॥ धर्मध्यान मैत्रीभावप्रमुख चार भेद छे तया आज्ञाविचयप्रमुख चार भेदें छे, अने

रूपस्थ प्रमुख चार भेदें छे. प्रथम मैत्रीभावादि चार भेदनुं स्वरूप कहीये छियें. १ सर्वजीव साथे प्रेमभावनुं चिंतवन करवुं, सर्व जीवनुं भलुं चाहवुं, कोइ जीवनुं बुरुं चाहवुं नहि, सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी ते मैत्रीभावना, २ गुणवंत प्राणीउपर तेमज ज्ञानीप्रमुख उत्तम जीवोनां शुभकार्योंथी तेउनुं बहुमान करवुं तथा हर्ष करवो ते प्रमोद भावना, ३ दुःखी तेमज दीन प्राणीउनुं शुभ चिंतवन करी तेउनुं दुःख दूर करवानी, तेमज धर्महीन प्राणीने धर्म पमाडवानी अभिलाषा ते करुणाभावना, ४ हिंसादि अघोर कर्मना करनारा तेमज देवगुरु अने धर्मनी निंदा करनारा एवा दुष्ट आशयवाला जीवोनुं बुरुं नहि चाहतां, तेउ पोतपोताना कर्मवश छे, एम विचारी तेउना उपर रागद्वेष नहि राखतां मध्यम परिणामें वर्तवुं ते माध्यस्थ भावना. बीजा आज्ञाविचय प्रमुख चार भेदनुं स्वरूप छठा गुणस्थानक विचारमां वर्णन करेलुं छे. हवे रूपस्थादि चार भेदनुं स्वरूप कहीयें छियें. १ रूपमां रह्या छतां पण आमारो जीव अरूपी अनंतगुणी छे, परंतु अरिहंतना अतिशयनुं अवलंबन करी ते स्वरूप साथे आत्मस्वरूपनी एकता ते रूपस्थध्यान, २ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव, तेमां अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय अने साधुपणाना सर्व गुणछे, एम निर्धार करी गुणीना गुणरूप पिंडनुं ध्यान, करवुं ते पिंडस्थध्यान, ३ अरिहंतादि पंचपरमेष्टीना गुणनुं स्मरण करी तेनुं वाणी व्यापाररूप ध्यान ते पदस्थध्यान, ४ निरंजन, निर्मल, संकल्प विकल्परहित, अभेद एक शुद्ध सत्तास्वरूप, चिदानंद, तत्वामृतरूप, असंग, अखंड, अनंत गुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान ते रूपातीतध्यान. ए प्रमाणे जिनेश्वरभगवानें कथन करेलुं धर्मध्यान अप्रमत्तगुणस्थानमां मुख्य वृत्तिए अर्थात् प्रधानपणे होयछे. रूपातीतभेद शुक्लध्यानरूप होवाथी अंशमात्र गौणपणे रहेछे, अप्रमत्तगुणस्थानमां आवश्यक क्रियानो अभाव छे, छतांपि शुद्धपणुं छे ते कहीयें छियें.

अप्रमत्तगुणस्थानमां सामायिकादि षट् आवश्यक नथी. व्यवहार क्रियारूप नथी, परंतु निश्चयसामायिकादि छे. सामायिकादि सर्व आत्माना गुण छे "आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे" अ-

र्थात् आत्माज सामायिक छे, आत्माज सामायिकनो अर्थ छे आ सिद्धांतनां वचन छे

प्रश्न –अप्रमत्तगुणस्थानमां व्यवहार क्रियारूप षट्कावश्यक शा वास्तेनहि?

उत्तर –अप्रमत्त गुणस्थानमां सत् ध्याननां योगथी निरंतर ध्यनमांज प्रवृत्ति छे स्वाभाविकी, सहज, नित्य संकल्पविकल्परूपमालानो अभाव होवाथी आत्मा निर्मल एकस्वभावरूप रहेछे, आ गुणस्थानमां वर्त्तता जीव, भावतीर्थस्नान करीने परमशुद्धि प्राप्त करेछे यदाह ॥ दा होवसम तण्हाइ, छेयणं मलप्पवाहणं चेव ॥ तिहिं अच्छेहिं निउत्त, त म्हात दव्वउं तिथ्थ ॥ कोहंमिउ निग्गहिये, तण्हाइ छेयणं जाण ॥ २ ॥ अठविय कम्मरय, बहुएहिं भवेहि संचिय जम्हा ॥ तव संयमेण धोयइ, तम्हांत भावओ तिथ्थ ॥ ३ ॥ अर्थ – दाह उपशांत करे, तृषा छीपावे, शरीरनो मल दूर करे, आ त्रण अर्थने सिद्ध करनारां गंगा, मागधादि द्रव्यतीर्थ कहेवाय छे, १ क्रोधनो निग्रह करवाथी दाहउ-पशम थाय छे, लोभनो निग्रह करवाथी तृषानो छेद थाय छे, अने अनेक भवनी संचय करेली अष्टकर्मरूप रजथी आत्मस्वरूपने लागेलो मेल, तप संयमथी धोवाथी, आ गुणस्थान भावतीर्थ कहेवाय छे अ न्यच्च ॥ रुद्धप्राणप्रचारे, वपुषि नियमिते, संवृतेऽक्षप्रपंचे । नेत्रस्पंदे नि रस्ते, प्रलय मुपगतें, सर्विकल्पेंद्रजाले ॥ भिन्ने मोहांधकारे, प्रसरति महसि, कापि विश्वप्रदीपे । धन्योध्यानावलंबी, कलयति परमानंदसिंधौ प्रवेशं ॥ १ ॥ अर्थ – श्वासोश्वासनुं गमनागमन जेणें रोकेलुं छे, जेणें पो ताना शरीरने स्वाधीन कर्युं छे, जेणें पांचे इंद्रियोने पोतपोताना विष यथी रोकेली छे जेणे नेत्रोनो संचार बंध करेलो छे, जेणे अंतर्विकल्प रूप इंद्रजालनो नाश करेलो छे, जेणें मोहरूप अंधकारनो क्षय करेलो छे, अने जेने त्रिभुवनप्रकाशक ज्ञानप्रदीप प्रगट थयेल छे, एवा ध्याना वलंबी पुरुषने धन्य छे, जे परमानंदरूपसमुद्रमा प्रवेश करे छे

अप्रमत्त गुणस्थानस्थ जीव, १ शोक, २ रति, ३ अरति, ४ अस्थिर, ५ अशुद्ध, ६ अयश, ७ अशाता वेदनी, आ सात प्रकृतियोनो बंधव्यव छेद करे छे, १ आहारक, २ आहारक उपांग, अने जो देवायु न बांधे तो अठावन प्रकृतिनो बंध करे छे, अने देवायु बांधे तो ओगणसाठ प्र

कृतिनो बंध करे छे, तथा स्त्यानर्द्धित्रिक अने आहारकद्विकनो उदय व्यवछेद करे तो छोंतेर प्रकृतिनुं फल वेदे छे, अने १३० प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे आठमा अपूर्वकरण, नवमा अनिवृत्तिबादर, दशमा सूक्ष्म संपराय, अगीआरमा उपशांतमोह, बारमा क्षीणमोह, आ पांच गुणस्थाननुं स्वरूप सामान्य प्रकारें लखिये छियें.

चारित्रमोहनीयनी एकवीश प्रकृति उपशमाववा तेमज क्षय करवा वास्ते, अत्यंत विशुद्ध अध्यवसायथी, वीर्यविशेष उल्लसित थये थके, तेनो रसघात, स्थितिघात, गुणश्रेणि, गुणसंक्रम, अपूर्वस्थितिबंध, जेम धूरसमयथी थवा मांडे ते अपूर्वकरणनामा आठमुं गुणस्थान छे, तेनुं नाम अपूर्वकरण कहेवानो हेतु ए छे के आ गुणस्थानमां अपूर्व आत्म गुणनी प्राप्ति थाय छे.

जे जोग दीठा होय, सांजल्या होय, तेमज अनुजव्या होय, तेनी कांक्षारूप संकल्प विकल्पनो ज्यां अजाव थवाथी, निश्चय, प्रधान परिणतिरूप, परमात्मैकत्वरूप जावनी जे स्थानमां निवृत्ति थती नथी, ते कारणथी तेनुं नाम अनिवृत्ति गुणस्थान कहेवाय छे, तेनुं नाम अनिवृत्ति बादर कहेवानो हेतु ए छे के अहींयां अप्रत्याख्यानादि बार कषाय, तथा नव नोकषायने उपशमाववा वास्ते तेमज क्षय करवा वास्ते बहुज उद्यम थाय छे, तेथी ते नवमुं अनिवृत्ति बादर छे.

तथा सूक्ष्म परमात्मतत्व जावना बलथी सत्तावीश प्रकृतिरूप मोह उपशांत थतां तथा क्षय थतां, एक सूक्ष्म खंमजूत लोजनुं अस्तित्व ज्यां छे ते सूक्ष्मसंपराय नामा गुणस्थानक छे. संपराय, कषायनामवाची छे, ते कारणथी आ गुणस्थानकनुं नाम सूक्ष्मसंपराय छे.

तथा उपशमकज उपशम मूर्त्तिरूप सहजस्वजावबलथी सकल मोह कर्म उपशांत करवाथी उपशांतमोहनामक अगीआरमुं गुणस्थान तथा क्षपकनेज क्षपकश्रेणि मार्गथी दशमा गुणस्थानथीज निःकषाय, शुद्ध, आत्मजावना बलथी, सकल मोहनो क्षय करवाथी क्षीणमोह नाम बारमुं गुणस्थानक होय छे.

हवे अपूर्व करणादि अंशथीज बंने श्रेणी आरोहनुं स्वरूप कहियेछियें.

अपूर्व करण स्थानमा आरोह समयमा अपूर्वकरणना प्रथम अशथीज उपशमक, उपशमश्रेणिए चढेछे, अने क्षपक, क्षपकश्रेणिए चढेछे

हवे प्रथम उपशम श्रेणिए चढवानी योग्यता कहियेछियें उपशमक मुनि शुक्ल ध्याननो प्रथम पायो, जेनु स्वरूप हवे पछी कथन करवामां आवशे, तेनुं ध्यान करतां उपशमश्रेणि अगीकार करे छे केवी स्थिति वाला ते मुनि छे ? पूर्वगत श्रुतना धारक, निरतिचार चारित्रवान्, प्रथमना त्रण संहननयुक्त, एवा मुनि उपशम श्रेणि करे छे

उपशमश्रेणिवाला मुनि जो अल्प आयुष्यवाला होय तो काल करीने पांच अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थाय छे, परंतु जेउने प्रथम संहनन होय तेज अनुत्तर विमानमा उत्पन्न थाय छे बीजा संहननवाला अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थता नथी, सेवार्त्त संहननवाला चोथा महेंद्रदेवलोकसुधी जइ शके छे, अर्थात् त्यां सुधी उत्पन्न थाय छे बाकीना कीलिकादि चार संहननवाला बबे देवलोक उत्तरोत्तर वृद्धि करतां, त्यां सुधी गमन करी शके छे प्रथम संहननवाला मोक्ष सुधी गमन करी शके छे, अने जेनु आयुष्य सात लव अधिक होत तो ते अवश्य मोक्षे जात तेज सर्वार्थसिद्ध विमानमां उत्पन्न थाय छे, यवाह ॥ सत्तलवा जइ आउ, पहुप्पमाणं तओहु सिज्झता ॥ तित्तियमित्त नहुयं, तत्तो लवस त्तमा जाया ॥१॥ सव्वठ सिद्धनामे, उक्कोसठिइसु विजय माईसु ॥ एगावसेसगब्भा, हवति लवसत्तमा देवा ॥ २ ॥

प्रश्न —उपशम श्रेणिवाला मोक्षयोग्य केवीरीतें थइ शके छे ?

उत्तर —सात लव, एक मुहूर्त्तनो अगीआरमो भाग छे हवे लव सात बाकी रह्या छे आयुष्य जेने, एवा उपशम श्रेणि खंडित करनारा, पराङ्मुख थयेला, सातमा गुणस्थानकमा आवीने फरी क्षपक श्रेणि मांडीने सातलवनी वचमांज क्षीणमोह गुणस्थानक प्राप्त करी अंत कृत केवली थइ मोक्ष गमन करे छे ते कारणथी दूषण नथी तथा जे पुष्टायुवाला उपशम श्रेणि करे छे ते अखंडित श्रेणिथी चारित्र मोहनीयनो उपशम करीने अगीआरमा गुणस्थानकें पहोंची उपशम श्रेणि समाप्त करी नीचे पडे छे

हवे उपशमकज अपूर्वादि गुणस्थानकोमा जे करे छे ते कहियेछीयें

संज्वलन लोभ वर्जिने बाकीनी मोहनीय कर्मनी वीश प्रकृति, अपूर्व करण तथा अनिवृत्तिबादर, आ बे गुणस्थानमां उपशमावे छे, त्यार पछी अनुक्रमें सूक्ष्म संपराय गुणस्थानमां संज्वलन लोभने सूक्ष्म करे छे, त्यार पछी अनुक्रमें उपशांतमोह गुणस्थानमां ते सूक्ष्म लोभने सर्वथा उपशमावे छे. आ उपशांतमोह गुणस्थानमां जीव, शातावेदनीयरूप एक प्रकृतिनोज बंध करे छे. उगणसाठ प्रकृति वेदे छे, तथा १४७ प्रकृतिनी उत्कृष्टी सत्ता छे.

उपशांतमोह गुणस्थानकमां उपशम सम्यक्त्व छे, उपशम चारित्र छे, अने भाव पण उपशमज छे, परंतु क्षायिक भाव, तेमज क्षायोपशमिक भाव थतो नथी.

हवे उपशांतमोह गुणस्थानकथी केवीरीतें नीचे पडे छे, तेनुं स्वरूप कहियें छीयें. उपशांत मुनि तीव्र मोहोदयथी अर्थात् चारित्र मोहनीयनो तीव्र उदय थवाथी उपशांतमोहगुणस्थानकथी पडी जाय छे, फरी मोहजनित प्रमादथी पतित थायछे. जेम पाणीमां मल नीचे बेसी जाय छे, त्यारे उपरनुं पाणी निर्मल थाय छे, अने फरी निमित्त पामीने मलीन थाय छे, तेम आ गुणस्थानकमां थाय छे. ॥ यदाह ॥ सुयकेवलि आहारग, रुजुमइ उपसंतगाविहु पमाय ॥ हिंमंति भव मणंतं, तं अणंतर मेव चउ गइया ॥ १ ॥ अर्थः—१ श्रुत केवली, २ आहारक शरीरी, ३ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानी, ४ उपशांतमोहवाला, आ सर्वे प्रमादने वश थइ अनंतभव करे छे, चार गतिमां वास करे छे.

हवे उपशमक जीवो गुणस्थानकोमां केवीरीतें चडे छे, तथा पडेछे तेनुं स्वरूप कहियें छीयें. अपूर्वकरणगुणस्थानथी, अनिवृत्तिबादरगुणस्थानमां जाय छे, अनिवृत्तिबादरथी, सूक्ष्मसंपरायमां जाय छे, अने सूक्ष्मसंपरायथी, उपशांतमोहगुणस्थानमां जाय छे, तथा अपूर्वकरणादि चारे गुणस्थानकथी पडतां थकां उपशमश्रेणिवाला, मिथ्यात्व गुणस्थानकमां आवी जाय छे, अने जो चरमशरीरी होय तो, सातमा गुणस्थानकसुधी आवीने, फरी सातमा गुणस्थानकथी क्षपक श्रेणि मांडेछे, परंतु एकवार जेणे उपशम श्रेणि करी होय, तेज क्षपक श्रेणि करी शके छे, अने जेणे एक भवमां बे वार उपशम श्रेणि करी होय, ते क्षपक

श्रेणि ते जवमा करी शकता नथी यदाह ॥ जीवोतु एक जम्ममि, इक्कसिं उवसामगो ॥ खयति कुज्जानो कुज्जा, दोवारे उवसामगो ॥ १ ॥

हवे उपशम श्रेणिवालाना जवोनी संख्या कहियें ढियें आ संसारमां एकजीव आश्रयी अनेक जवमा थइ चार वार उपशम श्रेणि थाय ढे, अने एकजवमा वे वार थाय ढे यदाह ॥ उवसम सेणि चउक्क, जायइ जीवस्स आजवं नूणं ॥ तो पुण दो एगजवे, खवगे स्सेणी पुणोएगा ॥ १ ॥ उपशम श्रेणिनी स्थापना आ आगलना मंत्रथी जाणी लेवी आ मंत्रनी संवादक आ गाथा ढे गाथा ॥ अणदसण पुंसिछी, वेयढक्क च पुरिसवेय च ॥ दोदो एगतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ १ ॥ अर्थ— प्रथम अनतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोजनो उपशम करे ढे, पढी मिथ्यात्वमोह, मिश्रमोह, अने सम्यक्त्व मोहने उपशमावे ढे, पढी नपुंसकवेद, पढी स्त्रीवेद, पढी हास्य, रति, अरति, जय, शोक, जुगुप्सा, ढ नोकषायने उपशमावे ढे, पढी पुरुषवेद, पढी अप्रत्याख्यानी क्रोध, तथा प्रत्याख्यानी क्रोध, पढी संज्वलन क्रोध, पढी अप्रत्याख्यानी मान, तथा प्रत्याख्यानी मान, पढी संज्वलन मान, पढी अप्रत्याख्यानी माया तथा प्रत्याख्यानी माया, पढी संज्वलन माया, पढी अप्रत्यख्यानी लोज, तथा प्रत्याख्यानी लोज, पढी संज्वलन लोज ए प्रमाणे अनुक्रमें उपशांत करे ढे

हवे क्षपक श्रेणिनु स्वरूप कहियेंढियें आठमा गुणस्थानकनी पेहेलां योगी (क्षपक मुनि) क्षपक श्रेणिए चढीने कर्मक्षय करवामां प्रवृत्त थता जे जे कर्म प्रकृतिनो क्षय करे ढे, ते लखीए ढीयें चरमशरीरी, अबद्धायु, अल्पकर्मीने क्षपकमुनिनो चोथा गुणस्थानमां नरकायुनो क्षय थइ जवाथी, तथा पांचमा गुणस्थानमां तिर्यगायुनो क्षय थइ जवाथी, सातमा गुणस्थानमा देवायुनो क्षय थइ जाय ढे वली अहींयां सातमा गुणस्थानमा दर्शनमोहसप्तकनो पण क्षय थइ जाय ढे त्यार पढी क्षपकमुनिने एकसो आडत्रीश कर्मप्रकृतिनीज सत्ता रहे ढे त्यारे, आठमा गुणस्थानकनी प्राप्ति थाय ढे केवी रीतें थाय ढे ? उत्कृष्ट धर्म ध्यान, रूपातीत लक्षणरूप, तेनु वारंवार सेवन करता अन्यासरूप थइ जवाथी तत्त्वप्राप्ति थाय ढे यदाह ॥ अन्यासेन जिताहारो, ऽन्यासेनेव जितासनः ॥ अन्यासेन जितश्वासो, ऽन्यासेनेवानिलत्रुटिः ॥ १ ॥

अभ्यासेन स्थिरं चित्त, मभ्यासेन जितेंद्रियः ॥ अभ्यासेन परानंदा-ऽभ्यासेनैवात्मदर्शनं ॥ २ ॥ अभ्यासवर्जितैर्ध्यानैः, शास्त्रार्थैः फलमस्ति न ॥ नवेन्नहि फलैस्तृप्तिः, पानीयप्रतिबिंबितैः ॥ ते कारणथी अभ्यास-थीज विशुद्धतत्वानुयायिनी बुद्धि थाय छे.

हवे आठमा गुणस्थानमां शुक्लध्यान जेनुं स्वरूप हवे लखवामां आ-वशे तेनो आरंभ थाय छे ते कहिये छियें. शुक्लध्याननो प्रथम पायो पृ-थक्त्व वितर्क सप्रविचार नामनो छे. तेनुं ध्यान करनार मुनि वज्रऋष-भनाराच नामा प्रथम संहननयुक्त होय छे.

हवे ध्यान करनारनुं स्वरूप कहियेंछियें. योगींद्र, क्षपकमुनींद्र, व्य-वहार अपेक्ष्य, ध्यान करवाने योग्य थाय छे, शुं करीने? निविड, दृढ, पर्यंकासन करीने, केवी रीतें? निश्चल आसन करीने; कारण के आ-सन जयज ध्यानना प्रथम प्राण छे. यदाह ॥ आहारासण निद्दा, जयं च काऊण जिणवर मएण ॥ जाइज्ज नियं अप्पा, उवइठं जिणवरिंदेण ॥ १ ॥ पर्यंकासन जंघाना अधोभागमां पग उपर करवाथी थाय छे. वली केटलाएक सिद्धासन करेछे, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. ॥ योनिं वाम-पदा परेण निविडं, संपीड्य शिश्नं हनुं । न्यस्योरस्यचलेंद्रियः स्थिरमना लोलां च ताल्वंतरे ॥ वंशस्थैर्यतया सुनिश्चलतया, पश्यन् भ्रुवोरंतरं । योगी योगविधिप्रसाधनकृते, सिद्धासनं साधयेत् ॥ १ ॥ वली आस-ननो कांइ नियम नथी एम पण बतावेलुं छे, जे आसनथी चित्तनी स्थि-रता थाय, एवुं गमे तेवा प्रकारनुं आसन होय, ते वास्तविक छे. वली ते योगींद्र केवा होय छे? नासिकाना अग्रभागमां जेणे नेत्रनी दृष्टि स्थापन करेली छे, एवा प्रसन्ननेत्रवाला छे, कारण के नासाग्रन्यस्त लो-चनवालाज ध्यानना साधक होय छे ॥ यदाह ॥ ध्यानदंडकस्तुतौ ॥ नासावंशाग्रभाग, स्थितनयनयुगो, मुक्तताराप्रचारः । शेषाक्षक्षीणवृत्ति, स्त्रिभुवनविवरो, द्भ्रांतयोगैकचक्षुः ॥ पर्यंकातंकशून्यः, परिगलितघनो, च्छ्वासनिःश्वासवातः । सद्ध्यानारंभमूर्त्ति, श्चिरमवतु जिनो, जन्मसंभूतिभीतेः ॥ १ ॥ वली ते योगींद्र केवा होय छे? किंचित् उन्मीलित अर्द्धविक-सित नेत्र छे जेनां, कारण के योगियोनां समाधिसमयमां नेत्र अर्द्धवि-कसित होय छे. ॥ यदाह ॥ गंभीरस्तंभमूर्तिं, र्व्यपगतकरणं, र्व्यापृ-

तिमंदमंद । प्राणायामोल्लसाट, स्यलनिद्दितमना, दत्तनासाग्रदृष्टिः ॥ नाऽत्युन्मीलन्निमीलं, शयनमतितरां, बद्धपर्यंकबंधो । ध्याने प्रध्याय शुक्लं, सकलविदभव, ध सपायाज्जिनोव ॥ १ ॥ वली केवा छे ते यो गींद्र ? मन, चित्त, अंत करणना विकल्परूप व्यापारने बंध कर्यो छे, जेथी कारण के विकल्पज दृढकर्म बंधननो हेतु छे यदाह ॥ शुज्ञावाथ शुज्ञावापि, विकल्पा यस्य चेतसि ॥ सस्वं बध्यात्यय स्वर्ण, बधना तेन कर्म णा ॥१॥ वर निद्रा, वरमूर्छा, वरं विकलताऽपि वा ॥ नत्वार्त्तरौद्रदुर्लेश्या, विकल्पाकुलित मन ॥ २ ॥ वली ते योगी केवा छे ? संसारनो उछेद करवा वास्ते उद्यम छे जेनो एवा छे, कारण के नवने उछेद करवानी अभिलाषावाला ध्यानवाननेज योगनी सिद्धि थाय छे यदाह ॥ उत्सा हान्निश्चयाद्धैर्या, त्संतोषात्तत्त्वदर्शनात् ॥ मुनेर्जनपदत्यागा, त्यड्जिर्योग प्रसिद्ध्येदिति ॥ १ ॥ तथा योगींद्रमुनि पवनने उर्ध्व प्रचाराति वश मद्धार गोचर प्राप्त करे छे शुं करीने प्राप्त करे छे ? अपानद्धार मार्गथी गुदाने रस्ते पोतानी इच्छाथी निकलता पवनने संकोचीने, मूलबंध युक्ति पूर्वक करे छे ते मूलबंध आ छे ॥ पार्ष्णिजागेन सपीड्य, योनिमाकुंच येद्गुदं ॥ अपानमूर्द्ध्वमाकृष्य, मूलबंधोनिगद्यते ॥ १ ॥ आ आकुंचन क र्मेज प्राणायामनु मूल छे ॥ यदुक्तं ॥ ध्यानदंडस्तुतौ ॥ संकोच्यापानरंध्र हुतवह सदृशं, तंतुवत्सूक्ष्मरूप । धृत्वा हृत्पद्मकोशे, तदनु च गलके ता लुनि प्राणशक्तिं ॥ नीत्वा शून्यां, पुनरपि खगतिं, दीप्यमानं समंतात्, लोकालोकावलोकां, कलयति सकलां यस्य तुष्टो जिनेश ॥ १ ॥

हवे पूरक प्राणायामनु स्वरूप कहियेंछियें योगी पूरक ध्यानना यो गथी अतिप्रयत्नपूर्वक सर्व देहगतनाडीसमूहने पवनथी पुरे छे शुं क रीने ? बार आंगल सुधी पवननु आकर्षण करीने, अर्थात् बहारथी सर्व बाजुएथी बार आंगलप्रमाणे पवनने खेंचीने पूरेछे तात्पर्य ए छे के आकाश तत्व वहेतां थका नासिकानी अंदरज पवन होयछे, अग्नितत्व वहेतां थकां चार आंगल प्रमाण बहार पवन उर्ध्वगति स्फुरे छे, वायु तत्व वहेता छ आंगल प्रमाण बहार पवन तिर्यग् स्फुरे छे, पृथ्वीतत्व वहेता थकां आठ आंगल प्रमाण बहार पवन मध्यम जागमां रहे छे, अने जल तत्व वहेतां थकां बार आगल प्रमाण पवन नीचे वहे छे एवी

रीते बार आंगल पर्यंत वारुण मंडल प्रचार अमृतमय पवन आकर्षणथी तेनुं नाम पूरकध्यानकर्म कहेवाय छे.

हवे रेचक प्राणायाम कहियें छियें. पूरक ध्याननी अनंतर साधक योगी, योगसामर्थ्यथी तेमज प्राणायाम अभ्यासबलथी रेचकनामा पवन, नाभिकमल उदरथी हलवे हलवे बहार काढे छे, तेनुं नाम रेचक ध्यान छे. यदाह ॥ वज्रासनः स्थिरवपुः स्थिरधीः सचित्त, मारोप्य रेचक समीरणजन्मचक्रे ॥ स्वांतेन रेचयति नाडिगतं समीरं, तत्कर्म रेचक मिति प्रतिपत्तिमेति ॥ १ ॥

हवे कुंभक ध्यान कहियें छियें. योगी कुंभकनामा पवन, नाभिपंकज कुंभक ध्यान अर्थात् कुंभककर्मप्रयोगथी कुंभवत् अर्थात् घडारूपें अतिशयेंकरी स्थिर करे छे. ॥ यदाह ॥ चेतसि श्रयति कुंभकचक्रं, नाडिकासु निबिडीकृतवातः ॥ कुंभवत्तरति यज्जलमध्ये, तद्वदंति किल कुंभककर्म ॥ १ ॥ इति लेशमात्र प्राणायामस्वरूपं.

हवे पवन जीतवाथी मन वश थाय छे, तेनुं स्वरूप कहियेंछियें. ज्यां मन छे, त्यां पवन छे, अने ज्यां पवन छे, त्यां मन छे. यदाह ॥ दुग्धांबुवत् संमिलितौ सदैव, तुल्यक्रियौ मानसमारुतौ हि ॥ यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्ति, र्यावन्मरुत्तत्र मनःप्रवृत्तिः ॥ १ ॥ तत्रैकनाशादपरस्य नाश, एकप्रवृत्तेरपरप्रवृत्तिः ॥ विध्वस्तघोरेंद्रियवर्ग्गशुद्धि, स्तद्ध्वंसनान्मोक्षपदस्य सिद्धिः ॥ २ ॥ आ प्रमाणे पूरक, रेचक, कुंभक पवनोनां अनुक्रमें आकुंचन, निर्गमन साधीने, वायुनो संग्रह, तेमज चित्तनुं एकाग्रपणुं चिंतन करीने समाधिविषे निश्चलपणुं धारण करे छे, कारण के पवन जीतवाथीज मन निश्चल थाय छे. यदाह ॥ प्रचलति यदि, क्षोणी चक्रं, चलंत्यचला अपि । प्रलयपवन, प्रेंखालोला, श्चलंति पयोधयः ॥ पवन जयिनः, स्वावष्टंभ, प्रकाशितशक्तयः । स्थिरपरिणते, रात्मध्याना, च्चलंति न योगिनः ॥ १ ॥

हवे भावनीज प्रधानतानुं स्वरूप कहीयें छियें. क्षपक श्रेणि आरोह करतां प्राणायामनो क्रम अर्थात् प्रौढ पवननो अभ्यासक्रम जे कहेलो छे, ते प्रागल्भ्यता अर्थात् रूढिपूर्वक जे प्रसिद्ध छे, तेम बतावेलो छे परंतु प्राणायाम करे तोज क्षपकश्रेणिए चडी शके एवो कांइ नियम नथी,

कारण के रूपकनो भावज रूपक श्रेणिनु कारण छे, परंतु प्राणायामादि जे आडंबर छे ते कारण नथी यथा चर्पटिनापि ॥ नासाकदं नाडीवृंदं, वायोश्चार' प्रत्याहार ॥ प्राणायामो बीजग्रामो, ध्यानाभ्यासो मंत्रन्यास ॥ १ ॥ हृत्पद्मस्थं भ्रूमध्यस्थं, नासाग्रस्थं श्वासांतस्थ ॥ तेज' शुद्धं ध्यान बुद्धं, ॐकाराख्यं सूर्यप्रभाख्य ॥ २ ॥ ब्रह्माकाश शून्याभासं, मिथ्या जल्पं चिंताकल्प ॥ कायाक्रांत चित्तभ्रान्त, त्यक्त्वा सर्वं, मिथ्या गर्वं ॥ ३ ॥ गुर्वादिष्ट चिंतितमिष्टं, देहातीत भावोपेत ॥ त्यक्त्वा रूढ, नित्या नंदं, शुद्धं तत्व जानीहि त्वं ॥ ४ ॥ अन्यच्च ॥ ओंकाराऽभ्यसनं विचित्रकरणैः, प्राणस्य वायोर्जया । तेजश्चिंतनमात्मकायकमलें, शून्यांतरालंबनं ॥ त्यक्त्वा सर्वमिदं कलेवरगत, चिंतामनोविभ्रम । तत्वं पश्यत जल्पकल्पनकला, ऽतीत स्वभावस्थित ॥ १ ॥ आ सर्व रूढिपूर्वक रूपक श्रेणिना आडंबर छे, परंतु तत्वथी तो मरुदेवादिवत् भावज प्रधान छे

हवे शुक्ल ध्यानना प्रथम पायानुं नाम कहीयें छियें मन, वचन, कायाना योगने वशकरनार मुनिने शुक्लध्याननो प्रथम पाद थाय छे, ते पाद केवो छे ? वितर्कसहित जे वर्ते ते सवितर्क, विचारसहित जे वर्ते ते सविचार, पृथक्त्वसहित जे वर्ते ते सपृथक्त्व आ त्रणविशेषणयुक्त होवाथी शुक्लध्यानना प्रथम पायानु नाम सपृथक्त्व, सवितर्क, सप्रविचार छे

हवे आ त्रणे विशेषणोनुं स्वरूप कहीयें छीयें पूर्वोक्त प्रथम शुक्लध्यान त्रयात्मक क्रमोक्रमें ग्रहीत विशेष त्रय रूपें छे तेमां श्रुतचिंतारूप वितर्क छे, तथा शब्द अर्थ योगांतरमां जे संक्रमण करवु ते विचार छे, अने द्रव्य, गुण, पर्यायादिथी जे अन्यपणु छे ते पृथक्त्व छे

हवे आ त्रणे विशेषणना प्रगट अर्थ कहियेंछियें, जे ध्यानमां अंतरगध्वनिरूप वितर्क, विचार रूप होय ते सवितर्क ध्यान छे, कारण के स्वकीय निर्मल परमात्मतत्व अनुभवमय अतरंग भावगत आगमना अवलंबनथी आ सवितर्कध्यान थाय छे जे ध्यानमां पूर्वोक्त वितर्क विचारणारूप अर्थथी अर्थांतरमां संक्रमण होय, शब्दथी शब्दांतरमां संक्रमण होय, तथा योगथी योगांतरमां संक्रमण होय ते सविचार संक्रमण कहे थाय छे तथा जे ध्यानमां पूर्वोक्त वितर्क सविचार अर्थ व्यंजन योगां

तर संक्रमणरूप पण शुद्धात्मानी पेठे द्रव्यथी द्रव्यांतरमां जाय छे, अथवा गुणोथी गुणांतरमां जाय छे, अथवा पर्यायोथी पर्यायांतरमां जाय छे, तेमां सहभावी ते गुण छे, जेम के सुवर्णमां स्निग्धता, पीतता छे, इत्यादि, अने क्रमभावी ते पर्याय छे, जेमके सुवर्णमां मुद्रा, कुंडलादि. ते द्रव्यगुण पर्यायांतरोमां जे ध्यानमां अन्यत्व पृथक्त्व छे ते सपृथक्त्व छे.

हवे शुक्ल ध्यानथी जे शुद्धि थाय छे ते कहियें छियें. समाधिवान् योगी पूर्वोक्तत्रयात्मक पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार शुक्ल ध्यानने ध्यातां थकां परम प्रकृष्ट विशुद्धिने प्राप्त थाय छे, ते शुद्धि केवी छे? मुक्ति रूप लक्ष्मीना मुखने देखाडनारी छे.

हवे तेनुं कांइक विशेष स्वरूप कहियें छियें. यद्यपि आ शुक्लध्याननो पायो प्रतिपाती (पतनशील) उत्पन्न थाय छे, तो पण अति विशुद्ध होवाथी अर्थात् अत्यंत निर्मल होवाथी उपरना गुणस्थानमां आरोह करवानी चाहना रह्या करे छे, अर्थात् उपरना गुणस्थानमां दोडेछे.

अपूर्वकरण गुणस्थानस्थ जीव निद्राद्विक, देवद्विक, पंचेंद्रियजाति, प्रशस्त विहायोगति, त्रसनवक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण, वैक्रिय उपांग, आहारक उपांग, आद्यसंस्थान, निर्माणनाम, तीर्थंकरनाम, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, उच्छ्वास. आ बत्रीश कर्मप्रकृतिनो बंधव्यवच्छेद थवाथी, छवीश कर्म प्रकृतिनो बंध करेछे. तथा छेल्ली त्रण संहनन, अने सम्यक्त्व मोह, आ चारनो उदयव्यवच्छेद थवाथी बोंतेर कर्म प्रकृति वेदे छे. अने १३० कर्म प्रकृतिनी सत्ता छे. इति क्षपक श्रेणि आठमा गुणस्थाननुं स्वरूप.

हवे क्षपक, अनिवृत्तिनामा नवमा गुणस्थानकपर आरोह करेछे त्यारे जे जे कर्म प्रकृतिनो ज्यां ज्यां क्षय थाय छे, ते कहियेंछियें. क्षपकमुनि नवमा गुणस्थानकना नवभाग करे छे. प्रथम भागमां सोल कर्म प्रकृतिनो क्षय करे छे, ते आ प्रमाणे छे, १ नरकगति, २ नरकानुपूर्वी, ३ तिर्यग्गति, ४ तिर्यंचानुपूर्वी, ५ साधारणनाम, ६ उद्योतनाम, ७ सूक्ष्म, ८ द्वींद्रियजाति, ९ त्रींद्रियजाति, १० चतुरिंद्रिय जाति, ११ एकेंद्रियजाति, १२ आतपनाम, १५ स्त्यानर्द्धित्रिक, १६ स्थावरनाम. तथा बीजा भागमां अप्रत्याख्यान कषायनी तथा प्रत्याख्यान क-

षायनी चोकडी क्षय करे छे त्रीजा भागमा नपुसक वेदनो अने चोथा भागमां स्त्रीवेदनो क्षय करे छे, पाचमा भागमा हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा ए नोकषायनो क्षय करे छे, बाद ध्याननी अति निर्मलताथी छठा भागमां पुरुषवेदनो, सातमा भागमां संज्वलन क्रोधनो, आठमा भागमां संज्वलन माननो, अने नवमा भागमां संज्वलन मायानो क्षय करे छे, तथा आ गुणस्थानमां वर्त्तता मुनि हास्य, अरति, भय, जुगुप्सा, आ चारनो व्यवछेद होवाथी, बावीश प्रकृतिनो बंध करे छे, अने हास्यषट्कनो उदयव्यवछेद थवाथी छासठ प्रकृतिने वेदेछे तथा नवमा अशमां मायापर्यंत प्रकृतियोनो क्षय करवाथी, पात्रीश प्रकृति व्यवछेद थवाथी एकसो त्रण प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे क्षपकना दशमा गुणस्थानकनु स्वरूप लखीयें छियें पूर्वोक्त नवमा गुणस्थानक अनंतर क्षपकमुनि सूक्ष्म संपराय नामा दशमागुणस्थानपर आरोह करे छे शु करीने? क्षणमात्रमां संज्वलनना स्थूल लोभनो क्षय करतां थकां आरोह करे छे सूक्ष्म संपराय गुणस्थानस्थ जीव, पुरुषवेद तथा संज्वलन चतुष्कनो बंधव्यवछेद थवाथी सत्तर प्रकृतिनो बंध करे छे, अने त्रण वेद तथा त्रण कषायनो उदयव्यवछेद थवाथी साठ प्रकृति वेदे छे, मायानी सत्ता व्यवछेद थवाथी एकसो बे प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे क्षपकमुनिने अगीआरमु गुणस्थानक प्राप्त थतु नथी, परंतु दशमा गुणस्थानकथी सूक्ष्म लोभना अंशोना सूक्ष्म खंड करतां करतां क्षपक, बारमा क्षीणमोहवीतराग गुणस्थानमां जाय छे अहींया क्षपक श्रेणि समाप्त करे छे तेनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे प्रथम अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षय करे छे, पछी मिथ्यात्व मोहनीयनो, पछी मिश्रमोहनीयनो, पछी सम्यक्त्व मोहनीयनो, पछी अप्रत्याख्यान चार कषायनो, पछी प्रत्याख्यान चार कषायनो, पछी नपुसक वेदनो, पछी हास्यषट्कनो, पछी पुरुषवेदनो, पछी संज्वलन क्रोधनो, पछी संज्वलन माननो, पछी संज्वलन मायानो अने छेवटे संज्वलन लोभनो क्षय करे छे

हवे बारमा गुणस्थानमां शुक्लध्याननो बीजो पायो प्राप्त थाय छे तेनु स्वरूप कहियें छियें क्षपकमुनि क्षीणमोही थवाथी बारमा गुणस्थान

मार्गमां परिणतिमान् थइने प्रथम शुक्लध्याननी रीतिमुजब बीजा शुक्लध्याननो आश्रय करे छे. केवी रीतें ? वीतराग थइजवाथी "वीतराग" अर्थात् विशेषेण इतो (गतो), रागोयस्मात् सवीतरागः, वली ते क्षपक मुनि केवा छे ? महायति, यथाख्यातचारित्री, शुद्धतर जावसंयुक्त एवा क्षपक शुक्लध्यानना बीजा पायानो आश्रय करे छे.

हवे तेज शुक्लध्याननां विशेषण नामसहित कहियें छियें. ते क्षीण मोहगुणस्थानवर्त्ती क्षपकमुनि, बीजा शुक्लध्यानने एकयोगथी ध्याय छे, यदाह ॥ एकं त्रियोगजाजा, माद्यं स्यादपरमेकयोगवतां ॥ तनुयोगिनां तृतीयं, नियोगानां चतुर्थं हि ॥ १ ॥ केवुं ध्यान छे ? "अपृथक्त्वं पृथक्त्ववर्जितं, अविचारं विचाररहितं, सवितर्कगुणान्वितं वितर्कजाव गुणसंयुक्तं" एवां बीजो शुक्लध्यानने ध्यायछे.

हवे अपृथक्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें. तत्वज्ञाता एकत्व अर्थात् अपृथक्त्व ज्ञानने धारण करे छे, ते एकत्वपणुं शुं छे ? जे केवल निजात्मद्रव्य अर्थात् विशुद्ध परमात्मद्रव्य छे तेज अथवा तेज परमात्मा द्रव्यनो केवल एक पर्याय, अथवा केवल एकगुण ए प्रकारें एक द्रव्य, एक गुण, एक पर्याय, निश्चल अर्थात् चलनरहित ज्यां ध्यान करवामां आवे ते एकत्व छे.

हवे अविचारनुं स्वरूप कहीयें छीयें. जे सद्ध्यानकोविदोए शास्त्र आम्नायथी शुक्लध्याननुं रहस्य जाण्युं छे, तेउंए अविचार विशेषणसंयुक्त बीजा शुक्लध्याननुं स्वरूप आ प्रमाणे कह्युं छे. पूर्वोक्तस्वरूपोमां व्यंजन अर्थयोगोमां अर्थात् शब्दार्थ योगरूपोमां परावर्त्तविवर्जित शब्दथी शब्दांतर इत्यादि क्रमथी रहित एवुं चिंतन श्रुत अनुसारेंज करवामां आवे ते अविचार छे. आ कालमां सद्ध्यानकोविद अर्थात् शुक्लध्यानना जेउं ज्ञाता छे, तेउं पूर्वमुनिप्रणीत शास्त्र आम्नाय विशेषथी छे; परंतु आ कालमां शुक्लध्यानना कोइ अनुजवी नथी. यदाहुः ॥ श्रीहेमचंद्रसूरिपादाः ॥ अनविच्छित्याम्नायः, समागतोऽस्येति कीर्त्यतेऽस्माभिः ॥ दुष्करमप्याधुनिकैः, शुक्लध्यानं यथाशास्त्रं ॥ १ ॥

हवे सवितर्कनुं स्वरूप कहियेंछियें. सवितर्कगुणसंयुक्त बीजुं शुक्ल-

ध्यान भावश्रुतना आलंबनथी थाय छे, सूक्ष्म अतर्जल्प भावगत अथवा मनमात्र चिंतवनथी थाय छे

हवे शुक्लध्यानजनित समरसीभावनु स्वरूप कहियें छियें बीजा शुक्लध्यानमा वर्त्तता ध्यानी समरसीभाव धारण करे छे समरसीभाव एटले तदेकशरणता कारण के आत्माने अपृथक्त्वरूपें परमात्मामा लीन करीए त्यारेज समरसीभाव धारण थाय छे समरसीभाव केम करे? आत्माना अनुभवथी करे

हवे क्षीणमोहगुणस्थानकने अते शु करे छे? ते कहियें छियें पूर्वोक्त ध्यानथी तेमज बीजा शुक्लध्यानना योगथी कर्मरूपवनोनु दहन करीने योगीन्द्रमुनि अतना प्रथमसमये अर्थात् बारमा गुणस्थानकना बीजा चरमसमयमां निद्रा अने प्रचला आ बे प्रकृतिनो क्षय करे छे

हवे अतसमये जे करे छे ते कहियेंछियें क्षीणमोह गुणस्थानकें अंतसमयमा १ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवलदर्शन, आ चार दर्शनावरणीय, तथा पांचप्रकारना ज्ञानावरणीय, अने पांचप्रकारना अतराय, ए चौद प्रकृतिनो क्षय करीने क्षीणमोहांश थइने केवल स्वरूप थाय छे तथा क्षीणमोहगुणस्थानस्थ जीव, दर्शनचतुष्क, ज्ञानातरायदशक, उच्चगोत्र, यशनाम, ए सोल प्रकृतिनो बधव्यवच्छेद थवाथी एक शातावेदनीयनो बध करे छे तथा १ संज्वलनलोभ, २ ऋषभनाराच सहनन, बे प्रकृतिनो उदयव्यवच्छेद थवाथी सत्तावन प्रकृति वेदे छे तथा संज्वलन लोभनी सत्ता दूर थवाथी एकसो एक प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे क्षीणमोहांत प्रकृतियोनी संख्या कहियें छीयें चोथा गुणस्थानकथी क्षय थती थती त्रेसठ प्रकृति क्षीणमोहमां संपूर्ण थाय छे एक प्रकृति चोथा गुणस्थानकमा, एक पांचमामां, आठ सातमामां, छत्रीश नवमामा, सत्तर बारमामा, एम सर्व मली त्रेसठ थइ बाकीनी पचाशी प्रकृति जीर्ण वस्त्रनी जेवी तेरमा सयोगी केवली गुणस्थानकमा रहे छे,

हवे सयोगीकेवलीने जे भाव तथा सम्यक्त्व, अने चारित्र थाय छे ते कहियछियें ते केवली भगवंत आत्माने आ गुणस्थानकमा क्षायिक भावभाव प्रगट थाय छे, परम उत्कृष्ट क्षायिक सम्यक्त्व थाय छे, अने

यथाख्यातनामा क्षायिक चारित्र थाय छे, मतलब के उपशम अने क्षयोपशम आ बे भाव रहेता नथी.

हवे ते केवली आत्माना केवलनी विभूति कहियेंछियें. ते केवलज्ञान रूप सूर्यना प्रकाशथी चराचर जगत् केवलज्ञानी आत्माने हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष भासन थाय छे. आ स्थले केवलज्ञानने सूर्यनी उपमामात्र व्यवहारथीज कही छे. निश्चय स्वरूपें तो केवलज्ञान अने सूर्यमां अपार अंतर छे.

हवे जे आत्माउ तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे तेनुं विशेष स्वरूप कहियेंछियें. अर्हत्भक्तिप्रमुख वीशपुण्यस्थानकोनुं जे आत्माउ विशेष आराधन करे छे, तेउ तीर्थंकरनाम कर्म उपार्जन करे छे. ते वीशस्थानक आ छे. गाथा ॥ अरिहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु ॥ वछलयाइएसु, अभिरकणंणो वउग्गेय ॥ १ ॥ दंसण विणए आवस्सए सीलव्वए निरइयारे ॥ खणलवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीयं ॥ २ ॥ अपुव्व नाणग्गहणं, सुयभत्ती पवयण पभावणया ॥ एएहिं कारणेहिं, तिछयरत्तं लहइ जीवो ॥ ३ ॥ आ गाथाउनो अर्थ आगल लखशुं. आ गुणस्थानकमां, तीर्थंकर नामकर्मना उदयथी ते केवली त्रिभुवनपति जिनेंद्र थाय छे. जिन अर्थात् सामान्य केवली, तेउना जे इंद्र ते जिनेंद्र कहेवाय छे.

हवे तीर्थंकरना महिमानुं वर्णन करियें छियें. ते भगवान् तीर्थंकर, प्रथम परिच्छेदमां वर्णन कर्या मुजब चोत्रीश अतिशययुक्त होय छे. सर्व देवताउ तथा मनुष्यो जेमने नमस्कार करेछे, एवा सर्वोत्तम, सकलशासनमां प्रधान एवुं तीर्थप्रवर्त्तन करे छे, अने उत्कृष्टथी देशोनपूर्वकोटि सुधी विद्यमान रहे छे.

हवे ते तीर्थंकरनामकर्म केवीरीतें वेदवामां आवे छे तेनुं स्वरूप कहियेंछियें. पृथ्वीमंडलमां विहार करतां भव्यजीवोने प्रतिबोधी, तेउने सर्वविरति तेमज देशविरति करवाथी तीर्थंकरनाम कर्म वेदवामां आवे छे. जो तीर्थंकरनामकर्मनो उदय न होयतो भगवान् कृतकृत्य थवाथी तेमने उपदेश करवानुं शुं प्रयोजन छे ? ते कारणथी जे वादी भगवानने निःशरीरी, नैरुपाधिक, मुखरहित, सर्वव्यापी माने छे, ते भगवान् देहादिना अभावथी धर्मना उपदेशक थइ शकता नथी. जो उपाधिरहित,

सर्वव्यापी परमेश्वर पण उपदेशक थइ शकता होय तो तेवा परमेश्वर आ कालमां अमारा जेवाने केम उपदेश करता नथी ? कारण के ते वादीना कथनमुजब पूर्वकालमां अग्नि आदि ऋषियोने तेमणे प्रेर्या हता, तथा ब्रह्मादिद्वारा चार वेदादिनो उपदेश तेमणे कर्यो हतो, तथा मूसा इसाद्वारा जगत्ना जीवोने उपदेश कर्यो, तो हाल केम उपदेश नथी करता ? परोपकारीने उपदेश करवामां शु विलंब छे ? जो कहो के आ कालमां सर्वजीव उपदेश देवा योग्य नथी, तेथी उपदेश आपता नथी तो पूर्वकालमां पण सर्वजीवोए परमेश्वरनो उपदेश मानेलो नथी जुओ प्रथम तो कालासुर प्रमुख अनेक जीवोए उपदेश मानेलो नथी बीजो अजाजीले पण मानेलो नथी, तेमज यहूदाए तेमज केटलाएक इसराइलियोए पण मानेलो नथी, ते कारणथी पूर्वकालमां पण परमेश्वरने उपदेश देवो योग्य न होतो जो कहो के, परमेश्वरे ते वखते उपदेश केम आप्यो, अने हाल केम आपता नथी, ते बाबतमां तेनी वात ते जाणे, तो पछी तमे एम केम कहोछो के परमेश्वरने मुख नथी ? ते कारणथी तेज सत्य छे के तीर्थंकरनाम कर्मने वेदवा वास्ते भगवान् उपदेश आपे छे, अने जे वखते उपदेश आपेछे ते वखते देहधारी होय छे आटली चर्चा बस

केवलज्ञानवान् पृथ्वीमंडलमां उत्कृष्ट आठ वर्ष न्यून एक कोटि पूर्व प्रमाण विचरे छे देवताए रचेला कंचन कमलोपर पग राखी चाले छे आठ प्रातिहार्यसंयुक्त अनेक सुरासुरकोटिसंसेवित विहार करे छे आ स्थिति सामान्यप्रकारथी केवलज्ञानवान्नी कही छे जिनेंद्र तो मध्यस्थितिवाला होय छे

हवे केवली समुद्घातकरण कहियेंछियें केवलज्ञानवान् ज्यारे वेदनी कर्मनी स्थितिथी आयुकर्मनी स्थिति अल्प जाणे छे, त्यारे बने स्थिति उंने तुल्य करवावास्ते, केवली समुद्घात करे छे ते समुद्घातनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे प्रथम समुद्घातशब्दनो अर्थ कहियें छियें यथास्वभाव स्थित आत्मप्रदेशोने वेदनादि सात कारणोथी समंतात् उद्घातन अर्थात् स्वभावथी अन्यभावपणे परिणमन करवु तेनुं नाम समुद्घात छे समुद्घातना सात प्रकार छे १ वेदना स०, २ कषाय स०, ३ मरण स०,

४ वैक्रिय स०, ५ तेजः स०, ६ आहारक स०, ७ केवलि स०. आ सात समुद्घातमांहेनी केवलिसमद्घात अहींआ ग्रहण करवी. केवली नगवान् केवलिसमुद्घात करतां प्रथम समयमां वेदनी आयुकर्मने सम करवावास्ते आत्मप्रदेशोथी ऊर्ध्वलोकांतसुधी दंडाकार आत्मप्रदेश लंबावे छे, बीजा समयमां पूर्व, पश्चिमदिशामां आत्मप्रदेशोथी कपाट आकार करे छे, त्रीजा समयमां उत्तर दक्षिण आत्मप्रदेशोनो मंथनाकार करे छे, चोथासमयमां अंतरो पूर्ण करवाथी सर्वलोकव्यापी थइ जाय छे, एवीरीतें केवली चोथे समये विश्वव्यापी थाय छे.

हवे अहींआथी निवृत्ति करे छे ते कहियें छियें. ए प्रमाणे केवली आत्मप्रदेशोनो विस्तार करवाना प्रयोगथी कर्मलेशने सम करे छे; समकर्या पछी समुद्घातथी पाछा निवर्त्तन करे छे. पांचमा समयमां जगत् पूर्णताना अंतरोथी निवर्त्ते छे, छठ्ठे समये मंथानपणुं दूर करे छे, सातमे समये कपाटाकार दूर करे छे, अने आठमे समये दंडत्व उपसंहार करतां थकां स्वनावस्थ थाय छे. ॥ यदाहुर्वाचकमुख्याः। दंडं प्रथमे समये, कपाटमथ चोत्तरे तथा समये ॥ मंथानमथ तृतीये, लोकव्यापी चतुर्थे तु ॥ १ ॥ संहरति पंचमे त्वं, तराणि मंथानमथ पुनः षष्टे ॥ सप्तमके तु कपाटं, संहरति तथाऽष्टमे दंडं ॥ २ ॥

हवे केवली समुद्घात करतां थकां जेवा योगवान् तथा अनाहारक थाय छे ते कहियेंछियें. प्रथम अने अंतसमयमां औदारिक काययोगवाला थाय छे, बीजा अने छठ्ठा समयमां मिश्र औदारिक काययोगी थाय छे. अहीयां मिश्रपणुं कार्मणसाथे औदारिकनुं छे. त्रीजा, चोथा अने पांचमा समयोमां केवल कार्मण काययोगवाला थाय छे. जे समयोमां केवली मात्र कार्मणकाययोगवाला होय छे ते समयोमां अनाहारक होय छे.

हवे जे केवली समुद्घात करे छे, अने जेउ करता नथी, ते कहियें छियें. जेउने छ महिनाथी अधिक आयु विद्यमान छतां केवल ज्ञान थाय तेउ तो निश्चयें समुद्घात करे छे; अने जेउनुं आयुष्य छ महिनानी अंदर होय ते वखते जेउने केवलज्ञान थाय तेउनी बाबतमां नजना छे, अर्थात् तेउ समुद्घात करे अथवा नहिपण करे. यदाह ॥ छम्मासाउ

सेसा, उप्पन्न जेसिं केवल नाणं ॥ ते नियमा समुग्घाइय, सेसा समुग्घाय जइयवा ॥ १ ॥

हवे समुद्घातथी निवृत्त थइ केवली जे कांइ करे छे ते कहियेंछियें केवली समुद्घातथी निवृत्त थइ मन, वचन, काययोग निरोधवा वास्ते शुक्लध्यानना त्रीजा पायाने ध्याय छे शुक्लध्याननो त्रीजो पायो सूक्ष्मक्रिया निवृत्ति नामनो छे ते पायाथी कंपनरूप क्रियाने सूक्ष्म करे छे

हवे मन, वचन, कायाना योगने जेवीरीतें सूक्ष्म करे छे ते कहियेंछियें ते केवली सूक्ष्मक्रिया निवृत्तिनामा त्रीजु शुक्लध्यान ध्याता अचिंत्य आत्मवीर्यनी शक्तिथी बादरकाययोगस्वजावमा स्थित थइने, बादर वचन योग तथा बादर मनोयोगना पुजलोने सूक्ष्म करे छे, त्यार बाद बादर काययोगने सूक्ष्म करे छे पछी सूक्ष्मकाययोगमां क्षण मात्र रहीने तत्काल सूक्ष्मवचन, मनोयोगना पुजलोनो अपचय करे छे त्यारपछी सूक्ष्मकाययोगमां क्षणमात्र रहीने ते केवली प्रगट निज आत्मानुजव सूक्ष्मक्रिया चिद्रूपनो अर्थात् स्वयमेव पोताना स्वरूपनो अनुजव करे छे

हवे जे सूक्ष्मक्रियावाला शरीरनी स्थिति तेज केवलीउंनुं ध्यान छे ते कहिएछिए जेप्रकारें छद्मस्थ योगीउंना मननी स्थिरताने ध्यान कहीए छीए, तेजप्रकारें शरीरनी निश्चलतानु केवलीउंने ध्यान थाय छे शैलेशीकरण आरंज करनारा सूक्ष्मकाययोगी ह्रस्वाक्षर पांच उच्चारण करतां जे काल लागे तेटलु आयुष्य पोतानुं बाकी रहे छे त्यारे शरीरने शैलवत् निश्चल करवावास्ते अप्रतिपातरूप चोथु शुक्लध्यान शैलेशीकरणरूप थाय छे त्यारपछी ते केवली शैलेशीकरणारंजी सूक्ष्मकाययोगमा रहेता थका शीघ्र अयोगी गुणस्थानमा जवानी इछा करे छे

हवे ते केवली जगवान् सयोगी गुणस्थानना अंत समयमा औदारिकद्विक, अस्थिरद्विक, विहायोगतिद्विक, प्रत्येकत्रिक, संस्थानषट्क, अगुरु लघुचतुष्क, वर्णादिचतुष्क, निमाण, तैजस, कार्मण, प्रथम संहनन, स्वरद्विक, एक वेदनीय आ त्रीश प्रकृतिनो उदयविछेद करेछे अहींआं अंगोपागनो उदयव्यवछेद थवाथी अंत्यांग संस्थान अवगाहनाथी त्रीजो जागन्यून अवगाहना करे छे केवीरीतें ? पोताना आत्मप्रदेशोने घनरूप करवाथी चरम शरीरनां अंगोपांगमां जे नासिकादि छिद्र छे

तेउने पूर्ण करे छे. तेथी आत्मप्रदेशो घनरूप थइ जाय छे. अने अवगाहना त्रीजो नाग न्यून थाय छे. हवे सयोगी गुणस्थानस्थ जीव एक विध बंध, उपांत्य समय सुधी अने ज्ञानांतराय पंच तथा दर्शन चतुष्क उदयव्यवछेद थवाथी बेंतालीश प्रकृति वेदे छे. तथा १ निद्रा, २ प्रचला, १२ ज्ञानांतराय दशक, १६ दर्शनचतुष्क, आ सोलप्रकृतिनी सत्ता व्यवछेद थवाथी पंचाशी प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे अयोगी गुणस्थानकनी स्थिति कहियें छियें. चौदमा गुणस्थानकमां रहेतां थकां जिनेंद्रनी लघु पंचाक्षर "अ इ उ ऋ ऌ" उच्चारणमात्र अर्थात् आ पांच अक्षर बोलतां जेटलो काल लागे तेटली स्थिति छे. अयोगी गुणस्थानकमां अनिवृत्तिनामें शुक्लध्यानो चोथो पाद छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. जे ध्यानमां सूक्ष्म काययोग क्रिया पण "समुछिन्न" सर्वथा निवृत्त थइ जाय छे, ते समुछिन्नक्रिया नामें शुक्लध्याननुं चोथुं ध्यान छे. ते ध्यान केवुं छे? मुक्ति मेहेलना द्वारसमान छे.

शिष्य पुछे छे के मारा मनमां बे शंका छे. तेनुं समाधान कृपा करी करो! प्रथम शंका. हे प्रनु! देह विद्यमान छतां अयोगी केवी रीतें होइ शके? बीजी शंका. जो सर्वथा काययोगनो अनाव थयो छे तो देहनो अनाव छतां ध्यान केवीरीतें घटे?

आचार्य नगवान् उत्तर आपे छे. नो शिष्य! अयोगी गुणस्थानमां सूक्ष्मकाययोग विद्यमान छतां अयोगी कहेवाय छे तेनुं कारण ए छे के ते काययोगथी जे क्रिया थाय छे ते अति सूक्ष्मरूप छे, तथा ते काययोग शीघ्र क्षय पामनार छे, वली कायानुं कार्य करवामां असमर्थ होवाथी काय होवा छतां पण अयोगी छे. वली शरीर आश्रय होवाथी ध्यान पण छे. ते कारणथी बंने बाबतमां विरोध नथी ते विरोध कोने नथी? अयोगीगुणस्थानवर्त्ती परमेष्टि नगवंतने. ते परमेष्टि नगवंत केवा छे? निजशुद्धात्मचिद्रूप तन्मय पणे उत्पन्न, निर्नर, परमानंद विराज मान छे.

हवे ध्यानना निश्चय, व्यवहारनुं स्वरूप कहियें छियें. तत्त्वथी अर्थात् निश्चय नयथी आत्माज ध्याता छे, आत्माज करण रूप छे, आत्माज कर्म

रूपतापन्नने ध्याय छे तेनाथी अन्य, उपचाररूप अष्टांगयोग प्रवृत्ति लक्षण ते सर्व व्यवहारनयथी ध्यान जाणवु

हवे अयोगी गुणस्थान वर्तिना उपान्त्य समयनां कृत्य कहियें छियें केवल चिद्रूपमय आत्मस्वरूपना धारक योगी, अयोगी गुणस्थानवर्ती स्फुट प्रगट उपांत्य समयमां शीघ्र युगपत् समकालें बहोंतेर कर्मप्रकृतिनो क्षय करेछे ते आ छे शरीर पांच, बंधन पांच, संघात पाच, अंगोपांग त्रण, संस्थान छ, वर्ण पाच, रस पांच, संहनन छ, अस्थिर छ, स्पर्श आठ, गंध बे, नीचगोत्र, अगुरुलघु चतुष्क, देवगति, देवानुपूर्वी, खगतिद्विक, प्रत्येकत्रिक, सुस्वर, अपर्याप्तिनाम, निर्माणनाम, बेमांथी कोइपण एक वेदनी, आ बहोंतेर कर्मप्रकृति मुक्तिपुरीना द्वारनी अर्गलाभूत छे, ते उपांत्य समय अर्थात् द्विचरम समयमां क्षय करेछे

हवे अयोगी परमात्मा अंतसमयमां जे जे प्रकृति क्षय करीने जे कांइ करेछे ते कहिये छियें अंतसमये एकवेदनी, आदेयनाम, पर्याप्तिनाम, त्रसनाम, बादरनाम, मनुष्यायु, यशनाम, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, सौभाग्य उच्चगोत्र, पंचेंद्रियत्व, तीर्थंकरनाम आ तेर प्रकृति क्षय करीने तेज समयमां सिद्धपर्यायने प्राप्त थायछे ते सिद्धपरमेष्टी, सनातन भगवान् शाश्वत लोकांत पर्यंत जायछे तथा अयोगीगुणस्थानस्थ जीव अबंधक छे तथा एकवेदनी, आदेय यश, सुभग, त्रसत्रिक, पंचेंद्रियत्व, मनुष्यगति, मनुष्यायु, उच्चगोत्र, तीर्थंकरनाम, आ बार प्रकृति वेदेछे अंतना बे समय पहेलां पंचाशीनी सत्ता रहेछे, उपांत्य समयमां तेर प्रकृतिनी सत्ता रहेछे अने अंतसमये सत्तारहित थायछे इति अयोगी चतुर्दशगुणस्थान स्वरूप ॥

आशंका –"नि कर्म" कर्मरहित आत्मा ते समये लोकांतमां केवी रीतें जाय छे?

समाधान –कर्मरहित सिद्धनी ऊर्ध्वगति थायछे कया हेतुथी थायछे? पूर्वप्रयोगथी अर्थात् अचिंत्य आत्मवीर्यथी उपांत्य बे समयमां पंचाशी कर्मप्रकृति क्षय करवावास्ते जे व्यापार प्रारंभ कर्यो हतो तेनाथी ऊर्ध्वगति थायछे आ प्रथम हेतु छे तथा कर्मसंगतिरहित थवाथी ऊर्ध्वगति थायछे आ बीजो हेतुछे तथा गाढतर बंधनोथी रहित थवाथी

ऊर्ध्वगति थायछे. आ त्रीजो हेतुछे. तथा कर्मरहित जीवनो ऊर्ध्वगमन स्वन्नाव छे. आ चोथो हेतु छे. आ चारहेतु चारदृष्टांतथी बतावीए छीए. १ जेम कुंजकारनुं चक्र पूर्वप्रयोगथी फर्याकरे छे, तेम आत्मानी पूर्वप्रयोगथीऊर्ध्वगति थाय छे. २ जेम माटीना लेपथी रहित थतां तुंबडानी जलमां ऊर्ध्वगति थाय छे तेम अष्टकर्मरूप लेपरहित थतां धर्मास्तिकायरूप जलथी आत्मानी ऊर्ध्वगति थाय छे. ३ जेम एरंडफल बीजादिबंधनोथी बुटुं थतां ऊर्ध्वगमन करे छे, तेवीजरीते कर्मबीजादि बंध विछेद थतां सिद्धपण ऊर्ध्वगमन करे छे. ४ जेम अग्निनो ऊर्ध्वज्वलन स्वन्नाव छे तेम आत्मानो पण ऊर्ध्वगमन स्वन्नाव छे.

हवे कर्मरहित आत्मानी अधोगति तथा तिर्छी गति केम थती नथी ते कहिए छिए. सिद्ध आत्मा कर्मगौरव अन्नावथी अधोगमन धरतो नथी, तथा प्रेरककर्म अन्नावथी तिर्छो पण गति करतो नथी, तेमज धर्मास्तिकायना अन्नावथी लोकनी उपर पण गमन करी शकतो नथी. लोकमांज धर्मास्तिकाय होवाथी ते जीव पुजलनी गतिनो हेतुरूप छे. मत्स्यादिने जेम जल छे तेम. ते धर्मास्ति अलोकमां नथी, तेथी सिद्ध अलोकमां जइ शकता नथी.

हवे सिद्धशिला उपर लोकांतमां सिद्ध रहेछे तेनुं स्वरूप कहिएछिए. ईषत्प्राग्न्नारा नामनी सिद्धशिला चौद राजलोकना मस्तक उपर व्यवस्थित छे, तेनाथी सिद्धो पासे होवाथी ते सिद्धशिला कहेवाय छे. परंतु सिद्ध परमात्मा कांइ ते शिला उपर बेठेला नथी. सिद्ध तो ते शिलाथी उंचे लोकांतमां बिराजमान छे. ते शिला केवी छे ? मनोज्ञ, मनोहारिणी छे, वली ते शिला केवी छे ? सुरन्नि कपुरथी पण अधिक सुगंधवाली छे, कोमल छे, जेना सूक्ष्म अवयवो छे. वली ते शिला केवी छे ? पुण्या, पवित्र, परम न्नासुरा, प्रकृष्ट तेजवंत छे, मनुष्यक्षेत्र समान लांबी पहोली छे, श्वेत छत्राकार छे, उत्तान छत्राकार छे, अत्यंत शुन्नरूप छे, सर्वार्थसिद्धविमानथी चार योजन उपर छे. वली ते पृथ्वी मध्यन्नागमां आठ योजन जाडी छे, तथा प्रांतमां घटती घटती मांखीनी पांखथी पण पातली छे. ते शिलानी उपर एक योजन लोकांत छे, ते योजननो जे चोथो कोस छे, ते कोसना छठान्नागमां सिद्धोनी अवगाहना छे, अ-

र्थात बे हजार धनुष्प्रमाण, कोशना छठा भागमां एटले एकसे तेत्रीश धनुष् अने बत्रीश आंगलनी सिद्धोना आत्मप्रदेशोनी अवगाहना छे

हवे सिद्धोना आत्मप्रदेशनी अवगाहनानो आकार केवो छे ते क हीए छिए जेम मूस (कुलडी) मां मीण भरीने गालीए, ते गली जवाथी आकाशनो जेवो आकार थाय छे तेवो सिद्धोनो आकार छे

हवे सिद्ध परमात्माना ज्ञान दर्शननो विषय लखीयें छियें त्रैलोक्यो दरवर्त्ती, चौद रज्ज्वात्मकलोकमा गुणपर्यायसंयुक्त जे जे वस्तुओ छे, ते ते जीवाजीव सर्व पदार्थोने सिद्ध परमात्मा जाणे छे सामान्यरूपें देखे छे, विशेषरूपें जाणे छे कारण के वस्तुमात्र सामान्य विशेषात्मक छे

हवे सिद्धोना आठ गुण कहियेंछियें १ ज्ञानावरण कर्मना क्षयथी केवलज्ञान प्रगट थयेल छे, २ दर्शनावरण कर्मना क्षयथी केवल दर्शन प्रगट थयेल छे, ३ वेदनीय कर्मना क्षयथी अव्याबाध अनतसुख थयेल छे, ४ दर्शन मोहनीय तथा चारित्रमोहनीयनो क्षय थवाथी शुद्ध स म्यक्त्व चारित्र क्षायकरूप थयेल छे, ५ आयुकर्मनो क्षय थवाथी अक्ष यगति थयेल छे, ६ नामकर्मनो क्षय थवाथी अमूर्त्तपणु प्रगट थयेल छे, ७ गोत्रकर्मनो क्षय थवाथी अनंत अवगाहना प्रगट थयेल छे, ८ अं तरायकर्मनो क्षय थवाथी अनतवीर्य प्रगट थयेल छे

हवे सिद्धोना सुखनु स्वरूप कहियें छियें चक्रवर्त्तिनी पदवी तेमज इन्द्रनी पदवीना सुख करता सिद्धनु सुख अनंतगणु छे वली ते सुख केवुं छे ? क्लेशरहित छे "अविद्यास्मिता" राग, द्वेष, अभिनिवेश इत्यादि क्लेश जेमां नथी वली ते सुख केवुं छे ? अव्यय छे, स्वस्वभा वथी व्यय न थाय तेवु छे

हवे सिद्धजगवर्त्ते जे प्राप्त करेल छे तेनो सार कहियें छियें सिद्धज गवर्त्ते परमपद प्राप्त करेल छे, ते परमपद केवु छे ? आराधकोने आराध्य छे, साधकोए सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रादिथी साधेल छे, ध्यायकोने ध्येय छे, निरतर अनेकप्रकारना ध्यानना उपायथी ध्यावा योग्य छे, जे पद अभव्यजीवोने सदा दुर्लभ छे, केटलाएक भव्यजीवोने पण दुर्लभ छे, दुर्भव्योने कष्टथी प्राप्त थाय छे, एवु परमपद सिद्धजगवर्त्ते प्राप्त करेल छे वली ते पद केवु छे ? चिदानदमय चिद्रूप परमानदरूप छे

हवे मुक्तिनुं स्वरूप कहियेंछियें. कोइ वादी अत्यंताभावरूप मुक्ति माने छे, ते बौद्धोनी मुक्ति छे. कोइ वादी जडमयी, ज्ञान अभावमयी मुक्ति माने छे. ते नैयायिक, वैशेषिकमतवालानी मुक्ति छे. कोइ वादी मुक्ति प्राप्त कर्यापछी फरी ते आत्मा संसारमां अवतार धारण करेछे, फरी मुक्तरूप थाय छे एवी मुक्ति माने छे, ते आजीविका मतवालानी मुक्ति छे. कोइ वादी क्लिष्ट कर्मथी विषयसुखमय मुक्ति माने छे, ते कहे छे के, मोक्षमां भोग भोगववा वास्ते बहु अप्सराउ मले छे, खावा-वास्ते बहु स्वादिष्ट वस्तुउ मले छे, पीवा वास्ते स्वादिष्ट मदिरा मले छे, रहेवा वास्ते सुंदर बाग मले छे, इत्यादि. कोइवादी कहे छे के, आत्मानी मुक्ति कदापि थती नथी, ते जैमिनी मुनिनो मत छे. खरडज्ञानी कहे छे के जे वेदोक्त अनुष्ठान करे छे, ते सर्वथा उपाधिरहित तो थतो नथी; परंतु शुभपुण्यना फलथी सुंदर देह प्राप्त करीने, ईश्वरनी साथे मलीने, केटलाएक कल्पो सुधी सुख भोग भोगवे छे, ज्यां इछा थाय त्यां उडीने चाल्या जाय छे, फरी संसारमां जन्म लहे छे, फरी पूर्ववत् सुख भोग भोगवे छे, ए प्रमाणे अनादि अनंतकाल सुधी कर्या करे छे, परंतु एक स्थलें स्थिति करता नथी, एवी तेमनी मुक्ति छे, सर्वज्ञ अर्हंत परमेश्वरें सत्रूप, ज्ञानदर्शन रूप, असाररूप, जे आ संसार छे तेनाथी विरुद्ध, साररूप, निस्सीम आत्यंतिक सुखरूप, अनंत, अतींद्रिय आनंद अनुभवस्थान, अप्रतिपाति, स्वस्वरूपावस्थानरूप, मुक्ति कही छे. बृहद्गछीय श्रीवज्रसेनसूरिना शिष्य श्रीहेमतिलक सूरि पट्टप्रतिष्ठित श्रीरत्नशेखर सूरिए चौदगुणस्थानकनुं स्वरूप लखेल छे, तेने अनुसारें भाषामय किंचित् गुणस्थानक स्वरूप में लखेल छे.

प्रश्नः– हे जैन! तमे सर्व वादिउनी कहेली मुक्ति अनुपादेय समज्या, अने अर्हंतनी कहेली मुक्ति उपादेय समज्या, तेनुं शुं कारणछे?

उत्तरः– हेभव्य! सर्व वादिउनी मुक्ति, षड्दर्शननुं निरूपण चतुर्थ परिछेदमां करेल छे, त्यां बतावेल छे, ते जोतां आ वादिउनी मुक्ति वास्तविक नथी. जुउ. ज्यारे अत्यंताभावरूप मुक्ति थाय त्यारे आत्मानो ज अभाव थयो, हवे मोक्षफल कोने प्राप्त थयुं? एवो कोण होय के जे आत्माना अत्यंताभाववास्ते यत्न करे? तथा ज्ञानाभावरूप जे मुक्ति

माने छे, ते पण वास्तविक नथी, कारण के ज्यारे ज्ञाननो अभाव मुक्ते थाय त्यारे पाषाण पण मोक्षरूप थइ जाय हवे एवो कोण प्रेक्षावान् छे जे पोताना आत्माने पाषाणतुल्य बनाववा चाहे ? तथा जे आत्मानी सर्वव्यापिरूप मुक्ति माने छे, अर्थात् ज्यारे आत्मानी मुक्ति थाय छे, त्यारे आत्मा सर्वव्यापी मोक्षरूप थइ जाय छे आ कहेवु पण प्रमाण अनभिज्ञ मतवाळानुं छे, कारण के आत्मा कोइ प्रमाणथी सर्व लोक व्यापी सिद्ध थइ शकतो नथी तेनी विशेष चर्चा जोवी होय तो स्याद् वादरत्नाकरावतारिका अवलोकन करवी तथा आत्मानो मोक्ष थया पछी फरी संसारमां जन्म लेवो, फरी मुक्त थवु, आ तो मोक्ष शेनो ? आ तो (भांडो) नो वेश थयो, ते कारणथी आ मत पण वास्तविक नथी तथा जे मतवाळा मोक्षमां स्त्रियोनो भोग माने छे, ते विषयना लोलुपी छे तथा सरडज्ञानीनी मुक्ति पण अप्रमाणिक छे, कोइ प्रमाणथी सिद्ध थती नथी ते कारणथी अर्हंत भगवंतें जे मुक्ति कही छे, ते निर्दोष छे ॥ इतिश्रीतपागच्छीयमुनिश्रीवृद्धिचंद्रगणिमणिविजयतच्छिष्यमुनि श्रीबुद्धिविजयतच्छिष्यमुन्यात्मारामानंदविजयविरचितजैनतत्त्वादर्शधर्मतत्त्वनिरूपणाधिकारे (तद्गुर्जर भाषांतरे) चतुर्दशगुणस्थानज्ञाननिर्णय नामा षष्ठ परिच्छेदः संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमपरिच्छेदप्रारंभ ॥

आ परिच्छेदमां सम्यक् दर्शननुं स्वरूप लखियें छियें सम्यक् दर्शननु स्वरूप पूर्वे काइक लखी आव्या छियें, परंतु भव्यजीवोने बोध थवा वास्ते विस्तारथी लखवानी जरुर छे तेथी विशेष लखिये छियें सम्यक्त्वना बे प्रकार छे १ व्यवहार सम्यक्त्व, २ निश्चय सम्यक्त्व यथार्थ तत्त्वरूप विज्ञानपूर्वक रुचि, ते सम्यक्त्व ते सम्यक्त्व, त्रण तत्त्व उपर यथार्थ रुचि थवाथी थाय छे त्रण तत्त्व आ छे, १ देवतत्त्व, २ गुरुतत्त्व, ३ धर्मतत्त्व तेनेविषे श्रद्धा (प्रतीति) जे पुरुष करे ते सम्यक्त्ववान् थाय छे ते श्रद्धाना बे भेद छे १ व्यवहार, २ निश्चय तेउं मध्येनी प्रथम व्यवहारश्रद्धानुं स्वरूप लखिये छियें

व्यवहार श्रद्धामां देव श्री अरिहंत, जेनु स्वरूप प्रथम परिछेदमा वर्णवेलुं छे, ते अरिहंत जाणी लेवुं अरिहंतना चार निक्षेप अर्थात् स

रूप छे. १ नामनिक्षेप, २ स्थापनानिक्षेप, ३ द्रव्यनिक्षेप, ४ भावनिक्षेप आ चारे निक्षेपनुं विस्तारपूर्वक स्वरूप जोवुं होय तो विशेषावश्यक अवलोकन करवुं. प्रथम निक्षेप, नाम अर्हंत अर्थात् "नमो अरिहंताणं" एम कहेवुं. आ पदनो जप करवाथी अनेक जीव संसारसमुद्र तरी गयेल छे. बीजो स्थापनानिक्षेप, ते अरिहंतनी प्रतिमा, समस्त दोष चिह्नोथी रहित सहज सुभग, समचतुरस्त्र संस्थानवाली, पद्मासन, कायोत्सर्ग मुद्रारूप, शांतरसमय जिनबिंब देखीने, तेनी सेवा, पूजा, भक्ति करवाथी अनंत जीवोए मोक्ष प्राप्त करेल छे,

प्रश्नः—अरिहंतनी प्रतिमा पूजवी तथा तेने नमस्कार करवो, एम स्थापना निक्षेपने मानी, प्रतिमाने मुक्तिदायक समजवी, आ निःकेवल मूर्खतानुं चिह्न छे, कारण के प्रतिमा जडरूप होवाथी शुं आपी शके छे ?

उत्तरः—हे भव्य ? आप कोइ पण शास्त्रने परमेश्वरनां वचनरूप मानोछो के नहि ? जो शास्त्रने परमेश्वरनां वचनरूप मानता हो, तेमज ते शास्त्रने सत्यस्वरूपें संसारसमुद्रथी पार उतारनार मानता हो तो, तेवीज रीतें परमेश्वरनी प्रतिमाने मानवामां शा वास्ते लज्जा धारण करोछो ? जेवुं शास्त्र जडरूप छे, अर्थात् तेमां स्याही अने कागल शिवाय बाकी कांइ पण नथी, तेवी परमेश्वरनी प्रतिमा पण छे, जो एम कहो के कागलो उपर स्याहीथी अक्षर संस्थान पडेलां वांचवाथी परमेश्वरना कथननो बोध थाय छे, तो तेवीज रीतें परमेश्वरनी मूर्त्ति देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरूपनो बोध थाय छे.

प्रश्नः—प्रतिमा देखवाथी अरिहंत स्वरूप तो स्मरण थाय छे, परंतु प्रतिमानी भक्ति करवाथी शुं लाभ छे ?

उत्तरः—शास्त्र श्रवण करवाथी परमेश्वरना वचननो बोध थयो तो पण भक्तजनो जेम शास्त्रने उच्चस्थानमां राखे छे, कोइ शिरपर लइ फरे छे, कोइ गलामां लटकावी राखे छे, केटलाएक सिंहासन उपर, केटलाएक सुंदर बाजोठ उपर शास्त्रोने सुंदर सुंदर रुमालोमां लपेटी राखे छे, अने शास्त्रोनी पूजा, भक्ति, बहुमान, नमस्कार प्रमुख करे छे. जेम शास्त्रनां वचनो विनय, बहुमानपूर्वक श्रवण करवाथी तेथी थता अनेक लाभनो भक्तजनो अनुभव करे छे, तेवीजरीतें जिन प्रतिमानी विनय, बहुमानपू-

थैक भक्ति करवाथी तेनी शांतमुद्रा सेवकजनने परमशांतरस प्रमुख अनेक लाभ उत्पन्न करावे छे

प्रश्न —जेम पत्थरनी गायथी दूधनी गरज सरती नथी, तेम प्रतिमाथी पण कांइ गरज सरती नथी, तो हवे प्रतिमाने शावास्ते मानवी जोइयें ?

उत्तर —जेम कोइ पुरुष मुखथी गाय, गाय, एम सत्यरूपें उच्चारकरतां छतां पण तेनुं उदर दूधथी भरातुं नथी, तेम परमेश्वरनु नाम लेवाथी, तेमज तेनो जाप करवाथी पण कांइ लाभ थतो नथी ते कारणथी परमेश्वरनुं नाम पण न लेवु जोइयें ?

प्रश्न —परमेश्वरनु नाम लेवाथी तो अमारु अंत करण शुद्ध थाय छे

उत्तर —तेवीजरीतें परमेश्वरनी प्रतिमा देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरूपनो बोध थाय छे तेथी अंत करणनी शुद्धि अहिंआ पण सरखीज छे

प्रश्न —परमेश्वरनु नाम लेवाथी पुण्य छे तो पछी प्रतिमा शावास्ते पूजवी ?

उत्तर —जेवी स्थापना (प्रतिमा) देखवाथी आत्मानी शुद्ध परिणति थाय छे, तेवी नामथी थती नथी कारण के जेम कोइ सुदर यौवनवंती स्त्रीनुं नाम लेवाथी राग तो उत्पन्न थाय छे, परंतु जो ते सुदर यौवनवती स्त्रीनी मूर्त्ति प्रगट सर्वाकारवाली सन्मुख देखीए तो अधिकतर विषयराग उत्पन्न थाय छे, तेटलाज कारणसर श्री दशवैकालिक सूत्रमा लखेलु छे के " चित्तभित्ती न निज्झाए नारी वासुअलंकिय " अर्थात् स्त्रीना चित्रामणवाली भींत देखवाथी पण विकार उत्पन्न थाय छे आ वात तो प्रगट (प्रसिद्ध) छे के रागीनी मूर्त्ति देखवाथी राग उत्पन्न थाय छे, तथा कोकशास्त्रोक्त स्त्री, पुरुषनां विषय सेवनना चोराशी आसन देखवाथी तत्काल विकार उत्पन्न थाय छे, तेवीज रीतें निर्विकार स्थापना रूप शातमुद्रा, श्री वीतराग परमात्मानी देखवाथी जेवो निर्विकार शांतिभाव उत्पन्न थाय छे, तेवो नाम लेवाथी थतो नथी

प्रश्न —जेम कोइ स्त्रीना भर्त्तारनु नाम देवदत्त छे, ते देवदत्त मरी गयो, बाद ते स्त्रीए पोताना पति देवदत्तनी मूर्त्ति बनावी, ते मूर्त्तिथी जेम ते स्त्रीनु सुहाग, संतानोत्पत्ति तथा कामइच्छा पूर्ण थतां नथी, ते वीज रीतें भगवाननी मूर्त्तिथी पण कांइ लाभ थतो नथी

उत्तर —देवदत्तनी स्त्री देवदत्तना मरण पछी आसन बिछावीने देवद

त्तना नामनी माला फेरवे, तेथी जेम ते स्त्रीनुं सुहाग रहेतुं नथी, तथा पतिनुं नाम लेवाथी जेम संतानोत्पत्ति थती नथी, तथा कामेछा तृप्त थती नथी, तेवीज रीतें जो कहेवामां आवशे तो तो ज्ञगवाननुं नाम लेवाथी पण कांइ सिद्धि थशे नहि. आ दृष्टांतथी तो ज्ञगवाननुं नाम पण न लेवुं जोइए ?

प्रश्नः—प्रतिमा तो कारीगर बनावे छे, ते कारीगरने पण पूजवा जोइये ?

उत्तरः—वेदादि शास्त्र लिखारी (लहीआ) लखे छे, तेउने पण पूजवा जोइए. तेमज साधुनां मात पिताने साधुथी अधिक पूजवां जोइए.

प्रश्नः—आ कालमां कोइपण बुद्धिमान् स्थापना मानता नथी.

उत्तरः—बुद्धिमान् तो सर्व माने छे, परंतु मूर्ख मानता नथी.

प्रश्नः—कया बुद्धिमान् स्थापना माने छे? बतावो तेउनां नाम ?

उत्तरः—प्रथम तो सांसारिक विद्यावाला सर्व बुद्धिमान्, ज्ञूगोल, खगोल, द्वीप, अर्थात् युरोपखंड आदिमां इग्लंड प्रमुखनां चित्र सर्व, स्थापनारूप माने छे, तेमज बनावे छे; तथा ककार आदि जे अक्षरो छे ते सर्व पुरुषना (ईश्वरना) शब्दनी स्थापना करे छे. वली जैनिउना मतमां एकसो आठ मणका, मालामां राखवामां आवे छे, परंतु न्यूनाधिक राखवामां आवता नथी तेनो हेतु ए छे के जैन, बारगुण अरिहंत पदना माने छे, आठगुण सिद्ध पदना माने छे, छत्रीश गुण आचार्यपना माने छे, पचीश गुण उपाध्याय पदना माने छे, अने सत्तावीश गुण साधु पदना माने छे, सर्व मली एकसो आठ गुण थाय छे; ते वास्ते जैनीउना मतमां मालामां जे मणका छे, ते एकेक मणका एकेक गुणनी स्थापना छे, तेथी आ माला पण स्थापना छे; तेवीज रीतें बीजा मतोमां पण माला, तसवीर छे, ते सर्व कोइने कोइ वस्तुनी स्थापना छे, नहि तो एकसो आठ अथवा एकसो एकनो नियम नहि जोइए. वली पादरी लोकोपण पोताना छपेला पुस्तकोमां इसामसीह (जीससक्राइस्ट) नी मूर्त्ति तेज वखतनी छपावे छे, के जे वखते मसीहने शूली उपर देवाने लइ जता हता. ते मूर्त्तिने देखवाथी इसामसीहनी सर्व अवस्था ख्यालमां आवी जाय छे. बस ! स्थापनानुं प्रयोजन तो एज छे के ते देखवाथी असल वस्तुनुं स्वरूप याद आवी जाय छे. आश्चर्य तो एज छे

के वर्त्तमानमां केटलाएक तुच्छबुद्धिवाला पोताना बनावेला पुस्तकमां यज्ञशाला तथा यज्ञोपकरणनी स्थापना पोताना हाथथी करीने पोताना शिष्योने जणावे छे के यज्ञोपकरण आ आकृतिनां जोइए, छतां फरी कहे छे के अमे स्थापनाने मानता नथी हवे विचार करवो जोइए के ते ओना करतां अधिक मंदमति कोइ जगत्मां छे? पोते स्थापना करे छे, छतांपि फरी कहे छे के अमे स्थापनाने मानता नथी ते कारणथी जे पुरुष पोताना शास्त्रना कर्त्ताने देहधारी मानशे, ते अवश्य तेनी मूर्त्तिने पण मानशे, अने जेओ पोताना शास्त्रना उपदेष्टाने देहरहित माने छे, तेओ अल्पबुद्धिमंत होवाथी प्रमाण अनभिज्ञ छे, कारण के जेने देह नथी, ते शास्त्रना उपदेष्टा कदापि होइ शकता नथी, कारण के देह रहित होवुं, अने शास्त्रना उपदेश देवावाला थवु, ए वातमां कोइ पण प्रमाण नथी वली निराकार, सर्वव्यापी परमेश्वरनु ध्यानपण कोइ करी शकतु नथी, दृष्टांत, जेम आकाशनुं ध्यान ते कारणथी अढार दूषणोथी रहित जे परमेश्वर छे, तेनी मूर्त्ति अवश्य मानवी तथा पूजवी जोइए, एवा देव तो अर्हतज छे, ते कारणथी अर्हतनी प्रतिमा मानवी जोइए, परंतु कोइ दुर्बुद्धिमान्ना कुहेतुओथी तजवी न जोइए इति स्थापना

हवे त्रीजा द्रव्यनिक्षेपनुं स्वरूप एवुं छे के, जे जीवें तीर्थंकर नाम कर्मनो निकाचित बंध करेलो छे, ते जीवमा भावि गुणोनो आरोप, अर्थात् भविष्यमा तीर्थंकर भगवान् आ प्रमाणे थशे, एवो वर्त्तमानमां तेनामां आरोप करीने वदन, पूजन करवाथी अनेक भव्यजीवोए मोक्ष प्राप्त करेल छे

चोथो भावनिक्षेप वर्त्तमानकालमां सीमंधर प्रमुख तीर्थंकर केवल ज्ञानसंयुक्त, समवसरणमां विराजमान, भव्यजीवोना प्रतिबोधक, चतुर्विधसंघना स्थापक, एवा भाव अर्हत, जेना चरणकमलनी सेवा करीने अनेक जीव मोक्ष प्राप्त करेछे, आ भावनिक्षेप छे आ चारे निक्षेपें संयुक्त, एवा जे अरिहंत, देवाधिदेव, महागोप, महामाहण, महानिर्यामक, महासार्थवाह, महावैद्य, महापरोपकारी, करुणासमुद्र, इत्यादि अनेक उपमा लायक, भव्यजीवोनो अज्ञान अंधकार दूर करवाने सूर्य समान, जेमनां वचन प्रमाणथी अविरोधि, एवा मुनिमनमोहन, योगी

श्वर, चिदानंदघनरूप, अरिहंतने हुं देव अर्थात् परमेश्वर मानुंबुं, तेनी सेवा करुं, तेनी आज्ञा शिरपर धारण करुं, एम जे मानवुं ते प्रथम व्यवहार शुद्ध देवतत्व छे.

बीजा निश्चय शुद्ध देवतत्त्वनुं स्वरूप कहीयें छीयें. जे शुद्ध आत्मस्वरूपनो अनुभव करवो, ते शुद्धआत्मस्वरूपज निश्चय देवतत्त्व छे. केवुं छे ते आत्मस्वरूप ? पांचवर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, शब्द, क्रिया, तेउंथी रहित, तथा योगथी रहित, अतींद्रिय, अविनाशी, अनुपाधि, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्त्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुणोनुं भाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवो मारो आत्मा छे, तेज निश्चय देव छे.

हवे बीजा गुरुतत्त्वनुं स्वरूप कहीयें छीयें. तेना पण बे भेद छे. १ शुद्ध व्यवहार गुरु, २ शुद्धनिश्चय गुरु. तेमां शुद्ध व्यवहारगुरुनुं स्वरूप तो गुरुतत्व निरूपण परिछेदमां लखी आव्या छीए, त्यांथी जाणी लेवुं. एवा साधुने गुरु करी माने. एवा गुरुनी आज्ञा मुजब प्रवर्त्ते. एवा मुनिने पात्र बुद्धिथी शुद्ध अन्नादि आपे. इति व्यवहारशुद्धगुरुतत्त्वस्वरूप.

निश्चय गुरुतत्त्व तो शुद्धात्मविज्ञानपूर्वक छे. हेयोपादेय उपयोगयुक्त जे परिहार प्रवृत्तिज्ञान ते निश्चय गुरुतत्त्व छे.

त्रीजा धर्मतत्वनुं स्वरूप कहीयें छीयें. धर्मतत्त्वना पण बे भेद छे. १ व्यवहारधर्मतत्त्व, निश्चयधर्मतत्त्व. तेमां व्यवहाररूपधर्म दया मुख्य छे. अने सत्यादि व्रत सर्व दयानी रक्षावास्ते छे; ते कारणथी दयानुं स्वरूप लखीए छीए. दयाना आठ भेद छे. १ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूप दया, ६ अनुबंध दया, ७ व्यवहार दया, ८ निश्चय दया.

१ द्रव्यदयानुं स्वरूप एवुं छे के सर्वकाम यत्नापूर्वक करवां. जैनमत वालाउनो आ कुलधर्म छे. सर्व जैनसमुदाय प्राणी गलीने पीए छे, अन्न-शोधीने खाय छे, जे कोइ जैनी छल कपट करे छे, असत्य बोले छे, विश्वासघात करे छे, ते पापी जीव छे, अने ते जैनमतने कलंकित करे-छे. ते सर्वदोष. ते जीवनाज छे, जैनमतनो तेमां कांइपण दोष नथी. जैनमत तो एवो पवित्र छे के जेमां कांइपण अनुचित उपदेश नथी. आ

वात सर्वसुज्ञ जनोने विदित छे ते कारणथी जे जे काम करवा ते सर्व यत्नापूर्वक जीवरक्षाथी करवा ते द्रव्यदया समजवी

२ बीजी भावदया बीजा जीवोने गुणप्राप्ति वास्ते, तथा दुर्गतिमां पडता जीवोना रक्षणवास्ते, अंत करणमा अनुकंपा बुद्धिसंयुक्त तेउने हितोपदेश करवो ते भावदया छे

३ त्रीजी स्वदया पोताना आत्मानी अनादि कालथी मिथ्यात्व अशुद्ध उपयोग, अशुद्धअज्ञानपूर्वक अशुद्धप्रवृत्ति, तथा कषायादि भाव शस्त्रोथी समये समये, आत्माना ज्ञानादिगुणोरूप भावप्राणोना घातरूप, हिंसा थया करे छे, एवी जिनेश्वर भगवान्नी वाणी श्रवण करवाथी पूर्वोक्त भावशस्त्रोनो त्याग करीने, स्वसत्तामा प्रवृत्ति करीने, शुद्धोपयोग धारण करीने, विषय, कषायथी दूर रहीने, अने शुभ अशुभ कर्मफलना उदयमा अव्यापक रहीने अर्थात् सुखदुःखमा हर्षविषाद न करता, प्रतिक्षण अशुभ कर्मने निदान दूर करवानी जे चिंता तेनु नाम स्वदया छे आ स्वदयानी रुचिवाला जीव पोतानी परिणति शुद्ध करवा वास्ते जिनपूजा, तीर्थयात्रा, रथयात्रा प्रमुख शुभप्रवृत्ति करे, बहुमान पूर्वक जिनगुणामृतनु पान करे, असत् प्रवृत्तिथी चित्तने हठावी तत्त्वावलंबी करे, पुद्गलावलंबीपणु हठावे, आ शुभ आश्रवमा यद्यपि देखवामां केटलाएक जीवोनी हिंसा मालम पडे छे, तोपण आत्मानी अशुद्ध परिणति दूर थवाथी आत्मा गुणग्राही थाय छे, ज्यारे गुणग्राही थाय छे, त्यारे ज्ञानवान् थाय छे, ते कारणथी सर्वसाधक जीवोने आ स्वदया परम साधन छे आ स्वदया वास्ते साधुपण नवकल्पी विहार करे छे, उपदेश आपे छे, चर्चा करेछे, तथा पूजन, प्रतिलेखन करे छे यद्यपि नदी नाला उतरता तथा अन्य कार्यपरत्वें योगोनी चपलताथी आश्रव थाय छे, तोपण चेतनस्वरूप अनुयायी रहेछे, जिनाज्ञा पासे छे, कषायस्थानमद करे छे, स्वछदता दूर करे छे, अने धर्म प्रवृत्तिनी वृद्धि करे छे आ स्वदया वास्ते साधुपण शुभाश्रव पोताना कल्पप्रमाणे आचरण करे छे, परतु आ आश्रय साधक दशामा बाधक नथी

४ चोथी परदया, अर्थात् छ कायना जीवोनी रक्षा करवी ज्यां स्वदया छे त्या परदया निश्चयपूर्वक छे, अने ज्या परदया छे, त्यां

स्वदयानी भजना छे, अर्थात् होय पण खरी अने न होय पण खरी.

५ पांचमी स्वरूपदया. इह लोक, परलोकना विषयसुखवास्ते तथा लोकोनी देखादेखीथी जे जीवनी रक्षा करवी ते स्वरूपदया छे. आ दयाथी विषयसुख तो प्राप्त थायछे, परंतु देडकाना चूर्णनी जेम संसारनी वृद्धि थाय छे. स्वरूपदया देखवामां दया छे, परंतु भावें हिंसाज छे.

६ छठी अनुबंधदया. श्रावक मोटा आडंबरथी मुनिने वांदवा वास्ते जाय, तथा उपकार बुद्धिथी बीजा जीवोने सन्मार्गमां लाववावास्ते ताडना तर्जना करे, कोइने शिक्षा पण आपे. ए प्रमाणे करतां, देखवामां तो हिंसा छे, परंतु अंते स्वपरने लाभनुं कारण होवाथी दया छे. वली साधु, आचार्य पोतानां शिष्य शिष्याउने तेउनी भूल याद करावे छे, योग्य प्रसंगें शिक्षा करे छे, कोइने अनुचित करतां निवारे छे, कोइने एकवार कहे छे, कोइने वारंवार कहे छे, तथा शिक्षा करे छे, कोइ उपर क्रोधपण करे छे, शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिथी दंडपण आपे छे, इत्यादि कामोमां यद्यपि हिंसा देखाय छे, तो पण फल दयानां छे.

७ सातमी व्यवहारदया. जे विधिमार्ग अनुयायी जीवदया पाले, सर्व क्रियाकलाप उपयोगपूर्वक करे ते व्यवहारदया छे.

८ आठमी निश्चयदया. शुद्ध साध्य उपयोगमां एकत्वभाव, अभेद उपयोग, साध्यभावमां एकताज्ञान, ते निश्चयदया. आ दयाथी उपरना गुणस्थानकोमां जीव आरोह करे छे, तेथी आ दया उत्कृष्ट छे; इत्यादि अनेक प्रकारथी दयाना स्वरूपविज्ञानपूर्वक, सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, वृत्ति पंचांगी सम्मत, प्रत्यक्षादि प्रमाणपूर्वक, नैगमादि नय, नामादि निक्षेप, सप्तभंगी, ज्ञाननय, क्रियानय, निश्चय व्यवहार नय, तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय, इत्यादि उभय भावमां यथावसरें अर्पित, अनर्पित नयनिपुणताथी, मुख्य गौण भावें उभयनयसम्मत, शुद्धस्याद्वादशैलीविज्ञानपूर्वक, श्रीसिद्धांतोक्त दान, शील, तप, भावनारूप शुभप्रवृत्ति तेनुं नाम शुद्धव्यवहार धर्म कहियें.

बीजो निश्चय धर्म. ते पोताना आत्मस्वरूपने जाणवुं तथा वस्तुना स्वभावने जाणवो, जेम के मारो आत्मा शुद्ध चैतन्य रूप, असंख्यात प्रदेशी, अमूर्त्त, स्वदेहमात्रव्यापी, सर्व पुद्गलोथी भिन्न, अखंड, अलिप्त,

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुख, वीर्य, अव्याबाध, सत्‌चिदानंदादि अनंत गुणमय, अविनाशी, अनुपाधि, अविकारी छे तेनाथी विलक्षण जे परपुद्गलादि ते मारा नथी से पुद्गलना पांच विकार छे, १ शब्द, २ रूप, ३ रस, ४ गंध, ५ स्पर्श आ पांचना उत्तर भेद अनेक छे आलोकाकाशमा उद्योत, अंधकार, शब्द, सर्वरूपी वस्तुनी छाया, रत्ननी कान्ति, शीत, धूप, नानाप्रकारना रंग, रूप, संस्थान, नानाप्रकारना सुगंध, दुगंध, नानाप्रकारना रस, सर्वसंसारी जीवोना देह, भाषा, मनना विकल्प, दशप्राण, छ पर्याप्ति, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, खुशी, उदासि, कदाग्रह, हठ, लडाइ, क्रोधादि चार कषाय, शाता, अशाता, उच, नीच, निद्रा, विकथा, सर्वपुण्य प्रकृति, सर्वपापप्रकृति, रीक, मोज, खीज, खेद, छ लेश्या, लाभालाभ, यश, अपयश, मूर्खता, अपप्रकारना वेद, कामचेष्टा, गति, जाति, कुल, इत्यादि आठे कर्मना विपाक फल आ सर्व यावतो जीवने अनुभवसिद्ध छे, अने सूक्ष्मपुद्गल इन्द्रिय अगोचर छे, ते परमाणु आदि अनेक तरेहना छे पूर्वोक्त पुद्गलना संयोगथी जीव चारे गतिमां भटके छे आ पुद्गल मारी जाति नथी, आ पुद्गलनो मारी साथे कांइ वास्तव संबंध नथी, आ पुद्गल सर्व त्यागवा योग्य छे, जे आ पुद्गलनो संसर्ग छे तेज ससार छे, आ पुद्गलनी संगतथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि गुण बगडी जाय छे, जे आ पुद्गल द्रव्यनी रचना छे ते मारा आत्मानो स्वभाव नथी, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, आ चारे द्रव्य ज्ञेयरूप छे, परंतु हु ते सर्वथी अन्य हुं, तेओ मारा नहि, हु तेओनो नहि, हुं तेओनो साथी पण नहि, हु मारा स्वरूपनोज स्वामी हु, मारो स्वभाव सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्ररूप छे, वर्णरहित, गंधरहित, रसरहित, स्पर्शरहित, चैतन्यगुण, अनत, अव्याबाध, अनंत दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्यादि अनतगुणस्वरूप छे, तेओनी श्रद्धा, भासन, रमणतारूप चिदानदघन मारो स्वभाव छे पणो जे मारो पूर्णानद स्वभाव, ते प्रगट करवावास्ते सर्व शुद्ध व्यवहारनय निमित्तमात्र छे, परंतु मुख्य तो मारा स्वभावमां जे रमणता करवी तेज शुद्ध साधन छे, तेज धर्म छे इति निश्चयधर्मस्वरूप

आ त्रणे तत्त्वनी जे निश्चल परिणतिरूप श्रद्धा ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. जे जीवने ए प्रमाणे वोध न होय ते जीव जो कदी पक्षपात रहित, एम मनमां धारे के "तं सव्वं निस्संकं, जं जीणेहिं पवेइयं इत्यादि" जे जिनेश्वर ज्ञगवानें अर्थ कह्या छे ते सर्व निःशंकित सत्य छे, तो तेनी एवी तत्त्वार्थश्रद्धा पण सम्यग्दर्शन कहेवाय छे. तेनाथी विपरीत ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. आ मिथ्यात्वनुं स्वरूप नवतत्वस्वरूपमां लखी आव्या छीए त्यांथी जाणवुं. मिथ्यात्वनो त्याग तेज सम्यक्त्व कहेवाय छे. इति व्यवहारसम्यक्त्वस्वरूप.

हवे निश्चय सम्यक्त्वनुं स्वरूप लखीए छीए. पूर्वें निश्चय देव, गुरु अने धर्मनुं जे स्वरूप कह्युं छे, तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. जे जीव चार अनंतानुबंधी कषाय, सम्यक्त्व मोह, मिश्रमोह, मिथ्यात्वमोह, आ सात प्रकृतिनो उपशम, क्षयोपशम, तथा क्षय करे तेने निश्चय सम्यक्त्व थाय छे. निश्चय सम्यक्त्व परोक्षज्ञाननो विषय नथी, केवली जाणी शके छे, के आ जीवने निश्चय सम्यक्त्व छे. आ सम्यक्त्व प्रगट थतां जीवने नरक, तिर्यच, आ वंने गतिना आयुनो वंध थतो नथी.

हवे सम्यक्त्वनी करणी लखीये छीयें. सम्यक्त्वी जीव नित्य योगवाइ मलतां, तथा शरीरमां व्याधिनो अज्ञाव छते, जिनप्रतिमानां दर्शन कर्या पछी ज्ञोजन करे, जो जिनप्रतिमानो योग न मले तो पूर्व दिशि सन्मुख वेसी वर्त्तमान तीर्थकरोनुं चैत्यवंदन करे. जो रोगादि विघ्नथी दर्शन न थाय तो जेउने आगार छे, तेउना नियमनो ज्ञंग थतो नथी. जिनेश्वर ज्ञगवान्ना मंदिरमां दश मोटी आशातना अवश्य वर्जे. तेउनां नाम. १ तंबोल, फल प्रमुख खावानी वस्तु ज्ञगवान्ना मंदिरमां खाय नहि, २ पाणी, डुध, छाश, अर्क प्रमुख पीये नहि, ३ ज्ञोजन करे नहि, ४ मंदिरनी अंदर उपानह प्रमुख लावे नहि, ५ स्त्री आदि संग मैथुन सेवे नहि, ६ शयन करे नहि, ७ थुंके नहि, ८ लघुशंका करे नहि, ९ जंगल (दिशा) जाय नहि, १० मंदिरमां जुगार, चोपट, चित्तरंज प्रमुख खेले नहि. आ दश आशातना टाले, तथा उत्कृष्टी चोराशी आशातना वर्जे. वली एक मासमां आटला फुलहार चढावुं, एकमासमां आटलुं घी आपुं, एकवर्षमां आ-

टला अगलूहणां आपु, वर्षमा आटलु केशर, चदन, बरास, कपुरप्रमुख जगवान्नी पूजामा वापरु, धूप, अगरवत्ति उखेवुं, अक्षत, नैवेद्य, फल पूजा आ प्रमाणे करु, धनने अनुसारें वर्षमा आटली अष्टप्रकारी, सत्तर प्रकारी पूजा रचावु, वर्षमां आटला रुपैया साधारणद्रव्यमा खरचु, वर्षमां आटलु द्रव्य पूजावास्ते खरचु, दिनदिन प्रति एक नवकारवाली अर्थात् माला पंचपरमेष्ठि मन्त्रनी, मोक्षनिमित्त जपु, दिनप्रति रोगना अजाव उते नमस्कार सहित वे घडी दिन चढे त्यासुधी चार आहारनुं प्रत्याख्यान करुं, रात्रिमा डुविहार प्रत्याख्यान करुं, रोगाविकारणे न थइ शके तो आगार, वर्षप्रति आटला साधर्मी बधुउने जमाडु, ए प्रमाणे सम्यक्त्व पालु, तथा सम्यक्त्वना पांच अतिचार उे ते टालु ते पाच अतिचारनुं स्वरूप कहिये छियें

१ प्रथम शंका अतिचार जिनवचनमां शंका न करवी, कारण के जिनवचन बहुज गजीर उे, ते सर्वना यथार्थ अर्थ समजावनारा आ काल मां कोइ गुरु नथी, वली शास्त्रो जे उे ते अनंतनयात्मक उे तेउमा गणतरी तथा संज्ञा विचित्र तरेहनी उे कोइ स्थलें कोडीशब्द क्रोडनो वाचक छे, तो कोई स्थलें रूढी वस्तुवाचक उे, कारण के श्रीजद्रगणि क्षमाश्रमण सर्वसंघना सम्मत आचार्य, संघयणनामा पुस्तकमा तथा विशेषणवती ग्रथमां लखेछे के, कोइक आचार्य कोडी शब्दने क्रोडनो वाचक मानता नथी, परंतु संज्ञांतर मानेछे, वर्तमान कालमां वीशने पण कोडी कहेछे, तथा सोरठ देशमां पांच आनाने पण कोडी कहेछे जेवो आ कोडी शब्दमां मतांतर उे, तेवी रीतें शत, सहस्र शब्दोपण कोइ संज्ञाना वाचक होय तो काइ दोष नथी वली शत्रुजय तीर्थमां ज्यां मुनिउ मोक्ष गयेला उे, त्या पण पांच कोडी आदिशब्दोनी कोइ संज्ञा उे, तेवीजरीतें उप्पन कुलकोडी जादव कहेवायछे, त्यांपण याववोना उप्पन कुलोनी कोडी कोइ संज्ञाविशेष उे, एजप्रमाणे शास्त्रोमां सर्वस्थलें चक्रवर्त्तिनी सेना, तथा कोणिक चेटक राजाउनी सेनामां जे कोडी तथा शत सहस्र शब्दो उे, ते संज्ञाविशेषवाचक संजव थायछे, ते कारणथी सर्व शब्दोना सर्वस्थलें एकसरखा अर्थ मानवा युक्त नथी आ कथनमां पूज्यश्री जिनजद्रगणिक्षमाश्रमण पुरा साक्षी आपनारछे

वली केटलाएक ज्व्यजीवोए सामान्य प्रकारें एम पण सांज्लेलुं छे के पांचमा आरामां उत्कृष्ट एकसो वीश वर्षनुं मनुष्यनुं आयु छे; ज्यारे ते जीवो कोइ अंग्रेज प्रमुखना मुखथी एम सांज्ले छे के दोढसो, बसो तथा अढीसो वर्षनी आयुवाला मनुष्य ज्मोट्टानादि देशमां विद्यमान छे, त्यारे दृढश्रद्धावाला, ज्मोला जीव तो तेउनुं कहेवुं सत्य मानता नथी,कदापि मोटी आयुवालो मनुष्य तेउनी सन्मुख लावी उज्ो राखिए, तो पण तेउ तो ते वात जूठीज मानशे, कारण के तेउ एम माने छे के अमारा जिनेंद्र देवनुं कथन कदापि असत्य नथी, परंतु जेउने जैनमतनी दृढश्रद्धा नथी, अने सांसारिक विद्यामां कांइक निपुण छे, पछी तेउ कदापि जैनमतवाला होय तो पण, तेउना मनमां अवश्य शंका पडी जाय छे, कारण के तेउए पण जैनमतनां सर्व शास्त्र श्रवण कर्यां नथी. सारांश ए छे के शास्त्रमां जे कथन छे, ते सापेक्षक छे, बाहुल्यताथी कहेल छे, ते कथंचित् अन्यथा होय तो तेमां आश्चर्य मानवुं नहि; कारण के बहु शास्त्रोमां लखेलुं छे के ज्योतिष चक्र अर्थात् तारामंडलना सर्व तारा मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा दीए छे. आ वात सर्व जैनी माने छे, परंतु ध्रुवना तारा कोइ स्थले फरता नथी,अने ध्रुवनी पासेना ताराउ जे सप्तऋषि रुढिमां प्रसिद्ध छे, जेउने बालको मंजी, पहेरेदार, कुत्ता, तेमज चोर कहे छे, तथा बीजा केटलाएक तारा ध्रुवनी नजीक छे, ते सर्व ध्रुवनी प्रदक्षिणा फरे छे, परंतु मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा देता नथी; आ बिना अमे जातें अनुज्वेली छे, अने बीजाउने बतावी शकीए छीए, तो पछी प्रथम जे शास्त्रकारें कहेलुं छे के सर्वतारा मेरुनी प्रदक्षिणा दीए छे, आ कथन जैनी केम सत्य माने छे?

समाधान एम छे के, प्रथमनुं जे कथन छे, ते बाहुल्यतानी अपेक्षाए छे, कारण के बहु तारामंडल एवुं छे के ते मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा फरेछे, अने केटलुंएक एवुं छे के जेउ ध्रुवनीज आस पास चक्र दीए छे. आ समाधान पूज्यश्री जिनज्ञद्रगणि क्षमाश्रमणजीए संघयण तथा विशेषणवती ग्रंथमां लखेलुं छे, एवीरीतें के मेरु पर्वतनी चारे बाजुए चार ध्रुवछे, अने ते चारे ध्रुवोनी पासे एवा एवा ताराउ छे जे निरंतर ते चारे ध्रुवोनीज आसपास चक्र दीए छे. तेथी एम सिद्ध थयुं के शास्त्रनुं

जे कथन छे ते बाहुल्यताए तेमज कोइ अपेक्षाथी संयुक्त छे, अने कोइस्थले स्थूल व्यवहार नयने मते कथन करेलु छे, परंतु सूक्ष्म ते मज अधिकन्यूनतानी विवक्षा करेली नथी तेथीजरीतें सो वर्षथी अधिक आयु जे पचम कालमां कहेलु छे, ते बाहुल्यतानी अपेक्षा तथा आर्यखंड अर्थात् मध्यखंडनी अपेक्षा छे, जो कोइ मनुष्यनु दोढसो, बसो, तेमज अढीसो वर्षनुं आयुष्य थइ जाय तो मनमां जिनवचन माटे शका न करवी, जेमके कोण जाणे जिनवचन सत्य हशे के असत्य हशे ? हेतु ए छे के शास्त्रना आशय अति गभीर छे, अने वर्तमानमां यथार्थ बतावनारा गीतार्थ गुरु कोइ नथी

आयुनी बाबतमां समाधान एम छे के भगवान् श्री महावीर स्वामिना निर्वाण पछी (५७५) वर्ष लगभग जैनमतना आचार्य श्री आर्यरक्षितसूरि नवपूर्वना पाठक थया तेमनी पासे शक्र इन्द्र निगोदना जीवनु स्वरूप श्रवण करवा आव्या शक्र इन्द्रे प्रथम वृद्ध ब्राह्मणनु रूप धारण करीने श्रीआर्यरक्षित सूरिजीने पुछ्युं, हे भगवन् ! हु वृद्ध थयो छुं, जो मारुं आयुष्य थोडु होय तो मने कृपा करी बतावो, जेथी हु अनशन करु, ते सांभली सूरिजीए दशमा पूर्वना यवका अध्ययनमा उपयोग दइने जोयु तो तेनु आयुष्य सो वर्षथी अधिक मालम पड्युं, फरी उपयोग देतां बसो वर्षथी अधिक जाणवामां आव्युं, फरी उपयोग देतां त्रणसो वर्षथी अधिक जणायु, ते वखते सूरिजीए विचार कर्यो के आ भारत वर्षनो मनुष्य नथी आ कथानक आवश्यक सूत्रनी सामायक अध्ययननी उपोद्घात निर्युक्तिमां छे आ कथानकथी एम साबीत थाय छे के भारतवर्षना मनुष्यनु आयुष्य त्रणसो वर्ष सुधीनुं होय तो आश्चर्य नहि, कारण के श्री आर्यरक्षित सूरिजीए वृद्ध ब्राह्मणनु आयु त्रणसो वर्षथी अधिक देख्यु त्यारे कह्यु के आ भारत वर्षनो मनुष्य नथी आ कथनथी कथंचित् त्रणसो वर्षसुधीनु आयुष्य भारतवर्षमां मनुष्यनु होय तो शु आश्चर्य छे ?

केटलाएक मनुष्यना मनमां एवी पण शंका छे के जैनमतवाला भरतखंड क्यां सुधी माने छे ? आ कालमा जे कांइ लोकोना देखवामा अथवा सांभलवामा आवे छे के अमेरीकादि देश तेमज रूशीआ तथा

चीनादि देश ज्ञारतवर्षमां गणाय के नहि? समाधान मात्र एटलुंज छे के अमेरिका तथा विलायतादि सर्वमुलकोनी वचमां जे समुद्र पडेला छे ते ऋषज्ञदेव तेमज ज्ञरत चक्रवर्त्तिना समयमां हता नहि, परंतु जगती बहार जे महासमुद्र छे तेज हतो. ते कारणथी अर्थात् समुद्र अंदर आवी जवाथी असल ज्ञरतक्षेत्रनुं स्वरूप बगडी गयुं, केटलोएक ज्ञाग समुद्र थइगयो, अने केटलाएक द्वीपो बनी गया.

आ बाबतमां जैनमतना शत्रुंजय माहात्म्यनामा ग्रंथमां लख्युं छे के सगरनामा बीजा चक्रवर्त्ती ज्ञारतवर्षमां आ समुद्रने जंबूद्वीपनी दक्षिणदिशाना विजयंतनामा दरवाजाना रस्तेथी लावेल छे, तेम लाववाथी बर्बरादि हजारो देश तो जलमां डुबी समुद्रनी ज्ञूमि बनी गया, जे जे उंचा देशो हता ते विलायतादि द्वीपो बनी गया. असल देशोनां नाम नष्ट थवाथी बहु देशोनां नाम कल्पित राखवामां आव्यां, अने ज्ञरत खंडनुं स्वरूप तदन फरीगयुं, केटलाएक देशोनी चारे बाजुए समुद्रफरी गयो, केटलाएक देशोना उत्तर ज्ञागमां बरफ पडवाथी, तेमज समय बदलाइ जवाथी, सर्वथा पाणी जामी गयुं, तेमज समुद्रसाथे मलीगयुं, तेथी चारे बाजुए समुद्रज देखाय छे. गमनागमन पण तेज कारणथी बंध थइगयां. शास्त्रकारें तो प्रथम आरामां तथा ऋषज्ञदेवजी अने ज्ञरत चक्रवर्त्तिना समयमां ज्ञारतवर्षनुं जे स्वरूप हतुं तेज प्रमाणे अद्यापि पर्यंत बतावेलुं जणाय छे, परंतु ज्ञारतवर्षनुं स्वरूप बगडीने कांइनुं कांइ स्वरूप केवीरीतें थइगयुं तेनुं विस्तारथी वर्णन यथार्थ रीतें करेलुं देखवामां आवतुं नथी. कदापि कोइए लखेलुं हशे तो पण जैनमतनी उपर एवी एवी मोटी विपत्तिउ पडेली छे के तेथी लाखो तो शुं बलके क्रोडो ग्रंथ नाश पामी गया छे, ते कारणथी आ स्थलें सर्ववृत्तांत यथार्थरीतें बतावी शकतो नथी; परंतु जैनमतना जेटला ग्रंथ मारा वांचवामां आव्या छे, तेउमांथी पण मने जे ठीक लाग्युं छे ते आ ग्रंथमां में लखेलुं छे.

सर्वक्षेत्र ते प्रमाणे अदल बदल थइ गयां; गंगा, सिंधु असल स्थान वहेती वहेती रही गइ. आगलनो प्रवाह समुद्रें रोकी लीधो, अने पाछलथी पाणी आववुं बंध थइ गयुं. बाद जे पर्वतथी अधिक नदीनी प्र-

वृत्ति थइ ते नदी ते पर्वतथी निकलती लोकोए मानी लीधी गगा अने सिंधुमा क्षुल्लक हेमवत पर्वतथी जल आववु बध थइ गयु, नाममात्र सिंधु रही गइ नगरीओमा वनिता नगरीनी कल्पनापर अयोध्या मानी. अने काबुलमां तक्षिला अर्थात् बाहुबलनी नगरीनी कल्पना करी, जेनु नाम गिजनी प्रसिद्ध छे, ते तक्षिला पण आज रही नथी कारण ए छे के जैनिओनी श्रद्धा अनुसारें प्रथम आराने तेमज ऋषभदेव अने भरत राजाना समयने व्यतीत थयां असंख्य वर्ष थइ गयां छे, तो ते दरमी आन देश, पर्वत, नदी, नगरादि उलट पालट थइ जाय तेमां शु आश्चर्य छे।

वली समुद्रनु देशो उपर फरवु तो तौरेत ग्रंथथी पण ठीक ठीक सिद्ध थाय छे पुराणादि ग्रंथोमा पण लखेलु छे के कोइ एवो समय हतो, जे वखतें समुद्रमां पाणी नहोतुं, पाछलथी आवेलुं छे ते कारणथी शत्रुंजय माहात्म्यमा जे लखेलु छे के भरतक्षेत्रमां सगर चक्रवर्ती समुद्रनु पाणी लाव्या छे, ते कहेवुं वास्तविक लागे छे

श्रीतपगछना आचार्य विजयसेन सूरिपण पोताना प्रश्नोत्तरमां लखे छे के मागध, वरदाम अने प्रभासनामना त्रण जे तीर्थ छे, ते जगतीनी बहारना समुद्रमा छे, तेथी पण सिद्ध थाय छे के भरत चक्रवर्ती छ खंड साधवा तेमज मागधादि तीर्थ साधवा गया हता, त्यारे आ समुद्रनुं पाणी रस्तामा नहोतु, अने शास्त्रकारोए तो सर्व शास्त्रोनी शैली श्री ऋषभदेवजीना समयानुसार राखेली छे, ते कारणथी चक्रवर्ती तमामनां कथन भरत चक्रवर्ती सदृश वर्णन करेल छे

आ कालमा केटलायक विद्वानोए भूगोलना हिसावथी पृथ्वीनु स्वरूप लखेलु छे, तथा ते अनुसारें शरद् तथा गरम देशोना विभाग करेला छे, ते जोतां, अगर जो के तेओना देखवा, सांभलवा, तथा अनुमान मुजब वर्त्तमान समयमा ए प्रमाणेज हशे, परंतु सदा काल एमज हतु, एम कहेवु वास्तविक नथी भूगोल हस्तामलक पुस्तकमा लखेलुं छे के रुशीआना उत्तर भागमा ज्यां बरफ शिवाय बीजु काइ छे नहि, त्यां गरमीना दिवसोमां बरफ गलवाथी तथा केटलाएक स्थले बरफना ढग ढली पडवाथी तेओनी नीचेथी एक जातना हाथी निकले छे, हाथी पण सेंकडो निकले छे, जेनु नाम ते देशवाला मॅमाथ कहे छे मोटु आ

श्चर्य तो ते मैंमाथोने देखवाथी ए लागे छे के ते जानवर गरम मुलकना रहेनारां छे, तेओ आ शरद्मुलकमां क्यांथी आव्या? तेओने खावावास्ते पण त्यां कांइ नथी. आ कालमां जो एकपण हाथी ते मुलकमां लही जइ बांधीए तो थोडा वखतमां ते मरी जाय; छतां लाखो मैंमाथ ते मुलकमां क्यांथी जाता हशे? तेमज शुं खाता हशे? ते बाबतमां मात्र एज खुलासो आपी शकाशे के कोइ समयमां ते मुलक गरमदेश हशे, बाद पवननी तसीर बदलावाथी शरद् मुलक थइ गयो. आ वृत्तांतथी एम सिद्ध थाय छे के शरद् मुलक कोइ कालमां गरम थइ जाय छे, अने गरम मुलक शरद् थइ जाय छे, ते कारणथी भूगोलने अनुसारें शरदी, गरमीनी अवस्थानी जे कल्पना करवी, ते हमेशांने वास्ते दुरस्त नथी. शुं जाणीये देशोनी केवी केवी व्यवस्था बदलाइ चुकी छे? अने हजी शुं बदलावानी छे? भूस्तरवेत्ताओ लखे छे के आफ्रिका खंडना मध्यभागमां आवेलुं शहरानुं रेतीनुं मोटुं रण जे हाल घणुंज उंचाणमां छे ते एकवखत महासागरनुं तलीयुं हतुं. ते कारणथी जमिननी स्थितिनुं पुरुं स्वरूप तो मात्र सर्वज्ञ जाणी शके छे.

वली आ पृथ्वीने भूगोल कहेवामां आवेछे, वली एम पण कहेवायछे के सूर्य फरतो नथी, परंतु पृथ्वी सूर्यनी आसपास फरेछे. आ वात अंग्रेजोएज शोधेली नथी परंतु अंग्रेजोनी पहेलां पण आ वातना माननारा भारतवर्षमां हता, कारण के जैनमतना शीलंगाचार्य जे विक्रमना ७०० वर्ष लगभग थया छे, तेओ श्री आचारांगसूत्रनी वृत्तिमां लखेछे के, केटलाएक एम पण मानेछे के पृथ्वी गोल फरेछे अने सूर्य स्थिर रहेछे, परंतु आ मत जैनिओनो नथी. जैनमतना शास्त्रोमां तो प्रगट लखेल छे के सूर्य चालेछे, अने पृथ्वी स्थिर रहेछे; वली सूर्यने फरवानां एकसो चोराशी मंडल आकाशमां छे, ते मंडलोमां प्रवेश करवो, तथा दिनमान, रात्रिमानननी वधघट थवी, तथा ऋतुओनुं बदलावुं, ग्रहणनुं लागवुं, सूर्यना अस्त उदयमां मतोना विवाद, इत्यादि अनेक वात, सर्व सूर्यप्रज्ञप्ति वा चंद्रप्रज्ञप्ति शास्त्रो अध्ययन करवाथी मालम पडेछे.

वली पृथ्वीने गोल साबीत करवामां समुद्रमां चालतां वहाणना तलीयांने बदले वहाणना शढमात्र दूरजतां मालम पडेछे, इत्यादि जे जे कारणो

बतावेछे, ते ते कहेवावाळाओनी समजमां जेम जेम आवतु हशे तेम तेम बतावता हशे, परंतु अमारी समजणमां एम आवेछे के, नेत्रमां एवीज योग्यता छे, जेथी वस्तुनी गोळाश्ज मालम पडे, कारण के ज्यारे अमे लांबी तथा सरखा स्थळवाळी सीधी सडक उपर उभा रहीए छीए, त्यारे अमारा पगनी जगाए सडक पहोळी मालम पडेछे, अने ज्यारे दूरनो ते सडकनो भाग देखिये छियें त्यारे सडक सांकडी मालम पडेछे वळी तेज स्थलें आकाशमां मस्तकनी उपर सीधी लीटीए पक्षीने उचे उडता देखिये छियें, त्यारे जेटली उचाइये दूर उडतुं अमने लागेछे, तेज पक्षिने ज्यारे सीधी लीटीमां थोडे दूर जइ उडतां देखिये छियें, त्यारे ते पक्षी पृथ्वीनी बहु नजीक देखाय छे मात्र आटला अंतरना तफावतमां पृथ्वीनी एवी मोटी गोळाइ केम होय ? वळी आकाशने ज्यारे देखिये छिये त्यारे घुमट जेवु देखायछे, ते बाबतमां जे कोइ एम कहे के धरतीनी गोलाईना सबबथी आकाशपण गोळ देखाय छे, आ कहेवुं वास्तविक नथी, कारण के, पृथ्वी थोडाज दूरमां एटली गोळ थइ शकती नथी, ते कारणथी नेत्रोमां जे वस्तुने जाणवानी जेवी योग्यता छे तेवीज ते वस्तु देखाय छे एम कहेवु वास्तविक लागे छे

वळी आ पृथ्वी, भरतखंडनी बहु स्थले उची, नीची मालम पडे छे, कारण के श्रीहेमचंद्रसूरि प्रमुख आचार्य पद्मप्रभचरित्रादि ग्रंथोमां लखेछे के लंकाथी अमुक योजन पश्चिम दिशातरफ जइए तो आठ योजन नीचे पाताललंका छे, जो ते योजन प्रमाण योजन होय तोतो शा माटे अमेरिकाज पाताललंका न होय? वळी नीची जगा होवाथी बुद्धिमानोने पृथ्वी गोळ मालम पडती होय ते पाताललंकानी जेम बीजी जगाए पण धरती उची नीची होय तो तेमां शुं आश्चर्य छे? कारण के पश्चिम महाविदेहनी धरती एक हजार योजन उडी शास्त्रमां लखेली छे, तेवीजरीतें बीजी जगाए पण धरती उची नीची होवाथी कांइनु काइ मालम पडे, ते कारणथी जैनमतिए श्री अरिहंत भगवतना कथनमां शका न करवी जोइए

केटलाएक पुस्तकोमां लखेलु अमे वाचेलु तेमज सांभळेलु पण छे के अमेरिकादि मुलकोमा एवी त्रिथा फेलायली छे के, जेथी बे हजार वर्ष

अगाउ जे मनुष्यो मरण पाम्या छे तेउने हाल, बोलाववामां आवे छे, वली तेउने ते वखतनो सर्व हेवाल पूछवामां आवेछे, त्यारे तेउ सर्व पोतानी व्यवस्था बतावेछे. परंतु मात्र परोक्ष रीतें शब्द श्रवण तेउ करावेछे, प्रत्यक्ष तेउ देखाडता नथी; तथा अनेक तरेहना बीजा पण तमासा तेउ देखाडेछे, जे देखवाथी अल्पबुद्धिमानोनी बुद्धि अस्तव्यस्त थइ जायछे, अने तेउना मनमां अनेक शंका, कंखा उत्पन्न थइ जायछे, जे कारणथी अर्हंतकथित धर्ममां अनादर थइ जायछे, कारण के जेम ते जीवोए जैनमतना पुरां शास्त्रो वाच्यां नथी, तेम श्रवण पण कर्या नथी, जेथी तेउना मनमां जलदी अधीरज पण थइ जायछे, परंतु पोताना मतनां सर्व पुस्तको वांच्या तेमज सांभल्या विना मात्र तुछ वस्तुने वास्ते एकवार जैनधर्ममां शंका लाववी ते दीर्घदृष्टिपणुं नथी. पूर्वोक्त सर्व वृत्तांत इंद्रजालनी पूर्णविद्या जेउने आवडती होय तेउ बतावी शकेछे. में अमुक ग्रंथमां लखेलुं वाच्युं छे के, कुमारपाल राजाना समयमां बोधिदेव नामनो एक ब्राह्मण हतो, तेणें कुमारपाल राजानी श्रद्धा जैनमतथी हठाववा वास्ते, कुमारपालनी अगाउ तेना वंशना मूलराज आदि जे सात राजाउ थइगया हता तेउने नरक कुंडमां पडेला, विलाप करता, ए प्रमाणे कहेता देखाड्या के हे पुत्र! जे दिवसथी तें जैनधर्म अंगीकार करेलो छे, ते दिवसथी अमे तारा सात वडवाउ नरक कुंडमां पडेला छीए, जो तुं अमारुं भलुं चहातो हो तो जैनधर्मने तजी दे. आवी बीना देखीने कुमारपाल राजा पोताना चित्तमां गभराया; तत्काल जइ पोताना गुरु श्री हेमचंद्र आचार्यने सर्व वृत्तांत कही पुछ्युं के हे महाराज! आनो शुं हेतु छे? आचार्यजीए कह्युं के हे राजेंद्र! आ सर्व इंद्रजालनी विद्या छे, आवो हुं पण तमोने कांइक तमासो देखाडुं. त्यार बाद राजाने मकाननी अंदरना भागमां लइ जइ, चोवीश तीर्थंकर समवसरणमां जुदा जुदा बेठा छे, अने कुमारपाल राजाना तेज सात पुरुषो तीर्थंकरोनी सेवा करे छे, तेमज कुमारपालने कहे छे के हे पुत्र! तुं मोटो पुण्यात्मा छे के जेणें जैनधर्म अंगीकार करेल छे. जे दिवसथी तें जैनधर्म अंगीकार करेल छे, तेज दिवसथी अमे नरक कुंडमांथी निकली स्वर्गवासी थया छीए, ते कारणथी हे भाइ! तुं जैनधर्ममां दृढ रहे जे. त्यार बाद श्री हेमचंद्र

सूरि कुमारपाल राजाने बहार लाव्या राजायें पुछ्यु के महाराज ! त मासो बहुज आश्चर्यकारी छे सूरिजीए कह्यु के हे राजन् ! इन्द्रजा लनी विद्या जेओने आवडती होय, ते एम करी शके छे इन्द्रजाल वि द्याना सत्तावीश पीठ छे, तेमांथी सत्तर पीठ संसारमां प्रचलित छे, प रंतु सत्तावीशे पीठ हुं जाणुं छुं, हाल बीजो कोइपण भारतवर्षमां जा णतो नथी, अने जे गुरुदेवे अमने ते विद्या आपी हती, तेमणें एवी आज्ञा पण करेली छे के, भविष्यमां आ विद्या तमारे कोइने पण देवी नहि, कारण के आ विद्याथी मोटो अनर्थ उत्पन्न थशे, सारांश के आ कालमां जीव तुच्छ बुद्धिवाला होवाथी तेओने आ विद्या जरशे नहि, वली तेज कारणथी अमारा आचार्योए योनिप्राभृत शास्त्र विछेद करी दीधेलां छे, ते योनि प्राभृतने अनुसारें आ इन्द्रजाल रची शकाय छे आ योनिप्राभृतनु कथन व्यवहार भाष्यचूर्णीमा करेलु छे, त्यां लख्यु छे के आ योनिप्राभृतमा तन्त्रविद्या छे, जेनाथी सर्प, घोडा, हाथी विगेरे जीवतां जानवर, वस्तुओना मेलापथी बनी शके छे, तथा सुवर्ण, मणि, रत्न प्रमुखपण बनी शके छे आ महाबलमांज एवी मिलनशक्ति छे के मरजीमा आवे ते बनावी ल्यो ? ते कारणथी वर्तमानमां नवीन वस्तुने देखीने कोइए जैनधर्मथी चलायमान न थवुं जोइए तत्त्वार्थना महाभा ष्यमा सामतभद्र आचार्य पण लखे छे के इन्द्रजालीआ तीर्थंकरनी स मान बाह्यऋद्धि सर्व बनावी शके छे, ते कारणथी कोइ बाबतमा चम त्कार देखी जिनवचनमां शका न करवी

वली केटलाएक जैनमतवालाओने आ पण आश्चर्य छे के, ज्यारे आ र्यावर्त्तमा बे प्रहरदिन होय छे, त्यारे अमेरिकामां अर्धरात्रि होय छे, अने ज्यारे अमेरिकामा बे प्रहर दिवस थाय छे, त्यारे आर्यावर्त्तमां अ र्धरात्रि थाय छे, ते बाबतना चोकस समाचार तारनी मददथी तेमज घ डीआलना साधनथी मेलवी शकाय छे आ वातनो यथार्थ उत्तर हुं आपी शकुं तेम नथी मारी श्रद्धा एवी पण नथी के पूर्व आचार्योनी शाहादत शिवाय समाधान करु, कारण के मात्र मारी कल्पनाथी कांइ जैनमत सत्य थइ शकतो नथी, जैनमत तो पोताना स्वरूपथीज सत्य बनशे, जो मारी कल्पनाज जैनमतनी सत्यतानु कारण होय तो, कोइ

पूर्वाचार्यनी अपेक्षाज रहेशे नहि, वली जेना मनमां जे अर्थ सारो लागशे ते अर्थ बनावी लेशे. जेम वर्त्तमानमां कोइ पाखंडी मस्कराए ऋग् आदि वेदो उपर स्वकपोल कल्पित टीका बनावेली छे, ते अमे वांची पण छे तेउए वेदमंत्रादि उपर जे भाष्य बनाव्युं छे, ते मंत्रोना अर्थमां एवुं लखेलुं छे के "अग्निबोट" अर्थात् वरालयंत्रथी चालनारां वहाण, तथा रेलगाडी चालवानो विधि, तथा पृथ्वी गोल छे, ते सूर्यनी चारे बाजुए फरे छे, अने सूर्य स्थिर छे, इत्यादि अंग्रेजोए पोतानी बुद्धिना बलथी जे नवीन शोधनी विद्या बहार पाडी छे, ते सर्व विद्याउनुं वेदोमां कथन छे. पोताना शिष्योने वेदनुं महत्त्व बतावबा वास्ते स्वकपोलकल्पित अर्थ बनावी लीधा छे; अने पूर्वे महीधरादि पंडितोए वेदो उपर जे दीपिका तथा भाष्यो रचेलां छे तेउनी निंदा तेमज मूर्खता प्रगट करेली छे. जेमके तेउ मूर्ख हता, तेउने वेदना अर्थ आवडता न होता.

प्रश्नः–पूर्वना अर्थ छोडीने नवीन अर्थनी रचना करवानुं शुं कारण छे?

उत्तरः–प्रथम तो वेदो उपरनां प्राचीन भाष्य, तेमज दीपिका मानवाथी वेदोनी सत्यता, ईश्वरोक्तता तेमज प्राचीनता सिद्ध थती न होती. ते कारणथी ईशावास्य उपनिषद् वर्जीने, सर्व उपनिषदो, सर्व ब्राह्मण भाग, सर्व स्मृति, पुराणादि शास्त्र, भाष्य, दीपिकादि मानवां तजी दीधां, तेमणे एवो विचार कर्यो के पूर्वोक्त सर्व ग्रंथो मानवाथी अमारो मत बीजा मतवाला खंडित करी देशे, कारण के पूर्वोक्त सर्व ग्रंथो युक्ति प्रमाणथी विकल छे, वली प्राचीनोए जे अर्थ करेला छे, तेमां केटलाएक अर्थ एवा छे के जे श्रवण करवाथी श्रोताजनोने लज्जा उत्पन्न थाय छे, कारण के महीधरकृत दीपिका जे वेदनी टीका छे, तेमां मंत्रादिना जे अर्थ लखेला छे, तेमां लख्युं छे के यज्ञपत्नी घोडानुं लिंग पकडीने पोतानी योनिमां प्रक्षेप करे, इत्यादि अर्थ छे. तेनुं वर्णन आगल उपर लखीश. ते अर्थोने छोडवावास्ते, अने वेदोनुं खंडन न थाय ते वास्ते स्वकपोल कल्पित भाष्य बनावी अंग्रेजादि पाश्चिमात्यनी रीतिमुजब तथा इंजिल मतानुसार अर्थ बनाव्या छे, परंतु वेदादिवेत्ता बुद्धिमान् पुरुषो तो कोइ ते मानता नथी, अने जेउ माने छे तेउ कांइ

वेदादि जाणता नथी, कारण के ज्यारे पूर्वना ऋषि मुनि, पंडित अ सत्यवादी तेमज तेउंना बनावेला अर्थ असत्य छे, त्यारे वर्त्तमानना ब नावेलाउंना अर्थ केवीरीतें सत्य करी शकशे ? जे मूलमांज असत्य छे ते नवीन रचनाथी कदापि सत्य थवाना नथी ते कारणथी पोतानी बु द्धिनो विचार सत्य मानवो, अने वेदोने माननारा प्राचीन संप्रदाय वालाना अर्थ जूठा मानवा, तेनाथी अधिक अविवेक तथा अन्याय शि रोमणि पणुं बीजु कयुं छे ? वली ज्यारे प्राचीनोना बनावेला अर्थ जूठा करशे, त्यारे तेउंना बनावेला वेदो पण जूठाइ ठरशे, ते कारणथी जेउं मतधारी छे, तेउंए का तो पोताना प्राचीनोना कथन करेला अर्थ मा नवा जोइए, अथवा तो ते मतने तेमज तेमतनां शास्त्रने तजी देवां जोइए, अने तेज कारणथी मारी एवी श्रद्धा छे के जैनमतमां जे प्रा माणिक तेमज पचांगी कारक आचार्य लखी गया छे तेउंने अनुसारज मारे कथन करवुं जोइए, स्वकपोलकल्पित कदापि नहि जे स्वकपोल कल्पित करशे तेमज मानशे, ते कदापि जैनमतवालो बनी शकशे नहि, अने तेनी कल्पना पण सर्वथा सत्य ठरशे नहि, कारण के पूर्वाचार्य ज्यारे जूठा छे, त्यारे नवीन कल्पनावाला केवीरीतें साचा ठरशे ? ते सर्व कारणथी पूर्वना प्रश्नो उत्तर पंचांगी प्रमाणथी हु आपी शकतो नथी, कारण के १ शास्त्रो घणुज विछेद गया छे, तथा २ आर्यरक्षितसू रिना समयमा चारे अनुयोग तोडीने पृथक् पृथक् अनुयोग रचवामां आव्या छे, तथा ३ स्कंधिल आचार्यना समयमां बार वर्ष सुधी दुकाल पड्यो हतो ते वखतमा शास्त्रो घणुज विस्मृत थवा लाग्यां, जेथी सर्व साधुउंए दक्षि ण मथुरामां समाज करी, जे प्रसंगे जे जे आचार्य तथा साधुउंने जे जे शास्त्रना जे जे स्थल, स्मृतिमां रह्यां हतां ते ते स्थल एकत्र करी लखवामां आव्या, बाद ४ देवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण प्रभृति आचार्योए पानाउपर एक क्रोड ग्रंथो लख्या, बाकीना तजी दीधा, ५ प्रभावकचारित्रमां लख्युं छे के, सर्व शास्त्रो उपर टीका लखी हती, जे सर्व विछेद गइ, तथा ६ ब्राह्मणो अने बौद्धोए तो ग्रंथोनो घणुज नाश कर्यो, तथा ७ मुसलमानो ए पोताना समयमां सर्वमतनां शास्त्रो माटीमां मेलवी दीधा, अनेक स लगावी दीधां, शेष रह्या ते भंडारोमा गुप्त रहेवाथी गलीगयां, अने ब

र्त्तमानमां जे ज्ञंडारोमां पडेलां ठे, ते सर्व अमे वांचेलां नथी, आटला आटला उपद्रवो जैनशास्त्रो उपर वीतवाथी अमे सर्व शंकाउनुं केवी रीतें समाधान करी शकीए ? ते कारणथी जैनमतमां शंका न करवी. अमे सर्व मतनां शास्त्रो अवलोकन करेलां ठे, परंतु जैनमतसमान अति उत्तम मत बीजो कोइपण मारा देखवामां आव्यो नथी, तेथी आ मतमां दृढ रहेवुं जोइए. १ शंका अतिचार ते कहेवाय ठे, जेम के जिनवचनोमां शंका करवी अर्थात् जिनेश्वर ज्ञगवानें कथन करेला ज्ञाव सत्य हशे के नहि ? आ प्रथम अतिचार ठे.

२ बीजो आकांक्षा अतिचार. अन्यमतवालाउनां अज्ञानकष्ट देखी, तेमज कोइ पाखंडीना विद्यामंत्रना चमत्कार देखी, तेमज पूर्वजन्मना अज्ञानकष्टथी फल पामेला अन्यमतवालाउने सुखी तेमज धनवान् देखी मनमां विचारे के अन्यमतवालाउना धर्म तथा ज्ञान सारां ठे, जेना प्रज्ञावथी, तेउ धनवान्, सुखी, तथा पुत्रादि परिवारवाला थाय ठे, ते कारणथी हुं पण तेउनोज धर्म अंगीकार करुं, जेथी हुं पण धनवान् तेमज पुत्र परिवारवालो थाउं. आकांक्षा अतिचार तेज जीवोने लागेठे, जे जीवोने जैनधर्मनो बहुज सारी रीतें बोध होतो नथी. कारण के जैनधर्मवाला पण सर्व दरिद्री तथा पुत्रादि परिवारथी रहित नथी, तेमज अन्यमतवाला पण सर्वे धनवान् तेमज परिवारवाला नथी, सारांश के सर्व पोतपोतानां पूर्वनां तथा जन्मांतरनां करेलां पुण्य पापनां फल ज्ञोगवे ठे. जुउ के केटलाएक, मनुष्यजन्ममां साते कुव्यसननो सेवनारां ठतां धनवान्, अने केटलाएक कसाइ, खाटकी इत्यादि नीचधंधानां करनारां पण धनवान् तेमज पुत्रादि परिवारवालां तेमज सुखी ठे, अने केटलाएक आ अवस्थाथी विपरीत ठे, ते कारणथी मात्र तेज सत्य ठे के दरेकजीव पोताना पूर्वना तेमज जन्मांतरना सुकृत दुष्कृतनुं फल ज्ञोगवे ठे, मात्र आ जन्मनां कृत्योनुंज फल ज्ञोगवता नथी. सर्व मतोमां राजाउ थइ गया ठे, तेमज रंक पण बहुज ठे, ते कारणथी बीजा मतनी आकांक्षा न करवी. जो करी ए तो बीजो अतिचार.

३ त्रीजो वितिगिठा नामे अतिचार ठे. जे जीव पोतानां पूर्वजन्मनां करेलां पापोना उदयथी दुःख ज्ञोगवे ठे, त्यारे एवो विचार करे

के हु जे धर्म करु हुं, तेनुं फल मने शु मलशे ? अर्थात् धर्मनु फल मने मलशे के नहि ? वली जेठ धर्म करता नथी, तेठ सुखी ठे, अने हु धर्म करुं हुं, ठतांपि दुःखी छु, ते कारणथी कोण जाणे धर्मनु फल हशे के नहि ? तथा साधुनां मलिन शरीर तथा मलिन वस्त्र देखीने मनमां दुगंठा करे के आ साधु सारा नथी, कारण के तेमनुं शरीर गंदु ठे तथा तेमनां वस्त्र पण गंदां ठे तेठ संसारथी केवी रीतें तरी शकशे, जो तेठ उष्णजलथी स्नान करे तो तेथी कयु महाभत तेठंनु जंग थाय ठे?

उत्तरः—जो धर्मनु फल न होय तो, संसारनी विचित्रता कदापि न होय, ते कारणथी धर्मनु फल अवश्यमेव ठे वली साधु जे मलिन वस्त्र राखे ठे, तेनु कारण ए ठे के सुंदरवस्त्र राखवाथी मन शृंगार रसने व हाय ठे वली स्त्रियो पण सुंदर वस्त्रवालाउंने देखीने तेठंनी साथे जोग जोगववानी इछा करे ठे ते कारणथी शियल पालवानी इछा राखनारा साधुए शृंगार करवो वास्तविक नथी वली स्नान, कामनु प्रथम अंग ठे, तेथी साधुठंने उचित नथी, अने कोइ कारण प्रसंगें साधु हाथ, प गादि धोवे तो ते कांइ दूषण नथी, वली साधुठंने पोतानां शरीर उपर ममत्व पण नथी, अने शुचिमात्र स्नान तो साधु करे ठे परंतु शरीरना सुखवास्ते तथा शरीरने चमकाववा वास्ते स्नान करता नथी, कारण के जैनिठंनी एवी अकाज नथी के स्नान करवाथी पाप दूर थइ जाय ठे जलस्नानथी शरीरनो मेल दूर थाय ठे, शरीरनो ताप मटी जाय ठे, अने आलस दूर थाय ठे, परंतु पाप तो दूर थतु नथी, जो जल स्नानथी पाप दूर थतु होय तो, अनायासें सर्व जीवनी मुक्ति थइ जाय, कारण के एवुं कोइ नथी जे जल स्नान करतुं नथी वली साधुने मेला समजवा, ते पण मोटी मूर्खता ठे, कारण के शरीरें मेल होवाथी आत्मा मलिन यतो नथी आत्मातो मात्र पापकरवाथीज मलिन थाय ठे वली जगत् व्यवहारमा मेलापणुं स्त्री साथे संजोग करवाथी, तेमज कोइ मलिन वस्तुनो स्पर्श करवाथी मानवामां आवे ठे, अने साधु तो ते सर्व वस्तुना त्यागी ठे, तेथी मेला कहेवाय नहि, वलके साधुठंने धन्यवाद देवो जोइए, केमके ताप पडे ठे, लू वाय ठे, पसीनो वहे ठे, ठतांपि साधु उघाडा पगे तेमज खुल्ले मस्तके विहार करे ठे, रात्रियें मात्र ढाजेला मकानमा सुवेठे,

पंखा करता नथी, कोमल शय्या तेमज पलंग पर सुता नथी, रात्रिए जलपण पीता नथी, दिवसेंपण उष्ण जल पीये छे, आ प्रमाणे तेउनुं ज्यारे तप छे. तेउथी उलटा जेउ साधु वनी वेठा छे, अने गरमी लागे त्यारे पाडानी पेठे सरोवरमां जइ पडे छे, एवा सुखशीलिआ शुं तरी जशे ? जेउने कोइ वातनो नियम नथी. वली हाथी, घोडा, रेल प्रमुखनी स्वारि करवी, सर्व प्रकारनां फलजक्षण करवां, धन राखवां, मकान बांधवां, खेती करवी, कराववी. गाय, जेंस, हाथी, घोडा प्रमुख जानवर तथा रथादि अने शस्त्रादि सरंजाम राखवा, छल, बलथी लोको पासेथी धन लेवां, स्त्रीउ साथे विषयसेवन करवां, सुंदर खानपान करवां, मांसजक्षण करवां, मदिरापान करवां, जांगना रगडा, चरसनी चलमो उडाववी, हाथपग तथा शरीरने वेश्यानी जेम चमकाववां, चित्तमां मोटा अजिमान राखवां, दंड पीलवा, कुस्ती करवी, इत्यादि अनेक साधुउने अनुचित कामो करवां, छतां श्री श्री स्वामिजी महाराज वनीठणी बेसवुं, अमे महंत छइए, अमे गादिपति छइए, अमे जट्टारक छइए, अमे श्रीपूज्य छइए, अमे जगत्नो उद्धार करीए छइए, अमे महान् अद्वैतब्रह्मवेत्ता छइए, अमे शुद्ध ईश्वरनी उपासना बतावीए छइए, अमे मूर्त्तिपूजन पाखंडनो नाश करीए छइए.

हवे जव्य जीवोए विचार करवो जोइए के, पूर्वोक्त कुगुरुउ शुं जल स्नान करवाथी संसार समुद्रथी तरी जशे ? अने जेउ, जीवहिंसा, असत्य, चोरी, मिथुन तेमज परिग्रह, आ पांचेना त्यागी, शरीरना ममत्वरहित, प्रतिबंधरहित, कामक्रोधना त्यागी, महातपस्वी, मधुकर वृत्तिथी जिक्षा लेनारा, इत्यादि अनेक गुणोथी सुशोजित, शुं जल स्नान नहि करवाथी पातकी थइजशे ? कदापि थशे नहि. ते कारणथी साधुउने देखी जुगुप्सा न करवी, जो करे तो त्रीजो अतिचार.

चोथो मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसारूप अतिचार छे. जिनप्रणीत आज्ञाथी जे बहार छे ते मिथ्यादृष्टि छे, कारण के सर्वज्ञनां कथन करेलां वचनो ते मानता नथी, अने असर्वज्ञनां कथन करेलां वचनो सत्य माने छे, वली असर्वज्ञप्रणीत शास्त्रोमां जे अयोग्य वातो कहेली छे, तेउने छुपाववा वास्ते स्वकपोलकल्पित जाष्य, टीका, अर्थ बनावी मूर्ख लोकोने बहेकावी

गप्पां मारता फरे ठे, वली जेठने धर्मनियम कांइ पण नथी, अने अनाथ पशुठने मारि जाणे ठे, तथा धूर्त्तपणाथी साचो डोल धारण करी मूर्खोने मिथ्यात्व जालमां फसावे ठे,एवा मिथ्यादृष्टि ठे, तेठनी प्रशंसा करवी, तथा जिनाज्ञा बहार एवा अज्ञान कष्ट करनाराठने कहेवुं के, अहो ! केवा महान् तपस्वी ठे ! महापुरुष ठे ! महापंडित ठे ! तेठनी बराबरी करी शके तेवा कोण ठे ? तेठए धर्मनी वृद्धि वास्तेज अवतार धारण करेल ठे वली मिथ्यादृष्टि कोइ मत यज्ञादि करे तो तेनी बहुज प्रशंसा करे, तमे बहुज सारां काम करो ठो, तमारो अवतार सफल ठे, इत्यादि प्रशंसा करे, ते चोथो अतिचार ठे

५ पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते अतिचार ठे मिथ्यादृष्टिनी साथे बहुज मेलाप राखे,खान पान करे, वास करे, इत्यादि अनेक प्रकारथी सहवास करवाथी मिथ्यादृष्टिनी वासना लागीजवाथी धर्मथी भ्रष्ट थवाय ठे, ते कारणथी मिथ्यादृष्टिनो बहुपरिचय करवो ते वास्तविक नथी जो करे तो पांचमो अतिचार

ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आपवामां आवे ठे, त्यारे तेने गुरु ठ आगार बतावे ठे जो ठ कारणोमां तमने कांइ अनुचित काम करवु पडे तो आ ठ आगार राखी शकाय जेथी तमारु सम्यक्त्व कलंकित थशे नहि, ते ठ आगार नीचे मुजब ठे

१ प्रथम "रायाभिठंगेणं" नगरना स्वामि जे राजा, ते कोइ अनुचित काम जोरावरीथी करावे तो सम्यक्त्वमां दूषण लागे नहि

२ बीजा "गणाभिठंगेणं" गण अर्थात् ज्ञाति तथा पचायत, ते कहे के आ काम तमे अवश्य करो, नहि तो तमने ज्ञाति तथा पचायत मोहोटो दंड करशे तेवे प्रसंगे जो ते काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमा दूषण नहि

३ त्रीजो "बलाभिठंगेण" बलवंत चोर, म्लेछादि तेठने वश पडतां, जोरावरीथी तेठ अनुचित काम करावे तो सम्यक्त्वमा अतिचाररूप दूषण नहि

४ चोथो देवाभिठंगेणं" कोइ दुष्ट देवता क्षेत्रपालादि, व्यतर शरीरमां प्रवेश करी अनुचित काम करावे तो भंग नहि, तथा कोइ देवता

मरणांत दुःख आपे, जेथी मनमां धैर्य न रहे, अने मरणांत कष्ट जाणी कांइ विरुद्ध काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमां अतिचार भंग नहि.

५ "गुरुनिग्गहेणं" गुरु ते मातपितादि तेमना आग्रहथी कांइ अनुचित काम करवुं पडे; तथा गुरु ते धर्माचार्यादि तथा जिनमंदिर, ते उने अर्थात् गुरुने कोइ दुष्ट संकट देतो होय, तथा जिनमंदिर तोडतो होय. जिनप्रतिमानुं खंडन करतो होय, तो गुरुनिग्रह छे, तेउनी रक्षा वास्ते कांइ अनुचित कास करवुं पडे तो सम्यक्त्वमां दूषण नहि.

६ छठो "वित्तिकंतारेणं" वृत्ति जे दुकालादि आपत्ति आवी पडे,त्यारे आजीविकावास्ते कोइ मिथ्यादृष्टिने अनुसारें चालवुं पडे, तथा आजीविकावास्ते कोइ विरुद्ध आचरण करवुं पडेतो दूषण नहि. आ छ वस्तुना आगारोने छ छिंडी कहेछे.तथा चार आगार बीजा छे तेपण कहियें छियें.

१ अन्नछणाभोगेणं" कोइ कार्य अजाणपणे, उपयोग आप्या विना, कांइनुं कांइ थइ जाय, ज्यारे याद आवे, त्यारे फरी ते कार्य न करवुं ते प्रथम आगार.

२ "सहस्सागारेणं" कोइ काम अकस्मात् थइ जाय; पोताना मनमां जाणेछे के आ कास मारे करवानुं नथी, योगोनी चपलताथी तथा निरंतरना बहु अभ्यासथी जाणतां छतां पण विरुद्ध कार्य थइ जाय तो सम्यक्त्वमां भंग नहि, आ बीजो आगार.

३ "महत्तरागारेणं" कोइ मोटो लाभ थाय छे, परंतु सम्यक्त्वमां दूषण लागेछे, तथा कोइ मोटा ज्ञानीनी आज्ञाथी कमवेशी करवुं पडे तो, आ त्रीजो आगार छे.

४ "सवसमाहि वत्तिआ गारेणं" सर्व समाधि व्यत्ययथी अर्थात् मोटा सन्निपातादि रोगोने प्रसंगें बावरा थइ जवाथी, तथा अतिवृद्धावस्थामां स्मृतिभंग थवाथी, तथा रोगादि संकट समये मनमां आर्त्तध्यान थइ जवाने प्रसंगें, तथा सर्पादि डंख मारवाथी असमाधि थवाना समयमां, आ आगार छे. तेथी सम्यक्त्व तथा व्रतभंग थतां नथी. तेवे प्रसंगें, कोइ मूर्खना कहेवाथी आर्त्तध्यानमां प्राण त्यागवा ते योग्य नथी. केटलाएक जैनमतना अनभिज्ञोनुं एम पण कहेवुं छे के, गमे तेम थइ जाय तोपण, जे नियम लीधेलुं छे, ते कदापि तोडवुं नहि, आ कहेवुं स-

गप्पां मारता फरे ठे, वली जेठंने धर्मनियम कांइ पण नथी, अने अनाथ पशुठंने मारि जाणे ठे, तथा धूर्त्तपणाथी साचो डोल धारण करी मूर्खोने मिथ्यात्व जालमां फसावे ठे,एवा मिथ्यादृष्टि ठे, तेठंनी प्रशंसा करवी, तथा जिनाज्ञा बहार एवा अज्ञान कष्ट करनाराठंने कहेवु के, अहो ! केवा महान् तपस्वी ठे ! महापुरुष ठे ! महापंडित ठे ! तेठंनी बराबरी करी शके तेवा कोण ठे ? तेठंए धर्मनी वृद्धि वास्तेज अवतार धारण करेल ठे वली मिथ्यादृष्टि कोइ व्रत यज्ञादि करे तो तेनी बहुज प्रशसा करे, तमे बहुज सारां काम करो ठो, तमारो अवतार सफल ठे, इत्यादि प्रशसा करे, ते चोथो अतिचार ठे

५ पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते अतिचार ठे मिथ्यादृष्टिनी साथे बहुज मेलाप राखे, खान पान करे, वास करे, इत्यादि अनेक प्रकारथी सहवास करवाथी मिथ्यादृष्टिनी वासना लागीजवाथी धर्मथी भ्रष्ट थवाय ठे, ते कारणथी मिथ्यादृष्टिनो बहुपरिचय करवो ते वास्तविक नथी जो करे तो पांचमो अतिचार

ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आपवामां आवे ठे, त्यारे तेने गुरु ठ आगार बतावे ठे जो ठ कारणोमां तमने कांइ अनुचित काम करवुं पडे तो आ ठ आगार राखी शकाय जेथी तमारु सम्यक्त्व कलंकित थशे नहि, ते ठ आगार नीचे मुजब ठे

१ प्रथम "रायाभिठंगेणं" नगरना स्वामि जे राजा, ते कोइ अनुचित काम जोरावरीथी करावे तो सम्यक्त्वमां दूषण लागे नहि

२ बीजा "गणाभिठंगेण" गण अर्थात् ज्ञाति तथा पंचायत, ते कहे के आ काम तमे अवश्य करो, नहि तो तमने ज्ञाति तथा पंचायत मोहोटो दंड करशे तेवे प्रसंगे जो ते काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमा दूषण नहि

३ त्रीजो "बलाभिठंगेण" बलवंत चोर, म्लेछादि तेठंने वश पडता, जोरावरीथी तेठं अनुचित काम करावे तो सम्यक्त्वमां अतिचाररूप दूषण नहि

४ चोथो देवाभिठंगेणं" कोइ दुष्ट देवता क्षेत्रपालादि, व्यतर शरीरमां प्रवेश करी अनुचित्त काम करावे तो भग नहि, तथा कोइ देवता

आकुट्टी. ते निषेध वस्तुने उत्साहथी करवी. जेमके संपूर्णफलना जडथां करवां, ते श्रावकने निषेध छे, तेथी जेणे जेटली जातनां फल खावामां राख्यां होय, तेउमांथी कोइपण फलनुं जडथुं न करवुं, छतां मनमां उत्साहपूर्वक जडथां करे तो आकुट्टी हिंसा लागे. २ दर्प्पहिंसा. ते चित्तना उछरंगथी, उन्मत्तपणाथी, गर्वधारण करीने, दोडे तेमज गाडी, घोडा प्रमुख दोडावे तो दर्प्पहिंसा लागे. ३ कल्पहिंसा. ते शरीरना कामजोगवास्ते तीव्र अजिलाषापूर्वक, कामनो जोस चडाववावास्ते त्रस जीवनी हिंसा करी, गोली, माजम प्रमुख बनावी खाय तो कल्पहिंसा लागे. ४ प्रमादहिंसा. ते घरनां कामकाज, जेम के रांधवुं, दलवुं, जरडवुं प्रमुख अनेक काम करतां त्रसजीवनी हिंसा थइ जाय तो प्रमाद हिंसा लागे. आ चारे हिंसामांहेनी प्रथमनी हिंसा, तथा बीजी हिंसा तो बिलकुल न करवी जोइए. ते कारणथी संकल्पथी आकुट्टी तथा दर्प्पथी त्रसजीव हणवानो त्याग करे. वली जेम आ कीडी जाय छे, तेने हुं मारुं? एवा संकल्पथी हणवुं, हणाववुं, ते आकुट्टी संकल्प कहेवाय छे, एवा संकल्पथी निरपराधी जीवोने, कारण विना हणुं नहि. हणावुं नहि, एवो नियम करे, अने सांसारिक आरंज, रांधवा प्रमुखनां काम करतां, तथा पुत्रादिना शरीरमां कीडा प्रमुख पडतां, व्याधिने प्रसंगे औषधोपचार करतां यत्नापूर्वक प्रवर्त्ते. वली घोडा, बलद प्रमुखने चाबक प्रमुख मारवा पडे तेनो आगार राखे. तथा पेटमां कृमि, गंडोला, पगमां नारां अर्थात् वाला, हरस, जू प्रमुख अनेक जीव शरीरमां उपजे, तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां उपजे, तेना उपचार करवानी जयणा राखे. कारण के साधुने तो त्रस तथा स्थावर, सूक्ष्म तथा बादर, सर्वजीवोनी हिंसा नवकोटी विशुद्ध अप्रमत्त योगोथी सर्व हिंसानो त्याग छे, तेथी साधुने वीश विश्वा दया छे, अने गृहस्थथी तो सवा विश्वा दया पली शके छे. तेनुं स्वरूप लखीए छीए.

॥ गाथा ॥ जीवासुहुमा थूला, संकप्पा आरंजा जवे डुविहा ॥ सवराह निरवराहा, साविरका एव निरविरका ॥ १ ॥ अर्थः—जगत्मां जीव बे प्रकारना छे. १ स्थावर, २ त्रस. तेमां स्थावरना बे जेद छे, १ सूक्ष्म, २ बादर. तेमां सूक्ष्मजीवोनी हिंसा तो थतीज नथी, कारण के अति-

थैया वास्तविक नथी, कारण के जो पहेलेथी आगार राख्या छे, तो पछी व्रतभंग केवीरीतें थायछे ? अने जेओ आर्त्तध्यानमां मरी जायछे, तथा आगार राखता नथी, तेओ जैनमार्गनी शैलीना अजाण छे ते कारणथी छ छिंडी अने चार आगार सर्व बारे व्रतमां जाणवा वली साधुना सर्व प्रत्याख्यानमां अनशन पर्यंत आज चार आगार जाणवा इतिश्री तपगछियगणिश्रीमणिविजय, तच्छिष्य मुनिश्रीबुद्धिविजयतच्छिष्य मुन्यात्मारामानदविजयविरचिते जैनतत्त्वादर्शे (गुर्जर भाषांतरे) सम्यग्दर्शननिर्णयनामा सप्तमपरिछेद संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमपरिछेद प्रारंभ ॥

आ परिछेदमा चारित्रनुं स्वरूप लखियें छियें, चारित्र धर्मना बे भेद छे एक सर्वचारित्र बीजु देशचारित्र तेमां सर्व चारित्र तो साधुमां होयछे तेनु स्वरूप आ परिछेदमां लखिये छियें देशचारित्रना बार भेद छे देशचारित्र गृहस्थधर्म छे बार व्रतरूप छे तेनु किंचित् स्वरूप लखतां प्रथम स्थूलप्राणातिपातविरमण व्रतनु स्वरूप लखियें छियें

१ स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रतना बे भेद छे एक द्रव्य प्राणातिपात व्रत, बीजुं भाव प्राणातिपात व्रत द्रव्यप्राणातिपात विरमणव्रतनु स्वरूप एवु छे के, परजीवने पोताना आत्मासमान जाणीने तेओना दश द्रव्यप्राणनी रक्षा करवी आ व्यवहार दयारूप छे बीजुं भाव प्राणातिपातव्रत ते पोतानो आत्मा कर्मवश पड्यो थको दुःख पामेछे, वली भावप्राण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि, तेओना, मिथ्यात्व, कषायादि अशुद्ध प्रवर्त्तनथी प्रतिक्षण घात थया करेछे, ते कर्मशत्रुओथी भावप्राणनो घात थतो अटकाववा वास्ते, तथा आत्माने कर्मशत्रुथी छोडाववावास्ते उपाय करवा ते उपाय आ प्रमाणे आत्मरमणता करे परभाव रमणता त्यागे शुद्धउपयोगमां प्रवर्त्ते कर्मना उदयमां अव्यापक रहे एक स्वभाव मग्नता करे आ उपभोग समस्त कर्मशत्रुओनो उछेद करवाने अमोघ शस्त्र छे अर्थात् सकल परभाव इष्टता दूर करी, स्वरूप सन्मुखरूप उपयोगमां प्रवर्त्तावबुं, तेनुं नाम भावप्राणातिपात विरमणव्रत कहियें तेनुजनाम भाव

हवे स्थूल नाम मोटा दृष्टिगोचर, हाले, चाले तेवा जे त्रसजीव, ते ओने संकल्पथी न हणुं अहींआं हिंसाना चार प्रकार बतावीए छीए

स्वारि करे छे, त्यारे घोडाप्रमुखने हांकता चाबकादि मारे छे; अहींआं घोडा तथा बलदोए कांइ तेउनो अपराध कर्यो नथी, तेउनी पीठ उपर तो चडी रह्या छे, अने जाणता नथी के ते विचाराउने चालवानी शक्ति छे के नहि ? ज्यारे ते जीवो हलवे हलवे चाले छे, तेमज चालता नथी, त्यारे अज्ञानना उदयथी तेउने गालो देछे, तथा मारे छे, एम निरपराधी जीवोने दुःख आपे छे. वली पोताना शरीरमां तेमज पोताना कुटुंबीउ तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां अर्थात् मस्तकमां, मुखमां, कानमां इत्यादि अवयवोमां कीडा पडे, तेउने दूर करवावास्ते दवा लगाववी पडेछे, जेथी ते जीवोनो नाश थाय छे, आ जीवोए श्रावकोनो कांइ अपराध करेलो नथी, कारण के तेउ तो पोताना कर्मना वशथी एवी योनिमां उत्पन्न थाय छे. कांइ श्रावकनुं बुरुं करवुं, तेमने दुख देवुं, एवा संकल्पथी उत्पन्न थता नथी. परंतु तेउनी हिंसा श्रावकथी त्यागी शकाती नथी. ते कारणथी वली अरधी बाद थइ. बाकी सवा विश्वा दया रही. आ सवा विश्वा दया शुद्ध श्रावक होय ते पाली शके छे. अर्थात् संकल्पथी निरपराधी त्रस जीवोने कारण विना हणुं नहि. आ प्रतिज्ञा ज्यांसुधी पोतानी शक्ति रहे त्यां सुधी पाले. निर्ध्वंसपणुं न करे. सदा मनमां एवी नावना राखे के रखे माराथी कोइ पणजीव हणाय ? वली घरमां आरंज करतां पण यत्नाथी प्रवर्त्ते. लाकडां सलगाववा वास्ते लावे ते सडेलां लावे नहि. आगल उपर जेमां जीव न पडे एवा सुकां, पाकां लाकडां लावे; वली रसोइने वखते लाकडांने खंखेरी जीवरहित करी सलगावे. तथा घी तेल प्रमुख रस नरेली वस्तुउनां वासणोनां मुख बांधी यत्नाथी ते चीजो राखे. उघाडां ते वासणो न राखे. तथा चुलानी उपर अने पाणीआरा उपर चंदरवा बांधे. खावाने जे अन्न अर्थात् अनाज लावे ते जीजेलुं लावे नहि. शुद्ध नवुं अनाज लावे, कदापि एक वर्ष उपरांतनुं अनाज लावे तो जेमां जीव न पड्या होय तेवुं लावे. तथा पाणी गलवा वास्ते बहुज जाडुं वस्त्र राखे. दरेक पहोरे पाणी गले. पाणीनो संखारो, जे कुवानुं ते पाणी होय, ते कुवामां नाखे. तथा वर्षाऋतुमां अनेक प्रकारना असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथनी स्वारि न करे, कारण के ज्यां

सूक्ष्म जीवोना शरीरने बाह्य शस्त्रना घा लागता नथी, परंतु अहींआ तो सूक्ष्मशब्द, स्थावर जीवो जे पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पतिरूप पाच बादर स्थावर, तेउं सूक्ष्म वाचक छे, अने स्थूल जीव ते द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय पचेंद्रिय जाणवा आ बने भेदमा सर्वजीव आवी गया ते सर्व जीवोनी त्रिकरण शुद्धिथी साधु रक्षा करे छे, ते कारणथी साधुने वीश विश्वा (वसा) दया छे श्रावकथी तो पांच स्थावरनी दया पलती नथी, सचित्त आहारादि करवाथी अवश्य हिंसा थाय छे, ते कारणथी दश विश्वा दया दूर थइ बाकी दश विश्वा रही सारांश के त्रसजीवनी दया रही त्रसजीवनी हिंसाना पण बे भेद छे एक संकल्पथी हणवा, बीजा आरंजथी हणवा तेमां संकल्पथी हणवानो त्याग छे, परंतु आरंजनी हिंसानो श्रावकने त्याग नथी, आरंज हिंसामा यत्ना राखवानी छे, कारण के आरंज हिंसा श्रावकने थाय छे, ते कारणथी दश विश्वामांथी पांच विश्वा बाद थइ, अर्थात् संकल्पथी त्रस जीवनी हिंसानो त्याग छे वली तेना पण बे भेद छे एक सापराधी, बीजा निरपराधी तेमां निरपराधी जीवोने न हणवा, अने सापराधी जीवोने हणवानी जयणा छे कारण के सापराधी जीवनी दया श्रावकथी सदा सर्वथा पलती नथी जेम के घरमा चोर आवी चोरी करी धन, माल लइ जता होय, तेउंने मार्या, कुट्या विना तेउ धन, माल गे हता न होय, तथा पोतानी स्त्रीनी साथे कोइ अन्यपुरुष डुराचार सेवतो देखवामां आवे, तेवे प्रसंगे मारवो पडे, तथा कोइ श्रावक राजा होय, अथवा तो राजाना हुकमथी युद्ध करवा जवु पडे, तेवे प्रसंगे श्रावक, प्रथम शस्त्र चलावे नहि, परंतु ज्यारे शत्रु शस्त्र चलावी मारवा आवे ते समये शत्रुने मारवा पडे तथा सिंहादि जानवर खावा आवे, ते वखते तेउंने मारवा पडे त्यारे संकल्पथी पण हिंसानो त्याग नथी. ते कारणथी पाच विश्वामांथी अरधी बाद थइ, बाकी अढी विश्वा दया रही अर्थात् मात्र निरपराधी त्रसजीव दृष्टिगोचर आवे तेउंने न मारु एवो नियम रह्यो तेनापण बे भेद छे, एक सापेक्ष, बीजो निरपेक्ष तेमा पण सापेक्ष निरपराधी त्रसजीवनी दया श्रावकथी पलती नथी, कारण के श्रावक ज्यारे घोडा गाडी, बलद गाडी, घोडा, घोडी प्रमुखनी

स्वारि करे छे, त्यारे घोडाप्रमुखने हांकता चावकादि मारे छे; अहींआं घोडा तथा बलदोए कांइ तेउनो अपराध कर्यो नथी, तेउनी पीठ उपर तो चडी रह्या छे, अने जाणता नथी के ते बिचाराउने चालवानी शक्ति छे के नहि ? ज्यारे ते जीवो हलवे हलवे चाले छे, तेमज चालता नथी, त्यारे अज्ञानना उदयथी तेउने गालो देछे, तथा मारे छे, एम निरपराधी जीवोने डुःख आपे छे. वली पोताना शरीरमां तेमज पोताना कुटुंबीउ तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां अर्थात् मस्तकमां, मुखमां, कानमां इत्यादि अवयवोमां कीडा पडे, तेउने दूर करवावास्ते दवा लगाववी पडेछे, जेथी ते जीवोनो नाश थाय छे, आ जीवोए श्रावकोनो कांइ अपराध करेलो नथी, कारण के तेउ तो पोताना कर्मना वशथी एवी योनिमां उत्पन्न थाय छे. कांइ श्रावकनुं बुरुं करवुं, तेमने डुख देवुं, एवा संकल्पथी उत्पन्न थता नथी. परंतु तेउनी हिंसा श्रावकथी त्यागी शकाती नथी. ते कारणथी वली अरधी वाद थइ. बाकी सवा विश्वा दया रही. आ सवा विश्वा दया शुद्ध श्रावक होय ते पाली शके छे. अर्थात् संकल्पथी निरपराधी त्रस जीवोने कारण विना हणुं नहि. आ प्रतिज्ञा ज्यांसुधी पोतानी शक्ति रहे त्यां सुधी पाले. निर्ध्वंसपणुं न करे. सदा मनमां एवी जावना राखे के रखे माराथी कोइ पण जीव हणाय ? वली घरमां आरंज करतां पण यत्नाथी प्रवर्त्ते. लाकडां सलगाववा वास्ते लावे ते सडेलां लावे नहि. आगल उपर जेमां जीव न पडे एवा सुकां, पाकां लाकडां लावे; वली रसोइने वखते लांकडांने खंखेरी जीवरहित करी सलगावे. तथा घी तेल प्रमुख रस जरेली वस्तुउनां वासणोनां मुख बांधी यत्नाथी ते चीजो राखे. उघाडां ते वासणो न राखे. तथा चुलानी उपर अने पाणीआरा उपर चंदरवा बांधे. खावाने जे अन्न अर्थात् अनाज लावे ते जींजेलुं लावे नहि. शुद्ध नवुं अनाज लावे, कदापि एक वर्ष उपरांतनुं अनाज लावे तो जेमां जीव न पड्या होय तेवुं लावे. तथा पाणी गलवा वास्ते बहुज जाडुं वस्त्र राखे. दरेक पहोरे पाणी गले. पाणीनो संखारो, जे कुवानुं ते पाणी होय, ते कुवामां नाखे. तथा वर्षाऋतुमां अनेक प्रकारना असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथनी स्वारि न करे, कारण के ज्यां

चक्र फरेछे त्यां असंख्य जीवोनो विध्वंस थइ जायछे हरिकाय, बहुबी जवाखां फल, त्रससंयुक्त फल खाय नहि पलंग प्रमुखमां मांकड प्र मुख जीव पडे, ते पलंगादि तडकामां राखे नहि, बीजो पलंग बदले वली सडेलां अनाज तडकामां राखे नहि अन्नना संसर्गवालु एवु पाणी मोरीमां नाखे नहि, कारण के मोरीमां बहुज जीव उत्पन्न थायछे, वली मोरीमां सडो थाय तो घरमां बिमारी थइ जायछे तथा फागण शुद १५ पछी आठ मास सुधी अर्थात् कारतक शुदी १५ सुधी पांदडावालां शाक भाजी खाय नहि, कारण के पत्रशाकमां बहुज त्रसजीव उत्पन्न थायछे, एक तो त्रसजीवनी हिंसा थायछे, अने बीजु ते खावाथी अने क रोग शरीरमा उत्पन्न थायछे तथा शीतकालमां एक मास, उनालामां वीश दिवस अने चोमासामां पदर दिवस उपरांतनी बनावेली मिठाइ (पक्वान्न) खाय नहि, कारण के तेमां त्रस, स्थावर जीव उत्पन्न थायछे, तथा खानारने रोगोत्पत्ति थायछे वली वासी अन्न, रोटली, अथाणां प्रमुख वासी खाय नहि, अन्न वासी खावाथी रोगोत्पत्ति थायछे, तेमज बुद्धि मंद थायछे, अने जीवोनो नाश थाय छे आर्द्रा नक्षत्र बेठा पछी केरी खाय नहि, कारण के त्यारथी केरीना रसमां बहुज जीवनी उत्प त्ति थायछे कठोल छाशमां खाय नहि घरमां सावरणी राखे ते कोमल शण प्रमुखनी राखे, जेथी जीव मरे नहि तथा स्नान करती वखते बहु जल ढोळे नहि, रेतीवाली जमीनमां स्नान करे, मोटा वासणमा बेसी स्नान करे, अने स्नाननु पाणी मेदानमा थोडु थोडु छांटी दे मोरी (खाल) उपर बेसी स्नान करे नहि ज्यांसुधी थोडा पापवाला व्यापार, तथा नोकरी मले त्यांसुधी महापापवाला व्यापार, नोकरी करे नहि कोइनो हक्क ओळवे नहि घरमा जूना अन्ननु पाणी बे घडी उपरांत राखे नहि, कारण के तेमां जीव उत्पन्न थइ जायछे तथा जे वस्तु उपाडे तथा मुके ते वखते प्रथम ते जगाने देखीने तथा पुंजीने ते वस्तु लदे तथा मुके मोटी मोरीमां पाणी ढोळे नहि दिवाबत्ती सलगावे ते फा नस प्रमुखमां जीवरक्षा वास्ते राखे जे वासणथी पाणी लदे, ते वासण जुदु करी पाणीमां घोले नहि कारण के मुखनी लाल लागवाथी जीव उत्पन्न थायछे वली बहु साथे बेसी जुठुं खावा, पिवाथी बुद्धि संकोच

पामे छे. वली केटलाएक रोग एवा होय छे के, जे रोगवालानुं जुवुं खावा, पिवामां आवे तो, ते रोगवालानो रोग, खानारा पिनाराने लागी जायछे. जेमके कोढ, क्षय, खस, शीतला प्रमुख ते कारणथी वस्तु एठी करवी नहि, अने बहुनी साथे एकठां बेसी खावुं नहि. वली पाणीना माटलामांथी पाणी काढवावास्ते दांडीवालो लोटो राखे. इत्यादि शुद्ध व्यवहारथी प्रवर्त्ते तो श्रावकने सवा विश्वा दया रहे. आ प्रमाणे श्रावकनुं प्रथम व्रत शुद्ध छे. आ व्रतना पांच अतिचार अर्थात् पांच कलंक छे, तेउने वर्जवा. तेनुं स्वरूप लखिये छियें.

१ प्रथम वध अतिचार. ते क्रोधना उदयथी तेमज बलना अभिमानथी, निर्दय थइने, घोडा, बलद, गाय प्रमुखने मारे कुटे तथा चलावे ते प्रथम अतिचार.

२ बंध अतिचार. ते गाय, बलद, वाछडा प्रमुख जीवने, कठण जबरा बंधनथी बांधे. ते जीवो कठण बंधनथी बहुज दुःख पामे छे, वली कदापि अग्निनो उपद्रव थयो होय तो जलदीथी छुटी शकतो नथी, अने मरी जायछे, ते कारणथी कठण बंधन पण अतिचारछे. तेथी जनावरने बांधवा ते ढीला बंधनथी बांधवा जोइए. वली कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण गाढ बंधनथी बांधवो नहि. जो बांधे तो बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो छ विछेद अतिचार. ते बलद प्रमुखना नाक, कान छेदावे, नाथ नांखे, खांसी करे तो त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो अतिचार आरोपण अतिचार. ते बलद प्रमुख जेटलो भार सहन करी शके तेना करतां विशेष भार नाखे. श्रावके निरंतर जे बलद, घोडा, खच्चर गाडीप्रमुखमां जेटलो भार वहन करी शकता होय, तेनाथी मण, बे मण भार उंछो नाखवो जोइए; तोज पोतानुं व्रत शुद्ध रहे छे. तेमां पण जो कोइ जानवरनी शक्ति मंद थइ होय तो, विवेक राखी, भार घणोज उंछो करी नाखे. वली जानवर दुर्बल थाय तो तेनां घास, दाणा, पाणीनी पण वारंवार खबर राखे; परंतु एवो विचार न करे के बीजाउं जेटलो भार लादता होय, तेटलो हुं पण लाद्या करुं. शक्तिप्रमाणे जानवर पासे भार वहन करावे तो व्यवहार शुद्ध रहे. पोतानी पासे अधिक भार होय तो बीजां भाडां करे, परंतु तुछ

विचार करी अतिचार करे नहि श्रावक एवा व्यवहारथी प्रवर्त्ते नहि तो चोथो अतिचार लागे

५ पांचमो भात, पाणीनो व्यवच्छेद करवो ते अतिचार बलद, घोडा प्रमुखने जे खावायोग्य होय, ते बध करी दे, अथवा थोडु थोडुं काढी लहे खावानो वखत विताये इत्यादि करतां अतिचार लागे

वली कोइनी आजीविका, नोकरी बध करवी, तेपण आज अतिचारमां छे श्रावक तो दास, दासी, कुटुंबना नाना, मोटा सर्वनी तथा गाय, बलद प्रमुखनी खावा, पीवानी खबर लइ, पछी पोते भोजन करे. आ पांच अतिचार छे उपलक्षणथी हिंसाकारी मंत्र तत्रादि कोइने करे तो श्रावकने अतिचार लागे आ पांचे अतिचार श्रावक जाणे, परतु करे नहि आ बारे व्रतना सर्व अतिचार भंग होवाना संभव असंभवनी विशेष चर्चा जोवी होय तो धर्मरत्नप्रकरणग्रथनी श्रीदेवेंद्रसूरि कृत टीका जोवी अहींआं तो मात्र हु अतिचारज लखुंछुं इति श्रावक प्रथम व्रत

बीजा स्थूल मृपावादविरमणव्रतनु स्वरूप लखीए छीए स्थूल अर्थात् मोटुं मोटा जूठानो (विरमण) त्याग करवो ते मोटां जूठा बोलवाथी जगत्मा बोलनारनी अप्रतीति थइ जाय छे, अपयश फेलाय छे, धर्मनी निदा थाय छे, अने पोतानी मतलब वास्ते जे कमवेश करवु, तेनो जे त्याग, ते मृपावादविरमण व्रत कहेवाय छे मृपावादना बे भेद छे १ द्रव्यमृपावाद, २ भावमृपावाद तेमां सांसारिक तेमज धार्मिक व्यवहारमां जाणपणे तेमज अजाणपणे जे असत्य बोलवु ते द्रव्य मृपावाद छे, अने सर्व परभाव वस्तुने अर्थात् पुद्गलादि जडवस्तुने आत्मत्व बुद्धिथी पोतानी कहेवी, तथा राग द्वेष, कृष्णादि लेश्याथी आगम विरुद्ध बोलवु, शास्त्रना साचा अर्थ कुयुक्तिथी नष्ट करवा, उत्सूत्र बोलवु, ते भावमृपावाद कहेवाय छे

आ व्रत सर्वव्रतोमां मोटु छे ते पालवामां बहुज शुद्धउपयोग तेमज होशियारी जोइए, कारण के प्रथम व्रतमा तो मात्र जीवस्वरूपजाणवाथी दया पली शके छे बीजानी वस्तु तेनी परवानगी विना न लीधाथी अदत्त विरमण व्रत पली शके छे स्त्री मात्रनो संग त्यागवाथी मेथुन

विरमणव्रत पली शके छे, अने नवविध परिग्रहनो त्याग करवाथी परिग्रह विरमणव्रत पली शके छे. एवीरीतें एकेक द्रव्यने जाणवाथी आ चारे व्रत पाली शकाय छे, अने मृषावाद विरमण व्रत तो ज्यां सुधी षट् द्रव्यनी गुणपर्यायथी तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी सारीरीतें पिछान न थइ होय, त्यां सुधी बराबर पालवुं कठिन छे, कारण के एक पर्यायमात्रपण विरुद्ध भाषण करवाथी आ व्रतभंग थइ जाय छे. तेजकारणथी शास्त्रमां साधुउने बहु बोलवानो निषेध करेलो छे. वली पूर्वोक्त चारे महाव्रतोमांथी एक महाव्रत जो भंग थाय, तो चारित्रनो भंग थाय, अथवा नहि पण थाय, कारण के जो एकज कुशील सेवन करे, तो सर्वथा चारित्रभंग थाय, बीजाव्रतोना खंडनथी चारित्रदेशभंगथाय, परंतु तेनुं ज्ञान, दर्शनभंग न थाय. आ व्यवहारभाष्यनुं कथन छे, अने जो मृषावाद विरमणव्रतभंग थाय तो तो ज्ञान, दर्शन तेमज चारित्र, आ त्रणे जडमूलथी जतां रहे छे. अने बोलनार मरीने दुर्गतिमां जाय छे, अनंत संसारी, दुर्लभबोधी थइ जायछे, ते कारणथी जो आ व्रत पालवुं होय तो षट् द्रव्यना गुणपर्यायनुं स्वरूप जाणवा वास्ते अति उद्यम करे. कदापि बुद्धिनी मंदता होय तो गीतार्थना वचन प्रमाणे श्रद्धा प्ररूपणा करे. तात्पर्य ए छे के द्रव्य मृषावादना त्यागी जीव तो छए दर्शनोमां प्राप्त थइ शके छे, परंतु भाव मृषावादना त्यागी तो मात्र श्रीजिनेंद्र देवना मतमांज मली शकशे. जे जीव श्रद्धा रुचि शुद्ध धारण करशे, तेज तेवो थइ शकशे. आ मृषावादना पांच मोटा भेद छे, ते श्रावकें अवश्य वर्जवा जोइए, तेथी तेनुं स्वरूप कहियें छियें.

१ कन्यालीक जूठ. पोताना मेलापीनी कन्या होय अने तेनुं वेशवाल करवानो प्रसंग होय, ते वखते कन्यानी मागणी करनारा पुछे के आ कन्या केवी छे ? ते प्रसंगे संबंधीनी प्रीतिनां कारणथी, ते कन्यामां जे दूषण होय ते छुपावे, वली गुण न होय छतांपि अधिक गुणवाली कहे, तेमज कहे के आ कन्या निर्दोष छे, आवी कुलवती, सुलक्षणवती, साक्षात् देवांगना समान, तमने मलवी मुश्केल छे. वली जो कन्यानां मातपिता साथे द्वेष होय तो, कन्या निर्दोष, होय, छतांपि कहेके आ कन्यामां सारां लक्षण नथी, मांजरी आंखवाली छे, सापणवाली छे, तेनी

साथे संबंध करशो तो जरूर पश्चात्ताप करशो, ए प्रमाणे अछतां दूषणो कहेवां आ कन्यालीक जूठ छे प्रथम तो व्रतधारी श्रावक कोइना सगाइ संबंधना झगडामां पडे नहीं, कदापि पोताना सगां, मित्रादि होय, अने तेउं पुछे तो यथार्थ कहे, वली कहे के भाइ! तमे पोतानी मेले निश्चय करी ल्यो कारण के जन्मपर्यंतनु काम छे ए प्रमाणे कहे, परतु असत्य न बोले, आ कन्यालीकमां उपलक्षणथी सर्व वे पगवालांनु असत्य न बोले

२ गवालीक जूठ सर्व चोपद, ते हाथी, घोडा, बलद, गाय, भेंस प्रमुख, संबधी असत्य न बोले

३ भूम्यालीक जूठ ते बीजानी जमीनने पोतानी कहेवी, तेमज बीजानी जमीनने त्रीजानी कहेवी इत्यादि, तेमज घर, हवेली, वाडी, बाग, वृक्षादि संबंधी, तथा सर्व परिग्रहसंबधी पण जूठ न बोले

४ थापणमोसानुं जूठ कोइपुरुष श्रावकने प्रतीतवालो जाणीने तेने पोतानी कांइ वस्तु साक्षी राख्याविना, तेमज लखत कराव्याविना सोंपी गयो होय, पाछो सोंपनार मागवा आवे, त्यारे राखनार इनकार करे, अने कहे के तमे कोने सोंपी गया छो ? हु तो तमोने जाणतो पण नथी के तमे कोण छो ? एम असत्य बोली तेनी वस्तु ठगवे आ महापाप श्रावकें कदापि नहि करवु जोइए

५ जूठी साक्षी पुरवी बे लख्स आपसमा टंटो करे छे, तेबामां एकनी पासेथी धन लइ, अथवा तो तेनी शरम खातर, जूठी साक्षी पुरवी आ कामपण श्रावकें नहीं करवु जोइए आ व्रतना पांच अतिचार छे, ते वर्जवा

१ सहसाभ्याख्यान अतिचार विचार कर्याविना कोइने कलंक देवां, जेम के तु व्यभिचारि छो, चोर छो, जूठो छो, इत्यादि श्रावक कदापि कोइनो प्रगट अवगुण देखे, तोपण पोताना मुखथी तेने जरापण दुःख थाय तेम न बोले, तो पछी जेमा महापाप छे एवुं कलक तो केमज आपे ?

२ रहसाभ्याख्यान अतिचार बे अथवा वधारे लख्सो एकांतमां बेसी कांइमत बांचे छे तेउने देखी कहे के तमे राज्य विरुद्ध प्रपच करो छो, एम कही तेउंनी चुगली खाइ, तेउंने राज्यदंड अपाववो ते महापाप छे

३ स्वदारा मंत्रभेद अतिचार. पोतानी स्त्रीए कांइ छानी वात कहेली होय, ते वात पति लोकोमां प्रकट करे. उपलक्षणथी भाइ प्रमुखनी कहेली वात प्रगट करवी. तात्पर्य ए छे के मर्मवाली वात प्रगटथवाथी स्त्री आदि कुवामां पडी डुबी मरे छे.

४ मृषा उपदेश अतिचार. बीजाउने असत्य कामो करवानो उपदेश आपवो. वली विषयसेववानां चोराशी आसन शिखववां, तथा बीजाउ जेथी दुःखमां आवी पडे तेवो उपदेश करवो. वली वीर्यपुष्टिनां औषधादि बताववां, जेथी विषय, कषाय अत्यंत वृद्धि पामे, अने जेथी बहुज विषयसेवन करवामां आवे तेवो उपदेश करवो ते.

५ कूट लेखकरण अतिचार. जूठा दस्तावेज बनाववा, जूठी सही करवी, जूठी महोर छाप करवी, अक्षरो भुंसी नाखी, नवा अक्षरो दाखल करवा, इत्यादि बीजाने नुकशान थाय तथा दुःख थाय एवा हेतुथी कूटलेख करवा ते आ पांच आतिचार. तथा पूर्वोक्त पांचप्रकारनां असत्य नरकादि गतिनां कारण जाणी, श्रावक अवश्य वर्जे. इति मृषावादविरमणव्रत.

३ त्रीजा स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. मोटी चोरी करवी, जेमके धाड चोरी करवी, रस्तानी लुट करवी. गणेशीउ मारी भीत फोडी खातर पाडवुं, जबरदस्तिथी बीजानी वस्तु लेवी, छल कपटथी ठगीने बीजानी वस्तु लेवी, विश्वासघात करी बीजानी वस्तु उंलवी जवी, अपराधसहित मिलकतनो खोटो उपयोग करवो, मिलकतनी अदलाबदली करवी, इत्यादि अदत्तादान अर्थात् चोरीनुं स्वरूप छे. चोरी करवाथी परलोकमां नरकादि माठी गति प्राप्त थाय छे, अने आ लोकमां पण प्रगट थवाथी राज्यदंड, अपयश, तथा अप्रतीति थाय छे. ते कारणथी श्रावक अदत्तादाननो त्याग करे. अदत्तादान व्रतना बे भेदछे, ते कहियें छियें.

द्रव्य अदत्तादान विरमण व्रत. पूर्वोक्त प्रकारें बीजाउनी पडेली के विसरेली वस्तु लेवी नहि ते द्रव्य अदत्तादान विरमणव्रत छे.

२ भाव अदत्तादान विरमणव्रत. पर जे पुद्गल द्रव्य, तेनी रचना, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिरूप, त्रेवीश विषय, तथा आठकर्मनी वर्गणा,

आ सर्व पराइ वस्तु छे, ते वस्तु तत्त्वज्ञानमां जीवने अग्राह्य छे, छतां तेमनी जे छव्य भावथी वांछा करवी ते भाव चोरी समजवी जिनागम श्रवण करी तेमनो त्याग करवो, तथा पुजलानंदि पणानो अभाव करवो, तेज भाव अदत्तादान विरमण व्रत छे जे जे कर्मप्रकृतिनो बंध नाश पामेल होय, ते भाव अदत्त विरमण व्रत कहेवाय सामान्य प्रकारें अ दत्तना चार भेद छे

१ कोइनी वस्तु तेनी परवानगी विना लेवी ते स्वामि अदत्त २ स चित्त वस्तु अर्थात् जीववाली वस्तु, फूल, फल, बीज, गुच्छा, पत्र, कंद मूलादि, बकरा, गाय, सुअरादि, तेउंनो नाश करवो, छेदवां, भेदवां, कापवां इत्यादि ते जीव अदत्त, हेतु ए छे के फुलादि जीवोए पोताना शरीरने छेदवा, भेदवानी आज्ञा आपी नथी, के अमारु छेदन, भेदन करो, ते कारणथी ते जीव अदत्त छे ३ जे वस्तु तीर्थंकर, अर्हंत भगवंतें निषेध करेली छे, तेउंनु जे ग्रहण करवु, जेमके साधुने अशुरू आहार करवानो निषेध छे, अने श्रावकने अजक्ष्य वस्तुग्रहण करवानो निषेध छे, छता तेउं आज्ञाविरुद्ध ग्रहण करे तो ते तीर्थंकर अदत्त ४ कोइ साधु शास्त्रोक्त रीति मुजब निर्दोष आहार शुरू ग्रहण करी लावे, पछी ते आहारादिने गुरुनी आज्ञा विना उपजोगमां लहे तो ते गुरु अदत्त

पूर्वोक्त चारे अदत्त संपूर्ण तो जैनना यतिज त्यागी शके, गृहस्थथी तो मात्र स्वामि अदत्तज त्यागी शकाय छे, ते कारणथी तेनीज आ स्थळे मुख्यता छे सारांश के पराइ वस्तु पूर्वोक्त रीतें लेवी नहि, जो लहे तो चोर कहेवाय, राज्यदंड पामे, अपयश, अपकीर्त्ति, अप्रतीति थाय, ते कारणथी पारकी वस्तु ग्रहण करवी नहि जे वस्तु यत् किंचित् मूल वाली छे, अर्थात् जे लेवाथी तेना मालेकने एवु नुकसान थतु नथी के कोइ समजु माणसना विचारमां ते भारे पडतुं थाय, सारांश के जे ले वाथी चोर नाम पडतुं नथी, तेवी वस्तु लेवानी जयणा राखे वली को इनी पडीगयेली वस्तु हाथमां आवे, पछी जाणवामा आवे के ते वस्तु अमुक सख्सनी छे, तो ते वस्तु तेने आपे, जो ते वस्तुना मालेकनो पत्तो न मले, अने पोतानु मन दृढ रहे तो ते वस्तु पोते राखे नहि, कदाचित बहु मूल्यवान् वस्तु होय, अने मन दृढ रहे तो ते वस्तु

लइ पोताना स्वाधीनमां केटलाएक दिवस राखे, जो तेना मालेकनो पत्तो मले तो तेनी खात्री करी तेने सोंपी दे, अने संपूर्ण रीतें शोध करतां बतां तेनो मालेक मालम न पडे तो धर्म खातामां ते धननो उपयोग करे. पोतानो स्वन्नाव अत्यंत लोन्नी होय तो पण ते वस्तुनी अर्ध किंमत तो धर्मना काममांज वापरे. पोतानी जमीनमां खोदतां धनादि निकले तो ते राखवावो आगार बे. परंतु तेमां पण अर्ध हिस्सो, अथवा चोथो हिस्सो धर्ममां वापरे तो ते उत्तम बे. वली बीजानी जगा किंमत आपी लीधी होय, ते खोदतां जो धनादि निकले, अने पोताना मनमां संतोष होय तो ते जगा वेचनारने निकलेली वस्तु सोंपी दे, परंतु पोतानो स्वन्नाव लोन्नी होय अने वेचनारने आपवानी मरजी न होय, तो पण अर्धन्नाग धर्ममां वापरे, अने अर्धन्नाग पोते राखे. वली कोइ सख्स पोतानी पाबल धन मुकी मरी गयो होय, अने तेनो कोइ वारस न होय, एवी बीना श्रावकना जाणवामां आवे तो उत्तम माणसोने पंचमां राखी तेउने ते बीना जाहेर करे, अने पंचना फरमान मुजब करे; ते प्रमाणे करतां कदापि देशकालनी विषमताथी राज्यसंबंधी क्लेश उठवानो संन्नव लागे, तथा कोइ लोन्नी राजा फरमान करे के तमारा घरमां आवीरीतनुं बीजुं धन बे इत्यादि विटंबना थवानो न्नयलागे तो मौनपणे ते धन धर्मकार्योमां वापरे.

घरनी चोरीनुं स्वरूप आ प्रमाणे. घरनी सर्व वस्तुउनां मालेक मात पिता बे, तेउनी आज्ञा विना धनवस्त्रादि लेवानी जयणा राखे, तेमज जे उनी साथे प्रेम होय, तथा जेउ संबंधी होय, अने जेउना घरमां जवा आववानो तेमज खावा पीवानो व्यवहार होय, तेउने पुछ्याविना कांइ वस्तु खावामां अथवा न्नोगववामां आवे तो तेनो आगार राखे, परंतु जो ते वस्तुनो उपन्नोग करतां मालेकनुं मन उःखाय तो ते वस्तु ग्रहण करे नहि. ए प्रमाणे त्रीजुं अदत्त व्रत पाले. आ शुद्ध व्यवहार अदत्तादानविरमण व्रत बे.

निश्चयथी अदत्तव्रत तो जेटलो अबंध परिणाम थयेल बे, अर्थात् गुणस्थानकनी वृद्धि थवाथी बंधव्यवछेद थयो होय बे, तेज निश्चय अ-

दत्त विरमण व्रत कहेवाय छे आ व्रतना पांच अतिचार छे ते वर्जे, तेनु स्वरूप कहियें छियें

१ स्तेनाहृत अतिचार चोरनी चोरेली वस्तु स्तेनाहृत कहेवाय छे ते वस्तु लहे नहि, अर्थात् चोरनी वस्तु जाणीने लहे नहि, कारण के जे चोरीनी वस्तु जाणीने लहे छे, ते लेनार पण चोर छे, जैन मतना शास्त्रोमां चोरना सात प्रकार छे यथा ॥ चोरश्चौरापकोमन्त्री, भेदज्ञ काणकक्रयी ॥ अन्नद स्थानदश्चैव, चौर सप्तविध स्मृत ॥ १ ॥ आ प्रथम अतिचार

२ प्रयोग अतिचार ते चोरी करनाराउने प्रेरणा करवी जेमके अरे! तमे धधाविनाना ठानामाना आजकाल केम वेसी रह्या छो ? जो तमारी पासे खरची न होय तो हुं मदद करुं तमे लइ आवशो ते वस्तु हु वेची आपीश तमे चोरी करवा जाउ इत्यादि वचनोथी चोरोने प्रेरणा करवी आ वीजो अतिचार

३ तत् प्रतिरूपक व्यवहार अतिचार ते सारी वस्तुमां खराब वस्तु मेलवी वेचवी जेमके केशरमां कसुबादि मेलववां, घीमां ठालादि, हिंगमां गुवरादि मेलववां खोटी कस्तूरी खरी दाखल वेचवी, अफीणमा भेल संभेल करी वेचवुं, जूनावस्त्रने रंगावी नवाना भावथी वेचवां, रूमां पाणी नाखी वेचवुं, दुधमां पाणी भेलवी वेचवुं इत्यादि काम करवां आ त्रीजो अतिचार

४ राज्य विरुद्ध गमन अतिचार ते पोताना शेहेरना अथवा देशना राजाए फरमान कर्युं होय के अमुक गाम जवुं आववु नहि, तेमज ते गामना लोको साथे व्यापार करवो नहि, छता राजानी आज्ञानुं उल्लघन करीने वैरी राजाना देश गाममां जवुं आववुं तथा व्यापार करवो आ चोथो अतिचार

५ खोटा तोलां मापां राखवां ते अतिचार ठंगां तोला, मापथी देवु, अने अधिक तोला,मापथी लेवुं आ पाचमो अतिचार इतितृतीयव्रतस्वरूप

चोथु व्रत मैथुनसेवननो त्याग, ते मैथुन त्यागव्रत कहेवाय छे मैथुनना वे भेद छे १ द्रव्य मैथुन त्याग, २ भाव मैथुन त्याग द्रव्य मैथुन तो परस्त्री तथा परपुरुष साथे संगम करवो ते तेमां पुरुष स्त्रीनो

त्याग करे, अने स्त्री पुरुषनो त्याग करे, अर्थात् अरस परस रतिक्रीडा काम सेवननो त्याग करे, ते द्रव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहेवाय छे.

भाव मैथुननुं स्वरूप एवुं छे के चेतनरूप पुरुषें, परपरिणतिरूप विषय विलास, अने तृष्णा, ममतारूप कुवासना, एवी निश्चय परस्त्रीने मली तेनी साथे लालन, पालन, कामविलास करवो ते. तेनुं जिनवाणीना उपदेशथी, तथा गुरुनी हितशिक्षाथी ज्ञान थयुं, त्यारे जातिहीन जाणीने, तेमज भविष्यमां तेनुं सेवन महादुःखदायक परिणामवालुं थवानुं छे एम जाणीने, तथा पूर्वकालमां तेना सेवनथी अनंत जन्म मरणनां दुःख अनुभव्यां छे एम विचारीने ते विजातीय स्त्रीनो त्याग करवो ते ठीक छे, अने मारी परमभक्त, स्वजातीय, उत्तम, सुकुलवती स्त्री, समतारूप सुंदरी, तेनो संग करवो वास्तविक छे. वली विभाव परिणतिरूप परस्त्रीए मारी सर्वविभूति हरण करी छे, तेथी सद्गुरुनी सहायताथी हवे ते दुष्ट प्ररिणतिरूप स्त्रीना संगनो थोडो निग्रह करुं, त्यागवानो भाव आदरुं, जेथी शुद्धस्वभाव घटरूप घरमां प्रवेश करुं, तथा मारा स्वरूपना तेजनी वृद्धि थाय एम प्रवर्तुं; एवी समजण लावीने परपरिणति मग्नतानो त्याग करे, तेमज कर्मना उदयमां व्यापक न थाय, अने शुद्ध चेतनाना संगी थाय, ते भाव मैथुनत्यागी कहेवाय छे.

द्रव्य मैथुनना त्यागी तो छए दर्शनमां मली शके छे, परंतु भावमैथुनना त्यागी तो श्रीजिनवाणी श्रवण करवाथी, ज्यारे भेदज्ञान घटमां प्रगट थाय छे, त्यारे भवपरिणतिथी सहज उदासीनरूप भाव थाय छे; तेवा मैथुनना त्यागी जैनमतमांज होय छे.

स्थूल परस्त्रीगमनविरमणव्रत. ते परस्त्रीनो त्याग करवो, परपुरुषनी विवाहिता स्त्री, तथा परनी राखेली स्त्री, तेनी साथे अनाचार न सेववो, एवुं जे प्रत्याख्यान, ते परदारगमन विरमण व्रत छे; अने पोतानी स्त्रीमां संतोष करवो एवुं जे व्रत, ते स्वदारासंतोष व्रत छे.

देवांगना तथा तिर्यंचणी, तेओनी साथे कायाथी मैथुन सेवन करवानो निषेध आ व्रतमां छे. वली वर्त्तमान स्त्रीनो त्याग करीने, बीजी स्त्री साथे विवाह न करे; तथा दिवसें पोतानी स्त्री साथे पण मैथुन सेवन न करे, कारण के दिनसंभोगथी जे संतान उत्पत्ति थाय छे, ते

निर्बल थाय छे जो काम अभिलाषा अधिक होय तो दिवसनी पण मर्यादा करे तेवीजरीतें स्त्रीपण पर पुरुषनो त्याग करे ए प्रमाणे चोथुं व्रत पाले आ व्रतना पांच अतिचार छे ते वर्जे, ते लखियें छियें

१ अपरिगृहीतागमन अतिचार परण्या विनानी (कुंमारी) तथा विधवा स्त्री अपरिगृहीता कहेवाय छे, कारण के तेउनो कोइ भर्त्तार नथी कोइ अल्पमति, *विषयाभिलाषी मनमां एम विचारे के में तो प*रस्त्रीनो त्याग करेलो छे, अने अपरिगृहीता तो कोइनी स्त्री नथी, तेथी तेनी साथे विषयसेवन करवाथी मारुं व्रतभंग नहि थाय, एवो विचार करीने कुमारी तथा विधवा स्त्रीनी साथे भोग विलास करे, तथा स्त्री पण व्रतधारण करीने कुंवारा तथा रांडेला पुरुषनी साथे व्यभिचार सेवन करे तो आ अतिचार लागे आ प्रथम अतिचार

२ इत्वर परिगृहीतागमन अतिचार इत्वर अर्थात् अल्पकाल को इपुरुषें थोडी मुदत माटे कोइ वेश्याने पोतानी करी राखेली होय तेवे प्रसंगें ते पुरुष अज्ञानना उदयथी एवो विचार करे के मारे तो पर स्त्रीनो त्याग छे, अने वेश्यानो संबध तो मारे अल्पकाल माटे छे, तेथी वेश्यानी साथे सेवन करवाथी मारा व्रतनो भंग थशे नहि, एवा अज्ञानतायुक्त विचारथी विषयसेवन करे तो बीजो अतिचार लागे वली स्त्री पण पोतानी शोक्यना वाराने दिवसे पोताना भर्त्तारनी साथे विषय सेवन करे ते एवा वीचारथी के मेंतो मारापति साथे विषय सेवन करेल छे, तेथी मारा व्रतनो भंग थशे नहि, तेवे प्रसंगे स्त्रीने पण अतिचार लागे पूर्वोक्त बने रीतिमां श्रावक यथार्थ रीतें जाण्या पछी फरीथी ते प्रमाणे करे तो व्रतभंग थाय, परंतु अतिचार नहि

३ अनंगक्रीडा अतिचार. अनंगनाम काम ते काम कदर्प्प आश्रत करवो आलिंगन चुंबन प्रमुख करवां नेत्रोना हाव भाव कटाक्ष, उच्चा मस्करी प्रमुख, परस्त्री साथे करवां मनमां एवो निचार करखो के में तो परस्त्री साथे परस्पर एक शय्या उपर विषयसेवननो त्याग करेलो छे, परंतु अनगक्रीडानो त्याग करेलो नथी एवो विचार करनार मूढमति जाणतो नथी के पूर्वोक्त कामक्रीडाथी व्रत कदापि रहीशके नहि, कारण के तेथी मनोवृत्तिथी महापाप तो तेजीवें उपार्जन करी लीधुं निश्चय नयना

मतथी तेनो व्रतभंग पण थइ गयो. वली पोतानी स्त्रीसाथे चोराशी आसनोथी विषयसेवन करे, तथा पंदर तिथिना विचारे स्त्रीनी साथे अंगमर्दनादि पूर्वक काम प्रदीप्त करे, अत्यंत कामाभिलाषी तथा पोतानी स्त्रीनो योग न प्राप्त थाय तो हस्तकर्म करे. स्त्रीपण अत्यंत कामव्याप्त थइ गुह्यस्थानमां वस्तु संचारादि हस्तकर्म करे. तेवा प्रसंगे आ अतिचार लागे. ते कारणथी श्रावकें अनेक उपायथी काम इच्छा मंद करवी जोइयें, कारण के विषयवृत्ति मंद थवाथी, अने वीर्यनुं रक्षण करवाथी, बुद्धि, आरोग्यता, आयु, बल प्रमुख वृद्धि पामेछे, अने कामसेवन अधिक करवाथी तेउनी मंदता थतां मन मलिन थायछे, पापवृद्धि पामेछे, क्षय, भ्रम, मूर्छा, क्लम, स्वेदादि अनेक रोग उत्पन्न थायछे. ते कारणथी मात्र जेथी वेदविकार शांत थाय, तेटलुंज मैथुन सेवन करवुं, एवी अभिलाषा जोइए. वली ज्यारे काम उत्पन्न थाय, त्यारे स्त्रीनी कामसेवननी जगाने जाजरु समान गणे. एवो विचार मनमां लावे के स्त्रीनुं शरीर मलमूत्रथी भरेलुं छे, विषयसेवननुं स्थान अत्यंत मलिन, दुर्गंधमय छे, मुखमां पण दुर्गंधमय लाल छे, नाकपण दुर्गंधयुक्त श्लेष्मवालुं छे, कानमां मेल छे. पेटमां विष्टा मूत्र भरेल छे, नसोमां खानपाननो दुर्गंधमय रस रुधिर, हाड, चाम, चरबी, वात पित्त, कफ भरेल छे, स्त्रीनुं शरीर अत्यंत अशुचिनुं पुतलुं छे, ज्यांथी वास निकलशे त्यां महादुर्गंधमय वास निकलशे, वली ते शरीर अनित्य, अशाश्वत, सडन, पडन, विध्वंसन भाववालुं छे, ए प्रमाणे स्त्रीना शरीरनो स्वभाव छतां दिलगिरि छे के चतुर पुरुषो पण कामाधीन थइ विषयसेवनमां मग्न रहेछे, तेथी पूर्वोक्त सत्य समजथी विचार करी कामने शांत करे. आ त्रीजो अतिचार.

४ परविवाहकरण अतिचार. पोताना पुत्र, पुत्री विना, यशवास्ते तथा पुण्यवास्ते, बीजाउना विवाह करे, करावे. आ चोथो अतिचार.

५ तीव्रानुराग अतिचार. पुरुष, स्त्रीउपर, तेमज स्त्री, पुरुष उपर काम सेवन अभिलाषाथी अत्यंत राग, स्नेह राखे. परस्त्रीने देखी मनमां तेनीसाथे मैथुन सेवननी बहुज चाहना राखे. रात दिन कामकाज करतां सुतां, बेसतां, उठतां, जतां, आवतां, स्त्रीमांज चित्तवृत्ति राखे; तेमज कामवृद्धिमाटे, अफीण, माजम, भांग, हरताल, पारा, त्रांबु प्रमुख

खाय, अने तेप्रमाणे खाइ कामवृद्धि करी, स्त्रीसाथे अत्यत प्रीति करे स्त्रीपण कामवृद्धिमाटे अनेक औषधोपचार करे, हावजाव, विषय, खा खसा करे आ पांचमो अतिचार पांचे अतिचारनु स्वरूप श्रावक जाणी तेने तजवानी अजिलाषा करे पाचे अतिचारनु विशेष स्वरूप धर्मरत्न प्रकरणनी टीकाथी जाणवुं इति चतुर्थव्रत

५ पांचमा स्थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतनु स्वरूप लखियें ठियें परि ग्रहना वे जेदछे एक बाह्यपरिग्रह अधिकरणरूप, ते द्रव्य परिग्रह, नवप्रकारनो छे बीजो जाव परिग्रह, ते चौद अन्यतर ग्रथिरूप, परजाव ग्रहणरूप, समस्त प्रदेश सहित, सकषायीपणे बध, ते जाव परिग्रह छे वली शास्त्रमां मुख्य वृत्तिथी, मूर्छाने जाव परिग्रह, कहेली छे तेमा चौद प्रकारना अन्यतर परिग्रह आ प्रमाणे छे १ हास्य, २ रति, ३ अ रति, ४ जय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोज, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुसकवेद, १४ मिथ्यात्व आ चौद अन्य तर ग्रथि छे आ संसारमां जीवने केवल अविरतिना बलथी इछा, आ काशसमान अनती छे कदापि तेनु माप थइ शकतु नथी अविरतिना उदयथी इछा, अने इछावलथी कर्मबधनमां पडतां थका चारे गतिमां आ जीव ज्रमण करेछे जवितव्यताना योगें पुण्यना उदयथी मनुष्यजवा दि सकल सामग्रीनो योग प्राप्त करीने सद्गुरुना सत्सगथी श्रीजिनेश्वर जगवाननी वाणी श्रवण करवामां आवी, अनुक्रमें चेतना, जाग्रतदशानो अनुजव करवा लागी, मनमां विचार थयो के अहो! हु समस्त परजा वथी अन्य हु! अवधी, अछेद्य, अजेद्य, अदाह्य धर्मी हुं! परतु इछाने अधीन धनवाथी समस्त छेदन, जेदन, परिज्रमणादि दुःखोने जोगव नार परधर्मी थनी रह्यो हु! ते वास्ते समस्त परजावनु मूल जे इछा छे, ते दूर करु बाद समस्त परजाव त्यागरूप चारित्र आदरे साधुवृत्ति अ गीकार करे अने जे जीव इछानुं प्रबल होवाथी एकदम सर्व परिग्रह त्यागवाने समर्थ न होय, अने दोषथी करतो होय, तो गृहस्थधर्म, इछा परिमाणरूप व्रत आदरे ते इछा परिमाण व्रत नवप्रकारे छे तेनु स्वरूप

१ प्रथम धनइछा परिमाणव्रत धनना चार प्रकार छे १ गणिम धन नालीयर प्रमुख, जे गणत्रीथी वेचवामां आवे ते २ धरिम धन, गोल

प्रमुख, जे तोलीने वेचवामां आवे ते. ३ परिछेद्य धन, सोनुं, रूपुं, जवाहिरप्रमुख, जे परीक्षाथी वेचवामां आवे ते. ४ मेय धन, दुधप्रमुख, जे मापीने वेचवामां आवे ते. आ चारे प्रकारना धननुं परिमाण करे, ते धन परिमाण व्रत.

२ धान्य परिमाण व्रत. धान्यना चोवीश प्रकार छे. १ कमोद, २ घउं, ३ जुवार, ४ वाजरी, ५ जव, ६ मग, ७ मठ, ८ अडद, ९ घुंट, १० चोडा, ११ मटर, १२ तुअर, १३ किसारी, १४ कोद्रवा, १५ कंगणी, १६ चणा, १७ वाल, १८ मेथी, १९ कलथी, २० मसूर, २१ तल, २२ मंडवा, २३ कुरी, २४ वंटी. आ धान्य खावा वास्ते तेमज व्यवहार वास्ते उपयोगी छे; अने १ धाणा (धनीया), २ भींडी, ३ सोवा. ४ अजवायन, ५ जीरुं, आ पांच धान्यनी जाति छे, परंतु औषधादिमां काममां आवे छे. तथा १ शामक, २ मणकी, ३ भुरट, ४ चेकरीआ, आ चार मारवाड देशमां प्रसिद्ध छे. वीजां पण केटलांएक धान्य वाव्याविना उगे छे, जे लोको दुकालना वखतमां खाय छे. आ सर्व जातिनां धान्यनुं परिमाण करे.

३ क्षेत्रपरिग्रह व्रत. वाववाना खेतर, तथा वाग, वगीचादि जाणवां क्षेत्रना त्रण भेद छे १ वर्षादना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र, २ कुवाना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र, ३ वंने प्रकारना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र. ए प्रमाणे क्षेत्र परिमाण करे.

४ वास्तुक परिमाण व्रत. घर, हाट, हवेली प्रमुख. तेना पण त्रण भेद छे १ जमीन तल माल विनाना. २ एकमाल, वे माल, त्रणमाल, यावत् सातमाल सुधी, ३ भोयरां. तेनुं परिमाण करे.

५ रूप्य परिग्रह परिमाणव्रत. सिक्का विनानुं काचुं रुपुं, तेना तोलनुं परिमाण करे.

६ सुवर्णपरिग्रहपरिमाण व्रत. सिक्का विनानुं सोनुं, तेना तोलनुं परिमाण करे.

७ कुपदपरिग्रहपरिमाण व्रत. त्रांबुं, पीतल, जसत, कांसुं, सीसुं, लोढुं प्रमुख धातुनां वासणोना तोलनुं परिमाण करे.

८ द्विपदपरिग्रहपरिमाण व्रत. दास, दासी, पगारदार मुनीम प्रमुख राखवां, तेनी संख्यानुं परिमाण करे.

ए चौपदपरिग्रहपरिमाण व्रत गाय, भेंस, घोडा, हाथी, बलद, बकरी प्रमुख जानवरो राखवानी सख्यानु परिमाण करे

हवे पोतानी इछा परिमाणथी परिग्रह केवीरीतें राखे, ते कहीए छीए रुपु तथा सोनु, घडेलु तेमज नहि घडेलु आटला वजन राखु, तथा रुपैया, सोनामहोर, जवाहीर, आटलां राखु, ते प्रमाणे परिमाण करे, ते उपरांत पुण्योदयथी धनवृद्धि थाय तो, वधेलु धन, धर्मकार्योमा वापरे. वली वर्षप्रति आटली जातनां वस्त्र पहेरुं, तथा एकवरसमां आटलु अन्न घर खरच वास्ते राखु, तथा आटलु व्यापार वास्ते राखुं, इत्यादि बाबतोनु स्वरूप विस्तारथी, सातमा व्रतना स्वरूपमां कथन करवा मां आवशे क्षेत्र परिमाणमां, खेतरो, वाडी, बगीचा, सर्व मली आटलां सांती वा विघा जमीन राखुं, तथा घर, चोकबध, लडकीबध, दुकान, तबेला, वखारो, तथा परदेश संबधी दुकानोनी जयणा तथा भाडे राखवाना मकानोनी जयणा, तथा भाडे राखेलां मकानो समराववानी जयणा राखे, तथा कुटुंब सबधी घर बनाववाना उपदेशनी जयणा, वली पोताना संबधी तेमज गुमास्ता परदेश गया होय, अने पाछल तेउनां घर प्रमुखसमराववा पडे तो जयणा, आजीविकावास्ते कोइनी चाकरी करवी पडे, तेवे प्रसंगे शेठना घरप्रमुख समराववानी जयणा कुपद परिमाणमा त्रांबा, पितल, कांसा विगेरे धातुनां वासणो तथा धातु तुटी अमुक मण राखवानी जयणा, द्विपद परिमाणमां दास, दासी वेचाता लेवानो प्रतिबध, परंतु पगारवाला नोकरो गणत्रीथी राखवा जोइए, वली अमुक गुमास्ता राखवानी जयणा, चौपद परिमाण, गाय, भेंस, बकरी प्रमुख राखवानु परिमाण सख्याथी करे. आ व्रतना पांच अतिचार छे तेनु स्वरूप लखीए छीए

१ धन परिमाण अतिक्रम अतिचार ज्यारे इछा परिमाणथी अधिक धन थइ जाय, त्यारे तीव्र लोजना उदयथी मनमा एवो संकल्प करे के, मारो पुत्र मोटो थयो छे, तेने धननी जरुर छे, वलि ते कमाइ शके तेवो थयो छे, तेथी मारे तेने धन आपवुं जोइए, एवो कुविकल्प करी पुत्रना नामथी अमुक रूपीआनी रकम जुदी राखे, ए प्रमाणे जुदी जुदी रीते धनना खातां राखे धान्य पोताना परिमाणथी अधिक राखवानी

इछा थाय त्यारे बीजाउंना घरमां रखावे, अने मनमां एवो विचार अज्ञानताथी करे के में तो अमुक परिमाणधान्यनी बाबतमां जे राखेल छे, तेटलुंज मारा घरमां छे, तेथी जास्ती बीजांउंना घरमां राखवाथी मारा व्रतमां दूषण लागतुं नथी. वली काचा मणनो हिसाब व्रत लेती वखते राख्यो होय, अने पाछलथी लोभना कारणथी पाकामणनो हिसाब गणी धान्य राखे, ए प्रमाणे करनारने प्रथम अतिचार लागे.

क्षेत्रपरिमाण अतिक्रम अतिचार ज्यारे इछा परिमाणथी अधिक घर, दुकान, खेतर प्रमुख थइ जाय, त्यारे वचली भीत अथवा वाड होय तो ते तोडी नाखी एक बनावे,मनमां विचारे के में तो गणत्रीथी परिमाण करेल छे, अने गणत्रीथी उपरांत में राखेलुं नथी,तेथी मारुं व्रत निर्दूषण छे. घर, डुकान प्रमुख मोटां करवाथी शुं दूषण छे? ए प्रमाणे करे तो बीजो अतिचार लागे.

३ रुप्यसुवर्ण परिमाण अतिक्रम अतिचार. ज्यारे सोनुं,रुपुं इछापरिमाणथी अधिक थाय त्यारे,पोताना,तेमज स्त्री,पुत्रादिकना आभरण प्रमुख भारे तोल वालां बनावे. आ त्रीजो अतिचार.

४ कुपद परिमाण अतिक्रम अतिचार. त्रांबा, पितल प्रमुखनां वासणो जे गणत्रीथी राखेलां होय ते, ज्यारे लोभ विशेष थाय अने संपत्ति वधे त्यारे गणत्रीमां तेटलांज राखे, परंतु तेओनो वजनमां बहुज फेरफार करे, बमणां बनावे; मनमां विचारे के मारी गणत्री उपरांत में राखेलां नथी, तेथी मारुं व्रत अखंडित छे. वली धातुनो काचो तोल परिमाणमां राख्यो होय तो, पाछलथी पाका तोलथी धातु राखे. आ चोथो अतिचार.

५ द्विपद चतुष्पद परिमाण अतिक्रम अतिचार. दास, दासी, घोडा, गाय, प्रमुख परिमाणथी अधिक थाय त्यारे वेचे, अथवा भाइ, पुत्रना नामथी राखे, तो पांचमो अतिचार लागे इति. हवे छहां, सातमां तथा आठमां व्रतो जे गुणव्रत कहेवाय छे, तेमां छहुं व्रत दिक्परिमाण व्रत छे तेमां दिशाना विचार छे, तेनुं स्वरूप लखीए छीए.

पूर्वेना पांच अणुव्रतने आ त्रणव्रतथी गुणवृद्धि थाय छे तेथी तेनुं नाम गुणव्रत छे. कारण के ज्यारे दिशिपरिमाण व्रत लीधुं, त्यारे तेक्षेत्रथी वहारना सर्व जीवोने अभयदान आप्युं, आ प्रथम प्राणातिपात वि-

रमणव्रतनी पुष्टि थइ, तेमज वहारना जीवो साथे असत्य बोलवानो प्रतिषध थयो, तेथी सत्य व्रतने पुष्टि थइ वली क्षेत्रबहारनी वस्तु चोरवानो त्याग थयो, तेथी अस्तेय व्रतनी पुष्टि थइ तथा क्षेत्र वहारनी स्त्री साथे मैथुननो त्याग थयो तेथी ब्रह्मचर्य व्रतनी पुष्टि थइ तथा बहार क्रय, विक्रयनो निषेध थयो तेथी पांचमा व्रतनी पुष्टि थइ ए प्रमाणे पाचे व्रतने आ व्रतो गुणकारी छे

हवे दिशि परिमाण व्रतमां, चारे दिशि, तथा चारे विदिशि, ऊर्ध्व अने अधोदिशि, आ दशे दिशाओनु परिमाण करे तेना बे भेद छे १ व्यवहारथी, २ निश्चयथी तेमा पोतानी कायाथी दशे दिशिमां जवा आववाना, तथा मनुष्य मोकलवाना, अने व्यापार करवानां परिमाण करे, तेने व्यवहार दिशि परिमाण व्रत कहीए

निश्चयथी दिशि परिमाणनु स्वरूप ए एवु छे के, नरकादि गतिमां जे गमन छे, ते सर्व कर्मनो धर्म छे जेने वश पडवाथी आ जीव चारे गतिमां भटके छे चेतन परानुयायी थइ रहेल छे, तेज कारणथी परभवानुसारी गति भ्रमण करे छे, परंतु जीव तो शुद्ध चेतन्य, अगतिस्वभाव, तथा निश्चलस्वभाव छे, एवु जिनप्रणीत सिद्धांतना उपदेशथी समजीने, चेतन शुद्धस्वरूप अनुयायी थाय, त्यारे पोतानो अगतिस्वभाव जाणीने सर्वक्षेत्रथी उदास रहे, समस्त क्षेत्रथी अप्रतिबधक भावथी वर्ते, तेने निश्चयथी दिक्परिमाणव्रत कहीए आ दशे दिशिनु प्रमाण करे तेना बे भेद छे

प्रथम जलमार्ग वहाणथी अमुकदिशामां अमुक योजनसुधी अमुक द्वीप, वदरोसुधी गमन करु. जो पवन तथा वरसादना जोरथी अधिक जवाय तो आगार, अर्थात् व्रतभंग न थाय, तेमज अजाणपणे अथवा दिशाशून्य थवाथी अन्यस्थलें जवाय तो तेनो पण आगार छे

बीजो स्थलमार्गे जे जे दिशामा, जेटला जेटला योजन सुधि जवानु परिमाण करेलु, छे, त्यां सुधी जइ शकाय, परतु चोर, म्लेछादि पकडीने क्षेत्र नियमथी वहार लइ जाय तो तेनो आगार छे ऊर्ध्व दिशिमा चार कोशसुधी जवानी जयणा राखे, तथा अधोदिशिमां आठ कोश सुधी जवानी जयणा राखे तेमा ऊचा चढीने नीचे उतरे ते अधोदि

शिमां गणाय नहि. वली जेटला क्षेत्रनुं परिमाण राख्युं होय, तेटलाथी बहारना क्षेत्रना कोइ ओलखाणवाला पुरुषनो पत्र आवे तो, तेनो उत्तर लखवानी जयणा राखे, परंतु पोतानी तरफथी सारा काम विना पत्र लखे नहिं. वली परदेशनी विकथा श्रवण करवानो आगार राखे. आ व्रतना पांच अतिचार छे. ते नीचे मुजब.

१ ऊर्ध्वदिशा परिमाण अतिक्रम अतिचार. अनाभोगथी अथवा बे सुरतिथी अधिक चाल्यां जवाय तो आ अतिचार लागे.

२ अधोदिशि परिमाण अतिक्रम अतिचार उपरमुजब.

३ तिर्छी दिशि परिमाण अतिक्रम अतिचार. उपरमुजब. जो नियम भंगना भयथी गुमास्तो मोकले तो पण अतिचार लागे.

४ एकदिशिमां सो योजन राखेला होय, अने बीजी दिशिमां पचास योजन राख्या होय; पाछलथी ज्यारे एकदिशिमां दोडसो योजन जवानुं बन्युं होय त्यारे बीजी दिशाना पचास योजन ते दिशिमां जोडी दइ मनमां अज्ञानताथी एवो विचार करे के मारा नियम उपरांत हुं गयो नथी, एवो विचार करी जाय तो आ अतिचार लागे.

५ स्मृति अंतर्धान अतिचार. पोताना नियम करेला योजननी संख्या भूली जाय, जेमके कोण जाणे, पूर्वदिशिमां केटला योजन राखेल छे? सो राखेल छे के पचास राखेल छे? इत्यादि, एवी शंका थतां नियम उपरांत योजन जाय तो आ अतिचार लागे. इति षष्ठव्रतं.

हवे सातमा भोगोपभोग व्रतनुं स्वरूप लखीये छीयें. आ बीजुं गुणव्रत छे. आ व्रत अंगीकार करी सचित्त वस्तु खावानो त्याग करे, अथवा परिमाण करे. वली जेमां बहु हिंसा होय एवो व्यापार न करे, तथा जे काममां अवश्य हिंसा बहुज करवी पडे, तेनो त्याग करे,अभक्ष्यनो त्याग करे. चौद नियमपण आ व्रतमां गणाय छे. ते कारणथी आ व्रत पूर्वोक्त पांचे अणुव्रतोने गुणकारी छे. आ व्रतना बे भेद छे, ते कहीयें छियें.

प्रथम व्यवहार. भक्ष्य अभक्ष्य पदार्थोनुं ज्ञान करी तेउनो त्यागकरे तथा आदर करे. वली आश्रव, संवरनुं ज्ञान करी, खानपानादि जे इंद्रियसुखनां कारण छे, तेमां पोतानी शक्तिने अनुसारें बहु आरंभनो त्याग करी अल्पारंभी थाय, तेनुं नाम व्यवहार भोगोपभोग विरमणव्रत.

बीजो निश्चय श्रीजिनवाणी श्रवण करी, वस्तुस्वरूपनु तत्त्वज्ञान मे ळवी, अंत करणमा विचार करे के जगत्मां जे परवस्तु छे, ते सर्व हेय छे, ते कारणथी तत्ववेत्ता पुरुष परवस्तु खाय नहि, पीये नहि, तेमज पोतानी पासेपण राखे नहि, अने शुद्ध चैतन्यज्ञाव धारण करीने, परम शांतरूप थइ, जे वस्तु, सडे, पडे, नाश पामे, जाती रहे, इत्यादि परव स्तु स्वरूप जाणीने, एवो विचार करे के आ सर्व पुद्गलपर्याय छे, जग त्नी सर्व जूठ छे, तेवी वस्तुनो जोगोपजोग करवो ते तत्त्ववेत्ताने उचि त नथी एवा ज्ञानथी परजावनो त्याग करे, स्वगुणनी वृद्धि करे. एवुं ज्ञान पामीने आत्माने स्वस्वरूपानदी करे चिद्विलासनो अनुजवी करे तेने निश्चय जोगोपजोग विरमणव्रत कहीयें

जोगोपजोग शब्दनो अर्थ कहियें छियें आहार, पुष्प, विलेपनादि, जे एकवार जोगववामां आवे, ते जोग कहेवाय, अने जुवन, वस्त्र, स्त्री आदि, जे वारंवार जोगववामा आवे, ते उपजोग कहेवाय कर्माश्रयी, आ व्रतना अनेक जेद छे, ते आगल उपर लखवामा आवशे

श्रावकें उत्सर्गमार्गमां तो निरवद्य आहार लेवो एवो लेख छे, परंतु शक्ति न होयतो, सचित्तनो त्याग करे, जो तेपण त्यागी न शके तो बा वीश अजक्ष्य अने बत्रीश अनंतकायनो तो अवश्य त्याग करवो जोइए प्रथम बावीश अजक्ष्यनु विस्तारथी कथन करियें छियें

१ वडनां फल, २ पीपरनां फल, ३ पिलखणना फल, ४ कठुंबरना फल, ५ गुलरनां फल आ पाच फल अजक्ष्य छे, कारण के आ पाचे फलमा बहुज सूक्ष्म कीडा, त्रसजीव जरेला होयछे, जेउनी गणत्री थइ शकती नथी, ते कारणथी धर्मात्मा जीव, आ पांचे फलनो त्याग करे. कदापि डुकालमा अन्न न मले तोपण विवेकी जीव आ पाच फलनु जक्षण न करे.

६ मदिरा, ७ मास, ८ मधु, ९ माखण आ चारेमा तेज वर्णना अस ख्यजीव उत्पन्न थायछे आ चारे विगय, महाविगय छे, तेमज अत्यत वि कार उत्पन्न करनारीछे तेमां प्रथम मदिरा छे, ते अनेक दूषणयुक्त हो बाथी अवश्य त्यागवा योग्य छे ते दूषणो श्रीमद् हेमचद्रसूरिकृत योग शास्त्रमा दशश्लोकथी वर्णवेला छे तेनो अर्थ अहींआं लखिय छियें

१ मदिरा पीवाथी चतुर पुरुषनी बुद्धि नाश पामेछे, जेम दुर्नागी पुरुषने सुंदर स्त्री तजी देछे, तेम चतुर पुरुषने, बुद्धि तजी देछे. २ मदिरापानथी, पुरुष, पोतानी, माता, वेहेन, दीकरीने पण पोतानी न्नार्या समान समजी, जोराजोरीथी तेनी साथे विषयसेवनादि वलात्कार करे छे, पोतानी न्नार्याने, पोतानी मातासमान समजेछे; मदिरापानी एवा निर्लज्ज थइ महापाप करनारा थायछे. ३ मदिरापानी, पोताने तेमज परने पण जाणता नथी. ४ मदिरापानी, पोताना स्वामिने, किंकर समजेछे, अने पोताने स्वामि मानेछे, एवी निर्लज्ज बुद्धिवाला थायछे. ५ मदिरापानी, चोकमां केफ करी पडेलो होय, तेवे प्रसंगें कुतरो तेना म्हों उपर मुतरेछे. ६ मदिरापानी, चोकमां नग्न थइ निर्लज्ज थइ आलोटे छे. ७ मदिरापानी गम्य, अगम्य, चोरी, यारी, खुन प्रमुख, जे जे कुकर्मो तेणें करेलां होय, ते सर्व, लोको सन्मुख प्रकाश करेछे. ८ मदिरा पीवाथी, शरीरनुं तेज, यश कीर्त्ति सर्व नाश पामेछे तेमज तात्कालिकी स्वान्नाविकी बुद्धिपण क्षय पामे छे. ९ मदिरापानी न्नूत वलग्यानी पेठे नाचे छे. १० मदिरापानी, कचरा, कादव तेमज गंदीमां लोटे छे. ११ मदिरा पीवाथी अंग शिथिल थइ जायछे. १२ मदिरा पीवाथी इंद्रियनुं तेज घटी जाय छे. १३ मदिरा पीनार मोटी मूर्छाने प्राप्त थाय छे. १४ विवेक न्नष्ट थाय छे. १५ संयम नष्ट थायछे, १६ ज्ञान नष्ट थायछे, १७ सत्य नष्ट थायछे. १८ शौच नष्ट थायछे, १९ दया नष्ट थायछे, २० क्षमा नष्ट थायछे, जेम अग्निथी तृण न्नस्म थइ जायछे, तेम उपरना गुणो नाश पामेछे, २१ मदिरा, चोरी, तेमज परस्त्री गमनादि दुराचरणोनुं कारण छे, कारण के मदिरापानी कयां कुकर्म करता नथी. २२ मदिरा, आपत्ति तेमज वध, बंधननुं कारण छे, २३ मदिराना रसमां वहुज जीव उत्पन्न थायछे, ते कारणथी दयाधर्मीने मदिरा हेयछे. २४ मदिरापानी, लीधानुं, न लीधुं कहेछे. २५ आप्यानुं नहि आप्युं कहेछे. २६ कर्यानुं न कर्युं कहेछे. २७ मदिरापानी, घरमां तेमज बहार परधननुं हरण करेछे. २८ मदिरापानी, वाला, युवति, वृद्धा, ब्राह्मणी, चांडाली प्रमुख स्त्रीयोने न्नोगवी लेछे, २९ मदिरापानी अरराट करेछे, ३० गीत गायछे, ३१ आलोटे छे, ३२ दोडेछे, ३३ क्रोध करेछे, ३४ रोवेछे, ३५ हसेछे, ३६ स्थंन्नत् थइ जायछे, ३७

नमस्कार करेछे, ३८ नमे छे, ३९ ऊजो रहे छे, ४० नटनी पेठे नाचे छे, ४१ एवी कइ दशा छे के जे मदिरापानीने प्राप्त थती नथी शास्त्रमां श्रवण करीए छीए के, सांबकुमारें मदिरा पीवाथी, द्वैपायन ऋषिने संताप्यो, जेथी द्वैपायनें द्वारिकानो अग्निथी नाश कर्यो ४२ मदिरापान, सर्वपापनुं मूल छे, ४३ मदिरापानी अवश्य नरकगतिमां जाय छे ४४ मदिरा, सर्व दुःखनु स्थान छे, ४५ मदिरा, अपकीर्त्तिनु कारण छे ४६ मात्र नीच लोक होय तेज मदिरापान करे छे, ४७ गुणिजन, मदिरापानीनी निंदा करे छे, ४८ मदिरा कलेजामा लागवाथी तत्काल मृत्यु थाय छे, ४८ मदिरा पानीना मुखमाथी अत्यंत दुर्गंध छुटे छे ५० मदिरा सर्वशास्त्रथी निंदित छे ५१ मदिरापानी, परमात्माना भक्त थइ शकेज नहिं, इत्यादि अनेक दूषणो मदिरापानमा छे, तेथी श्रावक मदिरा पीये नहि

सातमु अभक्ष्य मांस छे मांसभक्षण करवामां जे दूषणो छे ते लखीए छीए जे पुरुष, मांस खावानी इच्छा करे छे, ते दयाधर्मरूप वृक्षनुं मूल कापे छे, कारण के जीवने मार्याविना मांस कदापि मली शकतु नथी जो कोइ एम कहे के, अमे मांस पण खाशु, अने प्राणीनी दयापण पालशु, एवा कथन करनारने अमारो उत्तर एज छे के, आप जो निरंतर मांस खाओ छो, अने दयाधर्मना अंकुरा मनमा उत्पन्न थयेला मानो छो, तो आपनु ते मानवु अग्निकुंडमा कमल उत्पन्न करवानी चाहना राखवा सरखु छे, कारण के आपें ज्यारे मांस खाधुं त्यारे प्राणीनी दया आपना अंतःकरणमा केवी रीतें अमे समजीए ? जेम केरी खावानी इच्छावालानी दृष्टिए आम्रफल पडे छे, त्यारे तेनु मन, ते फल खावातरफ दोडे छे, तेम तमे मांसाहारी होवाथी ज्यारे तमारी दृष्टिए, गाय, बकरी प्रमुख जानवरो पडे छे, त्यारे ते जीवोनु मांस खावानी तमोने लालसा थाय छे हवे विचारो के तमारा जेवाने दयाधर्म केवीरीते संभवे ? जो कोइ एम कहे के जीवने मारनारा कसाइ पासे बनावी, तैयार करेलुं मांस लावी कोइ खाय तो, तेमा शु दोष छे ते बाबतमा एवुं समाधान छे के, मांस खानारने पण हिंसक गणेलो छे, कारण के भगवतना शास्त्रोमां सात जणाओने घातक अर्थात् कसाइ कथन करेला छे तेओना नाम १ जीवने मारनार, मांस वेचनार, ३ मांस राधनार, ४ मांस खानार, ५ मांस खरीदनार, ६

मांसनी अनुमोदना करनार, ७ देवता, पितरो तेमज अतिथिउने मांस आपनार आ सात. साक्षात् तेमज परंपराये जीवना वधकरनारा छे. मनुस्वमी, मनुस्मृतिमां पण कहे छे के श्लोक ॥ अनुमंता विशसिता, निहंता क्रयविक्रयी ॥ संस्कर्त्ता चोपहर्ता च, खादकश्चेति घातकाः ॥ १ ॥ अर्थ. १ मांसनुं अनुमोदन करनार, २ मारेला जीवनां अंगना विभाग करनार, ३ जीवनो वध करनार, ४ मांस वेचनार, ५ मांस रांधनार, ६ मांस पीरसनार, ७ मांसखानार, आ साते घातकी छे, अर्थात् जीवना वधकरनार छे. वली मनुस्मृतिमां कहेलुं छे के ॥ यथा॥ अकृत्वा प्राणिनां हिंसां, मांसं नोत्पद्यते क्वचित् ॥ न च प्राणिवधात् स्वर्ग, स्तस्मान् मांसं विवर्जयेत् ॥ २ ॥ अर्थः—जीवनो वध न करवामां आवे त्यांसुधी मांस थतुं नथी, तेमज जीववधथी स्वर्ग प्राप्त थतुं नथी, परंतु नरकगति थायछे, तेथी मांसनो त्याग करवो.

मांस खानारने वधक कहेवानो हेतु ए के मांस खानारा न होय तो कसाई प्रमुख शावास्ते बीजा जीवोनो वध करे ? जे प्राणीउ पोताना मांसनी, बीजा प्राणीउना मांसथी पुष्टि करेछे, अर्थात् बीजा प्राणीउना प्राणथी पोताने सप्राण करेछे, ते जीवो, थोडी जींदगीवास्ते पोतानो नाश करे छे. मात्र पोताना जीवनवास्ते करोडो जीवोने दुःख आपे छे. तेउनुं शरीर शुं निरंतर रहेवानुं छे ? जे शरीरमां सुंदर मिष्टान्न, विष्टा थइ जायछे, दूध जेवी अमृतवस्तुउ मूत्र थइ जाय छे, तेवा शरीरने वास्ते कोण बुद्धिमान् जीव वध, तेमज मांसभक्षण करे. ?

जेउ मांसभक्षण करवामां कांइपण दूषण नथी, एवुं लखी गया छे, तेउ महामूढ, अविवेकी, तेमज म्लेछ हता एम लागे छे; कारण के तेउ लखे छे के ॥ यथा ॥ न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ॥ प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला ॥ १ ॥ आ श्लोकना लखनार, वाघ गीध, वरु, सिंह, गीध प्रमुख मांसाहारी प्राणीना गुरु लागे छे; तेउ जो गुरु न होयतो उपदेश रूपें आ कथन करे नहि ? वली तेउ जो न उपदेश आपत तो आ प्राणीउने मांस खावानुं, कोण शीखवत मदिरा पीवामां अने मैथुनसेवनमां कांइपण पाप नथी, परंतु तेउनी निवृत्तिथी

महाफल छे हवे जुर्ड तेर्डनी अज्ञानता ? केवो स्ववचनविरोध छे? जे करवामां पाप नथी, ते त्यागवामां धर्मफल कदापि होइ शके ?

हवे निरुक्तिवलथी पण मांस त्यागवा योग्य छे, ते वावतमा मनुजी कहे छे के ॥ श्लोक ॥ मांसभक्षयिताऽमुत्र, यस्य मांसमिहाद्म्यहं ॥ एतन्मामासस्य मांसत्वे, निरुक्त मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ अर्थ—जेनु मांस हुं खाचहुं, ते जीव, परभवमा मने भक्षण करशे, आ निरुक्तिथी मनुजी कहेछे के, मांसभक्षण करनारने महापाप लागे छे जे प्राणीर्ड मांस खावामां लंपट छे, तेर्ड जे जे जलचर मत्स्यादिजीवो, स्थलचरमृगादि जीवो, अने खेचर, तेतरादि जीवोने देखताज, तेर्डने मारीने खावानी तेर्डनी मति थाय छे साक्षात् डाकणनी जेवी खावानी वृत्ति थाय छे मांस खानारा उत्तम पदार्थोनो परिहार करी नीच पदार्थोने ग्रहण करवामां उद्यत थायछे साक्षात् कागडानी जेम अमृत छोडी विष्टामांचाच देछे तेनुज नाम निर्विवेकता छे ॥ श्लोक ॥ ये भक्षयन्ति पिशित, दिव्यभोज्येषु सत्स्वपि॥ सुधारसं परित्यज्य, भुजते ते हलाहलं ॥ १ ॥ अर्थ—सर्व धातुर्डने पुष्टि आपनार, तथा इन्द्रिर्डने आल्हादकारक, दिव्य भोजन समान, दुध, खीर, दही प्रमुख, तथा मोदक, सुतरफेणी, घारी, खाजां, मोहनथाल, मेसुब, सक्करपारा, घेवर प्रमुख मिष्टान्न, तथा इक्षुरस, द्राक्ष, नारगी, सफरजन, सतरा प्रमुख उत्तमफल तथा बदाम, पस्ता, एलची, जायफल, जावत्री प्रमुख मुखवासी उत्तम वस्तु तजीने मूढमति, विलगंधि, सूगवाला, तथा वमन थाय तेवा वीभत्स मांसनु भक्षण करे छे तेर्ड जीवितव्यनी वृद्धिवास्ते अमृतरसने तजीने जीवितव्यनो नाश करनार हलाहल, विषनु भक्षण करे छे बालक पण पथ्थरने छोडी, सुवर्णने ग्रहण करे छे, परतु मांसाहारी पुरुष तो मांसथी अधिक पुष्टि आपनार दिव्य भोजननो त्याग करी मांसने ग्रहण करे छे, तेथी तेर्ड बालक करतां पण अज्ञानीछे

मांस खावाथी मनुष्यनी निर्दयी प्रकृति थइ जाय छे तेथी तेर्ड धर्मने योग्य रही शकता नथी धर्मनु मूल दया छे, आ सिद्धांत सर्व उत्तम पुरुषो तथा सतजनो अगीकार करे छे, तेथी मांसाहारी, मास खावाथी दयायुक्त रहीशकताज नथी, अने तेज कारणथी तेर्डने कसाइ समान कह्या छे, तेथी मासाहारीने धर्म नथी

प्रश्नः—मांसाहारी पोते पोताने अधर्मी केम बनावे छे?

उत्तरः—मांसना स्वादमां लुब्ध थवाथी, तेउं दया के धर्म कांइ पण जाणता नथी. कदाचित् जाणवामां आवे तो पण मांसलुब्ध थइ जवाथी मांसने तजवाने समर्थ रहेता नथी. ते कारणथी मनमां विचारे छे के आपणी समान बीजाउं थइ जाय तो कोइ निंदा करे नहि, तेथी पोते बीजाने मांसभक्षण नहि करवानो उपदेश करी शकता नथी.

केटलाएक मूढमति पोते तो मांस खाता नथी, परंतु देवता, अतिथि अने पितरोने माटे मांसनो उपयोग करे छे. तेउंना शास्त्रकार कहेछे के ॥ यथा ॥ क्रीत्वा स्वयं वा उत्पाद्य, परोपहृतमेव वा ॥ देवान् पितृन् समभ्यर्च्य, खादन् मांसं न दूष्यति ॥ १ ॥ अर्थः—आ श्लोक मृगपक्षिउंना विषयमां छे. कसाइनी दुकान विना, पारधी तेमज शिकारी, अने जानवरोने मारनाराउं पासेथी मूल आपीने मांस लेवुं अने ते देवता, अतिथि तेमज पितरोने आपवुं जोइए; कारण के कसाइनी दुकानना मांसथी देवता, पितरोनी पूजा थइ शकती नथी, तेथी पोते मांस उत्पन्न करीने पितृआदिने आपे तो तेउं प्रसन्न थायछे. पोते मांस आ प्रमाणे उत्पन्न करे. ब्राह्मण, मागीने मांस लावे, क्षत्रिय शिकार करीने मांस लावे अथवा कोइए मांसनी भेट करी होय, तो ते मांसथी देवता पितरोनी पूजा करीने, पछी पोते मांस खाय तो दोष नथी. आ कथन, महामूढ तथा मिथ्यादृष्टिउंनुंज छे; कारण के दयाधर्मी, आस्तिकमतवालाउंने तो मांस दृष्टिथीपण जोवुं योग्य नथी, तो पछी देवता, अतिथिनुं पूजन मांसथी करवुं, आ विचार स्वप्नमांपण तेउंने केम आवे? वली देवताउंने मांस चढाववुं, ते बुद्धिमान्नुं काम नथी, कारण के देवताउं तो महापुण्यवान् छे, केवल आहार करता नथी, तो आवो दुगंछा उत्पन्न करे तेवो आहार देवता केम ग्रहण करे? तेथी जेउं देवताउंने मांसाहारी कहे छे, तेउं महाअज्ञानी छे. वली पितरो, पोतपोताना पुण्य पापने अनुसारें, सारी अथवा माठी गतिने प्राप्त थयेला छे, तेउं ते गतिमां पोताना कर्मनां फल भोगवे छे, अने पुत्रना करेला कर्मनां फल तेउंने कांइपण लागतां नथी, तो हवे मांस आपवाना पापनुं तो शुंज कहेवुं? पुत्रादिना सुकृतनां फलपण तेउंने पहोंचतां नथी; कारण के आंबाने सेचन करवा-

थी केस फळीभूत थती नथी तथा अतिथिनी भक्ति वास्ते मांसतुं अर्पण नरकपातनो हेतु होवाथी, महा अधर्मनुं कारण छे आ बाबतमां कोइ एवो सवाल करे के, जे वात श्रुति, स्मृतिमां छे, ते मानवी जोइए

उत्तरः- आ कथन वास्तविक नथी जे वात श्रुति, स्मृतिमां अप्रामाणिक होय, ते बुद्धिमान् कदापि मानेज नहि, कारण के श्रुतिमां अमे एम सांभळीए छीए के "वचांसि भूयांसि यथा पापघ्नोगोस्पर्शो द्रुमार्चा च पूजागादीनां च पूजागादीना च वध स्वर्ग्यः ब्राह्मण भोजनं पितृप्रीणनं मायाधीन्यधिदैवतानि वह्नौ हुत देवप्रीतिप्रद" आवु कथन जे श्रुतियोमां छे, तेने युक्तिकुशल पुरुष कदापि मानशे नहि, तेथी मांस थी देवतानी पूजा करवी ते महा अज्ञानता छे वळी केटलाएक कहे छे के, जेम मन्त्रथी संस्कृत, अग्नि दाह करतो नथी, तेमज मन्त्रथी संस्कार पामेलु मांस दोषकारक रहेतु नथी आ कथन मनुजीनुं छे॥ यथा॥ असंस्कृतान् पशून् मन्त्रै, नाद्याद्विप्र कथचन ॥ मंत्रैश्च संस्कृतानद्या, शाश्वत विधिमास्थित ॥ १ ॥ अर्थ - मंत्रथी असंस्कृत पशुओनुं मांस ब्राह्मण न खाय, अने मंत्रथी संस्कृत पशुनु मांस खाय तो, शाश्वता नित्य वैदिक विधिमां रहेलोछे एम जाणवो

आ बाबतमां समाधान ए छे के, मन्त्रथी जे मांस पवित्र करवामां आव्यु होय, ते पण धर्मी पुरुष कदापि भक्षण न करे कारण के मंत्र जेम अग्निनी दाहकशक्तिने रोके, तेम नरकादिप्रापण शक्ति जे मांसनी छे, तेने दूर करवाने मंत्रमां शक्ति नथी जो तेवी शक्ति मंत्रमां होय तो, दरेक पाप करीने, पछी ते पापना नाशकरनार मंत्रनु स्मरण करवा मात्रथीज ते पाप नाश थई जाय, जो ए प्रमाणे होय तो वेदोमां पापनो निषेध करेलो छे, ते कथन सर्व निरर्थक समजवु, कारण के सर्वपाप मंत्रस्मरणथीज नाश थाय छे, पछी निषेध करवानी शी जरुर हती ? ते कारणथी आ पण अज्ञानीओनुंज कथन छे

वळी केटलाएक कहे छे के जेम अल्प मद्यपानथी निस्सो चढतो नथी, तेम थोडुं मांस खावाथी पाप लागतुं नथी

उत्तर - थोडु पण मांस बुद्धिमान् खाय नहि जेम थोडु पण विष दुःखदायक थाय छे, तेम थोडु पण मांस दोषरूप थाय छे

हवे मांस खावामां जे अनुत्तर दूषण छे ते कहीए डीए. तत्काल मांसमां समूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे, तेमज अनंत निगोदरूप जीव, तेनुं संतान वारंवार उत्पन्न थया करे छे, ते कारणथी महादूषण छे. ॥ यदाहुः ॥ आमासु अपक्वासु, अविपच्चमाणासु मंसपेसीसु ॥ सयय चिय उववाऊ, जणिउं निगोय जीवाणं ॥ १ ॥ अर्थः– काची, तेमज अपक्व जे मांसनी पेशी रांधवामां आवे छे, ते रंधाया छतां पण तेमां निरंतर निगोदना जीव उत्पन्न थाय छे. ते कारणथी मांसजक्षण, नरक गमन करनार जीवोने पुरी खरची छे, तेथी उत्तम जीवे कदापि मांस जक्षण करवुं नहि.

हवे मांसजक्षण करवानो उपदेश जेउए करेलो छे, तेउनां नाम लखीए डीए. १ मांस खावाना लालचुउ. २ मर्यादारहितो, ३ नास्तिको, ४ अल्पबुद्धिमानो, ५ असत्य शास्त्र बनावनाराउ, ६ पशुना वैरीउ. मांसाहारी समान कोइपण निर्दय नथी. मांस आहारथी अधिक, नरक अग्निमाटे इंधन नथी. गंदकी खाइने सूअरो जे पोतानां शरीर पुष्ट करेछे ते सारां छे, परंतु जीवने मारीने मांस खानारा सारा नथी.

प्रश्नः– सर्वजीवोनुं मांस खावुं, एम सर्व कुशास्त्रोमां लखेलुं छे, परंतु मनुष्यनुं मांस खावुं, एम कोइपण शास्त्रमां लख्युं नथी, तेनुं शुं कारणछे ?

उत्तरः–पोताना शरीरना मांसनी रक्षावास्ते कोइपण कुशास्त्रिए मनुष्यनुं मांस खावुं लख्युं नथी; कारण के तेउ जाणता हता के, मनुष्यनुं मांस खावुं, एम शास्त्रमां लखशुं तो, मनुष्य कदी अमने पण मारीने खाइ जशे. तेथी लखेलुं नथी.

जेउ पुरुषना मांसमां तेमज पशुना मांसमां तफावत मानता नथी, तेउ समान कोइ धर्मी नथी; अने ते बाबतमां जेउ तफावत माने छे, अने मांस खाय छे, तेउ समान कोइ पापी नथी. वली मांसनी उत्पत्ति रुधिरथी थाय छे, तथा विष्टाना रसथी तेनी वृद्धि थाय छे, वली लोही जेमां जरेलुं रहे छे, अने कृमि जेमां उत्पन्न थाय छे, एवा मांसने बुद्धिमान् केम खाइ शके? आश्चर्य तो एज छे के ब्राह्मण लोको धर्म तो शुचिमूल कहे छे. अने सात धातुथी जे मांस हाड बने छे, ते मांस हाडने मुखमां दांतथी चावे छे. हवे तेवाउने कुतरा समान गणवा के शु-

विषमेवाला गणवा ? तेथी जे उष्टोनी एवी समज छे के, अन्न तथा मांस, आ बने एक सरखां छे, तेउंनी बुद्धिमां, जीवित तथा मृत्यु आप नारां अमृत तेमज विष सरखांज छे

वली जे जडबुद्धिमानोनु एवु मानवु छे के, उंदननी जेम, मांस प्राणीनु अंग होवाथी खावा योग्य छे आ तेउंनी मान्यता वास्तविक नथी, कारण के जो तेम होय तो गायनु मूत्र, तथा माता, पिता, स्त्री, पुत्री, ए सर्वेनुं मूत्र तेमज विष्टा, केम खाता पीता नथी, कारण के ते पण प्राणीना अंगथी उत्पन्न थयेल छे वली पोतानी स्त्रीनी जेम, पोतानी माता, बेहेन दीकरीनी साथे केम गमन करता नथी ? स्त्रीत्व तेमज प्राणी अंगत्व सर्व स्थलें बराबर छे वली जेम गायनुं दुध पीउं छो, अने मातानु पय पान करो छो, तेम गायनु रुधिर तेमज मातानु रुधिर केम पिता नथी ? कारण के प्राणी अग हेतु सर्वस्थलें तुल्य छे ते हेतुथी जेउं अन्न तथा मांसने एक सरखां माने छे, तेउं महापापीउंना सरदारछे

वली शंखने पवित्र माने छे, परंतु पशुना हाडने कोइ पवित्र मानता नथी, ते कारणथी अन्न तेमज मांस, प्राणी अग छे, तो पण अन्न नक्ष्य छे, अने मांस अनक्ष्य छे एक पचेंद्रिय जीवनो वध करीने मांस खावाथी जेम खानारने नरकगति प्राप्त थाय छे, तेम तेवी माठी गति अन्नखानारनी थती नथी, कारण के अन्न, मांस थई शकतुं नथी मांसनी तसीरोथी अन्ननी तसीरो ओर तरेहनी छे मांस महाविकार करे छे, अन्न तेम करतु नथी इत्यादि विलक्षण स्वनाव छे, तेथी मांस खानारनी नरकगति जाणीने संत पुरुषो अन्नना नोजनथी तृप्ति माने छे, अने उत्तम पद प्राप्त करे छे आ सर्व मांसनां दूषणो श्रीमद् हेमचंद्रसूरिकृत योगशास्त्रने अनुसारें लखेलां छे वली वर्त्तमानमां बुद्धिमान् पाश्चिमात्य लोकोए मास खावाथी चोवीश दुर्गुण प्रगट थाय छे, एम बतावेलु छे, अने मदिराथी तो एटली खरावी थाय छे के जेनी गणत्री पण थई शकती नथी ते कारणथी मदिरा तेमज मांस आ बने अनक्ष्यनो श्रावक त्याग करे. आ सातमु अनक्ष्य कह्यु

८ आठमु अनक्ष्य माखण छे जैनमतना शास्त्रानुसार छाशथी बहार काढेला माखणने ज्यारे अतर्मुहूर्त्त अर्थात् बे घडी काल व्यतीत

थाय छे, त्यारे ते माखणमां सूक्ष्म जीवो तेज वर्णना उत्पन्न थइ जाय छे, ते कारणथी माखण त्यागवा योग्य छे. जैनलोकोए छाशथी माखण बहार काढीने, तत्काल अग्निसंयोगथी, बनावीने, गलीने, पछी खावुं जोइए; कारण के ए रीतिथी शास्त्रोक्त जीव तेमां उत्पन्न थता नथी तेनी हिंसा थती नथी, वली माखी, कंसारी, मछरादि जीवोना अवयव प्रमुख पण, घी गलवाथी निकली जाय छे; वली माखण कामनी पण वृद्धि करे छे, तेथी मनमां खोटा विकल्प उत्पन्न थाय छे; तेथी श्रावकें माखण न खावुं जोईए. वली एक जीवनो नाश करवाथी ज्यारे पाप थाय छे, त्यारे पूर्वोक्त रीतिथी माखण तो जीवोनुंज पिंड थई जाय छे. तेथी माखण खावाथी पापनी गणतरी केम थइ शके ?

प्रश्नः— माखणमां बे घडी पछी कोईपण जीव उत्पन्न थयेल अमे देखता नथी, तो केवीरीतें तमारुं कहेवुं सत्य मानी शकीए ?

उत्तरः— जेउ जैनमतना शास्त्रोने सत्य मानशे, तेउ तो शास्त्रकारना कथनने सत्यज मानशे, अने जेउ जैननां शास्त्रोने सत्य मानता नथी तेउ कदापि आ कथन सत्यमानो अथवा न मानो, परंतु अमे तो आ वातमां आगम प्रमाण विना बीजुं प्रमाण दई शकता नथी. तात्पर्य ए छे के वस्तु बे प्रकारें सिद्ध थाय छे; एक हेतुगम्य, बीजी आगमगम्य माखणद्विदलादिमां जे जीव उत्पन्न थाय छे, ते हेतुगम्य नथी, परंतु आगमगम्य छे. ते कारणथी जे आगम सर्वज्ञ जिन अर्हत वीतरागें कथन करेल छे, ते सत्य होवाथी मानवुं जोईए. जो कोइ पुरुष, कोइपण शास्त्रने सत्य नहि मानतां, आंखथी देखेली वस्तुनेज मानशे, तो तेनाथी स्वर्ग नरकादि, जे अदृष्ठ छे, ते पण मानी शकाशे नहि. वली परमेश्वर सातमा अथवा चौदमा असमान उपर छे, तथा जीव, पुण्य, पाप करवाथी स्वर्ग, नरकमां जाय छे, आ पण नहिज मानी शकाशे. इत्यादि अनेक बाबतो तेनाथी मानी शकाशे नहि. जो बीजी बाबतो, इंद्रियोने अगम्य, मानशे तो, आगम प्रमाण पण मानवुं पडशे, कारण के सर्व वस्तु अमारी दृष्टिमां आवि शकती नथी.

ए नवमुं अभक्ष्य मधु अर्थात् मध अनेक जीवोनो घात थवाथी उत्पन्न थाय छे. आ परलोकविरुद्ध दोष छे; अने मुखनी लालना जे-

थुं डुगछा उत्पादक छे, आ इहलोकविरुद्ध दोष छे ते कारणथी धर्मी श्रावके मद्य न खावुं जोइए

हवे मद्यखानारनुं पापीपणु बतावीए छीए. ॥ श्लोक ॥ भक्षयन् मा क्षिकं क्षुद्र, जतुलक्षक्षयोद्भवं ॥ स्तोकजंतुनिहंतृभ्य, सौनिकेभ्योऽति रिच्यते ॥ १ ॥ अर्थ –अर्थात् नाना, हाडरहित लाखो जीवोनो ज्यारे नाश थायछे, त्यारे मद्य उत्पन्न थाय छे, ज्यारे मद्य भक्षण करवामां आवे छे, त्यारे थोडा पशु मारनारा कसाइथी पण अधिक पाप खानारने लागेछे, कारण के भक्षण करनारा पण घातक छे, आ वात उपर सारी रीतें बता वेली छे वली लोक व्यवहारमां पण एवु भोजन निंदनीय छे, अने मद्य तो महा जूठ एवुं छे कारण के एकेक फुलनो मकरंद (रस) पीइने मांखीउं ते रसने वमन करे छे तेज मद्य छे ते कारणथी धर्मीपुरुषें जूठ न खावुं जोइए आ वात लोकव्यवहारमां प्रसिद्ध छे

वली कोइ कहे के मद्य तो त्रिदोषने दूर करनार छे, ते कारणथी औ षधमां भक्षण करवाथी शुं दोष छे ?

उत्तर –अप्यौषधकृते जग्धं, मधु श्वभ्रनिबंधनं ॥ भक्षित प्राणनाशाय कालकूटकणोपिहि ॥१॥ अर्थ–रसनी लंपटताथी मद्य खाय तेनी वात तो दूर रही, परंतु औषधवास्ते पण जे मद्य खाय, अने तेथी कदापि रोगनो नाशपण थाय तोपण, तेथी नरकगतिनुं कारण प्रगट थाय छे, कारण के प्रभावना उदयथी, जीववानो अर्थी छतां पण जे कोइ कालकूट विषनो एक कण पण खाशे तो, अवश्य तेना प्राण नाश पामशे

प्रश्नः–मद्य तो खजूर, द्राक्षादि रसनी जेम मीठुं छे, सर्व इंद्रियोने सु खकारि छे, तो तेने त्यागवाने शा वास्ते उपदेश करोछो ?

उत्तरः–मद्यमां मीठाश छे, ए वात सत्य छे, पण ते व्यवहारथी छे परमार्थथी तो नरकनी वेदनानो हेतु होवाथी मद्य अत्यंत कडवु छे

हवे मद्यने पवित्र मानी जे मंदबुद्धिमानो देवस्नानमां उपयोगी माने छे, तेउनुं उपहास्य शास्त्रकार करे छे ॥ श्लोक ॥ मक्षिकामुखनिष्ठ्यूतं, जंतुघातोद्भवं मधु ॥ अहो पवित्रं मन्वाना, देवस्नाने प्रयुंजते ॥ १ ॥ अर्थ –मांखीउंना मुखनी जूठ तथा जीव घातमां हजारो बच्चां तेमज इंडां मारवाथी जे उत्पन्न थायछे, ते बच्चां तेमज इंडां ज्याय छे, त्यारे तेना

शरीरनुं पाणी (लोही) पण मधमां मली जाय छे, हवे जुओ के मध केवुं अपवित्र छे? अहो शब्द श्लोकमां उपहास्य माटे छे. कारण के जेवा ते देवता छे, तेवी पवित्र वस्तु पण तेमने चडाववामां आवे छे. आ उपहास्य छे. ॥ यथा ॥ करज्ञाणां विवाहे तु, रासज्ञास्तत्रगायकाः ॥ परस्परं प्रशंसन्ति, अहोरूपमहोध्वनिः ॥ आश्लोकमां अहो शब्द उपहास्य माटे छे. इति नवमुं अज्ञक्ष्य.

१० पाणीनो बनावेलो बरफ अज्ञक्ष्य छे. बरफ असंख्य अप्काय जीवोनुं पिंड छे. ते खावाथी चेतना मंद थायछे, तत्काल शरदी थायछे. कांइपण बलवृद्धि थती नथी. वीतराग अर्हतज्ञगवन्तें निषेध करेल छे, ते कारणथी अज्ञक्ष्य छे.

११ अफीणप्रमुख विषवस्तुओ अज्ञक्ष्य छे. कारण के झेरी वस्तुओ खावाथी उदरमां कृमि, गंडोलादि जे जीव होय छे, ते मरीजायछे. विष खावाथी चेतना मुंझाय छे. वली जो खावानी टेव पडी जायछे तो, पछी छोडवुं मुश्केल थायछे. वखतसर न मले तो क्रोध उत्पन्न थाय छे. शरीर शिथिल थइ जायछे. वली जे व्यसनी थायछे, तेनाथी व्रत, नियम प्रायः अंगीकार थइ शकतां नथी. व्यसनिनो स्वज्ञाव वारंवार अदलबदल थायछे. ज्यारे अमल खायछे, त्यारे एकरंग थायछे; ज्यारे अमल उतरी जायछे, त्यारे बीजो रंग थायछे. वली स्वतंत्रता तजी, पराधीन पणु अंगीकार करवुं पडेछे. अमलनो स्वाद पण बुरो छे. वली विषखानारा ज्यां लघुनीत, वडीनीत करेछे, त्यां त्रस, स्थावर जीवोनी हिंसा थायछे. सोमल, वछनाग, हरताल प्रमुख सर्व विषमां दाखल थायछे. तेओनो त्याग करवो श्रावकने उचित छे.

१२ करा, जे आकाशमांथी वरसादमां पडेछे. आ पण अज्ञक्ष्य छे.

१३ सर्वजातनी काची माटी अज्ञक्ष्य छे. काची, सचित्त माटी, नाना प्रकारनी असंख्य जीवात्मक छे. माटी खावाथी पेटमां बहु जीव उत्पन्न थायछे. पांडु रोग, आमरोग, वात, पित्त, पथरीप्रमुखरोग उत्पन्न थाय छे. माटी बहु खावाथी शरीरनो पीलो रंग थायछे. वली केटलीएक जातनी माटीमां देडकाप्रमुखजीवोनी योनि छे. ते कारणोथी अज्ञक्ष्य छे.

१४ रात्रिज्ञोजन अज्ञक्ष्य छे. रात्रिज्ञोजनमां प्रत्यक्षथी आलोकमां दूषणो छे, अने परलोकमां ते दुःखनुं हेतु छे; रात्रिए चारे आहार अज्ञ-

दय ठे रात्रिमा जे जे रंगना पदार्थोनो आहार करवामां आवे ठे, ते ते रंगना जीवो, जेनु नाम तमस्काय ठे, ते ते पदार्थोमां उत्पन्न थायठे वली आश्रितजीवपण बहुज होयठे तथा रात्रिमां उचित अनुचित वस्तुर्डनो नेल, संनेल थइ जायठे वली रात्रिजोजनमां प्रसंग दोष बहुज लागेठे जेम के, ज्यारे रात्रिए खावानु घनशे, त्यारे रात्रिजोजन वास्ते, निरतर रसोइपण करवी पडशे, रसोइ करतां, त्रस, स्थावर जीवोनो संहार थइ जशे, तेथी श्रावकना कुलाचारनो नाश थशे वली सूक्ष्मत्रस जीव नजरमां पण आवता नथी, कदापि देखाय तो निध्वंस परिणाम थवाथी यत्ना पण रही शकती नथी ज्यारे अग्नि बलेठे, त्यारे पासेनी जीतपर जे आश्रित जीवो रहेला होय, ते तापथी आकुल व्याकुल थइने, अग्निमां पडे ठे वली सर्पादि केरी जानवर कदापि होय, तो तेना मुखथी जो जोजनमां लाल पडेतो, पोतानो तेमज खानारा सर्वेनो विनाश थायठे वली पतंगिआ, गरोली, उपकली, मकडी, मछर, करोलीआ प्रमुख जीवो जे रात्रिए आसपास होयठे, ते अग्निना प्रकाशथी जोजनमां आवी पडे तो, जारे रोगोत्पत्ति थायठे यडुक्तं योगशास्त्रे ॥ मेधां पिपीलिका हंति, यूका कुर्याज्जलोदर ॥ कुरुते मक्षिका वान्ति, कुष्टरोग च कोलिका ॥ १ ॥ कटकोदारुखंडं च, वितनोति गलव्यथां ॥ व्यंजनांतर्निपतित, स्तालु विध्यति वृश्चिकः ॥ विलग्नश्च गले वाल , स्वरजंगाय जायते ॥ इत्यादयोदृष्टदोषा , सर्वेषां निशि जोजने ॥२॥ अर्थ —अन्नादिमांकीडी खावामां आवे तो बुद्धिनाश थाय वथायठे, जु खावामां आवी जाय तो जलोदर थायठे, माखी वमन करावे ठे, अने मकडी कुष्टरोग उत्पन्न करेठे कांटा अथवा लाकडानाकटका खावामां आवी जाय तो,गलामां व्याधि उत्पन्न करेठे, अने रांधवानु जाजन उघाडतां जो विंठी पडी जायतो तालवुं विंधी नाखेठे, इत्यादि दृष्टदोष रात्रिजोजन करवामां सर्वे लोकोने देखवामां आवेठे वली जेम रसोइ करतां षट्काय जीवोनी हिंसा रात्रिए करवी पडेठे, तेवीज रीतें रांधेलां जाजनो धोवाथी जलगत जीवोनो पण विनाश थायठे वली जल पडवाथी जूमिपर कुंथु, कीडी प्रमुखनो पण नाश थायठे ते कारणथी जीव रक्षाने इछनार प्राणी रात्रिजोजन करे नहि

प्रश्न —ज्यां अन्नपण रांधवुं न पडे, तेमज जाजन पण धोवां न पडे एवा

बनावी राखेला लाडवा प्रमुख तथा तैयार खजुर, द्राक्षादि जे नक्ष्य छे. ते खावामां शुं दोषछे ?

उत्तरः—यथा ॥ नाप्रेक्ष्य सूक्ष्मजंतूनि, निश्यद्यात् प्राशुकान्यपि ॥ अप्युक्तं केवलज्ञानै, र्निंदितं यन्निशाशनं ॥ १ ॥ अर्थः—मोदक तथा फलादि अगर जो प्राशुक अर्थात् अचेतन पण छे, तो पण रात्रिए न खावा जोइए, कारण के कुंथवादि सूक्ष्मजंतुउं रात्रिए नजरे पडता नथी;वली केवलज्ञानी, जेने निरंतर सर्वकांइ देखाय छे, तेउं पण रात्रिए नोजन करता नथी. सूक्ष्मजंतुउंनी रक्षा वास्ते, तेमज अशुद्ध व्यवहार दूर करवावास्ते, केवलज्ञानी रात्रिए आहार करता नथी. अगर जो दीवा प्रमुखना प्रकाशथी कीडीप्रमुख दृष्टिए पडेछे, तो पण मूलगुणनी विराधना टालवा वास्ते रात्रि नोजन अनाचरणीय छे.

हवे लौकिक मतवादीउंनी सम्मतिपूर्वक रात्रिनोजननो निषेध करीए छीए. यथा ॥ धर्मविन्नैव नुंजीत, कदाचन दिनात्यये ॥ बाह्या अपि निशानोज्यं, यदनोज्यं प्रचक्षते ॥ १ ॥ श्रुतधर्मनो ज्ञाता कदापि रात्रिनोजन करे नहि, कारण के जिनशासनथी बहारना मतवालाउं पण रात्रिनोजनने अनक्ष्य कहेछे. तेउंना शास्त्रोमां कहेलुं छे के ॥ यथा ॥ त्रयीतेजोमयोनानु, रिति वेदविदोविदुः ॥ तत्करैः पूतमखिलं, शुनं कर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ अर्थः—रुग्, यजुः, साम लक्षण त्रणे वेद, तेउंनुं जे तेज ते सूर्य छे. "आदित्यः त्रयीतनुः" एवुं सूर्यनुं नाम छे. ए प्रमाणे वेदोने जाणनारा जाणे छे; ते सूर्यना विद्यमान अर्थात् किरणोथी पवित्र थतां सर्व शुनकामो अंगीकार करे; ज्यारे सूर्य न होय त्यारे शुन कर्मो करे नहि. ते शुनकर्मोनां नाम तेउंए आ प्रमाणे लखेलां छे. ॥ यथा ॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धं देवतार्चनं ॥ दानं वा विहितं रात्रौ, नोजनं च विशेषतः ॥१॥ अर्थः—आहुति अर्थात् अग्निमां घीप्रक्षेप करवुं,स्नान अर्थात् शरीरना अंगोने धोवां, श्राद्ध पितृकर्म, देवपूजा, दानदेवुं, अने नोजन तो विशेपें करी नज करवुं; आटला कामो रात्रिए नज करवां.

वली परमतमां बीजा बे श्लोक छे ॥ यथा ॥ देवैस्तु नुक्तं पूर्वाह्णे, मध्याह्ने ऋषिनिस्तथा ॥ अपराह्णे तु पितृनिः, सायाह्ने दैत्यदानवैः ॥ १ ॥ संध्यायां यक्षरक्षोनिः, सदा नुक्तं कुलोद्वह ॥ सर्ववेलां व्यतिक्रम्य,

रात्रौ भुक्तमभोजनं ॥ २ ॥ अर्थ —सवारमा देवताओ भोजन करे छे म ध्याह्ने ऋषि भोजन करे छे दिवसना पाछला भागमां पितरो भोजन करे छे, सायाह्ने अर्थात् विकाल वेलाए दैत्य दानवो भोजन करे छे संध्यावे लाए यक्ष गुह्यक, राक्षसो भोजन करे छे

सर्व देवताओनो वखत उल्लंघन करीने रात्रिए जे खावुं ते अभक्ष्य छे आ प्रमाणे पुराणोना श्लोकथी रात्रिभोजननो निषेध कर्यो

हवे वैद्यक शास्त्र मुजब रात्रिभोजनना निषेधनो संवाद कहियें छियें ॥ यथा ॥ आयुर्वेदेषु ॥ हृन्नाभि पद्मसंकोच, श्चंडरोचिरपायत ॥ अतो नक्तं न भोक्तव्यं, सूक्ष्मजीवादनादपि ॥ १ ॥ आ शरीरमां बे कमल छे एक हृदय पद्म, ते अधोमुख छे, बीजुनाभिपद्म, ऊर्ध्वमुख छे, आ बन्ने कमलो सूर्य अस्त थवाथी रात्रिए संकोचाइ जाय छे, ते कारणथी रा त्रिए न खावु जोइयें वली रात्रियें सूक्ष्म जीवो खावामां आववाथी अ नेक तरेहना रोग उत्पन्न थाय छे आ परपक्षनो संवाद कह्यो

हवे विशेषरीतें स्वमतथी रात्रिभोजननो निषेध करियें छियें ॥ य था ॥ संसक्तजीवसंघात, भुंजानानिशिभोजनं ॥ राक्षसेभ्यो विशि ष्यते, मूढात्मान कथं नु ते ॥ १ ॥ ज्यारे रात्रिए खावामां आवे छे, त्यारे जीवोनो समूह भोजनमां पडीजाय छे, एवा अन्न समान रात्रिए खा नाराओने राक्षसोथी पण अधिक शा वास्ते न कहेवा जोइए ? जिन धर्मथी रहित थइ, मनुष्य विरतिपणानो त्याग करे छे, या तो तेने अ गीकार करतो नथी, त्यारे तेने पुछ, शिंग विनानो पशुज समजवो ॥ यदुक्तं ॥ वासरे च रजन्यांच, य खादन्नेव तिष्ठति ॥ शृंगपुछप रिभ्रष्ट, सस्पष्ट पशुरेव हि ॥ १ ॥

हवे रात्रिभोजननिवृत्ति वास्ते पुण्यवत आत्माओने विशेष बोधस्व रूप कहियें छियें ॥ यथा ॥ अह्नोमुखेऽवसाने च, योद्वे द्वे घटिके त्यजेत्॥ निशाभोजनदोषज्ञो,ऽश्नात्यसौ पुण्यभोजनं ॥ १ ॥ अर्थ –दिवसना उ दय तेमज अस्त समयनी बे बे घडी वर्जवी जोइए, कारण के रात्रि नि कट होय छे, तेज कारणथी सिद्धांतमां सर्व जघन्य प्रत्याख्यान मुहूर्त्त प्रमाण, नमस्कारसहित कथन करेल छे रात्रिभोजनना दूषणोने जा णनार श्रावक बे घडी ज्यारे दिवस बाकी रहे, त्यारे भोजन करे, जो बे

घडीथी न्यून दिवस रहेतां नोजन करे तो रात्रिनोजनना प्रत्याख्याननो लान तेने मलतो नथी; कदापि कोइ सख्स रात्रिए खातो न होय, परंतु जो तेणें रात्रिनोजननुं प्रत्याख्यान न कर्युं होय तो, तेने पण कांइ फल मलतुं नथी, कारण के तेणे प्रतिज्ञा करेली नथी. जेम शराफने त्यां रुपैआ जमे करावीयें, परंतु व्याजनो करार न करीए तो व्याज मलतुं नथी तेम ते कारणथी नियम अवश्य करवुं जोइए.

हवे रात्रिनोजन करनाराउने परलोकमां शुं फल मले छे ते कहीए छीये ॥ यथा ॥ उलूककाकमार्जार, गृध्रशंबरशूकराः ॥ अहिवृश्चिकगोधाश्च, जायन्ते रात्रिनोजनात् ॥ १ ॥ अर्थः—घुवड, काग, बिलाडी, गीध, हरणीया, सूअर, सर्प, विंछी, घो इत्यादि तिर्यंचयोनिमां रात्रिनोजन करनाराउ मरीने जायछे; अने जेउ रात्रिनोजन करता नथी, तेउने एक वर्षमां छ महीनाना तपनुं फल मलेछे. इति रात्रिनोजन अनक्ष्य संपूर्ण.

१५ बहु बीजवालां फलपण अनक्ष्य छे. जेमां गर्न थोडो होय अने बीज बहु होय, एवां जे रींगणां, पटोल, खसखस, पंपोटा प्रमुख अनक्ष्य छे. तेमां जेटलां बीजछे, ते सर्व पर्याप्ता जीवछे. खावामां थोडां आवे, अने जीवघात बहुज थायछे. वली बहु बीजवालां फल खावाथी पित्त प्रमुख रोग थायछे; तथा जिनाज्ञा विरुद्धछे.

संधान अर्थात् अथाणां (आचार) त्रण दिवस उपरांतनां अनक्ष्यछे. अथाणां केरीनां, लींबुनां, पाननां, करमदानां, हलदरनां, गरमर प्रमुखनां बनाववामां आवेछे; कदापि घी, तेल के पाणीनां होय तोपण त्रण दिवस उपरांतनां अनक्ष्य छे. परंतु तफावत एटलो छे के जे फल पोतेज खाटां छे अथवा तो जेमने खाटाश साथे मेलवेलां होय, अर्थात् खाटी केरी साथे मेलव्यां होय तो ते अथाणां त्रण दिवस उपरांत अनक्ष्य छे, अने जेउमां खटाश नथी ते अथाणां एक रात्रि उपरांत अनक्ष्य छे. अथाणामां त्रस जीव उत्पन्न थायछे, अने वीलां प्रमुखतो मूलें अनक्ष्य छे, तो पछी तेना अथाणानुं तो शुंज कहेवु? अथाणामां चोथे दिवसे निश्चये बे इंद्रिय जीव उत्पन्न थायछे, अने जूठो हाथ लागी जायतो पंचेंद्रिय जीव उत्पन्न थायछे. बीजा मतवालाउनां शास्त्रोमां पण अथाणा नरकनां हेतु लखेलांछे. इति अथाणा अनक्ष्य.

१६ द्विदल, जेनी बे दाल थइ जाय, तेमज घाणीमां पीलवाथी जेमां थी तेल निकले नहि, एवां सर्व धान्य द्विदल कहेवाय छे द्विदलनी साथे जे गोरस अग्नि उपर चडेलु नथी, एवु काचु दही, दुध के छाश मेलवी जमवु नहि गरम करेलां दही, दुध के छाश, छडां थइ गया पछी पण तेउनी साथे द्विदल मेलवी खावामां आवे तो दोष नथी

१७ सर्व जातिनां रींगणां अजक्ष्यछे एक तो तेमा बहुज बीजछे, तेना बीटमां सूक्ष्म त्रस जीव होयछे, वली ते कामनी वृद्धि करेछे, निद्रा अधिक लावेछे, कांइक बुद्धिनेपण जाडी करेछे, तेनुं नामपण सुंदर नथी, आकारपण अमनोज्ञ छे, कफ रोगने उत्तेजक छे, अधिक खावाथी चोथीया ताव, क्षयादि रोग थइ जायछे वली सर्व जातिनां फल सुकांपण खावामा आवेछे, परंतु आ सुकववाथी पण खावायोग्य रहेतुं नथी सुकव्यापछी तो एवु थइ जायछे के जाणे मुंएला उंदरनी खाल तेथी आ द्रव्य अशुद्ध छे, अने अजक्ष्य छे

१९ तुच्छफल, जांबु, पीलु इत्यादि, तथा अत्यत कोमल फल पण अजक्ष्यछे, कारण के एवी वस्तुउ बहु खावामां आवे तोपण तृप्ति थती नथी खावामां थोड्ढ आवे छे, अने वधारे फेंकी देवु पडे छे फल खाधा पछी तेनी गोठली जे मुखमा चुसीने फेंकी देवामां आवेछे, तेमा असंख्य पचेंद्रिय समूर्छिम जीव उत्पन्न थायछे वली जे मनुष्य बहुज तुच्छ फल खायछे, तेने तत्काल रोग उत्पन्न थायछे

२० अजाण्यु फल, अर्थात् जे फलनुं नाम कोइना जाणवामां न होय, तथा जे कोइना खावामां न आव्यु होय, ते फल पण अजक्ष्य छे, कारण के तेवु फल खावाथी कदाच झेरी होयतो मरण थइ जाय, अथवा तो दिवानापणु थइ जाय

२१ चलितरस, जे वस्तुनो काल पुरो थइ गयो होय, तेमज स्वाद बदलाइ गयो होय, (कारण के स्वाद बदलाइ जाय छे, त्यारे काल पण पुरो थइ जाय छे) तथा जेमांथी दुर्गंध निकलवी शरु थइ होय, तथा जेमां लाल उत्पन्न थइ होय, ते वस्तु चलितरस समजवी आ पण अजक्ष्य छे रोटली, शाक, खीचडी, वडां, नरमपुरी, शीरो, दूधपो, इत्यादि रांधेली अनेक वस्तुउ जेमा पाणी आवेछे, तेउ एक रात उपरांत अज-

क्ष्य ठे; तथा दाल, नजीआं, वडां जेमां पाणी होय ठे, ते चार पहोर उपरांत अनक्ष्य ठे. द्विदल विनानी घेंस तथा चोखा जे ठाशमां रांध्या होय ते आठ पहोर उपरांत अनक्ष्य ठे. वली वर्षाकालमां सारी रीतें जे मीठाइ बनाववामां आवी होय, ते पंदर दिवस उपरांत अनक्ष्य ठे, जो पंदर दिवस अगाउ वगडी जाय तो बगडतांज अनक्ष्य ठे; एवी रीतें सर्वत्र जाणी लेवुं. उनालामां मीठाइनी स्थिति विश दिवसनी ठे. शियालामां मीठाइनी स्थिति एक मासनी ठे. उपरांत अनक्ष्य ठे. दहीं सोल पहोर उपरांत अनक्ष्य ठे; ठाशनीपण तेटलीज स्थिति ठे. चलितरसमां बे इंद्रिय जीव उत्पन्न थाय ठे, ते कारणथी ते अनक्ष्य ठे.

२२ बत्रीश अनंतकाय सर्व अनक्ष्य ठे, कारण के सोइना अग्रनाग उपर जेटलो अनंतकायनो कटको रहे, तेटला कटकामां अनंत जीव ठे, ते कारणथी अनक्ष्य ठे. बत्रीश अनंतकायनां नाम. १ नूमिनी अंदर जेटला कंद उत्पन्न थाय ठे, ते सर्व अनंत काय ठे, २ सूरणकंद, ३ वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ५ आडु, ६ लीलो कचुरो, ७ वरीआलीकंद, ८ शतावरी वेल औषधी ठे, ए कुंआर, १० थोहरकंद, ११ गलो, १२ लसण, १३ वांसनां कारेलां, १४ गाजर, १५ लुणी, १६ लोढाकंद, १७ गरमर, १८ कोमल पत्र अर्थात् नवा अंकुरा उगेठे ते, सर्व वनस्पति उगति वखतना अंकुर, सर्व प्रथम अनंतकाय होय ठे, पठी ज्यारे वधे ठे त्यारे, प्रत्येक पण थइ जाय ठे, अने अनंतकाय पण रहेठे, १ए खरसुआकंद, २० थेगकंद, तथा थेगनामनीनाजी, २१ लीली मोथ, २२ लवण वृक्षनी ठाल, २३ खिलोडी, २४ अमृतवेल, २५ मूली, २६ नूमिरुहा ते नूमिफोडा बत्राकार थाय ठे, २७ वथुलानी उगती नाजी, २८ वरुहार, २ए सुअरवल्ली, मोटीवेल जंगलमां थाय ठे, ३० पलंकानी नाजी, ३१ कोमल आंबली, ज्यां सुधी तेमां बी थतां नथी, त्यां सुधी अनंतकाय ठे, ३२ आलुख, रतालुं, पिंडालुं, आ बत्रीश अनंतकायनां नाम सामान्य प्रकारे कह्यां ठे, विशेष नाम तो अनेक ठे; कारण के कोइ वनस्पति तो पंचांग अनंतकाय ठे, कोइनुं मूल अनंत काय ठे, कोइनां पान, कोइनां फूल, कोइनी ठाल, कोइनुं काष्ठ, एम कोइनुं एक अंग, कोइनां बे अंग,

कोइनां त्रण अग, कोइनां चार अग, कोइनां पांच अग, अनंतकाय छे इति बत्रीश अनंतकाय अभक्ष्य

हवे अनतकाय जाणवावास्ते तेनां लक्षणो लखीए छीए जेनां पाद डां, फुल, फल प्रमुखनी नसो गूढ होय, देखाती न होय, तथा जेनी संधि गुप्त होय, जे त्रोडवाथी बराबर त्रुटता होय तथा जेनुं मूल काप तां छतां पण जे उगे, जेनां पांदडां मोटां, दलदार, चीकणां होय, जेनां पांदडां तेमज फल बहुज कोमल होय, ते सर्व अनंतकाय जाणवां

अभक्ष्योमां अफीण, भांग प्रमुख जेनु बधाण प्रथमथी थइ गयुं होय, ते राखवानी जयणा करे रात्रिभोजनमां चोविहार, तिविहार, दुवि हार, एक महिनामां आटला करु एवो नियम करे, वली रोगादि प्र संगें कोइ औषधीमां कोइ अभक्ष्य खावु पडे तो, तेनी जयणा राखे वली बत्रीश अनंतकाय तो सर्वथा अभक्ष्य छे, छतांपि रोगादि कारणे औषधि मां खावी पडे तो, तेनी जयणा राखे, तथा अजाणपणे कोइ वस्तुमां मे लवेली खावामां आवे तो, तेनी जयणा राखे, इति बावीश अभक्ष्य स्वरूप

हवे चौद नियमनु विस्तारथी स्वरूप लखीए छीए ॥ गाथा ॥ सचित्त दव विगइ, वाणेह तबोल वत्थ कुसुमेसु ॥ वाहणसयण विलेवण, बंभदि सिन्हाणभत्तेसु ॥१॥ अर्थः—श्रावकें जावजीव पांच अणुव्रतमां इच्छा परि माणमां, प्रथमनी अनेक तरेहनी कर्मपरिणतिना संभवथी, पोताना नि र्वाह सामर्थ्यनो उदय अति दुस्तर विचारीने बहुज वस्तुओ खुल्ली राखी छे, तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारवावास्ते, संक्षेप करवावास्ते, चौ द नियमनु धारण निरंतर राखवुं जोइए, तेनुं स्वरूप लखीए छीए

१ प्रथम सचित्त परिमाण मुख्यवृत्तिएतो श्रावके सचित्तनो त्याग क रवो जोइए, कारण के अचित्त वस्तु खावामां चार गुण छे प्रथमतो अ प्राशुक जलादिनुं पीवुं वर्जवाथी, सर्व सचित्त वस्तुओनो त्याग थायछे ज्यांसुधी वस्तु अचित्त न थाय, त्यांसुधी मुखमां प्रक्षेप करे नहि, बीजुं रसनेंद्रिय पर जय मेलवाय छे, कारण के केटलीएक वस्तुओ रांध्या विना नी स्वादवाली होयछे, तेओनो त्याग थाय छे, त्रीजुं, अचित्त पीवाथी काम चेष्टा मंद थइ जाय छे, वली चित्तमा निरंतर एवो खटको रहेछे के रखे माराथी सचित्त वस्तु खावामां आवी जाय १ चोथु, जलादिद्रव्य अचेतन

करवामां जीव हिंसा थइ, ते तो कर्मबंधनुं कारण बनी चूकी, परंतु क्षणे क्षणे जे असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थति हती, ते मटी गइ, ते हिंसा बंध पडी; छतां कोइ मूढमति पोतानी मनःकल्पनाथी एवो विचार करे के वस्तु अचित्त करवामां षट्कायना जीवोनी हिंसा थाय छे, अने सचित्त जलादि पीवामां तो एक जलादिनीज हिंसा थाय छे, ते कारणथी सचित्त त्यागवानी जरूर नथी. एवा विचार करनारा मूर्खोए जिनमतनुं रहस्य जाणेलुंज नथी; कारण के सचित्तनो त्याग करवाथी, आत्मदमनता, औत्सुक्यनिवारणता, विषय, कषायनी मंदता थाय छे. वली जेमां स्वदया गुण बहुज छे, तेपण ते जाणता नथी. सचित्तनो त्याग करवामां अनेक लाभ छे ते अनुभवसिद्ध छे.

२ बीजुं द्रव्यनियम. धातु, शिला, काष्ठ, माटीनुं पात्र प्रमुख तथा पोतानी आंगली प्रमुख विना, जे मुखमां खावामां आवे ते द्रव्य कहेवाय छे. " परिणामांतरापन्नं द्रव्यमुच्यते " तेमां खीचडी, मोदक, पापड, वडां प्रमुख बहु वस्तुओनां बने छे, तो पण परिणामांतरथी एकज; द्रव्य छे; तथा एकज घउंनी बनेली रोटली, पोली, पुरी, घुघरी, बाटी प्रमुख छे, तो पण दरेक भिन्न द्रव्य छे, कारण के नामांतर, स्वादांतर, रूपांतर, परिणामांतरथी द्रव्यांतर थइ जाय छे. वली कोइक आचार्य द्रव्यनुं स्वरूप बीजी रीतथी कहे छे. परंतु उपर बतावेलुं स्वरूप, बहु वृद्ध आचार्योने संमत छे. द्रव्यनुं परिमाण ए प्रमाणे करे के आजे हुं आटलां द्रव्य खाइश.

३ त्रीजुं विगय नियम—विगय दस प्रकारना छे. तेमां १ मध, २ माखण, ३ मांस, ४ मदिरा, आ चार तो महाविगय छे. तेओनो त्याग बावीश अभक्ष्यना स्वरूपमां बतावी आव्या छीए. बाकीनां छ विगयनां नाम. १ दुध, २ दही, ३ घी, ४ तेल, ५ गोल, ६ सर्व जातनां पक्वान्न. आछ विगयमांथी नित्य एक, बे, त्रण आदि विगयोनो त्याग करे, तेमज एकेक विगयना पांच पांच निवियाता पण त्याग करवा जोइए, परंतु निवियाता त्याग करवानो विचार मनमां न होय तो, प्रत्याख्यान करवाने अवसरे मनमां धारे के मारे विगयनो त्याग छे. परंतु निवियातानो त्याग नथी.

४ चोथु उपानद् जोडा, पगरखा, खडावा, मोजा, बूट प्रमुख पहेरवानो नियम करे, कारण के आ सर्वे जीवहिंसाना अधिकरण छे तेमां श्रावकें जिनपूजादि कारणविना खडावा (पाटली) तो कदापि पेहेरवी नहि, कारण के तेनी नीचे जे जीव आवी जाय छे, ते जीवता रहेता नथी वली गृहस्थ लोकोने पगरखा विना चालतु नथी, ते कारणथी पगरखानी मर्यादा करे, पछी बीजाना पगरखामा पग न मुके कदापि भूल चूक थई जायतो आगार

५ पाचमु तबोल तबोल ते चोथो स्वादिम आहार छे तेनु नियम करे तेमा पान, सोपारी, लवींग, एलायची, तज, जावत्री, पीपर प्रमुख करियाणानी चीजो जेथी मुखशुद्धि थाय छे, परतु उदर भरातु नथी, तेनो समावेश थाय छे तेनु परिमाण वजनथी करे.

६ छठु वस्त्र नियम छे मनुष्यें पोताना पांचे अगोपर पहेरवानां व स्त्रोनी सख्यानु नियम करवु के, आजना दिवसमा मारे आटला वस्त्र पहेरवाना, तथा आटला ओढवाना राखवा रात्रिए पहेरवानां वस्त्र, तथा स्नान समयना वस्त्र, तेमज समुचय वस्त्रनी सख्या करी ले अजाणता भेल, सभेल थाय तो आगार

७ सातमु फूलना भोगनुं नियम मस्तकमा राखवाना, गलामां पहेरवाना, शय्यापर बिछाववाना, फूलनो तोल, तथा फूलोना तकीआ, फूलोना पखा, फूलोना चडवा, फूलोनी जाली प्रमुख जे जे वस्तुर्ड भोगवामा आवे तेनी, तथा फूलनी वडी, शहरा, कलगी, हार, गोटा तेमज जे फूल सुघवामा आवे, तेना तोलनु परिमाण करे

८ आठमु वाहननियम रथ, गाडी, घोडा, पालखी, उंट, बलद, नाव, प्रमुख जेनी उपर बेसी ज्यां जवुं होय त्या जइ शकाय, ते वाहन, सर्वना त्रण प्रकार छे १ तरतु, २ फरतु, ३ उडतु तेर्डनी संख्यानु नियम करे.

९ नवमु शयन नियम शय्यानु नियम करे, तेमां खाट, पाट, तख्त, गुदडी, पालखी, सुखासन प्रमुख जेटला राखवां होय ते सर्व मनमां धारी ले

१० दशमु विलेपननियम भोगने अर्थे केशर, चदन, चुआ, अत्तर, तैलादि जे पदार्थ अंगमर्दनादिकारणे उपयोगमां लेवा होय, तेनां नाम तथा तोल लहिने मनमां धारी ले, अगलूदणां पण नवीजरीतें रा

खी ले; परंतु एटलो अपवाद के, देवपूजा, देवदर्शनादि प्रसंगें, तेमज धर्म करणी करतां हस्तमां धूपादि लेवां पडे, तथा मस्तके तिलक करवुं पडे, तथा जगवानने अर्चन करवा वखते चंदनादि विलेपन करवुं पडे, तेनुं श्रावकने नियम नथी.

११ अगीआरमुं ब्रह्मचर्यनियम. दिवसे तेमज रात्रिए आटली वखत स्वस्त्री साथे मैथुनसेवन करुं ते उपरांत मैथुनसेवननो त्याग छे. वली हास्य, विनोद, आलिंगन, चुंबनादि करवाना जांगा राखे.

१२ बारमुं दिशिनुं नियम. अमुक दिशिमां आज मारे अमुक कोस उपरांत जवुं नहि; तेमां आदेश, उपदेश, माणस मोकलवुं तथा पत्र व्यवहार, विगेरे सर्वनो समावेश थाय छे; जेवी रीतें पाली शके तेवुं नियम करे.

१३ तेरमुं स्नाननियम. आजे तेलादिमर्दनपूर्वक अथवा मर्दन विना आटली वखत स्नान करुं, तेनुं प्रमाण करे, तेमां देवपूजा वास्ते नियमथी अधिक स्नान करवुं पडे तो, व्रतजंग नहि.

१४ चौदमुं जात पाणीनुं नियम. चार आहारमांथी स्वादिमनुं नियम तो श्रावकें तंबोल नियममां करी लीधुं छे, तेथी बाकीना त्रण आहारनुं नियम करवानुं छे; तेमां प्रथम अशन, ते रोटली, जात, कचोरी, शीरा प्रमुखना वजननुं परिमाण करे, ते उपरांत त्यागे. पोताना घरमां बहु परिवार होय, तेउने वास्ते अशनादि करावववां पडे तेनी जयणा राखे. वली बीजाने घेर न्याति आदि जमतां होय तेवे प्रसंगे जमवा जवुं पडे, त्यां अधिक रसोइ बनावेली होय, तेनुं दूषण नियमधारीने नथी; कारण के नियमधारियें तो पोताना जोजनार्थे वापरवानुं परिमाण करेलुं छे, परंतु ज्ञाति वास्ते मर्यादा करेली नथी. नियममां अशनना तोलनुं परिमाण करे बीजुं पाणी पीवाना तोलनुं परिमाण करे. त्रीजुं स्वादिम, ते मिष्टान्न पदार्थ खावाना तोलनुं परिमाण करे. आ चौद नियम छे. अधिक जाववाला श्रावक सचित्तादि परिमाणमां द्रव्यनुं परिमाण जुदा जुदा नामथी राखे, तो बहुज निर्जरा थाय. इति चौदनियमस्वरूप.

हवे पंदर कर्मादाननुं स्वरूप लखीए छीये. नीचेना पंदर व्यापार श्रावकें वर्जवा; कारण के ते करवामां बहुज पाप छे, कदापि पोतानी आजीविका न चालती होय तो करवाना व्यापारनुं परिमाणकरें. ते पंदर कर्मादाननां नाम.

१ प्रथम इंगालकर्म कोयला बनाववा, इंट बनाववी, जठीमां अनेक प्रकारना ठाम बनाववां, ते सर्वे वेचवां, लुहारनां काम, सोनारनांकाम, बंगडीकारनां काम, कसारनां काम, जठीआरानां काम, हलवाइनांकाम, धातुगालक प्रमुख जे जे कामो अग्निथी थाय, तेसर्व इंगाल कर्म ठे, आ कामोमां पाप बहुज लागे ठे, अने लाज बहु मलतो नथी, तेथी श्रावक आवां काम करे नहि

२ बीजु वनकर्म ठेद्यां, अणठेद्यां वन वेचवां, वाडी, बगीचाना फूल, फल, कंदमूल, घास, काष्ठ, वांसादि, तेमज तमाम लीली वनस्पति करवी, तथा वेचवी, आ सर्व वनकर्म ठे

३ त्रीजु साडी कर्म गाडी, रथ, दमणीओं, शीगराम, वहाण, आग बोट, हल, दताल, चरखा, घाणी, चक्की,धुसरा प्रमुख बनाववां तथा वेचवां आ सर्व शकटकर्म ठे

४ चोथु जाडी कर्म गाडां प्रमुख बलद उंट खच्चर गधेडा घोडा पाडा जेंस प्रमुखथी वहेवरावी, बीजानां जाडां करी,आजीविका चलाववी ते जाडी कर्म

५ पांचमु फोडी कर्म आजीविकावास्ते, कुवा, वाव, तलाव प्रमुख खोदवा, खोदाववां, हल चलाववां,पथ्थर फोडवा, खाण खोदाववी इत्यादि स्फोटिक कर्म ठे आ पांचे कर्ममां बहुज जीवोनी हिंसा थायठे, तेथी पांचे कुकर्म कहेवाय ठे हवे पांच कुवाणिज्यनु स्वरूप लखीये ठीये

१ प्रथम दंतकुवाणिज्य हाथीना दांत, घुवडना नख, जीज, कलेजां, पक्षीउंनां रोम, गायनां चमर, हरणनां सींग, गेंडांना सींग, रेशमना कृमि इत्यादि जे त्रस जीवोना अंगोपांग वेचवां, ते सर्व दंतकुवाणिज्य ठे ज्यारे ते वस्तुउं लेवा वास्ते आगरमा जवुं पडे, त्यारे जिल्लादि लोक तत्काल हाथी गेंडा प्रमुख जीवोनी हिंसामां प्रवृत्त थाय ठे महाअनर्थरूप पापना काम आचरे ठे त्या जवाथी आपणा परिणाम पण मलिन थइ जायठे कदाचित् तीव्रलोजग्रस्त थवाथी, जिल्लादि व्याधोने कहेवुं पडे के, अ मारे मोटा जारे दांत प्रमुख जोइये ठीये, त्यारे ते लोको तत्काल हाथी प्रमुखने मारी आपणने जोइती वस्तु लावी आपशे तेथी श्रावकने वस्तु नी जरुर होय तेवे प्रसंगे आगरमा नहि जतां, ते वावतना व्यापारी पा

सेथी ते वस्तु ले. एक चमर लेवा जतां एक गाय मरे. ते कारणथी विचारीने व्यापार करे.

२ बीजुं लाख कुवाणिज्य. लाख, धावडी, गली, साजीखार, मणसील, हरताल प्रमुख सर्व लाख कुवाणिज्य छे. लाख, त्रस जीवोना समूहथीज बने छे, पछी ज्यारे रंग काढे छे, अने तेने अन्नथी सडावे छे, त्यारे तेमां त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय छे. महादुर्गंधि रुधिर सरखो वर्ण देखाय छे. धावडीमां त्रसजीव उपजे छे, कुंथवा पण वहुज थायछे, मदिरानुं अंगछे. वली गली ज्यारे सडावे छे, त्यारे तेमां त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय छे. गलीना कुंरूमांपण त्रसजीव वहुज उत्पन्न थाय छे; गलीवालां वस्त्रो पहेरवामां जू लीखादि त्रसजीव उत्पन्न थाय छे. हरताल, मणसीलने पीसती वखत यत्न न रखायतो मांखी प्रमुख अनेक जीव मरी जाय छे.

३ त्रीजुं रसकुवाणिज्य. मदिरा, मांस इत्यादि वस्तुउंना व्यापार महापापरूप छे. वली दुध, दहीं, घी, तेल, गोल, खांड प्रमुख जे नरम वस्तुउंछे, तेउंनो जे व्यापार ते रसकुवाणिज्य छे. आ व्यापारमां अनेक जीवोनो घात थाय छे.

४ चोथुं केशवाणिज्य. द्विपद जे मनुष्य दास, दासी प्रमुख, खरीद करी वेचवां, तथा चौपद ते गाय, घोडा, बलद भेंस प्रमुख खरीद करी वेचवां; तथा पक्षीउंमां तित्तर, मोर, पोपट, मेंना, प्रमुख, वेचवां. आ वाणिज्यमां वहुज पाप छे.

५ पांचमुं विषवाणिज्य. सोमल, वछनाग, अफीण, मणसील, हरताल, चरस, गांजो प्रमुख; तथा शस्त्र, ते धनुष्, तलवार, कटारी, छरी, वरछी, फरसी, कुहाडी, कोदाली, वंदुक, बख्तर, ढाल, गोली, तोप प्रमुख जे संग्राममां उपयोगमां आवेछे, तथा हल, मुशल, उखल, दंताली, कर्वत, दातरडी, हवाइ पटाका, शतघ्नी प्रमुख, आ सर्व हिंसानां अधिकरण छे; तेउंनो जे व्यापार ते विषवाणिज्य छे. हवे पांच सामान्य कर्म वतावीये छिये.

१ प्रथम यंत्रपीलन कर्म. तल, एरंडी, इक्षु आदि पीली, पीलावी, वेचवां, आ सर्व जीवहिंसाना निमित्तरूप कर्म छे.

२ वीजुं निर्लाछन कर्म. वलद, घोडानी खांसी करवी; घोडा, वलद, उंट प्रमुखने दाग देवां; कोटवालपणुं, जेलखानाना जेलरनुं काम, मेहेसु-

ख इजारानां काम, चोरीना माल खेवानां काम, इत्यादि निर्दयपखानां सर्वकाम निखांठन कर्ममां समाय ठे

३ त्रीजु दावाग्निदान कर्म केटखाएक मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जीव धर्म मानीने वनमां आग खगावी देठे, तेठं मनमां एम धारे ठे के, नवु घास उत्पन्न थशे, त्यारे गाय प्रमुख चरशे, जिह्वादि खोक सुखेथी रहेशे, अन्न निपजशे, इत्यादि विचार खावी वनदवनु काम करे, परंतु आग खगाडवाथी खाखो जीवोनो नाश थइ जायठे, तेनो विचार तेठंने आवे नहि ते कारणथी आग न खगाववी जोइए

४ चोथुं शोषणकर्म वाव, तलाव, सरोवर, कुवा प्रमुखनु पाणी पोताना खेतरादिमां एवी रीतें खाववुं के, तमाम पाणी बहार निकखतां खाखो जीव पाठख, जखरहित थइ तरफडी मरी जाय, आ शोषण कर्म ठे ते कारणथी सर्व पाणीशोषण न करवुं

५ पांचमु असतीपोषण कर्म कुतूहखने वास्ते कुतरा, बिलाडा प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोषण करवु वली दुष्ट नार्या तथा दुराचारी पुत्रादिनुं मोहथी पोषण करवु, तेठंने सारां, नरसां नहि जाणतां, मनमां आवे तेवी रीतें, तेठंने राजी राखवानो यत्न करवो, तथा वेचवावास्ते दुराचारी दास, दासीनु पोषण करवु, इत्यादि असतीपोषणकर्म कहेवाय ठे वली माठी, कसाइ, वाघरी, चमार, प्रमुख बहु हिंसक जीवोनी साथे व्यापार करवो, तेठंने द्रव्यादिनी मदद आपवी, आ पण दुष्टजीवोनुं पोषण ठे कदापि अनुकंपायुक्त बुद्धिथी श्वानादि पशुठं पोषण करवामां आवे तो ते बाबतमां निषेध नथी वली पोताना मोहोल्लामां कदाचित् तेवा जीवोनी खबर खेवी पडे, तेमज पोताना कुटुंबीठंनु पोषण करवु पडे तेमा पूर्वोक्त दोष नथी कारण के ते खोकनीति, राज्यनीतिनु फरमान ठे आ पांच सामान्य कर्म इति पदर कर्मादान स्वरूप

हवे आ जोगोपजोग व्रतना पांच अतिचारनुं स्वरूप खखीए ठीए

१ प्रथम सचित्त आहार अतिचार मूख जांगे तो श्रावक सर्व सचित्तनो त्याग करे, जो तेम न थइ शके तो, तेनु परिमाण करे. तेमां सर्व सचित्तना त्यागी, तथा सचित्तना परिमाणवाखा, जो अनाजोगादिकथी सचित्त आहार करे, जेम के जख, उष्ण करतां त्रण उकाखा (उजरा)

आवी जाय त्यारे शुद्ध प्राशुक थायछे, परंतु एक उकाला अथवा वे उकालानुं पाणी तो मिश्र उदक कहेवाय छे, ते पाणीने अचित्त जाणी पीये, तथा सचित्त वस्तुने अचित्त थवामां विलंब होय, छतांपि तेने अचित्त जाणी खाय तो प्रथम अतिचार लागे.

२ वीजुं सचित्त प्रतिवद्धाहार अतिचार. जेने सचित्त वस्तुनो नियम छे, ते तत्काल खेरनी गांठथी गुंदर उखेडीने खाय, तेमां गुंदर तो अचित्त छे, परंतु सचित्तनी साथे मलेलो हतो, तेथी दोष लागे छे. वली पाकी केरी चूसे, तथा वोर, रायणना समूहने खाय, अने मनमां एम जाणे के हुं तो अचित्त खाउछुं, सचित्त गोठली, छलीआने फेंकी दइश, तेमां शुं दोष छे ? एवा विचारथी खाय तो, वीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अपक्वाहार अतिचार. चाल्या वगरनो लोट, तथा जेने अग्नि संस्कार न करवामां आव्यो होय, एवो काचो लोट फाके; कारण के श्री सिद्धांतमां कह्युं छे के, आटो दल्या पछी, चाल्या विना केटलाएक दिवस मिश्र रहेछे. श्रावण, भादरवा मासमां अणचाल्यो आटो पीस्यापछी, पांच दिवस मिश्र रहेछे, आसो, कारतक मासमां चार दिवस मिश्र रहे छे, मागशर, पोष मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे छे, माघ, फागण मासमां पांच पहोर मिश्र रहेछे, चैत्र, वैशाख मासमां चार पहोर मिश्र रहेछे, अने जेठ असाड मासमां त्रण पहोर मिश्र रहेछे, पछी अचित्त थइ जायछे, तेथी मिश्र खायतो, त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो दुपक्वाहार अतिचार, कांइक काचा तथा कांइक पाका एवा सर्व जातिना उंला, उंबी, पोंक, जुवार, बाजरा, घउं प्रमुखना लीला पोंक वीजथी भरेला, ते अग्निसंस्कार करतां जेना केटलाएक दाणा अचित्त थाय, तथा केटलाएक दाणा सचित्त रहे, तेने अचित्त जाणी खाय तो, चोथो अतिचार लागे.

५ पांचमो तुछौषधि भक्षण अतिचार. तुछ अर्थात् असार जे खावाथी तृप्ति न थाय, परंतु खावामां पाप वहुज लागतुं होय, जेमके चणानां फूलखाय, वोरना छलियामांथी गरभ काढी खाय, वाल, चणा, मग, चोलानी फली खाय, आ वस्तुउ खावामां प्रसंगदूषणो वहुज लागेछे, कारण

के केटलीएक वनस्पति अति कोमल अवस्थामा अनंतकायपण होयछे, ते खावाथी अनतकायनो व्रतभंग थायछे आ पांचमो अतिचार.

हवे आठमा अनर्थदंड विरमणव्रतनु स्वरूप कहियें छियें पोताना प्रयोजनवास्ते करवुं ते अर्थदंड कहेवाय छे धन, धान्य केत्रादि नवविध परिग्रहमां हानि वृद्धि थाय, त्यारे करे, कारण के धनवृद्धिने निमित्ते संसारी जीवने घणुपापनां कारणो सेववां पडेछे, तेवे प्रसंगे साचु, जुठु बोल्या विना रही शकातु नथी पापना उपकरणा पण मेलववां पडेछे, ज्यारे कांइ मनसुबो करवो पडे, त्यारे विकल्परूप आर्त्तध्यान करवु पडेछे, कारण के धनादि परिग्रह अजीविका अर्थे जरूरना छे, तेवास्ते धननी वृद्धि निमित्ते जे जे पाप करवामां आवेछे ते ते सर्व अर्थदण्डछे वली ज्यारे धननी हानि थायछे, त्यारे धननी हानि दूर करवा वास्ते अनेक विकल्प रूप पाप करवां पडेछे, तेपण अर्थदंडछे, कारण के धन, व्यवहार संसार सुखनु मुख्य कारण छे, ते व्यवहार वास्ते जे जे पाप करवां पडे ते सर्व अर्थदंड छे वली पोताना स्वजन कुटुंब परिवारादि वास्ते अवश्य जे जे पाप सेववा पडे, ते ते सर्व अर्थदंड छे, अने चोथु, पांच प्रकारनी इंद्रियोना भोगवास्ते जे पाप करवां पडे ते पण अर्थदंड छे पूर्वोक्त चार प्रयोजनविना जे पाप करवामां आवे ते अनर्थदंड जाणवा तेना चार भेद छे १ अपध्यान अनर्थदंड, २ पापोपदेश अनर्थदंड, ३ हिंसाप्रदान अनर्थदंड, ४ प्रमादाचरित अनर्थदंड तेमां प्रथम जे अपध्यान अनर्थदंड छे, तेना वली बे भेदछे १ आर्त्तध्यान, २ रौद्रध्यान, तेमां आर्त्तध्यानना चार भेद छे, ते पृथक् पृथक् कहियें छियें

१ प्रथम इष्टवियोग आर्त्तध्यान पोताने प्राप्त थयेला नवविध परिग्रहनो रखे वियोग थाय, एवुं चिंतवन निरंतर मनमां लाव्या करे, अने कदाचित् तेनो वियोग थाय तो मनमां घणोज खेद धारण करे, अने निरतर तेने वास्ते विलोपात कर्या करे, तेमज पोताना वहाला माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भार्या भाइ, बेहेन, मित्रादि परदेश गयां होय, अथवा तो मृत्यु पाम्यां होय ते प्रसगे अत्यत चिंता करे, खाय पीये नहि, वियोगना दुःखथी आत्मघात करवानो विचार करे, निरतर क्रोधातुर रहे, इत्यादि प्रसंगे. जे चिंतवन थाय ते आर्त्तध्यान छे

बीजुं अनिष्ट संयोगार्त्तध्यान, इंद्रियसुखने विघ्नकारक अनिष्ट शब्दादिनो संयोग रखे मने थाय एवी मनमां चिंता करे, वली घरमां स्त्री खराब मली होय, पुत्र कपूत थयो होय, भाइ विश्वासघाती, वे दीलवालो होय, पिता क्रोधी होय, माता दुराचरणी होय, मित्र कृतघ्न मल्यो होय, एवा प्रसंगोमां निरंतर तेउनो उपाय करवानी चिंता थाय. वली स्त्री मनमां एवो विचार करे के, मारी शोक्य बहुज खराब छे, मारा पतिने रोज भुलावो खवरावे छे, रखे मने कोइ दिन पतिवियोग करावे? तेथी ते रांडनो कांइ उपाय करवो जोइए. वली सेवक मनमां एवो विचार करे के, मारा शेठनी पासे मारो अमुक दुश्मन अवश्य चाडीखाशे, अने मारादरज्जाने नरम करी नाखशे, अथवा तो शेठने जूठुं, साचुं कही मने नोकरीथी रद बातल करावशे, तो पछी हुं शुं करीश, तेथी ते दुश्मननो कांइक उपाय करवो जोइए. तेवे प्रसंगें, तेउना निग्रह वास्ते, यंत्र, मंत्र, कारण, वशीकरण प्रमुख करे. तेउ उपर जूठां कलंक मूके, बलिदान देवावास्ते त्रसजीवने मारे. आ सर्व पोताना शत्रुना निग्रह वास्ते करे. वली मूठ मारी तथा वीर नाखी मारवा चाहे, परंतु मूर्ख मनमां विचारे नहि, के जो तुं दीलमां साचो छो, तो तने शुं फिकर छे? वली ज्यां सुधी सामानुं पुण्य बलवान् छे, त्यांसुधी तुं मंत्र, यंत्रथी तेनुं कांइ पण बुरुं करवाने शक्तिमान् नथी. वली पोताना मनमां एवो कुविकल्प करे के मारा दुश्मनना कुलमां अमुक सख्स जबरदस्त उत्पन्न थयेल छे, रखे मने भविष्यमां हेरान करे? कोइ रीतें तेनी राज्य दरबारमां आबरु जाय, अथवा दंड थाय तो ठीक छे. वली जो तेनुं छिद्र मली जाय तो सरकारने अरज करी तेने देश निकाल करावुं. आ प्रमाणे मूर्ख, मूढ जीव संकल्प कर्या करे छे. वली गाममां चोरनो उपद्रव बहुज थयो छे, तेथी ते दुष्टोने पकडी सख्तशिक्षा थाय, अथवा तो फांसीए देवाय तो सारुं. वली अमुक सख्स बहुज फाटी गयो छे, मारी उपर ईर्ष्या करे छे, तेथी ते हरामजादानो कांइक बंदोबस्त करवो जोइए; जेथी फरी ईर्ष्या निंदा न करे. आ प्रमाणे निरंतर असत्य विकल्पो करे तो अनर्थदंड लागे छे. कारण के आपणा बुरा चिंतवनथी बीजानुं कांइ बगडतुं नथी. जे कांइ सारुं नरसुं थाय छे, ते पुण्य, पापने

आधीन छे, तेम छतां मूढात्मा पिछ्ली जेम फोकट मनोरथ करे छे आ सर्व विना प्रयोजननां पाप छे, तेथी अनर्थदंड लागे छे

३ त्रीजु रोगनिदानार्त्तध्यान मारा शरीरमां कोइ कोइ वखत रोग थाय छे, ते न थाय तो सारु एवो विचार लावी, लोकोने पुछे के अमुक रोगनो शु उपाय हशे ? कोइ कहे के अमुक अमुक जो खावामां आवे तो रोग थतो नथी ते सांजली ते वस्तुउं अजक्ष्य होय तो पण खाइ जाय वली ज्यारे शरीरमां रोग होय, त्यारे घहुज हाय हाय करे, आ रत्न करे, जोशीने पूछे के मारो आ रोग क्यारे जशे ? वैद्यने वारंवार पूछे के गमे तेवी दवानो उपयोग करो, अने मारो रोग टालो वली म नमां विचारे के रखे मारा उपर कोइए जाडु कर्युं होय ! छेवटे रोग दूर करवा वास्ते, कुलविरुद्ध, धर्मविरुद्ध आचरण करे. रोग दूर करवा वास्ते औषध, जडी, बूटी, मन्त्र, तन्त्र शीखे, मनमां विचारे के कोइ वखत काम आवशे आ त्रीजो जेद छे

४ चोथुं अग्रशोच आर्त्तध्यान जविष्य कालनी चिंता करे. जेम के आवता वर्षमां मोटां लग्न करीश, डुकान मांडीश, घर बंधावीश, जे देखी बीजाउं घहुज आश्चर्य पामशे वली फलाणा खेतरनो, वाडी अ थवा बगीचो करवो छे, जेथी बीजाउंना बाग नकामा थइ जशे, डु श्मनोनी छाति ते देखीने बलशे, वली अमुक वस्तुउंनो में वेपार कर्यो छे, ते वस्तुउंनो जाव चढी जाय तो मने घहुज सारो लाज मले, इत्या दि अनेक तरेहनी जविष्य कालनी चिंता करे. आ कुविकल्पो शेखचल्ली सरखा छे इति आर्त्तध्यान स्वरूपसंक्षेप

हवे रौद्रध्याननुं स्वरूप कहियें छियें प्रथम हिंसानंद रौद्रध्यान त्रस, स्थावर जीवोनी हिंसा करीने मनमा घहुज आनंद माने घहु पाप युक्त कामो करी घर, डुकान, बाग, वाडी प्रमुख बनावे जे देखी लोको प्रशंसा करे त्यारे मनमां घहुज हर्ष पामे वली मनमां विचारे के मारा जेवो अक्कलबाज कोण छे ? आवी हिकमत कोण चलावि शके ? रसोइ बनाववा प्रसंगे जक्ष्याजक्ष्यनो लेश मात्र विचार नहि करतां इन्द्रियोनी रसवृद्धि वास्ते, माल मसाला घहुज नाखी घहुज आनंदपूर्वक खाय, वली जमणवार प्रसंगे तीव्र मानना उदयथी पोतानी वाहवाह कहेव

राववा वास्ते अनेक आरंजनां काम करे जेथी असंख्य जीवोनी हिंसा थइ जाय, ढतांपि मनमां आनंद माने. पोताना, सगाना, मित्रना के कुटुंबीउंना डुश्मनोनुं जुंडुं करवा, तेउंने नुकशान करवा मनमां संकल्प कर्या करे. वली मनमां विचार करे के अमुक रीतें डुश्मनो पायमाल थाय तेउंनुं सत्यानाश जाय, तेउंनां घर वार नाश पामे तो सारुं, जेथी मारा अंतःकरणमां शांति थाय. वली राजाउंनी लडाइनी वातो सांजली तथा डुश्मन राजाउंना योद्धाउं नाश पामता जाणी मनमां बहुज प्रमोद माने. वली कोइ शिकारीए व्याघ्रादि पशुउंनो शिकार कर्यो होय ते सांजली मनमां खुशी थाय. वली एवा शिकारी तथा योद्धाउंनी बहुज प्रशंसा करे, जेथी तेउं विशेष हिंसानां काम करवा सारु उश्केराय. पोते डुश्मनने मारी अत्यंत राजी थाय, मूढ मरडे, अनेक तरेहथी पोतानी जयपताका फरके एवां हिंसानां काम करी आनंद माने. सारांश के बीजा जीवोनुं जेमां माठुं थाय तेवां तमाम कामोमां पोते आनंद माने, आ रौद्रध्याननो प्रथम पायो नरकगतिनो हेतु ढे. प्राणीमात्रनुं सारुं नरसुं थवुं ते दरेकना कर्माधीन ढे, ढतांपि मूढ आत्मा अनंताकाल सुधी संसारमां परिभ्रमण करवासारु महाअनर्थकारक डुर्ध्यान ध्यातां लेशमात्र विचार करतो नथी.

२ बीजुं मृषानंद रौद्रध्यान. जुठुं बोली, ढल कपट करी, मनमां बहुज खुशी थाय; वली मनमां विचारे के में एवी युक्तिसर वात बनावीने करी ढे के कोइनी ताकात नथी के मारा प्रपंचने समजी शके. मतकबाजीपणुं एक जुदी शक्ति ढे; आज काल मारी साथे प्रपंच बाजीमां कोइ फावी शके एम समजवुं नहि. वली बोलवुं, ते पण करामात ढे. एवा घुंचना प्रसंगें, जो हुं न होत तो, शुं परिणाम आवत, तेनी अत्यारे शी वात? वली अनेक तरेहनां दगाबाजी, विश्वासघातनां कामो करी मनमां पोतानी चतुराइ माटे बहुज खुशी थाय; वली बीजाउं पोताने बहुज युक्तिसर बोलनार, तथा पोते नहि फसतां, बीजाउंने जालमां नाखवाने शक्तिमान् ढे एम, माने ढे, तथा एवां कामो करतां मारी वाहवाह बोलाय ढे एम मानी बहुज आनंद पामे. वली राज्यदरबारमां तथा बीजाउं पासे डुश्मनोनी चुगली, निंदा प्रमुख करी मनमां हर्ष पामे. इत्यादि मृषानंद रौद्र ढे.

३ श्रीजु चौर्यानंद रौद्रध्यान अनेक तरेहनां छल कपट, दगाबाजी, विश्वास घात करी, भद्रक जीवोनी बहु मूल्यवाली वस्तु थोडी किंमत आपी लइ ले अने मनमां खुशी थाय वली चोरी, धाडचोरी, रस्तानी लुट, जब राइथी कढावबु इत्यादि कामो करी परधन मेलवी बहुज खुशी थाय, ते वा चोर लूटाराउंनी पासेथी मिलकत लेवामा, तेउंने मदद करवामां ब हुज हिंमतथी प्रवर्त्ते अने लाज मेलवी आनंद माने पोते वेपारी होय अने माल खरीद करवा घराक आव्यो होय, तेवे प्रसंगे विश्वास बेसाडी, नमुनो कांइक बतावी, माल कांइक तरेहनो आपे, अने पोते सोदो कर बामा करामातवालो पोताने माने भरवामां, तोलवामां उछुं आपवानी था नत राखे चोपडामां, ठरावती वखते भाव जे बोल्या होय तेनाथी जा स्ति लखे रू प्रमुख माल वेचवामां मालमां भेल संभेल करी लेनारने ठे तरी, मनमां खुशी थाय नोकरीनो धधो करतो उपराणी लांची खाइ जाय, अने खुशी थाय, वली शेठने छल कपट करी ठेतरे, अने राजी करे, पछी मनमां विचारे के में केवी युक्ति लडावी, पैसा खाइ गयो, अने शेठने खुशी कर्या वली दगाबाजीथी पैसा मेलवी मनमां एवु अभिमान लावे के, मारा जेवी कमावानी शक्ति कोनामां छे १ चोरी करी मनमां एवो खुशी थाय के, मारी चतुराइ तथा शक्तिने कोण समजी शके तेवुं छे जूठा दस्तावेज ब नावी, लोको उपर न्यायनी अदालतोमा खोटा दावा करी, फतेह मेलवी, धन अन्यायथी उपार्जन करी, पोताने ऋद्धि, सिद्धि वालो देखी मनमां बहुज आनद पामे न्यायना अधिकारीउंने में ठेतर्या, तेथी मारा जेवो कोण चालाक छें, इत्यादि चौर्यानंद रौद्रध्यान अनेक तरेहथी मूढात्मा ध्यावे

४ चोथु संरक्षणानंद रौद्रध्यान नवविध परिग्रह, धन, धान्यादि बहु ज वधारी मनमा खुशी थाय, लोजनो थोभ नथी एवो विचार निरतर आखखुटं करे छे, शक्तिहीन करे छे, परतु पोते मनमा विचारे के, परि ग्रह एज जगतमां सार छे, पैसा विनाना मनुष्य पशु समान छे, तेथी प रिग्रहनी इछाने लेशमात्र नहि उठी करता द्रव्य एकतु करवानीज चिंता राख्या करे वली मनमां विचारे के द्रव्य मेलवबु तेमां तो ताकात छे, प- रतु मेलवेलु साचवी राखवु, तेमां तो बहुज ताकात जोइए ठीये में क रामात अजमावी न होत तो आ पैसा जलवावा मुश्केल हता वली म

नमां विचारे के धर्म, दान, पुण्य इत्यादिकामोमां पैसा खरचवा तेनुं फल मलेलुं कोणें प्रत्यक्ष दीठुं छे. धर्मधुताराउये अखाडा मांफी लोकोने लुटवाना रस्ता बांध्या छे जेउ तेउनी जालमां फसाइ जाय, तेउ अक्कलहीन, पैसा केम पेदा थाय छे, तेनी जेउने लेशमात्र खबर नथी, एवा लोकोज होय छे. पोते "चमडी त्रुटे पण दमडी न छुटे" एवीज मनोवृत्ति निरंतर राखी खुशी माने छे. लोकविरुद्ध, राज्यविरुद्ध, कुल तथा धर्मविरुद्ध कामो करी पैसा मेलवी, अने जालवी राखी, मनमां पोतानी बडाइ माने. वली मनमां विचारे के में एकलायेंज आ धन मेलव्युं छे. अने बीजाउतो मात्र खानारा छे, बोजारूप छे, हुं पैसा नहि साचवीश तो, आ सर्वेना भूंडा हाल थशे, वली पोताना नशीबनेज सारुं मानी अभिमान कर्या करे, कदाच कर्मना उदयें कोइ रकम घलाइ जाय तो मनमां बहुज पश्चात्ताप करे, तमाम लोकोना नलीआं गणे, रात दिवस धन नष्ट थवाथी धास्ती राखी सुखे सुवे नहि. घर, डुकान, पेटी, तेजुरीनां तालां, वारंवार टंटोल्या करे, सगा पुत्रनो पण लेशमात्र विश्वास करे नहि. बीजाउनेपण एवीज कुबुद्धि आपे. इत्यादि अनेक तरेहथी संरक्षणानुबंधी रौद्रध्यान ध्यावे. आर्त्त अने रौद्र बंने अपध्यान डुर्गतिनां हेतु छे, तेथी ते तजवा योग्यछे.

२ बीजुं पापकर्मोपदेश अनर्थदंड. बीजाउने कहे के तमारा पैसा शुं कामना छे, सारां घर बार बंधावो, गाडी करो, घोडा फेरवो, अनेक तरेहनां कारखानां करो, पैसा साथे आववाना नथी माटे वाडी, बगीचा करी मोज शोख माणो. वली तमारा घोडानी खांसी करावो, बलदने नाथ घलावो, घोडो अनाडी थइ गयो छे तेथी चाबक स्वारने सोंपो; वली तमारा खेतरमां सूड थइ गयेल छे, घांस पण उगतुं नथी, तेथी सूड कापी नखावो, एक वखत दव आपो. वली तमे गंदा छो माटे न्हावो, धुवो; तमारा घर सगवड वगरनां छे, माटे खाल कुवा, पायखानां करावो, इत्यादि अनेक तरेहना उपदेश जेथी पापस्थानको सेववां पडे तेवा करे.

३ त्रीजुं हिंस्रप्रदान अनर्थदंड. हिंसाकारी वस्तुउ जेम के गाडी, हल, मुशल, घंटी, अग्नि, तलवार, बंधुक, जालां, छरी, दातरडां, अफीण, वछनाग प्रमुख बीजाउने दाक्षिणता विना, माग्या विना आपवां ते हिंस्रप्रदान अनर्थदंड छे.

४ चोथु प्रमादाचरण अनर्थदंड कुतूहलथी गीत, नाटक तमासा, मेला प्रमुख जोवा, सांजलवा जाय अहिंआं कुतूहलथी एम लखवानो हेतु ए ढे के, इंडियोना विषयो अतिशयपणे सेववानी इलामां प्रमाद आचरण ढे, परंतु जिनयात्रा, स्वामिजक्ति, अष्ठाह्नमहोत्सव, रथयात्रा, तीर्थयात्रा प्रमुख जोवामां प्रमाद आचरण नथी, कारण के ते तो सम्यक्त्वनी पुष्टिनां साधनो ढे वली कामशास्त्र तथा चोराशी आसनथी कामवृद्धि करवामां वारंवार मच्या रहेवुं, जूगार खेलवा, मदिरापान करवां, शिकार करवा, जलक्रीडा, स्नानादि करवां, जल उछालवा, वृक्षोने दोरडां बांधी हिंचकवां, हाथी घोडा, गेंडां, कुकडा प्रमुख जानवरोने अदर अदर लडाववां, पोताना शत्रूर्डना वंशजो उपर द्वेषजाव राखवा वली जक्तकथा करवी, जेमके मांस फलाणा प्राणीनुं बहुज सारु पुष्टिवालु ढे, मदिरापानथी शरीरमां ताकत आवेढे, अमुक जातना लाडवा खाई तो शरीर मजबुत थशे, दुध खुब पीई जेथी वीर्यवृद्धि थशे, अने कामसेवन मनोज्ञ थशे अमुकशाक, जाजी मसालादार अमुकरीतेंज स्वाद आपेढे, तेना जेवी चीजत बीजामां नथी अमे पण एज रीतें खान पान करिय ढीए वली स्त्रीकथा करे, जेम के फलाणा देशनी स्त्रीर्ड बहुज खुब सुरत ढे, अमुक शेहेरनी स्त्रीर्ड चतुर ढे, हाव, जाव, कटाक्ष, चुंबनादि प्रसंगे अमुक स्त्रीर्ड बहुज आनंद आपे ढे वली स्त्रीर्डनी प्रशंसारूप श्लोक बोले जेम के "कर्णाटी सुरतोपचारकुशला, लाटी विदग्धे प्रिये" इत्यादि वली स्त्रीर्डनां रूपवृद्धिकारक, स्तनकठिनत्वकारक, योनिसंकोचक उपाय बतावे तथा एवी अनेक तरेहनी मैथुनजावी कथा करे. वली देशकथा करे जेम के पूर्वदेशमां अनेक तरेहनी वस्तुर्ड उत्पन्न थाय ढे, खांड, गोल, शाल, मद्यादि बहुज सारां थाय ढे, उत्तर देशना लोको बहुज शूरवीर होय ढे, लडाइ करवामां बहाडुर होय ढे, काठीयावाडना घोडा बहुज सारा होय ढे, चाकरी बहु बखत आपे ढे, वली जालना धंच घणाज सारा, इत्यादि देश संबंधी अनेक तरेहनी चित्र, विचित्र कथा करवी तथा राज्यकथा करवी जेम के अमारा राज्यमा बहुज दोलत ढे, शूरवीर योद्धार्ड ढे, अमुक राज्यमां लोको उपर बहुज जुलम थाय ढे, कर लेवाय ढे अंग्रेजनुं राज्य बहुज सारुं ढे रुशिया ब

हुज जुलमगार राजा छे. फलाणां राज्यो वचे लडाइ थशे, फलाणां ब-लवामां अमुक राजाए बहुज बहादुरीनुं काम कर्युं, इत्यादि. वली रोग, अथवा थाक लाग्या शिवाय आखी रात सुइ रहेवुं ते पण प्रमाद आ-चरण छे. पूर्वोक्त प्रमाद आचरण श्रावक वर्जे. तथा जिनमंदिरमां काम चेष्टा, हांसी, लडाइ, थुंकवुं, निद्रा लेवी, खोटी कथा करवी तथा आ-हार करवा, इत्यादि अनर्थदंड छे. आ व्रतना पांच अतिचार छे ते कहीए छीए.

१ प्रथम कंदर्प्पचेष्टा. मुखविकार, भ्रूविकार, नेत्रविकार करवा, हा-थनी चेष्टा बतावची, पगनी चेष्टा बतावची, पगनी चेष्टा करी बीजाउने हसाववा, कोइने क्रोध, थाय तेम करवुं, पोतानी लघुता थाय, तथा ध-र्मनी निंदा थाय तेवी कुचेष्टा करवी, आ प्रथम अतिचार.

२ बीजो मुखरिवचन अतिचार. जांड, कुतूहली लोकोनी जेम मुखरी पणुं करे, असंबद्ध वचन बोले, बीजाउनां मर्म प्रगट करे, बीजाउ क-ष्टमां पडे तेवां वचन बोले; लघुता थाय, वेर वधे, लबाडीपणुं कहेवा-य, तथा चुगलखोर कहेवाय, एवां वचन बोले, वली लोकोमां लाज जाय एवुं वाचालपणुंकरे तो बीजो अतिचार.

३ त्रीजो जोगोपजोग अतिरिक्त अतिचार. स्नान, पान, जोजन, चं-दन, कुसुम, कस्तूरी, वस्त्र, आजरणादि पोताना शरीरना जोग उपरांत अधिक मेलववां; ते पण अनर्थदंड छे. आ प्रसंगे वृद्ध आचार्योनो सं-प्रदाय बतावीए छीए. तेल, आमलां, दहीं प्रमुख स्नानने वास्ते अधिक लइ जाय तो, तेनी लालचथी बीजा बहु लोको तेनी पाछल तलाव उपर स्नान वास्ते जशे, त्यां स्नान करवाथी पाणीना पूरा प्रमुख बहुज अप् कायना जीवोनी विराधना थशे, तेथी श्रावकें एवी रीतें स्नान करवा न जवुं जोइए. श्रावकनो स्नान करवानो विधि आ बाबतमां आ प्रमाणे छे. प्रथम तो श्रावके घरमांज स्नान करवुं जोइए, कदापि पोताने घेर तेवी सगवड न होय तो, तेल, आमलां प्रमुख पोताने घेर वावरी, मेल काढी, तलावना कांठा उपर बेसी पाणी वासणमां गली स्नान करवुं, इत्यादि जीवरक्षा माटे कालजी राखे. वली फूलादिमां जीवनो संचार लागे तो तेने परिहरे, एम सर्व स्थलें उपयोगपूर्वक प्रवर्त्ते. न प्रवर्त्ते तो त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कौकुच्य अतिचार जे बोलवाथी पोतानो तेमज बीजाओना आत्मा काम, क्रोधरूप थइ जाय वली विरहनी वार्ताओ, शृंगार रसनी सोखी, छंद, कवित्त, श्लोक विगेरे, तेमज परजराग काफी राग प्रमुख रागमा काममर्म कथन करे तो आ अतिचार लागे

५ पांचमो सयुक्त अधिकरण अतिचार जेमके उखलनी साथे मुशल, हलनी साथे फाला, गाडीनी साथे धोंसरु, धनुष्नी साथे तीर, इत्यादि श्रावक राखे नहि, कारण के एवां पापनां अधिकरण साथे राखवाथी कोइ तरत लइ जाय, वली लेवा आवे त्यारे ना कही शकाय नहि, तेथी जो अलग अलग होयतो लेवा आवनारने सुखेथी जवाब आपी शकाय आ पांचमो अतिचार हवे नवमा सामायिक व्रतनु स्वरूप लखीए छिये पूर्वोक्त आठे व्रतोने पुष्टिकारक, तथा आत्मगुणोने वृद्धि कारक अने अविरतिकषायमां तादात्म्यभावथी मलेली अनादि अशुद्धता रूप विभाव परिणति, तेना अभ्यासने छोडाववावास्ते तथा आत्म अनुभव करवा वास्ते अने सहज आनंद स्वरूपरस प्रगट करवा वास्ते आ शिक्षाव्रत छे, अर्थात् शुद्ध अभ्यास रूप नवमु सामायिक व्रत छे बे घडी काल प्रमाण समतामां रहेवु रागद्वेषरूप हेतुओमां मध्यस्थ रहेवुं तेने पंडित पुरुषो सामायिक व्रत कहेछे वली सम अर्थात् रागद्वेषरहित परिणाम, जे यथार्थ ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप मोक्ष मार्ग तेनो "आय" अर्थात् लाभ, प्रशमसुखरूपतेनो इक कहेतां भाव ते सामायिक छे श्रावक मन वचन कायानी खोटी चेष्टा तेमज आर्त्तध्यान रौद्रध्याननो त्याग करीने सामायिक करे आवश्यकसूत्रमां लख्यु छे के, ज्यारे श्रावक सामायिक करेछे, त्यारे ते साधु समान थाय छे, ते कारणथी श्रावक सामायिकमा देवस्नात्र, पूजादि न करे, कारण के भाव पूजा वास्ते द्रव्य पूजा छे, अने भावस्तव सामायिकमां प्राप्त थइ जाय छे ते कारणथी द्रव्य स्तव जिनपूजा सामायिकमां श्रावक उचित नथी सामायिक करनार श्रावक बत्रीश दूषणो तजीने सामायिक करे, ते बत्रीश दूषणोमां प्रथम कायानां बार दूषणो छे तेनु स्वरूप लखीये छीये

१ प्रथम आसनदोष सामायिकमां पग उपर पग चढावीने बेसे तो दोष लागे, कारण के गुरुविनयमां लाघवता थाय छे, वली ते अभिमानु

आसन छे, तेथी एवी रीतें बेसे के विनयगुण रहे, उद्धताइ मालम न पडे तथा अयत्ना न थाय.

२ चलासन दोष. आसन स्थिर राखे, वारंवार उंचा नीचा थाय, चपलतायुक्त प्रवर्त्ते. मुख्य रीति तो ए छे के श्रावक एकज आसन उपर सामायिक पुरुं करे, अडिंगपण रहे कदाचित् रोग, निर्बलताना कारणथी एक आसन पर टकी न शकाय तो, अने फरवुं पडे तो उपयोग संयुक्त, यत्नापूर्वक चरवलाथी पूंजन प्रमार्जन करीने आसन फेरवे, पूर्वोक्त विधि न करे तो, आ दोष लागे.

३ चलदृष्टि दोष. सामायिक लीधा पछी, नासिका उपर दृष्टि राखे, मनमां शुद्ध उपयोग राखे, मौन पणें ध्यान करे. वली सामायिकमां जो शास्त्राभ्यास करवो होय तो, यत्नापूर्वक, मुख आगल मुहपति राखीने, दृष्टि पुस्तक उपर राखीने जणे अथवा श्रवण करे. वली जो कायोत्सर्ग करे तो, चार आंगल पाछलथी पग पहोला राखे, योगमुद्राथी उजा थइ, बंने बाहु प्रलंबित करे, दृष्टि नासिका उपर राखे, अथवा जमणा पगना अंगुठा उपर राखे; आ शुद्ध सामायिक करवानो विधि छे, ते विधिने तजीने चपलपणाथी चकित मृगनी जेम चारे दिशिए आंख फेरवे तो आ दोष छे.

४ सावद्य क्रिया दोष. क्रिया तो करे, परंतु तेमां कांइक सावद्य क्रिया करे, अथवा सावद्य क्रियानी संज्ञा करे तो आ दोष लागे.

५ आलंबन दोष. सामायिकमां जींत प्रमुखनुं आलंबन अर्थात् पुंठ लगावी बेसवुं. पूंज्या, प्रमार्ज्या विनानी जींतपर पुंठ लगाववाथी जीव बेठा होय तो तेनो घात थाय छे, तेमज निद्रापण आवे छे.

६ आकुंचन प्रसारण दोष. सामायिक लीधा पछी प्रयोजन विना हाथ, पग, संकोचे, लांबा करे. मोटा कारण विना सामायिकमां हलवुं नहि. जरूरी काममां चरवलाथी पुंजी, प्रमार्जी हलवुं.

७ आलस दोष. अंगमां आलस मरडे, कमर वांकी करे, प्रमाद सेवे, प्रमाद सेवनथी बहुज अनादर व्रतमां थाय छे, कायामां अरति उत्पन्न थाय छे, ज्यारे उठे, त्यारे आलस मरडी, अशोजनीय रीतें उठे तो आ दोष लागे.

८ मोटन दोष सामायिकमां आंगलीना टाचका फोडे, आ पण प्रमादनी प्रबलताथी थाय छे

९ मलदोष सामायिकमां खजवाले, वलूरे. मुख्यवृत्तिए तो सामायिकमां खरजने सहन करे, परंतु लाचार थइ जाय तो चरवला प्रमुखथी प्रमार्जी धीमे धीमे खजवाले एवी शैली छे

१० विमासण दोष सामायिकमां गलामां हाथ लगावी बेसे तो आ दोष लागे

११ निद्रा दोष सामायिकमां निद्रा लीधा करे.

१२ आछादन दोष शीत प्रमुखनी प्रबलताथी पोतानां समस्त अंगोपांग वस्त्रथी ढांके आ बार दोष कायासंबंधी छे

हवे वचनना दश दोष लखीए छीए

१ कुबोल दोष सामायिकमां कुवचन, कर्कश वचन बोले

२ सहसाकार दोष सामायिकमां विचार कर्या विना बोले

३ असत् आरोपण दोष सामायिकमां कोइना उपर खोटुं तोमत आवे एवां वचन बोले न कर्याने कर्युं कहे

४ निरपेक्षवाक्य दोष सामायिकमां शास्त्रनी अपेक्षा विना बोले पोताना ठर्वे बोले

५ संक्षेपदोष सामायिकमां सूत्र, पाठ संक्षेपथी करे, अक्षर पाग वि यथार्थ कहे नहि, तो पांचमो दोष लागे

६ कलहदोष साधर्मीठ साथे क्लेश करे, सामायिकमा कोइ मिथ्यात्वी गालो दे उपसर्ग करे, कुवचन बोले, तो पण तेनी साथे कलह नहि करवो जोइए, तो पछी पोताना साधर्मी भाइ साथे क्लेश तो केमज थइ शके ? जो करे तो आ दोष लागे

७ विकथा दोष सामायिकमां राज्यकथा प्रमुख चारे विकथा करे तो आ दोष लागे

८ हास्य दोष सामायिकमां बीजानी हांसी, मश्करी करे

९ अशुद्ध पाठ दोष सामायिकना सूत्रपाठ शुद्ध बोले नहि, उतावलथी सामायिक बहे तथा पारे, त्यारे हीनाधिक उच्चारे पद्मा तद्मा सूत्रो पढे

१० मुणमुण दोष सामायिकमां प्रगट स्पष्ट अक्षरोच्चार न करे. बी-

जाउने एवुं लागे के जाणे मछर गणगणाट करे छे. पद, गाथाना ठेकाणा विना गडवड करी पाठ बोली जाय. आ वचनना दश दोष कह्या.

हवे मनना दश दोष लखीए छीए.

१ अविवेक दोष. सामायिकमां सर्व क्रिया करे, परंतु मनमां विवेक रहित पणें करे. जडताइथी करे. मनमां विचारे के सामायिक करवाथी कोण तरी गयुं छे? सामायिकमां शुं फल छे? इत्यादि विकल्प करे.

२ यशोवांछा दोष. सामायिक करीने यशःकीर्त्तिनी इछा करे.

३ धनवांछा दोष. सामायिक करी तेनाथी धन मेलववानी वांछा राखे.

४ गर्व दोष. सामायिक करी मनमां अभिमान करे के हुंज खरो धर्मी छुं. मनेज सारीरीतें सामायिक करतां आवडे छे. बीजा मूर्ख लोकोने शुं गम पडे.

५ भय दोष. लोकोनी निंदाथी डरीने सामायिक करे. लोको कहेके जूउ भाइ! श्रावकना कुलमां उत्पन्न थया छे, मोटा मानवंता गणाय छे, परंतु धर्म कर्मनुं तो नाम पण जाणता नथी, धर्म तो दूर रहो, परंतु निरंतर एक सामायिक पण करता नथी. एवी लोकोनी निंदाथी डरीने सामायिक करे.

६ निदान दोष. सामायिक करी निदान करे के आ सामायिकना फलथी मने धन, स्त्री, पुत्र, राज्य, इंद्र, चक्रवर्त्तिनी पदवी मले तो सारुं.

७ संशय दोष. कोण जाणे सामायिकनुं फल मलतुं हशे के नहि? जेने तत्त्व प्रतीत न होय तेज एवो कुविकल्प करे.

८ कषाय दोष. सामायिकमां कषाय करे, क्रोधादिसंयुक्त मन छतां सामायिक करवा बेसी जाय. सामायिकमां कषायनो तो संपूर्ण अभाव जोइये.

९ अविनय दोष. विनयरहितपणे सामायिक करे.

१० अबहुमान दोष. सामायिक बहुमान. भक्तिभाव, उत्साहपूर्वक न करे. आ दश मनना दोष छे. उपर बताव्या प्रमाणे बत्रीश दूषण रहित सामायिक करे. सामायिक व्रतना पांच अतिचार टाले, तेनुं स्वरूप कहिये छिये.

१ काय दुःप्रणिधान अतिचार. शरीरना अवयव, हाथ, पग प्रमुख, पुंज्या, प्रमार्ज्याविना हलावे, भींते पीठ लगावी बेसे.

२ मनोदुःप्रणिधान अतिचार. मनमां कुव्यापार चिंतवन. क्रोध लो-

न, क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या, व्यासंग, संभ्रमचित्त सहित सामायिक करे
 २ वचन दुःप्रणिधान अतिचार सामायिकमां सावद्य वचन बोले, सूत्राक्षर हीनाधिक पढे स्पष्ट उच्चार न करे
 ४ अनवस्था दोष रूप अतिचार सामायिक वखतसर न करे, जो करे तो पण वे मर्यादाथी, आदरविना, उतावळथी करे.
 ५ स्मृतिविहीन अतिचार सामायिक करी छे के नहि ? सामायिक पारी छे के नहि ? लीधी छे तो क्यारे लीधी छे ? इत्यादि भूल करे इति नवम सामायिक व्रतस्वरूप

हवे दशमा दिशावकाशिक व्रतनुं स्वरूप लखीए छीए छठा व्रतमां जे दिशाओनु परिमाण करेलु होय, ते जावजीव सुधीनु होय छे, तेमां घणु क्षेत्र मर्यादा छुटी राखी होय छे, तेटलानी हररोज जरूर पडती नथी, ते कारणथी दिन दिन प्रत्ये न्यूनन्यून करे, जेमके आजरोज पांच कोश, वा दशकोश, वा पचीश कोश, वा बे माइल, वा नगरना दरवाजासुधि, वा अमुक बाग बगीचा सुधि मारे गमन करवानी छुट छे, उपरांत प्रतिषध छे, एवु जे नियम ते दिशावकाशिक व्रत कहेवाय छे अर्थात् आ व्रत छठाव्रतनु संक्षेपव्रत छे उपलक्षणथी पांच अणुव्रतादिनो संक्षेप थोडा काळनो तेपण आ व्रतमां समाय छे आ व्रत चार मास, एक मास, वीश दिवस, पांच दिवस, अहोरात्र, एक दिवस, एक रात्रि, वा एक मुहूर्त्तमात्र काळसुधी पण लइ शकाय छे नियम एवी रीतें करे के अमुक नगरादिमां शरीरथी जाइश, ते उपरांत शरीरें जवानो निषेध छे आ व्रतवाळा श्रावकने देश, परदेशना व्यापार होय तो करेला क्षेत्रपरिमाण उपरांत कायाथी ते जइ शके नहि, परंतु दूरदेशना कागळ प्रमुख आवे ते वांचवानो, तेमज माणस मोकलवानो आगार छे एवुं नियम ते राखी शके. परदेशनी वात सांभळवानो आगार राखे, परंतु जेछने परदेशनो व्यापार न होय, ते कागळ, चीठी प्रमुखपण वांचे नहि, तेमज आदमी पण मोकले नहि वळी चित्तवृत्ति स्थिर होय, अने संकल्प विकल्प न थता होय तो परदेशनी वात पण श्रवण करे नहि जो तेम रही शकातुं न होय तो आगार राखे, परंतु जाणीने पोताना व्रतने दोष लगावे नहि आ दिशावकाशिक व्रत निरंतर सवारमां चौद नियमनी यादगिरीमां उ-

पयोगपूर्वक राखे, अने रात्रिए जुदुं राखे, आ व्रत जेवी रीतें गुरुमुखथी धारे तेवी रीतें पाले. आ व्रतना पांच अतिचार वर्जवा, ते कहीए छीए.

१ आणवण प्रयोग अतिचार. नियम करेला क्षेत्रथी बहारना क्षेत्रमां कोइ वस्तु होय, अने तेनी जरूर पडे, त्यारे विचारे के मारे तो नियम करेला क्षेत्रथी बहार जवानो निषेध छे, तेथी कोइ त्यां जतुं होय तेने कहे के अमुक वस्तु मारे वास्ते लेता आवजो. पछी विचारे के मारुं व्रत भंग थयुं नहि. अने वस्तु आवी गइ. आ प्रथम अतिचार.

२ पेसवण प्रयोग अतिचार. बीजा आदमीनी साथे पोताना नियम उपरांतना क्षेत्र बहार कोइ वस्तु मोकलवी ते.

३ सद्दाणुवाय अतिचार. नियमनी भूमिकाबहार कोइ आदमी जतो होय, तेनी पासे कांइ काम कराववुं होय, त्यारे तेने खोंखारो प्रमुख करी बोलावे, पछी कहे के अमुक वस्तु लेता आवजो. आ त्रीजो अतिचार छे.

४ रूपानुपाती अतिचार. पोताना नियम उपरांतना क्षेत्रें कोइ आदमी जतो होय, तेनी साथे कांइ काम होय, त्यारे हवेली अथवा दुकानना उपरला मजला उपर चडी, पोते तेनी दृष्टिए पडे तेम करे, पछी जनार आदमी पोतानी पासे आवे, एटले पोताना मतलबनी सर्व वात तेनी साथे करे तो आ अतिचार लागे.

५ पुद्गलाक्षेप अतिचार. पोताना नियम उपरांतनी भूमिकाए कोइ आदमी जतो होय, अने तेनी साथे कांइ काम होय, त्यारे तेना उपर कांकरो फेंके, जेथी ते पोतानी पासे आवे त्यारे, तेनी साथे सर्व मतलबनी वातचित करे तो आ अतिचार लागे. इतिदशमं.

हवे अगीआरमा पौषधोपवास व्रतनुं स्वरूप लखीए छीए. पौषध व्रतना चार भेद छे, तेमां प्रथम आहार पोषध छे, तेना पण बे भेद छे, एक देशथी, बीजो सर्वथी. देशथी तो त्रिविहार उपवास करीने वा आचाम्ल (आयंबिल) करीने, वा त्रिविहार एकासणुं करीने पोषध करे, तेनो विधि लखीए छीए.

पोषध लीधा पहेलां पोताने घेर कही राखे के, हुं आजे पोषध उच्चरवानो छुं, तेमां आचाम्ल अथवा एकासणुं करवानो छुं, तेथी भोजनने अवसरे आहार करवा आवीश, अथवा तमे ते अवसरे पोषध शालामां

आहार लइ आवजो, एम यथायोग्य कथन करी पोषध करवा आवे, पोषध व्रत उचरे, बाद देववंदन कर्या पठी कटासणु, चरवलो तथा मुहपत्ति, आ त्रण उपकरण साथे लइ पोताने घेर जवु होय तो, चार हंढी, साधुनी जेम उपयोगसंयुक्त मार्गमा यत्नापूर्वक चाली, भोजन स्थानकें जइ, प्रथम इरिया वहिया पडिक्कमे, गमनागमननी आलोचना करे, पठी कटासणा उपर वेसी, आहार करवानु भाजन पडिलेही (प्रतिलेखी) बाद पोताने लेवा योग्य आहार लहे, साधुनी जेम रस गृद्धिरहित आहार करे, आहारने सारो अथवा बुरो कहे नहि, मुख थी बोल्या विना आहार करे, आहारनु जूठ पडे नहि, आहार कर्या पठी उष्ण जलथी आहारनु वासण धोइने पी जाय, वासण शुद्ध करी मुकयी, उपयोगसंयुक्त पोषधशालामां आवे, मार्गमा जता आवतां कोइनी साथे वात करे नहि, पोषधशालामा पूर्वना स्थानपर आवी बेसे, इरिया वही पडिक्कमि, चैत्यवंदन करी, धर्मक्रियामा प्रवर्त्ते जो पोतानो संबंधी अथवा सेवक पोषधशालामा आहार लइ आव्यो होय तो, पूर्वोक्त रीतिए आहार करी वासण पाछा आपी दे, पठी धर्म क्रियामां प्रवर्त्ते आ देशथी पोषध कहेवाय छे, अने जो चारे आहारना पच्चखाण करी पोषध करे तो सर्वथी कहेवाय छे आ प्रथम भेद छे

२ शरीरसत्कार पोषध तेमां सर्वथा शरीरसत्कार पोषध ते शरीरनो सर्वथा सत्कार स्नान, धोयन, धावन, तैलमर्दन, वस्त्राभरणादि शृंगार प्रमुख कांइ पण शुश्रूषा करे नहि, साधुनी जेम अपरिकर्मित शरीर राखे, अने जो पोषधमां हाथ, पग प्रमुखनी शुश्रुषा करवी ए वो आगार राखे तो, ते देश शरीर सत्कार पोषध कहेवाय छे

३ अब्रह्मचर्य पोषध त्रिकरण शुद्धिए ब्रह्मचर्य व्रत पालवु ते सर्वथा ब्रह्मचर्य पोषध छे अने मन, वचन, दृष्टि प्रमुखनो आगार राखवो, अथवा परिमाण राखवुं, ते देशथी ब्रह्मचर्य पोषध कहेवाय छे

४ सर्वथा सावद्यव्यापारनो त्याग, ते सर्वथी अव्यापार पोषध छे, अने कथादि व्यापारनो आगार राखवो ते देशथी अव्यापार पोषध छे,

ए प्रमाणे चारे प्रकारना पोषधना बे बे भेद छे पूर्वकालमां उपरे आगम व्यवहारी गुरु विचरता हता, अने श्रावक पण गुरू उपयोग

वाला हता, त्यारे जे जे प्रतिज्ञाउं लेता हता, ते ते सर्व अखंडित, तेवीज रीतें पालता हता, भूलता नहि, तेम न्यूनाधिक पण करता नहि; अने गुरु पण अतिशय ज्ञानना प्रभावथी योग्यता जाणीने देश वा सर्व पोषधनो आदेश आपता हता; तथा श्रावक पण कदाचित् स्मृतिभंग थता हता, तो पण तत्काल प्रायश्चित्त लइ लेता हता. आ कालमां तो एवा उपयोगवाला जीवज नथी. दुषम कालना प्रभावथी जड बुद्धि जीव बहुज छे. ते कारणथी पूर्वाचार्योए उपकारने अर्थे आहार पोषध तो बंने करवाने राख्यां, अने बाकीना त्रणे पोषध जितव्यवहार ग्रंथने अनुसारें निषेध करी दीधा छे. आ प्रवृत्ति वर्त्तमान संघमां प्रचलित छे. पोषध तो श्रावकें अवश्य करवा जोइए; कारण के कर्मरूप भावरोग वास्ते ते परम औषधि छे. तेथी ज्यारे पर्वनो दिवस आवे, त्यारे अवश्य पोषध करवो जोइए. तेना पांच अतिचार वर्जवा, ते कहीए छीए.

१ अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्ञा संथारक अतिचार. जे स्थानमां पोषध संस्थारक (संथारो) कर्यो होय, ते भूमिका तथा संथारानी पडिलेहणा न करे, अर्थात् संथारानी जगा सारी रीतें निघा करीने नेत्रथी जोवे नहि, कदापि जोवे तो पण प्रमादने वश थइ कांइक देखी, कांइक न देखी एम करे-

२ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिज्ञा संथारक अतिचार. संथाराने रजोहरणादिथी पूंजे नहि, कदापि पूंजे तो पण यथार्थ न पूंजे, गडबड करी दे, जीवरक्षा साचवे नहि.

३ अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि अतिचार. लघुशंका, वडीशंका परठववानी भूमिका नेत्रथी अवलोकन न करे; अवलोकन करे तोपण जेम तेम करी काम चलावे, जीवयत्ना विना करे, परिठवे.

४ अप्पमज्जिय, दुप्पमज्जिय उच्चार पासवण भूमि अतिचार. ज्यां मूत्र, विष्ठा करे, त्यां भूमिकाने प्रथम पूंज्याविना मल, मूत्र करे; कदाच पूंजे तोपण यद्वा तद्वा करे, परंतु यत्नापूर्वक न पूंजे.

५ पोसह विहि विवरीए अतिचार. पोषधमां क्षुधा लागे, त्यारे पारणानी चिंता करे, जेम के प्रभातें अमुक वस्तुउं करावीने आहार करीश वली अमुक काम करवा सारु अमुक स्थानकें जवुं पडशे. अमुकनी पासे

खपराणी छे, ते तगादो कर्या विना आपशे नहि, वली शरीर याकी ग
छे तेथी प्रजातमा तेल मर्दन करावीश, गरम पाणीथी स्नान करीश,
मुक पोशाक पहेरीश, स्त्रीनी साथे भोगविलास करीश, इत्यादि सा
चिंतवन करे सभ्याए पोषध मंडल शोधन करे नहि, आखी रात
रहे, वा विकथा करे. पोषधना अढार दूषणो वर्जे नहि

ते अढार दूषणो आ प्रमाणे पोसहमा व्रती विनाना श्रावकनुं
लु पाणी पीये, २ पोषध वास्ते सरस आहार करे, ३ पोषधने आगले दि
वसे अनेक तरेहनी रसवती मेलवी आहार करे, ४ पोषध निमित्तें,
वा पोषधने आगले दिवसे विभूषा करे, ५ पोषधवास्ते वस्त्र धोवरा
६ पोषधवास्ते आजरण घडावी पहेरे, स्त्रीपण नथ, ककणादि सोहाग
नां चिन्ह शिवाय नवा घरेणां घडावी पहेरे, ७ पोषध वास्ते वस्त्र रंगा
पहेरे, ८ पोषधमां शरीरनो मेल उतारे, ९ पोषधमां काल विना निद्रा
ले, १० पोषधमां स्त्री कथा करे, स्त्रीने सारी, बुरी कहे, ११ पोषधमां
भकथा करे, आहारने सारो, नरसो कहे, १२ पोषधमां राज्यकथा करे
युद्धनी वार्त्ता करे, १३ पोषधमां देशकथा करे, देशने सारो, नरसो करे
१४ लघु शंका भूमि पूज्या विना करे १५ बीजानी निंदा करे, १६
माता, पिता, पुत्र, भाइ, बहेन साथे वार्त्तालाप करे, १७ चोरनी क
करे, १८ स्त्रीनां अंगोपांग स्तन, जघादि निहाले आ अढार दूषणो
तो शुद्ध पोषध जाणवो इति एकादश व्रतस्वरूप

हवे बारमा अतिथि संविभाग व्रतनुं स्वरूप लखी॰ छियें जेणें
तिथ पर्वोत्सवादि तिथियोनो त्याग करेलो होय ते अतिथि कहेवाय
जेम परोणो (मेमान) तिथि विना आवे छे, अर्थात् अमुक तिथियेंज आ
वयो जेम नियम नथी, तेम जे साधु होय छे ते अणचिंतव्याज आवे छ
तेथी ते अतिथि जाणवा तथा मधुकर वृत्तिवालाथी जो विभाग करे.
र्थात् शुद्ध व्यवहार न्यायोपार्जित धनथी, वस्तुछे लावी, पोताना उदर
रवाथे जे रसोइ करी छ, तेमांथी उत्तम श्रद्धाभावपूर्वक पूर्व पर्म पश्चात्
मादिदोषरहित शुद्ध निर्दोष आहार, भक्तिपूर्वक साधुने वहोरावे
(आपे) ते अतिथि संविभाग व्रत कहेवाय छे प्रथम दान देनारमां आ
पांच गुण होय तो ते दातार शुद्ध होय छे, ते पांच गुण गणिये छिये

१ जैनमार्गी दातारने, शुद्ध पात्रनो योग प्राप्त थवाथी, अर्थात् पोताना घरमां मुनिराजनां दर्शन मात्र थवाथी अंतरंगमां बहुज आनंद पामे, जेम पोतानो अत्यंत प्यारो, हितकारी मित्र बहु वखतथी दूर देशांतर गयो होय, जेनी कोइ वखत विस्मृति थइ न होय, अने जेने मलवाने निरंतर अंतःकरणमां आतुरता रहेती होय; एवा परम वल्लभ मित्रने अकस्मात् मलवाथी जेम आनंदनां आंसु आवी जाय, तेवीज रीतें मुनिराजने पोताने घेर पधारेला जोइ आनंदनां आंसु लावे, मनमां विचारे के आज मारुं परम भाग्य के, आवा मुनिराज मारे घेर पधार्या. वली हुं केवो बुं? अनादिकालथी भूल भ्रमित, द्रव्य संबल रहित, दारिद्र अंधभावपीडित, ज्ञानलोचनरहित, अपार संसार चक्रमां भटकनार एवा मने, अत्यंत अकथनीय दुःखसंयुक्त देखीने, मारा उपर परम दयादृष्टिपूर्वक, प्रथम ज्ञानांजन शलाकाथी मारां ज्ञानरूपनेत्र उघाडी दीधां, वली त्रण तत्व सेवारूप व्यापार मने शिखव्यो, तथा रत्नत्रयीरूप पुंजी (राशि) मने आपी मारुं अनादि कालनुं दारिद्र्य दूर कर्युं, मने उत्तमपुरुषोनी गणतरीमां लावी मुक्यो, एवा गुरु मुनिराज निःस्वार्थे परोपकारी मारा घर आंगणामां पधार्या एवा प्रशस्त राग भावना उल्लासथी आनंदनां आंसु लावे, एवी पुष्ट भावना भावे आ दातारनो प्रथम गुण बे.

२ जेम संसारमां जीवने अत्यंत इष्ट वस्तुना संयोगथी रोमावलि विकस्वर थाय बे, तेम मुनिराजने देखी, अति भक्तिना प्रभावथी रोमावलि विकस्वर थाय, अने अंतःकरणमां हर्ष समाय नहि. आ बीजो गुण बे.

३ मुनिराजने देखी बहुमान एवी रीतें करे, जेम कोइ गृहस्थने घेर, राजा पधार्या होय, अने ते राजानुं बहुमान, जेम ते गृहस्थ करे, एवा विचारथी के आजे मारा भाग्यनो उदय थयो के राज्यना स्वामि, राजाधिराज मारे घेर पधार्या, माटे उत्तम प्रकारनां नजराणां आ वखते करवां ते मने उचित बे, कारण के राजानुं पधारवुं वारंवार थतुं नथी, एम निश्चय करी जेम उत्तम वस्तुउ भेट करे, तेवी रीतें श्रावक पण मुनिराजनुं बहुमान करे; मनमां विचारे के आवा निःस्पृहीयोमां शिरोमणी, जगद्बंधु, जगत् हितकारी, जगत् वत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, करुणासा-

गर, ससारजलधि उद्धरण, परोपकार करणीमां चतुर, क्रोधादि निवारक, तरण तारण, एवा मुनिराज मारे घेर पधार्या, तेथी आजे अहो जाग्य छे! एवु जाणी संभ्रमसंयुक्त सन्मुख जाय, त्रिकरणशुद्ध परिणामथी विनति करे के हे स्वामि! दीन दयाल पधारो! मारुं एहांगण पवित्र करो! एम अति सन्मानपूर्वक घरमां पधरावे, मनमां विचारे के आ जे मारो पुण्योदय थयो, जे साधु आहार पाणीनो अनुग्रह करे छे कारण के साधुने आहार लेवामां बहुज विधि छे,साधु शुद्ध जात पाणी जाणे तो ग्रहे, ते कारणथी रखे माराथी कांइ दोष लागी जाय, एवो विचार करी, त्रिकरण शुद्ध, बहुमानपूर्वक, उपयोगसंयुक्त, विधिपूर्वक आहार लावीने मधुरस्वरथी विनति करे के हे स्वामि! आ शुद्ध आहार छे,ते थी सेवक उपर परम कृपादृष्टि करी पात्र पसारी मारो निस्तार करो, एम विनति करतां थकां आहार वहोरावे मुनिपण ते आहारने योग जाणीने लइ ले श्रावकपण दान देवा योग्य जे जे वस्तुओ होय, ते सर्वनी निमंत्रणा करे, ए प्रमाणे विधिपूर्वक दान दइ हाथ जोडी, पृथ्वी उपर मस्तक लगावी, नमस्कार करे, पछी मिष्टवचनोथी विनति करे के हे कृपानिधान! सेवक उपर मोटी कृपा करी, आजे मारु घर पवित्र थयु पूरा पुण्योदयविना मुनिराजनो योग क्यांथी मले? वली हे स्वामि! कृपा करी अशन, पान, खादिम, स्वादिम, औषध, वस्त्र, पात्र, शय्या, संस्तारकादिनु प्रयोजन होय तो अवश्य सेवक उपर अनुग्रह करी पधारशो, आप तो मुनिराज गुणवान् वेपरवाह छो, आपने कोइ वस्तुनी कमी नथी, कोइनी साथे प्रतिबंध नथी, आप पवननी जेम अप्रतिबद्ध छो तोपण मारा उपर जरुर फरी उपकार करशो, एम कहेतां कहेतां पोताना आंगणानी सीमा सुधी पहोंचाडे आ त्रीजो गुण छे

४ मुनिराजने वलावी, वंदना करी, घेर आवी, जोजन करवा बेसे परंतु मनमा आनंदना उजरा आव्या करे, विचारे के आजे मारुं अहो जाग्य थयु! आज कोइ उत्तम वात थशे, कारण के आजे निःस्पृही, सहज उदासी, स्वसुखविलासी मुनिराजने विनति करी आहार प्रतिलाभ्यो, अने आहार वहोरावता वचमां कांइ विघ्न आव्युं नहि आजे .

तकृत्य थयो; वली आवा मुनिराजनो योग क्यारे मले ? एवी अनुमोदना वारंवार करे, आ चोथो गुण छे.

५ जेम कोइ मंद जाग्यवान् व्यापार करतां थोडुं थोडुं कमाय, तेने कोइ दिवस कोइ सोदामां लाख रुपैयानी प्राप्ति थइ जाय, त्यारे जेवो ते आनंदित थाय, अने फरी तेज व्यापारनी जेवी चाहना राखे, तेनाथी पण अधिक, श्रावक साधुने दान देवानी चाहना राखे. आ पांचमो गुण छे. आ पांच गुण युक्त दान आपे तो अतिथिसंविजाग व्रत होय. आ व्रतना पांच अतिचार वर्जवा, ते लखीए ठीए.

१ सचित्त निक्षेप अतिचार. सचित्त पृथ्वी, जल, कुंज, चूला, इंधनादि उपर साधुने न देवानी बुद्धिथी आहार राखे; मनमां एवो विचार करे के साधु तो आहार लेशे नहि, परंतु निमंत्रणा करवाथी मारुं अतिथिसंविजाग व्रत बन्युं रहेशे. आ प्रथम अतिचार.

२ सचित्त पीहण अतिचार. आहारने सचित्त वस्तुथी ढांके, सूरण, कंद, पत्र, पुष्पादिथी न देवानी बुद्धिथी ढांकी राखे तो बीजो अतिचार.

३ कालातिक्रम अतिचार. साधुने जिक्षानो काल वित्या पछी, अथवा जिक्षा काल पहेलां, अथवा साधु आहार करी रह्या होय ते पछी, आहारनी निमंत्रणा करवा जाय तो त्रीजो अतिचार.

४ परव्यपदेश अतिचार. साधु ज्यारे याचना करे, त्यारे क्रोध करे; पोतानी पासे वस्तु होय छतां, मागतां आपे नहि; वली आपे तो पण एवा विचारथी के आवा गरीब लोको साधुने आपे छे तो, तेउनाथी शुं हुं गरीब छुं ते न आपुं ? आवी जावनाथी आपे तो चोथो अतिचार.

५ गोल, खांड प्रमुख पोतानी वस्तु होय, ते न आपवानी बुद्धिए पारकी कहे, अने पारकी वस्तु होय ते आपवानी बुद्धिए पोतानी कहे तो आ पांचमो अतिचार. इति श्री अतिथिसंविजागव्रतं संपूर्ण.

सम्यक्त्वपूर्वक बारव्रतरूप, गृहस्थ धर्मनुं स्वरूप धर्मरत्न प्रकरण, तथा योगशास्त्रादि ग्रंथानुसार संक्षेपमात्र लखेल छे; विशेष जाणवानी अजिलाषावालाए धर्मरत्नशास्त्र वृत्ति, तथा योगशास्त्र जोवां.

इति श्रीतपोगछीयगणिश्रीमणिविजयतछिष्यश्रीमुनिबुद्धिविजयतछिष्य

मुन्यात्मारामानंदविजयविरचित जैनतत्त्वादर्श (जापांतरे) श्रावकनिरू नामा अष्टमपरिछेदः सपूर्ण ॥

॥ श्रथ नवमपरिछेदप्रारंज ॥

श्रावकोनां ठ कृत्यो ठे १ दिनकृत्य, २ रात्रिकृत्य, ३ पर्वकृत्य, ४ चातुर्मासिक कृत्य, ५ संवत्सरकृत्य, ६ जन्मकृत्य, तेमांथी प्रथम दिनकृत्यविधि, श्रा परिछेदमां श्राद्धविधिग्रंथ तथा श्रावककौमुदी शास्त्रानुसार लखियें ठियें

प्रथम तो श्रावकें निड़ा श्रल्प लेवी जोइए ज्यारे एक प्रहर रात्रि शेप रहे, त्यारे निड़ा तजी उठवुं जोइए कोइने बहु निड़ा आवती होय तो पण जघन्यथी चौदमा ब्राह्ममुहूर्त्तमां श्रवश्य उठवु जोइए सवारमां वहेलां उठवाथी इहलोक परलोकनां श्रनेक कार्य सिद्ध थाय ठे, ते श्रवसरें बुद्धिपण निर्मल, सुंदर होय ठे पूर्वापर विचार बहुज सारी रीतें थइ शके ठे ग्रंथकार एम पण लखे ठे के निरतर जेने सूतां सूतां सूर्योदय थइ जाय, तेनु श्रायुष्य श्रल्प थाय ठे, तेथी ब्राह्ममुहूर्त्तमां श्रवश्य उठवु जोइए ज्यारे निड़ानो त्याग करी उठे, त्यारे मनमां विचारे के हुं श्रावकनुं, पोताना घरमां सुतो हतो के बीजाना घरमां सुतो हतो ? नीचे सुतो हतो के उपरमाले सुतो हतो ? दिवसना सुतो हतो के रात्रिना सुतो हतो ? इत्यादि विचार करतां निड़ानो वेग न मटे तो नासिका लेमज मुखनो श्वासोश्वास रोके, तेम करवाथी निड़ा तत्काल दूर थइ जाय ठे, पठी द्वार सारी रीतें तपासी जरुर होय तो लघुशकादि करे रात्रिमां जागतां कोइने कांइ कहेवुं पडे तो, मदस्वरथी कहे, उंचे स्वरें शब्दोच्चार करे नहि उंचा स्वरथी बोलवाथी रात्रिमां ठपकली प्रमुख हिंसक जीव जागी जाय तो माखी प्रमुख श्रनेक जीवोनी ते हिंसा करे ठे कसाइ जागी जाय तो, गाय, बकरी, घेटा प्रमुखने मारवाने चाल्यो जाय ठे, माठी जाल लइ पोतानु काम शरु करवा जाय ठे, वाघरी, श्राहेडी, मदिरापानी, खुनी, परस्त्रीलंपट, तस्कर, लूटारा, धोबी, घांची, कुंजार प्रमुख श्रनेक हिसा करनारा जीवो जागवाथी श्रनेक तरेहनां पापकर्ममा प्रवृत्त थइ जाय ठे श्रा सर्व

पापनुं निमित्त कारण रात्रिए ऊंचा स्वरथी वात करनारने थाय, तेथी ऊं-
चा स्वरथी रात्रिमां नहि बोलवुं जोइये.

सवारमां निद्रानो छेद थाय त्यारे तत्त्वज्ञाता श्रावकें तत्त्वविचार क-
रवो जोइये. तत्त्व पांच छे. १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ आ-
काश, निद्राना छेद समये जो पृथ्वीतत्त्व तथा जलतत्त्व वहेतां होय तो
शुभ छे अने जो अग्नि, वायु के आकाशतत्त्व वहेतां होय तो दुःख-
दायक छे. शुक्लपक्ष प्रतिपद् दिने जो वामनासिकानो स्वर चालतो
होय तो पंदर दिवस सुधी आनंद आरोग्य रहे; अने कृष्णपक्षनी ए-
कमने दिवसे जो दक्षिण नासिकानो स्वर वहेतो होय तो पंदर दि-
वस सुधी सुख आनंद रहे; तेनाथी विपर्यय होयतो विपर्यय फल थाय.

शुक्ल पक्षना प्रथमना त्रण दिवस वामनासिकानो स्वर ऊठतां वहे-
तो होय तो शुभ छे. ते पछीना त्रण दिवस दक्षिणस्वर चालतो होय तो
शुभ छे, वली ते पछीना त्रण दिवस वाम स्वर चालतो होय तो शुभ छे,
एम अनुक्रमें पंदर दिवस सुधी समजवुं. तथा कृष्णपक्षनी एकमना दि-
वसथी त्रण दिवस सुधी दक्षिणस्वर वहेतो होय तो शुभ छे, ते पछीना
त्रण दिवस वामस्वर वहेतो होय तो शुभ छे. वली ते पछीना त्रण दि-
वस दक्षिण स्वर वहेतो होय तो शुभ छे, एम पंदर दिवस सुधी जा-
णवुं. तथा चंद्रस्वरमां सूर्य उगतो होय, अने सूर्यस्वरमां सूर्य अस्त थतो
होय तो शुभ छे. तथा सूर्यनाडीमां सूर्य उदय होय, अने चंद्रनाडीमां
अस्त थाय तो पण शुभ छे. कोइ शास्त्रना मत प्रमाणे रवि, मंगल, गुरु,
शनि, आ चार वारमां दक्षिणस्वरमां सूर्यनाडी दिवस ऊगतां चाले
तो शुभ छे, अने सोम, बुध तथा शुक्र आ त्रण वारमां सूतां, ऊठतां चंद्र-
स्वर वामस्वर चाले तो शुभ छे, तेनाथी विपर्यय चाले तो अशुभ छे.

वली कोइक शास्त्रकारना मत प्रमाणे संक्रांतिना क्रमथी सूर्य चंद्र-
नाडी वहे तो शुभ छे, जेम के मेष संक्रांतिने दिवस सूर्यस्वर चाले,
तथा वृषसंक्रांतिने दिने चंद्रनाडी चाले तो शुभ जाणवी इत्यादि. तथा
कोइक मतमां चंद्रमां राशि पलटे ते अनुक्रमें अढी घडी सुधी एक
नाडी वहे छे इत्यादि; परंतु जैनमतना आचार्य श्रीहेमचंद्रादिनो तो
प्रथम लख्या प्रमाणे मत छे. छत्रीश गुरु अक्षरो उच्चार करतां जेटलो

काल लागे छे, तेटलो काल वायुनो एक नाडीमांथी बीजी नाडीमां संचार करतां लागे छे

हवे पांचतत्त्व संबधी बोधस्वरूप कहियें छियें नासिकानो पवन जो उंचो जाय तो अग्नितत्त्व, जो नीचो जाय तो जलतत्त्व, जो तिर्छो जाय तो वायुतत्त्व, जो नासिकाथी निकली सिधो तिर्छो जाय तो पृथ्वी तत्त्व, जो नासिकाना बंने पुटनी अंदर वहे, बहार निकले नहि तो आकाश तत्त्व, ए प्रमाणे जाणवुं

प्रथम पवनतत्त्व वहेछे, पछी अग्नितत्त्व वहे छे, पछी जलतत्त्व वहेछे, पछी पृथ्वीतत्त्व वहेछे, पछी आकाश तत्त्व वहेछे निरंतर आ प्रमाणे अनुक्रम छे बंने नाडीओमां पांचे तत्त्व वहे छे, तेमां पृथ्वीतत्त्व पचाश पल प्रमाण वहे छे, जलतत्त्व चालीश पल प्रमाण वहे छे, अग्नितत्त्व त्रीश पल प्रमाण वहेछे वायुतत्त्व वीश पल प्रमाण वहेछे, आकाशतत्त्व दश पल प्रमाण वहेछे

पृथ्वी अने जलतत्त्वमां शांतिकार्य करवां, अग्नि, वायु तथा आकाशतत्त्वमां दीप्तिमान् अने स्थिर कार्य करवां, ए प्रमाणे करे तो शुभ फलोत्पत्ति थाय छे, जीववानो प्रश्न, जयप्रश्न, लाभप्रश्न, धनार्जन प्रश्न, मेघवर्षण प्रश्न, पुत्र होवानो प्रश्न, जवा आववना प्रश्न, आ प्रश्नो जो पृथ्वी अने जलतत्त्वमां करे तो शुभ थाय, अने अग्नि, वायु वहेतां करे तो शुभ थाय नहि, वली जो पृथ्वीतत्त्वमां प्रश्न करे तो कार्यनी सिद्धि स्थिरपणे थाय, अने जलतत्त्वमां कार्य शीघ्रताथी थाय

प्रथमनी जिनपूजा करतां, धन कमावा जतां, पाणिग्रहण करतां किल्लो लेतां, नदी उतरतां, गयेलानुं आगमन पुछतां, जीवननो प्रश्न करता, घर क्षेत्रादि खरीदतां, करीआयां लेता, वेचतां, वर्षतु प्रश्न करतां, नोकरी करतां, खेती करतां, शत्रुने जीततां, विद्यारंभ करतां, राज्याभिषेक करतां, इत्यादि शुभ कार्यो करता चंद्रनाडी वहे तो कल्याणकारी छे

प्रश्नसमये कार्यना आरंभमां पूर्ण वामनाडी प्रवेश करती होय, त्यारे निश्चयपूर्वक कार्यसिद्धि जाणवी, तेमा संदेह नथी वली अमुक सकल केदमांथी क्यारे छुटशे ? अमुक रोगी साजो क्यारे थशे ! अमुक स्थान भ्रष्ट थयेलो क्यारे पद प्राप्त करशे ? आ प्रश्नोमां, तथा युद्ध करवाना प्र-

क्षमां वैरीने मलतां, अकस्मात् जय पामतां, स्नान करतां, भोजन करतां, पाणी पीतां, सुतां, गइ वस्तुनी खोज करतां, मैथुन करतां, विवाद करतां, कष्टमां पडतां, आटला कार्योमां सूर्यनाडी वहेती होय तो शुभ छे, कोइक आचार्य एम पण कहे छे के, विद्यारंभमां, दीक्षामां, शास्त्राभ्यासमां, विवादमां, राजाना देखवामां, मंत्र यंत्रना साधनमां, सूर्यनाडी शुभ छे; अथवा जो चंद्रादि स्वर चालतो होय तो निरंतर ते बाजुनो पग उठावीने प्रथम चाले तो कार्यसिद्धि थाय.

पापी जीवोनी तथा शत्रुउना दूत प्रमुख जे क्लेश कराववा वाला छे, तेउनी सन्मुख, जे नासिकानी बाजु बंध होय ते पासुं राखे तो सुख, लाभ अने जय थाय. शय्याथी उठतां शुक्ल पक्षमां डावो पग, अने कृष्ण पक्षमां जमणो पग धरती उपर मुके. आ विधिए श्रावक निद्रा त्यागे.

श्रावक अत्यंत बहुमानपूर्वक मंगलकार्यवास्ते पंच परमेष्टि नमस्कारमंत्रस्मरण करे. शय्यामां बेठां थकां मनमां पंच परमेष्टिमंत्रस्मरण करे. वचनथी उच्चार न करे. जो मुखथी उच्चार करे तो शय्यानो त्याग करी धरती उपर बेसी नमस्कारमंत्र पढे. ए प्रमाणे नमस्कार मंत्र अंतःकरणमां स्मरण करतां करतां शय्याथी उठे; पवित्र जमीन उपर बेसे. पछी पूर्व अथवा उत्तर दिशि सन्मुख मुख करी उभा थइ चित्तनी एकाग्रता वास्ते कमलबंध करी जापथी नमस्कार मंत्र पढे. तेमां आठ पांखडीनुं कमल चिंतवे, तेनी कर्णिकामां अरिहंत पदनुं स्थापन करे, पूर्व पांखडीमां सिद्ध पदनुं, दक्षिण पांखडीमां आचार्यपदनुं, पश्चिम पांखडीमां उपाध्यायपदनुं, उत्तरपांखडीमां साधुपदनुं स्थापन करे; बाकीनां चूलिकानां चारे पद अग्न्यादि चारे खुणामां अनुक्रमें स्थापन करे. "उक्तं चाष्टमप्रकाशे योगशास्त्रे श्रीहेमचंद्रसूरिभिः" अष्टपत्रे सितांभोजे, कर्णिकायां करस्थितिः ॥ आद्यं ससाक्षरं मंत्रं, पवित्रं चिंतयेत्ततः ॥ १ ॥ सिद्धादिकचतुष्कं च, दिक्पत्रेषु यथाक्रमं ॥ चूलापादचतुष्कं च, विदिक्पत्रेषु चिंतयेत् ॥ २ ॥ त्रिशुद्ध्या चिंतयन्नस्य, शतमष्टोत्तरं मुनिः ॥ भुंजानोपि लभत्येव, चतुर्थतपसः फलं ॥ ३ ॥

हाथना आवर्त्तथी पंच मंगल मंत्र, नित्य स्मरण जे करता होय, तेउने पिशाचादि छलता नथी. बंधनादि कष्टमां, विपरीत शंखावर्त्तकादि

अक्षरोथी, अथवा विपरीतपदोथी पच मंगल मंत्र लक्षादि जाप करे तो शीघ्र क्लेशादि नाश पामे जो हाथ उपर जाप न करी शके तो सूत्र रत्नी वा रुद्राक्षादिनी माला उपर जप करे मालावालो हाथ हृदय सन्मुख राखे, शरीरें, शरीरना वस्त्रोने तथा भूमिकाने माला लागवा देवी नहि अगुठानी उपर माला राखी, तर्जनी आंगलीथी, नख लगाव्या विना, मणका फेरवे, मेरु उल्लंघन न करे शास्त्रकार लखेछे के जो आंगलीना अग्रथी जाप करे, जाप करता मेरु उल्लंघन करे, अने रखडता चित्तथी जाप करे तो बहुज अल्प फल मले छे जाप करनार भीजाउंथी एकिला रही शब्दोथी जाप नहि करतां मौनपणे जाप करे तो श्रेष्ठ छे जाप करतां थाकी जाय तो ध्यान करे, ध्यान करतां थाके तो जाप करे, बनेथी थाके तो स्तोत्र बोले

श्रीपादलिप्तआचार्यकृत प्रतिष्ठाकल्पपद्धतिमां लख्यु छे के, जाप त्रण तरेहथी थाय छे १ मानस, २ उपांशु, ३ भाष्य तेमां मानस जाप मनमां विचारणाथी थाय, स्वसंवेद्य होय, उपांशु जाप बीजा तो सांभले नहि, परंतु अतर्जल्प थाय, अने भाष्य जाप बीजाना सांभलवामां आवे तेम थाय आ त्रणे अनुक्रमें उत्तम, मध्यम अने अधम जाणवा मानस जापथी शांति थाय छे, अर्थात् शांतिने वास्ते मानस जाप करवो, पुष्टिने वास्ते उपांशु जाप करवो, अने आकर्षणादिमां भाष्य जाप करवो

नमस्कार मंत्रनां पांचपद, नवपद, अनानुपूर्वी चित्तनी एकाग्रता वास्ते गणे जो नवकार मन्त्रनो एक अक्षर, वा एकपद पण जपे तो जाप थइ शके छे यदुक्त योगशास्त्रे अष्टमप्रकाशे ॥ पच परमेष्ठि मंत्रना " अरिहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू " आ सोल अक्षरनो जाप, तथा " अरिहंत सिद्ध " आ छ अक्षरनो जाप, तथा "अरिहंत" आ चार अक्षरनो जाप, तथा आकार जे वर्ण छे, ते पण मंत्र छे सर्व जापनु फल स्वर्ग वा मोक्ष छे वली व्यवहारफल आ प्रमाणे जाणवु, षड्वर्णनो (छ अक्षरनो) जाप त्रणसो वार करे, चारवर्णनो चारसो वार करे, अने सोल अक्षरनो जाप बसो वार करे तो एक उपवासनुं फल मले छे वली " अ " वर्ण नाभि कमलमां स्थित ध्यावे " सि " वर्ण मस्तक कमलमां स्थित ध्यावे, " आ " कार मुख कमल

लमां स्थित ध्यावे, "उ" कार हृदयकमलमां स्थित ध्यावे, तथा "सा" कार कंठपिंजरमां स्थित ध्यावे. आ सर्व जाप कल्याणकारी छे. "असि आ उसा" आ पांच वीज छे. आ पांचे वीजोनो ॐकार वने छे.

वली बीजा बीजमंत्रना पण जाप करे, जेम के "नमःसिद्धेभ्यः" आवो मंत्र, जो इहलोकना फलनी इच्छा होय तो आकार सहित पढवो जोइयें; अने जो मोक्षवास्ते जाप करवो होय तो आकार रहित पढवो जोइये. आ जापादि करवाथी बहुज फल थाय छे ॥ यतः ॥ पूजाकोटिसमंस्तोत्रं पूजाकोटिसमोजपः॥ जपकोटिसमं ध्यानं, ध्यानकोटिसमोलयः ॥१॥ ध्याननी सिद्धि वास्ते श्रीजिनजन्म,दीक्षादि कल्याण भूमिरूप तीर्थमां जाप; अथवा कोइ बीजा विविक्त स्थानमां जइ ध्यान करे. ध्याननुं स्वरूप जोवुं होय तो आवश्यकसूत्रांतर्गत ध्यानशतक अवलोकन करवुं. नमस्कारमंत्रनो जाप इहलोकमां पण बहुज लाभकारक छे, ॥ उक्तंच महानिशीथे ॥ नासेइ चोर सावय, विसहरजल जलण बंधण भयाइं ॥ चिंतिज्जंतो रखस, रणरायभयाइं भावेण ॥ १ ॥ अर्थः—चोर, सिंह, सर्प्प, पाणी, अग्नि, बंधन, संग्राम, राजभय, आ सर्व भय पंच परमेष्टि मंत्रना स्मरणथी नाश पामे छे. एकाग्र भावथी जपे तो आ फल थाय छे. पंच परमेष्ठि मंत्र सर्व स्थले भणवो जोइए. नमस्कार मंत्रना एक अक्षरना जापथी सात सागरोपमनुं करेलुं पाप नाश पामे छे, जो संपूर्ण पंच परमेष्ठि मंत्र जपे तो पांचसो सागरोपमनुं करेलुं पाप नाश थाय छे. तथा जे पुरुष एक लाखवार पंच परमेष्ठि मंत्रनो जाप करे, अने नमस्कारमंत्रनी विधिपूर्वक पूजा करे तो तीर्थंकर गोत्र, नाम कर्मनो बंध करे. आ कथनमां संदेह नथी; अने आठ क्रोड, आठ लाख, आठ हजार, आठसो, आठ वार जो पंच परमेष्ठि मंत्रनो जाप, जे जीव करे ते त्रीजा भवमां सिद्ध थाय छे. ते कारणथी सूतां, उठतां प्रथम नमस्कारस्मरण करवो, त्यारबाद धर्म जागरणा करवी, ते आ प्रमाणे.

हुं कोण छुं? कइ मारी जाति छे? शुं मारुं कुल छे? कोण मारा इष्ट देव छे? कोण मारा गुरु छे? शुं मारो धर्म छे? शुं मारो अभिग्रह छे? शुं मारी अवस्था छे? शुं मे सुकृतादि करेल छे? शुं मे दुष्कृत करेलां नथी? शुं हुं करवाने समर्थ छुं? शुं हुं करी शकतो नथी? मने कोइ दे-

खे छे के नहि? पोतानी चूक आत्मा जाणे छे, छतां केम तजतो नर्थ
आज कइ तिथि? क्या अरिहंतनो कल्याणक दिवस छे? आज म
शुं कृत्य छे? क्या देशमां छुं? कया कालमां छुं? सवारमां उठी ए प्रम
णे स्मरण करवाथी जीव सावधान थइ जाय छे जे विरुद्ध कृत्य होय
नो परिहार करे छे पोताना नियमनो निर्वाह, तथा नवीन गुणोनी प्र
प्ति थाय छे आज धर्म जागरणा आणंद कामदेवादि श्रावकोए कर
ने प्रतिमादि विशेष धर्म करणी करेली छे

हवे जे श्रावक प्रतिक्रमण करनार होयते प्रतिक्रमण करे, अने जे प्र
तिक्रमण न करे, तेपण रागादिमय कुस्वप्न, प्रद्वेषादिमय अनिष्ट फलना स
चक, तेउने दूर करवा वास्ते, तथा स्वप्नमां स्त्रीसंग प्रसगादिक करवाल
खोटां स्वप्न आव्यां होय तो, एकसो आठ उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग
करे आ कथन व्यवहारजाष्यमां छे वली विवेक विलासादि ग्रंथोमाए
लख्यु छे के, स्वप्न देख्या पछी, फरी सुवु नहि, तथा देखेलुं स्वप्न दिवसे
सद्‌गुरुनीपासे कहेवु जो मावु स्वप्न आव्यु होय तो फरी सुवुं ठीक छे
मावु स्वप्न कोइने कहेवुं नहि वली समधातुवाला, प्रशांतचित्तवाला, ध
र्मी, नीरोगी, जितेंद्रिय, आटलाउने जे शुजाशुज स्वप्न आवे ते सत्य
थाय छे स्वप्न नवकारणथी आवे छे तेनां नाम कहिये छिये

१ अनुजव करेली वस्तुनु, २ सांजलेली वातनु, ३ देखेली चिनातुं, ४
वात, पित्त अने कफना विकारथी, ५ चिंतित वस्तुनु, ६ सहज स्वभाव
थी, ७ देवताना उपदेशथी, ८ पुण्यना प्रजावथी, ९ पापना प्रजावथी, स्व
प्न आवे छे तेमा प्रथमनां छ कारणोथी जो स्वप्न आवे तो ते निरर्थक छे
अने पाछला त्रण कारणोथी जो स्वप्न आवे तो ते सत्य थाय छे

रात्रिना पहेला पहोरमा स्वप्न आवे तो एक वर्षमां फल आपे, बीजा
प्रहरमां स्वप्न आवे तो छ महिनामां फल आपे, त्रीजा प्रहरमां स्वप्न आवे
तो त्रण महिनामा फल आपे, चोथा प्रहरमां स्वप्न आवे तो, एक मा
समा फल आपे, सवारमां बे घडी रात्रिछतां स्वप्न आवे तो दश दिवस
मां फल आपे, सूर्योदयमां स्वप्न आवे तो तत्काल फल आपे

जे स्वप्नमा बहुज आल जजाल देखवामां आवे, तथा जे रोगोदयथी
स्वप्न आवे अने जे मलमूत्रनी बाधा छता स्वप्न आवे, ते त्रणे स्वप्न निर

र्थक छे. जो पहेलां अशुभ स्वप्न आवे, अने पछी शुभ स्वप्न आवे, तो शुभ फल आपे, तथा जो पहेलां शुभ स्वप्न आवे, अने पछी अशुभ स्वप्न आवे तो, अशुभ फल आपे; जो मातुं स्वप्न आवे तो शांति अर्थात् देवपूजा, दानादि करवां. स्वप्न चिंतामणि ग्रंथमां पण लख्युं छे के, अनिष्ट स्वप्न देखीने सुइ जवुं, कोइने कहेवुं नहि, तेम करे तो पछी ते स्वप्न फल आपतुं नथी. सूता उठीने जिनेश्वर देवनी प्रतिमाने नमस्कार करीने, जिनेश्वरनुं ध्यान करे, स्तुति करे, स्मरण करे, पंचपरमेष्ठि मंत्र उचरे, तो खोटुं स्वप्न लयथइ जाय छे. वली जे पुरुष देवगुरुनी पूजा करे छे, निज शक्ति अनुसार तप करे छे, अने निरंतर धर्मना रागी छे, तेउने मातुं स्वप्न पण सारुं फल आपे छे; तथा जे पुरुष देवगुरुनुं स्मरण करीने, तथा शत्रुंजय, समेतशिखरप्रमुख शुभ तीर्थोनां नाम, अने गौतमस्वामि, सुधर्मस्वामि, प्रमुख आचार्योनां नाम स्मरण करीने सूवे, तेने कदापि मातुं स्वप्न आवतुं नथी.

थुंकवुं होय तो राखमां थुंकवुं जोइए. शरीरने दृढ करवा वास्ते हस्तथी वज्रीकरण करे; अग्नितत्त्व, तथा वायुतत्त्व ज्यारे वहेतां होय, त्यारे कसरत करी कंठसुधी दूध पीये; कोइ आचार्य कहे छे के आठ पसली पाणीनी पीवी, तेनुं नाम वज्रीकरण छे. उठतांज माता पिता, पितामह, वडीलभाइ प्रमुखने नमस्कार करे, तो तीर्थयात्रा समान फल छे. तेथी दररोज नमस्कार करवा जोइए. जेउए वृद्धोनी सेवा करी नथी, तेउने धर्मनी प्राप्ति थती नथी. जेउ शीलमां, संतोषमां, तथा ज्ञान ध्यानादिमां मोटा होय तेउ वृद्ध कहेवाय छे. तेउनी सेवा अवश्य करवी जोइये. वली जेणें राजानी सेवा करी नथी, तथा जेणें पोताना शत्रुउने मात कर्या नथी, तेने धर्म, अर्थ अने सुख दूर छे.

श्रावकें सवारमां उठी चौद नियम धारवा जोइए. तेनुं स्वरूप आगल बतावेलुं छे. विवेकवान् पुरुष सम्यक्त्वपूर्वक बार व्रत विधिसहित गुरुमुखथी धारण करे, कारण के विरतिपणुं अभ्यासथीज पली शके छे, ते कारणथी धर्मनो अभ्यासपण करवो जोइए; अभ्यासविना क्रियापण सारी रीतें बनी शकती नथी. ध्यान मौनादि सर्वे, अभ्यास करतां दुःसाध्य नथी. जे जीव आ जन्ममां सारो अथवा बुरो जेवो अभ्यास करे

छे, तेज प्राय भविष्यना जन्ममां पामे छे वली पांचम, आठम, चौदश प्र मुख दिवसें तपादि नियम धर्मी पुरुषें जे जे अंगीकार करेलो होय, तेम तिथ्यंतरनी भ्रान्तिथी सचित्त जलादि, पान, तंबोल, प्रमुख खावायोग्य, खा धीधु होय, पछी एम जाणवामा आवे के आजे अमुक तप करवानो दि वस छे, छतां मारी भूल थइ गइ, एम याद आवतांज जो कांइ मुखमां होय तो, तेने राखादिमां फेंकी दे, प्राशुक पाणीथी मुखशुद्धि करीने त कर्युं होय तेवी रीतें रहे तो नियमभंग थतो नथी, अने जो संपूर्ण भो जन कर्या पछी जाणवामां आवे के, आजे तपनो दिवस छे, तो आवतेे दिवसे दृढनिमित्तें ते तप करे समाप्त थया पछी तेना उपर पोरिसी प्र काशनादि तप अधिक करे, अने जो तपनो दिवस जाणतां छतां एक दा णोपण खाय तो व्रतभंग थइ जाय छे, अने व्रतभंग जाणीने करवुं ते न रकादिनो हेतु छे वली जो तप कर्या पछी अत्यंत मांदगी थइ जाय, अ थवा भूतादि दोषथी परवश थइ जाय, वा सर्पादि करडे, इत्यादि अस माधिमा तप करवाने समर्थ न होय तोपण चार अगार उच्चारण करवा थी व्रतभंग थतु नथी, एम सर्व नियमोमा जाणीलेवु उक्तंच ॥ वयभंग गुरु दोसो, थोवस्सवि पालणा गुणकारि ॥ गुरुलाघवं च नेयं, धम्मं मिम्म अ आगारा ॥ १ ॥ अर्थ –व्रतभंग थवाथी महादूषण थाय छे, जो पालवा मा आवे तो थोडुं व्रत पण गुणकारी छे, ते कारणथी गुरुलघु जाणीने भ गवानें धर्ममां आगार कहेला छे

वली नियम आ प्रमाणे ग्रहण करवां जोइए प्रथम तो मिथ्यात्व त्या गवा योग्य छे निरंतर यथाशक्ति एक, बे, त्रण वार जिनदर्शन, संपूर्ण दे ववंदन, चैत्यवंदन करवां जोइए, तेवीज रीतें गुरुनो योग मले तो दीर्घ लघुवंदना करवी जो गुरु हाजर न होय तो धर्माचार्यनु नाम लइ वंदना करवी वली श्रावक वर्षाऋतुमा निरंतर पांच पर्वना दिवसे अष्टप्रकारी पूजा करे, ज्यांसुधी जीवे त्यांसुधी नवु अन्न, नवु फल, पकान्नादि देवने चडाव्याविना खाय नहि निरंतर नैवेद्य, सोपारी, बदामादि देवनी आगल चडावे त्रण चोमासामां तथा संवत्सरी दिवाली प्रमुखमां चोखानां अष्ट मंगल भरी ढोवे नित्य, वा पर्वना दिवसोए, वा वर्षमां खादिम सर्ववस्तु देव, गुरुने अर्पण करी भोजन करे प्रतिमास, प्रतिवर्षे महाध्वजा प्रमुख

उत्सव करीने चडावे. स्नात्रमहोत्सव, अष्टोत्तरी पूजा, रात्रि जागरण करे. निरंतर चोमासा आदिमां केटलीएक वार जिनमंदिर, धर्मशाला प्रमार्जन करे, करावे, देरासर समरावे, पौषधशाला लिंपे, लींपावे. प्रतिवर्ष जिनमंदिरमां अंगलुहणां आपे, दीवानेवास्ते रु आपे, तेल आपे, घी आपे, केशर, सुखड आपे, पौषधशालामां कटासणा, मुहपत्ति, चरवला, धोतीआं, कांबल, दोरा, उन प्रमुख आपे. वर्षमां श्रावकोने बेसवावास्ते केटलीएक पाट, बाजोठ प्रमुख आपे. जो निर्धन होय तो पण वर्षमां एक दिवस सुतरना दोरा, वा आंटी प्रमुख आपी संघपूजा करे. केटलाएक साधर्मी बंधुउने शक्ति अनुसार जोजन करावी साधर्मिवात्सल्य प्रमुख करे. निरंतर केटलोएक काउसग्ग करे. स्वाध्याय करे. निरंतर जघन्यथी नवकारसीनुं प्रत्याख्यान करे. रात्रिए चरित्र प्रत्याख्यान करे. बंने वखत प्रतिक्रमण करे. आ करणी प्रथम करवा पछी वार व्रत अंगीकार करे. तेमां पण सातमा व्रतमां सचित्त, अचित्त अने मिश्रवस्तुनुं स्वरूप सारी रीतें जाणवुं जोइए.

जेम प्रायः सर्वधान्य, अनाज, तेमज धाणा, जीरुं, अजमो, वरीआली, सुआ, राइ, खसखस प्रमुख सर्वकण, सर्वपत्र, सर्वे लीलांफल, तथा मीठुं खारो, लालरंगनुं सिंधालूण, संचल, माटी, खडी, हिरमची, लीलां दातण प्रमुख, सर्वव्यवहारथी सचित्त (सजीव) छे; तथा पाणीमां पलालेला चणा, घउं प्रमुख अनाज, तथा चणा, मग, अडद, तूअर प्रमुखनी दाल जेमां आखा दाणा रहीगया होय, ते सर्वे मिश्र छे; तथा प्रथम मीठुं लगाडीने अग्निनी बाष्प प्रमुख आप्या विना, तथा तपावेली रेतीमां नाख्याविना चणा, घउं, जुआर प्रमुख जूंजे ते, तथा खारो प्रमुख आप्याविना मसलेला तल, उंला, उंबी, पोंक, थोडी शेकेली फली तथा चिच्चडा प्रमुखफल, मरचां, राइ हींग प्रमुखथी वघारे; तथा जेनी अंदर बीज सचित्त होय एवां पाकेलां सर्वफल, मिश्रछे. तथा तलवट, तिलकूट जे दिन करवामां आवे ते दिन मिश्रछे. जो तलमां अनाज प्रमुख नाखी कूटे तो एक मुहूर्त्त पछी अचित्त थायछे. वली दक्षिण मालवादि देशोमां बहु गोल प्रमुख नाखवाथी तेज रोज अचित्त थइ जायछे. वृक्षनो तत्काल उखडेलो गुंदर, लाख, छाल, तरतनुं फोडेलुं नालीयेर, लींबु, दाडम,

खमां, वर्ण, गध, रस, स्पर्शादि बगडेल देखे, तेमज तेमां सुरसकी ॥ मुख जीव पडेला देखे तो ते न खाय, जो खायतो जीवहिंसा थाय अने रोगोत्पत्तिनु कारण थाय

मिठाइनी मर्यादा अने बीवडलनो निषेध, उपर सातमा व्रतमां लखी आव्या ठीए, त्याथी जाणवु दहींमां सोल पहोर उपरांत जीव उत्प थाय ठे, वली विवेकी जीवोयें रींगणां, टींबरु, जावु, विला, पीलु, क मदां, पाका गुंदां, पचु, महुडां, मोर, वालोल, मोटा बोर, चणीआंबे काचा कोठ फल, खस खस, तल इत्यादि न खावा जोइए तेमां त्र जीव थाय ठे तथा जे फल लालरग देखवामां बूरा लागे, पाकीगवे ला तथा गोल, एवा ककोडां, फणस प्रमुखपण बूरी भावनाना हेतु हो वाथी न खावां जोइए वली जे फल जे देशमां खावां विरुद्ध लागे, जे मके कडवुं तुंबडु, कूष्मांड अर्थात् कोहोलु हलवुं (कडु) ते पण न खा वा जोइए वली अजक्ष्य, अनतकाय, कदमूल, पठी ते परघरनां अचि त्त करेलां, रांधेला होय तोपण न खावा जोइए, कारण के एक तो नि शूकता अने बीजा रसलंपटता तथा वृद्धयादि दोषनो प्रसंग थाय ॥ ते कारणथी न खावां जोइए तथा उकालेलां सेलरां, राधेलां आद्रांदि कंद, सूरण, रींगणाप्रमुख अगर जो के अचित्त ठे तोपण श्रावक प्रसं गदूषण त्यागवा वास्ते न खाय वली मूला तो पचाग खावा योग्य न थी निषिद्धत्वात् तथा शूठ अने हलदर, नाम तेमज स्वाद भेद था थी अजक्ष्य नथी तथा उकालेलु पाणी त्रण उनरा आवे त्यारे अचित्त थइ जाय ठे आ कथन पिंडनिर्युक्तिमा ठे चोखाना धोवणनु पाणी ज्यारे नितरीने निर्मल थइजाय, त्यारे अचित्त थाय ठे वली उष्ण जलनी म र्यादा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथोमां आ प्रमाणे लखी ठे त्रण वखत उ नरा आवेलु उष्णजल उनालाना चारे मासमां पाच पहोर अचित्त र हेठे आ पूर्वेथी उतार्या पठीनी मर्यादा ठे तथा वर्षाऋतुना चारे मा समा त्रण पहोर अचित्त, अने शियालाना चारे मासमां चार पहोर अ चित्त रहे ठे, पठी सचित्त थइ जाय ठे जो ग्लान, पात्र, वृद्धादि सारु वास्ते मर्यादा उपरात राखवु होय तो क्षारादि वस्तुनो प्रक्षेप करीने राखवु, तेम करवाथी सचित्त थतु नथी आ कथन प्रवचन सारोद्धारमां

१३६ मा द्वारमां छे. तथा कांगडु मग, मठ अने हरडादिनां बीज (गोठली) अगरजो के अचित्त छे, तोपण योनि राखवा वास्ते, तथा निःशूकतादि परिहार वास्ते दांतथी तोडवा न जोइए. इत्यादि सचित्त वस्तुनुं स्वरूप जाणीने सातमुं व्रत अंगीकर करवुं जोइए.

श्रावकें प्रथम तो निरवद्य (दोष रहित) आहार करवो जोइए, तेम न करी शके तो सर्व सचित्त वस्तु खावानो त्याग करवो जोइए; तेम पण न करी शके तो बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकाय तो अवश्य त्यागवा जोइए. वली चौद नियम धारवा जोइए. सूइ उठीने यथाशक्ति नियम ग्रहण करवुं, पछी यथाशक्ति प्रत्याख्यान करवुं. नमस्कार सहित पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान, जो सूर्य उदय पहेलां उचरवामां आवे तो शुद्ध छे, अन्यथा शुद्ध नथी. शेष प्रत्याख्यान सूर्योदय पछी पण थइ शके छे. नवकारशी जो सूर्योदय पहेलां उचरवामां आवी होय तो तेनी पछीना पोरसी तेमज साढ पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यानो थइ शके छे. जे नमस्कारसहित सूर्योदयनी पहेलां उच्चारण न करीए तो कोइपण काल प्रत्याख्यान करवुं शुद्ध नथी; अने जो प्रथम नमस्कारादि प्रत्याख्यान मुष्टि सहितादि करे तो सर्वकाल प्रत्याख्यान करवामां अवे ते शुद्धज थाय छे.

रात्रिए चौविहार करे अने दिवसें एकासणुं करे, पछी ग्रंथिसहित प्रत्याख्यान करे तो तेने दरेकमासमां उंगणत्रीश उपवासनुं फल मले छे. दररोज बे वखत भोजन, उपर कहेली रीति प्रमाणे करे तो तेने अठावीश उपवासनुं फल मले छे; कारण के भोजन करतां बे घडी काल लागे छे, बाकीनो काल तपमां व्यतीत थाय छे. आ कथन पद्मचरित्रमां छे. प्रत्याख्यान उपयोगपूर्वक पुरुं थइजाय तो पारे.

हवे चारप्रकारना आहारना विभाग कहीयें छीयें. अनाज, पक्वान्न, रोटला प्रमुख, जेनाथी क्षुधानो नाशथइ शके, ते प्रथम अशन नामनो आहार छे. छाशनुं पाणी तथा उष्णजल प्रमुख आ बीजो पाननामा आहार छे. फल, फूल, शेलडीरस, सुखडीप्रमुख, आ त्रीजो खादिमनामा आहार छे; अने सूंठ, हरडे, पिपलीमूल, तीखां, जीरुं, अजमो, जायफल, जावंत्री, अशेलीउं, खेरवडी, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलायची, कोठ,

संतरा, केरी, निंब तथा शेरडीनो तत्कालनो काढेलो रस, तथा तत्काल काढेलुं तलनु तेल, तत्काल भांगेलां बीज, नालीयेर, सोपारी, सिंगोडा प्रमुख, तथा बीजरहित करेलां पाकां फल खडबूजादि, तथा अत्यंत मर्दन करीने कणकाढेला जीरादि, आ सर्वे अंतर्मुहूर्त सुधी मिश्र छे, पछी प्राशुकनो व्यवहार छे तथा बीजांपण प्रबल अग्निना योगविना प्राशुक करेला अंतर्मुहूर्त सुधी मिश्रछे, पछी प्राशुकनो व्यवहार छे वली अप्राशुक पाणी, काचां फल, काचां अनाज अगर जो बहुज मर्दन कर्यां होय तोपण लवण अग्नि प्रमुख प्रबल शस्त्र विना, प्राशुक थतां नथी, कारण के श्री पचमांग जगवतीसूत्रना उगणीशमा शतकना त्रीजा उद्देशमां लख्यु छे के वज्रमय शिला, वज्रमय लोटो, अने आमला प्रमाण पृथ्वीकाय लइने एकवीश वार वाटवामा आवे तोपण केटलाएक पृथ्वीकायना जीवोनो लोटाने स्पर्श पण थतो नथी, एवी ते जीवोनी सूक्ष्म कायाछे

वली सो योजन उपरांतथी आवेलां हरडां, खारेक, द्राक्ष, लालद्राक्ष, खजुरादि मेवा, तीखां, पीपर, जायफल, बदाम, अखोड, नेउजा, जरगोजा, पस्तां, चारोली, चीनी, उज्वल सिंधालूण, साजी, जठीमां पकावेलु लूण, बनावटी खार, कुंजारें करेली माटी एलायची, लवींग, जावंत्री, सूकी मोथ, कोकणदेश प्रमुखनां केलां उनां करेला सिंगोडां, सोपारी, आ सर्वनो प्राशुक व्यवहार छे साधु पण कारण प्रसंगें ग्रहण करे छे आ बात कल्पजाष्यमा पण लखेली छे "जोयण सय तु गतु अणाहारे भंड संकति" इत्यादि तेमां हरडे, पीपर प्रमुख आचरणीय छे ते कारणथी लेवाय छे, अने खजूर, द्राक्ष प्रमुख अनाचरणीय छे वली उत्पल कमल, पद्मकमल, तडकामां राखवाथी एक पहोरनी अंदरज अचित्त थइ जाय छे, अने मोगराना फुल, जुइनां फुल तडकामा बहुवखत पड्या रहे तो पण अचित्त थतां नथी, परतु मोगराना फुल पाणीमां नाखेलां एक पहोरनी अदरज अचित्त थइ जाय छे, अने उत्पल कमल तथा पद्मकमल घने पाणीमां राखवाथी बहु वखत सुधी अचित्त थतां नथी "शीतयोनिकत्वात्" तथा पादडाना, फूलोना, तेमज जे फलोमां गोठली बधाइ न होय तेना, तथा बथुआ प्रमुख लीली वनस्

तिना, आ सर्वेना डीटीआं (वृंत) करमाइ जाय त्यारे ते जीवरहित थयां जाणवां. आ कथन श्रीकल्पजाष्यवृत्तिमां छे.

श्री पंचमांगना छठा शतकना पांचमा उद्देशामां सचित्त अचित्त वस्तुनुं स्वरूप आ प्रमाणे लखेलुं छे, शाल, व्रीहि, घउं, जव, जवजव, आ पांच धान्यनी जाति कोठारमां, मोटा पालामां वा माला याने कोठार विशेषमां मुख ढांकीने राखे तथा लींपे, चारे बाजुथी लींपे, अने उपर मजबुत ढांकणुं राखी सील मारवाजेवुं बंध करे तो केटलाककाल सुधी तेमां जीव योनि रहे ? आ प्रमाणे प्रश्नपुछवाथी जगवान् कहेछे के हे गौतम ! जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त रहे, अने उत्कृष्ट तो त्रण वर्ष रहे, पछी अचित्त थइ जाय. तथा वटाणा, मसूर, तल, मग, अडद, वाल, कलथी, चोला, तुअर, चणा इत्यादि धान्य सर्व उपर प्रमाणे जाणवुं, परंतु एटलुं विशेष के, ते उत्कृष्टथी पांच वर्ष उपरांत अचित्त थइ जाय छे. तथा अलसी, कसुंबानी करड, कोडुं, कंगणी, बंटी, राल, कोडुसक, सण, सरसव, मूलीनां बीज इत्यादि धान्यपण उपर प्रमाणे जाणवां, परंतु उत्कृष्टथी सात वर्ष उपरांत अचित्त थइ जाय छे. तथा कपासनां डोडवां उत्कृष्टथी त्रण वर्ष उपरांत अचित्त थइ जाय छे. आपण कल्पजाष्यनी वृत्तिमां छे. तथा चाल्या विनानो आटो (लोट) श्रावण, जादरवा महिनामां पांच दिवस सुधी मिश्र रहेछे. पछी अचित्त थाय छे; आसो, कारतक मासमां चारदिनसुधी मिश्र रहेछे, पछी अचित थाय छे; मागसर पोस मासमां त्रणदिन सुधी मिश्र रहे छे, पछी अचित्त थाय छे; माहा, फागणमासमां पांच पहोर मिश्र रहे छे, तथा चैत्र, वैशाख मासमां चार पहोर मिश्र रहे छे, तथा ज्येष्ठ, आषाढ मासमां त्रणपहोर मिश्र रहे छे, उपरांत अचित्त थइ जाय छे. जो तत्काल चाली ले तो अंतर्मुहूर्तसुधी मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय छे.

प्रश्नः— पीसेलो आटो केटला दिवसनो अचित्त जोगीने तथा श्रावकने खावो योग्य छे ?

उत्तरः— सिद्धांतमां आटानी मर्यादानो नियम अमारा वाचवामां आव्यो नथी, परंतु बुद्धिमान् नवुं जुनुं अनाज, सरस नीरस क्षेत्र, वर्षा, शीत, उष्णादि रुतु, तेमां पण ते आटानो पंदर दिवस के मासादि का-

विडंग, बिडलवण, अजमोद, कुलिंजण, पीपर, चीणकबाब, कचूर, मुस्त, कटासेलीउं, कपुर, सचल, हरडां, बहेडां, कुठजउं, बबुल, धव, खदिर, पान, सोपारी, हिंग, हिंगुलाष्टक, बेवीसउं, पचकुल, पुष्करमूल, जवास मूल, बावची, तुलसी, आ सर्व खादिम नामा चोथा आहारमां छे प्र चन सारोद्धारादि ग्रंथो तेमज भाष्यमां आ विचार बतावेल छे कल्प वृत्तिमां तेने खादिम कहे छे कोइ अजमाने पण खादिम कहे छे अ मतांतर छे आ सर्वस्वादिमनामा आहार छे वली एलायची तथा क पुरप्रमुखथी वासित करेलु जल दुविहार प्रत्याख्यानमां पीवुं कल्पे छे तथा वेशण, वरीआली, सोय, कोठवडी, आमलागांठ, आंबानी गोठ ली, लींबुनां पान प्रमुख खादिम होवाथी दुविहार प्रत्याख्यानमां तेने कल्पतां नथी त्रिविहार प्रत्याख्यानमां मात्र जल पीवुं कल्पे छे तेमां पण फुकारेलु पाणी, तथा साकर, कपुर, एलची, कथा, खेर, चूर्ण लेलक, पाडलादिवासित जल, जो नितारीने तेमज गलीने वापरे तो कल्पे, अन्यथा नही

शास्त्रोमां मध, गोल, साकर, खांडप्रमुख स्वादिममां गणेला छे, अने द्राक्ष, शर्करादि जल, तक्र प्रमुखने पानमां गणेलां छे, तो पण ते दुवि हार प्रत्याख्यानमां कल्पता नथी छर्क च ॥ नागपुरीयगछना करेला प्रत्याख्यानभाष्यमां कह्यु छे के ॥ दख्खा पाणाईयं, पाण तह साइमं गु डाईयं ॥ पढिय सुर्यमि तहवि हु, तित्तीजणगंति नायरिअं ॥ १ ॥ स्त्री साथे भोग करवाथी चोविहारनो भंग थतो नथी, परंतु बालकना तथा स्त्रीना होठ मुखमां लइ चुंबन करवामां आवे तो भंग थाय वली दु विहार प्रत्याख्यानमां तेम पण करे तो भंग थतो नथी प्रत्याख्यान मात्र आहारनुज कराय छे, परतु रोम आहारनु करवामां आवतुं नथी, तेथी लेपादि करवाथी प्रत्याख्यानमां भंग थतो नथी

वली नीचेनी वस्तुओ कोइपण प्रकारना आहारमां गणाती नथी ते नां नाम पंचाग लींबडो, गोमूत्र, गली, कडु, करीआतुं, अतिविष, क डानी छाल, चीड, चदन, द्राख, हरिद्रा, रोहणी, उपलोट, वज, त्रिफला, बावलनी छाल, धमासो, नहि, आसंध, रींगणी, एलियो, गुगल, हरडां दल, कपासनी जड, जाल, बेरी, कथेर, करीर, ऊैनी जड, पुंआड, बोह

थोरी, आछी मजीठ, बोल, बीउकाष्ट, कुंआर, चित्रक, कुंदरु प्रमुख जे जे वस्तुओ खावामां अनिष्ट लागे ते सर्व अणाहारिक छे. आ अणाहारी वस्तु रोगादि कष्टमां चोविहार प्रत्याख्यानमां पण खावामां आवे तो भंग थतो नथी. आ प्रमाणे आहारना भेद जाणीने प्रत्याख्यान करे.

पछी दिशाए जवुं, दांतण करवुं, जल उतारवी, कोगला करवा, आ सर्व देशस्नान करी पवित्र थवुं जोइए. आ कथन अनुवादरूप छे; कारण के पूर्वोक्त सर्वकामो सवारमां उठी प्रायः सर्व गृहस्थ करे छे; तेमां शास्त्रोपदेशनी अपेक्षा नथी, कारण के व्यवहारथी स्वतः सिद्ध छे, परंतु तेनो विधि शास्त्रमां कहेलो छे. प्रथम मलोत्सर्ग (दिशाए जवा) नो विधि आ प्रमाणे छे. ॥ यदुक्तं विवेकविलासग्रंथे ॥ मूत्रोत्सर्गं, मलोत्सर्गं मैथुनं स्नानभोजनं ॥ संध्यादिकर्म पूजा च, कुर्याज्जापं च मौनवान् ॥ १ ॥ अर्थः—मुतरवुं, दिशाए जवुं, मैथुन करवुं, स्नान, भोजन, संध्यादि कर्म, पूजा, जाप, आ सर्व मौनपणें करवां; तथा बंने संध्या वस्त्र पेहेरीने करे दिवसे उत्तर सन्मुख मुख राखी लघुशंका करे. वली सर्व नक्षत्रोनुं तेज सूर्यथी अवराइ जाय, अने सूर्यनुं मंडल अर्धबहार आवे त्यांसुधी सवारनी संध्या करे; तथा सूर्य अर्ध अस्त थाय, पछी बे त्रण नक्षत्रो ज्यां सूधी नजरे न पडे, त्यांसुधी सायंकाल कहेवाय छे. वली राखना ढगला उपर, छाणना ढगला उपर, गायोने बेसवाना स्थानमां, सर्पनी बंबी उपर, ज्यां बहुलोक पुरीषोत्सर्ग करता होय त्यां, उत्तम वृक्षनी नीचे, रस्ता उपरना वृक्षनी हेठल, रस्तामां सूर्य सन्मुख, पाणीनी जगामां, स्मशानमां, नदीना कांठा उपर, जे जगाने स्त्रीओ पूजती होय ते जगा- उपर, इत्यादि स्थानोमां मलोत्सर्ग न करे. परंतु ज्यां बेसवाथी कोइ गाल दीए नहि, मारे कुटे नही, पकडी लइ जाय नहि तेवा स्थानमां तेमज ज्यां बेसवाथी पडी जवाय नही, ज्यां जमीनमां पोलाण होय नही, मछर डांसादि त्रसजीव तथा बीजप्रमुख होय नही, एवा उचित स्थानमां मलोत्सर्ग करे. वली गामनी तथा कोइना घरनी समीप मलोत्सर्ग न करे. जे तरफथी पवन आवतो होय, तथा गामनी पूर्व दिशि तरफ पूंठ करीने मलोत्सर्ग न करे. तथा मूत्रनो वेग रोकवो नही. मूत्रनो वेग रोकवाथी नेत्रमां हानि थाय छे, अने दिशानो

खमां, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादि पगडेख देखे, तेमज तेमां सुरसली मुख जीव पडेला देखे तो ते न खाय, जो खायतो जीवहिंसा ने रोगोत्पत्तिनुं कारण थाय

मिठाइनी मर्यादा अने बीदलनो निषेध, उपर सातमा व्रतमां लखी आव्या छीए, त्यांथी जाणवुं दहींमां सोल पहोर उपरांत जीव उत्पन्न थाय छे, वली विवेकी जीवोयें रींगणां, टींबरु, जांबु, बिला, पीलु, पाकां मदां, पाकां गुंदां, पचु, महुडां, मोर, वाल्लोल, मोटां बोर, वली आंबे कार्चा कोठ फल, खस खस, तल इत्यादि न खावां जोइए तेमां घणा जीव थाय छे तथा जे फल खालरंग देखवामां बूरां लागे, पाकी बेलां तथा गोल, एवा ककोडां, फणस प्रमुखपण बूरी जावनाना हेतु थवाथी न खावां जोइए वली जे फल जे देशमां खावां विरुद्ध लागे, जेमके कडवुं तुंबडु, कूष्मांड अर्थात् कोहोलु इखवु (कद्दु) ते पण न खावां जोइए वली अजक्ष्य, अनंतकाय, कंदमूल, पछी ते परघरनां अचित्त करेलां, रांधेलां होय तोपण न खावां जोइए, कारण के एक तो निःशूकता अने बीजा रसलंपटता तथा वृद्ध्यादि दोषनो प्रसंग थाय ते कारणथी न खावां जोइए तथा उकालेलां सेलरां, रांधेलां आर्द्र कंद, सूरण, रींगणाप्रमुख अगर जो के अचित्त छे तोपण श्रावक प्रसंगदूषण त्यागवा वास्ते न खाय वली मूला तो पचांग खावा योग्य नथी निषिद्धत्वात् तथा शुंठ अने हलदर, नाम तेमज स्वाद भेद थवाथी अजक्ष्य नथी तथा उकालेलु पाणी त्रण उजरा आवे त्यारे अचित्त थइ जाय छे आ कथन पिंडनिर्युक्तिमां छे चोखाना धोणनु पाणी ज्यारे नितरीने निर्मल थइजाय, त्यारे अचित्त थाय छे वली उष्ण जलनी मर्यादा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथोमां आ प्रमाणे लखी छे त्रण वखत उजरा आवेलुं उष्णजल उनालाना चारे मासमां पांच पहोर अचित्त रहे छे आ चूलेथी उतार्या पछीनी मर्यादा छे तथा वर्षाऋतुना चारे मासमां त्रण पहोर अचित्त, अने शियालाना चारे मासमां चार पहोर अचित्त रहे छे, पछी सचित्त थइ जाय छे जो ग्लान, बाल, वृद्धादि वास्ते मर्यादा उपरांत राखवुं होय तो क्षारादि वस्तुनो प्रक्षेप करी राखवु, तेम करवाथी सचित्त थतु नथी आ कथन प्रवचन

१३६ मा द्वारमां छे. तथा कांगडु मग, मठ अने हरडादिनां मीज (गोठली) अगरजो के अचित्त छे, तोपण योनि राखवा वास्ते, तथा निःशूकतादि परिहार वास्ते दांतथी तोडवा न जोइए. इत्यादि सचित्त वस्तुनुं स्वरूप जाणीने सातमुं व्रत अंगीकर करवुं जोइए.

श्रावकें प्रथम तो निरवद्य (दोष रहित) आहार करवो जोइए, तेम न करी शके तो सर्व सचित्त वस्तु खावानो त्याग करवो जोइए; तेम पण न करी शके तो बावीश अनक्ष्य अने बत्रीश अनंतकाय तो अवश्य त्यागवा जोइए. वली चौद नियम धारवा जोइए. सूइ उठीने यथाशक्ति नियम ग्रहण करवुं, पछी यथाशक्ति प्रत्याख्यान करवुं. नमस्कार सहित पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान, जो सूर्य उदय पहेलां उचरवामां आवे तो शुद्ध छे, अन्यथा शुद्ध नथी. शेष प्रत्याख्यान सूर्योदय पछी पण थइ शके छे. नवकारशी जो सूर्योदय पहेलां उचरवामां आवी होय तो तेनी पछीना पोरसी तेमज साढ पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यानो थइ शके छे. जे नमस्कारसहित सूर्योदयनी पहेलां उच्चारण न करीए तो कोइपण काल प्रत्याख्यान करवुं शुद्ध नथी; अने जो प्रथम नमस्कारादि प्रत्याख्यान मुष्टि सहितादि करे तो सर्वकाल प्रत्याख्यान करवामां अवे ते शुद्धज थाय छे.

रात्रिए चौविहार करे अने दिवसें एकासणुं करे, पछी ग्रंथिसहित प्रत्याख्यान करे तो तेने दरेकमासमां उंगणत्रीश उपवासनुं फल मले छे. दररोज बे वखत नोजन, उपर कहेली रीति प्रमाणे करे तो तेने अठावीश उपवासनुं फल मले छे; कारण के नोजन करतां बे घडी काल लागे छे, बाकीनो काल तपमां व्यतीत थाय छे. आ कथन पद्मचरित्रमां छे. प्रत्याख्यान उपयोगपूर्वक पुरुं थइजाय तो पारे.

हवे चारप्रकारना आहारना विनाग कहीयें छीयें. अनाज, पक्वान्न, रोटला प्रमुख, जेनाथी क्षुधानो नाशथइ शके, ते प्रथम अशन नामनो आहार छे. गाशनुं पाणी तथा उष्णजल प्रमुख आ बीजो पाननामा आहार छे. फल, फूल, शेलडीरस, सुखडीप्रमुख, आ त्रीजो खादिमनामा आहार छे; अने सूंठ, हरडे, पिपलीमूल, तीखां, जीरुं, अजमो, जायफल, जावंत्री, अशेलीउं, खेरवडी, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलायची, कोठ,

विडग, घिडलवण, अजमोद, कुलिंजण, पीपर, चीणकबाब, कचूर, मुस्ता, कटासेलीठं, कपुर, संचल, हरडां, बहेडां, कुलजठं, बबुल, धव, खदिर, पान, सोपारी, हिंग, हिंगुलाष्टक, त्रेवीसठं, पचकुल, पुष्करमूल, जवासा मूल, बावची, तुलसी, आ सर्व खादिम नामा चोथा आहारमां छे प्रव चन सारोद्धारादि ग्रंथो तेमज भाष्यमां आ विचार बतावेल छे कल्प वृत्तिमां तेने खादिम कहे छे कोइ अजमाने पण खादिम कहे छे आ मतांतर छे आ सर्वस्वादिमनामा आहार छे वळी एलायची तथा क पुरप्रमुखथी वासित करेलुं जल दुविहार प्रत्याख्यानमां पीवुं कल्पे छे तथा वेशण, वरीआली, सोय, कोठवडी, आमलागांठ, आंबानी गोट ली, लींबुनां पान प्रमुख खादिम होवाथी दुविहार प्रत्याख्यानमां लेवां कल्पतां नथी त्रिविहार प्रत्याख्यानमां मात्र जल पीवुं कल्पे छे तेमां पण फुकारेलु पाणी, तथा साकर, कंपुर, एलची, कथा, खेर, चूर्णक, सेलक, पाडलादिवासित जल, जो नितारीने तेमज गळीने वापरे तो कल्पे, अन्यथा नही

शास्त्रोमां मध, गोल, साकर, खांडप्रमुख स्वादिममां गणेला छे, अने द्राक्ष, शर्करादि जल, तक्र प्रमुखने पानमां गणेलां छे, तो पण ते दुवि हार प्रत्याख्यानमां कल्पता नथी उक्तं च ॥ नागपुरीयगछना करेला प्रत्याख्यानभाष्यमां कह्युं छे के ॥ दख्खा पाणाईयं, पाणं तह साइमं गु डाईय ॥ पढियं सुयंमि तहविहु, तित्तीजणगंति नायरिअं ॥ १ ॥ स्त्रीनी साथे भोग करवाथी चौविहारनो भंग थतो नथी, परंतु बालकना तथा स्त्रीना होठ मुखमां लइ चुंबन करवामां आवे तो भंग थाय वळी दु विहार प्रत्याख्यानमां तेम पण करे तो भंग थतो नथी प्रत्याख्यान मात्र आहारनुज कराय छे, परंतु रोम आहारनुं करवामां आवतुं नथी, तेथी लेपादि करवाथी प्रत्याख्यानमां भंग थतो नथी

वळी नीचेनी वस्तुओ कोइपण प्रकारना आहारमां गणाती नथी ते नां नाम पंचांग लींबडो, गोमूत्र, गळी, कडुं, करीआतुं, अतिविष, क डानी छाल, चीड, चंदन, द्राक्ष, हरिद्रा, रोहणी, उपलोट, वज, त्रिफला, बावलनी छाल, धमासो, नहि, आसंध, रींगणी, एळियो, गुगल, हरडां ‸, कपासनी जड, जाल, बेरी, कंथेर, करीर, तेनी जड, पुंआड, बोर

थोरी, आठी मजीठ, बोल, बीउकाष्ट, कुंआर, चित्रक, कुंदरु प्रमुख जे जे वस्तुउं खावामां अनिष्ट लागे ते सर्व अणाहारिक छे. आ अणाहारी वस्तु रोगादि कष्टमां चोविहार प्रत्याख्यानमां पण खावामां आवे तो नंग थतो नथी. आ प्रमाणे आहारना नेद जाणीने प्रत्याख्यान करे.

पछी दिशाए जवुं, दांतण करवुं, जल उतारवी, कोगला करवा, आ सर्व देशस्नान करी पवित्र थवुं जोइए. आ कथन अनुवादरूप छे; कारण के पूर्वोक्त सर्वकामो सवारमां उठी प्रायः सर्व गृहस्थ करे छे; तेमां शास्त्रोपदेशनी अपेक्षा नथी, कारण के व्यवहारथी स्वतः सिद्ध छे, परंतु तेनो विधि शास्त्रमां कहेलो छे. प्रथम मलोत्सर्ग (दिशाए जवा) नो विधि आ प्रमाणे छे. ॥ यदुक्तं विवेकविलासग्रंथे ॥ मूत्रोत्सर्गं, मलोत्सर्गं मैथुनं स्नानजोजनं ॥ संध्यादिकर्म पूजा च, कुर्याज्जापं च मौनवान् ॥ १ ॥ अर्थः—मुतरवुं, दिशाए जवुं, मैथुन करवुं, स्नान, जोजन, संध्यादि कर्म, पूजा, जाप, आ सर्व मौनपणें करवां; तथा वंने संध्या वस्त्र पेहेरीने करे दिवसे उत्तर सन्मुख मुख राखी लघुशंका करे. वली सर्व नक्षत्रोनुं तेज सूर्यथी अवराइ जाय, अने सूर्यनुं मंडल अर्धबहार आवे त्यांसुधी सवारनी संध्या करे; तथा सूर्य अर्ध अस्त थाय, पछी बे त्रण नक्षत्रो ज्यां सूधी नजरे न पडे, त्यांसुधी सायंकाल कहेवाय छे. वली राखना ढगला उपर, छाणना ढगला उपर, गायोने बेसवाना स्थानमां, सर्पनी वंबी उपर, ज्यां बहुलोक पुरीषोत्सर्ग करता होय त्यां, उत्तम वृक्षनी नीचे, रस्ता उपरना वृक्षनी हेठल, रस्तामां सूर्य सन्मुख, पाणीनी जगामां, स्मशानमां, नदीना कांठा उपर, जे जगाने स्त्रीउं पूजती होय ते जगाउपर, इत्यादि स्थानोमां मलोत्सर्ग न करे. परंतु ज्यां बेसवाथी कोइ गाल दीए नहि, मारे कुटे नही, पकडी लइ जाय नहि तेवा स्थानमां तेमज ज्यां बेसवाथी पडी जवाय नही, ज्यां जमीनमां पोलाण होय नही, मछर डांसादि त्रसजीव तथा बीजप्रमुख होय नही, एवा उचित स्थानमां मलोत्सर्ग करे. वली गामनी तथा कोइना घरनी समीप मलोत्सर्ग न करे. जे तरफथी पवन आवतो होय, तथा गामनी पूर्व दिशि तरफ पूंठ करीने मलोत्सर्ग न करे. तथा मूत्रनो वेग रोकवो नही. मूत्रनो वेग रोकवाथी नेत्रमां हानि थाय छे, अने दिशानो

वेग रोकवाथी मृत्यु थइ जाय छे वली वमन रोकवाथी कुष्ट रोग थइ जाय छे कदापि आ प्रणे वात नहीं थाय तो रोग तो अवश्य थशे श्लेष्म करवामां आवे त्यारे तेना उपर धूड नाखी देवी, कारण के श्री प्रज्ञापना उपांगना प्रथम पदमां लख्युं छे के चौदस्थानमां संमूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे ते चौदस्थानननां नाम १ पुरीष (विष्टा) मां, २ मूत्रमां, ३ मुखना थुकमां, ४ नाकना मेलमां, ५ वमनमां, ६ पित्तमां, ७ वीर्यमां, ८ वीर्य रुधिरना संगममां, ९ राध (परु) मां, १० वीर्यना पुद्गल अलग निकली पडे तेमां, ११ जीवरहित कलेवरमां, १२ स्त्री पुरुषना संयोगमां, १३ नगरनी मोरीमां, १४ सर्व अशुचिस्थानमां, जेमके कानना मेलमां, आंखना चीपडामां, बगलना मेलमां, इत्यादि आ सर्वे चौद बोल मनुष्यना संसर्गवाला ग्रहण करवा अने ज्यारे शरीरथी अलग मेल थाय छे, त्यारे जीव उत्पन्न थाय छे

वली दांतण पण निरवद्य स्थानमां करे. दातण अचित्त जाणेला ऋजु कोमल करे, दांतोने दृढ करवा वास्ते तर्जनी आंगलीथी दांतोनी पीठ घसे, जे दांतनो मेल पडे, तेना उपर धूड नाखी दे दातण पण केवीरीतें करे ? दातण सीधु, गांठ विनानुं, जेनो कुचो सारो थाय तेवुं, आगल जतां पातलुं, नानी आंगली समान जाडुं, सारीभूमिमां उत्पन्न थयेलुं, एवुं लइ तेने कनिष्ठा अने अनामिका आंगली वच्चे पकडी, प्रथम जमणी दाढा घसे, पछी डाबी दाढा घसे, स्वस्थ थइ उपयोगथी दांतने अने पेढाने पीडा न थाय तेम घसे उत्तर तथा पूर्वसन्मुख निश्चलासनथी बेसी मौनयुक्त दातण करे दुर्गंधी, सुकी, पोली, खाटी, खारी वस्तु दांतने न घसे वली व्यतीपात, रविवार, संक्रातिदिन, ग्रहण लागवाने दिन, नवमी, अष्टमी, पडवो, चौदश, पूर्णमासी, अमावास्या, आ दिनोमां दातण न करे जो दातण न मले तो मुख शुद्धिने वास्ते बार कोगला करे, अने उलतो हमेशां उतारे. दातणनी फाडथी जीभनो मेल हलवे हलवे सघलो उतारीने शुद्ध स्थानमां दातण धोइने पोताना मुखसन्मुख नाखे वली खांसीवालां, श्वासवालां, तपवालां, अजीर्णवालां, शोकवालां, तृषावालां, मुख पाकेलां, मस्तक, कान, नेत्र, हृदयना रोगवाला, दातण न करे

मस्तकना केशने निरंतर समारे, जेथी माथामां जू न पडे. पछी तिलक करे. तिलक करती वखते आरीसामां पोतानुं मुख न देखे तेमज मस्तक न देखे तो पांच दिवसनी अंदर पोतानुं मरण जाणवुं. जेणे उपवास पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान कर्यु होय ते दांत धोया विना शुद्ध छे, कारण के तपनुं फल बहुज उत्तम छे. लौकिक शास्त्रोमां पण उपवासादि करे तो दातण विनाज देवपूजा करे एवो पाठ छे, ते कारणथी उपवासादिमां दातण करवानो लौकिकशास्त्रोमां निषेध छे. यदुक्तं विष्णुभक्तिचंद्रोदय ग्रंथे ॥ प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु, मध्यांते नवमीतिथौ ॥ संक्रांतिदिवसे प्राप्ते, न कुर्यात् दंतधावनं ॥ १ ॥ उपवासे तथा श्राद्धे, न कुर्यात् दंतधावनं ॥ दंतानां काष्ठसंयोगो, हंति सप्त कुलानि वै ॥ २ ॥ इत्यादि.

ज्यारे स्नान करे त्यारे पनक कुंथुआदि जीवोथी रहित भूमिमां स्नान करे. भूमि उंची, नीची तथा पोली न होय त्यां स्नान करे. उष्ण प्राशुक जलथी स्नान करे, जो उष्ण जल न मले, तो वस्त्रथी गली प्रमाण संयुक्त शीतल जलथी स्नान करे. व्यवहारशास्त्रोमां लख्युं छे के, नग्न थइने, रोगछतां, परदेशथी आवीने, भोजन कर्या पछी, आभूषण पेहेरीने, कोइने विदाय करीने, मांगलिक कार्य कर्या पछी स्नान न करे; तथा अजाण्या पाणीमां, दुष्प्रवेशजलमां, मेलाजलमां, वृक्षोथी आछादित थयेला, शेवालथी आछादित जलमां स्नान न करे. वली शीतजलथी स्नान करी उष्णभोजन न करवुं जोइए. अने उष्ण जलथी स्नान करी शीत भोजन न करवुं जोइयें. तेलमर्दन निरंतर करवुं जोइए. स्नान कर्या पछी जेनी कांति फीकी देखाय, तथा जेना दांत परस्पर घसाय, अने जेना शरीरमां मडदा जेवी गंध आवे, तेनुं मरण त्रणदिवस अंदर समजवुं; तथा स्नान कर्यापछी जेना हृदयमां तथा बंने पगोमां तत्काल पाणी शोषाइ जाय, तो तेनुं छ दिवसमां मरण समजवुं. मैथुनसेवीने तथा वमनकर्या पछी थोडीवार पछी स्नान करवुं. मृतकनी चितानो धुमाडो लाग्यो होय तथा मस्तक मुंडाव्युं होय तो गलेला शुद्ध जलथी स्नान करवुं. तेलमर्द्दनकरी स्नान कर्या पछी उज्वल वस्त्र, आभरण, पहेरवां. प्रयाणकरवाना दिवसे, संग्राममां जतां, विद्यामंत्र साधतां, रातना, सांझे, पर्वदिवसे, नवमेदिवसे, स्नान न करे तथा मस्तक पण न मुंडावे, तथा

पक्षमां एकवार दाढीमस्तकना केश तथा नख दूर करावे, पोताने हाथे तथा दांते नख न उतारे स्नान करवाथी शरीर पवित्र चैतन्य सुखकर, भावशुद्धिनो हेतु थाय छे ॥ उक्त च द्वितीये अष्टकप्रकरणे ॥ जलेन देहदेशस्य, क्षणं यत् शुद्धिकारणं ॥ प्रायोन्यानुपरोधेन, द्रव्यस्नानं तदु च्यते ॥ १ ॥ अर्थः– जलथी शरीरनी त्वचामात्रनीज क्षणमात्र शुद्धि छे परंतु दीर्घकाल नही शुद्धि जे थाय छे ते पण प्राय छे एकांत नथी, कारण के अतिसारादि रोगवालाने क्षण मात्र पण शुद्धि थती नथी धोवा योग्य मेलथी बीजा नासिकादि अंतर्गत मेल जे छे ते स्नानथी दूर थता नथी, अथवा पाणीविना बीजा जीवोनी हिंसा न करवाथी जे स्नान छे ते बाह्य स्नान छे जे पुरुष स्नान करी भगवाननी तेमज सा धुनी पूजा करे, तेनु स्नान पण सारुं छे, कारण के ते स्नान भावशुद्धि नु निमित्त छे स्नान करवामां अप्कायना जीवोनी विराधना छे, तो पण सम्यक् दर्शननी शुद्धि रूप गुण छे ॥ यदुक्त ॥ पूजाए कायवहो, पडिकुठो सोउ किंतु जिण पूआ ॥ सम्मत्त शुद्धि हेउ, त्ति भावणीयाउ निरवज्जा ॥१॥ अर्थ –कोइ कहे छे के पूजा करवाथी जीववध थायछे अने जीववध तो शास्त्रमां निषेध करेल छे, ते कारणथी पूजा न करवी जोइए, तेनो उत्तर एवो छे के, जिनराजनी पूजा, सम्यक्त्वनी निर्मलता करनारी छे, ते कार णथी जिनपूजा निरवद्य छे ए प्रमाणे देवपूजा वास्ते गृहस्थने स्नान क रवा कह्यु छे, तथा शरीरना चैतन्य सुखवास्ते पण स्नान छे, परतु स्ना न करवाथी पुण्य थाय छे एम मानवु ते मिथ्या छे, कारण के जे कोइ तीर्थमां जइ जाणीने स्नान करे छे तेने पण शरीर शुद्धि शिवाय बीजु काइ पण फल थतु नथी आ वात अन्यदर्शनना शास्त्रोमा पण कथन करेली छे उक्त च ॥ स्कंदपुराणे काशीखंडे षष्ठाध्याये ॥ श्लोक ॥ मृदो भारसहस्रेण, जलकुंभशतेन च ॥ न शुध्यते दुराचारा, स्नानतीर्थश तैरपि ॥१॥ जायन्ते च म्रियते च, जलेष्वेव जलौकस ॥ न च गच्छन्ति ते स्वर्गं, मविशुद्धमनोमलाः ॥ २ ॥ चित्त समाधिभि शुद्धं, वदनं सत्य भाषणे ॥ ब्रह्मचर्यादिभि काय, शुद्धोगगां विनाप्यसौ ॥ ३ ॥ चित्तं रा गादिभि क्लिष्ट, मलीकवचनैर्मुखं ॥ जीवहिंसादिभि कायो, गगा त स्य पराङ्मुखी ॥ ३ ॥ परदारा परद्रव्य, परद्रोहपराङ्मुख ॥ गगाप्या

ह कदाचित्, मामयं पावयिष्यति ॥ ५ ॥ जलथी स्नान करवाथी असंख्यजीवोनी विराधना थाय छे, ते कारणथी पुण्य नथी. जलमां जीवना अस्तित्वपणा माटे मीमांसाशास्त्रमां पण सिद्धि छे ॥ यडुक्तं ॥ उत्तरमीमांसायां ॥ लूतास्यतंतुगलिते, ये क्षुद्राः सन्ति जंतवः ॥ सूक्ष्मा भ्रममाणास्ते, नैवयान्ति त्रिविष्टपं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥

स्नान कर्यापछी गुंमडां होय अने राधादि स्रवे तो स्नानकरनारें अंगपूजा करवी नहि, बीजापासे करावची, अने अग्रपूजा तथा भावपूजा पोते पण करे तो कांइ दोष नथी. थोडीपण अपवित्रता होय तो देव स्पर्श न करे. स्नान कर्यापछी पवित्र, मृडु, गंध, काषायिकादिवस्त्र पोतीआं छोडीने पहेरे. पाणीथी भींजेला पगोथी धरतीने नही स्पर्श करतां, पवित्र स्थानमां जइ उत्तर सन्मुख मुखकरी, सारां, मनोहर, नवां वस्त्र, फाट्याविनानां, शिवायाविनानां, वर्णमां धोलां, एवां वस्त्र पहेरे. जे वस्त्र केडमां पहेरेलुं होय, तथा जे वस्त्र पहेरी दिशायें गया होय, तथा जे वस्त्र पहेरी मैथुनसेवन करेल होय, ते वस्त्र पहेरी पूजादि न करे; वली एक वस्त्र पहेरी भोजन तथा देवपूजादि न करे. स्त्री कांचली पहेर्याविना देवपूजा न करे. ए प्रमाणे पुरुषने वे वस्त्र तथा स्त्रीने त्रण वस्त्र पहेर्या विना पूजा करवी कल्पती नथी. देवपूजामां धोतीयुं अत्यंत निर्मल धोलुं करवुं जोइए, निशीथचूर्णी तथा श्राद्धदिनकृत्य प्रमुख ग्रंथोमां ए प्रमाणेज लख्युं छे. तथा पूजा षोडशमां लख्युं छे के, रेशमि आदि जे सुंदर वस्त्र, लाल,पीलां होय ते पण पूजामां पहेरे तो ठीक छे. तथा " एक साडियं उत्तरासंगं करेइ " इत्यादि आगम प्रमाणथी उत्तरासंग अखंडवस्त्रनुं करे. बे कटके शीवेलुं वस्त्र पूजामां न कल्पे. वली रेशमी वस्त्र पहेरी भोजन करे, पछी मनमां विचारे के आ तो सदा पवित्र छे, एवा रेशमि वस्त्रथी जिनपूजा न करे. तथा जे वस्त्र पहेरी पूजा करे, ते वस्त्रने पण पहेरवाने अनुसारे वारंवार धोवरावे. धूपदइ पवित्र करे. धोतीयुं थोडावखतज पहेरवुं जोइए, ते धोतीयाथी परसेवो के श्लेष्म दूर न करवां जोइये. कारण के तेम करवाथी अपवित्रता थाय छे. वली पहेरेलावस्त्रोनी साथे पूजानां वस्त्रो अडाडवां न जोइए. बीजानां पेहेरेलां धोतीयां पहेरवां न जोइयें. वली वाल, वृद्ध, स्त्रीना पहेरवामां

आव्या होय ते वस्त्र तो विशेषें करी न पहेरवां जोइए. वली सारा स्था नथी उत्तम तथा कुशलमाणस पासे, पवित्र वासणथी आछादनसंयुक्त रस्तामां लाववाना विधिसहित, पाणी तथा पुष्प पूजा वास्ते मगाववा जोइए. पुष्प लावनारने सारी रीतें किंमत आपी प्रसन्न करवो जोइये पठी मुखकोश बांधी, पवित्रस्थानमां, जेमां कोइ जीव न पड्या होय एवा शोधेला केशर, कर्पूरादिथी मिश्रचदन घसे, शोधेलो सुंदर धूप, दीप अखंड चोखा, अस्पर्श्या प्रशंसा करवा योग्य नैवेद्य, फलादि सामग्री मेल वे आ प्रमाणे द्रव्यथी पवित्र थई, तथा भावथी पवित्रता, राग द्वेष कषाय, ईर्ष्या रहित थइ, तथा इहलोक, परलोकना सुखोनी इछा रहित थई, अने कुतूहल, चपलतादि त्यागकरी, एकाग्र चित्ततारूप भाव शुद्धि करे ॥ उक्तच ॥ मनोवाक्कायवस्त्रोर्वी, पूजोपकरणस्थिते ॥ शुद्धि स प्तविधा कार्या, श्रीअर्हत् पूजनक्षणे ॥ १ ॥

ए प्रमाणे द्रव्यभावथी शुद्ध थई जिनमंदिरमां दक्षिणदिशाए पुरुष अने वामदिशाए स्त्री, यत्नपूर्वक प्रवेश करे. प्रवेशना अवसरमा दक्षि ण पग प्रथम धरे, पठी सुगधवाला, मीठां सरसद्रव्योथी, पराङ्मुख वामस्वर चालता, मौनपणे देवपूजा करे. वली त्रण नैषेधिकी करण त्र ण प्रदक्षिणा विधिथी पवित्र पाटउपर पद्मासनादि सुखासनपर बेसी, चदनना ठाममांथी चंदन बीजी कटोरीमां तथा हथेलीमां लई मस्तक मां तिलक करे. तथा हस्तककण श्री चदनचर्चित, धूपित हस्तथी जिन अर्हतने पूजी, १ अंग पूजा, २ अग्रपूजा, ३ भावपूजा, जेनु स्वरूप आ गल कथन करवामां आवशे, ते प्रमाणे पूजी, प्रत्याख्यान जे पूर्वे कर्यु हतु, ते यथाशक्ति देवनी साक्षीए उच्चारे, त्यार पठी विधिथी मोटा प चायती देरासरमा जई पूजा करे, ते आ प्रमाणे विधि सहित करे.

जो राजा प्रमुख महाऋद्धिवाला पूजा करवा जाय तो सर्वऋद्धि, स र्व शोभा, सर्वयुक्ति, सर्वसेना प्रमुख मेलवी अतिउद्यमसहित जिनम तनी प्रभावना वास्ते महाआडंबरपूर्वक जिनमदिरमां पूजा करवा वा स्ते जाय जेम दशार्णभद्र राजा श्रीमहावीर भगवतने वांदवावास्ते सर्व सामग्री मेलवी गया हता तेम जाय

वली जे सामान्यऋद्धिवाला होय ते अभिमानरहित लोकापहास्य

तजीने यथायोग्य आडंबर सहित मित्र, न्नाइ, पुत्रादि सहित परिवार मेलवी जाय. जिनमंदिरमां प्रवेश करतां पहेलां १ पुष्प तंबोल प्रमुख सरसडुर्वादि त्यागे, २ छरी, पावडी, मुगट, हाथी प्रमुख सचित्त अचित्त वस्तु शरीरना न्नोगने त्यागे, ३ मुगट शिवाय बाकीनां आन्नरण प्रमुख अचित्त वस्तु न त्यागे, एकवडा वस्त्रनुं उत्तरासंग करे, ४ जिनेश्वर न्नगवाननी मूर्त्ति देखी अंजली बद्ध थइ मस्तक उपर लगावी ॥ नमो जिणाणं ॥ एवो पाठ कहे, ५ मन एकाग्र करे, ए प्रमाणे पांच अन्निगम साचवी नैषेधिकीपूर्वक प्रवेश करे.

जो राजा जिनमंदिरमां प्रवेश करे तो तत्काल राज्यचिह्न दूर करे. १ तलवार, २ छत्र, ३ स्वारी, ४ मुगट, ५ चामर. आ पांचे राज्यचिह्न त्यागे. अग्रद्वारमां प्रवेश करतां घरव्यापारनो निषेध करवावास्ते त्रण नैषेधिकी करे, परंतु त्रणे निस्सीहिनी एक निस्सीहि गणवामां आवे, कारण के प्रथमनी निस्सीहिथी मात्र घर व्यापारनो निषेध करवामां आवे छे; त्यारपछी मूलबिंबने नमस्कार करीने कल्याणनी इछावाला पुरुषें सर्व कृत्य दक्षिण बाजुयें करवां. ते कारणथी मूलबिंबनी दक्षिण बाजुएथी चालतां, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, आ त्रणेनी आराधना निमित्तें त्रण प्रदक्षिणा आपे. प्रदक्षिणा देतां थकां समवसरणस्थ चाररूपसंयुक्त जिनेश्वर न्नगवानने ध्यावे, गन्नारामां पेसतां वाम दक्षिणदिशायें जे बिंब होय तेने नमस्कार करे. ते कारणथी सर्वमंदिरमां चार तरफना समवसरणने आकारें त्रण तरफ त्रणबिंब स्थापन करवामां आवे छे, एम करवाथी अरिहंतनी पाछल बेसवानो जे दोष होय ते दूर थइ जाय छे; पीठ कोइ पण पासे रहेती नथी. त्यारपछी चैत्यप्रमार्जन प्रमुख जे आगल लखवामां आवशे ते करे, पछी सर्व प्रकारनी पूजा सामग्री वास्ते, तथा देहरा समारवाना कामने निषेध करवावास्ते बीजी निस्सीहि मुख्यमंडपादिमां करे, पछी मूलबिंबने त्रण प्रणाम करी पूजा करे. न्नाष्यकारें पण कह्युं छे के त्रणनिस्सीहि करी, प्रवेश करी, मंडपमां जिनेश्वर न्नगवानने न्नूमिउपर सिंहासनमां स्थापन करी, हस्तजोडी, विधिथी त्रण वार प्रणाम करे, त्यारपछी हर्षथी उल्लसित थइ मुखकोश बांधी जिनप्रतिमा उपरनां निर्माल्य फुल प्रमुख मोरपीछीथी दूर करे. जिनमंदिरनुं प्रमार्जनपण पोते

करे वा, बीजा पासे करावे पछी जिनबिंबनी पूजा विधिपूर्वक करे मुख कोश आठ पडनु करे, जेथी मुख तथा नासिकानो श्वास रुधाय वर्षाऋतुमां निर्माल्यमां कुंथुआदि जीवपण उत्पन्न थाय छे, तेथी निर्माल्य अने स्नात्रजल जुदांजुदां पवित्र स्थानमां नाखे तेथी आशातनापण दूर थाय छे कलशधारण करी जल पूजा करती वखते आ प्रमाणे भावना भावे

हे स्वामिन्! बालपणामां मेरुशिखरपर सुवर्णकलशें करी इंद्रप्रमुख देवताउयें आपने स्नान कराव्युं हतुं, तेउने धन्य छे, जेउये आपनां दर्शन कर्यां हतां इत्यादि भावना भावी यत्नापूर्वक वालाकुंचिथी जिनबिंब उपरथी चंदनादि उतारे, पछी जलथी प्रक्षालन करीने बे अगलूहणाथी जिनप्रतिमाने निर्जल करे पछी पग, जानु, कर, मस्तकें पूजा अनुक्रमें नवअंगमां चंदनादिथी करे कोइ आचार्य कहे छे के प्रथम मस्तकमां तिलक करी पछी नवअगें पूजा करे. श्रीजिनप्रभसूरिकृतपूजाविधि ग्रंथमां लख्युं छे के, सरस, सुरभि चंदनथी देवनी, दक्षिणजानु, दक्षिण स्कंध, ललाट, वामस्कंध, वामजानु, आ क्रमें पूजा करे, हृदयप्रमुखमां पण पूजा करे तो नवअगनी पूजा थाय छे नवअगमां पूजा करी, पांचे वर्णनां सुगधमय अखंड पुष्पो, चदनसुगंधथी वासित करी, प्रभुपर चढावे प्रथम कोइयें मोटा मंडाणथी पूजा करी होय अने पोतानी पासे पूजानी तेवी सामग्री न होय तो प्रथमनी पूजा उतारे नहीं, कारण के विशिष्ट पूजा देखवाथी भव्य जीवोने जे पुण्यानुबंधि पुण्य थतु, तेनो अंतराय थइ जाय छे, ते कारणथी प्रथमनी पूजाने विशेष शोभनीय करे. आ कथन बृहद्भाष्यमां छे

वली पूजा उपर पूजा करवी ते निर्माल्य लक्षण नहि होवाथी, निर्माल्य नथी जे द्रव्यो भोगविनष्ट छे, तेज गीतार्थोयें निर्माल्य कथन करेल छे, आभूषणो वारंवार पहेरावबामां आवे छे, निर्माल्य थतां नथी नहीं तो गध, वस्त्रथी एकसो आठ जिनप्रतिमानां अग केवी रीतें लुहाय? ते कारणथी जिनबिंब आरोपित जे जे वस्तु शोभारहित, सुगंधरहित देखाय, अने जे भव्य जीवोने प्रमोदनो हेतु न होय, तेनेज बहुश्रुतो निर्माल्य कहे छे आ कथन संघाचारवृत्तिमां लखेल छे चढावेला चोखा

कोइ आचार्य निर्माल्य कहे छे, अने कोइ तेम कहेता नथी; तत्व शुं छे ? ते केवली जाणे.

चंदन, पुष्पादि पूजा एवी रीतें करवी के जेथी जगवानना मुख नेत्रादि ढंकाइ जाय नही. वली बहु शोजनीय लागे तेवी करवी. कारण के देखनारने प्रमोद तथा पुण्यादिनी वृद्धि थाय.

पूजा त्रण प्रकारनी छे. १ अंगपूजा, २ अग्रपूजा, ३ जावपूजा. तेमां निर्माल्य दूर करवां, प्रमार्जन करवां, अंगप्रक्षालन करवुं, वालाकुंची करवी, कुसुमांजलि करवी, पंचामृत स्नात्रथी शुद्धोदकधारा देवी, धूपित स्वछ, मृदुगंध कषायकादि वस्त्रथी अंगलूहणां करवां, बरास कुंकुममिश्र गोशीर्ष चंदन प्रमुखथी विलेपन करवुं, गोरोचन कस्तूरिथी तिलक करवां, सुगंधमयपुष्पोथी आंगी रचवी, बहु मूल्यवान सुवर्ण, रत्न, माणेक मोती प्रमुखना अलंकार, आजरण पहेरावववां. जेम श्रीवस्तुपालें पोते जरावेला सवालाख बिंबो वास्ते, तथा श्रीशत्रुंजयनी उपर सर्वबिंबोनां रत्न, सुवर्णनां आजरण कराव्यां हतां, तथा दमयंतीए पाछला जवमां अष्टापद पर्वत उपर चोवीश तीर्थंकरोने तिलक कराव्यां हतां, तेवी रीतें करावे. कारण के प्रतिमाजीनी जेटली उत्कृष्ट सामग्री मेलववामां आवे, तेटलीज अधिक शुज जावनी वृद्धि जव्यजीवोने थाय छे; तथा १ ग्रंथिम २ वेष्टिम, ३पूरिम, ४ संघातिमरूप चतुर्विध प्रधान अम्लान विधिथी लावेलां शतपत्र, सहस्रपत्र, मोगरा, जाइ, जुइ, चंपक, गुलाबादि पुष्पविशेषनी माला, मुगट, शेहरा आदिथी आंगी रचना करे. फूलना चंदरवा, जाली, जरूखा करे, जेथी अत्यंतप्रमोद थाय. वली जिनेश्वर जगवानना हाथमां बिजोरां, नालियर, सोपारी, नागरवेल, मोहोर, रूपीआ, लाडु प्रमुख राखे. वली वासप्रक्षेप करे; तथा सुगंधमय दशांग धूप उखेवे. आ सर्व अंगपूजामां आवे छे. महाजाष्यमां कह्युं छे के ॥ गाथा ॥ न्हवण विलेवण आहरण, वत्थ फल गंध धूप पुप्फेहिं ॥ कीरइ जिणंगपूया, तत्थ विही एस नायव्वो ॥ १ ॥ वत्थेण बंधिऊणना, संअहवा जहासमाहीए ॥ वज्जेयव्वंतुतया, देहमवि कंडुअणमाइ ॥ २ ॥ अन्यत्रापि गाथा ॥ कायकंडुअणं वज्जे, तह खेल विगिंचणं ॥ थुइथुत्त जणणं चेव, पुअंतो जगबंधुणो ॥१॥ देव पूजनना अवसरमां मुख्यवृत्तिए तो मौनज रहेवुं जोइ-

चे जो तेम न रही शके तो पापकारी वचन तो सर्वथा त्यागे पापनी
इशारण वर्जे, कारण के प्रथम निस्सीहि करी गृहव्यापारादिनो निषेध
रेल ठे मूलविंबनी विस्तार सहित पूजा करे. पठी अनुक्रमें सर्व वी
बिंबोनी पूजा करे, द्वारबिंब तथा समवसरणविंबोनी पूजा, मूलविंब
पूजा कर्यापठी गभारायी निकलती वखत करवी जोइये एवो संभव
परंतु प्रवेश करतां तो मूलविंबनीज पूजा करवी उचित लागे ठे संघाच
रवृत्तिमां एवो लेख ठे तेथी मूलनायकनी पूजा सर्वविंबोथी पहेलां त
सविशेष करवी जोइये ॥ उक्त ॥ उचिअत्त पूआये, विसेस करणं तु
लविंबस्स ॥ जपडइ तत्थ पढम, जणस्सदिठी सहूमणेणं ॥ १ ॥

शिष्य प्रश्न – चदनादिथी प्रथम एक मूलनायकने पूजवा अने बी
बिंबोनी पठी पूजा करवी, आ तो स्वामि, सेवक भाव कर्यो तेवो भाव
कनाथ तीर्थंकरमां नथी, वली एक विंबनी बहुज आदर सत्कारथी पू
करवी, अने बीजां विंबोनी अल्पपूजा करवी, आ तो अमने भारे अ
शातना थती मालम पडे ठे

गुरुउत्तर – ज्ञानवत पुरुषोने अर्हंत प्रतिमाउंमां नायक, सेवकनी बु
होती नथी, कारण के सर्व प्रतिमाजीना एक सरिखाज परिवार, प्रा
हार्य प्रमुख देखाय ठे, आ व्यवहारमात्र ठे, जे बिंब प्रथम स्थापन
रवामा आवेल होय, ते मूलनायक ठे, आ व्यवहारथी शेष प्रतिमाउं
नायकभाव दूर थतो नथी, अथवा तो तेमने लघुता भाव प्राप्त थतो नथ

एक प्रतिमाजिने वंदन, पूजा, नैवेद्य चढाववां, आ उचित प्रवृत्तिव
ला पुरुषने आशातना नथी जेम मृत्तिकानी बनावेली प्रतिमानी पू
फूलादि रहित उचित ठे, अने सुवर्ण प्रमुखनी प्रतिमाने स्नान विलेपन
दि उचित ठे वली एकज प्रतिमाना कल्याणक प्रमुखना महोत्सव आ
डंबरथी करवामा आवे ते बीजी प्रतिमाउंने आशातनाना कारण थता
थी, जेम धर्मीपुरुषने वदन, पूजन करतां बीजा उत्तम जीवोनी आशा
ना गणाती नथी तेम, आ प्रमाणे उचित प्रवृत्ति करतां जेम आशात
थती नथी जिनमंदिरमां जिनविंबनी जे पूजा करवामां आवे ठे, ते ती
र्थंकरोने वास्ते पूजा करवामा आवती नथी, परंतु पोताना आत्मा
पूजा शुभभावोनु निमित्तकारण होवाथी करवामां आवे ठे, जे बलवा

निमित्त कारणथी आत्मानां उपादान कारणो स्मरणमां आवे छे, तेमज बीजाउने बोधि (सम्यक्त्व) नी प्राप्ति थाय छे. कोइ जीवतो श्री जिनमंदिरने देखीने प्रतिबोध पामे छे, कोइ जीव जिनप्रतिमानुं प्रशांतरूप देखी बोधिबीज पामे छे, कोइ पूजानो महिमा देखी, अने कोइगुरुना उपदेशथी प्रतिबोधि पामी जाय छे. ते कारणथी चैत्यजिनबिंबनी रचना बहुजसुंदर, उत्तम प्रकारनी करवी जोइए, अने पोतानी शक्ति अनुसारें मुख्यबिंबनी विशेष, अद्भुत शोभा करवी जोइए.

गृह देरासर तो हालपण, पीतल, ताम्र, रुपामय कराववाने समर्थ छे. ज्यारे पीतलप्रमुखना बनाववानी शक्ति न होय तो दांतादिमय पीतल तरेह रंगावे, कोरणीविशिष्ट काष्टादिमय करावे. घर चैत्य तथा चैत्यसमुच्चयमां निरंतर सर्वस्थलें प्रमार्जन करावे, तेल प्रमुखथी काष्ट रंगावे, जेथी घुण न लागे. वली सामान्यथी खडी प्रमुखथी धोलावे. श्री तीर्थंकरादिना पंचकल्याणक प्रमुखनां चित्रो करावे. समग्रपूजानां उपकरणो करावे, पडदा, कनात, चंदरवादि आपे, एवां एवां कामो करे के जेथी जिनमंदिरादिनी अधिक अधिक शोभा थाय. घरदेरासरमां तेमज तेनी उपर धोतीआं प्रमुख न नाखे, घरदेरासरनी पण चोराशी आशातना टाले. पीतल वा पाषाणनी जे प्रतिमा होय ते सर्वबिंबोनुं एक अंगलूहणाथी पाणी लूहे. पछी निरंतर बीजां सुकोमल अंगलूहणाथी सर्व बिंबोनुं पाणी लूहे, वारंवार सर्व अंगोउपर अंगलूहणां फेरवी पाणीनी असर बिलकुल रहेवा न दे. ते प्रमाणे करवाथी प्रतिमा उज्वल थती जाय छे. ज्यां ज्यां प्रतिमानां अंगोपांग पर जल रहि जाय, त्यां त्यां प्रतिमाने श्यामता थइ जाय छे.

नव, पंचतीर्थी, चोवीशी पट्टादिमां स्नानजलनो प्रतिमाजीने परस्पर स्पर्श थवाथी आशातना थाय छे, एवी आशंका न करवी जोइए. अशक्य परिहार होवाथी. १ एक अर्हंतनी प्रतिमा होय, तेनुं नाम व्यक्त छे. २ एकज पाषाणादिमां भरत ऐरवतक्षेत्रनी चोवीशी बनावे, तेनुं नाम क्षेत्र प्रतिमा छे. ३ तेवीजरीतें एकसो सित्तेर प्रतिमाने महाख्य कहे छे. ४ फूलनी वृष्टि करतां जे माला घर देवता छे, तेनुं रूप पंचतीर्थी उपर बनावे छे, वली जिनप्रतिमाने न्हवण करतां पेहेलां मा-

लाघरने पाणीनो स्पर्श थयापठी जिनबिंब उपर ते पाणी पडे ठे तेमां दोष नथी आ वृद्धोनी आचरणा ठे तेवीजरीतें चोवीशी गट्टा आदिमां पण जाणी लेवुं ग्रंथोमां पण एवीज रीति देखवामां आवे ठे ॥ नाष्य कारनुं वचन अहींयां लखीयें ठीयें जिनराजनी ऋद्धि देखावावास्ते को इ नक्तजन एक प्रतिमा बनावे ठे, साथे प्रगटपणे अष्टमहाप्रातिहार्य बे थागम सुशोजित रचावे ठे २ दर्शन, ज्ञान, चारित्रनी आराधनावास्ते कोइ त्रण तीर्थी प्रतिमा बनावे ठे ३ कोइ नक्तजन पच परमेष्टिना आ राधन निमित्तें उद्यापन (उजमणा) मां पचतीर्थी प्रतिमा नरावे ठे ४ चोवीश तीर्थंकरोनां कल्याणक, तप उजमणां वास्ते नरतक्षेत्रमां जे ऋ षनादि चोवीशे तीर्थंकरो थया ठे, तेउना बहुमान वास्ते कोइ चोवीशी बनावे ठे कोइ नक्तिथी मनुष्यलोकमां उत्कृष्टा एककालमां एकसो सि त्तेर तीर्थंकर विहरमाननी एकसो सित्तेर प्रतिमा बनावे ठे, ते कारणथी त्रण तीर्थी, पांचतीर्थी, चोवीशी आदिनु बनाववुं युक्तियुक्त ठे आ पूर्वोक्त सर्व अगपूजा ठे

हवे अग्र पूजानुं वर्णन करीये ठीये रूपाना अथवा सोनाना वा धो ला अक्षत, सरसव प्रमुखथी अष्टमंगलादि आलेखन करे, जेम श्रेणि कराजा दररोज एकसो आठ सोनाना जवथी त्रिकाल नगवाननी प्रति मा सन्मुख साथीउं करता हता तेम करे, अथवा ज्ञान, दर्शन, चारि त्रनी आराधनावास्ते अनुक्रमें पाटला उपर अक्षतना त्रण पुंज करे त था साथीआ करे तथा अशन ते एक रोटली नातप्रमुख, २ शेलडी र सप्रमुख ते पान, ३ पक्वान्नादि ते खादिम, ४ तबोलादि ते स्वादिम आ चारे प्रकारनां नैवेद्य नगवान् सन्मुख ढोवे तथा उत्तम प्रकारना लीलां फल तथा सुकां फल दाडिम, सफरजन, संतरां, नालीअर, बदाम प्रमुख प्रज्ञु आगल ढोवे वली गोशीर्ष चदनादिथी तथा पुष्पप्रकरथी विलेपन पूजनकरी आरति प्रमुख दीपक पूजा करे. आ सर्व अग्रपूजा ठे ॥ यद् नाष्य ॥ गाथा ॥ गधव नट्ट वाइय, लवण जलारत्तिआइ दीवाइ ॥ जं किचं सबपिठं, अरई अग्गपूआए ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजातो दररोज करवी ते सुखदायक ठे, तेनुं फलपण मोटु ठे फोरु अनाज तथा रांधेलुं अना ज पण चढावे लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं ठे के ॥ धूपोदहति पापानि,

दीपोमृत्युविनाशकः ॥ नैवेद्यं विपुलं राज्यं, सिद्धिदात्री प्रदक्षिणा ॥ १ ॥ नैवेद्य चढाववुं, आरति करवी इत्यादि आगममां पण लखेल छे. "कीरइ वलि" एवो पाठ आवश्यकनिर्युक्तिमां छे. तथा निशीथचूर्णीमां पण वलि चढाववी एम लखेल छे. वली कल्पभाष्यमां पण लखेलुं छे के, जे नैवेद्य जिनप्रतिमा आगल चढाववावास्ते कर्युं होय, ते साधुने न कल्पे. तथा प्रतिष्ठाप्राभृतथी रचेली, श्रीपादलिप्त आचार्यकृत प्रतिष्ठापद्धतिमां लख्युं छे के, आरति उतारवी, मंगल दीवो कर्यापछी चार स्त्री मली नैवेद्य, गीतगानविधिथी करे. ॥ तथा च महानिशीथे तृतीये अध्ययने ॥ अरिहंताणं भगवंताणं गंधमल्लपईव समज्जणोवलेवण विचित्त वलिवत्थ धूवइएहिं पूआ सक्कारेहिं पइदिण मच्चणंपि कुव्वाणा त्तित्थुपणं करेमोत्ति ॥ इति अग्रपूजा.

हवे भावपूजानुं स्वरूप लखीये छीये. द्रव्यपूजानो व्यापार निषेधवा वास्ते त्रीजी निस्सीहि त्रणवार करे. श्रीजिनेश्वर भगवाननी दक्षिण बाजुयें पुरुष, अने डावी बाजुयें स्त्री रहे. आशातना टालवावास्ते मंदिरमां जघन्यथी भूमिनो संभव होतां नव हाथ प्रमाण, अने घरदेरासरमां जघन्यथी एक हाथ प्रमाण, अने उत्कृष्टथी साठ हाथ प्रमाण अवग्रह छे. तेनी बहार बेसीने चैत्यवंदन विशिष्ट काव्योथी करे. श्रीनिशीथमां, वसुदेवहिंडमां, तथा अन्यशास्त्रोमां, श्रावकोयें पण कायोत्सर्ग, स्तुति आदि करी चैत्यवंदन करेल छे, एवा पाठ छे. भाष्यमां चैत्यवंदन त्रण तरेहथी करवुं कहेलछे. एक जघन्य चैत्यवंदन, ते बे हाथ जोडी, मस्तकनमावी, प्रणाम करवा, यथा "नमो अरिहंताणं" इति, अथवा श्लोकादि बोली नमस्कार करवो, अथवा एक शक्रस्तव बोले तो जघन्य चैत्यवंदन थाय. बीजुं मध्यम चैत्यवंदन, ते चैत्यस्तव दंडकयुगल 'अरिहंत चेइआण' इत्यादि कायोत्सर्ग कर्या पछी एकस्तुति कहेवी ते. त्रीजुं उत्कृष्ट चैत्यवंदन, ते पंचदंड, १ शक्रस्तव, २ चैत्यस्तव, ३ नामस्तव, ४ श्रुतस्तव, ५ सिद्धस्तव, प्रणिधान, जयवीयराय इत्यादि. वली कोइ आचार्यनो एवो मत छे के एकशक्रस्तव करवाथी जघन्य चैत्यवंदन थायछे, बे त्रणशक्रस्तव करवाथी मध्यम चैत्यवंदन थायछे, अने चार अथवा पांच शक्रस्तव करवाथी उत्कृष्ट चैत्यवंदन थायछे. तेनोविधि चैत्यवंदन भाष्यथीजाणवो.

चैत्यवंदन निरंतर सातवखत करवुं, एम महानिशीथमां साधु वास्ते कहेलछे श्रावकनेपण उत्कृष्टथी सातवखत चैत्यवंदन करवा कह्युंछे १प्रतिक्रमणमां, २ मंदिरमां, ३ आहार करतां पेहेलां, ४ दिवस चरिम्र करतां, ५ देवसी प्रतिक्रमणमां, ६ सूती वखत, ७ सूइ उठतां वखत आ प्रमाणे सातवखत चैत्यवदन साधुवास्ते कहेल छे श्रावक जो आठ पहोरमां प्रतिक्रमण करतो होय तो ते निश्चयें सातवार चैत्यवंदन करे, बे प्रतिक्रमणमां बे चैत्यवंदन करे, त्रीजु सुतीवखत, चोथु उठतीवखत, अने त्रणकाल पूजाकर्या पछी त्रणवार एम सात वार श्रावक चैत्यवंदन करे. जे श्रावक एकवार प्रतिक्रमण करे, ते छवार चैत्यवदन करे, जे प्रतिक्रमण न करे ते पांचवार चैत्यवंदन करे, जे सूतां उठतां पण चैत्यवदन न करे ते त्रण वार करे जो नगरमां बहु जिनमंदिरो होय तो सातथी अधिक पण चैत्यवंदन करे. वली जो त्रणकाल जिनपूजा न करी शके तो त्रिकाल देववंदन करे कारण के श्रीमहानिशीथमां कह्यु छे के जेने गुरु प्रथम जैनमतनी श्रद्धा करावे, तेने प्रथम आ प्रमाणे नियम आपे सवारमां जिनप्रतिमाना दर्शन कर्या विना पाणीपण पीवुं नही मध्याह्ने ज्यां सुधी जिनप्रतिमा अने साधुनी वदना न करे, त्यांसुधी भोजन करवु नही संध्या समय चैत्यवंदन कर्याविना शय्या उपर पग मुकवो नहि

वली गीत नृत्य जे अग्रपूजामां वर्णवेला छे, ते भाव पूजामां पण आवी शकेछे गीत, नृत्य मुख्यवृत्तियें तो श्रावक पोतेज करे, जेम निशीथ चूर्णीमां उदायिन राजानी राणी प्रभावतीनु व्याख्यान छे तेम वली पूजा करवाना अवसरमां श्रीअरिहंतनी त्रण अवस्थानी कल्पना करे, तेमां स्नान करती वखत छद्मस्थ अवस्थानी कल्पना करे, आठ प्रातिहार्यनी शोभा करता के केवली अवस्थानी कल्पना करे, पर्यंकासन, कायोत्सर्गासन देखी सिद्ध अवस्थानी कल्पना करे. छद्मस्थ अवस्था पण त्रण तरेहथी कल्पे, एकजन्म अवस्था, बीजी राज्य अवस्था, त्रीजी साधुपणानी अवस्था स्नाननी वखत जन्म अवस्था कल्पे, माला, आभरण पहेरावती वखत राज्य अवस्था कल्पे, दाढी, मुछ, मस्तकना वालो न होवाथी साधु अवस्था विचारे. तेमा साधु, केवली तथा मोक्ष अवस्थाने वंदना करे.

वली पूजा पंचप्रकार, अष्टप्रकार, अने धनवान् होय तो सर्वप्रकारथी

पूजा करे. तेमां पुष्प, अक्षत, गंध, दीप, धूप, आ पंचप्रकारें पूजा जाणवी, अने जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आ अष्टप्रकारें पूजा जाणवी. ते अष्टविध कर्मने मथनारी छे. वली स्नात्र, विलेपन, वस्त्र, आनूषणादि, फल, दीप, गीत, नाटक, आरति आदि करे, ते सर्वोपचार पूजा छे ॥ इति बृहद्नाष्ये ॥

वली पूजाना त्रण नेद छे. १ पोते कायाथी पूजानी सामग्री लावे, २ वचनोथी बीजा पासे मगावे, ३ मनथी सुंदर पुष्प, फल, प्रमुखथी पूजा करे. एम काया, वचन अने मन, त्रणे योगथी, करे, करावे, अनुमोदे. आ त्रण प्रकारें पूजा समजवी.

वली एक फल, बीजी नैवेद्य, त्रीजी थुइ, चोथी प्रतिपत्ति ते वीतरागनी आज्ञापालन रूप, आ चार प्रकारें पूजा, यथाशक्तियें करे. ललितविस्तरादिग्रंथोमां "पुषामिषस्तोत्र प्रतिपत्ति" अर्थात् फूल, नैवेद्य, स्तोत्र अने आज्ञा आराधनीय, आ उत्तरोत्तर प्रधान छे ॥ इत्यागमोक्तं पूजानेदचतुष्टयं ॥

वली पूजाना बे प्रकार छे, १ द्रव्यपूजा, २ नावपूजा. पुष्पादिथी जिनराजनी पूजा करवी, ते द्रव्यपूजा छे, अने जिनेश्वरनी आज्ञा पालवी ते नावपूजाछे. वली पुष्पारोहणं, गंधारोहणं इत्यादि सत्तर नेदथी, तथा स्नात्र विलेपनादि एकवीश नेदथी पूजा छे; परंतु अंगपूजा, अग्रपूजा,अने नावपूजा, आ त्रणे पूजा, सर्वपूजाउनी अंतर्नावीछे. तेमां पूजाना सत्तर नेद लखीये छीये.

१ स्नात्र करवुं २ विलेपन करवुं, ३ चक्षुजोडा वा वस्त्रयुगल, ४ वास सुगंध, ५ पुष्पारोहण, ६ पुष्पनी माला, ७ पंचरंगी फूल चढाववां, ८ नीमसेनी बरासनुं चूर्ण छांटवुं, ९ आनरण पहेराववां, १० पुष्पना गृह बनाववां, ११ फूलना पगर, वरसाद करवो, १२ पुष्पनी आंगी रचन, १३ अष्टमंगल, अक्षत, १४ धूप पूजन, १५ गीत, १६ नृत्य, १७ वाजित्र, इति.

हवे पूजाना एकवीश नेद लखीये छीये. तेनुं वर्णन करतां पहेलां पूजा करनारें शुं शुं नियमो जालववा जोइये तेनुं स्वरूप लखीये छीये. १ पूजा करनार पूर्वदिशि तरफ मुख करी स्नान करे २ पश्चिम दिशातरफ

मुख करी दातण करे, ३ उत्तर दिशासन्मुख उना रही श्वेत वस्त्र पहेरे, ४ पुर्वोत्तर मुख राखी पूजा करे, ५ घरमां प्रवेश करतां डावीबाजुये शल्य रहित नूमिमां देरासर करावे, ६ नूमिथी उंचु दोढ हाथ राखी देरासर करावे जो देरासर नीची नूमिकामां करावे तो तेनो वंश दिवसें दिवसें नीची स्थितिमा उतरतो जशे ७ दक्षिण दिशि तथा विदिशि सन्मुख मुख न करे ८ घरदेरासरमां पश्चिम सन्मुख मुख करी पूजा करे तो, चोथी पेढीमां संताननो उच्छेद थाय एदक्षिण दिशितरफ मुख करी पूजा करे तो संतानहीन थाय १० अग्निकोणें करे तो धनहानि थाय ११ वायुखुणे करे तो संतान न थाय १२ नैरुत्य खुणे कुलक्षय थाय १३ ईशान खुणे करे तो, एकस्थलें रेहेवानु न बने १४ बने पग, बंने जानु, बने हाथ, बने स्कंध, मस्तक आ नव अंगमां अनुक्रमें पूजा करे, १५ चंदन शिवाय पूजा करे नहीं १६ कंठमां, हृदयमां, नाजिमां तिलक करे १७ नवे अंगमां नवतिलकथी निरंतर पूजा करे १८ सवारमां प्रथम वासपूजा करे १९ मध्याह्ने पुष्पथी पूजा करे. २० सध्याये दीपथी पूजा करे २१ जे फुल हाथमांथी धरती उपर पडे, जे पगने लागी जाय, जे मस्तकथी उपर चास्यु जाय, जे मेलां वस्त्रमा राखवामा आवेल होय, जे नाभिथी नीचे राखवामां आवेल होय, जेने दुष्ट जननो स्पर्श थयो होय, जे बहुस्थलें भागी गयु होय, जे जीवोथी खवायु होय, एवां फल नक्तजनोयें जिनपूजामा उपयोगमा लेवां नहि २२ एक फूलना बे कटका करी पूजन करवु नहीं २३ कलीने छेदवी नहीं, चंपक उत्पलादि फुलोने नांगवामां बहु दोषछे २४ गंध, धूप, अक्षत, पुष्पमाला, दीपक, नैवेद्य, जल, उत्तम फल, इत्यादिथी जिनराजनी पूजा निरंतर करे. २५ शांतिकार्यमा श्वेत वस्त्र पेहेरी पूजा करे २६ द्रव्यलाजने वास्ते पीलावस्त्र पेहेरी पूजा करे. २७ शत्रु जीतवा वास्ते कालां वस्त्र पेहेरी पूजा करे. मांगलिक कार्यवास्ते लालवस्त्र पेहेरी पूजाकरे. २९ मुक्तिवास्ते पांच वर्णना वस्त्र पेहेरी पूजा करे ३० शांतिकार्यवास्ते पंचामृतनो होम, दीवा, घी, गोल, लवणनो अग्निमां प्रक्षेप करवो ते पुष्टि हेतु जाणवो ३१ फाटेलां, दांढीयां करेला, छिद्रवालां, कापेला, जेनो रातो वर्ण जयानक होय, एवा वस्त्र पेहेरी, दान, पूजा, तप, होम अने सामायिक प्रमुख करे तो ते निष्फल थाय

३१ पद्मासन बेसी, नासाग्रलोचन स्थापन करी मौनता धारण करी वस्त्रथी मुखकोश बांधी, जिनराजनी पूजा करे.

हवे पूर्वोक्त एकवीश प्रकारी पूजानां नाम लखीये ठीये. १ स्नात्र पूजा, २ विलेपनपूजा, ३ आजरण पूजा, ४ पुष्पपूजा, ५ वासपूजा. ६ धूप, ७ दीप, ८ फल, ए अक्षत, १० नागरवेलनां पान, ११ सोपारी, १२ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ चामर, १६ छत्र, १७ वाजित्र, १८ गीत, १ए नाटक, २० स्तुति, २१ जंडारवृद्धि. जे वस्तुउ बहुज सुंदर होय, ते जिनराजनी पूजामां वापरवी जोइये. आ पूजाना प्रकार श्री उमास्वातिवाचककृत पूजाप्रकरणमां प्रसिद्ध ठे.

विवेकविलासमां लख्युंठे के श्रावक ईशानखुणामां पण देवघर बनावे. वली पगउपर पगधारणकरी, विषमासने बेसी. उत्थडकआसने बेसि, वामपग उंचा राखी, वामहस्तथी जिनराजनी पूजा न करे. शुष्क पुष्पोथी पूजा न करे. जे पुष्प धरतीपर पडीगयुं होय, जेनी पांखडी सडीगइ होय, नीच लोकोनो जेने स्पर्श थयो होय, जे देखवामां अशुज होय, जे विकस्वर न थयां होय, जे कीडाथी खवायेलां होय. जे रातनां वासी होय, जे मकडीनां जालांवालां होय, जे अमनोज्ञ होय, जे डुर्गंधवालां होय, सुगंधरहित होय. खाटी गंधवालां होय, मलमूत्रनी जगामां उत्पन्न थयेलां होय, अपवित्र थयेलां होय, एवां पुष्पोथी जिनराजनी पूजा न करवी. विस्तारसहित पूजा करवाना अवसरमां, तथा निरंतर अने विशेषें करी पर्वदिवसोमां सात अथवा पांच कुसुमांजलि चढावे. पठी जगवाननी पूजा करे. कुसुमांजलि करतां आ विधि करे.

प्रजातसमये प्रथम निर्माल्य उतारे, पठी प्रक्षालकरे, संक्षेपथी पूजा करे, आरति मंगल दीवो करे. पठी स्नात्रादि पूजासहित बीजी वार पूजानो आरंज करे. देवनी पासे पंचामृतसंयुक्त कलश स्थापन करे. पठी "मुक्तालंकार विका,र सारसौम्यत्वकांतिकमनीयं ॥ सहजनिजरूपनिर्जित, जगत्त्रयं पातु जिनबिंबं" ॥ १ ॥ आ गाथा कही अलंकार उतारे, पठी "अवणिय कुसुमाहरणं, पयइ पइठिय मनोहरछायं ॥ जाणरूव मज्जणपीठं, संठियं वो सिवं दिसउ ॥ २ ॥ आ गाथा कही जमणे अंगें कलशथी प्रक्षालन करी, चंदन करी, चंदन चर्ची, धूप उखेवे. पठी क-

मुख करी दातण करे, ३ उत्तर दिशासन्मुख उना रही श्वेत वस्त्र पहेरे, ४ पूर्वोत्तर मुख राखी पूजा करे, ५ घरमां प्रवेश करतां डावीबाजुये शल्य रहित भूमिमां देरासर करावे, ६ भूमिथी उंचु दोढ हाथ राखी देरासर करावे जो देरासर नीची भूमिकामां करावे तो तेनो वंश दिवसें दिवसें नीची स्थितिमां उतरतो जशे ७ दक्षिण दिशि तथा विदिशि सन्मुख मुख न करे. ८ घरदेरासरमां पश्चिम सन्मुख मुख करी पूजा करे तो, चोथी पेढीमां सतानननो उछेद थाय एदक्षिण दिशितरफ मुख करी पूजा करे तो संतानहीन थाय १० अग्निकोणें करे तो धनहानि थाय ११ वायुखुणे करे तो संतान न थाय १२ नैरुत्य खुणे कुलक्षय थाय १३ ईशान खुणे करे तो, एकस्थलें रेहेवानु न बने १४ बने पग, बंने जानु, बनेहाथ, बंने स्कंध, मस्तक आ नव अगमा अनुक्रमें पूजा करे, १५ चदन शिवाय पूजा करे नहीं १६ कंठमां, हृदयमां, नाभिमां तिलक करे १७ नवे अंगमां नवतिलकथी निरंतर पूजा करे १८ सवारमां प्रथम वासपूजा करे १९ मध्याह्ने पुष्पथी पूजा करे २० संध्याये दीपथी पूजा करे. २१ जे फुल हाथमांथी धरती उपर पडे, जे पगने लागी जाय, जे मस्तकथी उपर चाल्यु जाय, जे मेलां वस्त्रमा राखवामां आवेल होय, जे नाभिथी नीचे राखवामां आवेल होय, जेने दुष्ट जननो स्पर्श थयो होय, जे बहुस्थलें लागी गयुं होय, जे जीवोथी खवायु होय, एवा फल भक्तजनोयें जिनपूजामा उपयोगमा लेवा नहि २२ एक फुलना बे कटका करी पूजन करवु नहीं २३ कलीने छेदवी नहीं, चपक उत्पलादि फुलोने भांगवामां बहु दोमछे २४ गंध, धूप, अक्षत, पुष्पमाला, दीपक, नैवेद्य, जल, उत्तम फल, इत्यादिथी जिनराजनी पूजा निरंतर करे २५ शांतिकार्यमा श्वेत वस्त्र पेहेरी पूजा करे २६ द्रव्यलाभने वास्ते पीलांवस्त्र पेहेरी पूजा करे. २७ शत्रु जीतवा वास्ते कालां वस्त्र पेहेरी पूजा करे मांगलिक कार्यवास्ते लालवस्त्र पेहेरी पूजाकरे २८ मुक्तिवास्ते पांच वर्णनां वस्त्र पेहेरी पूजा करे ३० शांतिकार्यवास्ते पचामृतनो होम, दीवा, घी, गोल, लवणनो अग्निमां प्रक्षेप करवो ते पुष्टि हेतु जाणवो ३१ फाटेलां, दांडीआं करेलां, छिद्रवालां, कापेलां, जेनो रातो वर्ण भयानक होय, एवां वस्त्र पेहेरी, दान, पूजा, तप, होम अने सामायिक प्रमुख करे तो ते निष्फल थाय

श्रीहेमचंद्राचार्यैः श्रीवीरचरिते ॥ अभिषेकजलं तत्तु, सुरासुरनरोरगाः ॥ ववंदिरे मुहुर्मुहुः, सर्वांगं परिचिक्षिपुः ॥ १ ॥ श्रीपद्मचरित्रना ओगणत्रीशमा उद्देशमां कह्युं के, राजा दशरथें पोतानी राणीओने स्नात्रजल मोकल्युं छे. वली बृहत्शांतिस्तोत्रमां " शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमित्युक्तं " वली सांभलीये छीये के, जरासंधें ज्यारे जरा विद्या छोडी, त्यारें तेनाथी पीडा पामती सेनाने देखी श्रीनेमिनाथ भगवानना कहेवाथी श्रीकृष्णें धरणेंद्रदेवनुं आराधन कर्युं. धरणेंद्रें पातालमां रहेली श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमाने शंखेश्वरपुरमां लावीने, तेनुं स्नात्रजल छांटी सेना सचेत करी. वली श्रीजिनदेशना अनंतर राजाप्रमुख जे चावलोनी बली उछाले छे, तेमांथी अरधा चोखा तो धरती उपर नहीं पडतां देवताओ लइ लहे छे. अरधा उछालनारा लइ लहे छे, बाकीना सर्व लोक लूटी लहे छे. ते चोखानो एक पण दाणो जो मस्तकमां राखे तो, सर्वरोग उपशांत थइ जाय छे. वली छ महिना सुधी नवा रोग थता नथी. आ कथन आवश्यकसूत्रमां छे. पछी सद्गुरुनी प्रतिष्ठित, अतिसुंदर हीरागल प्रमुख वस्त्रनी मोटी ध्वजा, अतिउत्साहपूर्वक त्रण प्रदक्षणा दइ विधिथी चढावे. सर्वसंघ यथाशक्ति नैवेद्य प्रमुख चढावे.

हवे आरति मंगलदीवो श्री अरिहंतनी सन्मुख करवो तेनो विचार लखीये छीये. मंगलदीवानी पासे अग्निनुं पात्र स्थापन करवुं, तेमां लवणजल अनुक्रमें नाखवुं. प्रथम " उवणेउमंगलं वो, जिणाण मुह लालि जाल संचलिआ ॥ तित्थपवत्तण समए, तियसविव मुक्का कुसुमवुठी ॥ आ गाथा कही कुसुमवृष्टि करे. वली " उअह पडिभग्गपसरं, पयाहिणं मुणिवइ करेऊणं ॥ पडइस्स लोणत्तण, लज्जिअं च लोणं हुं अवहंमि॥ इत्यादि पाठथी विधिपूर्वक जिनराजने त्रणवार पुष्पसहित लवण जल उतारे. पछी अनुक्रमें पूजा करी आरति धूप प्रक्षेपसहित बंने बाजुए अत्यंत, कलशथी पाणीनी धारा देतां श्रावक पुष्पोने विखेरे. पछी " मरगय मणि घडिय विसा, ल थालमाणिक्क मंडिअ पईवं ॥ नवणयर करुखित्तं, भमउ जाणारत्तिअं तुह्म " इत्यादि पाठपूर्वक प्रधानथालमां आरति राखी उत्सवसहित त्रणवार उतारे. आ कथन, त्रेशठ शलाका पुरुष चरित्रादिमां छे. मंगलदीपक पण आरतिनी जेम पूजे- पूजती वखत आ

लश श्रेणिवध स्थापन करे, उपर सुंदर वस्त्र ढांके, पछी सुदर केशर, च
दन, धूपथी हाथ पवित्र करे, मस्तकमां श्रावक तिलक करे, हस्तउप
चवननु ककण करे, हाथ धूपवासित करे. पछी स्नात्र करनारा श्राव
श्रेणिवध उजा रही आ प्रमाणे कुसुमांजलिनो पाठ उचरे "सयव
कुद मालइ, यहुविह कुसुमाइ पचवन्नाइ ॥ जिणनाह न्हवण काले, दि
तिसुरा कुसुमांजलि इन्ना ॥ १ ॥ एम उचरी जिनराजना अग उपर पु
प्प चढावे वली " गधायढिय महुयर, मणहर जकार सद सगीअ
जिणचलणो वरिमुक्का, हरउ तुह्म कुसुमांजलि दुरिय ॥ आ गाथा कई
जिनराजना चरणकमल उपर एक श्रावक कुसुमांजलि चढावे सर्वकुसु
मांजलिना पाठमां तिलक करवां, चदन, पुष्पपत्रादि धूपवासित करे
एकत्र चढाववा ए प्रमाणे सर्वकुसुमांजलि करी रह्या पछी, जे जिनेश्व
भगवाननी स्थापना करी होय, तेमना जन्माभिषेक कलशनो अत्यत
मधुरस्वरथी पाठ कहे पछी घी, शेलडीरस, दुध, दहीं, सुगधजल इ
त्यादिथी करी राखेला पचामृतथी जिनराजने स्नात्र करे. स्नात्र करत
धूप उखेवे, जिनराजनु शरीर पुष्परहित न करे. यदाहुर्वादिवेताल श्री
शांतिसूरयआचार्या ॥ ज्यांसुधी स्नात्रसमाप्ति न थाय, त्यां सुधी भग
वाननु मस्तक शून्य न राखवु निरंतर जलधारा अने उत्तमपुष्पोनी वृ
ष्टि जिनराज पर करे, अने स्नात्र करती वखते चामर, सगीत, तूर्यादि
आडंबर स्वशक्ति अनुसार करे.

स्नात्र कर्यापछी सर्वश्रावकें निर्मल जलधारा देवी धारा देती वखत
आ प्रमाणे पाठ उचारे ॥ अभिषेक तोयधारा, धारेव ध्यानमडलाग्र
स्य ॥ भववनभित्तिभागान् भूयोऽपि भिनत्तु भागवती ॥ १ ॥ पछी
जिनराजनु अग लूही, विलेपन चदनथी करे, पुष्पादि चढावे, धूप उ
खेवे, उत्तम नैवेद्य तथा फल चढावे पछी ज्ञानादि त्रणे सहित त्रण
लोकना स्वामि पासे त्रण पुज स्नात्रकार करे प्रथम वडिल श्रावक त्र
ण पुज करे, पछी नानो श्रावक तथा श्राविका अनुक्रमें करे श्री जिन
जन्ममहोत्सवमां पण स्नात्र करती वखते प्रथम अच्युत इद्र, पोताना
देवतासंयुक्त स्नात्र करे छे, पछी अनुक्रमें वीजा इंद्र स्नात्र करे छे स्ना
त्रजल पोताना मस्तक उपर श्रावक प्रक्षेप करे तो दोष नथी ॥ यदुक्त

व्याख्याः– गुरु अर्थात् माता, पिता, दादा, पर दादा, प्रमुख तेउंनी करावेली प्रतिमा पूजवी जोइये, एम कोइ कहेछे. वली कोइ कहेछे के, पोतानी करावेली, प्रतिष्ठित करेली प्रतिमा पूजवी जोइये, तथा कोइ कहेछे के विधिथी करावेली, प्रतिष्ठा थयेली प्रतिमा पूजवी जोइये. आ सर्वेमां यथार्थ पक्ष तो आ छे– ममत्वरहित सर्वप्रतिमाने विशेषरहित पूजवी जोइये, कारण के सर्वस्थलें तीर्थंकरनो आकार देखवाथी तीर्थंकर बुद्धि उत्पन्न थायछे, जो एम न मानीयें तो जिनबिंबनी अवज्ञाथी, ते जीवने निश्चयें दुरंतसंसारमां भ्रमणरूप दंड प्राप्त थशे.

वली एवो पण कुविकल्प न करवो के जे अविधिथि जिनमंदिर, जिनप्रतिमा बनेलां होय, तेने पूजवाथी, अने तेवा अविधिमार्गनी अनुमोदनाथी भगवंतनी आज्ञाभंगरूप दूषण लागेछे. तथाहि कल्पभाष्ये ॥ गाथा ॥ निस्सकड मनिस्सकडे, चेईये सव्वहिं थुईतिन्नि ॥ वेलंच चेइआणिय, नाउंइ क्किकिया वावि ॥ १ ॥ व्याख्याः-निश्राकृत तेने कहीये, जे गछना प्रतिबंधथी बनेल होय, जेम के आ अमारा गछनुं मंदिर छे, बीजुं अनिश्राकृत, जेना उपर कोइ गछनो प्रतिबंध नथी; आ सर्व जिनमंदिरोमां त्रण थुइ कहेवी. जो सर्वजिनमंमिरोमां त्रण त्रण थुइ (स्तुति) कहेतां बहु काल लागी जाय, अने जिनमंदिर बहु होय, तो एकेक जिनमंदिरमां एकेक थुइ कहेवी; परंतु सर्वजिनमंदिरमां विशेषरहित भक्ति करवी.

वली जिनमंदिरमां करोलीआनां जालां लागीगयां होय, तेने दूर करवावास्ते, जेने जिनमंदिरनी सुप्रत करी होय, तेने साधु जोरथी उपदेश करे, एवी रीतें के, तमे जिनमंदिरनी नोकरी खाउंछो, छतां सार संभाल केम करता नथी? वली जेनी कोइ सारसंभाल न करे, तेने असंविग्न देवकुलिका कहेछे. ते मंदिरोमां जे करोलीआनां जालां होय ते दूर करवावास्ते, सेवकोने प्रेरणा करे, के तमे जिनमंदिरने मांखीनी पांखनी जेम चमक दमकवालां राखो, जो सेवक लोक न माने तो निर्भछना करे, पछी साधु पोते जयणाथी ते जालां दूर करे; कारण के जिनमंदिर, ज्ञानभंडारप्रमुखनी साधु उपेक्षा न करे एवो पाठ छे. पूर्वोक्त चैत्यगमन पूजा तथा स्नात्रादिविधि जे वर्णन कर्यो, ते सर्व धनवान् श्रावकनी अपेक्षा-

पाठ कहे ॥ गाथा ॥ जामिज्जंतो सुरा, सुरिहिंतुट्टनाइ मगल पईवो ॥ कणयाय लस्स नजइ, जाणुव पयाहिणं विंतो ॥ १ ॥ ए प्रमाणे मगल दीवो उतारी देदीप्यमान जिनराजना चरण कमलपासे राखे आरति बुजावी देवामां दोष नथी आरति अने मंगलदीवो मुख्य वृत्तिए, घी, साकर, कर्पूरादिथी करे. तेम करवाथी विशेष फल छे " मुक्तालंकार " इत्यादि जे गाथाओ कही ते श्रीहरिभद्र सूरिजीनी करेली मालम पडे छे, कारण के श्रीहरिभद्रसूरिकृत समरादित्य चरित्रनामा ग्रंथनी आदिमा " उवणेउ मंगलेवो " एवो पाठ छे ॥ इति नमस्कारस्य द र्शनात् ॥ वली आ गाथा तपगछमां प्रसिद्ध छे ते कारणथी सर्व गाथा अहीं लखी नथी

स्नात्रादिमां समाचारी विशेषथी विविधप्रकारनो विधि देखवाथी व्या मोह न करवो, कारण के सर्व आचार्योनी अर्हद्भक्तिरूप फलनी सि द्धिवास्ते प्रवृत्ति होवाथी ते दोषरूप नथी गणधरादि समाचारीओमां प ण घणुज भेद होयछे तेथी जे जे, धर्मथी विरुद्ध न होय, अने अर्हत भक्तिने पोषक होय, ते ते सर्वकार्य कोइने पण असम्मत नथी एवी री तें सर्व धर्मकार्यमा जाणी लेवु वली लवण आरति प्रमुखनु उतारवु, सं प्रदायथी सर्वगछोमां तेमज परदर्शनोमां पण करता देखीयें छीयें तथा श्रीजिनप्रभसूरिकृत पूजाविधिशास्त्रमां तो लख्यु छे के ॥ गाथा ॥ लव णाई उत्तारण, पालित्तय सूरिमाइ पुव्वपुरिसेहिं ॥ संहारेण अणुन्नयपि, संपय सिठी यकारि ज्जाइ ॥ १ ॥ अर्थ—लवणादि उतारवा श्रीपादलिप्त सूरिप्रमुख पूर्वपुरुषोयें एकवार करवानी आज्ञा आपीछे वर्त्तमानमां अमे ते अनुसार करावीये छीये स्नात्रमां सर्वप्रकारें विस्तारसहित पूजा प्र भावनादि करवाथी परलोकमां उत्कृष्ट मोक्षप्राप्तिरूप फल थायछे जेम चोसठ इन्द्रोयें जिनजन्मस्नात्रमहोत्सव कर्या छे, ते प्रमाणे श्रावक अति उत्साहथी करे तेम करवाथी आ लोकमां पुण्य अने निर्जरा अने पर लोकमां मोक्षफल प्राप्त थायछे आ कथन राजप्रश्नीय उपांगमां करेलछे

हवे प्रतिमा पण अनेक प्रकारनी छे तेनी पूजानो विधि सम्यक्त्व प्र करणमां आ प्रमाणे लख्यो छे ॥ गाथा ॥ गुरु कारिआइ केइ, अन्नेसय कारिआइ त विंति ॥ विहि कारिआइ अन्ने, पडिमाये पूअण विहाणं ॥१॥

सर्वकृत्य करी अविधि आशातना निमित्त मिथ्या डुष्कृत देवुं.

अंग, अग्र अने नाव, त्रणे पूजानुं फल शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे. विघ्न उपशांत करनार अंगपूजा छे, मोटा अन्युदय पुण्यने साधनार अग्रपूजा छे, मोक्षप्रदात्री नावपूजा छे. पूजा करनार, संसारना प्रधान नोग नोगवी, पछी सिद्धपद प्राप्त करे छे; पूजा करवाथी मन शांत थाय छे, मननी शांतिथी उत्तम, शुन्न ध्यान थाय छे, अने शुन्नध्यानथी मोक्ष थये अव्याबाध सुख छे.

वली जिनराजनी नक्तिना पांच प्रकार छे. यथा ॥ पुष्पाद्यर्चा तदाज्ञा च, तद्द्रव्यपरिरक्षणं ॥ उत्सवास्तीर्थयात्रा च, नक्तिः पंचविधा जिने ॥ १ ॥ अर्थः– पुष्पादिथी पूजन, जिनेश्वर नगवाननी आज्ञा पालवी ते, देवद्रव्यनुं रक्षण करवुं, महोत्सव करवो ते, अने तीर्थयात्रा. आ पांचप्रकारनी नक्ति छे. द्रव्यपूजा, आ नोग अने अनान्नोग बे प्रकारें छे. तेमां श्री वीतरागदेवना गुण जाणी, वीतराग नावनाथी, आदर संयुक्त, जिनप्रतिमानी जे पूजा ते आन्नोग द्रव्यपूजा छे. आ पूजाथी चारित्रनो लान्न थाय छे, कर्मनो नाश थाय छे; ते कारणथी बुद्धिमान् एवी पूजा अवश्य करे; अने जेउं पूजानो विधि जाणता नथी, तथा श्रीजिनराजना गुणपण जाणता नथी, तेउंनी जे पूजा ते अनान्नोगपूजा छे. आ पूजा शुन्नपरिणाम पुण्यनुं कारण छे, बोधिलान्ननो हेतु छे, अने पापक्षय करवानुं कारण छे; वली ते पुरुषना जन्मने धन्यछे, अने नविष्य काले तेनुं कल्याण थायछे, कारण के जो के ते वीतरागना गुणोने जाणतो नथी, तोपण नक्ति प्रीतिनो उल्लास तेना अंतःकरणमां उछलेछे; अने जे पुरुषने अरिहंतबिंब उपर द्वेष छे, ते पुरुष न्नारे कर्मी तथा नवान्निनंदी छे; जेम रोगीने अपथ्यपर रुचि थाय अने पथ्य पर द्वेष थाय, त्यारे मरणकाल पासे समजायछे, तेम जिनबिंब उपर जेने द्वेषछे; तेने पण दीर्घसंसार परिन्नमण जाणवुं.

अहींआं सर्व जे नावपूजा कही, ते श्रीजिनाज्ञानुं पालवुं समजवुं. बीजुं त्यागवुं. सुकृतनो अंगीकार अने डुष्कृतनो त्याग. तेमां स्वीकार पक्षथी परिहारपक्ष बहुज श्रेष्ठछे, कारण के जे निषिद्ध आचरण करे छे, तेनुं सुकृतपण बहु गुणदायक थतुं नथी. जो बंने बावतो बने तो पूर्ण-

यें कह्यो छे जो श्रावक धनवान् न होय तो पोताना घरमां सामायिक करीने कोइनी साथे लेण देणनो तकरार न होय, ते उपयोग सहित, साधुनी जेम इर्या समिति शोधता नैषेधिकी त्रण करी जाव पूजानुयायि विधिथी जिनमंदिर आवे पूजादिसामग्रीना अजावथी द्रव्यपूजा करवाने असमर्थ छे, ते कारणथी सामायिक पारी कायाथी जे काइ पुष्पगुंथनादि कृत्य थाय ते करे

प्रश्न — सामायिकनो त्याग करी द्रव्यपूजा करवी उचित छे ?

उत्तर — सामायिक तो तेने स्वाधीन छे मरजीमा आवे ते वखते करी ले, परंतु पूजानो योग मलवो तेने बहुज डुर्लन छे, कारण के पूजानुं मंडाण तो संघसमुदायने आधीन छे, कोइकज वखत होयछे तेकारणथी पूजामां विशेषपुण्य छे यदागम ॥ " जीवाण बोहि लानो, सम्मद्दिठीण होइ पियकरणं ॥ आणाजिणिंद जत्ति, तित्थस्स पजावणा चेव ॥ १ ॥ ते कारणथी अनेक गुण छे, तेथी चैत्यकार्य करे. आ कथन दिनकृत्य सूत्रमा छे दशत्रिक, पांच अजिगम, इत्यादि विधि प्रधानपणे सर्वदेवपूजा, वंदनादि धर्मानुष्ठाननु महाफल थाय छे, अन्यथा अल्पफल छे वली अविधिथी करतां उपद्रव पण थइ जाय छे ॥ उक्तं च ॥ धर्मानुष्ठान वैतथ्यात्, प्रत्यवायो महान् जवेत् ॥ रौद्रडुःखौघजननो, डुष्प्रयुक्तादि वोपधात् ॥ १ ॥ चैत्यवंदनादि अविधिथी करतां आगममा प्रायश्चित्त कहेल छे महानिशीथना सातमा अध्ययनमा अविधिथी चैत्यवंदन करतां प्रायश्चित्त वर्णवेल छे देवता अने विद्या, मंत्रादिविधिथीज सिद्ध थाय छे

जो कोइ एम कहे के विधिपूर्वक न थतु होय तो न करवु ते श्रेष्ठ छे ? आ कथन अयुक्त छे ॥ यडुक्तं ॥ अविहिकया वरमकयं, असूया वयणं जणंति समयन्नु ॥ पायछित्तं अकए, गुरुअं वितहं कए लहुयं ॥१॥ अर्थ — अविधिथी करता न करवुं ते सारु छे, एवुं जे कहेवु, ते असूया वचन छे तेम बोलनार सिद्धांतनो जाणकार नथी जैनशास्त्रनु एवु कथन छे के जे न करे, तेने गुरु प्रायश्चित्त लागे छे, अने जे अविधिथी करे तेने लघु प्रायश्चित्त आवे छे, ते कारणथी धर्म जरूर करवो जोइए, अने विधिमार्गनी अन्वेषणा करवी तेज तत्त्व छे तेज श्रद्धावतनु लक्षण छे

सर्वकृत्य करी अविधि आशातना निमित्त मिथ्या दुष्कृत देवुं.

अंग, अग्र अने जाव, त्रणे पूजानुं फल शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे. विघ्न उपशांत करनार अंगपूजा छे, मोटा अज्युदय पुण्यने साधनार अग्रपूजा छे, मोक्षप्रदात्री जावपूजा छे. पूजा करनार, संसारना प्रधान जोग जोगवी, पछी सिद्धपद प्राप्त करे छे; पूजा करवाथी मन शांत थाय छे, मननी शांतिथी उत्तम, शुज ध्यान थाय छे, अने शुजध्यानथी मोक्ष थये अव्याबाध सुख छे.

वली जिनराजनी जक्तिना पांच प्रकार छे. यथा ॥ पुष्पाद्यर्चा तदाज्ञा च, तद्द्रव्यपरिरक्षणं ॥ उत्सवास्तीर्थयात्रा च, जक्तिः पंचविधा जिने ॥ १ ॥ अर्थः– पुष्पादिथी पूजन, जिनेश्वर जगवाननी आज्ञा पालवी ते, देवद्रव्यनुं रक्षण करवुं, महोत्सव करवो ते, अने तीर्थयात्रा. आ पांचप्रकारनी जक्ति छे. द्रव्यपूजा, आ जोग अने अनाजोग बे प्रकारे छे. तेमां श्री वीतरागदेवना गुण जाणी, वीतराग जावनाथी, आदर संयुक्त, जिनप्रतिमानी जे पूजा ते आजोग द्रव्यपूजा छे. आ पूजाथी चारित्रनो लाज थाय छे, कर्मनो नाश थाय छे, ते कारणथी बुद्धिमान् एवी पूजा अवश्य करे; अने जेउ पूजानो विधि जाणता नथी, तथा श्रीजिनराजना गुणपण जाणता नथी, तेउनी जे पूजा ते अनाजोगपूजा छे. आ पूजा शुजपरिणाम पुण्यनुं कारण छे, बोधिलाजनो हेतु छे, अने पापक्षय करवानुं कारण छे; वली ते पुरुषना जन्मने धन्यछे, अने जविष्य काले तेनुं कल्याण थायछे, कारण के जो के ते वीतरागना गुणोने जाणतो नथी, तोपण जक्ति प्रीतिनो उल्लास तेना अंतःकरणमां उछलेछे; अने जे पुरुषने अरिहंतबिंब उपर द्वेष छे, ते पुरुष जारे कर्मी तथा जवाजिनंदी छे; जेम रोगीने अपथ्यपर रुचि थाय अने पथ्य पर द्वेष थाय, त्यारे मरणकाल पासे समजायछे, तेम जिनबिंब उपर जेने द्वेषछे; तेने पण दीर्घसंसार परिज्रमण जाणवुं.

अहींआं सर्व जे जावपूजा कही, ते श्रीजिनाज्ञानुं पालवुं समजवुं. बीजुं त्यागवुं. सुकृतनो अंगीकार अने दुष्कृतनो त्याग. तेमां स्वीकारपक्षथी परिहारपक्ष बहुज श्रेष्ठछे, कारण के जे निषिद्ध आचरण करे छे, तेनुं सुकृतपण बहु गुणदायक थतुं नथी. जो बंने बाबतो बने तो पूर्ण-

फल थायछे द्रव्यपूजानुं फल अच्युतदेवलोकछे, अने भावपूजानुं फल अंतर्मुहूर्त्तमां मोक्ष छे

द्रव्यपूजामा यद्यपि षट्कायना जीवोनी किंचित् विराधना थायछे, तो पण कुवाना दृष्टांतनी जेम गृहस्थने करवा योग्य छे, कारण के करनार अने देखनारने गणतरी रहित पुण्यबंधनुं कारण होवाथी करवा योग्य छे, जेम नवा गाममां स्नान पानादि वास्ते लोक कुवा खोदेछे, तेओने प्यास, श्रम, कीचडादिथी मलिनता थायछे, परंतु कुवानुं जल निकलतांज तेओनी तथा बीजाओनी तृषादि सर्व दूर थइ जायछे, अने तमाम प्रकारनुं सुख थायछे, तेवीज रीतें द्रव्यपूजामां जाणी लेवुं आ कथन आवश्यक निर्युक्तिमां छे, तथा बीजे स्थले पण लखेल छे ॥ गाथा ॥ आरंभ पसत्ताणं, गिहीणय्य जीववह अविरयाणं ॥ भवअडवि निवडियाणं, दव्वछउं चेव आलंबो ॥ १ ॥ श्लोक ॥ वृत्त शार्दूलविक्रीडित ॥ स्थेयोवायुवलेन निर्वृतिकरं निर्वाणनिर्घातिना, स्वायत्तं बहुनायकेन सुबहु स्वल्पेन सारं परं॥ निःसारेण धनेन पुण्यममलं कृत्वा जिनाभ्यर्चनं, योगृह्णाति वणिक् सएव निपुणो वाणिज्यकर्मण्यलम् ॥ १ ॥ यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते, ध्याय श्चतुर्थं फलं, षष्ठं चोत्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतुं प्रवृत्तोऽध्वनि ॥ श्रद्धालु र्दशमं बहिर्जिनगृहात् प्राप्तस्ततो द्वादशं, मध्ये पाक्षिकमीक्षते जिनपतौ, मासोपवास फलम् ॥२॥ पद्मचरित्रमा लख्युंछे के, १ ज्यारे जिनमंदिरमां जवानो विचार करे, त्यारे एक उपवासनुं फल थायछे, २ जो उठे तो बे उपवासनुं फल थाय छे, ३ चालवानी शरुआत करतां त्रण उपवासनुं फल थायछे, ४ चाली निकले चार उपवासनुं फल थाय छे, ५ कांइक जता पांच उपवासनुं फल थाय छे, ६ अर्ध मार्गे पहोंचतां एकपक्षउपवासनुं फल थायछे, ७ जिनराजने देखता एकमास उपवासनुं फल थायछे, ८ जिनभुवनमां संप्राप्त थता छमासी उपवासनुं फल थायछे, ९ जिनमंदिरना दरवाजा पर स्थित थतां एकवर्षना तपनुं फल थायछे, १० जिनराजनी प्रदक्षिणा देता सो वर्षना तपनुं फल थायछे, ११ पूजा करता हजार वर्षना तपनुं फल थायछे, १२ स्तुति करतां अनंतगणुं फल थायछे, १३ जिनमंदिर प्रमार्जन करता सो गणुं पुण्य थायछे, १४ धोळतां हजारगणुं पुण्य थायछे, १५ पुष्पमाला च

ढावतां लाखगणुं पुण्य थायछे, १६ गीत, वाजित्रथी स्तुतिकरतां अनंतगणुं पुण्य थायछे.

पूजा निरंतर त्रणसंध्याये करवी जोइये ॥ यतः ॥ जिनस्य पूजनं हंति, प्रातःपापं निशाभवं ॥ आजन्मविहितं मध्ये, सप्तजन्मकृतं निशि ॥ १ ॥ जलाहारौषधस्वाप, विद्योत्सर्गकृषिक्रियाः ॥ सत्फलाः स्वस्वकाले स्यु, रेवं पूजा जिनेश्वरे ॥ २ ॥ गाथा ॥ जीणपुआण तिसंजं, कुणमाणो सोहएय सम्मत्तं ॥ तिछयर नामगोत्तं, पावइ सेणीअ नरिंदुव ॥१॥ जो पुणइ तिसंजं, जिणंदरायं सयाविगयदोसं ॥ सोतइय भवे सिज्झइ, अहवा सत्तठमे जम्मे ॥ २ ॥ सवायरेण भयवं, पूइज्जंतो वि देवनाहेहिं ॥ नोहोइपूइर्ठ खलु, जम्हाणं तगुणो भयवं ॥ ३ ॥

वली देवपूजादि समये हृदयमां बहुमान राखे तथा शुद्ध विधि सहित भक्ति करे. जिनमतमां चार प्रकारनां अनुष्ठान कह्यां छे. १ प्रीति सहित, २ भक्ति सहित, ३ वचन प्रधान, ४ असंग अनुष्ठान. जेमां प्रीतिनो रसवधे, अने क्रिया करनार भद्रक स्वभाववालो होय, तेने, जेम बालकने रत्नादि देखी प्रीति थाय, तेम क्रियामां प्रीति थाय, ते प्रीति अनुष्ठान. २ ज्यां क्रिया करनार विवेकवान् होय अने बहुमानसंयुक्त क्रिया करे, अने बाकी सर्व प्रथम अनुष्ठाननी जेम करे, ते भक्ति अनुष्ठान छे; अगर जो के स्त्री अने माता पालन, पोषण करवामां सरखां थाय छे, तोपण स्त्रीउपर प्रीति राग छे, अने माता उपर भक्तिराग छे ३ जिनगुणनो जाणनार, सूत्रोक्तविधिपूर्वक जिनप्रतिमानी वंदनादि क्रिया करे, ते वचनानुष्ठान चारित्रवंतने निश्चयें होयछे. ४ जे अभ्यासना रसथी सूत्रआलोचना विनाज फलमां निःस्पृही थइने क्रिया करवी, ते असंग अनुष्ठान छे, जेम कुंभार प्रथम चक्रने दंडथी फेरवे छे, पछी दंड तजी दे तो पण चक्र फरेछे; आ दृष्टांत वचन अनुष्ठान अने असंग अनुष्ठाननुं छे.

चारेमां प्रथम तो भावनाना लेशथी प्रायः बालक प्रमुखने प्राप्त थाय छे, अने उत्तरोत्तर अधिक गुण प्राप्त थतां बीजां अनुष्ठान थाय छे. आ चारे प्रकारनां अनुष्ठान बहुमानसहित अने विधिपूर्वक करे, तो रूपैउपण खरो अने सिक्को पण खरो, आ प्रथम भेद. जे पुरुष भक्तिराग तथा बहुमानसंयुक्त होय, परंतु विधि जाणतो न होय, तेनी क्रिया

एकांत खराब नथी, अशठ (चतुर) पुरुषनां अनुष्ठान अतिचार सहित पण शुद्धिनां कारण छे, कारण के जे रत्न अंदरथी निर्मल छे, तेनो बाह्य मेल सुखें दूर करी शकाय छे, आ रूपैर्ड खरो अने सिक्को खोटो, एवो बीजो जेद जे पुरुष, कपट तथा असत्यादि दोषसंयुक्त छे, अने पोतानु बहुमान तथा कीर्त्ति वधारवा वास्ते, वा लोकोने ठगवावास्ते विधिपूर्वक सर्व अनुष्ठान करे छे, तेने महा अनर्थरूप फल थाय छे, आ रूपैर्ड खोटो अने सिक्को खरो, एवो त्रीजो जेद जे अज्ञानी तथा मिथ्यादृष्टि जीवोनां कृत्यो, ते रूपैर्ड पण खोटो अने सिक्को पण खोटो, एवो चोथो जेद तेकारणथी जे देवपूजादि क्रिया बहुमान अने विधिपूर्वक करे तेने संपूर्ण फल थाय छे

हवे उचित चिंतानु स्वरूप कहीए छीए मंदिरने प्रमार्जन करवुं, कराववु, जे स्थले मंदिरनो जाग तुटी पड्यो होय ते समराववो, प्रतिमाजी तथा परिवारने निर्मल राखवां, विशिष्टपूजा, दीपोत्सव, पुष्प प्रमुखनी शोजा करवी, आशातनार्ड सर्व टालवी, अक्षत, नैवेद्य, फल प्रमुखनी चिंता राखवी, चंदन, केशर, धूप, दीप, तेलनो संग्रह करवो, विनाश न थाय तेवी रीतिए देवद्रव्यनी रक्षा करवी, बे चार श्रावकोने साथे राखी देवद्रव्यनी उघराणी करवी, देवद्रव्यने बहुज यत्नथी निर्जय स्थानमां राखवु, देवद्रव्यनुं उपज, खरचनुं नामुं प्रगटपणे लखवु तथा राखवु, पोते देवद्रव्य आपवुं, बीजार्ड पासेथी अपाववु, देवद्रव्य कोइनी पासे लेणु होय, त्यां देवना नोकरोने मोकली, जे रीतिए देवद्रव्य जाय नही, ते रीतिए उघराणी कराववी, एवी अनेक रीतें देवद्रव्यनी चिंता तथा सार संजाल करवी

वली देरा प्रमुखनी चिंता अनेक तरेहनी छे, तेमा धनवान् धनथी तेमज स्वजनना बलथी चिंता राखे, ते चिंता तेमने सुकर छे, अने धन विनाना पोताना शरीरबलथी तथा स्वजनबलथी सहाय आपे, ते तेमने साध्य छे जेनु जेटलु बल होय, ते विशेष रीतें तेटलो यत्न करे जे चिंता अल्पकालमा दूर थइ जाय, ते बीजी निस्सीहि पेहेला करे. बाकीनी बीजी यथायोग्यरीतें पठी करे. तेवीजरीतें धर्मशाला तथा गुरु अने ज्ञान प्रमुखनी पण यथोचित सर्वशक्तिथी चिंता करे, कारण के देवगुरु

आदिनी सार संभाल श्रावक विना बीजा कोइ करनार नथी, ते कारणथी श्रावकें ते बाबतमां शिथिल न रेहेवुं जोइए. देवगुरु प्रमुखनी भक्ति, सेवा, सार संभाल, जो श्रावक न करे तो तेना सम्यक्त्वमां कलंक लागे छे. वली जे श्रावक देवगुरुनो भक्त छे, तेनाथी कदाचित् कोइ आशातना पण थइ जाय, तो पण तेनुं फल अतिदुःखदायक नथी. ते कारणथी चैत्यादि कृत्यमां निरंतर प्रवृत्त थवुं. यथा ॥ देहे द्रव्ये कुटुंबे च, सर्वसंसारिणां रतिः ॥ जिने जिनमते संघे, पुनर्मोक्षाभिलाषिणां ॥

देव गुरु प्रमुखथी आशातना, जघन्यादि भेदें त्रण प्रकारें छे. तेमां प्रथम ज्ञाननी आशातनानुं स्वरूप कहीए छीए. ज्ञाननां पुस्तक, पाटी, जपमाला प्रमुखने मुखनुं थुंक लेश मात्र लागी जाय, हीन अधिक अक्षरोच्चार थाय, ज्ञाननां उपकरण, पाटी, पुस्तक, नवकारवाली प्रमुख पासे होय ते वखतें अधोवातनिःसर्गादि थाय, ते जघन्य आशातना छे. अकाले पठन प्रमुख करवुं, उपधान वहन कर्या विना सूत्र भणवां, भ्रांतिपूर्वक, अर्थनी अन्यथा कल्पना करवी, पुस्तक प्रमुखने प्रमादथी पगादिनो स्पर्श करवो, भूमिपर नाखवां, ज्ञाननां उपकरणो पासे छतां, आहार मूत्रादि करवां, ते मध्यम आशातना छे. थुंकथी अक्षर मांजवा, पाटी, पोथी प्रमुख ज्ञाननां उपकरण उपर बेसवुं तथा सुवा प्रमुख करवुं, ज्ञानोपकरणो पासे छतां वडीनीत करवी, ज्ञान तथा ज्ञानीनी निंदा, द्वेष तथा उपघातादि करवां, उत्सूत्र भाषण प्रमुख करवां, ते उत्कृष्ठ आशातना छे.

हवे देवनी आशातना कहीए छीए. तेमां वास, बरास, केशर प्रमुखना डाबलाने बजाववा, श्वास लागी जाय तथा वस्त्रना छेडाथी देवने स्पर्श थइ जाय ते जघन्य आशातना छे. धोतीआं प्रमुख पवित्र वस्त्र कर्या विना पूजा करवी, पूजानां वस्त्र भूमिपर नाखवां, इत्यादि मध्यम आशातना छे. प्रतिमाजीने पगथी संघट्टो करवो, श्लेष्म अने थुंक लगाववुं, प्रतिमानो भंग करवो, जिनेश्वर भगवाननी हेलणा करवी ते उत्कृष्ठ आशातना छे.

हवे देवनी जघन्यथी दश आशातना, मध्यम चालीश आशातना अने उत्कृष्ठ चोराशी आशातना छे, तेमां जघन्य दश आशातना न क-

रवी ते कहीए ठीए जिनमंदिरमां १ पान सोपारी खावां नहि, २ पा णी पीवु नहि, ३ भोजन करखुं नहि, ४ पगरखां मुकवां नहि, ५ स्त्री संभोग करवो नहि, ६ सुवु नहि, ७ थुकवु नहि, ८ मूतरखुं नहि, ९ दिशाए जवु नहि, १० जुगार खेलवो नहि

हवे मध्यम चालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहीए ठीए १ मू तरवु नहि, २ दिशा जवु नहि, ३ पगरखां पेहेरवां नहि, ४ पाणी पीवु नहि, ५ जमवु नहि, ६ सुवुं नहि, ७ मैथुनसेवन करवु नहि, ८ तबोल खावां नहि, ९ थुकवु नहि, १० जुगार खेलवो नहि ११ माथु जोवु न हि, जुओ काढवी नहि, १२ विकथा करवी नहि, १३ पलोंठी करी बे सवु नहि, १४ पग लांबा पसारवा नहि, १५ झघडो करवो नहि, १६ हांसी करवी नहि १७ ईर्ष्या करवी नहि, १८ उंचे आसने बेसवुं नहि, १९ केश उंलवा नहि, २० छत्री उंढवी नहि, २१ खड्ग राखवु नहि, २२ मुगट धारण करवो नहि, २३ चामर वींजाववां नहि, २४ स्त्रीना कामवि लास हांसि करवी नहि, २५ भरणु लगाववु नहि, २६ क्रीडा, खेल कर वा नहि, २७ मुखकोश विना पूजा करवी नहि, २८ मेला शरीरथी ते मज मेला वस्त्रथी पूजा करवी नहि, २९ पूजा करतां मन चपल करवु नहि, ३० शरीरना भोगना सचित्त द्रव्यने बहार मुक्याविना मंदिरमां जवु नहि ३१ अचित्त द्रव्य, आभूषण प्रमुख उतारीने जवुं नहि ३२ एक साडी उत्तरासंग करवु, ३३ भगवानने देखतांज हाथ जोडवा, ३४ शक्ति छतां पूजा करवी, ३५ अनिष्ट पुष्पोथी पूजा न करवी, ३५ पूजा प्रमुख आदर सहित करवा, ३७ जिन प्रतिमाना निंबफने बहार काढवा, ३८ मंदिरना द्रव्यथी सार संभाल करवी, ३९ शक्ति छतां असवारीपर चढी मंदिरमां जवुं नहि, ४० देरासरमा वडिलथी पेहेलां चैत्यवदन क रवुं नहि जिनेंद्र भुवनमां तथा ज्यां प्रतिमाजी होय त्यां चालीश आ शातना उपरमुजब वर्जवी

हवे उत्कृष्ठ चोराशी आशातनानां नाम लखीये ठीये १ जिनमंदिरमां श्लेष्म, बडखो नाखवो, २ जूआ आदिनी क्रीडा करवी, ३ कलह करवो, ४ धनुरादि कला शिखवी, ५ कोगला करवा, ६ तबोल खावां, ७ तबो लनो उगाल नाखवो, ८ गाल देवी, ९ दिशामात्रा करवी, १० हाथप्रमु

खधोवा, ११ केशसमारवा, १२ नख समारवा, १३ लोही नाखवुं, १४ सुखडी प्रमुख खावुं, १५ गुंमडा प्रमुखनी त्वचा नाखवी, १६ औषधखातां पित्त नाखवुं. १७ वमन करवुं, १८ दांत उखडेलो नाखवो, १९ हाथ पग मसलाववा, २० घोडाप्रमुख बांधवा, २१ दांतनो मेल नाखवो, २२ आंखनो मेल नाखवो, २३ नखनो मेल नाखवो, २४ गालनो मेल नाखवो, २५ नाकनो मेल नाखवो, २६ माथानो मेल नाखवो, २७ शरीरनो मेल नाखवो, २८ काननो मेल नाखवो, २९ नूतादि खिली लेवावास्ते मंत्रसाधवा, वा राजाप्रमुखनुं काम होय, तेनो विचार करवो, ३० मंदिरमां विवाह प्रमुखनी पंचात करवी, ३१ व्यापारनां लेखां करवां, ३२ राज्यनुं काम वेहेंची आपवुं, अथवा नाइप्रमुखने धननो हिस्सो वेहेंची आपवो, ३३ घरनो नंडार मंदिरमां राखवो, ३४ पगउपर पगराखी खराब आसन करी बेसवुं, ३५ मंदिरनी नीतउपर ठाणां थापवां, ठाणनो ढगलो करवो, ३६ वस्त्र सुकववां, ३७ दाल दलवी, ३८ पापड वडी सुकववी, ३९ वडां बनाववां, उपलक्षणथी केर, चीनडां, शाकप्रमुख सुकववा नाखवां; ४० राजा प्रमुखना लेणदारना नयथी नासी मूलगनारामां संताइ जवुं, ४१ पुत्रकलत्रादिना मरणथी मंदिरमां रोवुं, ४२ राज्यकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, नक्तकथा आ चार विकथा करवी, ४३ धनुषादि शस्त्र घडवां, ४४ गाय, बलदप्रमुख राखवा, ४५ टाढ उडाडवा अग्नि तापवो, ४६ धान्यादि रांधवां, ४७ रूपैआ परखवा, ४८ विधिथी निस्सीहि न करवी, ४९ छत्र, ५० पगरखां, ५१ शस्त्र, ५२ चामर, मंदिर बहार न मुकवां, ५३ मन एकाग्र न करवुं, ५४ तेलादिनुं मर्दन करवुं, ५५ शरीरना नोगनां सचित्त पुष्पादिनो त्याग न करवो, ५६ हार, मुद्रा, कुंडलादि बहार मुकी, आववुं. तेम करवाथी आशातना लागे, कारण के लोकोमां एम कहेवाय के अर्हतना नक्त सर्व कंगाल, निखारी छे, जेथी जिन मतनी लघुता थाय. ५७ नगवानने देखतांज हाथ न जोडवा, ५८ एकसाडी उत्तरासंग न करे, ५९ मुगट मस्तकपर राखे, ६० माथाउपर मोलीयुं लपेटे, ६१ फूलना शहरा राखे, ६२ नालीअरनां छोतरां नाखे, ६३ गेडी खेले, ६४ पिताप्रमुखने जुहार करे, ६५ नांड चेष्टा करे, ६६ तिरस्कार वास्ते हुंकारा, टुंकारा करे, ६७ लेणावास्ते घरेणुं घाले, ६८ लडाइ करे, ६९ माथाना वाल सुकवे, ७० पलोंठी मारी बेसे, ७१ लाकडीनी पावडी

पगमां राखे, ७२ पग लांबा करे, ७३ सुखनेवास्ते हाथताली (पुडपुडी) आपे, ७४ शरीरना अवयवो धोइ कीचड करावे, ७५ पगने लागेली धूल उडाडे ७६ जु नाखे, ७७ भोजन जमे, ७८ मैथुनक्रीडा करे, ७९ गुह्य चिह्न उघाडु राखी बेसे, ८० वैद्यकनुं काम करे, ८१ क्रयविक्रयरूप वाणिज्य करे, ८२ शय्या बनावी सुवे, ८३ पाणी पीवाने वास्ते माटलुं राखे, मंदिरनी परनालनु पाणीले, ८४ स्नान करवानी जगा बनावे आ उत्कृष्ट चोराशी आशातना जिनमंदिरमां वर्जे

हवे गुरुनी तेत्रीश आशातना लखीये छीये १ गुरुनी आगल चालवु ते आशातना छे, परंतु रस्तो बतावबा वास्ते चाले तो आशातना नथी २ गुरुनी बराबर चालवु, गुरुथी पाछल अडकीने चालवु, आ चालवानी जेम त्रण आशातना कही, तेम बेसवानी त्रण आशातना, तेमज उभा रहेवानी त्रण आशातना जाणवी, एम नव आशातना थइ, १० भोजन करतां गुरुनी पेहेलां शिष्ये चलु करवुं, ११ गमनागमन गुरुना पेहेलां आलोववुं, १२ रात्रिमां गुरु पुछे के कोण जागे छे? एम सवाल सांभलतां छतां, अने जागतां छतां उत्तर न आपवो, १३ जो कोइने कांइ केहेवुं होयतो गुरुनी पहेलां शिष्ये कही देवु, १४ बीजा साधुओनी पासे अशनादि आलोवे, पछी गुरुपासे आलोवे १५ तेवीज रीतें अशनादि प्रथम बीजा साधुने बतावे, पछी गुरुने बतावे, १६ अन्नादिवास्ते प्रथम बीजा साधुओने निमंत्रणा करे, पछी गुरुने निमंत्रणा करे, १७ गुरुने पुछ्यावि ना बीजाओने स्निग्ध, मधुरादि आहार आपी दे, १८ स्वेच्छाथी, गुरुने पर्किंचित् आहार आपी, पोते स्निग्धादि आहार खाय, १९ गुरु बोलावे तो बोले नहि, गुरुने बहुज कठोर वचन कहे, २१ ज्यारे गुरु बोलावे, त्यारे आसन उपर बेठांज उत्तर आपे, २२ गुरु बोलावे त्यारे बोले के शुं कहो छो? २३ गुरुने तुकारा करे, २४ गुरु प्रेरणा करे, त्यारे गुरुनी प्रेरणाने उत्तर आपी हणे, जेम के गुरु कहे के हे शिष्य! तमे अमुक ग्लाननी वैय्यावच्च केम न करी, त्यारे शिष्य कहे तमे केम करता नथी? २५ गुरु कथा करे त्यारे मनमां प्रसन्न न थाय, परंतु विमन राखे २६ सूत्रादि कहेतां गुरुने कहे के, तमने अर्थ याद नथी? तेनो अर्थ आ प्रमाणे थतो नथी? २७ गुरु कथा करे, ते कथानी वचमां भंगपाडे, अने

कहे के हुं कथा करीश. २७ परखदाने विखेरे, कहे के हवे भिक्षानो अवसर थयो छे, इत्यादि, २ए परखदा उठ्याविना गुरुनी कहेली कथाने, पोतानी चतुराइ देखाडवा वास्ते विशेष करी कहे, ३० गुरुनी शय्या संथाराने पगथी संघट्टो करे, ३१ गुरुनी शय्याउपर बेसवाप्रमुख करे, ३२ गुरुथी उंचे आसने बेसे, ३३ गुरुनी बराबर आसन करे. आ तेत्रीश गुरुनी आशातना शिष्य वर्जे.

आ गुरुनी आशातना त्रण प्रकारनी छे. पगादिथी संघट्टो करे ते जघन्य आशातना. श्लेष्म, थुंकादि गुरुने लवमात्र लगावे, ते मध्यम आशातना. गुरुनो आदेश न करे, जो करे तो पण उलटो करे, कठोरवचन बोले, गुरुनुं कह्युं न सांभले, ते उत्कृष्ट आशातना छे.

स्थापनाचार्यनी आशातना पण त्रण प्रकारनी छे, अहीं तहीं हलावे चलावे, पगनो स्पर्श करे ते जघन्य आशातना; भूमि उपर नाखे, वा अवज्ञाथी धारण करे ते मध्यम आशातना; स्थापनाचार्यने खोवे तथा त्रोडे ते उत्कृष्ठ आशातना छे; तेवीजरीतें ज्ञानोपकरण, दर्शनोपकरण, तथा चारित्रोपकरण, रजोहरणादि, मुखवस्त्रिका, दंडक, दंडिका प्रमुखनी पण आशातना टाले.

श्रावकें सर्वधर्मोपकरण चरवला, मुहपत्ति प्रमुख विधिपूर्वक स्वस्थानमां स्थापना प्रमुख करवी जोइए, अन्यथा धर्मनी अवज्ञा प्रमुख दूषणो लागे. शास्त्रमां लख्युं छे के जे उत्सूत्र भाखे, तथा अर्हंत अने गुरुनी अवज्ञा प्रमुख महाआशातना करे ते सावद्याचार्य, मरीचि, जमालि, कुलवालुकादिनी पेठे अनंत जन्म मरणनी वृद्धि करे. यतः ॥ उस्सुत्त भासगाणं, बोही नासो अणंत संसारो ॥ पाणच्च एवि धीरा, उस्सुत्तं तान भासंति ॥ १ ॥ तिछयर पवयण सुयं, आयरियं गणहरं महिह्वियं ॥ आसायं तो बहुसो, अणंत संसारिउं होई ॥ २ ॥

तेवीजरीतें देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य तथा गुरु द्रव्य, वस्त्र, पात्रादि, तेनो विनाश थतो देखी, बचाव नहि करतां उपेक्षा करवी, ते पण महा आशातना छे. यदूचे ॥ गाथा ॥ चेइअ दव्व विणासे, इसिधाए पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउत्थ भंगे, मूलग्गी बोहि लाभस्स ॥ १ ॥ तथा श्रावक दिनकृत्य, दर्शनशुद्धि आदि शास्त्रोमां लख्युं

छे के ॥ गाथा ॥ चेइअ दव साहा, रण च जो डुहइ मोहि अमईर्ठ ॥ धम्मंच सोनयाणाइ, अहवा बद्धाउर्ठ न रए ॥ १ ॥ अर्थ –चैत्यद्रव्य तथा साधारणद्रव्यनो जे मोहितमति नाश करे, ते कां तो धर्म जाणतो नथी, अथवा तो तेणें नरकनु आयुष्य बांधेलु छे, तेज कारणथी एवुं अयोग्य काम करे छे, वली चैत्यद्रव्यनो नाश, जक्षण तथा उपेक्षण को इ करतो होय, तेने जो साधु न हठावे, तो ते साधु पण अनत सं सारी थइ जाय

प्रश्न – मन, वचन, कायाथी जेणें सावद्यनो त्याग करेल छे, एवा य तिने चैत्यद्रव्यनी रक्षा करवानो शुं अधिकार छे ?

उत्तर – जो राजा, वजीर के शेठ प्रमुखनी याचना करी तेउनी पा सेथी घर, दुकान, गामादि लइ विधिथी नवी पेदाश उत्पन्न करे तो तारु विवक्षित दूषण लागशे, परंतु यथा जद्रकाविथी जे कोइए प्रथम आपेल होय, तेनो नाश थतो देखी रक्षण करे तो कांइ दूषण लागतुं नथी, बलके जिनाज्ञानी आराधना होवाथी धर्मनी पुष्टि थाय छे

नवां जिनमंदिर बनाववाथी, जे पुर्वे बनेलां छे, तेना प्रतिपथि अर्थात् शत्रुने जो साधु हठावे, तो ते साधुने प्रायश्चित्त नथी, तथा ते साधुनी प्रतिज्ञा पण जंग थती नथी आगम पण एमज कथन करे छे ते का रणथी जिनद्रव्य जे खाय तथा उपेक्षा करे, ते श्रावक आगलना जन्म मां बुद्धिहीन थाय, अने पापकर्मथी लेपायमान थाय छे यथा ॥ आ यणं जो जंजइ, पडिवन्न धण न देइ देवस्स ॥ नस्संत समुविस्लइ, सो विहु परिजमइ संसारे ॥ १ ॥ अर्थ – जे पुरुष मंदिरनी आमदानी जों गे, अने जे मोटेथी बोल्यालतां, जिनद्रव्य न आपे, ते पण संसारमां प रिब्रमण करे तथा ॥ जिणपवयण वुढ्ढिकरं, पजावग नाण दंसण गुणाणं ॥ जखसो जीणदव, अणंत संसारीर्ठ होई ॥ १ ॥ अर्थ – जे जिनमतनी वृद्धि करे, चैत्यपूजा, चैत्य समारचा, महापूजा, सत्कारादि करी, ज्ञा न दर्शनननी प्रजावना करे, परंतु जिनद्रव्यनो नाश करे, तो ते अनंतसं सारी थाय, अने जो जिनद्रव्यनी रक्षा करे तो अल्पसंसारी थाय, दे वद्रव्यनी वृद्धि करे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे, परंतु पवर कर्मादान, असत्य व्यापार दूर करी सद्व्यवहारथी जिनद्रव्यनी वृद्धि करे. ॥

यतः ॥ जिणवर आणा रहियं, वद्धारंतावि केवि जिणदवं ॥ बुड्डंति ज-वसमुद्दे, मूढा मोहेण अन्नाणी ॥ १ ॥

कोइ कहे छे के श्रावक विना वीजाउने तेउना अधिक किंमतना दागीना राखीने कालांतरे व्याजनी वृद्धि करे, ते उचित छे. एम कहेवुं पण ठीक छे; कारण के सम्यक्त्वपचीशी आदि ग्रंथोमां संकाशनी कथामां तेमज लखेल छे. चैत्यद्रव्य जक्षण करवाथी वहुज कष्ट पामवुं पडे छे. सागर श्रेष्टिवत् ॥ आ कथा श्राद्धविधि ग्रंथथी जाणवी. ज्ञानद्रव्य पण देवद्रव्यनी जेम अकल्पनीय छे, अर्थात् तेनो पण नाश न करवो, जक्षण न करवुं, अने वगडतां तेनी सार संजाल करवी; तेवीज रीतें साधारण द्रव्य पण संघनी अनुज्ञाथीज कल्पे छे. अनुज्ञाविना काममां लेवुं न कल्पे. संघें पण साते क्षेत्रमांज साधारण द्रव्य वापरवुं जोइए. बीजा मागनाराउने पण तेमांथी आपवुं न जोइए. तेवीज रीतें ज्ञान संवंधी कागल, पत्रादि, साधुनुं आपेलुं श्रावकें पोताना कार्यमां नहि वापरवुं जोइये. पोतानी पोथीमां पण नही राखवुं जोइए. स्थापनाचार्य अने जपमालादि लइ लेवानो व्यवहार तो देखाय छे; तथा गुरुनी आज्ञा विना साधु साध्वीए लिखिया पासे लखाववुं. तेमज वस्त्र सूत्रादिनुं लेवुं पण कल्पतुं नथी. इत्यादि विचारी लेवुं. ते कारणथी थोडा पण ज्ञान तेमज साधारण द्रव्यनो जोग न करवो जोइए.

देवने नामें बोले, ते द्रव्य तत्काल आपवुं जोइए, कारण के देवद्रव्य जेटलुं शीघ्र आपे, तेटलुं उत्तम छे. कदापि विलंब करे तो पछी कोण जाणे धनहानि, वा मरण थाय? तेवे प्रसंगे देवद्रव्यनुं रुण रही जाय. वली संसारी गृहस्थोनुं देवुं पण श्रावकें शीघ्र आपवुं जोइए, तो पछी देवद्रव्य वास्ते शुंज कहेवुं? जे वखत माला पेहेरावी, वा जो कांइ देवद्रव्यना जंडारमां आपवानुं कर्युं, तेज वखतथी ते देवद्रव्य थइ चुक्युं. ते द्रव्यथी जे लाज्ञ मेलवाय ते पण देवद्रव्य समजवुं. ते द्रव्य श्रावकें जोगववुं न जोइए, तेज कारणथी शीघ्र आपी देवुं जोइए. जो मास आदि पछी आपवानो करार करे तो करार उपर माग्या विना जरुर आपी देवुं. जो करार वित्याबाद आपे तो देवद्रव्य खावानो दोष लागे. देवद्रव्यनी उघराणी पण श्रावक पोतानी उघराणीनी पेठे यत्नथी

करे. जो देवद्रव्य लेवामा ढील करे, अने कदाचित् देवादारनी दु र्निक्ष आदि कारणथी दरिद्रादि अवस्था आवी जाय तो फरी मल्ल मुत्रकेल थइ जाय, वली देनार पण उत्साहपूर्वक कपटरहित थइ शीघ्र आपी दे, नहीं तो देवद्रव्य भक्षण करवानो दोष छे

वली देव, ज्ञान तथा साधारण संबधी दुकान, खेतर, वाडी, घर, प थर, इट, चुनो, काष्ठ, वांस, माटी, खडी, चदन, केशर, बरास, फुल, चंगे री, धूपपात्र, कलश, वासकुपी, छत्र, सिंहासन, चामर, चदरवा, झालर भेरी, चदनी, तबु, कनात, पडदा, कावल, बाजोठ, तखता, पाटला, पा टी, घडा, वेठा, ओरसीआ, काजल, जल, दीवा, चैत्यशाला, परनालनु पा णी इत्यादि सर्व देव विगेरेनु पोताना काममां न वापरवुं जोइये तुटी जा य, फाटीजाय, वा मलिन थायतो महादोष लागेछे देवनी पासे बलता दीवाना प्रकाशमा कोइ सांसारिक काम करे तो ते मरीने तिर्यंच थाय, ते कारणथी देवना दिवामा खतपत्रादि वांचवा न जोइये रुपीआपण न परखवा घरना काम तो करवाज नहि वली देवना केशर चदननुं तिल कपण न करवु देवना जलथी हाथ पण न धोवा स्नात्रजलपण थोडुज वा परवु जोइये देवना झालर, मृदंग, भेरीप्रमुख जे जे सामान, गुरु तथा संघना कार्यमां वापरे, तो ते बाबतनो नकरायो आपी वापरे कदाचित् कोइ उपकरण तुटी जायतो पोताना पैसा खरची नवु बनावी आपे दे वना दीप फानस प्रमुखमां जुदाज राखे, अने जोसाधारण द्रव्यनी झा लर प्रमुख वस्तुओ बनावे तो सर्व धर्मकार्यमां वापरी शकाय तेमां दोष नथी जेवा भावथी करे, तेवु प्रमाण छे

देवनां तथा ज्ञान खाताना घर प्रमुख पण श्रावकें नि:शुकतादि दोष होवाथी भाडे राखवा न जोइये साधारण द्रव्यना घरप्रमुख संघनी अ नुमतिथी लोकव्यवहारें भाडुं आपी वापरे तो दोष नथी, परतु भाडु क रारने दिवसे पोतानीमेले आपी देवुं जोइये भाडे राखेलुं मकान समरा ववामां पोतानु धन वापरे तो हिसाबमां मजरे ले तेमां दोष नथी, कोइ साधर्मी दु खी होय, निर्धन थइ गयो होय, अने ते संघनी आज्ञाथी भा डु आप्याविना रहे तोपण दोष नथी वली तीर्थादिमां अथवा देरासरमां घणु वखत रेहेवु पडे, तेमा सुवे, तो त्यांपण व्यवहार मुजब अधिक भाडुं

आपे, उंबुं जाडुं आपे तो दोष लागे. जाडुं आप्याविना देव ज्ञान तथा साधारण संबंधी कलश, पाटला प्रमुख उपकरणो उजमणामां, पुस्तक पूजामां, नंदी प्रमुखमां मांडवासारु न लेवां जोइये; कारण के उजमणां पोताना नामथी करवामां आवेछे, अने तेमां देव, ज्ञान, वा साधारण खातानी वस्तुउ नकरा शिवाय वपराय तो दोष लागेछे.

घर देरासरमां चडाववामां आवेला अक्षत, सोपारी, वदाम, प्रमुख वेचवाथी जे धन उपजे, तेनां पुष्प प्रमुख लइ घरदेरासरमां न चडावे, मोटामंदिरमां पण न चडावे. जे पूजारी होय तेने सर्व हकीकत कहे; अने मंदिरनुं द्रव्य छे, पण मारुं नथी एम स्पष्ट कहे. पूजारी न होय तो संघसमक्ष कही दे. एम न कहे तो महादोष छे. घरदेरासरनुं नैवेद्यादि मालीने आपे, परंतु तेथी मालीनी नोकरी हिसावमां न ले. प्रथमथीज जोइती पुष्पादि वस्तु आपवी एवा करारथी काम ले तो दोष नथी. मुख्यवृत्तियें तो नोकरीवास्ते चडेलुं आपवाथी जुडुं आपवुं जोइये.

घरदेरासरमां चडेला अक्षत प्रमुख मोटा मंदिरमां मोकलावी आपे, अन्यथा घरदेरासरना द्रव्यथी घरदेरासरनी पूजा गणाशे, परंतु पोताना द्रव्यनी थशे नहि. तेम करवाथी अनादर, अवज्ञादि दोष छे, तेथी तेम करवुं युक्त नथी. स्वद्रव्यथीज पूजा करवी उचित छे. देरानां नैवेद्य, अक्षतादि पोताना द्रव्यनी जेम साचववां जोइये, वरावर किंमते वेची, देव द्रव्य वधारवुं जोइये. परंतु जेम तेम वेची आपी देवां न जोइये. जो तेम करे तो देवद्रव्य नाश करवानो दोष लागेछे.

सर्व रीतें रक्षण करतां छतां चोर, अग्नि आदिना उपद्रवथी देवद्रव्यनाश पामे तो चिंताकारकने दोष नथी.

देव, गुरु, यात्रा, तीर्थपूजा, संघपूजा, साधर्मिवात्सल्य, स्नात्रप्रभावना, ज्ञान लखाववा प्रमुख कारणोवास्ते वीजाउ पासेथी धन ले, त्यारे चार पांच पुरुषोने साक्षी राखी ले; पछी खरचवाना प्रसंगमां पण गुरुसंघ प्रमुख प्रगट कही दे, के आ धन में अमुक सख्सनुं आपेलुं खरचेलुं छे.मारुं नथी.

तीर्थादिमां, तेमज पूजा स्नात्रमां, ध्वजा चडाववा प्रमुख आवश्यक कर्त्तव्यमां खरच वीजाने शिर नहि नाखतां, पोतेज यथाशक्ति करे. जो कोइयें धन खरचवाने आप्युं होय तो तेनुं नाम प्रगट वोली काम करे.

जो घणाये मली साधर्मिवात्सल्य, संघपूजादि कार्यमां धन वापरवा आ
व्युं होय तो जेनो जेनो जेटलो जेटलो हिस्सो होय ते ते सर्व प्रगटपणे
कही दे, नहिं तो पुण्यफलनी चोरी लागे

वली मरणांत समये माता, पिता प्रमुखें जे धर्ममां खरचवा कह्युं
होय, तथा पुत्रादि जे खरच करवु कबुल करे. ते बहु श्रावकोपासे क-
ही देवुं जोइए जेम के हु तमारा नामथी अमुक दिवसनी अवर अ
मुक धन खरचीश, तमे तेनी अनुमोदना करो पछी ते धन सर्व समक्ष,
पोताना नामथी नहीं, परंतु माता पिता प्रमुखना नामथी ते मुदतनी
अवर खरची देवुं जोइए धर्मना खरच मुख्यवृत्तिए तो साधारण द्र
व्यथीज करवां जोइए, कारण के ज्यां ज्यां काम पडे, त्यां त्यां उपयोगमां
आवे सात क्षेत्रोमां जे क्षेत्र सीदातु होय, तेमां धन खरची, तेने टेको
आपे कोइ श्रावक निर्धन थइ गयो होय तो, तेने तेज धनथी सहाय
आपे ॥ लोकेप्युक्त ॥ दरिद्र भर राजेंद्र, मा समृद्ध कदाचन ॥ व्याधितस्यौ
षध पथ्य, नीरोगस्य किमौषध ॥ १ ॥ तेज कारणथी, परभावना, संघ पे
हेरामणी तथा लाणीप्रमुखमां, जे निर्धन साधर्मी होय, तेने विशेष वस्तु
आपवी जोइये, अन्यथा धर्म अवज्ञादि दोष लागे वली धनवान्थी नि
र्धनने अधिक देवु ते पण युक्त छे जो शक्ति न होय तो धनेने बराबर आपे

पोतानो खरच धर्मद्रव्यथी न करवो जोइये यात्रादि निमित्त जे धन
काढवामां आवे, ते सर्व देवादि निमित्त थयुं जो ते द्रव्य पोताना भो
जनमां अथवा गाडी प्रमुख भाडामां वापरे तो अवश्य तेने देवद्रव्य खा
वानो दोष लागे कदाचित् अज्ञानताथी, चूकथी, बे समजथी, इत्यादि
कारणथी कोइ श्रावक देवादि द्रव्यनो उपभोग करी ले, तेना प्रायश्चित्त
मां, जेटलु द्रव्य तेणें उपभोगमां लीधुं होय तेटलुं द्रव्य देव, साधारण
संबधी जुदुं काढे मरणसमये शक्तिना अभावथी धर्मस्थानमां थोडु ख
रचे, परंतु देवुं कोइनुं राखे नहिं देवप्रमुखनु द्रव्य तो विशेषें करी राखे
नहि ए प्रमाणे श्रीजिनराजनी पूजा, भक्ति, द्रव्य रक्षणादि दृढ भा
वथी करवां जोइये इति

हवे गुरुवंदनविधि लखीये छीये ज्ञानादि पांच आचार संयुक्त होय,

तथा जे शुद्ध प्ररूपक होय, ते गुरु छे. पांच आचारनुं स्वरूप जोवुं होय तो, श्रीरत्नशेखरसूरिकृत आचारप्रदीप ग्रंथ जोइ लेवो.

पूर्वोक्त गुरु, आचार्य प्रमुख सन्मुख, जे प्रत्याख्यान पूर्वें पोते पोतानी मेळे कर्युं हतुं, ते विशेष रीतें विधिपूर्वक गुरुमुखथी उचरावे; कारण के प्रत्याख्यान त्रणतरेहथी करवामां आवेछे. १ आत्मसाक्षिक, २ देवसाक्षिक, ३ गुरुसाक्षिक, तेनो विधि आ छे—

गुरु, मंदिरमां देववंदनार्थे, स्नात्रादि देखवावास्ते, धर्मोपदेश देवावास्ते, जिनमंदिरमां आव्या होय, तथा वस्तिमां होय, त्यां मंदिरनी जेम त्रण निस्सिहि, पांच अभिगमनादि, यथायोग्य विधिपूर्वक जइ गुरु धर्मोपदेश आपे ते पहेलां अथवा पछी यथाविधियें पचवीश आवश्यक, शुद्ध द्वादशावर्त्त वंदन करे; गुरुवंदननुं फल बहुज मोटुं छे. कृष्णवासुदेववत्. भाष्यमां वंदनाना त्रण प्रकारछे. एक तो मस्तक नमाववुं ते फेटावंदना, बीजी संपूर्ण बे खमासणां प्रमुख कहेवां ते स्तोभवंदना, त्रीजी द्वादशावर्त्त करवाथी, द्वादशावर्त्तवंदना थाय छे. प्रथमनी वंदना सर्व संघने करवी; बीजीवंदना सर्व स्वदर्शनी साधुउने करवी; अने त्रीजी वंदना पदवीधर आचार्य प्रमुखने करवी.

जेणें सवारनुं पडिकमणुं न कर्युं होय, तेणें विधिपूर्वक वंदना करवी; कारण के भाष्यमां लख्युं छे के, सवारनो वंदनाविधि आ प्रमाणे करे. प्रथम १ भाष्योक्तविधियें इर्यापथ प्रतिक्रमे, पछी २ कुस्थाननो कायोत्सर्ग करे, सो उच्छ्वास प्रमाण करे, जो स्वप्नमां स्त्रीसाथे संगम कर्यो होय तो अशुचिनी सर्व जगा धोइ, पछी एक सो आठ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे. पछी ३ चैत्यवंदन करे. पछी ४ क्षमाश्रमणपूर्वक मुहपत्ति प्रतिलेखे, पछी ५ बे वंदणां दे, पछी ६ देवसि आदिक आलोवे, पछी ७ वांदणां दे, पछी, ८ अप्भुठिउमि कहे, पछी ए बे वांदणां दे, पछी १० प्रत्याख्यान करे, पछी ११ भगवान अर्हं इत्यादि चार क्षमाश्रमण दे, पछी १२ स्वाध्याय संदिसाहु कहे, पछी क्षमाश्रमणपूर्वक सद्याय करुं एम कहे, पछी स्वाध्याय करे.

हवे संध्यावंदनविधि लखीयें छीयें. १ इर्यापथ पडिक्कमे, पछी २ चैत्यवंदन करे, पछी ३ क्षमाश्रमणपूर्वक मुखवस्त्रिकानुं प्रतिलेखन करे, प-

ठी ४ वे वांदणां दे, पठी ५ दिवसचरिमनुं प्रत्याख्यान करे, पठी ६ वेवांदणां दे, पठी ७ देवसि आलोउं कहे, पठी ८ वे वांदणां दे, पठी ए अप्रुठिउं कहे, पठी १० नगवान् आदि चार स्तोनवंदना करे, पठी ११ देवसि प्रायश्चित्तनो काउसग्ग करे, पठी १२ पूर्ववत् वे खमासमण दइ स्वाध्याय करे

जो गुरुनु चित्त बीजां कार्य करवातरफ होय, तो संक्षेपमात्र वंदना करे. एम वंदनापूर्वक गुरुपासे प्रत्याख्यान करावे, कारण के श्रावक प्रतिसूत्रमां लख्यु ठे के, प्रत्याख्यान करवाना परिणाम दृढ होय तो पण, गुरुपासे प्रत्याख्यान करे, गुरुपासे प्रत्याख्यान करवामां चार गुण ठे १ दृढता थायठे, २ आज्ञापालन थायठे, ३ कर्मनो क्षय थाय ठे, ४ उपशमनी वृद्धि थाय ठे

एविज रीतें देवसिक, चातुर्मासिक नियमादि पण गुरु विद्यमान उतां, गुरुनी सान्निध्येंज करवा जोइये योगशास्त्रमां गुरुनी नक्ति आ प्रमाणे कही ठे तथा ॥ अभ्युत्थानं तदालोके,ऽनियानं च तदागमे ॥ शिरस्यंजलिसंश्लेषः, स्वयमासनढौकनं ॥ १ ॥ आसनानिग्रहोचत्त्या, वंदना पर्युपासन ॥ तद्यानेऽनुगमश्चेति, प्रतिपत्तिरिय गुरौ ॥ २ ॥ अर्थ —१ गुरुने आवता देखी उनां थवुं, २ सन्मुख लेवा जवु, ३ मस्तक उपर अजलि बांधी प्रणाम करवा, ४ आसन देवुं, ५ ज्यारे गुरु आसन उपर बेसे, त्यारे मारे वेसवु एवो अनिग्रह करवो, ६ नक्तिथी वंदना, पर्युपासना करवी, ७ ज्यारे गुरुजाय त्यारे पहोंचाडवा जवु, वली १ गुरुने अठी बराबर न बेसे, २ गुरुथी आगल न वेसे, ३ गुरुनी तरफ पीठ दइ न वेसे, ४ गुरुनी पासे पग उपर पग चढावी न वेसे, ५ पलोंठी मारी न वेसे, ६ हाथथी जघा लपेटी न वेसे, ७ पग पसारी न वेसे, ८ विकथा न करे, ए बहु हसे नहि १० निद्रा ले नहि, ११ मन, वचन, काया गोपवी, वे हाथ जोडी, नक्ति बहुमानपूर्वक, उपयोगसहित सांजले सारांश के गुरुपासे धर्म सांजलवाथी आ लोक तथा परलोक संबंधी बहु गुणो प्राप्त थायठे

वली गुरुने पुठे, साहेब ! कोइ साधु रागग्रस्त ठे, तो वैद्यने बोलावु? औषधादि उपचारवास्ते फरमावो ? गुरुना फरमान मुजब करे. गुरु गठनी सर्व तरेहथी सार संजाल ले नोजनने अवसरे उपाश्रये जइ साधुने निमन्त्रणा करे, वली औषध प्रमुख जे जेने पथ्य होय ते तेने आपे ज्यारे

साधु, श्रावकने घेर आवे, त्यारे जे जे वस्तु साधुने योग्य होय, ते ते सर्व वस्तु देवावास्ते निमंत्रणा करे. सर्व वस्तुउनां नाम साधुपासे ले, जो के साधु न लहे तोपण दाताने जीर्णशेठवत् पुण्य फल छे. रोगी साधुनी वैयावच्च करवाथी जीवानंद वैद्यवत् महापुण्य फल थायछे. साधुउने रेहेवा वास्ते स्थान आपे; जिनशासनना प्रत्यनीकने सर्वशक्ति वापरी निवारण करे. साधवीउनी दुष्ट, नास्तिक, दुःशील पुरुषोथी रक्षा करे. पोताना घरनी पासे बंदोबस्तवाला, सुंदर उपाश्रय रहेवा आपे, ते साधवीउनी, पोतानी स्त्री, वहु, बेहेन, दीकरी प्रमुख पासे सेवाभक्ति करावे. पोतानी दीकरीउने साधवीउ पासे विद्या शिखवा मोकले. जो कोइ दीकरीने विद्याभ्यास करतां वैराग्य थाय, तो साधवीने आपे. जो कोइ साधवी धर्मकृत्य भूली जाय, तो स्मरण करावे. जो कोइ साधवी अन्यायमां प्रवृत्ति करे तो तेने निवारे. वली पोते दररोज गुरुपासे नवीन नवीन शास्त्र अभ्यास करे. जो अल्पबुद्धि होय तोपण भणवानो विचार न छोडे. इत्यादि धर्मकृत्य कर्या पछी, श्रावक जो राजा होय तो राजसभामां जाय, प्रधान होय तो, न्यायसभामां जाय, वाणीउ होय तो बजारमां दुकाने जाय, इत्यादि उचित स्थानमां जइ, धर्मथी विरुद्ध न होय ते रीतें धन उपार्जन करवानी चिंता करे.

हवे राजा केवी रीतें प्रवर्त्ते ते लखीये छीये. राजा, दरिद्री मान्य, अमान्य, उत्तम, अधमादि सर्वलोकोनो पक्षपातरहित मध्यस्थरीतें न्याय करे. प्रधाननुं कर्त्तव्य ए छे के तेणें राजा तथा प्रजा, उभयने नुकशान न थाय तेवी रीतें प्रवर्त्तवुं जोइये. कारण के नीतिशास्त्रनो श्लोक छे के जे मंत्री राजानुं हित वांछेछे, तेना उपर प्रजा द्वेष करे छे, अने जे प्रजानुं हित करे छे, तेने राजा तजी देछे, तेथी एवी विषमस्थितिविचारपूर्वक राजा प्रजा बंनेना हितनो प्रधानें विचार करी काम करवां जोइये.

वणिक् व्यापारीउनी फरज ए छे के तेमणे व्यापारनी शुद्धि करवी जोइये. यदाह ॥ विवहारसुद्धि देसाइ, विरुद्धचाय उचिय चरणेहिं ॥ तो कुणइ अत्थचिंतं,निव्वाहिंतो नियंधम्मं ॥१॥ व्यापारनी शुद्धि, देशादि विरुद्धनो त्याग, उचित आचरण, आ त्रण साचवी धन उपार्जनकरवानी चिंता करे. वली पोताना धर्मनोपण निर्वाह करे. संसारमां धन कोइ कार्य नथी,

जे धनथी सिद्ध न थाय? ते कारणथी बुद्धिमान् धन उपार्जन करवानो यत्न करे ॥ यदाह ॥ नहि तद्विद्यते किंचि, यदर्थेन न सिद्ध्यति ॥ यत्नेन मतिमांस्तस्मा, दर्थमेक प्रसाधयेत् ॥ १ ॥ आश्लोकमां जे अर्थचिंता ब तावी, ते अनुवादरूप समजवी, कारण के धन उपार्जन करवानी चिंता लोकमां स्वत सिद्धछे, कांइ शास्त्रकारना उपदेशथी नथी, अने "धर्म निर्वाहयन्" आ जे कथनछे, ते कहेवायोग्य छे, कारण के तेनी आगल प्राप्ति नथी शास्त्रनो उपदेश अप्राप्त अर्थनी प्राप्ति वास्तेज होय छे, शेष सर्व अनुवादरूप छे

हवे आजीविका चलावत्राना प्रकार कहीये छीये आजीविका चला ववानां सात साधन छे १ व्यापार करवो, २ विद्याभ्यास करवो, ३ खेती करवी, ४ पशुजंतु पालन करवु, ५ कारीगरी करवी, ६ नोकरी, ७ भीख मागवी १ तेमां व्यापार करवाथी वणिक लोकोनी आजीविका चालेछे, २ विद्याथी वैद्यप्रमुखनी आजीविका चाले छे, ३ खेती करवाथी कणवी प्रमु खनी आजीविका चाले छे, ४ पशुपालनथी गोवाल प्रमुखनी आजीवि का चाले छे, ५ शिल्पथी चितारादिनी आजीविका चाले छे ६ नोकरी करवाथी सिपाइ लोकोनी आजीविका चाले छे, ७ भिक्षामां मागीखानारा ओनी आजीविका छे १ व्यापार धान्य, घी, तेल, कपास, सूतर, वस्त्र, धा तु, मणी, माणेक, मोती, रुपैआ, सोनैया प्रमुख, तथा जे जे जातनां क रीआणां छे, ते सर्वनो व्यापार चाले छे, वली जे व्याज वटाव करवो तेपण व्यापार छे

२ विद्यापण, औषधि, रस, रसायन, चूर्ण अंजनादि, वलीवास्तुक शा स्त्र, शकुनशास्त्र, भूत भविष्यादि निमित्त, सामुद्रिक, चूडामणी, जवाहिर परीक्षानां शास्त्र, तार्किक शास्त्र, न्यायशास्त्र, धर्म, अर्थ, कामना अनेक भे दथी अनेक प्रकारें छे आ वैद्यविद्यामां लोभ, वा कपट करवु ते ठीक नहीं, कारण के तेम करवाथी प्राय दुर्ध्यान थवाथी गुणनी प्राप्ति थती नथी वली जेने जेनाथी लाभ थाय छे, ते तेज वातने चाहेछे तदुक्त ॥ आर्या ॥ विग्रहमिछंतिभटा, वैद्याश्च व्याधिपीडित लोक ॥ मृतक बहुलं विप्रा, क्षेमसुभिक्ष च निर्ग्रंथा ॥१॥ अर्थ – सुभट संग्राम चाहे छे, वैद्य रो गपीडित लोकोने चाहे छे, ब्राह्मण, लोकोना बहु मरण चाहे छे, अने नि

ग्रंथ साधु निरुपद्रव अने सुकालने चाहे छे. वली जे वैद अत्यंत लोभी होय; धनवास्ते नुकशानकारक औषध जाणीने आपतो होय, जेना मनमां दया न होय, जे त्यागी, वैरागीने औषध न आपतो होय, जे गरीब अनाथ लोकोपासेथी तेउने मरता जाणतां पण धन खुंची लेतो होय, जे मांस मद्यादि अभक्ष्य वस्तु भक्षण करवानुं बतावतो होय, जे खोटां औषध बनावी लोकोने ठगतो होय, एवा वैद्य नरक गतिमां गमन करनारा छे; अने जे वैद्य सात्विक प्रकृतिवाला होय, निर्लोभी होय, अने परोपकारी होय, पूर्वोक्त दूषणो रहित होय, एवा वैद्यने तेनी विद्या श्रीऋषभदेवजीना जीव जीवानंद वैद्यनी जेम बंने भवोमां गुण देवावालीछे. एवा वैद्य विद्याथी आजीविका चलावे तो उत्तम छे.

३-४ खेती तथा पशुपालन. खेती त्रण प्रकारें थाय छे. १ वरसादथी, २ कुवा, नेहेरथी, ३ बंनेथी. पशुपालन अर्थात् गाय, भेंस, बकरी, उंट, बलद, घोडा, हाथी, तेउने वेची आजीविका करवी. आ बंने काम आत्मस्वरूपना अभिलाषी विवेकिपुरुषोने करवां उचित नथी. जो निर्वाह न चालतो होय, अने ते काम करवुं पडतुं होय तो, बीज वाववानो समय जाणे, भूमि, सरस, नीरस जाणे, इत्यादि खेती संबंधी सारी माहिती मेलवी काम करे तो धनवृद्धि थाय; वली पशुपालन धंधामां पशुउ उपर निर्दयपणुं न करे, पशुना कोइ अवयव छेदे नहि, सारी रीतें सारसंभाल करे, तो लाभ मेलवे.

शिल्प आजीविका छे. शिल्प सो तरेहना छे, मूल तो शिल्प पांच छे. १ कुंभार, २ लुहार, ३ चितारो, ४ वणकर, ५ नाइ; आ पांचेना वीश वीश भेद छे. यद्यपि आ कालमां न्यून अधिक हशे, परंतु श्रीऋषभ देवजीए प्रथम सो तरेहना शिल्प पर्यायो शिखव्या हता. ते कारणथी ते प्रमाणे अत्रे लखेल छे. जे सांसारिक विद्या ते सर्व शिल्पमां छे, बाकी कोइकज कर्ममां छे. शिल्पविद्या गुरुना उपदेशथी प्राप्त थाय छे, अने कर्म, स्वयमेव प्राप्त थाय छे. आ कर्म पण सामान्यथी चार प्रकारें छे. १ बुद्धिथी धन कमाववुं ते उत्तम. २ हाथथी धन मेलववुं ते मध्यम. ३ पगथी धन मेलववुं ते अधम. ४ मस्तके बोजो उठावी कमाववुं तें अधमाधम, समजवुं.

६ सेवा करी आजीविका करवी ते, सेवा, राजानी, शेठनी तथा सामान्य लोकोनी नोकरी करवी ते प्रथम तो नोकरी कोइनी पण न करवी जोइए, कारण के नोकरी ते परतन्त्रता छे जो निर्वाह न थतो होय तो नोकरी पण करवी, जेनामां नीचेना गुणो होय, तेवा सख्सनी नोकरी करवी १ जे काननो काचो न होय, २ शरमवालो होय, ३ कृतज्ञ होय, ४ सात्विक, गंभीर, धीर, उदार,शीलवान् गुणोनो रागी होय, तेवा पुरुषनी नोकरी करवी जे क्रूरप्रकृतिवालो होय, कुव्यसनी होय,लोभी होय,मूर्ख होय, निरंतरनो रोगी होय, चतुर न होय, अन्यायी होय, एवा पुरुषनी नोकरी न करवी वली कामदकीय नामना नीतिशास्त्रमां लख्युं छे के, जे राजानी वृद्ध पुरुषोए सेवा करी छे, ते राजा उत्तम छे वली स्वामिए पण जेवो सेवक होय, तेवुं सन्मान करवु, ते तेनी फरज छे सेवक पण जो शेठ थाक्यो होय, भूख्यो होय, क्रोधमां होय, व्याकुल होय, तृषावंत होय, शयन करतो होय, बीजाओ तेनी पासे अरज करता होय, तेवे प्रसंगे, विनति न करे वली राजानी माता, राजानी राणी, राजकुमार, मुख्य प्रधान, न्यायाधीश, राजाना दरवान, तेओनी साथे सेवकें राजानी तरेह वर्तना राखवी जोइए ए प्रमाणे वर्त्ते तो धननी प्राप्ति दुर्लभ न समजवी यथा ॥ इक्षुक्षेत्र, समुद्रश्च, योनिपोषणमेवच ॥ प्रसादोभूभुजांचैव, सद्यो घ्नति दरिद्रतां ॥ १ ॥ निंदंतु मानिनां सेवा, राजादीनां सुखेपिण ॥ स्वजना स्वजनोद्धार, संहारोन विना तया ॥ २ ॥ मंत्री, न्यायाधीश, सेनानी, सर्वनोकरी, नृपसेवानी अंतर्गत छे, परन्तु जेल खानाना दरोगानी नोकरी, नगरना फोजदारनी नोकरी तथा सीमापालनी नोकरी, इत्यादि कनिष्ठ नोकरी न करवी जोइए, कारण के आ नोकरी लोकोपर निर्दयता करावनारी छे, तेथी श्रावकें तो विलकुल न करवी जोइए जो कोइ श्रावक राज्याधिकारी थइ जाय, तो वस्तुपाल प्रमुखनी जेम महाधर्म, कीर्त्तिना कामो करनारो थाय, श्रावक मुख्यवृत्तिए तो सम्यक् दृष्टिनीज नोकरी करे.

७ भीख मागी आजीविका करवी ते, भीख मागवाना अनेक प्रकार छे तेमां धर्म उपष्टंभ मात्र आहार, वस्त्र, पात्रादिनी भिक्षा लेवी, ते पण जे साधुए सर्व संसार तथा परिग्रहना संगनो त्याग कर्यो छे, तेणे

मागबी उचित छे; कारण के तेने जीख मागवाशिवाय बीजी गति नथी. पूज्यपादश्री हरिजद्र सूरिजीए पोताना पांचमा अष्टकमां निक्षा त्रण प्रकारें लखी छे. प्रथम सर्वसंपत्करी निक्षा, बीजी पौरुषघ्नी निक्षा, त्रीजी वृत्तिनिक्षा छे, जे साधु परिग्रहना त्यागी, धर्मध्यानसंयुक्त, जिनाज्ञापूर्वक षट्कायना आरंजथी रहित, तेनी जे निक्षा, ते सर्व संपत्करी निक्षा छे; अने जे साधु तो बन्या छे, परंतु साधुना गुण जेनामां नथी, वली जे गृहस्थावासमां हृष्ट पुष्ट षट्कायना आरंजी, पडिमा वहन नहि करता एवा श्रावक, तथा बीजा गृहस्थ जे मागीने खाय तेनी जे निक्षा, ते पौरुषघ्नी निक्षा छे; ते पुरुषो धर्मनी लाघवता करनारा छे, पूर्वजन्ममां जिनाज्ञा खंडन करनारा छे, वली आगल अनंत जन्मसुधी दुःख पामशे. जेउ निर्धन, लुला, लंगडा, आंधला, पांगला, असमर्थ, काम करवानी शक्ति विनाना, तेउनी जे निक्षा, ते वृत्तिनिक्षा छे. आ निक्षा दुष्ट नथी. आ निक्षा करनाराउथी धर्मनी लाघवता आदि थतां नथी; कारण के जे तेउने आपे छे, ते अनुकंपा (दया) थी आपे छे. देनारा पुण्य उपार्जन करे छे; ते कारणथी गृहस्थें जीख न मागवी जोइए. जीख मागवाथी धर्मनी निंदा थाय छे, अने धर्मनी निंदाथी दुर्लजबोधी थाय छे. जीख मागवाथी उदर पूर्ण तो थाय छे, परंतु लक्ष्मी थती नथी. यतः ॥ लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये, किंचिदस्ति च कर्षणे ॥ अस्ति नास्ति च सेवायां, निक्षायां न कदाचन ॥ १ ॥ मनुस्मृतिना चोथा अध्यायमां लख्युं छे के, ज्यारे व्यापार करे, त्यारे कष्टमां मदद आपनार पुंजीनुं बल, स्वजाग्योदय, देश, काल देखीने करे; व्यापार शरुआतमां थोडो करे, पछी लाज जाणे तो विशेष करे, कदाचित् निर्वाह न थतां खर कर्म पण करे, तो पण पोते पोतानी निंदा करतां करे. देख्या विना, तेमज परीक्षा कर्या विना सोदो न ले, जे सोदो संदेहवालो होय ते, बहुनी साथे मलीने ले, ज्यां स्वचक्र, परचक्र प्रमुखनो उपद्रव न होय, अने धर्म सामग्री होय, ते स्थलमां व्यापार करे.

कालथी, त्रण अठाइ तथा पर्वतिथिने दिन व्यापार न करे. जे वस्तु वर्षाकाल साथे विराधी होय, तेनो त्याग करे; जावथी, जे क्षत्रिय जातिना व्यापारी राजा प्रमुख होय, तेउनी साथे व्यापार न करे, पोताना

विरोधीने उधारे न आपे, तेमज नट, विट, वेश्या, जुगारी प्रमुखने तो विशेषें करी उधारे न आपे, हथीआर बांधनारानी साथे, तेमज ब्राह्मण व्यापारी साथे लेण देण न करे, लेण देण करवामां व्याजें धीरधार करे त्यारे अधिक किंमतना दागीन राखी ते उपर रूपीआ धीरे, कारण के तेथी मागवाथी थतो क्लेश, विरोध, धर्महानि, धरणादि कष्ट थतां नथी जो एम निर्वाह न थाय तो, सत्यवादीने व्याजु उधार धीरे, व्याज पण अधिक न खाय, सेंकडे पांच छ टका सुधीनु खाय, जेथी निंदा न थाय तेम करे,

जो देवु होय तो, करारनी मुदत उपर माग्या विनाज करज आपी दे, कदाचित् निर्धनपणाथी एकज वारे न आपी शके तो किस्तो प्रमाणे जरुर आपी दे, कारण के देवु कोइनु राखवुं न जोइए यदुक्तं ॥ धर्मारंभे ऋणच्छेदे, कन्यादाने धनागमे ॥ शत्रुघातेऽग्निरोगे च, कालक्षेपं न कारयेत् ॥ १ ॥ जो देवु न आपी शकाय, तो लेणदारना नोकर थइ देवु वाले, नही तो जवांतरोमां तेना चाकर, पाडा, बलद, उंट, गधेडा, खच्चर, घोडा प्रमुख थनी देवुं आपवु पडशे लेणदार पण ज्यारे जाणे के, आ देणदार आपवाने समर्थ नथी, त्यारे बिलकुल मागवुं छोडी दे, एम कहे के ज्यारे तुं आपवाने शक्तिमान् था, त्यारे आपजे, नहि तो आ धन में धर्ममां वापर्युं छे एम समजवुं, पोताना चोपडामां पण ई लखवुं के सारी पासे मारे कांइ पण हवे लेणुं नथी

श्रावकें मुख्यवृत्तियें तो धर्मिजनोनी साथेज व्यवहार करवो जोइये, कारण के धने पासे धन रहेशे तो धर्ममां वापरशे, अने जो कोइ म्लेच्छादि नीचमाणस पासे धन रही जाय तो व्युत्सर्जन करी दे, अने व्युत्सर्जन कर्या पछी जो ते म्लेच्छादि धन पाछुं आपी दे, तो धन धर्ममां खरचवावास्ते संघने सुप्रत करे, अने व्युत्सर्जन करेल छे एम पण कही दे, तेवीज रीतें जे कांइ वस्तु खोवाइ होय अने शोधतां छतां हाथ न लागे तो ते वस्तु पण व्युत्सर्जन करी दे, पछी कदाचित् पोताने धनहानि थइ जाय, वा धननी अप्राप्ति थइ जाय, तो पण खेद न करे, कारण के खेद न करवो, तेज लक्ष्मी मळवानु मूल कारण छे

बहु धन जतु रहे, तोपण धर्म करवामां आलस न करे, कारण के सं

पत्ति अने विपत्ति मोटा पुरुषोनेज आवे छे. निरंतर एक सरखा दिवसो कोइना जता नथी, पूर्वजन्म जन्मांतरना पुण्य पापना उदयथी संपत्ति, विपत्ति आवी मळे छे; ते कारणथी धैर्यनुं अवलंबन करवुं तेज श्रेष्ठ छे. कदी अनेक उपायो करतां छतां पण दरिद्रता दूर न थाय तो कोइ भाग्यवाननो आधार ले, कारण के काष्ठनी साथे लोढुं पण तरे छे.

जो बहु धन थइ जाय तो, अभिमान न करे, कारण के लक्ष्मीनी साथे पांचवस्तुओ आवेछे. १ निर्दयपणुं, २ अहंकार, ३ तृष्णा, ४ कठणवचननो व्यापार, ५ वेश्या, नट, विट, नीचपात्र वल्लभता. तेथी कदाच बहु धन थइ जाय तो ,आ पांचने आववानो अवकाश न आपे, कोइनी साथे लडाइ न करे, पोताथी बलवान् साथे तो कदापि लडाइ न करे. वळी १ धनवंत, २ राजा, ३ पक्षवाला, ४ बलवान् , ५दीर्घरोषी, ६ गुरु, ७ नीच, ८ तपस्वी, आ आठेनी साथे वाद न करे; ज्यांसुधी नरमाशथी काम थाय त्यांसुधि कडकपणुं न अंगीकार करे. लेवा देवामां भ्रांति, भूलादिथी अन्यथा थइ जाय तो, विवाद न करे, परंतु न्यायपूर्वक चोखवट करे. न्याय करनाराओये पण निर्लोभी, पक्षपातरहित, रहेवुं जोइये. वळी जे वस्तु मोंघी थवाथी समुदायने पीडा थाय, तेवी वस्तु मोंघी थवानो विचार न करे. कदाचित् कर्मयोगथी दुकाल प्रमुख थइ जाय, तोपण सोदामां बमणो, त्रमणो लाभ थइ जाय, त्यारेपण अनाजमां बहु लाभ लेवानी ध्यान न राखे. व्याजपण सेंकडे छ टका अर्थात् आठ आना उपरांत न ले. कोइनुं पडीगयेलुं, विसरी गयेलुं, धन न ले. कालांतरे क्रयविक्रयादिमां देशकालादि अपेक्षा, उचित तथा शिष्टजन अनिंदित लाभ ले. आ कथन पंचाशकसूत्रमां छे. वळी खोटा तोल, खोटा माप, न्यूनादिक व्यापार, रसमां भेल, संभेल प्रमुख न करे, वस्तुनुं अनुचित, मूल तथा व्याज न ले. लांच न ले, घालमेल न करे; घसायेलो, तेमज खोटो रुपीओ खरामां न आपे; बीजाना व्यापारमां भांग फोड न करे, घराक न ललचावे, वानकी कांइ देखाडी माल बीजो न आपे, अंधारामां राखी वस्तु न आपे, खोटां खत पत्रादि न बनावे, इत्यादि परवंचनपणुं त्यागे. सर्वथा व्यवहारशुद्धि करे, कारण के व्यवहार शुद्धिज गृहस्थधर्मनुं मूलछे.

वळी स्वामिद्रोह, मित्रद्रोह, विश्वासघात, बालद्रोह, वृद्धद्रोह, देव-

गुरुद्रोह न करे, थापणमोसो न करे, आ सर्व महापापनां काम छे वळी कुडी साक्षी, रोष, विश्वासघात, कृतघ्नता, आ चार कर्म चंडालपणां छे, तेथी ते त्यागे असत्य बोलवुं ते सर्व पापथी मोटुं पाप छे, तेथी असत्य सर्वथा न बोले न्यायथी धन उपार्जन करे, अने अन्यायी लोको जे सुखी देखाय छे ते अन्यायथी सुखी नथी, परंतु तेउना पूर्वजन्मना पुण्यना फलथी सुखीछे, कारण के कर्मफल चार प्रकारनां छे यदाहुर्धर्मघोषसूरिपादा ॥ एक पुण्यानुबंधिपुण्यछे, बीजुं पापानुबंधि पुण्यछे, त्रीजुं पुण्यानुबंधि पापछे, चोथुं पापानुबंधि पाप छे आ चारे प्रकारने कांइक विस्तारथी बतावीए छीये

१ जेणे जिनधर्मनी बिलकुल विराधना करी नथी, परंतु संपूर्ण आराधना करी, जेउ संसारमां भवांतरमां महासुखी, धनाढ्य उत्पन्न थाय, तेउ पुण्यानुबंधि पुण्यवाला समजवा भरत, बाहुबलिवत्

२ जे पुरुषो नीरोगादि गुणयुक्त होय, अने धनाढ्यपण होय, परंतु कोणिक राजानी पेठे पाप आचरणमां तत्पर होय, ते पापानुबंधि पुण्यवाला समजवा आ पुण्य पूर्वभवमां अज्ञान कष्ट करवाथी थाय छे

३ जे पुरुषो पापना उदयथी दरिद्री तथा दुःखी होय, परंतु श्रीजिनधर्ममां बहुज अनुरक्त होय, धर्म करवामां तत्पर होय, तेउ पुण्यानुबंधी पापवाला समजवा, द्रुमक महर्षिवत् पूर्वभवमां लेशमात्र दयादि सुकृत करवाथी थाय छे

४ जेउ पापी, चंडाल कर्मना करनारा, अधर्मी निर्दय, पाप करी पश्चात्ताप नही करनारा एवा पुरुषो दुःखी छे, तो पण पाप करवामां निरंतर तत्पर छे तेउ पापानुबंधी पापवाला छे, कालिकसुरीआ कसाइवत्

बाह्य जे नव प्रकारनी परिग्रहरूप ऋद्धि छे, अने अंतरंग जे आत्मानी अनंतगुणरूप ऋद्धि छे, ते पुण्यानुबंधी पुण्यथीज मलेछे, तेथी कदापि कोइ जीव पापानुबंधी पुण्यना प्रभावथी आ लोकमां सुखी देखाय तो पण भविष्यना जन्मोमां महादुःख तथा आपदा पामवाना

वळी जे मेहेसूलनी चोरी छे, ते स्वामिद्रोह छे, आ चोरी आ लोक तेमज परलोकमां अनर्थनी दायक छे, वळी जेमां बीजाने पीडा थाय, एवो व्यवहार न करे ॥ यत ॥ शाठ्येन मित्रं कपटेन धर्मं, परोपतापेन

समृद्धिप्नावं ॥ सुखेन विद्यां परुषेण नारीं, वांछंति ये व्यक्तमपंडितास्ते ॥ १ ॥ तथा जेवी रीतें लोकोने रागज्ञाव थाय, तेवो यत्न करे. यतः ॥ वंशस्थवृत्तं ॥ जितेंद्रियत्वं विनयस्य कारणं, गुणप्रकर्षोविनयादवाप्यते ॥ गुणप्रकर्षेण जनोनुरज्यते, जनानुरागप्रज्ञवाहि संपदः ॥ १ ॥ वली धननी हानि तथा लाज्ञ, संग्रहादि गुह्य राखे, बीजा पासे प्रकाश न करे. यतः ॥ स्वकीयं दारमाहारं, सुकृतं द्रविणं गुणं ॥ डुष्कर्म मर्म मंत्रं च, परेषां न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥ वली असत्यपण न बोले, जो राजा, गुरु आदि पुछे तो सत्य कही दे. सत्य बोलवुं तेज पुरुषनो उत्तम धर्म छे.

वली यथार्थ कही मित्रनुं मन हरण करे, बांधव जनोने सन्मान आपी वश करे, स्त्रीने प्रेमथी वश करे, चाकरोने दान आपी वश करे, अने दाक्षिण्यताथी बीजा लोकोनां मन हरण करे. वली कोइ जगाये पोताना कार्यनी सिद्धिवास्ते बलवान् पुरुषोने पण आगल करे. वली ज्यां प्रीति होय, त्यां लेणदेणनो व्यापार न करे. आ कथन सोमनीतिमां पण छे.

साक्षीविना मित्रना घरमांपण धनादि राखवां न जोइये, कारण के लोज्ञ महाबुरो छे. वली जो सोंपनार सख्स गुजरी जाय तो ते धन तेना पुत्रादिने पाछुं आपी देवुं जोइये. जो धन सोंपनारनो कोइ संबंधी न होय तो ते धन सर्व लोकोनी समक्ष धर्मस्थानमां लगावे. वली श्रावक, देवगुरु, चैत्य, जिनमंदिरना साचा अथवा जूठा पण सोगंद न खाय. वली बीजाउना साक्षीपण न थाय. यतः ॥ कर्पासिक ऋषि कहे छे ॥ अनीश्वरस्य द्व ज्ञार्ये, पथि क्षेत्रं द्विधा कृषिः ॥ प्रातिज्ञाव्यं च साक्ष्यं च, पंचानर्थाः स्वयंकृताः ॥ १ ॥

वली श्रावक मुख्य वृत्तियें तो जे गाममां रहे, त्यांज व्यापार करे, कारण के तेम करवाथी कुटुंबनो अवियोग, घरनां कार्य, तथा धर्मकार्यादि सर्व बनी रहे छे. कदापि पोताना गाममां निर्वाह न थाय तो, पासेना देशांतरमां व्यापार करे, ज्यांथी जरूरी काम प्रसंगे पोताने घेर जलदीथी आवी शकाय. एवा कोण पामर छे के, पोताना देशमां निर्वाह थतो होय छतां परदेशमां जाय ॥ यतः॥ जीवंतोपि मृताः पंच, श्रूयंते किल ज्ञारते ॥ दरिद्रोव्याधितो मूर्खः, प्रवासी नित्यसेवकः ॥ १ ॥ जो निर्वाह न थतो होय तो, पोते न जाय, तेमज पुत्रादिने परदेश न मोकले, परंतु सुपरी

दित गुमास्ताने परदेश मोकले, जो पोतानेज परदेश जवुं पडे तो, शुभ मुहूर्त्त, सारां शुकन, निमित्त देखीने तथा देव गुरुने वंदना करीने, मंगलपूर्वक, भाग्यवान् पुरुषोना सथवारामां, निद्रादि प्रमाद तजी, केटलाएक पोताना ज्ञातिबंधुउने साथे लइ जाय, कारण के भाग्यवान्‌ना सथवाराथी विघ्न नाश पामे छे वली लेणदेण, गुप्त धन, सर्व, पिता भाइ के पुत्रादिने बतावी जाय, पोताना संबंधीउने सारी शिखामण आपी जाय, बहुमानपूर्वक सेवकोने बोलावी जाय जीववानी इच्छा होय तो, देवगुरुनुं अपमान करी, कोइनी निर्भ्रंछना करी, स्त्री आदिने ताडना, तर्जना करी, अने बालकने रोवरावी न जाय कदापि कोइ पर्वमहोत्सवादिना दिवसो निकट होय तो उत्सव करीने जाय यतः ॥ उत्सवमशनं सर्व, प्रगुणं चोपेदय मंगलमशेषं ॥ असमापिते च सूतक, युगेंगनचौं च नो यायात् ॥ १ ॥ वली दूध पीइने, मैथुनसेवन करीने, स्नानकरीने पोतानी स्त्रीने मारीने, वमन करीने, थुकीने, रुदन करीने, कलण शब्द सुणीने, गालो सुणीने, परदेश न जाय, वली शिर मुंडावीने, आंसु पाडीने, अने माठां शुकन थतां पण ग्रामांतर न जाय

वली कार्यने वास्ते जो चाले तो जे स्वर वेहेतो होय, ते बाजुनो पग प्रथम उपाडी मुके, जेथी कार्यसिद्धि थाय वली रोगी, वृद्ध, ब्राह्मण, आंधलो माणस, गाय, पूजनीय, राजा, गर्भवती स्त्री, भार उपाडनार, तेउने कांइ आपीने ग्रामांतर जाय वली धान्य पाकुं अथवा काचुं तथा पूजा योग्य मंत्रमंडल तेने तजे नहि वली स्नाननुं जल, रुधिर, मडदुं, थुंक, श्लेष्म, विष्टा, मूत्र, बलतो अग्नि, साप, मनुष्य, शस्त्र, आ वस्तुने उलंघे नहि वली नदीने कांठे, गायना गोकुलमां, वडना झाडनी नीचे, जलाशयमां, अने कुवाना कांठा उपर विष्टा न करे. वली रात्रियें झाडनीचे न रहे उत्सव तथा सूतक पुरां थये परदेश जाय, साथ विना परदेश न जाय, दासनी साथे न जाय, मध्याह्ने तथा अर्धरात्रियें मुसाफरी न करे वली क्रूर प्रकृतिवाला मनुष्य, कोटवाल, चाडीआ, दरजी, धोबीप्रमुख, अने नीचमित्रनी साथे गोष्ठि न करे. तेउनी साथे अकाले चाले नहि वली पाडा, गधेडा अने गायनी असवारी करे नहि वली हाथीथी हजार हाथ, गाडाथी पांच हाथ, अने घोडा तथा शिंगडावाला जनावरोथी द

श हाथ दूर रहे. वळी खरची विना मुसाफरी करे नहि. बहु निद्रा लहे नहि. रस्तामां कोइनो विश्वास राखे नहि. एकलो कोइना घरमां जाय नहि. जुनां वहाण उपर चडे नहि. एकलो नदीमां प्रवेश करे नहि. मुश्केलीवाळी जगामां साधनो विना जाय नहि. अगाध पाणीमां प्रवेश करे नहि. जेउ बहु क्रोधी होय, बहु सुखशीलिया होय, तथा बहु कंजुस होय, तेवाउनी साथे मुसाफरी करे नहि. तथा बांधवाना, मारवाना, जूगार खेलवाना, पीडाना, खजानाना, अने अंतेउरना स्थानमां गमन करे नहि. तथा बूरा स्थानमां, स्मशानमां, शून्यस्थानमां, चोकमां सूकाघासमां, कूडाकचवरमां; उंचीनींची जगामां, उकरडामां, वृक्षाग्रमां पर्वताग्रमां, नदीना कांठामां, कूवाना कांठापर, आ स्थानोमां दीर्घकाल बेसे नहि. वळी जे जे कामो जे जे वखते करवां होय ते ते वखते करे, परंतु गफलत करे नहि, तेम तजे नहि.

पुरुषें सुशोभित वस्त्र पहेरवानो आडंबर तजवो न जोइए. परदेशमां गमन करतां तो विशेपें करी न तजवो जोइए; कारण के आडंबरथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय छे. वळी जे कार्यो करवां ते पंचपरमेष्टि स्मरण पूर्वक, तथा गौतमादि गणधरोनां नामग्रहणपूर्वक करे; तेमज देव गुरुनी भक्तिवास्ते धननी कल्पना करे. कारण के ज्यारे धन कमावानो प्रारंभ थाय, त्यारे नफामांथी अमुक हिस्सो सातक्षेत्रोमां अवश्य लगावीश, एवी भावना अवश्य करवी जोइए.

ज्यारे लाभ प्राप्तथाय, त्यारे भावना अनुसारे मनोरथ सफल करे, कारण के व्यापारनुं फल धनप्राप्ति छे अने धनप्राप्तिनुं फल, धर्मकार्योमां धननो व्यय छे. तेम न थाय तो व्यापार करवो ते नरक तिर्यंच गति पामवानुं कारण थाय छे. जो धर्मकार्यमां धन खरचाय तो ते धर्मधन कहेवाय छे, अने जो पापकार्यमां खरचाय तो पापधन कहेवाय छे. ऋद्धिना त्रण प्रकार छे. १ धर्मऋद्धि, २ भोगऋद्धि, ३ पापऋद्धि. जो धर्मकार्यमां धन वपराय तो धर्म ऋद्धि, शरीरना भोगमां वपराय तो भोगऋद्धि; अने धर्म, भोगथी रहित ते पापऋद्धि जाणवी. ते कारणथी निरंतर स्वधननो दानादि धर्मकार्यमां व्यय थवो जोइए. जो थोडुं धन होय तो थोडुं धन धर्मकार्यमां वापरवुं; कारण के श्राद्धसारिणी

शक्ति कोइकनेज होय छे धनउपार्जन करवानो उपाय निरंतर करवो जोइए, परंतु अत्यंत लोभ न करवो जोइये धर्म अर्थ अने काम यथावसरे सेवन करवा जोइये, परंतु अत्यंत कामासक्त न थवुं जोइए धन पण न्यायपूर्वक उपार्जन करवु जोइए. न्यायोपार्जित धन सत्पात्रादिमां वापरवाना चार भंग छे, ते लखीए छीए

न्यायोपार्जित धन सत्पात्रादिमां वापरवाना चार भंग छे ते लखियें छियें

१ न्यायोपार्जित सत्पात्र विनियोगरूप प्रथम भग पुण्यानुबंधिपुण्यबंधनो हेतु होवाथी, वैमानिकदेवतापणु, भोगभूमियुक्त मनुष्यपणु, सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति, निकटमोक्ष फल, इत्यादि, छे धन सार्थवाह, तथा शालिभद्रादिवत्

२ न्यायोपार्जित असत्पात्रविनियोगरूप बीजो भंग पापानुबंधी पुण्यनो हेतु होवाथी भोगमात्र फल पण छे तो पण परिणामें विरस फल छे जेम लक्षभोज्य करनार ब्राह्मण अनेकभवोमां किंचित् सुख भोगवीने सेचनक नामें सर्वांग सुलक्षणो भद्रहस्ती थयो

३ अन्यायोपार्जित सत्पात्रपरिपोषरूप त्रीजो भंग तेनुं सारा क्षेत्रमा सामो वावी देवावत् फल छे ए सुखानुबंधीहोवाथी राज्यना कारभारीओना अत्यंत आरंभ उपार्जित धन समान छे एवुं धन पण धर्मकार्यमा वापरवामां आवे तो सारु छे आबु पर्वत उपर जिनमंदिर बंधावनार विमलशाह तथा वस्तुपाल, तेजपाल मंत्रीनी जेम लाभकारक छे जो तेवु धन पण धर्मकार्यमां न वापरवामां आवे तो दुर्गति तेमज अपकीर्त्ति, तेनु फल छे मम्मण शेठनी जेम

४ अन्यायोपार्जितकुपात्रपोषरूप चोथो भंग आ भग सर्व प्रकारे त्यागवा योग्य छे कारण के अन्यायोपार्जित धन अने तेनो कुपात्रमा उपयोग करवो, ते एवुं छे के, गायने मारी तेना मांसथी कागडानु पोषण करवुं ते कारणथी गृहस्थें न्यायथी धन उपार्जन करवु जोइए

श्राद्धदिनकृत्यसूत्रमां लख्युं छे के व्यवहारशुद्धि, तेज धर्मनु मूल छे जेनो व्यापार शुद्ध छे, तेनुं धन पण शुद्ध छे, जेनु धन शुद्ध छे, तेनो आहार शुद्ध छे, जेनो आहार शुद्ध छे, तेनो देह शुद्ध छे, जेनो देह शुद्ध छे, ते धर्मने योग्य छे एवो पुरुष जे जे कृत्य करे, ते सर्व सफल थाय जे

व्यवहार शुद्ध न करे, ते धर्मनी निंदा कराववाथी स्वपरने दुर्लनबोधी करे; ते कारणथी व्यवहारशुद्धि अवश्य करवी जोइए.

वली देशादि विरुद्धनो त्याग करे. देश, काल, राजविरुद्धादि परिहरे. आ कथन हितोपदेश मालानुसार करेल छे. जे पुरुष देश, काल, राज्य तेमज धर्मविरुद्ध तजे, ते सम्यग् धर्मनी प्राप्ति करे छे.

देशविरुद्ध आ प्रमाणे. मारवाड देशमां खेती करवी अने सोरठ देशमां मदिरा बनाववी, इत्यादि देशविरुद्ध समजवुं. वली जे जे देशमां जे जे कार्य शिष्टजनो अनाचरणीय माने ते ते कार्य ते देशमां करवां ते देशविरुद्ध छे. जाति कुलादि अपेक्षाए जे अनुचित होय ते पण देश विरुद्ध छे. ब्राह्मण जातियें सुरापान करवुं ते जातिकुलविरुद्ध छे, अने एक देशवालानी सन्मुख बीजा देशवालानी निंदा करवी ते देशविरुद्ध छे.

कालविरुद्ध आ प्रमाणे. शीतकालमां हिमालय समीप गमन करवुं, उष्णकालमां आफ्रिका देशमां मुसाफरी करवी. वर्षाऋतुमां मरुदेशमां गमन करवुं, दुकालमां अनाजसहित जंगलमां मुसाफरी करवी, राजाउंना परस्पर विरोधना वखतमां तथा धाड पाडुउं रस्तो रोकी बेठा होय ते वखते मुसाफरी करवी, सांझनी वखते धनसहित प्रयाण करवुं, इत्यादि स्थानकोमां, अति सामर्थ्य, सहाय तथा दृढबल विना गमन करे तो प्राणनाश तथा धननाशनो संभव छे. फागण मास पछी तलादिनो व्यापार, तल पीलाववा, तलादि भक्षण करवा, तथा वर्षाऋतुमां शाक पत्रादि भाजी प्रमुख खावां तथा बहु जीवाकुल भूमिमां हल फेरववां, इत्यादि महादोषनां कारण छे.

राजविरुद्ध आ प्रमाणे. राजाना अवर्णवाद बोलवा, जेने राजा मान्य करता होय, तेउंने न मानवा, राजाना वैरीउंनी साथे मेलाप करवो, राजाना शत्रुउंना स्थानमां लोभथी जवुं, राजाना शत्रुउंनी साथे व्यापार करवो, राजाना काममां पोतानी इच्छापूर्वक विधिनिषेध करवा.

लोकविरुद्ध आ प्रमाणे. नगर निवासीउंनी साथे प्रतिकूलपणे वर्तवुं, स्वामिद्रोह करवो, लोकोनी निंदा करवी, गुणवान् तेमज धनवाननी निंदा करवी, पोतानी बडाइ गावी, सरलनी हांसि करवी, गुणवान उपर मत्सर करवो, कृतघ्नपणुं करवुं, बहुलोकोना विरोधी साथे सं-

गत करवी, लोको जेने मान्य करे तेनी अवज्ञा करवी, उत्तम आचार वालाने कष्टमां पडे त्यारे राजी थवु, पोतानी शक्ति उतां साधर्मिनां कष्टनिवारण न करवां, देशादि उचित आचरणनु उल्लंघन करवुं, थोडु धन उतां महाधनवानना वेष धारण करवो, धनवान उतां मेलां वस्त्र पहेरवां, इत्यादि लोकविरुद्ध छे आ सर्व इह लोकना अपयशनां कारण छे यदुवाच वाचकमुख्य" ॥ लोक खल्वाधार", सर्वेषां धर्मचारिणां यस्मात् ॥ तस्माल्लोकविरुद्ध, धर्मविरुद्ध च संत्याज्यं ॥ १ ॥ अर्थ"— श्री उमास्वातिवाचक पूर्वधर आचार्य कहे छे के, सर्वे धर्म करनाराउने लोक (जनसमुदाय) आधार भूत छे, ते कारणथी लोकविरुद्ध तथा धर्मविरुद्ध बने निरंतर त्यागवा योग्य छे तेम करवाथी धर्मनो सुखें निर्वाह थाय छे लोकविरुद्ध त्याग करवाथी सर्वलोकोने ते वल्लभ थाय छे, अने लोकप्रिय थवुं तेज सम्यक्त्व तरुनु बीज छे

हवे धर्मविरुद्ध लखीए छीए, मिथ्यात्वनी करणी करवी, गाय प्रमुख सर्व प्राणीउने निर्दयताथी ताडना करवी तेमज ते जीवोनी हिंसा करवी, तेउने दृढ बंधनथी बांधवां, मांकड, जू प्रमुख क्षुद्रजंतुउने निराधार फेंकवां तथा मारवां, तडकामां नांखवां, अपकायना जीवोनी अत्यंत विराधना करवी, पाणी गलवा माटे मजबुत गलणां न राखवां, पाणी गल्या पछी संखारो फेंकी देवो, अनाज, इंधन, शाक, पत्र, तांबूल, फलादि शोध्याविना खावां सोपारी, खारेक, उली, फली, प्रमुख संपूर्ण, भांग्या विना मुखमां नाखवां, जीवाकुल भूमिउपर स्नान करवुं, मलमूत्र करवां, उपयोग विना गमनागमन करवु, जीवयुक्त धान्यादि दलवां, भरडवां, रांधवां, इत्यादि हिंसायुक्त काम करवां, धर्मनां कार्यो अनादरथी करवां, देव, गुरु अने साधर्मिउनी निंदा करवी तथा द्वेष करवो जिनमंदिरनुं द्रव्य खावुं, देवगुरु, धर्मना निंदकनी संगत करवी, धर्मिजीवोनी मश्करी करवी, अत्यंत कषाययुक्त काम करवां, पंदर कर्मादाननां आचरण तथा व्यापार तीव्र मलिन अध्यवसायपूर्वक करवा, पापयुक्त नोकरी करवी, इत्यादि अनेक धर्मविरुद्ध कार्यो छे आ पांचे प्रकारनां विरुद्ध श्रावकें त्यागवां जोइए

हवे उचित आचरण कहीये छीये पिता प्रमुख नव जनोनी साथे उ-

त आचरण अर्थात् स्नेहवृद्धि, कीर्त्यादिहेतु कार्य करवां, ते हितो-
शमाला ग्रंथानुसार लखीये बीये. नवजनोनी साथे उचित आचरण
रवां तेउनां नाम. १ पिता, २ माता, ३ बंधु, ४ स्त्री, ५ पुत्र, ६ स्वजन,
गुरु, ८ नगरवासी लोक, ९ परतीर्थिको अर्थात् बीजा मतवालाउं.

१ पितानी साथे उचित आचरण आ प्रमाणे. ते मन, वचन, कायाथी
ण प्रकारें थायछे. तेमां कायाथी पिताना शरीरनी शुश्रूषा करवी, किंक-
नी जेम विनय, वैयावच्च करवी, पिताना मुखमांथी निकलतां पेहेलां ते-
ा अंतःकरणनो व्यापार समजी तेनी अभिलाषा पूर्ण करवी, पितानुं व-
न उपाडी लेवुं, प्रसंगें पितानां चरणप्रक्षालन करवां, पितानी चंपी क-
वी, वृद्धपिताने उठतां, बेसतां आश्वासना करवी, देशकाल उचित, स्व-
क्ति अनुसार भोजन, शय्या, वस्त्रादि विनयपूर्वक पितानी आज्ञानु-
ार आपवां, पितानी चाकरी पोते करवी, नोकरो पासे प्रसंग शिवाय क-
ावबी नही; पितानुं वचन पालवा वास्ते श्रीरामचंद्रजी राज्याभिषेकनो
त्याग करी वनवास गया, ए दृष्टांत ध्यानमां राखवुं. वली पितानुं वचन
सुण्युं अणसुण्युं न करवुं, मस्तक धूणाववुं नहि, कालक्षेप करवो नहि,
पितानी आज्ञानुसार वर्त्तवुं, सर्व कार्यो यत्नपूर्वक पोताना मनमां करवा-
नो उत्साह थयो होय ते पितानी पासे प्रगट करवो. पिताने जे कार्य क-
रवुं वास्तविक लागे ते करवुं, पिता, माता, गुरु अने बहुश्रुत आराध्यां
थकां, सर्वकार्यनुं रहस्य प्रकाश करे छे. पिता कदाचित् कठिन वचन
बोले तो पण क्रोध न करवो, पितानां जे जे धर्मकार्य करवाना मनोरथ
थाय ते ते पुरा करवा.

२ हवे मातानी साथे उचित आचरणनुं स्वरूप कहीये बीये. पितानी
जेम मातानी सर्वप्रकारें भक्ति करे, परंतु माताना मनोरथ पिताथी अ-
धिक पूरा करे. देवपूजा, गुरुसेवा, धर्मश्रवण करवुं, देशविरति अंगीकार
करवी, आवश्यक करवां, सात क्षेत्रमां धन वावरवुं, तीर्थयात्रा करवी, अ-
नाथदीननो उद्धार करवो इत्यादि सर्व माताना मनोरथ विशेषरीतें पू-
र्ण करवा. ए प्रमाणे पूर्ण करे तोज उचित आचरण कर्यां समजवां. उत्त-
म सुपुत्रने ते प्रमाणे करवानी फरज छे, कारण के मातापितानो उपकार
अतुल्य छे, ते उपकारनो बदलो नथी. कदाच मातापिताने सुपुत्र श्री अ-

रिहतना धर्ममा जोडे तोज मातपिताना उपकारनो बदलो वली शके छे, तेम करवाथीज मातापिताना उपकारनु ऋण वली शके छे, ते शिवाय बीजा कोइ उपायथी मातापिताना उपकारनु ऋण वली शकतु नथी आ कथन श्रीस्थानाग सूत्रमा छे

हवे माता सबधी उचित आचरणमा जे विशेष छे ते लखीये छीये माताना चित्तने अनुसरवु ते उत्तम पुत्रनी फरज छे स्त्री जातिनो स्व भावज प्राय एवो होय छे, पोतानी धारणा मुजब न थाय तो जलदीथी चित्त खेदयुक्त थइ जाय, ते कारणथी जे काममा खेद या पीडा थाय ते काम न करवु पिताथी माता विशेष पूज्य छे मनुस्वामी कहे छे के॥ उपाध्यायाद्दशाचार्य , आचार्येभ्य शतपिता ॥ सहस्र तु पितुर्माता, गौरवेणातिरिच्यते ॥ १ ॥ वली बीजाओपण कहे छे के, ज्यां सुधि दुध पीये त्यां सुधी आ, मारी माता एम पशुपण जाणे छे, भोजन न खाइ शके त्यासुधि आ मारी माता एम अधम पुरुष जाणे छे, ज्यासुधी घरनु काम करे त्यांसुधी आ मारी माता एम मध्यम पुरुष माने छे अने ज्या सुधी जीवे त्यांसुधी तीर्थरूप उत्तम पुरुष पोतानी माने माने छे

३ सहोदर अर्थात् बधु साथे उचित आचरण आ प्रमाणे मोटाभाइने पिता समान गणे, अने मोटो भाइ नानाभाइने सर्वकार्यमां साथे जोडे जो ओरमान मातानो दीकरो (भाइ) होय तो जेम श्रीरामचद्र अने ल क्ष्मणनो परस्पर प्रेम हतो तेवो परस्पर प्रेम राखवो जोइये वली वडील बधुनी स्त्रीओनी साथे तथा तेमना पुत्र, पुत्रीओनी साथे पण उचित आ चरण यथायोग्य करे, परतु पृथग्भाव न करे भाइनी व्यापारमा सला ह लहे छानी वात न राखे धननो व्यवहारपण भाइथी गुप्त न राखे बधुने निरतर शिखामण आपे, जेथी धूर्त्त, प्रपचीना छल कपटमां ते न फसाय बधुने माठी सोबत लागी होय, या ते अविनीत थयो होय तो सज्जन पुरुषोनी सोबतमां लावी आपी उतारे, पोते नम्रतायी शिखामण आपे, पोताना मित्रोद्वारा शिखामण अपावे, काका मामा, इत्यादि स गासंबधी द्वारा तेने शिक्षा अपावे, अन्योक्तिथी कथन करे, परतु पोते तर्जना करे नहि कारणके तर्जनाथी बधुमां अविनीतपणु तथा अम र्यादा वधती जाय छे लाजु मोकनारो थइ जाय छे, तेथी हृदयमां प्रेम

सहित बहारथी ज्यारे नाइने देखे त्यारे तेना अंतःकरणमां पण ते बहु राजी थाय एवो देखाव बतावे. ज्यारे नाइ विनयमार्गेमां आवी जाय त्यारे निष्कपटपणे मीठां वचनोथी तेनी साथे निरंतर वर्त्ते. कदाचित् नाइ अविनीतपणुं न तजे तो, चित्तमां विचारे के, तेनी प्रकृतिज एवी छे, एम मनमां समाधान करी उदासीनपणे वर्ते. वली नाइनी स्त्री तथा तेना पुत्रोनी साथे समदृष्टि सर्व कार्यमां राखे. उरमान नाइनी साथे विशेषरीतें प्रेमपूर्वक प्रवर्त्ते; कारण के तेनी साथे लेशमात्र अंतर राखवाथी अप्रतीति थइ जाय छे, अने लोकमां पण निंदा थाय छे. तेवीजरीतें माता, पिता अने बंधुसमान बीजा जे जे पुरुषो छे, तेउनी साथे उचित आचरणो विचारी लेवां. यतः ॥ जनकश्चोपकर्त्ताच, यस्तु विद्यां प्रयच्छति ॥ अन्नदः प्राणदश्चैव, पंचैते पितरः स्मृताः ॥ १ ॥ राजपत्नी गुरोः पत्नी, पत्नीमाता तथैव च ॥ स्वमाता चोपमाता च, पंचैतामातरःस्मृताः ॥ २ ॥ सहोदरः सहाध्यायी, मित्रं वा रोगपालकः ॥ मार्गे वाक्यसखायश्च, पंचैते भ्रातरः स्मृताः ॥ ३ ॥ वली पोताना नाइउने धर्मकार्यमां पण प्रवर्तावे; तेवीज रीतें मित्रनी साथे पण उचित आचरण करे.

४ हवे स्त्रीनी साथे उचित आचरण कहीए छीए. विवाहित स्त्रीनी साथे स्नेहसंयुक्त वचन व्यापार राखे, स्त्रीने सर्वकार्यमां अनिमुख करे, वल्लन अने स्नेहयुक्त वाणीविलास निश्चयपूर्वक प्रेमनुं जीवन छे. स्नानप्रसंगें वा परिश्रमने प्रसंगें पगचंपी प्रमुख कार्यमां स्त्रीने प्रवर्तावे. उत्तरोत्तर कार्यमां पतिनो स्नेह पत्नीना अंतरंगमां प्रवर्त्ते छे, त्यारे पत्नी कदापि डुराचरण करवानी अनिलाषा करती नथी. देश, काल, समृद्धिपूर्वक स्त्रीने उचित वस्त्राभरणथी अलंकृत करे; कारण के अलंकारसंयुक्त स्त्री, लक्ष्मीनी वृद्धि करे छे. रात्रिए स्त्रीने बहारगमन करवा अनुज्ञा आपे नहि. वली कुशील, पाखंडी, नगत योगी इत्यादि नीचपुरुषोनी संगतमां प्रवर्तवा दे नहि. गृहकार्यमां स्त्रीने निरंतर जोडी राखे. राजमार्गे उन्नां रहेतां तथा वेश्याना पाडामां जतां निवारे. प्रतिक्रमण, सामायिक, देवदर्शनादि धर्मकृत्यो करवावास्ते, जिनमंदिर वा उपाश्रये जवामां, माता, बेहेन प्रमुख सुशील स्त्रीउनी संगतिमां जवानी अनुज्ञा आपे, घरनां काम, दान, सगासंबंधीनां सन्मान, रसोइनां

काम प्रमुखमां अधिष्ठाता करे स्त्री प्रभातसमये शय्या उठावे, घर प्र मार्जन करे, दूधनां वासण धोवे, चूलानी चोकाप्रमुख क्रिया करे, ठाम वासण मांजे, अनाज पीसें, गाय, भेंस दोवे, वलोणु करे, रसोइ करे, जमनारने पीरसे, जूठां वासणो मांजे, सासु, नणंद, जेठ, देवर इत्यादि नो विनय करे. पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने निरंतर जोडे, जो पूर्वोक्त का र्योमां स्त्रीने न जोडे तो, स्त्री नवराश पामी चपलताथी विकारने पामी जाय छे काममां लागी रेहेवाथी स्त्रीनी रक्षा थाय छे, अने मनोवृत्ति शांत रहे छे वली भरतार स्त्रीनी सन्मुख जोवे, बोलावे, गुणकीर्त्तन क रे, धन वस्त्र आभूषण आपे, स्त्री जेम कहे तेम करे, स्त्रीने दूर न राखे, तोज स्त्रीनो भरतार उपर अत्यंत प्रेम थाय छे, तथा स्त्रीने नही जो वाथी, विशेष देखवाथी, देखीने नही बोलाववाथी, अपमान आपवाथी, अहंकार करवाथी इत्यादि वातोथी प्रेम त्रुटी जाय छे वली भरतार परदेश बहु वखत रहे तो विरहथी स्त्री अनुचित काम पण करी ले, ते कारणथी भरतारें बहु वखत परदेशमां पण न रेहेवुं जोइए स्त्री चूक करे त्यारे शिक्षा करे, अने रीसाय तो मनावे घरनां गुह्य तथा धननी हानि वृद्धि स्त्रीनी आगल प्रगट न करे क्रोधनो आवेश आववाथी बी जी स्त्रीसाथे परणे नहि बे स्त्रीवाला भरतारने अत्यंत दुःख छे कदा चित् संतानोत्पत्तिवास्ते बे स्त्री परणे, तो बंने उपर समभाव राखी प्र वर्त्ते स्त्री ज्यारे कोइ काममां मोटी भूल करे, त्यारे एवी शिक्षा करे के फरी कदापि तेवी भूल करे नहि रीसायेली स्त्रीने पण जो न म नावे तो सोमभट्ट विप्रनी भार्या अथानी जेम कुवामां जइ पडे, इत्यादि अनर्थ अनेक करे. ते कारणथी स्त्रीनी साथे सर्वकाम, स्नेहयुक्त वच नोथी करावे कठिनशब्दोथी करावे नहि

जो निर्गुणस्त्री मले तो विशेषरीतें तेनी साथे नरमाशथी प्रवर्त्ते, प रतु तेवी स्त्रीने घरमां प्रधान न करे जे घरमां पुरुषनी जेम स्त्रीसाम र्थ्य, प्रधानपणुं करे ते घर प्राय नाश पामे छे, आ कथन बाहुल्यता थी छे, कारण के केटलीएक स्त्रियो एवी बुद्धिवाली होय छे के तेने पुछीने जो काम करवामां आवे तो बहुज लाभ थाय छे जेम तेजपा लनी पत्नी अनुपदेवीने पुछीने, वस्तुपाल तथा तेजपाल काम करता ए

ता. वली स्त्री ज्यारे धर्मकार्यो करे, तप करे, चारित्र ले, उद्यापन करे, दान दे, देवपूजा करे, तीर्थयात्रादि करे, इत्यादि जे जे उत्तम कार्यो करे, ते सर्वमां उत्साह धरे, शक्ति प्रमाणे धन आपे, सुशीलपणे सहाय आपी तेना मनोरथ पूर्ण करे, अंतराय न करे; कारण के स्त्री जे जे धर्मकृत्यो करे तेमां पति ते ते कृत्यो करवामां राजी थाय तो ते पतिने पण पुण्य थाय छे.

५ हवे पुत्रनी साथे उचित आचरण लखीए छीए. पिता पोताना पुत्रनुं बाल्यावस्थामां अत्यंत मनोज्ञ आहारथी पोषण करे. स्वेच्छापूर्वक नाना प्रकारनी क्रीडा करावे. मनोज्ञ पुष्ट आहारथी बालकनी बुद्धि बल तथा कान्तिनी वृद्धि थाय छे, अने स्वेच्छायुक्त क्रीडाथी शरीर पुष्ट थाय छे; अंगोपांग संकुचित थतां नथी. यतः ॥ लालयेत् पंचवर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत् ॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥ वली देव, गुरु, धर्म अने सुखी स्वजनादिनी संगत करावे. उत्तम जातिवान्, कुलाचारी, शीलवान् एवा पुरुषनी साथे मित्राचारी करावे; गुरु आदिनो परिचय थवाथी बाल्यावस्थामां पुत्र उत्तम वासनावालो थाय छे, वल्कलचीरीयवत्. जाति, कुल, आचारसंयुक्तनी मित्रताथी, दैवयोगथी कदापि अनर्थपण आवी पडे तो पण, भला मित्रनी सहायताथी कष्ट दूर थई जाय छे. जेम अभयकुमारनी साथे मित्रता करवाथी आर्द्रकुमारने भली वासना थईगई तेम. ज्यारे पुत्र अढारवर्षनो थाय, त्यारे तेनो विवाह करे, कारण के बाल्यावस्थामां वीर्यक्षय थइजवाथी, बुद्धि, पराक्रम, तथा आयुष्यवृद्धि पामतां नथी. सर्वजैनमतना शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे. ज्यारे पुत्रने भोगसमर्थ जाणे त्यारे, तेनो विवाह करे. जे कन्यानी साथे विवाह करावे, ते कन्यानुं रूप, कुल, गुण समान होय तेनी साथे विवाह करावे. जे कन्यामां गुण, रूप सरखां न होय तथा जे कन्या वर्षमां अधिक होय, तेनी साथे विवाह करवामां अनेक विडंबना छे. विवाहनुं प्रकरण हवे पछी लखशुं. पुत्रना उपर घरनो भार मूके, पुत्रने घरनो स्वामी करे. ज्यारे पुत्रनी उपर घरनो भार आवे छे, त्यारे चिंतायुक्त रेहेवाथी ते कांइपण स्वछंद उन्मादादि करतो नथी; कारण के तेना जाणवामां आवे छे के, धन बहुज मेहेनतथी प्राप्त थाय छे, ते का-

काम प्रमुखमां अधिष्ठाता करे स्त्री प्रजातसमये शय्या उठावे, घर प्रमार्जन करे, दूधनां वासण धोवे, चूलानी चोकाप्रमुख क्रिया करे, गाम वासण मांजे, अनाज पीसें, गाय, भेंस दोवे, वलोणुं करे, रसोइ करे, जमनारने पीरसे, जुठां वासणो मांजे, सासु, नणंद, जेठ, देवर इत्यादिनो विनय करे. पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने निरंतर जोडे, जो पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने न जोडे तो, स्त्री नवराश पामी चपलताथी विकारने पामी जाय छे काममां लागी रेहेवाथी स्त्रीनी रक्षा थाय छे, अने मनोवृत्ति शांत रहे छे वली भरतार स्त्रीनी सन्मुख जोवे, बोलावे, गुणकीर्त्तन करे, धन वस्त्र आभूषण आपे, स्त्री जेम कहे तेम करे, स्त्रीने दूर न राखे, तोज स्त्रीनो भरतार उपर अत्यंत प्रेम थाय छे, तथा स्त्रीने नहीं जोवाथी, विशेष देखवाथी, वेस्त्रीने नहीं बोलाववाथी, अपमान आपवाथी, अहंकार करवाथी इत्यादि बाबतोथी प्रेम त्रुटी जाय छे वली भरतार परदेश बहु वखत रहे तो विरहथी स्त्री अनुचित काम पण करी ले, ते कारणथी भरतारें बहु वखत परदेशमां पण न रेहेवु जोइए स्त्री भूल करे त्यारे शिक्षा करे, अने रीसाय तो मनावे घरनां गुह्य तथा धननी हानि वृद्धि स्त्रीनी आगल प्रगट न करे क्रोधनो आवेश आववाथी बीजी स्त्रीसाथे परणे नहि वे स्त्रीवाला भरतारने अत्यंत दुःख छे कदाचित् संतानोत्पत्तिवास्ते वे स्त्री परणे, तो बंने उपर समभाव राखी प्रवर्त्ते स्त्री ज्यारे कोइ काममां मोटी भूल करे, त्यारे एवी शिक्षा करे के फरी कदापि तेवी भूल करे नहि रीसायेली स्त्रीने पण जो न मनावे तो सोमभट्ट विप्रनी भार्या अथानी जेम कुवामां जइ पडे, इत्यादि अनर्थ अनेक करे. ते कारणथी स्त्रीनी साथे सर्वकाम, स्नेहयुक्त वचनोथी करावे कठिनशब्दोथी करावे नहि

जो निर्गुणस्त्री मले तो विशेषरीतें तेनी साथे नरमाशथी प्रवर्त्ते, परंतु तेवी स्त्रीने घरमां प्रधान न करे जे घरमां पुरुषनी जेम स्त्रीसामर्थ्य, प्रधानपणुं करे ते घर प्राय नाश पामे छे, आ कथन बाहुल्यताथी छे, कारण के केटलीएक स्त्रियो एवी बुद्धिवाली होय छे के तेने पुछीने जो काम करवामां आवे तो बहुज लाभ थाय छे जेम तेजपालनी पत्नी अनुपदेवीने पुछीने, वस्तुपाल तथा तेजपाल काम करता ह

७ हवे गुरु उचित कहीए छीए. धर्माचार्यनी साथे उचित भक्ति, अंतरंगपूर्वक, बहुमान संयुक्त, प्रवर्तवुं. वचन कायानां आवश्यक प्रमुख कृत्य करवां. गुरुपासे शुद्ध श्रद्धापूर्वक धर्मोपदेश श्रवण करवो. गुरुनी आज्ञा अंगीकार करवी. मनथी पण गुरुनुं अपमान न करवुं. गुरुना अवर्णवाद कोइनी पासे बोलवा नहि. गुरुनी प्रशंसा सर्वत्र प्रगट करवी, गुरुनी प्रत्यक्ष तेमज परोक्ष स्तुति करवी, कारण के गुरुनी स्तुति अगणित पुण्यबंधनुं कारण छे. गुरुनां छिद्र कदापि जोवां नहि. गुरुनी साथे मित्रनी जेम अनुवर्त्तन करे. गुरुना प्रत्यनीक, निंदकने सर्वशक्तिथी निवारे. कदाचित् गुरु प्रमादना वशथी कांइ चूक करे तो एकांतमां हितशिक्षा आपे, वली एम कहे के हे भगवन्! आप सरखाने आ काम करवुं उचित नथी. गुरुनो विनय करे, गुरुनी सन्मुख जाय, गुरुपासें आवतां, आसन छोडी उभा थइजाय. गुरुने आसन आपे. गुरुनी पगचंपी करे. गुरुने शुद्ध, निर्दोष आहार, वस्त्रपात्रादि आपे. आ प्रमाणे गुरुनो द्रव्योपचार करे. भावोपचार, ते गुरुनुं परदेशमां निरंतर स्मरण करे इत्यादि.

८ हवे नगरवासी जनो प्रत्ये उचित आचरण कहीये छीये. जे नगरमां निवास होय, ते नगरवासीओ, जेओनी पोताना सरखी व्यापारवृत्ति होय तेओनी साथे व्यापार विषयमां एकचित्तथी सुख दुःखादि प्रसंगें तथा कष्ट प्राप्त थये अने राज्यउपद्रवादिमां अरस परस सामेल रहे तथा सहाय आपे. तेओना अभ्युदयमां उत्साहवान् रहे. राजदरबारमां कोइनी चाडी चुगली न खाय. नगरनिवासिओमां फाटे नहि. सर्वेनी साथे मली राजानी आज्ञा पाले. ज्यारे घणां नवलां माणसोपण एकत्र थइ कार्य करे छे, त्यारे तृणरज्जुवत् बलवान् थइ जाय छे. ज्यारे वादविवाद थइ जाय त्यारे पक्षपात तजी कार्य करे. कोइनी पासेथी लांच लइ असत्य कार्य न करे. कोइनी साथे सहज लडाइ थइ जाय तो न्यायनी अदालतमां फरीयाद करे नहि. राजाना कारभारीओ साथे लेणदेणनो व्यवहार न करे, कारण के ते लोकोने नाणां पाछां आपवामां क्रोध आवी जाय छे. तेवे प्रसंगें तेओ अनर्थ करे छे, समान नगरवालाओनी जेम असमानवृत्तिवाला नगरनिवासीओनी साथे पण यथायोग्य उचित आचरणकरे.

९ हवे परतीर्थी परमतवालाओनी साथे उचित आचरण लखीए छीये.

रणथी अनुचित व्यय न करवो जोइये, परतु पुत्रनी परीक्षा कर्या पछी तेना उपर घरनो भार मुकवो जोइये जेम प्रसेनजित् राजाए श्रेणिक पुत्र वास्ते कर्युं तेम पुत्रनी जेम पुत्री तथा भत्रीजानी साथे पण उचित आचरण करवां, तेवीज रीतें पुत्रनी वहुसाथे पण उचित आचरण करवा धनश्रेष्ठिवत्, पुत्रनी प्रशंसा प्रत्यक्ष न करे. ज्यारे कष्ट पडे त्यारे सुख दुःखनी वातो कहे, उपज निपज अने खर्चनु स्वरूप कहे वली पुत्रने राजसभानो अनुभव करावे, कारण के अणचिंतव्युं कष्ट आवी पडे त्यारे शु करवुं तेनी गम पडे, वली दुष्ट जन उपद्रव करे त्यारे राजकचेरी विना इलाज नथी यत ॥ गतव्य राजकुले, द्रष्टव्याराजपूजिताखोका ॥ यद्यपि न भवत्यर्था, स्तथाप्यनर्था विलीयते ॥ १ ॥ वली पुत्रने परदेशना आचार, व्यवहारादिथी जाणकार करे प्रसंगवशात् परदेशगमन करवुं पडे तो कोइ कष्टप्राप्त थतां उपाय सुजे वली उंरमान माना पुत्रनी साथे विशेष उचित करे

६ हवे सगाउं साथे उचित आचरण लखीए छीए पिता, माता, स्त्रीना पक्षना जे लोक होय छे ते सगां कहेवाय छे ते सगांउंनो निरंतर तेमज मोटा प्रसंगमां आदर सत्कार करवो जोईए पोते पण सगाउंना काममा आगेवान तरीके प्रवर्चे तथा काम करे जे स्वजन धनहीन होय, रोगग्रस्त होय तेनी सारवार करे, कारण के सगाउंनो जे उद्धार करवो ते पोतानोज उद्धार करवो छे सगाउंनी पाछल तेउंनी निंदा न करे सगांउंना वैरीउं साथे मित्राचारी न करे. सगांउंनी साथे प्रीति करवामा शुष्क कलह, हास्यादि वचनोनी लढाइ विगेरे निवारे स्वजन घरमां न होय तो तेना घरमा एकलां गमन करे नहि देव, गुरु अने धर्मनां कार्यमां स्वजनोनी साथे सामेल रहे जे स्त्रीनो पति परदेश गयो होय एवा स्वजनना घरमा एकलां गमन करे नहि स्वजनोनी साथे लेणदेणनो व्यापार करे नहि तथाहि ॥ *यदीछेत् विपुला प्रीतिं, प्रीणि* तत्र न कारयेत् ॥ वाग्वादमर्थसंबध, परोक्षे दारदर्शनम् ॥ १ ॥ आ लोकना व्यावहारिक कार्यमां स्वजनोनी साथे एकचित्त रहे, अने जिन मन्दिरादिधर्मकार्योमां तो अवश्य विशेष रीतें मेलाप पूर्वक प्रवर्त्ते एवां कार्यो घणुंजन संमतिथीज करवामां आवे तो शोभा छे

होय तो प्रथमथीज तेने कहे के आ काम तमाराथी थइ शकशे नहि, कोइपण मनुष्यनुं बुरुं बोले नहि, पोताना वैरीनुं पण बुरुं बोले तो अन्योक्तिपूर्वक बोले; माता, पिता, रोगी, आचार्य, परोणा, अभ्यागत, बंधु, तपस्वी, वृद्ध, बाल, स्त्री, वैद्य, पुत्र, गोत्री, पामर, बेहेन, बनेवी, मित्र आ सर्वेनी साथे वचननी लडाइ न करे; सूर्यनी सन्मुख निरंतर जोवे नहि, चंद्रसूर्यना ग्रहणने जोवे नहि, उंडा कुवामां वांका वली जोवे नहि, संध्यासमये आकाश सन्मुख जोवे नहि; वली मैथुनक्रिया करनार, शिकार करनार, नग्नस्त्री, यौवनवंती स्त्री, पशुक्रीडा, कन्यानी योनि, तेउनी तरफ दृष्टि करे नहि; तेलमां, जलमां, शस्त्रमां, मूत्रमां, रुधिरमां, पोतानुं मुख जोवे नहि, ते प्रमाणे करवाथी आयु अल्प थाय छे. जेणे आश्रय कर्यो होय तेनो त्याग करे नहि, नाश पामेली वस्तुमाटे शोक करे नहि, कोइनी निद्रानो भंग करे नहि, घणांनी साथे वेर करे नहि, बहुजनसंमत होय तेवुंज वचन बोले, जे काममां रस न लागे, ते काम करे नहि, कदापि करवुं पडे तो पण घणांने मलीने करे. धर्म, पुण्य, दया, दानादि शुभकाममां बुद्धिमान् मुख्य थाय, अग्रेसर थाय, कोइनुं बुरुं करवामां अग्रेसर न थाय, सुपात्र साधुउमां कदापि मत्सर ईर्ष्या करावे नहि, पोते तेउना उपर करे नहि, पोतानी ज्ञातिवाला कष्टमां पड्या होय तेनी उपेक्षा करे नहि, पांच माणसने मेलवी आदरसहित ते कष्ट दूर करे. माननीय पुरुषनुं मानभंग करे नहि. दरिद्र, पीडित, मित्र, साधर्मी, ज्ञातिमां बुद्धिमंत, गुणमां गरिष्ट, संतानहीन, इत्यादिनुं कष्टमां पालन करे. पोताना कुलने जे काम करवुं उचित न होय ते काम करे नहि. नीतिशास्त्र तेमज बीजां शास्त्रो मुजब जे उचित आचरण होय तेज करे. अनुचित निरंतर वर्जे. वैद्यक ग्रंथमां लख्यामुजब एकप्रहरमां बेवार भोजन न करे, तथा बे प्रहर उलंघे नहि, कारण के एक पहोरमां बेवार खावाथी रोगोत्पत्ति थाय छे, अने बे पहोर पछी न खाय तो बलक्षय थाय छे.

हवे सुपात्रदानादि आपवानी युक्ति लखीए छीए. भोजन अवसरें भक्तिसहित साधुउने निमंत्रणा करीने साधुनी साथे घरमां आवे, जो साधु स्वयमेव आवता होय तो सन्मुख जइ आदर सत्कार करे, विन-

जे परमतवाला भिक्षाने वास्ते पोताना घरमां आवे ते सर्वप्रत्ये उचित करे राजाना माननीयनुं विशेष उचित करे. उचित कृत्य ते यथा योग्यदान देवा चाहे अगर जो ते साधुउपर मनमां प्रीति न होय तो पण घेर मागवा आवतां तेओनी उचित भक्ति करे, कारण के दान देवुं ते गृहस्थनो धर्मज छे वली कोइ महंत घेर आवी जाय तो सन्मुख गमन, आसन दान, उभा थवुं तथा दान आपवुं प्रमुख करे. परमतवाला कोइ कष्टमां पडे तो तेनो उद्धार करे दुःखी जीवोनी दया करे. पुरुष अपेक्षा मधुर आलाप संलापादि करे. अन्य मतवालांने कामनु पुछवा प्रमुख करे, जेम के आपनुं पधारवु शा प्रयोजनवास्ते थयु छे ? पछी जे कार्य ते बतावे ते उचित होय तो करी आपे वली दुःखी, अनाथ, आंधलां, बेहेरां, रोगग्रस्त प्रमुख दीन लोकोनी दीनता दूर करवावास्ते यथाशक्ति सहाय करे जे श्रावकादि पूर्वोक्त लौकिक उचित आचरणमां कुशल होता नथी, तेओ जिनमतमां केवी रीतें कुशल होय शके ? ते कारणथी धर्मार्थिओए अवश्य उचित आचरणोमां निपुण थवु जोइए इति नवविध उचित आचरण समाप्त ॥

हवे अवसरें उचित बोलवु ते बहुज गुणकारी छे, तथा बीजु जे कांइ कुशोभाकारी होय ते त्यागे,, इत्यादि विवेकविलास अनुसारें खलीए छीए बगासुं, छींक, ओडकार तथा हसवुं, मुख ढांकी मर्यादाथी करे सभानी वचमां नाकमां आंगली घाली मेल न काढे, हाथना टाचका फोडे नहि, पर्यस्तिका करे नहि, पग पसारे नहि, निद्रा विकथा करे नहि, सभामां बुरी चेष्टा करे नहि, मात्र अवसर जोइनेज हसे, मात्र होठ फरकाववारूप हसे, मुख फाडी खडखड हसे नहि, पोतानुं अंग वगाडे नहि, घास त्रोडे नहि, भूमिउपर लखे नहि, भूमिपर चित्रामण काढे नहि, नखथी दांत घसे नहि, दांतथी नख त्रोडे नहि, अभिमानयुक्त वातो करे नहि, भाट चारणप्रमुखनी करेली प्रशंसाथी गर्व करे नहि, पोतामां गुण होय तेनो निश्चय करे, पोताने समजीने बोले, नीच मनुष्य हलकां वचन पोताउपर उच्चारे तो सामां हलकां वचन पोते उच्चारे नहि, जे वात निश्चयपूर्वक न होय ते वात प्रगट करे नहि, कोइ पुरुषें काम आरंभवा विचार कर्यो होय, अने ते काम करवामां ते समर्थ न

होय तो प्रथमथीज तेने कहे के आ काम तमाराथी थइ शकशे नहि, कोइपण मनुष्यनुं बुरुं बोले नहि, पोताना वैरीनुं पण बुरुं बोले तो अन्योक्तिपूर्वक बोले; माता, पिता, रोगी, आचार्य, परोणा, अन्यागत, बंधु, तपस्वी, वृद्ध, बाल, स्त्री, वैद्य, पुत्र, गोत्री, पामर, बेहेन, बनेवी, मित्र आ सर्वेनी साथे वचननी लडाइ न करे; सूर्यनी सन्मुख निरंतर जोवे नहि, चंद्रसूर्यना ग्रहणने जोवे नहि, उंडा कुवामां वांका वली जोवे नहि, संध्यासमये आकाश सन्मुख जोवे नहि; वली मैथुनक्रिया करनार, शिकार करनार, नग्नस्त्री, यौवनवंती स्त्री, पशुक्रीडा, कन्यानी योनि, तेउनी तरफ दृष्टि करे नहि; तेलमां, जलमां, शस्त्रमां, मूत्रमां, रुधिरमां, पोतानुं मुख जोवे नहि, ते प्रमाणे करवाथी आयु अल्प थाय छे. जेणे आश्रय कर्यो होय तेनो त्याग करे नहि, नाश पामेली वस्तुमाटे शोक करे नहि, कोइनी निद्रानो जंग करे नहि, घणांनी साथे वेर करे नहि, बहुजनसंमत होय तेवुंज वचन बोले, जे काममां रस न लागे, ते काम करे नहि, कदापि करवुं पडे तो पण घणांने मलीने करे. धर्म, पुण्य, दया, दानादि शुजकाममां बुद्धिमान् मुख्य थाय, अग्रेसर थाय, कोइनुं बुरुं करवामां अग्रेसर न थाय, सुपात्र साधुउमां कदापि मत्सर ईर्ष्या करावे नहि, पोते तेउना उपर करे नहि, पोतानी ज्ञातिवाला कष्टमां पड्या होय तेनी उपेक्षा करे नहि, पांच माणसने मेलवी आदरसहित ते कष्ट दूर करे. माननीय पुरुषनुं मानजंग करे नहि. दरिद्र, पीडित, मित्र, साधर्मी, ज्ञातिमां बुद्धिमंत, गुणमां गरिष्ट, संतानहीन, इत्यादिनुं कष्टमां पालन करे. पोताना कुलने जे काम करवुं उचित न होय ते काम करे नहि. नीतिशास्त्र तेमज बीजां शास्त्रो मुजब जे उचित आचरण होय तेज करे. अनुचित निरंतर वर्जे. वैद्यक ग्रंथमां लख्यामुजब एकप्रहरमां बेवार जोजन न करे, तथा बे प्रहर उलंघे नहि, कारण के एक पहोरमां बेवार खावाथी रोगोत्पत्ति थाय छे, अने बे पहोर पछी न खाय तो बलक्षय थाय छे.

हवे सुपात्रदानादि आपवानी युक्ति लखीए छीए. जोजन अवसरें जक्तिसहित साधुउने निमंत्रणा करीने साधुनी साथे घरमां आवे, जो साधु स्वयमेव आवता होय तो सन्मुख जइ आदर सत्कार करे, विन-

यसहित संविज्ञ नावित अनावित क्षेत्र देखे, सुनिक्ष डुर्निक्षादि काल देखे, सुलज डुर्लजादि देवायोग्य वस्तु देखे, तथा आचार्य, उपाध्याय, गीतार्थ, तपस्वी, बाल, वृद्ध, ग्लान, सह असहादि अपेक्षापूर्वक मह त्व, स्पर्द्धा, मत्सर, स्नेह, लज्जा, नय, दाक्षिण्य, परानुयायिपणु, प्र त्युपकार, इच्छा, माया, विलंब, अनादर, वुरुं बोलवुं, पश्चात्तापादि, सर्व दानना दूषणो वर्जी आत्माने संसारथी तारवा वास्ते एवी बुद्धिथी बें तालीश दूषणरहित, घरमां जे कांइ अन्न, पक्वान्न, पाणी, वस्त्रादि होय, तेनी अनुक्रमें सर्वरीतें निमन्त्रणा करे, पोताना हाथमां पात्र लइ पासे रहेल नार्या प्रमुखथी दान वहोरावे, वंदना करी पोताना घरना द्वार सुधी साथे वोलावा जाय, पठी पाठा आवी नोजन करवा वेसे, साधु नो योग कदापि प्राप्त न थाय तो वरसादनी जेम साधुनी राह देखे, वि चारे के साधु आवी जाय तो मारो जन्म सफल थइ जाय, ते कारणसर दिशावलोकन करे. जे नोजन साधुए न वहोर्युं होय ते श्रावक न खाय जे श्रावक हृष्टपुष्ट साधुने विनाकारण अशुद्ध आहार आपे तो, लेनार देनार बंनेने रोगीना दृष्टांतनी जेम हितकारी नथी जे साधुनो निर्वाह थतो न होय, डुर्निक्ष होय, साधु रोगी होय, अथवा बीजु कांइ का रण होय, तेवे प्रसंगें साधुने अशुद्ध अप्राशुक आहार आपे तो लेनार देनार बनेने हितकारी ठे रस्ताना थाकेला, रोगी, शास्त्र पढनार, लोच करेल, अने व्रतधारीने पारणाने दिन, दान आपवामां आवे तो बहुज फल थाय ठे आ सुपात्रदाननु नाम अतिथिसंविनाग कहेवाय ठे य दागम ॥ अतिहि संविनागोनाम नायगयाण ॥ इत्यादि पाठनो अर्थ कहीए ठीए अतिथिसंविनाग अर्थात् न्यायथी उपार्जन थयेल कल्प नीय अन्न, पाणी प्रमुख, देश, काल, श्रद्धा, सत्कार, क्रमयुक्त उत्कृष्ट नक्तिथी, आत्मानी अनुग्रहबुद्धिथी, संयतसाधुने दान आपवु ते सु पात्रदानथी देवतासबंधी तथा औदारिकादि संबधी अद्भुत नोग, सर्व इष्ट सुखसमृद्धि, राज्यप्रमुख मनगमता संयोगनी प्राप्ति, अने निर्विलंब, निर्विघ्न, मोक्षफल प्राप्ति ठे अनयदान अने सुपात्रदान मोक्षफल प्र दाता ठे, अनुकंपादान परंपराए मोक्षदाता ठे, अने अनुकपादान, उचि तदान तथा कीर्तिदान सासारिक सुख नोगनां आपनारा ठे

पात्र त्रण तरेहनां कथन करेलछे. १ उत्तम पात्र साधु, २ मध्यम पात्र श्रावक, ३ अविरति सम्यग्दृष्टि जघन्यपात्र, १ अनादर, २ कालविलंब, ३ विमुख, ४ असत्यबोलवुं, ५ दान दइ पश्चात्ताप, आ पांच सत् दाननां कलंक छे. १ आनंदनां आंसु आववां, २ रोमांचित थवुं, ३ बहुमान देवुं, ४ मिष्टभाषण, ५ दानदीधा पछी अनुमोदना, आ पांच सुपात्र दाननां भूषण छे. सुपात्रदाननुं परिग्रहपरिमाण करवानुं फल रत्नसार कुमारनी जेम थाय छे. आ कथा श्राद्धविधिग्रंथथी जाणवी. ते कारणथी एवा साधुनो संयोग मलवाथी सुपात्रदान दिन प्रतिदिन विवेकवान् अवश्य करे.

भोजन अवसरें साधर्मी बंधु कोइ आव्या होय तो पोतानी साथे यथाशक्ति भोजन करावे; कारण के तेउपण पात्र छे. आंधला लुला प्रमुख मागनाराउने पण यथायोग्य आपे, कोइ मागनारने निराश जवा दे नहि. धर्मनी निंदा न करावे, कठण अंतःकरण न करे. भोजनने अवसरें दयावंतें बारणाबंध न करवां जोइये, तेमांपण धनवानें तो अवश्य द्वार खुल्लां राखवां जोइये. ॥ आगमेऽप्युक्तं ॥ नेव दारं पिहावेइ, भुंजमाणो सुसावउ ॥ अणुकंपा जिणंदेहिं, सड्ढाणं न निवारिया ॥ १ ॥ दिठ्ठूण पाणिनिवहं, भीमे भवसायरंमि डुखत्तं ॥ अविसेस अणुकंपं, डुहावि सामत्थउ कुणइ ॥२॥ अर्थः— भोजनावसरें दरवाजा बंध करे नहिं. जिनेश्वर भगवानें श्रावकने अनुकंपादान करवानी मना करी नथी. जीवोना समूहने भयानक संसारमां डुःखपीडित देखीने तेउना उपर विशेषरहित डव्य तेमज भावथी अनुकंपा करे. डव्यथी यथायोग्य अन्नादि आपे, भावथी तेउने सन्मार्गमां प्रवर्त्तावे. श्री पंचमांग प्रमुखमां ज्यां श्रावकोनुं वर्णन करेल छे, त्यां आ प्रमाणे पाठ छे " अवगुंठि अडुवारा " आ विशेषण ध्यानमां राखी भिक्षुकादिने आपवावास्ते निरंतर द्वार उघाडां राखे. संवत्सरीदान आपी तीर्थंकर महाराजाउयें पण दीन प्राणीउनो उद्धार करेल छे. कदापि डुकाल पडे तो श्रावकोयें तो विशेषरीतें दीननो उद्धार करवो. पूर्वे विक्रमसंवत् १३१५ मां भद्रेसर गामनिवासी श्रीमाल ज्ञातिशाह जगडु श्रावकें ११२ एकसो बार दानशाला बंधावी दान आपेल

ठे वली संवत् १४२९ मां सोनी सिंहा श्रावकें २४००० हजार मण अन्न दीन जीवोने डुकालमां आपेल ठे

माता, पिता, जाइ, बेहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्लान, बांधेला गाय प्रमुख जानवरो, आ सर्वनी जोजन अवसरें सार संजाल लेवी जोइये मातपिताने जोजन करावि, पछ परमेष्टि स्मरण करी, प्रत्याख्यान पारी, सर्वनियम स्मरण करी, साम्यताथी जोजन करे साम्यता अर्थात् जे अन्नपाणी परस्पर विरुद्ध न होय, उलटा परिणामे तेवा न होय, पोताना स्वजावने माफक होय तेवुं जोजन साम्य कहेवाय ठे जे पुरुष जीवित पर्यंत साम्यताथी जोजन करे, ते कदी विष खाइ जाय तो, विष पण तेने अमृत थइ जाय असाम्य जोजन करनारने अमृत पण विष थइ जाय ठे, परन्तु अपवाद ए ठे के साम्यताथी पण पथ्यज खावु जोइये, अपथ्य नहीं खावामां अत्यंत एद्धिपणु न जोइये कवलादिथी ज्यारे जोजन नीचे उतरी जाय ठे, त्यारे सर्व जोजन बराबर थइ जायठे, ते कारणथी एक कणमात्रना स्वादने वास्ते अतिलोलता न करवी जोइये वली अजक्ष्य, अनतकाय, बहु सावद्यवस्तु अर्थात् बहु पापवाली वस्तु खाय नहि जे मिताहार करे ठे ते बलवान् थाय ठे, अने जे बहु खाय ठे ते अनुक्रमें बलहीन थाय ठे अधिक खावाथी अजीर्ण, वमन, विरेचनादि मरणांत कष्टपण थइ जाय ठे यथा ॥ हितमितविपक्कजोजी, वामशयी नित्यचक्रमणशील ॥ उज्जित मूत्रपुरीष, स्त्रीषु जितात्मा जयति रोगान् ॥ अर्थ –जुख लागे त्यारे हितकारी एवु थोडु अन्न जमे, डावी बाजु नीचे राखी सुवे, निरतर चालवानो अभ्यास राखे, ज्यारे बाधा थाय त्यारे तरत दिशामात्रा करे, अने स्त्री साथे जोग न करे ते पुरुष रोगो उपर जय मेलवे ठे

हवे जोजनविधि, व्यवहार शास्त्रानुसार लखिये ठीये, अति प्रजातमा, अति संध्यामा तथा रात्रियें जोजन न करवु जोइये सडेलु अने वासी अन्न न खावु जोइये चालता खावु नहि, जमणा पग उपर हाथ राखी खावु नहि, हाथ उपर राखी खावु नहि, खुल्ला आकाशमां खावुं नहि, तडकामां बेसी खावुं नहि, अधारामां बेसी खावु नहि, वृक्षनी नीचे बेसी खावु नहि, तर्जनी आंगली उंची राखी कदापि खावु नहि, मुख,

हाथ, पग तेमज वस्त्र धोयाविना खावुं नहि, नग्न थइ मेलां वस्त्र पेहेरी, थाल पकड्याविना खावुं नहि, मात्र एक धोतियुं पेहेरी खावा वेसवुं नहि, भीनुं वस्त्र पेहेरी खावा बेसवुं नहि, भीनुं वस्त्र माथे लपेटी खावुं नहि, ज्यारे अपवित्र होइयें त्यारे खावुं नहि, अतिगृद्ध, रसलंपट थइ खावुं नहि, उपानसहित, व्यग्रचित्तें, निःकेवल भूमिपर वेसी, पाटउपर वेसी खावुं नहि, विदिशि तथा दक्षिणदिशि तरफ मुख राखी खावा वेसवुं नहि, पातला आसनपर वेसी खावुं नहि, आसन उपर पग राखी भोजन करवुं नहि, चंडालना देखतां, धर्मथी पतित होय तेना देखतां, फूटेलां, तथा मलिन पात्रमां खावुं नहि; जे शाक प्रमुख वस्तु विष्टाथी उत्पन्न थयेल होय ते खावी नहि, वालहत्याप्रमुख जेणे करेल होय तथा रजस्वला होय तेवी स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहि. जे वस्तु गाय, श्वान, पंखीये सुंघी होय, जे वस्तु अजाणी होय, जे वस्तु फरीथी उष्ण करी होय, ते वस्तु खावी नहि, वचवचाट शब्द करतां खावुं नहि. मुख फाटतां बुरुं लागे एम मुख करी खावुं नहि. भोजन अवसरें वीजाउने वोलावी प्रीति उत्पन्न थाय तेम भोजन करवुं. देवगुरुनुं नाम स्मरण करी, समासन उपर वेसी पोतानी माता, वेहेन, भाभु, भाणेज वा स्त्री प्रमुखें जे भोजन तैयार करेल होय ते पवित्रपणे पीरसातां मौनपणे दक्षिण स्वर चालतां जमवुं. जे जे वस्तु खावी ते नासिकायें सुंघीने खावी, तेम करतां दृष्टिदोष नाश पामे छे. अति खारुं, अतिखाटुं, अति उष्ण, अतिशीतल, अतिमीठुं तथा अतिशाक खावुं नहि. मुखमां स्वाद लागवा मात्र खावुं. अतिउष्ण खावाथी रसनाश पामे छे, अति खाटुं खावाथी इंद्रियोनी शक्ति कम थइ जाय छे, अतिखारुं खावाथी नेत्र बगडी जायछे, अतिस्निग्ध खावाथी घ्राणशक्ति मंद थइ जाय छे, अति तीखुं तथा कडवुं खावाथी कफ दूर थइ जाय छे, कषायलुं अने मीठुं खावाथी पित्त नाश पामे छे, स्निग्ध घृतादि खावाथी वायु दूर थइ जाय छे, वाकी शेष रोग ते न खावाथी दूर थइ जाय छे.

जे पुरुष शाक वहु खाय, घीथी रोटली खाय, दुधने चोखा खाय, वहु पाणी न पीये, अजीर्ण होय त्यारे खाय नहि, ते पुरुष रोगपर जीत मेलवे छे. भोजन करती वखत प्रथम मीठुं अने स्निग्ध [illegible]

वचमां तीक्ष्ण भोजन करे, अने पाठल कडवु भोजन करे. उक्त च ॥ सु स्निग्धमधुरे पूर्वं, मश्नीयादन्वित रसे ॥ द्रव्याम्ललवणैर्मध्ये, पर्यंते क टुतिक्तकैः ॥

जो प्रथम नरम वस्तु खाय, मध्यमां कटु वस्तु खाय अंतमां फरी न रम वस्तु खाय तो बलवंत तथा नीरोगी थाय ठे भोजननी पेहेलां पा णी पीये तो अग्निमंद थइ जाय ठे, भोजननी वचमां पीये तो रसायन स मान गुणकारी थाय ठे, अने भोजननी अते विषसमान थाय ठे भोज ननी अनतर सर्व रसथी खिंपेला हाथथी एक अजली रोज पीये, पशुनी जेम पाणी पीये नहि, पाणी पीधा पठी बाकी रहेलुं फेंकी दे, अजलीथी पाणी पीये नहि, पाणी थोडुं पीवु पथ्य ठे पाणीथी भीजेला हाथ गला उपर, कपोलउपर तथा नेत्र उपर लगाडे नहि भोजन कर्या पठी अं गमर्दन, दिशागमन, घोडे उगाववानु काम, वेसी रेहेवुं तथा स्नान, ए टलां काम करे नहि, भोजन कर्या पठी केटलो एक वखत वेसी रेहेवा मा आवे तो पेट मोटु थइ जाय ठे मुख खुल्लु राखी चता सुवे तो बल वधे ठे, डाबे पडखे सुवे तो आयु वधे ठे, भोजन करी दोडे तो मरण थ वानो संभव ठे, भोजन कर्या पठी डाबे पडखे वे घडीसुधी सुवे, परंतु निद्रा लहे नहि, अथवा सुवे नहि तो सो डगलां चाले बीजे स्थलेपण कह्यु ठे के देवने, साधुने, नगरना स्वामि राजाने अने स्वजनोने ज्यारे कष्ट आवे त्यारे तथा चन्द्र, सूर्यना ग्रहण वखते विवेकवान् पुरुष, शक्ति होय तो भोजन न करे, तेवीज रीतें " अजीर्णप्रभवारोगा " तेथी अ जीर्णमां पण भोजन करे नहि

ज्वरनी आदिमां लांघण श्रेष्ठ ठे, परतु वायुज्वर, श्रमज्वर, क्रोध ज्वर, शोकज्वर, कामज्वर, घावज्वर, पटला ज्वरने वर्जिने बाकीना ज्व रमां तथा नेत्ररोगमां लांघण करे

देवगुरु वदनना अयोगमा, तथा तीर्थ अने गुरुने नमस्कार करवा ज सी वखत, विशेषधर्मनु तथा पुण्यनु काम आरजता अने अष्टमी, चतु र्दशी आदि विशेष पर्वने दिवसे भोजन न करवुं जोइये तपश्चर्या आ लोक अने परलोकमा घहुज हितकारी ठे, तथा गुणकारी ठे भोजन क र्या पठी नवकार मत्र गणी उठे चैत्यवदन करी, देवगुरुने यथायोग्यवं

दन करे. जोजन कर्या पछी गंठीसहित दिवस चरिम प्रत्याख्यान विधिथी करे; पछी गीतार्थ साधु, गीतार्थ श्रावक तथा सिद्धपुत्रादि समीप स्वाध्याय (पठन पाठन) यथायोग्य करे. योगशास्त्रमां लख्युं छे के जे गुरुमुखथी जणेल होय, ते बीजाउने जणावे, स्वाध्याय कर्या पछी संध्यासमये जिनपूजा करे, पछी प्रतिक्रमण करे, पछी स्वाध्याय करे, पछी वैयावच्च अर्थात् मुनिनी पगचंपी करे, पछी घेर आवी सर्व परिवारने मेलवी धर्मनुं स्वरूपकथन करे. उत्सर्गमार्गे तो श्रावके एक वखतज जोजन करवुं जोइये ॥ यदजाणि ॥ उस्सग्गेणं तु सह्ोय, सचित्ताहारं वज्जाउ ॥ इक्कासणगजोइअ, बंजयारितह्वेवय ॥ १ ॥ जो एक वखत जोजन करवाने समर्थ न होय, तो दिवसनो आठमो जाग अर्थात् चार घडी दिवस बाकी रहे त्यारे जोजन करी ले, बे घडी दिवस बाकी रहेतां पहेलां तो जोजन करी लेवुं जोइये. पछी यथाशक्ति चार आहार, त्रण आहार, बे आहार त्यागरूप दिवस चरिम, सूर्यउगतां सुधी करे. मुख्यवृत्तियें तो दिवस छतां प्रत्याख्यान करवुं जोइये, परंतु अपवादें रात्रियें पणकरे.

इति श्रीतपगछीयगणिश्रीमणिविजयतछिष्यमुनिश्रीबुद्धिविजयतछिष्यमुन्यात्मारामानंदविजयविरचितेजैनतत्वादर्शगुर्जरजाषांतरे श्राद्धशास्त्रानुसारेण श्रावकदिनकृत्यप्रकाशकनामा नवमपरिछेदः संपूर्णः ॥

॥ अथ दशमपरिछेदप्रारंजः ॥

आ परिछेदमां श्रावकोनां १ रात्रिकृत्य, २ पर्वकृत्य, ३ चातुर्मासिककृत्य, ४ संवत्सरीकृत्य, ५ जन्मकृत्य, आ पांच कृत्यनुं स्वरूप अनुक्रमें लखवामां आवशे; प्रथम रात्रिकृत्य लखीये छीये.

साधुनी पासे तथा पौषधशाला प्रमुखमां यत्नपूर्वक प्रमार्जना करीने सामायक लही श्रावक प्रतिक्रमण करे; पछी साधुउनी वैयावच्च (पगचंपी) करे. उत्सर्ग मार्गनी अपेक्षायें साधुने श्रावकपासे विश्रामण आदि न कराववुं जोइयें, परंतु श्रावक तेम करवानो जाव करे तो महाफल थाय छे; पछी श्राद्धविधि, श्राद्धदिनकृत्य, उपदेशमाला अने कर्मग्रंथ प्रमुख शास्त्रोनो स्वाध्याय करे, पछी सामायक पारी घेर जाय.

घेर आवी सम्यक्त्वमूल बार व्रतमां सर्व शक्तिथी यत्न करणादिरूप

चमां तीक्ष्ण भोजन करे, अने पाठल कडवु भोजन करे उक्तं च ॥ सु स्निग्धमधुरे पूर्वे, मश्नीयादन्वित रसे ॥ द्रव्याम्ललवणैर्मध्ये, पर्यंते क टुतिक्तके ॥

जो प्रथम नरम वस्तु खाय, मध्यमां कटु वस्तु खाय अंतमां फरी न रम वस्तु खाय तो बलवत तथा नीरोगी थाय छे भोजननी पेहेलां पा णी पीये तो अग्निमंद थइ जाय छे, भोजननी वचमां पीये तो रसायन स मान गुणकारी थाय छे, अने भोजननी अंते विषसमान थाय छे भोज ननी अनंतर सर्व रसथी लिंपेला हाथथी एक अजली रोज पीये, पशुनी जेम पाणी पीये नहि, पाणी पीधा पछी बाकी रहेलुं फेंकी दे, अजलीथी पाणी पीये नहि, पाणी थोडुं पीवु पथ्य छे पाणीथी भीजेला हाथ गला उपर, कपोलउपर तथा नेत्र उपर लगाडे नहि भोजन कर्या पछी अ गमर्दन, दिशागमन, बोज उठाववानु काम, बेसी रेहेवु तथा स्नान, ए टलां काम करे नहि, भोजन कर्या पछी केटलो एक वखत बेसी रेहेवा मां आवे तो पेट मोटु थइ जाय छे मुख उघुं राखी चता सुवे तो बल वधे छे, डावे पडखे सुवे तो आयु वधे छे, भोजन करी दोडे तो मरण थ वानो संभव छे, भोजन कर्या पछी डावे पडखे वे घडीसुधी सुवे, परंतु निद्रा लहे नहि, अथवा सुवे नहि तो सो डगलां चाले बीजे स्थलेपण कह्यु छे के देवने, साधुने, नगरना स्वामि राजाने अने स्वजनोने ज्यारे कष्ट आवे त्यारे तथा चद्र, सूर्यना ग्रहण वखते विवेकवान् पुरुष, शक्ति होय तो भोजन न करे, तेवीज रीतें " अजीर्णप्रभवारोगाः " तेथी अ जीर्णमां पण भोजन करे नहि

ज्वरनी आदिमां लांघण श्रेष्ठ छे, परंतु वायुज्वर, श्रमज्वर, क्रोध ज्वर, शोकज्वर, कामज्वर, घावज्वर, एटला ज्वरने वर्जिने बाकीना ज्व रमां तथा नेत्ररोगमां लांघण करे

देवगुरु वंदनना अयोगमां, तथा तीर्थ अने गुरुने नमस्कार करवा ज ती वखत, विशेषधर्मनु तथा पुण्यनुं काम आरंभतां अने अष्टमी, चतु र्दशी आदि विशेष पर्वने दिवसे भोजन न करवु जोइये तपश्चर्या आ लोक अने परलोकमा बहुज हितकारी छे, तथा गुणकारी छे भोजन क र्या पछी नवकार मंत्र गणी उठे चैत्यवंदन करी, देवगुरुने यथायोग्यवं

करी,उंढवानां वस्त्र समारी शरीर साफ करी,डाबी बाजु नीचे राखी शयन करे.

दिवसे सुवे नहि, परंतु क्रोध, शोक तथा मद्य शमाववावास्ते, तथा स्त्रीकर्म अने बीजी मेहेनतनो थाक लाग्यो होय तो ते मटाडवावास्ते, तेमज रस्तानो परिश्रम दूर करवावास्ते सुवे; वली अतिसार, श्वास, हेडकी प्रमुख रोग दूर करवावास्ते सुवे; तथा बालक, वृद्ध अने बलक्षीण होय तेपण सुवे. वली अजीर्णना व्याधिवाला, वायाना व्याधिवाला, खांसीवाला. अने जेउने रात्रियें निद्रा न आवती होय वा अल्प आवती होय तेउंपण सुवे. तृषा, शूल अने गड गुमडानी वेदनाथी विह्वल होय तेपण दिवसे सुवे. जेठ अने असाड मासमां दिवसेंपण सुवुं ते सारुं छे. बीजा महिनामां जो सुवे तो कफ अने पित्तकर्ता थाय छे. बहु वखत निद्रा लेवी तेपण सारुं नथी. रात्रें ज्यारे सुवे त्यारे दिशावकाशिक व्रत उच्चरी सुवे, चार शरण ग्रहे, जीवराशि साथे खमावे, अढार पापस्थानक वोसिरावे, डुष्कृतनी निंदा गर्हणा करे, सुकृतनुं अनुमोदन करे, अने नवकार सहित आ गाथा त्रण वार उच्चरे. ॥ जइ मेहुज्ज पमाउं, इमस्स देहस्स इमाइ रयणीये ॥ आहारमुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसरियं ॥ १ ॥ अर्थ सुगम छे. सागारी अनशन करे. सुती वखते पांच नवकार स्मरण करे. स्त्रीनी शय्याथी अलग शय्यामां सुवे, शय्यामां साथे सुवाथी विकार अधिक जागे छे तथा जे वासना सुती वखते होय, ते जागतां सुधी दूर थती नथी. वली अधिक विकारथी दिवानापणुं थइ जाय छे; तथा मरण अवसरें गफलत थइ जाय तो पण सेचतन अवस्थामां जे वासना विद्यमान हती तेज वासना रहे छे ॥ इत्याप्तोपदेशः ॥ ते कारणथी सर्वथा उपशांतमोह थइने, तथा धर्म वैराग्यादि जावनाथी वासित थइने निद्रा करे तो मातां स्वप्न न आवे. जे रीतियें सुंदर धर्ममयस्वप्न आवे ते रीतियें सुवे, जेथी कदाच निद्रामां आयुनी समाप्ति थइ जाय तो पण ते उत्तम गतिमां जाय.

सुता पछी रात्रिमां जो जागी जवाय, अने तेवे प्रसंगे अनादि कालना अज्यासना रसथी कदाचित् काम पीडा करे, तो स्त्रीना शरीरना अशुचिपणानो विचार करे; अने श्रीजंबुस्वामि तथा श्रीस्थूलजद्रादि महर्षियोना तथा सुदर्शनप्रमुख महाश्रावकोनां डुष्कर शीयल पालवानी

तथा अर्हत्चैत्य अने साधर्मी वर्जित वासस्थानमा निरंतर अनिवास रूप, तथा पूजा प्रत्याख्यानादि अभिग्रहरूप, साते क्षेत्रमां यथाशक्ति व्यय करवारूप, सर्व परिवारने यथायोग्य धर्मोपदेश कथन करे श्रावक जो पोताना परिवारने धर्मनुं स्वरूप यथायोग्य न कहे तो ते परिवार ध र्मथी विमुख रहे, अने तेउने धर्मनी प्राप्ति न थाय, तेथी इह लोक प रलोकनां अनेक तरेहनां ते पापकर्म करे, ते सर्व पाप मुख्य श्रावकने लागे लौकिक व्यवहारशास्त्रमां पण कह्यु छे के चोरने चोरी करतां जा णता छतां तेने न निवारे अने खानपानादि आपे तो ते सहायक पण मददगार चोर गणाय छे धर्ममांपण तेमज जाणवुं ते कारणथी श्रावके द्रव्य तथा नावथी पोताना कुटुंबने निरतर लाज आपवो जोइये तेमां द्रव्यथी पुत्र, स्त्री प्रमुखने यथायोग्य अन्न वस्त्रादि आपवां जोइये, अने नावथी तेउने धर्मनो उपदेश करवो जोइये, तेमज बीजा जे छु खी कु टुंबी होय तेउनां दुःख निवारवानी चिंता करवी जोइये पाप लागवानी बाबतमां अन्यशास्त्रमा पण कह्यु छे यत ॥ राज्ञि राष्ट्रकृत पाप, राज्ञ पापं पुरोहिते ॥ जर्त्तरि स्त्रीकृत पाप, शिष्यपापं गुरावपि ॥ १ ॥ धर्मदे शना आप्या पछी, रात्रिनो प्रथम पहोर व्यतीत थया बाद, शरीरने सु खजनक शय्यामां विधिपूर्वक अल्प निद्रा करे. बाहुल्यतायें गृहस्थ, मै थुन अभिलाषा वर्जे जावजीवसुधी ब्रह्मचर्य व्रत पालवा समर्थ न होय तो, पर्वतिथियें तो अवश्य ब्रह्मचर्य व्रत पालवु जोइयें

जे शय्यामां मांकड प्रमुख पड्या होय, जे पलंग टुंको होय, जागेलो होय, मेली शय्या होय, जे पलग घसेला लाकडानो बनावेलो होय, तेनो त्याग करे पलगमां चार जातसुधीनु काष्ट वपराय तो शुज, अने वधारे नु वपराय तो अशुज, एम नीतिशास्त्रमां कह्यु छे पूजनीय वस्तु उपर सु वे नहि, पाणीथी जीजायेला पग छता सुवे नहि, उत्तरदिशि तथा पश्चिम दिशि तरफ मस्तक राखी सुवे नहि, वांसनी जेम सुवे नहि, पगराखवा नी तरफ सुवे नहि, हाथीना दांतनी जेम सुवे नहि, देवमदिरना मूल गजारामां, सर्पनी बखी उपर, वृक्षनी नीचे, तथा स्मशानमा सुवे नहि फोइनी साथे लडाइ थइ होय तो शांति करी सुवे सुवानी वखत पाणी पासे राखे द्वार बंध करी, इष्टदेवने नमस्कार करी सर्व आहारनो त्याग

रकमां परस्पर शस्त्रोथी उदीरेली वेदना छे, अने त्रण नरकमां परमाधामी कृत वेदना छे. आंख बंध करी उघाडीयें तेटलो काल पण नरकवासी जीवोने सुख नथी. मात्र दुःखज पूर्व जन्मना करेला पापथी उदय पामेल छे. रात अने दिवस एक सरखां दुःखमां जाय छे. नरकगतिमां जीव जेटलुं दुःख जोगवे छे, तेनाथी अनंतगणुं दुःख निगोदमां ते जोगवे छे. तिर्यंच गतिमां अंकुश, परोणा, लाकडीना प्रहार, शृंगमोडन, गलमोडन, तोडन, छेदन, जेदन, दहन, अंकन, परवशत्वादि अनेक दुःख, जीव पामे छे. मनुष्यगतिमां गर्जमां रेहेवानुं दुःख, जन्म जरा मरणनुं दुःख, रोग व्याधि दरिद्रता प्रमुखनुं नाना प्रकारनुं दुःख, माता, पिता, स्त्री, पुत्रना मरणादिथी थतुं दुःख इत्यादि अनेक तरेहनुं दुःख जीव पामे छे. देवगतिमां च्यवननुं दुःख, दासपणानुं दुःख, पराजव, ईर्ष्यादि अनेक दुःख छे, इत्यादि जवस्थिति विचारे.

धर्ममनोरथजावना आ प्रमाणे करे. श्रावकना घरमां ज्ञान, दर्शन, व्रतसहित दास थइ जाउं तो पण सारुं छे, परंतु मिथ्यादृष्टिमां चक्रवर्ती राजा पण थवानी वांछा न करे. वली क्यारे हुं संवेगी वैराग्यवंत गीतार्थ गुरुना चरणारविंदमां स्वजनादि संगरहित प्रव्रज्या ग्रहण करीश ? तथा क्यारे हुं तिर्यंचना तथा पिशाचना जयथी निःप्रकंप थइ स्मशानादि जूमिमां विधिपूर्वक कायोत्सर्ग करीश ? वली क्यारे हुं तपथी कृश शरीर वालो थइ उत्तम पुरुषोनो मार्ग वहन करीश ? इत्यादि जावनाथी कामकटकने जीते ॥ इति श्राद्धविधिग्रंथानुसाररात्रिकृत्यं ॥

हवे श्रावकनां पर्वकृत्य लखीए छीए. अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वना दिवसोए धर्मनी पुष्टि जे करे तेनुं नाम पौषध छे. जला व्रतवाला श्रावकें पर्वने दिवसें अवश्य पौषध करवो जोइए. जो पर्वने दिवसे शरीरमां शाता न होय, अने पौषध न करी शके तो बे वार प्रतिक्रमण करे; तेमज बहुवार सामायिक तथा दिशावकाशिक व्रत अंगीकार करे. पर्वदिवसोमां ब्रह्मचर्य व्रत पाले. आरंज वर्जे. विशेष तप करे. चैत्यपरिपाटी करे. सर्व साधुउने नमस्कार करे. सुपात्रदान, देवपूजा, गुरुजक्ति, इत्यादि सर्व, बीजा दिवसो करतां विशेष रीतें करे. धर्म करणी निरंतर करवी ते सारुं छे, जो निरंतर न करी शकाय तो पर्वने दिवसें तो अव-

हडतानो विचार करे, वली स्त्रीना शरीरनी अपवित्रता जुगुप्सनीया दि सर्व श्रीहेमचंद्रसूरिकृतयोगशास्त्रमां तथा श्रीमुनिसुंदरसूरिकृत अध्यात्मकल्पद्रुममां जेम बतावेल छे, तेम विचारे, तेनु लेशमात्र स्व रूप लखीये छीये

चामडी, हाड, मज्जा, आंतरडां, चरबी, नस, रुधिर, मांस, विष्टा, मूत्र, खेल, खखारादि अशुचि पुद्गलनुं पिंड स्त्रीनुं शरीरछे, आ पिंडमां तु शुं रमणीय वस्तु देखे छे? जे लोक विष्टाने दूरथी देखी थूथूकार करे छे, तेज मूढलोक विष्टा अने मूत्रथी भरेला एवा स्त्रीना शरीरनी अभिलाषा करे छे! बहु छिद्रोवाली विष्टानी कोथली जेना छिद्रोमांथी कृमीजाल निकले छे, तथा कृमीजालथी भरेली, एवी स्त्री छे चपलता, माया, असत्यता, ठगाइ इत्यादिथी संस्कारित थयेल छे, तेथी जे पुरुष मोहथी तेनो संग करे, भोगविलास करे, तेने नरकगति छे विष्टानी कोथलीरूप स्त्रीनां अगीआरे द्वारथी अशुचि वहे छे जे द्वारने सुंघो, ते द्वारमांथी सडेला कुतराना कलेवर समान दुर्गंध आवे छे हवे विचारमात्र एज आवे छे के कामी पुरुषो आवा स्त्रीना शरीरमां रागांध केम थाय छे? इत्यादि स्त्रीना शरीरनी अशुचिता विचारे धन्य छे मुनि जंबुकुमारने!! जेणे नवपरिणीत आठ पद्मिनी स्त्री तथा नवाणुंक्रोड सोनैया एक क्षणमात्रमां तजी दीधां! तेनु माहात्म्य विचारे, अने श्रीथूलिभद्र तथा सुदर्शन शेठना शियलनुं माहात्म्य विचारे वली कषाय जीतवाना उपाय चिंतवे, तथा भावस्थितिनो विचार करे, अने धर्ममनोरथ भावनानी चिंतवना करे.

कषाय जीतवानो उपाय आ प्रमाणे क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने नम्रताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोभने संतोषथी जीते, रागने वैराग्यथी जीते, द्वेषने मित्रताथी जीते, मोहने विवेकथी जीते, कामने, स्त्रीना शरीरनी अशुचित्व भावनाथी जीते, मत्सरने मननी मोटाइथी जीते, विषयने संयमथी जीते, योगने गुप्तिथी जीते, आलसने उद्यमथी जीते, अविरतिपणाने विरतिपणाथी जीते, आ प्रमाणे सर्व सुखेथी जीती शकाय छे पूर्वे महान् पुरुषोये आ रीतियेज कषायने जीतेल छे

भवस्थिति महादुःखरूप छे चारे गतिमां जीव नाना प्रकारे दुःख पामी रह्या छे नरकगतिना साते नरकोमां अत्यंत क्षेत्र वेदना छे चार न

रकमां परस्पर शस्त्रोथी उदीरेली वेदना छे, अने त्रण नरकमां परमाधामी कृत वेदना छे. आंख बंध करी उघाडीयें तेटलो काल पण नरकवासी जीवोने सुख नथी. मात्र डुःखज पूर्व जन्मना करेला पापथी उदय पामेल छे. रात अने दिवस एक सरखां डुःखमां जाय छे. नरकगतिमां जीव जेटलुं डुःख नोगवे छे, तेनाथी अनंतगणुं डुःख निगोदमां ते नोगवे छे. तिर्यंच गतिमां अंकुश, परोणा, लाकडीना प्रहार, श्रृंगमोडन, गलमोडन, तोडन, छेदन, नेदन, दहन, अंकन, परवशत्वादि अनेक डुःख, जीव पामे छे. मनुष्यगतिमां गर्नमां रेहेवानुं डुःख, जन्म जरा मरणनुं डुःख, रोग व्याधि दरिद्रता प्रमुखनुं नाना प्रकारनुं डुःख, माता, पिता, स्त्री, पुत्रना मरणादिथी थतुं डुःख इत्यादि अनेक तरेहनुं डुःख जीव पामे छे. देवगतिमां च्यवननुं डुःख, दासपणानुं डुःख, परानव, ईर्ष्यादि अनेक डुःख छे, इत्यादि नवस्थिति विचारे.

धर्ममनोरथनावना आ प्रमाणे करे. श्रावकना घरमां ज्ञान, दर्शन, व्रतसहित दास थइ जाउं तो पण सारुं छे, परंतु मिथ्यादृष्टिमां चक्रवर्ती राजा पण थवानी वांछा न करे. वली क्यारे हुं संवेगी वैराग्यवंत गीतार्थ गुरुना चरणारविंदमां स्वजनादि संगरहित प्रव्रज्या ग्रहण करीश ? तथा क्यारे हुं तिर्यंचना तथा पिशाचना नयथी निःप्रकंप थइ स्मशानादि नूमिमां विधिपूर्वक कायोत्सर्ग करीश ? वली क्यारे हुं तपथी कृश शरीर वालो थइ उत्तम पुरुषोनो मार्ग वहन करीश ? इत्यादि नावनाथी कामकटकने जीते ॥ इति श्राद्धविधिग्रंथानुसाररात्रिकृत्यं ॥

हवे श्रावकनां पर्वकृत्य लखीए छीए. अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वना दिवसोए धर्मनी पुष्टि जे करे तेनुं नाम पौषध छे. नला व्रतवाला श्रावकें पर्वने दिवसें अवश्य पौषध करवो जोइए. जो पर्वने दिवसे शरीरमां शाता न होय, अने पौषध न करी शके तो बे वार प्रतिक्रमण करे; तेमज बहुवार सामायिक तथा दिशावकाशिक व्रत अंगीकार करे. पर्वदिवसोमां ब्रह्मचर्य व्रत पाले. आरंन वर्जे. विशेष तप करे. चैत्यपरिपाटी करे. सर्व साधुउने नमस्कार करे. सुपात्रदान, देवपूजा, गुरुनक्ति, इत्यादि सर्व, बीजा दिवसो करतां विशेष रीतें करे. धर्म करणी निरंतर करवी ते सारुं छे, जो निरंतर न करी शकाय तो पर्वने दिवसें तो अव-

श्य करवी जोइये पर्वना दिवसो आ ठे–अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णमासी, अ माधास्या, आ एक मासमां ठ पर्व, अने पखवाडीआमां त्रण पर्व, तथा बीज, पाचम, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी आ पांच तिथि, तीर्थंकरोये पर्वयेली ठे बीजने दिवसे बे प्रकारना धर्मनु आराधन करे, पचमीने दि वसे ज्ञानतु आराधन करे, अष्टमीने दिवसे आठ कर्मनो नाश करवा त पश्चर्या प्रमुख करे, एकादशीने दिवसे अगीआर अगनुं आराधन करे, चतुर्दशीने दिवसे चौद पूर्वनु आराधन करे, आ पांच तथा पूर्वोक्त पूर्ण मासी अने अमावास्या, एम ठ पर्व थयां वर्षमां ठ अठाइ पर्व ठे चातु र्मासिक पर्वोमां सर्वथा आरंभनो त्याग जो न करी शके, तो स्व ल्पतर आरंभ करे पर्वने दिवसे सर्व सचित्त आहार वर्जे, श्रावकें निरं तर सचित्त आहार वर्जवो जोइयें, जो तेम न करी शके तो पर्वने दिव सें तो अवश्य वर्जवो जोइयें पर्वना दिवसोमां स्नान, शिरमुंडन, केश गुंथन, वस्त्रधोवन, वस्त्र रंगवां, गाडां हलादि चलाववां, धान्यना ठोड बां धवा, कोश अरहट्ट (रेंट) चलाववा, दलवुं, भरडवु, पत्र, पुष्प, फल, तोड वां, सचित्त खडी, लीली वनस्पति विगेरे मर्दन करवी, लींपवु, माटी खो दवी, घर बंधाववां इत्यादि सर्व आरंभनां काम यथाशक्ति त्यागवां जोइयें तथा सर्व सचित्त आहारनो जो त्याग न करी शके, तो केटलीएक वस्तु ओं नाम लइ खावानी छुट राखे, विशेषनो त्याग करे. ठये अठाइमा जि नराजनी पूजा करवी, तप करवु, ब्रह्मचर्य पालवुं ठये अठाइमां चैत्र त था आसो महिनानी एम बे अठाइ शाश्वती ठे आ दिवसोमा वैमानि क देवता ठंपण नंदीश्वरादिमां यात्रा उत्सव करे ठे बाकीनी त्रण अठाइ त्रण चोमासानी तथा चोथी पर्यूषण पर्वनी, सर्व मली ठ अठाइ ठे

प्रभात समये प्रत्याख्याननी वेलायें जे तिथि होय, ते जैनमतमां मा नवी प्रमाण ठे सूर्योदयनां अनुसारें लोकमां पण दिवसनो व्यवहार हो वाथी तेम मानवु प्रमाण ठे तथा च निशीथभाष्ये ॥ चउमासीअ वरीसे, पखिय पचठमीसु नायवा ॥ ताऊ तिहिंओ जासि, उदेइ सूरो न अन्नाओ ॥ १ ॥ पूआ पच्चखाणं, पडिक्कमणं तहय नियमगहण च ॥ जीये उदेइ सू रो, तीये तिहिये उकायव ॥ २ ॥ उदयम्मि जातिहिसा, पमाणमिअरी कीरमाणीये ॥ आणा भंगण वत्था, मिछत्त विराहणं पावे ॥ ३ ॥ अर्थ–

चौमासी, संवत्सरी, पद्मी, पंचमी, अष्टमी, आ तिथिउं सूर्योदयमां होय ते प्रमाण छे. अन्यथा नहि. पूजा, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, नियमग्रहण, जे तिथि सूर्योदयमां होय, ते दिवसेंज करवां जोइये, जे तिथि सूर्योदयमां होय तेज प्रमाण छे, उदयतिथि विना जे कोइ वीजी तिथि करे, माने, ते आज्ञाविराधक, अनवस्थाकारक, मिथ्यादृष्टि छे. पाराशरस्मृति आदिमां पण लख्युं छे ॥ आदित्योदयवेलायां, या स्तोकापि तिथिर्भवेत् ॥ सा संपूर्णेति मंतव्या, प्रभुता नोदयं विना ॥ १ ॥ उमास्वातिवाचकप्रघोषश्चैवं श्रूयते ॥ क्षये पूर्वा तिथिः कार्या, वृद्धौ कार्यातथोत्तरा ॥ श्रीवीरज्ञाननिर्वाणं, कार्य लोकानुगैरिह ॥ १ ॥

वली श्री अर्हंतोना जन्मादि पंचकल्याणकना दिवसो पण पर्वमां छे. जे वे, त्रण कल्याणकनो दिवस होय ते विशेषें करी पर्वनो मानवो जोइयें. शास्त्रोमां श्रवण करीयें छीयें के श्रीकृष्ण वासुदेव सर्व पर्वनुं आराधन करवामां पोताने असमर्थ जाणीने, श्रीनेमिनाथ भगवानने पूछता हवा. हे भगवन्! उत्कृष्ट पर्व कयुं छे? भगवंतें कह्युं के हे श्रीकृष्ण! मागशिर शुद एकादशीनो दिवस सर्वोत्तम पर्व छे; कारण के ते दिवसें श्रीजिनेंद्रोनां पांच कल्याणक थयेलां छे, सर्व क्षेत्रोनां मली दोढसो कल्याणक थयेलां छे. पछी श्रीकृष्ण वासुदेवें मौन पौषधोपवास करी ते दिवस मान्यो, त्यारथी "यथा राजा तथा प्रजा" ए न्यायें सर्व लोक एकादशी मानवा लाग्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे.

वीज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी आ तिथियोमां प्रायः जीवो परभवना आयुष्यनो वंध करे छे, ते कारणथी आ तिथियोमां धर्मकरणी विशेष करवी जोइयें. वली पर्वना महिमाना प्रभावथी अधर्मी, तथा निर्दय पण धर्मी अने दयावान् थइ जाय छे, कृपण पण धन खरचे छे, कुशील पण सुशील थइ जाय छे, ते जयवंत रहो, जेणें संवत्सरी, चातुर्मासी आदि उत्तम पर्वोनुं कथन करेल छे. जे अन्योयें चलावेलां पर्व छे तेमां आग लगाववी, जीवमारवा, रोवां, कुटवां, धूल उडाडवी, वृक्षो तोडवां इत्यादि नाना प्रकारनां पाप थाय छे, अने जे पर्व अरिहंत परमेश्वरें कथन करेल छे, तेमां तो निःकेवल धर्म कृत्योज करवां कहेल छे. ते का-

रणथी पर्व दिवसें पौषधादि करे पौषधना भेद तथा विधि, सर्व श्राद्धवि धि आदि ग्रथोथी जाणी लेवी

हवे चौमासिक कृत्य लखीए ठीए चोमासामां विशेष नियम ग्रहण तथा परिग्रहनु परिणाम करवु जोइए आ ऋतुमां बहु जीवोनी उत्पत्ति थाय ठे, ते कारणथी गाडां, हल प्रमुख न चलाववां जोइए आंबानी केरी मां कीडा पडी जाय ठे, तेथी ते न खावी जोइए देशविचार आंबानी बा बतमां विविध ठे नियम बे प्रकारना ठे १ सुनिर्वाह, २ दुर्निर्वाह धनवं तोने व्यापारनो त्याग, अने अविरतियोने सचित्तनो त्याग, रसनो त्या ग, शाकपत्रनो त्याग तथा सामायिकादिनो अगीकार दुर्निर्वाह ठे अने देवपूजा, दान, महोत्सवादि सुनिर्वाह ठे, निर्धनोने तेठनाथी वि परीत रीतें ठे, अने चित्तनी एकाग्रता करवी, ते तो सर्वने दुष्कर ठे, तेथी दुर्निर्वाह नियमो न थइ शकाय तो, सुनिर्वाह नियमो अगीकार करे चोमासामां परगाम न जाय, जो निर्वाह न थइ शके तेम होय तो, जे गाम अवश्य जवु पडे ते बाद करीने बीजा गामोनी मुसाफरी न करे. सर्व सचित्तनो त्याग करे निर्वाह न थइ शके तेम होय तो सचि त्तनु परिमाण करे. निरतर बे त्रणवार जिनराजनी अष्टप्रकारी पूजा क रे देववदन करे, जिनमंदिरोमां सर्व जिनबिंबोनी पूजा वंदना करे, स्ना त्रपूजा, महामहोत्सव, प्रभावना प्रमुख करे. गुरुने बृहत् वदना अने बी जा सर्व साधुठने प्रत्येक वदना करे, चतुर्विंशति स्तवनो कायोत्सर्ग क रे, अपूर्व ज्ञाननो पाठ करे, गुरुनी वैय्यावच्च करे, ब्रह्मचर्य पाले, अचित्त पाणी पीये, सचित्तनो त्याग करे. वासी वस्तु, विदल, रोटली, पुरी प्र मुख, पापड, वडी, शाकनी सुकवणी, पत्रनां शाक, खारेक, खजूर, द्रा क्षा, खाड, शुठ, प्रमुख, आ सर्वे नीलफूल लागी जवाथी अने कथवा तथा लट अने कीडा पडी जवाथी खावा योग्य रहेतां नथी, ते कारण थी तेमनो त्याग करे कदाचित् औषधादि विशेष कार्यमां लेवुं पडे तो सम्यक् रीतिए शोधीने वापरे वली पलंग, स्नान, पगरखां, दातण इ त्यादिनो त्याग करे. आभरण धोवां, वस्त्र रंगवां प्रमुखनो निषेध करे घर, हाट, भींत, खाट, पाट, ठींका, घी तेलनां वासणो, इधन प्रमुख मां नीलफूल लागी जाय ठे, तेथी तेनी रक्षा वास्ते प्रथमथीज चुना

प्रमुख लगावे. मेल दूर करे. धूपमां न नाखे, शीतल स्थानमां राखे. दिवसें बे त्रण वखत पाणी गले. तेल, गोल, छाश प्रमुखनां वासणोनां मुखो यत्नाथी ढांकी राखे. उंसामणनुं पाणी तथा स्नाननुं पाणी ज्यां जीवाकुल जूमिका न होय, त्यां थोडुं थोडुं छुटुं छुटुं नाखी दे. चूला अने दीवा उघाडा न राखे. खांडवुं, दलवुं, जरडवुं, वासणो धोवां, वस्त्र धोवां, इत्यादि कामो यत्नापूर्वक करे. जिनमंदिर अने धर्मशाला समरावी राखे, यथाशक्ति उपधान, तप, प्रतिमा आदि वहन करे. इंद्रिय, कषायने जीते. योगशुद्धि तप, वीश स्थानक तप, अमृत अष्टमी तप; एकादशांग तप, चौद पूर्व तप, नमस्कार तप, चोवीश तीर्थंकरनां कल्याणिक तप, अक्षयनिधि तप, दमयंती तप, जद्रमहाजद्रादि तप, संसारतारण अठाइ तप, पक्षमासादि विशेष अनेक प्रकारथी तप करे. रात्रिए चतुर्विध आहार, त्रिविध आहार त्याग करे. पर्व दिवसें विकृति त्यागे, पर्व दिवसें पौषध उपवासादि करे. निरंतर पारणाने दिवसें अतिथि संविजाग करे. चातुर्मासिक अजिग्रह पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे बतावेला छे– ज्ञानाचारमां, दर्शनाचारमां, चारित्राचारमां, तपआचारमां तथा वीर्याचारमां इत्यादि अनेक प्रकारना अजिग्रह करे, ते रीति आ प्रमाणे. ज्ञानाचारमां शक्ति अनुसारें सूत्र वांचे, श्रवण करे, चिंतवे, शुक्ल पंचमीना रोज ज्ञाननी पूजा करे. दर्शनाचारमां देरासरमां काजो काढे, प्रमार्जन करे, लींपे, गुंहली करे, मंडल पूरे, चैत्य जिन प्रतिमानी पूजा करे, देववंदन करे, जिनबिंबोने निर्मल करे; चारित्राचारमां जीवनी यत्ना करे. वनस्पतिमां कीडा पड्या होय तो खार न लगावे, इंधनमां, जलमां, धान्यमां, अग्निमां जीव पड्या होय तेनी रक्षा करे. कोइना उपर कलंक मूके नहि, कोइने कठण वचन बोले नहि, तोछडाइथी कोइने बोलावे नहि, देव गुरुना सोगंद खाय नहि, कोइनी चाडी खाय नहि, कोइनी निंदा करे नहि, माता पिताने दुःख लागे तेवां प्रछन्न काम करे नहि. निधान तथा पडेलुं धन देखी, जेम शरीर अने धर्म न बगडे तेम प्रवर्ते. दिवसें ब्रह्मचर्य पाले. रात्रिए स्वदारासंतोष मात्र करे. धनधान्यादि नवप्रकारना परिग्रहनुं इछापरिमाण व्रत करे. दिशावकाशिक व्रत करे. स्नान, विलेपन, आजरण,

पुष्प, तबोल, अगर, बरास, केशर, कस्तूरि विगेरे भोगववानी वस्तुर्दनुं परिमाण करे मजीठ, लाख, कसुबो, गली विगेरेथी रंगेलां वस्त्रोनु प रिमाण करे जांबु, नारंगी, संतरां, सफरजन, द्राक्ष, दाडिम, बीजोरां, नालियर प्रमुख वस्तुर्द तथा लीलां शाक पत्रादि खावा योग्य होय तेनु परिमाण करे, अनंतकायादि पदार्थनो त्याग करे हीरा, माणेक, मोती, सोनु, रुपुं इत्यादि वस्तुर्दनुं, परिमाण करे. विगय तथा विगयगतनु प रिमाण करे. वस्त्र धोवां, नींत लींपवी, गार करवी, दलवा, खांडवानो नियम करे पाणीमां घूबका मारे नहि रांधवानुं परिमाण करे. व्या पारनु परिमाण करे व्यापार संबधें वा हरेक कार्यपरत्वें जूठी साक्षी न पूरे, चोरीनो त्याग करे परस्त्री साथे जावण तथा तेनुं देखवु पण वर्जे, अनर्दंडथीर्थ न वंडावानो उपयोग राखे, सामायिक, पौषध करे, अ तिथिसंविजाग करे, आ सर्वनु निरंतर नियम करे जिनमंदिरमां नि रंतर सारसंजाल राखे, पर्वना रोज तप करे, उजमणु यथाशक्ति करे. धर्मना रक्षणवास्ते पाणीनु गलणु तथा मुहपत्ति प्रमुख आपे, औषध आपे, यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करे. गुरुनो विनय करे मासेंमासें अ मुक सामायिक करे, वर्षमां अमुक पौषध करे. इतिश्राद्धश्राविकाचा तुर्मासिकनियमस्वरूप ॥

हवे श्रावकोनां वर्षकृत्य बार द्वारथी लखीए ठिए.

१ प्रथम संघपूजा करे स्वद्रव्य अनुसार अत्यंत आदरसत्कारथी साधु साध्वी योग्य, निर्दोप वस्त्र, कांबल, ठंघा, सूत्र, उन, पात्र, तुंबी, दंड, दंडिका, सोइ, कागल, दोतीआं, लेखण, पुस्तकादि श्रीगुरुनी सेवा मा राखे, बीजां पण संयमनां उपकारी उपकरण होय ते पण आपे, जेम के प्रातिहारक, पीठ, फलक, पाटप्रमुख सर्व साधुर्दने आपे, तथा श्राव क, श्राविकारूप संघनी भक्ति यथाशक्ति पेहेरामणी प्रमुख करी स त्कार करे. देवगुरुना गुणोनु गायन करनारा गधर्वादि याचकोने पण यथोचित दान आपे संघनी पूजाना त्रण प्रकार ठे १ उत्कृष्ट, २ मध्य म, ३ जघन्य सर्वदर्शनपूर्वक सर्वसत्कारथी संघनी पूजा करवी ते उ त्कृष्ट पूजा सूतरमात्रथी पूजा करवी ते जघन्यपूजा शेष सर्वमध्यम पूजा ठे अधिक खर्च करवानी शक्ति न होय तो, गुरुने मात्र मुखवस्त्रिका

आपी पूजा करे; बे चार श्रावक, श्राविकाउंने सोपारी प्रमुख वर्षे प्रत्ये आपे, ए प्रमाणे बहुमानथी संघपूजा करे तो निर्धनने पण महाफल छे. यतः ॥ संपत्तौ नियमाशक्तौ, सहनं यौवने व्रतं ॥ दारिद्र्ये दानमप्यल्पं, महालाभाय जायते ॥ १ ॥

२ साधर्मी वात्सल्य करे. सर्व साधर्मीउं वा केटलाएकोनी यथाशक्ति यथायोग्य भक्ति करे. पुत्रना जन्मोत्सवमां, विवाहमां तथा बीजां अनेक कार्योमां साधर्मिउंने निमंत्रणा करीने विशिष्ट भोजन, तांबूल, वस्त्राभरणादि आपे. कोइ साधर्मिने कांइ कष्ट आवी पडे तो पोतानुं धन खरची कष्ट दूर करे. जो कोइ साधर्मी निर्धन थइ गयो होय तो धननो सहाय आपे. परदेशमां खरची त्रुट थयो होय तो खरची आपी पोताने देश पहोचाडे. धर्ममां अस्थिर थनारने स्थिर करे. सिदाताने सहाय करे. साधर्मी प्रमादि थइ गयो होय तो प्रेरणा करी उद्योगी करे. साधर्मीउंने विद्याभ्यास करावे. साधर्मिउंने वांचना, पृछना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा तथा धर्मकथानो सहाय करे. धर्मकरणीनी सहायतावास्ते पौषधशाला प्रमुख बंधावे, श्रावक, श्राविका निराश्रितोना उद्धार वास्ते भंडोल करे. श्रावकोनी जेम श्राविकाउंनुं पण दरेक कार्यमां वात्सल्य करे. श्राविकापण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, शील, संतोषवाली होयछे. सधवानी जेम विधवाउं पण जे धर्ममां अनुरक्त होय तेमनुं वात्सल्य करे. विधवाउंने अनेकरीतें धर्मकार्योमां योजे. तेउंनुं माता तरेह तथा बेन, दीकरी तरेह हित चिंतवे. राजाउं जे श्रावक होय, तेउंने तो अतिथिसंविभागव्रत, साधर्मिउंनुं वात्सल्य करवाथी थइ शके छे. मुनिउंने राजपिंड कल्पतुं नथी, तेथी श्रीभरतचक्री तथा दंडवीर्य राजा प्रमुखें ते प्रमाणेज करेल छे. श्रीसंभवनाथ भगवंतना जीवें त्रीजा भवमां धातकीखंडना ऐरवत क्षेत्रनी क्षेमपुरी नगरीमां विमलवाहन राजाने भवें महादुकालमां सर्वसाधर्मिउंने भोजन प्रमुखनी सहायता आपवाथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करेल छे; तेमज देवगिरि मांडवगढमां शाह जगत्सिंहें तथा थिरापद्र नगरमां श्रीमाल आभूयें त्रणसो साठ साधर्मिउंने धन आपी पोतानी तुल्य करेल छे; तथा शाह सारंगादि अनेक पुरुषोयें साधर्मिउंनुं अनेक तरेहथी वात्सल्य करेल छे.

३ यात्राविधि लखीये छीये. दरेक वर्षे जघन्यथी एक यात्रा तो अव-

रय करवी जोइये यात्राना त्रण प्रकार छे १ अठाइयात्रा, २ रथयात्रा, ३ तीर्थयात्रा, अठाइमां विस्तार सहित सर्व चैत्य परिपाटी करे, तेनुनाम चैत्ययात्रा पण कहेवायछे रथयात्रा श्रीहेमचंद्रसूरिकृत परिशिष्टपर्वमां जेम संप्रति राजायें करेल छे, तेम करे, तथा महापद्मराजा चक्रवर्त्तियें जेम माताना मनोरथ पूर्ण करवावास्ते करेल छे, तेम करे, अने जेम श्री कुमारपाल राजायें रथयात्रा करी छे तेवीरीतें करे.

तीर्थयात्रा आ प्रमाणे करे श्रीशत्रुंजय, रैवताचलादि तीर्थ, तथा तीर्थंकरोनां जन्म, दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण अने विहारभूमि, आ सर्व स्थल, भव्यजीवोने प्रभूत शुभभावना संपादक छे, ते कारणथी संसारथी तरवाना कारणो होवाथी ते तीर्थ कहेवायछे ते तीर्थभूमिमां जवाथी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे जिनशासननी उन्नति वास्ते जे रीतियें यात्रा करवी जोइये, ते रीति आ प्रमाणे छे प्रयाणना स्थानथी यात्राना स्थान सुधी १ निरंतर एकवार भोजन करे, २ सचित्तनो परिहार करे, ३ भूमिशयन करे, ४ ब्रह्मचर्य पाले, ५ सर्व सामग्री विद्यमान छतां पगें चाले, ६ सम्यक्त्वनी निर्मलतापूर्वक घने वखत प्रतिक्रमण क्रिया करे. वली राजानी आज्ञा लइ यात्रागमन करे. विशिष्ट मंदिरोने सजावे विनय, बहुमानसहित स्वजन तथा साधर्मिर्उने बोलावे, गुरुने साथे पधारवानी निमंत्रणा करे, अमारी पडह फेरावे,जिनमंदिरमा महापूजा, महोत्सव करावे, खरचीविनानाने खरची आपे, वाहनरहितने वाहन आपे, निराधारने यथायोग्य आधार आपे, सार्थवाहनी जेम उद्घोषणा करावी लोकोने उत्साहवंत करे, आडंबर सहित तंबु, डेरा, चरु, थाल, वासणो, प्रमुख साथे ले, गाडां, रथ, पालखी प्रमुख वाहनो तथा घोडा उट प्रमुख जानवरो साथे सज्ज करावे, श्रीसंघनी रक्षावास्ते शूरवीर योद्धाउने साथे ले, योद्धाउने तलवार, बंदुक इत्यादि हथीआरो आपे, गीत, नाटक, वाजित्र प्रमुख सामग्री यथायोग्य मेलवे पछी शुभमुहूर्तें, शुभ शुकनें प्रस्थान (प्रयाण) करे, भोजनादिथी श्रीसंघनो सत्कार करे, संघपतिनु तिलक करावे, संघनुं प्रयाण थया पछी उत्तरोत्तर मुकाम करवानो बंदोबस्त करे, रक्षपालोने रस्तामां आगल, पाछल, साथे राखे, संघ मुकाम पहोंचतां तेमने उतरवानी गोठवण करावे, रस्तामां कोइनी गाडी प्रमुख

जांगी त्रुटी जाय तो समरावी आपे, सर्वप्रकारें यथायोग्य संघने सहाय आपे, ग्राम, वा नगरें ज्यां जिनमंदिर आवे त्यां महाध्वजा आपे, चैत्य-परिवाडी आदि महोत्सव करे, जीर्ण चैत्योनो उद्धार करावबा सहाय आपे, ज्यारे तीर्थोने देखे त्यारे हीरा, मोती, सुवर्ण आदिथी वधावे, लाडवा प्रमुखना ल्हाणा करे, साधर्मीवात्सल्य तथा यथोचित दान आपे; ज्यारे तीर्थमां प्रवेश करे त्यारे मोटा उत्सवथी प्रथम हर्षपूजामां धन चढावे, प्रदक्षिणा करे, अष्टप्रकारी, सत्तरजेदी, स्नात्रपूजा विगेरे अनेक प्रकारनी पूजा करे, घीनी धारा दे, पुष्पघर, कदलीघर प्रमुख बनावे, महाध्वजा चढावे, पूजाराप्रमुखने पेहेरामणी आपे, कोइ पण मांगनारने ना कहे नहि, रात्रि जागरण करे, अनेक प्रकारे गीत नृत्यादि उत्सव करे, तीर्थोपवास छठ प्रमुख तपश्चर्या करे, अक्षतना अनेक प्रकारथी मंडल पूरे, अनेक प्रकारना फल तथा नैवेद्य, एकसो आठ, चोवीश, बासी, बावन, बहोंतेर आदि ढोवे, सर्व जक्ष्य जोजननो थाल ढोवे; चंदरवा, अंगलूहणा सुंदर अनेक प्रकारे आपे, तीर्थस्थानमां दीपक वास्ते धी, तेल आपे; पूजानी सामग्री वास्ते, चंदन, केशर, बरास, कस्तूरि, अगर, दशांग, कलश, धूपधाणा, आरति, झालर, चामर, थाल, रकेबी, आजरण प्रमुख अनेक उत्तम वस्तुउ आपे, देरी करावे, कारीगरोने सत्कार आपे, तीर्थना बगडेला कामने समरावे, सार संजाल वास्ते बंदोबस्त करे, तीर्थरक्षकोनुं बहु सन्मान करे, पेहेरामणी आपे, साधर्मीवात्सल्य तथा गुरुजक्ति करे. आ प्रमाणे यात्रा करी तेवीज रीते पाछा स्वस्थानके आवे, समतायुक्त सर्व क्रिया करे अने वर्षसुधी तीर्थ व्रत करे, इति यात्राविधि ॥

हवे स्नात्र विधि लखीये छीये. जिनमंदिरमां स्नात्र महोत्सवमां घीनो मेरु करे, अष्टमंगल प्रमुखनी रचना करे, फल नैवेद्यादि ढोवे, उत्तम प्रकारना केशर, चंदन, पुष्प, अंबर प्रमुख लावे, सकल श्रावक समुदायने मेलवी गीत नृत्यादि आडंबरथी महापूजा रचावे, डुकूलादि महाध्वजा आपे, प्रौढ आडंबरथी प्रजावना निरंतर वा पर्व दिवसे करे, पर्व दिवसे पण न करी शके तो वर्षमां एकवार अवश्य करे. स्नात्र महोत्सवमां स्वधननो व्यय योग्य रीते करे. जीनमतनो उद्योत थाय तेम करे.

देवद्रव्यनी वृद्धिवास्ते अनेक प्रकारे लोकोने उत्साह वधे तेवा कार्यों

करे, पूजामां, माला चढाववा प्रमुख कार्योमां देवद्रव्यनी वृद्धि थाय तेवी योजना करे केशर, चंदन, बरास प्रमुख अनेक वस्तु यथाशक्ति मुजब प्रति वर्षे आपे

सुंदर आंगी, पत्रभंगी, सर्वांग आभरण, पुष्पगृह, कदलीगृह, प्रमुख नी रचना करे, विविध यन्त्रादिकनी रचना करे, गीत, नृत्यादि महोत्सव करे, महापूजा रात्रि जागरण करे

श्रुतज्ञान पुस्तक प्रमुखनी पूजा कर्पुरादिथी निरंतर सुगम छे, अने प्रशस्त वस्त्रादिथी विशेष पूजा तो प्रतिमास शुक्ल पंचमीनारोज श्रावके करवी योग्यछे जो शक्ति न होय तो पण वर्षमां एकवार तो अवश्य पूजा करे तेनु विस्तारथी स्वरूप ज्ञानभक्ति द्वारमां लखवामां आवशे

पंचपरमेष्टि नमस्कार, आवश्यक सूत्र, उपदेशमाला, उत्तराध्ययनादि ज्ञान दर्शननो तप करी जघन्यथी एकवार उद्यापन (उजमणु) करे, जेथी लक्ष्मीनी सफलता थाय, ज्यारे जप तपनु उद्यापन करे, त्यारे चैत्यउपर कलशारोहण करे, फल चढावे, अक्षत पात्रना मस्तक उपर अक्षत चढावे जेम भोजन उपर तांबुल अपाय छे तेम, आ बाबतमां पण जाणवुं उजमणानी विधि शास्त्रांतरथी जाणी लेवी

तीर्थोनी प्रभावनावास्ते वाजते गाजते प्रौढ आडंबरथी गुरुनो प्रवेश महोत्सव करावे आ कथन व्यवहार भाष्यमां छे तेम करवाथी जिनमत नी प्रभावना थायछे श्रीसंघनुं पण यथाशक्ति बहुमान, पूजा, भक्ति करे नालियेर प्रमुखनी प्रभावना करे, तांबुल प्रदानरूप भक्ति करे, तेम कर वाथी शासननी उन्नति थायछे, अने शासननी उन्नतिथी तीर्थंकरगोत्र उपार्जन थायछे आ कथन ज्ञातासूत्रमां छे

गुरुनो योग प्राप्त थये छते, जघन्यथी वर्षमां एकवार आलोचना ले, पोताना करेला सर्व पाप गुरुनी सन्मुख प्रगट करे,गुरु जे प्रायश्चित्त आपे ते अंगीकार करे, फरी तेवुं पाप न करे, तेनुं नाम आलोचना ग्रहण करवीछे, एम श्राद्ध जीतकल्पादिमां विधि लखीछे पक्षपछी, चार मास पछी, एक वर्ष पछी, उत्कृष्ट बार वर्ष पछी, निश्चयें आलोचना करे. पोताना शल्य काढवावास्ते, क्षेत्रथी सातसो योजन अने कालथी बारवर्ष सुधी गीतार्थ गुरुनी अन्वेषणा करे, ते गीतार्थ गुरु केवा होय ? मन,

वचन, काया जेनां स्थिर होय, चारित्रवंत होय, आलोचना गृहणमां कुशल होय, प्रायश्चित्तना जाणकार होय, विषाद रहित होय, एवा गीतार्थ गुरु होय, ते आलोचना प्रायश्चित्त आपवा योग्य छे.

गीतार्थ कोने कहीये? १ जे निशीथादि छेद शास्त्रोना मूलपाठ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी आदिना जाणकार होय, ज्ञानादि पंचाचार युक्त होय, २ आधारवंत, आलोचित पापना धारणावाला होय, ३ आगमादि पांच व्यवहारना जाणवावाला होय, तेमां पण आ कालमां तो जीतव्यवहार मुख्य छे, तेना जाणकार होय, ४ प्रायश्चित्त आलोचकनी लज्जा दूर करावनारा होय, ५ आलोचकनी शुद्धि करनारा होय, ६ आलोचकना पापकर्म बीजाउनी पासे न कहे, ७ आलोचक जेम निर्वाह करी शके, तेम प्रायश्चित्त आपे, ८ जे प्रायश्चित्त न करे तेने इहलोक परलोकना भय बतावे. आ आठ गुण युक्त गीतार्थ गुरु होय छे.

साधु तथा श्रावके १ प्रथम तो पोताना गछमां गछना आचार्य पासे, २ तेना अभावे, उपाध्यायनी पासे, ३ तेना अभावे, प्रवर्त्तकनी पासे, ४ तेना अभावे स्थिविरनी पासे, ५ तेना अभावे गणावछेदकनी पासे, स्वगछमां आ पांचेना अभावे संभोगी एक समाचारीवाला गछांतरमां पूर्वोक्त आचार्य प्रमुख पांचेनी पासे अनुक्रमे आलोचे, तेउनो पण अभाव छते, असंभोगी संवेगी गछमां पूर्वोक्तक्रमे आलोचे, तेउनो पण अभाव छते गीतार्थ पार्श्वस्थ (पासछ) नी पासे आलोचे, तेने अभावे गीतार्थ सारुपीनी पासे आलोचे, तेने अभावे पश्चात्कृतनी पासे आलोचे; जे शुक्ल वस्त्रधारी, शिरमुंडित, अबद्धकछ, रजोहरण रहित, ब्रह्मचारी, स्त्री रहित भिक्षावृत्ति होय ते सारूपी कहेवाय छे; जे शिखासहित अर्थात् चोटली सहित तथा स्त्री सहित होय ते सिद्धपुत्र कहेवाय छे. जे चारित्र छोडी गृहस्थवेष धारण करे छे, ते पश्चात्कृत कहेवाय छे. आलोचनाने अवसरे पासछादिने पण गुरुनी जेम वंदना करे; कारण के विनय मूल धर्म छे, ते कारणथी वंदना करे. जो ते पासछादि पोते पोताने गुणहीन जाणी वंदना न करावे, तो तेने आसन उपर बेसाडी प्रणाम मात्र करी आलोचना ले; तथा पश्चात्कृतने इत्वरसामायिक आरोपण लिंग आपी, पछी तेनी पासे यथाविधि पूर्वक आलोचना ले. पार्श्वस्थादिने अभावे ग-

करे, पूजामा, माला चडाववा प्रमुख कार्योमां देवद्रव्यनी वृद्धि थाय तेवी योजना करे केशर, चदन, बरास प्रमुख अनेक वस्तु यथाशक्ति मुजब प्रति वर्पे आपे

सुदर आगी, पत्रभंगी, सर्वांग आभरण, पुष्पगृह, कदलीगृह, प्रमुख नी रचना करे, विविध यत्रादिकनी रचना करे, गीत, नृत्यादि महोत्सव करे, महापूजा रात्रि जागरण करे

श्रुतज्ञान पुस्तक प्रमुखनी पूजा कर्पुरादिथी निरंतर सुगम छे, अने प्रशस्त वस्त्रादिथी विशेष पूजा तो प्रतिमास शुक्ल पचमीनारोज श्रावके करवी योग्यछे जो शक्ति न होय तो पण वर्पमां एकवार तो अवश्य पूजा करे तेनु विस्तारथी स्वरूप ज्ञानभक्ति द्वारमां लखवामां आवशे

पचपरमेष्टि नमस्कार, आवश्यक सूत्र, उपदेशमाला, उत्तराध्ययनादि ज्ञान दर्शननो तप करी जघन्यथी एकवार उद्यापन (उजमणु) करे, जेथी लक्ष्मीनी सफलता थाय, ज्यारे जप तपनु उद्यापन करे, त्यारे चैत्यउपर कलशारोहण करे, फल चढावे, अक्षत पात्रना मस्तक उपर अक्षत चढावे जेम भोजन उपर तांबुल अपाय छे तेम, आ बाबतमां पण जाणवु उजमणानी विधि शास्त्रांतरथी जाणी लेवी

तीर्थोनी प्रभावनावास्ते वाजते गाजते प्रौढ आडंबरथी गुरुनो प्रवेश महोत्सव करावे आ कथन व्यवहार भाष्यमां छे तेम करवाथी जिनमत नी प्रभावना थायछे श्रीसंघनु पण यथाशक्ति बहुमान, पूजा, भक्ति करे. नालियेर प्रमुखनी प्रभावना करे, तांबुल प्रदानरूप भक्ति करे, तेम करवाथी शासननी उन्नति थायछे, अने शासननी उन्नतिथी तीर्थंकरगोत्र उपार्जन थायछे आ कथन ज्ञातासूत्रमा छे

गुरुनो योग प्राप्त थये छते, जघन्यथी वर्षमां एकवार आलोचना ले, पोताना करेला सर्व पाप गुरुनी सन्मुख प्रगट करे, गुरु जे प्रायश्चित्त आपे ते अगीकार करे, फरी तेवु पाप न करे, तेनुं नाम आलोचना ग्रहण करवीछे, एम श्राद्ध जीतकल्पादिमा विधि लखीछे पक्षपछी, चार मास पछी, एक वर्प पछी, उत्कृष्ट बार वर्प पछी, निश्चयें आलोचना करे. पोताना शल्य काढवावास्ते, क्षेत्रथी सातसो योजन अने कालथी बारवर्प सुधी गीतार्थ गुरुनी अन्वेपणा करे, ते गीतार्थ गुरु केवा होय? मन,

वचन, काया जेनां स्थिर होय, चारित्रवंत होय, आलोचना ग्रहणमां कुशल होय, प्रायश्चित्तना जाणकार होय, विषाद रहित होय, एवा गीतार्थ गुरु होय, ते आलोचना प्रायश्चित्त आपवा योग्य छे.

गीतार्थ कोने कहीये? १ जे निशीथादि छेद शास्त्रोना मूलपाठ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी आदिना जाणकार होय, ज्ञानादि पंचाचार युक्त होय, २ आधारवंत, आलोचित पापना धारणावाला होय, ३ आगमादि पांच व्यवहारना जाणवावाला होय, तेमां पण आ कालमां तो जीतव्यवहार मुख्य छे, तेना जाणकार होय, ४ प्रायश्चित्त आलोचकनी लज्जा दूर करावनारा होय, ५ आलोचकनी शुद्धि करनारा होय, ६ आलोचकना पापकर्म बीजाउंनी पासे न कहे, ७ आलोचक जेम निर्वाह करी शके, तेम प्रायश्चित्त आपे, ८ जे प्रायश्चित्त न करे तेने इहलोक परलोकना भय बतावे. आ आठ गुण युक्त गीतार्थ गुरु होय छे.

साधु तथा श्रावके १ प्रथम तो पोताना गछमां गछना आचार्य पासे, २ तेना अभावे, उपाध्यायनी पासे, ३ तेना अभावे, प्रवर्त्तकनी पासे, ४ तेना अभावे स्थिविरनी पासे, ५ तेना अभावे गणावछेदकनी पासे, स्वगछमां आ पांचेना अभावे संभोगी एक समाचारीवाला गछांतरमां पूर्वोक्त आचार्य प्रमुख पांचेनी पासे अनुक्रमे आलोचे, तेउनो पण अभाव छते, असंभोगी संवेगी गछमां पूर्वोक्तक्रमे आलोचे, तेउनो पण अभाव छते गीतार्थ पार्श्वस्थ (पासछ) नी पासे आलोचे, तेने अभावे गीतार्थ सारुपीनी पासे आलोचे, तेने अभावे पश्चात्कृतनी पासे आलोचे; जे शुक्ल वस्त्रधारी, शिरमुंडित, अबद्धकछ, रजोहरण रहित, ब्रह्मचारी, स्त्री रहित भिक्षावृत्ति होय ते सारूपी कहेवाय छे; जे शिखासहित अर्थात् चोटली सहित तथा स्त्री सहित होय ते सिद्धपुत्र कहेवाय छे. जे चारित्र छोडी गृहस्थवेष धारण करे छे, ते पश्चात्कृत कहेवाय छे. आलोचनाने अवसरे पासछादिने पण गुरुनी जेम वंदना करे; कारण के विनय मूल धर्म छे, ते कारणथी वंदना करे. जो ते पासछादि पोते पोताने गुणहीन जाणी वंदना न करावे, तो तेने आसन उपर वेसाडी प्रणाम मात्र करी आलोचना ले; तथा पश्चात्कृतने इत्वरसामायिक आरोपण लिंग आपी, पछी तेनी पासे यथाविधि पूर्वक आलोचना ले. पार्श्वस्थादिने अभावे रा-

ज यहादि गुणशील चैत्यादिमां ज्यां श्री अरिहंत, गणधरादिए बहु वार लोकोने प्रायश्चित्त आपेलां होय, ते क्षेत्रमां रहेनारा देवताऍये ते देखेल होय, तेथी ते देवताऍनु अठम प्रमुख तपथी आराधन करी, तेनी पासे आलोचे, कदाचित ते देवता चवी गया होय, अने तेने स्थानके बी जा देवता उत्पन्न थया होय, तो ते देवता महाविदेहना अरिहंतने पुछी ने *प्रायश्चित्त आपे, तेने पण जणावे, पूर्वोत्तर दिशि सन्मुख मुख करी* अर्हंत सिद्धोनी समक्ष आलोवे, परतु शल्य न राखे आलोचना कर नारा पुरुष, मायारहित बालकनी जेम सरल थइ आलोवे जे कोइ, को इपण कारणथी आलोचना न करे, ते आराधक नथी

आलोचना करनार दस दोष वर्जी आलोचना करे. दस दोषना नाम १ गुरुने वैयावच्च प्रमुखथी प्रथम खुशी करी पछी आलोचना ले, जेथी गुरु अल्प पायश्चित्त आपे, २ आ गुरु अल्प दंड आपे छे, तेथी तेवा गुरुपा से तेवा अनुमानथी आलोवे, ३ जे अपराध बीजाये दीठा होय तेज मा त्र आलोवे, परतु बीजाये न देखेला होय ते न आलोववा ते, ४ बादर दोषने आलोववा, अने सूक्ष्म दोषने न आलोववा ते, ५ सूक्ष्म दोषने आलोववा, परतु बादर दोषने न आलोववा ते, ६ अव्यक्त स्वरथी आ लोववु, ७ गुरु समजे नहिं तेवी रीते रोलो करीने आलोववुं ते, ८ आ लोचना कर्या पछी बहुजनोने सुणाववु ते, ए अव्यक्त अगीतार्थनी पासे आलोववु १० जे अपराध गुरुने कह्यो होय, तेज पोताना अपराधने आ लोचवो आ दश दोष छे

आलोचना करवाथी, जेम बोजो उपाडनार भार दूर करवाथी हल को थाय छे, तेम पापथी आलोचन करनार हलवो थाय छे पापरूप श ल्य दूर थायछे, प्रमोद उत्पन्न थायछे पोताना दोषोनी निवृत्ति आत्मसा क्षीये देखी बीजा पण आलोचना करे सरलता प्राप्त थवाथी शुद्धता था य छे दुष्कर काम करनार कहेवाय छे दोषनु सेवन करवु ते दुष्कर नथी, परतु दोषनो प्रकाश करवो ते दुष्कर छे श्री तीर्थंकर भगवंतनी आज्ञा ना आराधक थायछे आलोचना करवाथी बालहत्या, स्त्री हत्या, यतिहत्यादि पाप, देवादि द्रव्य भक्षण पाप, राजपत्नी गमनादि महापाप पण सम्य क् रीतिये गुरुदत्त प्रायश्चित्त करवाथी दूर थइ जायछे जो एम न होयतो

दृढप्रहारी प्रमुख तेज नवमां मोक्ष केम प्राप्त करत ? ते कारणथी दर वर्षे चोमासामां तो अवश्य आलोयणा ले.

हवे जन्मकृत्य अढार द्वारोथी लखीये छीये. १ प्रथम उचित द्वार. उचित अर्थात् योग्य वास करवानुं प्रथम स्थान करे; ज्यां रहेवाथी धर्म, अर्थ, काम ए त्रणेनी सिद्धि थाय. बीजे स्थले वसवाथी बंने नव बगडी जायछे. भिल्लपल्लीमां, चोरोना गाममां, पर्वतनी तलेटीमां, हिंसक लोकोमां दुष्ट लोकोमां, धर्मीलोकोनी निंदा करनाराउमां, इत्यादि स्थानमां वास न करे. ज्यां जिनचैत्य होय, मुनिनुं आवागमन होय, श्रावक वसता होय, बुद्धिमान् लोको स्वभावेज शीलवान् होय, प्रजा धर्मशील होय, अने ज्यां बहु जल, इंधन, धान्यादि होय त्यां वास करे. जेम अजमेरनीपासे हर्षपुर नगर हतुं, एवा नगरमां रहेवाथी, धनवंत, गुणवंत अने धर्मवंतनी संगतिथी विनय, विचार, आचार, उदारता, गंभीरता, धैर्यता, प्रतिष्ठा आदि गुणोनी प्राप्ति थायछे. धर्मकृत्यमां कुशलता थायछे; ते कारणथी कनिष्ठ गामोमां धनप्राप्ति होय तोपण वास न करे. यतः ॥ यदि वांछसि मूर्खत्वं, ग्रामे वस दिनत्रयं ॥ अपूर्वस्यागमो नास्ति, पूर्वाधीतं च नश्यति ॥ १ ॥

उचितस्थान पण स्वचक्र, परचक्र, परस्पर विरोध, दुर्भिक्ष, मारी, प्रजाविरोध, अन्नादि वस्तुक्षय, इत्यादि कारणो प्रसंगे तत्काल तजी देवुं जोइये; नहि तो त्रिवर्गनी हानि थइ जायछे. जेम पूर्वे मुसलमानना भयथी लोको दिल्लीनो त्याग करी गुजरात प्रमुख देशोमां जवाथी सुखी अने धनवान थया; तथा जेम क्षितिप्रतिष्ठित शेहेर उज्जड थवाथी चंपा नगरी वसी, अने चंपा उज्जड थवाथी पाटलीपुत्र अर्थात् पटना वस्युं, तेम श्रावक पण पूर्वोक्त हानि जाणे तो नगर छोडीने बीजी जगाये जइ वास करे.

रहेवानुं घर पण सारा लोकोनी पडोशमां करे, परंतु वेश्या तिर्यंच, भिक्षाचर, श्रमण, बौद्ध, तापस, ब्राह्मण, कोटवाल, माछी, जुगारी, चोर, नट, भाट, कुकर्मी प्रमुखना पडोसमां घर वा दुकान न करे. जो देरानी पासे रहे तो हानि थाय. चोकमां, धूताराना वासमां अने प्रधानना पडोसमां रहे तो धन अने पुत्रनी हानि थाय. मूर्ख, अधर्मी, पाखंडी, पतित,

चोर, रोगी, क्रोधी, चंडाल, मदोन्मत्त, गुरुतल्पग, वैरी, स्वामिवंचन, लोभी, रुषि–स्त्री अने बालहत्याना करनारा एटला लोको आपणुं हित करनारा होय, तोपण तेना पडोसमां वास न करवो, कारण के तेओनी संगतथी गुणहानि प्रमुख अनेक उपद्रव थायछे

ज्यां शाडनु शल्य न होय, राख न होय, ज्यां डाज उगतो होय, सुंदर वर्ण, गंधवाली माटी होय, मीठुं जल होय, खोदतां धन निकळे, ते जगा शुभ समजवी वली जे भूमि शीतकालमां उष्ण स्पर्शवाली अने उष्णकालमां शीत स्पर्शवाली होय, ते जगा बहुज शुभ जाणवी एक हाथमात्र भूमि प्रथम खोदी, पछी तेज माटीथी तेज खाडो पुरवो, जो माटी वधे तो श्रेष्ट भूमि जाणवी, जो माटी ओछी थाय तो कनिष्ठ भूमि जाणवी, तथा सो पगलां भरतां जेटलो काल लागे तेटला कालमां जे भूमिमां पाणी न सूकाय, ते उत्तम भूमि जाणवी जो तेटला वखतमां एक आंगल भर पाणी शोषाइ जाय तो ते मध्यम भूमि जाणवी, जो एक आंगल उपरांत पाणी शोषाय तो अधम भूमि जाणवी, तथा पक्षांतरमां जे भूमिना खातरमां फूल नाखतां जो फूल सुकाय नहि तो ते उत्तम भूमि जाणवी, जो अर्ध सूकाय तो मध्यम भूमि जाणवी जो सर्व सूकाइ जाय तो अधम भूमि जाणवी जे भूमिमां शालि वावतां त्रण दिवसे उगे ते उत्तम, पांच दिवस पछी उगे ते मध्यम, अने सात दिवस पछी उगे ते हीन भूमि जाणवी

सर्पनी बंबी उपर घर बनाववामां आवे तो रोग थाय, पोली भूमिउपर घर बनाववामां आवे तो निर्धन थाय, शल्य युक्त भूमिउपर बनाववामां आवे तो मरण थाय मनुष्यनुं हाड तथा केशनु शल्य होय तो मनुष्योनी हानि थाय, खरनु शल्य होय तो राजाप्रमुखनो भय थाय, श्वाननु हाड होय तो बालकनुं मरण थाय, बालकनुं हाड होय तो गृहस्वामि परदेशमां नाश पामे, गायनु शल्य होय तो गौरुप धननी हानि थाय, मनुष्यना केश, कपाल अने भस्म होय तो मरण थाय

प्रथम प्रहर अने छेला प्रहर शिवायना बाकीना प्रहरमां वृक्षनी अने ध्वजानी छाया घर उपर पडे तो दुःखदायक समजवी अरिहंतना मंदिरनी पाछला भागमां न रेहेवुं, ब्रह्मा अने कृष्णना मंदिरनी साथे न

रहेवुं, चंडिका अने सूर्यना मंदिरनी सन्मुख न रहेवुं, महादेवनी तो कोइ पण बाजुये रहेवुं नहि. कृष्णनी डावी बाजुये अने ब्रह्मानी जमणी बाजुये न रहेवुं. स्नाननुं पाणी, ध्वजानी छाया अने विलेपन वर्जे. जिनमंदिरना शिखरनी छाया अने अरिहंतनी दृष्टि पडे त्यां वास न करवो. नगर तथा गामनी इशान खुणमां घर न बनावे; बनावे तो उंची जातिवालो दुःख पामे.

घर बनावे तो वेचनारने पूरी किंमत आपे. पाडोशीने दुःख न आपे, घर लेती वखत कोइने दुःख न आपे, काष्ठ, पाषाण, इंट प्रमुख वस्तु निर्दोष, दृढ, मजबुत अने नवीन होय ते वाजबी मूल आपीने ले, वेचाती वस्तुउनुं योग्य मूल आपे, परंतु पोते इंट, चुनो पकाववानुं न करे. जिनप्रासादनी इंट प्रमुख न ग्रहण करे. शास्त्रमां कह्युं छे के, देरासर, कुवा, वाव, स्मशान, मठ अने राजाना मंदिर, तेउना काष्ट, पत्थर, इंट प्रमुख सर्व गृहस्थना घरमां वपराय तो विरोधकारी छे, अने धर्मना स्थानमां वपराय तो सुखदायक छे.

पाषाणमय घरमां काष्ठनो स्थंभ अने काष्ठमय घरमां पाषाणनो स्थंभ न बनावे, मंदिरमां पण न बनावे. हलका काष्ठ, कोल्हानाकाष्ठ, अर्हटनाकाष्ठ, चरखानाकाष्ठ, कांटावाला वृक्षनाकाष्ठ, पंच उंबरनाकाष्ठ, आ सर्व काष्ठ घरमां न वापरे. बीजोरा, केला, 'दाडम, जंबीर, आंबली अने धत्तुराना काष्ठ पण वर्जे. आ वृक्षोनां मूल पडो कोशमांथी घरमां प्रवेश करे, वा तेउनी छाया घरमां पडे तो कुलनो नाश करे. पूर्व दिशितरफ घर उंचुं होय तो धननो नाश थाय, दक्षिणदिशिये उंचुं होयतो धननी वृद्धि थाय, पश्चिमदिशिये उंचुं होय तो धनादिनी वृद्धि थाय, अने उत्तरदिशि तरफ उंचुं होय तो उजाड थाय. जे घर गोल होय, बहु खुणावालुं होय, अथवा एक, बे वा त्रण खुणावालुं होय, अने दक्षिण वामी तरफ लांबु होय, एवा घरमां वास न करवो. जे घरनां द्वार स्वयमेव उघडे वा बंध थाय ते घर सुखकारी नहि.

घरना द्वार उपर कलशादि चित्र होय तो शुभ छे, अने नाटारंभ, महाभारत तथा रामायणना युद्ध, राजाउना युद्ध, ऋषिउना चरित्र, देवचरित्र, आ चित्रो घरमां शुभ नथी; तथा फल वृक्ष, पुष्प वेल, सरस्व-

ती, नव निधान, यज्ञस्तत्न, लक्ष्मी देवि, कलश, वर्द्धमान, चोद सलाव लि, आ चित्रो शुन्न ठे

खजूर, दाडम, केळां, कोहलां, बीजोरां, जे घरमां उगे ते घरनो नाश थाय ठे वडवृक्ष उगे तो लक्ष्मीनो नाश करे, कांटा वाला वृक्ष उगे तो शत्रुनो जय करे, मोटा फलवाला वृक्ष उगे तो संताननो नाश करे, आ वृक्षना काष्ठ पण वर्जे कोइ शास्त्र एम पण कहे ठे के, घरनी पूर्वे वडवृक्ष होय तो सारु ठे, दक्षिण बाजुये उंबर वृक्ष शुन्न ठे, पश्चिम पासे पीपल वृक्ष अने उत्तर पासे प्लीक्षण वृक्ष सारा ठे

घरमा पूर्वदिशिये लक्ष्मीनु घर करे, अग्नि खुणमां रसोइ करे, दक्षिण दिशिये शयननी जगा करे, नैरुत खुणमां शस्त्रशाला करे, पश्चिमदिशिये जोजन क्रिया करे, वायु खुणमां अन्न संग्रह करे, उत्तर बाजुये पाणीआरु करे, इशान खुणमां देव गृह करे, दक्षिण पासे अग्नि, पाणी, गाय, वायु, अने दीवानी जूमिका बनावे, वामी बाजुये जोजन धान्य द्रव्य, वाहन, अने देवतानी जूमि बनावे, आ पूर्वादि दिशा घरना दरवाजानी अपेक्षाये जाणवी, ठींकवत्, सूर्य अपेक्षाये नहि

घर बनावनार सुथार, कडीआ, मजूरने करारथी अधिक मजूरी आपे, तेमां शोजा समजवी गृहस्थने योग्य घर बनावे, परंतु व्यर्थ मोटुं घर न बनावे, कारण के तेम करवाथी व्यर्थ धन खरचाय ठे घरना द्वारो मर्यादा पूर्वक राखे बहु द्वार बनावे नहि अधिक द्वारथी, दुष्ट जनोना प्रवेशनो जय तथा स्त्री अने धननो तेथी नाश थायठे दरवाजाना बारणां मजबुत बनावे, सांकल, आगलीआथी सुरक्षित करे कमाड पण सुखे खुले तेवा बनावे जींतमां जुंगल राखवाथी पचेंद्रिय जीवनी विराधना थायठे कमाड वासे त्यारे बलाथी वासे, तेमज रीते बलाथी उघाडे पर नाल, खाल विगेरे उचित बनावे आ प्रमाणे देश, काल, स्वैजव उचित, स्वजाति उचित, घर बनावी, विधि सहित, स्नात्रपूजा, साधर्मीवात्सल्य, संघपूजा करी, शुन्न मुहूर्ते, शुन्न शुकने, प्रवेश करे तो सुखी थाय, त्रिवर्गनी सिद्धिना हेतु थाय इति प्रथम द्वार २ बीजु विद्याद्वार कहीये ठीये विद्या ते लखवु, जणवु, वाणिज्यादि कलानु ग्रहण करवुं, अर्थात् अध्ययन करवुं जे विद्याज्यास करता नथी, ते मूर्ख रहेठे, अने पगले

पगले पराजव पामे बे. विद्यावान् परदेशमां पण माननीय थाय बे, ते कारणथी सर्व प्रकारनी कला शिखवी जोइये. कोण जाणे क्षेत्र, कालना विशेषथी कइ कलाथी आजीविका करवी पडशे? जेउ सर्व कला शिख्या होय, तेउये पण पूर्वोक्त सात प्रकारनी आजीविकामांथी जे कलाथी सुखे निर्वाह थाय, ते कलाथी आजीविका करवी. जो सर्व कला शिखवाने समर्थ न होइये, तो जे कलाथी, पोतानो निर्वाह सुखे थाय, अने परलोकमां सारी गति थाय ते कला शिखवी. पुरुषे बे वात निरंतर ध्यानमां राखवी, एक, जेथी सुखे निर्वाह थाय ते, तथा बीजी जेथी मरण पबी सद्गति थाय ते, आ बंने अवश्य शिखवी. ३ हवे विवाहद्वार लखीये बीये. विवाह पण त्रिवर्ग शुद्धिनो हेतु होवाथी उचित करवो जोइये. अन्य गोत्रवाला साथे विवाह करवो जोइये. समान कूल, सदाचार, शील, रूप, वय, विद्या, धन, वेष, जाषा, प्रतिष्ठादि गुणोमां जे पोतानी समान होय, तेनी साथे विवाह करे, अन्यथा कुटुंबक्लेश, अवहेलना प्रमुख अनेक विटंबना उत्पन्न थाय बे. श्रीमतीवत्. सामुद्रिक शास्त्रोक्त शरीरना लक्षण अने जन्मपत्रिका देखी, वरकन्यानी परीक्षा करी विवाह करे. ॥ यडुक्तं ॥ कुलंच शीलंच सनाथताच, विद्याचवित्तंच वपुर्वयश्च ॥ वरेगुणाः सप्तविलोकनीया, स्ततः परंजाग्यवशाहि कन्या ॥१॥ जो वर मूर्ख होय, निर्धन होय, दूर रेहेनार होय, सूरमो होय, वैराग्यवंत मोक्षाजिलाषी होय, वयमां कन्याथी त्रण गणो अधिक होय, तेवाने कन्या न देवी; वली अति धनवान्, अति नरम, अति क्रोधी, विकलांगी अने रोगी, तेवाने पण कन्या न देवी; तेमज कुल, जातिमां अतिहीन होय, मातपिताविनानो होय, स्त्री, पुत्र सहित जेने होय, तेने पण कन्या न देवी. वली जेने बहु जनोनी साथे वेर होय, दररोज कमाय तोज खावानुं साधन थाय तेम होय, आलसु होय, तेवाने पण कन्या न देवी. तथा जे एक गोत्री होय, व्यसनी होय, दरिद्र होय तेने पण कन्या न देवी. जे स्त्री, कपट रहितपणे जर्तारनी साथे वर्ते, देवरनी साथे पण कपट रहितपणे वर्ते, सासुनी जक्ति करे, सगा संबंधीनुं वात्सल्य करे, जाइउमां स्नेहवाली होय, कमलनी जेम विकसित वदनवाली होय, ते कुलवधू सुलक्षणी जाणवी.

अग्नि देवनी साक्षीये पाणी ग्रहण करवुं ते विवाह कहेवाय छे जग तमां विवाहना आर्यलोकमा आठ प्रकार छे १ ब्राह्म, २ दैव, ३ आर्ष, ४ प्राजापत्य, ५ गांधर्व, ६ आसुर, ७ राक्षस, अने ८ पिशाच जे वीवाहमां कन्यानो पिता पानेतर छेडाडी तथा अलंकार आपी पोतानी कन्या परणावे, ते ब्राह्मविवाह छे, जे विवाहमां यज्ञ करनार ब्राह्मणने कन्यानो पिता धर्मनी क्रिया करतां पोतानी कन्या आपे ते दैवविवाह छे जे विवाहमां कन्यानो पिता वरनी पासेथी गायनु जोडु लइ वरने कन्या परणावे ते आर्ष विवाह छे आ छेला वे विवाह लौकिक वेदसम्मत छे जैन वेदमां आ विवाह नथी, कारण के आ वे विवाहना मंत्रो जैनवेदमां नथी, तेम प्रचलित व्यवहारमां पण नथी जे विवाहमां कन्यानो पिता सन्मान पूर्वक पोतानी कन्याने योग्य वरने आपे, ते प्राजापत्य विवाह छे आ चारे प्रकारना विवाह लौकिक नीतिमुजब उत्तम प्रकारना छे जे स्त्री पुरुष मातापितानी आज्ञाविना परस्पर रागथी पोतानी मेले विवाह करे, ते गांधर्व विवाह छे जे विवाहमां कन्यानो पिता वरनी पासेथी अवेज लइ कन्याने परणावे, ते आसुर विवाह छे जे पुरुष कन्याने जोरावरीथी ग्रहण करे, ते राक्षस विवाह छे जे पुरुष सुतेली, मदोन्मत्त, बावरी कन्याने ग्रहण करी लइ जाय ते पिशाच विवाह छे पाछलना चारे विवाह अधम विवाह छे जे विवाहमां वरवहुनी परस्पर बहुज प्रीति थाय, ते विवाह उत्तम प्रकारना विवाहमां गणाय छे सारी स्त्रीनो लाभ तेज वीवाहनुं फल छे सारो पुत्र उत्पन्न थाय तेज स्त्री मलवानु फल छे जेम घणी चित्तवृत्ति अनुपहत रहे, शुद्धाचार रहे, देवगुरु, अतिथी, बांधव प्रमुखनो सत्कार थाय

विवाहमां धननो व्यय, पोताना कुल वैभवनी मर्यादा मुजब तथा शक्ति मुजब अने लोकमां वास्तविक लागे तेम करे, विशेष खर्च करवानी चाल करे नहि अधिक खर्च तो धर्मना कार्योमां करवो वास्तविक छे विवाहमां पण स्नात्र महोत्सव, महापूजा आवर सहित करे, नैवेद्यादि ढोवे, चतुर्विध संघनो सत्कार करे विवाहना कार्यो संसार फलना आपे नारां छे, तेथी तेवा प्रसंगे धर्मकार्योमां व्यय थाय ते सफल छे

४ हवे मित्रद्वार कहीये छीये उत्तम प्रकृतिवाला, साधर्मी, गुणवान् धै

र्यवान्, गंभीर, चतुर, विश्वासपात्र इत्यादि शुभ गुणवाला तथा प्रायः स मान वय तथा स्थितिवाला साथे मित्रता करे. तेवा मित्र कदाचित् धनहीन थइ जाय तोपण तेनी गरीब अवस्थामां तेने सहाय करे. ५ जिनमंदिरद्वार. जिनेश्वर भगवाननुं मंदीर अति सुंदर, शिखर बंध, मंडपयुक्त भरतचक्रवर्ती प्रमुख महान् पुरुषोये बनावेलाना चरित्रो ध्यानमां लइ निरभिमान वृत्तिथी, जन्मने सफल मानतां बनावे. विशिष्ट पाषाण तथा काष्टथी ते सुवर्ण, मणी, रत्नमय यथा शक्ति मुजब बनावे. जो शक्ति न होय तो घासनी झुंपडी पण न्यायोपार्जीत द्रव्यथी बनावी, तेमां माटीनी प्रतिमा भरावी पूजे. जिनमंदिर न्यायोपार्जीत धनथीज बनाववुं जोइये. जेणे जिनमंदिर बनाव्युं नथी, वा जिनप्रतिमां भरावी नथी, अने साधुपणुं प्राप्त कर्युं नथी, ते पोतानो मनुष्य जन्म हारी गयो छे. जे पुरुष शक्तिने अभावे मात्र पुष्पथी पण पूजा करे, ते परम पुन्य उपार्जन करे छे, तो जेणे अत्यंत सुंदर जिनमंदिर मानरहित थइ बनाव्युं, तेना पुन्यनी शुं सिमा ? तेनो तो जन्मज कृतकृत्य छे.

जिनमंदिर बनाववानी विधि लखीये छीये. शुद्ध भूमिपर पूर्वे घर बनाववानी विधि कही, ते विशेष अनुसारे, मंदिर बंधावे, पाषाण उत्तम जातिना वापरे, काष्टपण शुद्ध, देवाधिष्ठित वनथी सूकां लावे. इंट, चुनो पोते पकावे ते सारुं नहि. यत्नापूर्वक जिनमंदिर कारीगरो पासे बंधावे. बंधाव्या पछी कारीगरोने पेहेरामणी, सन्मान आपे, तेउनी साथे छल कपट न करे, तेउने पगार पण करार करतां अधिक आपे, जेथी तेउ जिनमंदिरनुं काम बहुज शुद्ध ध्यानतथी दीर्घकाल सुरक्षित रहे तेवुं करे. जिनमंदिर बंधावतां शुभपरिणाम वास्ते श्रीसंघ तथा गुरु समक्ष कहे के, अविधिथी परधन जे मारी पासे प्राप्त थयुं होय, तेनुं फल ते धनना मालिकने छे. ए प्रमाणे जिनमंदिर बंधावे. जिनमंदिर बंधावतां, भूमि खोदवी पडे, पत्थर लाववा पडे, इंट चुनानी भठीउ पण उपयोगमां लेवी पडे, सुरंग फोडवा पडे, इत्यादि अनेक महा आरंभना काम करवां पडे, तेथी जिनमंदिर न बंधाववुं जोइये, एम लेश मात्र आशंका न करे. जिनमंदिर यत्नापूर्वक बंधावतां कूपदृष्टांत मुजब महालाभ छे. तेमां अनेक प्रतिमानुं स्थापन, पूजन, संघसमागम, धर्मदेशना, दर्शन वृतादि-

नी प्रतिपत्ति, शासनप्रजावना, इत्यादि अगणित पुण्य वधना हेतु प्राप्त थाय ठे, तेथी जिनमदिर वधाववु, ते श्रावकनु मुख्य कर्त्तव्य ठे

जीर्णोद्धारनु स्वरूप लखीये ठीये ॥ यत ॥ नवीन जिनगेहस्य, विधाने यत्फल जवेत् ॥ तस्मादष्टगुण पुण्यं, जीर्णोद्धारेण जायते ॥ १ ॥ जीर्णे समुद्धृते याव, त्तावत् पुण्य न नूतने ॥ उपमर्दो महास्तत्र, स्वचैत्य ख्यातिधीरपि ॥ २ ॥ वली कह्यु ठे के ॥ राय अमच्च सेठी, कोडवीये वि देसेण काउ ॥ जीणे पुवायणे, जीणकप्पीवावि कारवइ ॥ १ ॥ अर्थ राजा, मत्री, शेठ, कोटवी विगेरेने उपदेश दइ, जीर्ण जिनमंदिरनो उद्धार जिनकल्पी साधु पण करावे जेणे जिन जवननो उद्धार कर्यो, तेणे जयकर ससारथी पोताना आत्मानो उद्धार कर्यो, एम जाणवु जीर्ण चैत्य उद्धार करण पूर्वकज नवीन चैत्य कराववुं योग्य ठे, ते कारणथी श्री संप्रति राजाये नेवासी हजार जीर्णोद्धार कराव्या ठे, अने नवीन जिन मदिर तो ठत्रीश हजारज वधाव्यां ठे तेवीज रीतें श्रीकुमारपाल राजा तथा वस्तुपाल प्रमुखे पण नवीन जिनमदिरो करतां जीर्णोद्धार विशेप करावेल ठे

ज्यारे जिनमदिर तैयार थइ जाय, त्यारे तेमां प्रतिमाजी शीघ्र विराजमान करवा जोइये यदाह श्रीहरिजद्र सूरि ॥ जिनजवने जिनबिंबं, कारयितव्य द्रुततु बुद्धिमता ॥ साधिष्टान ह्येव, तद्भवनं वृद्धिमद्जवति ॥ १ ॥ जिनप्रतिमा स्थापन कर्या पठी देरासरमा जडार, कलश, चंद्रवा विगेरे उपकरणो आपवां, तथा बाग, वाडी, गाम, नगर प्रमुख तेना रक्षणवास्ते राजाये आपवा जोइये जेम श्रीसिद्धराजे श्रीरैवताचल पर्वत उपर श्रीनेमिनाथ जगवतना चैत्यवास्ते बारगाम जेटमा आप्यां तथा जेम कुमारपाल राजाये वीतजय पाटन खोदावता जावाना पत्र उपर श्री उदायन राजाना अर्पण करेला गामोनो लेख निकल्यो, ते कबुल करी ते गामो आप्या, ते प्रमाणे आपे श्रीजिनमदिर वधाववानु फल आ ठे यथाशक्ति स्वधनने अनुसारे श्री जिनजवन करावे ते पुरुष महर्द्धियंत विमानवासी देवताओ पण जेनी स्तुति करे, तथा जे चिरकाल सुख आनंद जोगवे, तेवा विमानवासी देवनी गति तथा ठची गति प्राप्त करे.

५ प्रतिमाद्वार श्री अरिहतनु बिंब मणि, सुवर्ण, धातु, पाषाण, चंद

नादि उत्तम काष्ठ, वा माटीनुं अंगुष्ट प्रमाणथी यावत् पांचसो धनुष्य प्रमाण यथाशक्ति सुंदराकार शांतरसमय बनावे. श्री जिनप्रतिमा ज्ञरावनारने शुं फल प्राप्त थाय छे? ते लखीये छीये ॥ यतः ॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ सन्मृत्तिका मल शिला तल दंत रौप्य, सौवर्ण रत्नमणि चंदन चारु बिंबम् ॥ कुर्वंति जैनमिह ये स्वधनानुरूपं, ते प्राप्नुवन्ति नृसुरेषु महासुखानि ॥ १ ॥ तेप्रमाणे प्रतिमा ज्ञरावनारा, मनुष्य तथा देवगतिमां महासुख प्राप्त करे छे. तथा, आर्या ॥ दारिद्दं दोहग्गं, कुजाइ कुसरीरकुगइ कुमइर्ड ॥ अवसाण रोगसोगा, न हुंति जिणविंव कारिणं॥ १ ॥ अर्थ. जिनविंबना करावनार दारिद्र, दौर्ज्ञाग्य, कडुपुं शरीर, नरक तिर्यचनी माठी गति, बुरीबुद्धि, पराधीनपणुं, रोग, तथा शोक प्राप्त करता नथी.

प्रतिमा पण वास्तुशास्त्रमां कहेली विधिपूर्वक बनावे, सुलक्षणयुक्त बनावे, जेथी संततिनी वृद्धि थाय. जे प्रतिमा अन्यायोपार्जित द्रव्यथी बनावेली होय, तथा जे दोरंगादि रंगवाला पाषाणनी बनेली होय, तेमज जेना अंग हीन अधिक होय, ते प्रतिमा स्वपरनी उन्नतिनो नाश करे छे. जे प्रतिमानुं मुख, नाक, नेत्र, कटी, एटलां अंग खंडित होय, ते प्रतिमाने मूलनायक न करवी जोइये. जे प्रतिमाने सो वर्षथी अधिक वर्ष थइ गयां होय, अने जे प्रज्ञाविक पुरुषनी प्रतिष्ठित करेली होय, ते प्रतिमा जो खंडित थइ गइ होय तोपण पूजवा योग्य छे. पाषाणमय विंबना परिवारमां जो बीजो रंग होय तो ते विंब सुखकारक नथी. जे बिंब सम अंगुल प्रमाण होय ते शुज्ञ नथी. एक आंगलथी अगीआर आंगलसुधीना प्रमाणवाला विंब गृहदेरासरमां पूजवा योग्य छे, ते उपरांतना प्रमाणवाला विंब होय तो साधारण मंदिरमां पूजवा जोइये. आ कथन पूर्वाचार्योनुं छे. निरयावलि सूत्रमां कह्युं छे के लेपनी, पाषाणनी, काष्ठनी, दांतनी, लोहनी प्रतिमा परिवार तेमज प्रमाणरहित होय, तो गृहमां न पूजवी. गृहदेरासरमां प्रतिमाजी पासे नैवेद्यनो विस्तार अतिशय न करवो. त्रण काल प्रतिमानी पूजा करे, प्रतिमाजीने अज्ञिषेक करी, प्रातः कालमां प्रथम प्रहर व्यतीत थये, अष्टप्रकारी पूजा करी, ज्ञावपूजा करे. प्रतिमाजी मुख्य वृत्तिये परिकर सहित, तिलक सहित, आज्ञरण सहित करावे. मूलनायकजी तो विशेष रीतें शोज्ञनिक बनाववा जो-

इये, कारण के जिनप्रतिमानी अधिक शोजा देखावाथी परिणाम अत्यंत सुंदर तथा उल्लासमान थाय ठे, अने तेथी अधिक निर्जरा थाय ठे जिनमदिर अने जिनप्रतिमा बनावनारने अतुल्य पुण्यफल थाय ठे ज्यांसुधी मदिर अने प्रतिमा रहे त्यांसुधी बनावनारने पुण्य प्राप्त थया करे ठे जेम अष्टापद पर्वत उपर जरतचक्रवर्तीयें करावेला मदीर तथा रेवतगिरि उपर ब्रह्मेंद्रना बनावेला कांचनमय मंदिर तथा प्रतिमा, तथा जरतचक्रवर्तीनी अंगुठीमां रहेली माणकेनी प्रतिमा, जे कुल्पाक तीर्थमां माणिक्य स्वामिनी प्रतिमा कहेवाय ठे ते, तथा श्रीस्तंजनक पार्श्वनाथनी प्रतिमा जे आज पर्यंत पूजाय ठे, तेम पुण्यफल प्राप्त थाय ठे तेज कारणथी आ चोवीसीमां जरतचक्रवर्तीये श्रीशत्रुजयतीर्थ उपर रत्नमय चौमुख चोरासी मडप संयुक्त श्रीरीषजदेव जगवाननु मंदिर बधाव्युं, ज्यां पांच क्रोड मुनिना परिवार सहित पुडरीक गणधर मोक्ष पाम्या ज्ञान, निर्वाणना स्थानक पण बनाव्यां तेवीज रीतें बाहुबली, मरुदेवी शृंगमां, रेवतगिरि, अर्बुदगिरि, वैजारगिरि, अने समेतशिखर उपर जिनमंदिरो बनाव्यां प्रतिमाउं पण सुवर्णनी बनावी जरत राजानी आठमी पाटे दंडवीर्य राजाये तथा बीजा सगर चक्रवर्तीये तेउंनो उद्धार कराव्यो, तथा हरिषेण नामा दशमा चक्रवर्तीये श्रीजिनमंदिर मंडित पृथ्वी करी संप्रति राजाये सवालाख जिनमंदिर तथा सवाक्रोड जिनप्रतीमा जरावी गवालियरना राजा आम राजा श्रावके श्रीमहावीर अरिहंतनु एकसो एक हाथ उंचु जिनमंदिर बंधाव्यु, तेमां साडात्रण क्रोड सोनामोहोरो खरची सात हाथ प्रमाण उची श्रीमहावीर स्वामिनी प्रतिमा बीराजमान करी, मूल मंडपमां एकवीश लाख सोनैया खरच्या श्रीकुमारपाल राजाये चौदसो चमालीश नवा जिनमंदिर बंधाव्या, तथा सोलसो मंदिर जिर्णोद्धार करी समराव्यां ठन्नु क्रोड रुपैया खरची त्रिजुवनविहार नामा जिनमंदिर बंधाव्यु, तेमां एकसो पचवीस आंगल प्रमाण अरिष्ट रत्नमयी प्रतिमा बोतेर देरी संयुक्त चोवीस प्रतिमा रत्ननी, चोवीस रूपानी स्थापन करी, तथा चौदजार प्रमाण एकेक चोवीसी बनावी मंत्री वस्तुपाले तेरसो तेर नवा जिनमंदिर बधाव्या, अने बावीससो जीर्णोद्धार कराव्या, सवालाख प्रतिमा जरावी, अने सवालाख सुवर्ण रत्नमय प्रतिमाजीनां

आजूषणो कराव्यां. शाह पेथडे चोरासी जिनमंदिर बंधाव्यां; ते सर्वे वीरमदे राजाना राज्यमां मांधाता तथा ओंकार नगरमां अने देवगिरि उपर क्रोडो रूपीआ खरची बंधाव्यां, त्रण लाख रूपीआ दानमां आप्या; तथा श्रीशत्रुंजय तीर्थ उपर श्रीरीषनदेवजीनुं मंदिर सुवर्णपत्रथी मढावी मेरुशृंग समान कर्युं हतुं. पूर्वोक्त सर्वे मंदिर, मुसलमान राजाउंये तथा अजेपाल राजाये जमीनदोस्त करी दीधां. शेष जे बचेलां छे, ते आज पण आबु, तारंगादि पर्वत उपर विद्यमान छे.

७ प्रतिमानी प्रतिष्ठाद्वार. प्रतिमानी प्रतिष्ठा शीघ्र करवी जोइये, षोडशक ग्रंथमां लख्युं छे के, मंदिर तैयार थया पछी दस दिवसनी अंदरज प्रतिष्ठा करवी जोइये. प्रतिष्ठाविधि प्रतिष्ठाकल्पथी जाणवी.

८ दीक्षाद्वार. श्रावके पोताना पुत्र, पुत्री, नाइ, नत्रीजा, स्वजन, मित्र, परिजन प्रमुख जे कोइ दीक्षा लेवाना अनिलाषी होय, तेने मोटा आडंबरथी महोत्सव करी दीक्षा अपाववी, उपस्थापना कराववी; बीजाउं पण जे दीक्षा लेवावाला होय तेउंने वास्ते महोत्सव करे, अने दीक्षा अपावे तो महापुण्यनुं कारण छे. जेना कुलमां चारित्र धारण करनार पुरुष होय, ते महापुण्यवान् कुल छे. लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के ॥ यतः ॥ तावद् च्रमन्ति संसारे, पितरः पिंडकांक्षिणः ॥ यावत् कुले विशुद्धात्मा, यतिपुत्रोन जायते ॥ १ ॥

ए तत्पद स्थापनाद्वार. गणि, वाचनाचार्य, वाचक, आचार्यादि पदप्रतिष्ठा शासननी उन्नति वास्ते मोटा महोत्सवथी करे; जेम पूर्वे गणधरो वास्ते शक्र इंद्रे करेल छे, तथा मंत्री वस्तुपाले एकवीश आचार्योनी पद स्थापना करी, तेम करे.

१० पुस्तक लखाववानुं द्वार. आचारांगादि सिद्धांतना ग्रंथो तथा जिनचरित्रादि अनेक ग्रंथो न्यायोपार्जीत धनथी लखावे. सुंदर कागलो उपर सुंदर अक्षरोथी लखावे. पोते वांचे, संवेगी गीतार्थ पासे वंचावे. प्रौढ महोत्सवथी शुन दिवसे पुस्तकनी पूजा करी बहुमान करावे. ग्रंथ नणनाराउंने वस्त्र, अन्नादिनी सहाय करे. पूर्वकालमां जे शास्त्रो हतां, ते दुःषमकालना प्रनावथी बार वर्षना दुकालमां बहु विछेद गयां, बाकी जे रह्यां ते नगवान् नागार्जुन स्कंदिलाचार्य प्रमुख महापुरुषोये पुस्तकोमां

लख्यां, त्यारथी लखेलां शास्त्रोनु बहुमान थवा लाग्युं, ते कारणथी पुस्तक जरूर लखाववां जोइये, आ पुस्तको विछेद जशे तो आ क्षेत्रनां अनाथ जीवोनी शु दशा थशे? तेओने ज्ञान शीरीते प्राप्त थशे? ते कारणथी पुस्तको अति आदरथी लखावी, पुस्तको सुंदर वस्त्रोथी बांधी, बहु यत्नाथी राखी, पूजवा जोइये शाह पेथडे सातक्रोड अने मन्त्री वस्तुपाले अढार क्रोड रुपैआ खरची ज्ञानना भंडार कराव्या थिरापद्रीय संघपति आभूये पोतानी माताना रुपैआ त्रण क्रोड खरची सर्व आगमोनी प्रतो सोनेरी अक्षरोथी लखावी, शेष ग्रथो शाहीना अक्षरोथी लखाव्या, माटे पुस्तकोनो उद्धार करवो

११ पौषधशाला बनाववानु द्वार श्रावके पौषध करवावास्ते पोताने वास्ते तेमज बीजा साधर्मीओवास्ते साधारण स्थानमां पूर्वोक्त घर बनाववानी विधि अनुसारे पौषधशाला बधाववी जोइये पौषधशाला समराववा अवसरे सुसाधुने रहेवाने ते स्थान आपवु तेमां महाफल छे श्रीवस्तुपाले (ए०४) नवसे चोरासी पौषधशाला बधावी श्रीसिद्धराज जयसिंह राजाये प्रधान सांतुने रहेवावास्ते बहु सुंदर आवास (मेहेल) बंधाव्यो, पछी श्री वादि देवसूरिजीने ते बताववासारु आमन्त्रण कर्यु मंत्रीजीये पुछ्यु "गुरुराज आवास केवो छे? त्यारे शिष्य माणिक्ये कह्यु के ते पौषधशाला होय तो वर्णन करीये मत्रीये कह्यु के " आ पौषधशाला हवेछे"

१२-१३ बारमा अने तेरमां द्वारमां जन्मथी जावजीवसुधी सम्यक्त दर्शन यथाशक्ति पाले, १३ तथा यथाशक्ति व्रतादि पाले

१४ दीक्षा ग्रहणद्वार श्रावक अवसर जाणी दीक्षा ग्रहण करे बाल्यावस्थामां जो दीक्षा न ले तो पोताना मनमां ठगायो माने जगतमां अतिवल्लभ वस्तुवास्ते जेम लोक निरतर चिंता राखे छे, तेम श्रावक पण नित्य सर्वविरति थवानी चिंता राखे जो गृहस्थावास पाले, तोपण उदासीनताथी अलिप्तपणे, पोताने परोणा समान समजे, कारण के भावश्रावकनां लक्षण सत्तर प्रकारना वर्णवेलां छे तेना नाम

१ स्त्रीथी वैराग्य, २ इन्द्रियथी वैराग्य, ३ धनथी वैराग्य, ४ संसारथी वैराग्य, ५ विषयथी वैराग्य, ६ आरंभस्वरूप ज्ञान, ७ घरनो दुःखरूप अनुभव, ८ सम्यक् दर्शन धारणा, ए गाडरीआ प्रवाहनो त्याग, १० धर्म

मां अग्रेसरपणुं, आगमानुसार धर्ममां प्रवर्त्तना, ११ दानादिमां यथाशक्ति प्रवर्त्तना, १२ विधिमार्गमां प्रवर्त्तना, १३ मध्यस्थ वृत्ति, १४ अरक्तद्विष्ट, १५ असंबद्ध, १६ परहितार्थे अर्थ, कामनो त्याग, १७ वेश्या वृत्तिये घरवास.

स्त्री अनर्थनुं स्थानछे, चपल चित्तवाली छे, नरकनी सडक सरखी छे, एम जाणी तेने वशवर्ती नहि थतां तेनाथी उदास रहे. २ इंद्रियो, चंचल घोडा समान छे, माठी गतितरफ निरंतर दोडेछे, तेथी तेनुं यथार्थ स्वरूप जाणी सद्ज्ञानरूप रज्जुथी तेने दुष्ट प्रवृत्तिथी रोके. ३ धन सर्व अनर्थ तथा क्लेशनुं कारण छे, तेथी धन प्राप्त थये, तथा प्राप्त करवामां अतिलोभी थाय नहि. ४ संसार, चतुर्गति रूप दुःखमय, अनेक विटंबनाथी भरपुर छे, तेथी तेमां आसक्ति न करे. ५ विषयसुख क्षणमात्रछे. तेनुं दुःख श्रेणि परंपरा छे, तेथी विषय विषफल समान छे, एम जाणी कदापि विषयमां गृद्धित्व न करे. ६ तीव्र आरंभ निरंतर वर्जे, निर्वाह न थाय तोपण अल्पारंभी रहे, अने आरंभ रहितनी स्तुति करे, सर्व जीवो उपर दयावंत रहे. ७ गृहवासने दुःख रूप, बंदीखाना समान मानी गृहवासमां उदासवृत्तिये रहे, अने चारित्र मोहनीय कर्मने जीतवानो उद्यम करे. ८ आस्तिक्य भाव संयुक्त जिनशासननी प्रभावना तथा गुरुभक्ति करे, तेवी रीतें सम्यग्दर्शन निर्मल धारण करे. ९ जेवी रीतें मूर्ख लोको गाडरीआ प्रवाह प्रमाणे वर्त्ते, तेम नहि वर्त्ततां जिन आगम अनुसारे प्रवर्त्ते. ११ पोतानी शक्ति नहि गोपवतां चारे प्रकारनो दानादि धर्म करे. १२ हितकारी, अनवद्य, धर्मक्रियाने चिंतामणी रत्नी जेम दुर्लभ जाणी तेप्रमाणे करतां कोइ मूर्खना हसवाथी लज्जा न धरे. १३ शरीर राखवावास्ते धन, स्वजन, आहार, घर प्रमुखमां प्रवर्त्ते, परंतु रागद्वेष कोइ वस्तुमां न करे. १४ उपशांत वृत्ति सार छे, एम विचारी रागद्वेषमां लेपायमान न रहे, खोटो आग्रह न करे, हितनो अभिलाषी थइ मध्यस्थ रहे. १५ सर्व वस्तुने क्षणभंगुर मानी निरंतर धनादि साथे अप्रतिबद्ध पणे रहे. १६ संसारथी विरक्त मन राखे, एम जाणे के भोग भोगववाथी आज पर्यंत कोइ तृप्त थयेल नथी, छतां स्त्री आदिना आग्रहथी भोगविलासमां प्रवर्ते तोपण विरक्तपणे रहे. १७ वेश्यानी जेम अभिलाषा रहित वर्ते; एम विचारे के आ अनित्य सुख आज काल मारे छोडवा-

ना छे, तेथी घरवासमा स्थिर नाव न करे ॥ इति धर्म रत्नशास्त्रे कथित नाव श्रावक गुणवर्णन ॥

एम शुन्न नावना वासित प्रथम कहेल दिनकृत्यादिमां रक्त ॥ "इण मेव निग्गथे पवयणे अठे परमठे सेसे अणठे" एवी सिद्धांतोक्त रीतिवे वर्तमान सर्व व्यापारोमां सर्व प्रयत्नथी वर्तता थका, सर्वत्र अप्रतिवद्ध चित्त राखे, अनुक्रमें मोहने जीतवाने समर्थ थइ, पुत्र, नाइ, नत्रीजादिने गृहनार सोंपी स्वशक्ति अनुसारे अर्हतचैत्यमां अठाइ महोत्सव करी, संघनी पुजा करी, दीन अनाथोने यथाशक्ति दान दइ, परिचित्त जनो साथे खमतखामणा करी सुदर्शन शेठना जेम विधि सहित सर्वविरति अंगीकार करे

१५ पदरमाद्वारमा—जो दीक्षा लेवानी शक्ति न होय तो आरंनन्नो त्याग करे, जो निर्वाह न थाय, तोपण अल्पारंन्नी रही सर्व सचित्त आहारादि केटलाएक आरन्नो तो त्यागे

१६ ब्रह्मचर्यद्वार जावोजीवसुधी ब्रह्मचर्य पाले, जो तेम न थाय तोपण अमुक वखते तो अवश्य अंगीकार करे जेम शाह पेथके बत्रीस वर्षनी अवस्थामा ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार कर्युं

१७ प्रतिमाद्वार प्रतिमादि तपविशेप करे, आदिशब्दथी संसार तारणादि तप करे अगीआर प्रतिमा श्रावकनी छे, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे रायाजिऊंगेणादि ठ आगार रहित तथा समग् दर्शनना श्रद्धादि सडसठ बोल सहित, नय लज्जादि अतिचार रहित, त्रिकाल देवपूजामां तत्परता पूर्वक एक मास सुधी सम्यक्त्व पाले, ते प्रथम प्रतिमा बीजी प्रतिमामां प्रथमनी प्रतिमानी विधिसहित, वे मास सुधी अखंडित पांच अणुव्रत पाले त्रीजी प्रतिमा त्रण मास सुधी उनयकाल अप्रमत्त, पूर्वोक्त बने प्रतिमासहित सामायिक करे. चोथी प्रतिमा चार मासमुधी चार पर्वे पूर्वेनी त्रण प्रतिमा सहित अखंडित पोषध करे पांचमी प्रतिमा पांच मास सुधी स्नान न करे, रात्रिये चारे आहार वर्जे, दिवसे ब्रह्मचर्य पाले, कछ वांधे नहि, चार पर्व परमां तथा घोमर्मा नि प्रकप पठ सर्व रात्रि कायोत्सर्ग करे, सव पूर्वेनी चार प्रतिमा सहित करे आ पात आगल पण सर्व प्रतिमामां जाणवी छठी प्रतिमा छ मासमुधी ब्रह्मचारी थाय सातमी प्रतिमा सा

त माससुधी सचित्त आहार वर्जे. आठमी प्रतिमा. आठ माससुधी पोते आरंभ न करे. नवमीप्रतिमा. नवमाससुधी बीजा पासे पण आरंभ करावे नहि. दसमी प्रतिमा. दस मास सुधी क्षुरमुंडित रहे, अथवा अल्प चोटली राखे. घरमां कांइ धन होय, अने घर मांहेना कोइ पुछे त्यारे कहे के हुं जाणुं छुं, अने जो न होय तो कहे जाणतो नथी, बाकी घरनुं सर्व काम वर्जे, पोताने निमित्ते घरमां जे आहार कर्यो होय ते पण न खाय. अगीआरमी प्रतिमा. अगीआर माससुधी घरनो संग त्यागे, लोच करे, अथवा क्षुरमुंडित रहे, रजोहरण, पात्राप्रमुख लइ, मुनिनो वेष धारण करी स्वकुलमां भिक्षा लहे. मुखथी एम कहे. "प्रतिमा प्रतिपन्नाय श्रमणोपासकाय भिक्षां देहि" आ प्रमाणे वचन बोले, परंतु धर्मलाभ शब्द न कहे. सर्व रीतिये साधुनी जेम प्रवर्त्ते.

१७ आराधना द्वार. अंतकाल समये श्रावक दश प्रकारनी आराधना के जेनुं स्वरूप आगल कथन करवामां आवे छे ते, तथा संलेषणादि विधिपूर्वक करे. श्रावक ज्यारे सर्व धर्मकृत्यो करवाने अशक्त थाय, अने पोतानुं मरण पासे जाणे, त्यारे द्रव अने भावथी संलेषणा करे. द्रव्य संलेषणा ते अनुक्रमें आहारनो त्याग करे, अने भाव संलेषणा ते, क्रोधादि चारे कषायनो त्याग करे. पोतानुं मरण निकट छे एम आ लक्षणोथी जाणे. १ बुरा स्वप्न आवता होय, २ प्रकृति, स्वभावमां फेरफार थयो होय, दुर्निमित्त मलतां होय, ४ मोठा ग्रहनो योग थयो होय ५ आतम आचरण विकृति पाम्या होय, वा कोइ देवतानी सहायथी जाणवामां आवे. जे द्रव्यथी तथा भावथी संलेषणा न करे, अने अनशन करी दे, तो तेवा जीवने प्रायः दुर्ध्यान थवाथी कुगति थाय छे, ते कारणथी संलेषणा अवश्य करे. पछी धर्मना उद्योत वास्ते संयम अंगीकार करे. एक दिवस पण दिक्षा ग्रहण करी संयम पालवामां आवे तो स्वर्ग प्राप्त थाय छे. जेम नल राजाना भाइ कुबेरना पुत्र सिंहकेशरीए मात्र पांच दिवसनी दिक्षाथी केवलज्ञान प्राप्त कर्युं अने मोक्ष गया; तथा हरिवाहन राजाए पोतानुं आयुष्य मात्र नव प्रहर बाकी जाणी दिक्षा लीधी अने सर्वार्थसिद्ध विमाने गया. श्रावक दिक्षा अवसरे तेमज संथारा समये प्रभावना वास्ते यथाशक्ति धन खरचे. जेम थिरापद्रीय संघपति आ-

जूए ते अवसरे साते क्षेत्रमां सातक्रोड धन वापर्युं वली संयमनो योग न थाय तो शत्रुंजयादि तीर्थोए सुस्थानमां जइ, संलेषणा करी, निर्दोष स्थंडिलमां विधि पूर्वक चार आहार त्यागरूप आणंद, कामदेव श्राव कोनी जेम अनशन करे. पछी सर्व अतिचारना परिहार चार शरणादि रूप आराधना करे

आराधना दश प्रकारे थाय छे १ सर्व अतिचार आलेवे, २ व्रत उ चरे, ३ सर्व जीवो साथे खमावे, ४ पोताना आत्माने अढार पापस्था नकोथी व्युत्सर्जन करे, ५ चार शरण ग्रहण करे, ६ गमना गमन दु ष्कृतोनी गर्हणा करे, ७ जे कोइए जीनमदिरादि सुकृतो कर्यां होय, तेउ नी अनुमोदना करे, ८ शुभ भावना भावे, ९ अनशन करे, अर्थात् चार आहार या त्रण आहारनो त्याग करे, १० पच नमस्कारनु स्मरण करे. आ प्रमाणे आराधना करवाथी जो ते भवमां मुक्ति प्राप्त न थाय, तो पण सुदेव अथवा सुमनुष्यना आठ भव करी अवश्य ते आत्मा मोक्षरूप थाय

आ प्रमाणे गृहस्थधर्म करवाथी निरंतर गृहस्थ लोको आ लोक परलोकमा सुख प्राप्त करे छे, अने परंपराए मोक्ष प्राप्त करे छे इति श्री श्राद्धविधि अनुसार श्रावकस्य जन्म कृत्यादि स्वरूप संपूर्णम् ॥

इति श्री तपगछीय मुनि श्री मणिविजयगणि तच्छिष्यमुनि श्री बु द्धिविजय तच्छिष्य मुनि श्री मुक्तिविजयगणि तस्य लघु गुरुभ्रात् मु नि आत्माराम आनंदविजय विरचिते जैनतत्त्वादर्शे गृहस्थधर्मनिरु पण नामा दशम परिछेद ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश परिछेद प्रारंभ ॥

आ परिछेदमां श्री रिषभदेव भगवानथी, श्री महावीर स्वामि पर्यंत जैनमतादि शास्त्रानुसार इतिहासरूप पूर्व वृत्तांत लखीए छीए, जेथी आ ग्रंथना वांचनाराओने जैननो सेहेज इतिहास जाणवामां आवशे व र्त्तमान समयमां केटलाएक भव्य जीवोनी एवी जीज्ञासा छे के जैन मत क्यारथी प्रचलित थयेल छे ? वली केटलाएकने एवी भ्रांति छे के, जैनमत बौद्धमतनी शाखा छे, केटलाएक कहे छे के बौद्धमत जैनम तनी शाखा छे, कारण के तेउनु मानवुं एवुं छे के आ बंने मतो कोइ का

ज्ञमां एक हता, परंतु आचार्योमां मतभेद थवाथी एक मतना बे विभाग, जैन अने बौद्ध थया छे. वली केटलाएक कहे छे के संवत् ५०० नी लगभग जैनमत उत्पन्न थयेल छे, अने कोइक कहे छे के विष्णु भगवाने दैत्योने धर्मभ्रष्ट करवावास्ते अर्हतनो अवतार धारण करेलो छे, वली कोइक कहे छे के मछंदरनाथना शिष्योए जैनमत चलाव्यो छे; इत्यादि अनेक दंतकथाउ चाले छे, ते सर्व जैनमत न जाणवानुं कारण छे. जेम चमार लोको कहे छे के बानु अने चामु बे बेहेनो हती, तेमां बानुनी उलाद सर्व अग्रवालादि वाणीआ थया, अने चामुनी उलाद अमे चमार छीए, ते कारणथी वाणीआ अने चमार एक वंशना छे, हवे विचारवुं जोइए के चमारोनुं आ बोलवुं शुं वास्तविक छे? अने बुद्धिवान लोको शुं ते बोलवुं सत्य मानशे? तेवीज रीते जे कोइ स्वमतिकल्पनाथी वा दंतकथा श्रवण करवाथी जैनमतनी उत्पत्ति मानशे, ते पण जैनीउने हसवा लायक थशे. सारांश ए छे के प्रथम तो कोइ पण मतवाला जैनमतना मूलतत्वोने जाणता नथी. जुउ के शंकरदिग्विजय ग्रंथमां श्रीशंकरस्वामिए जैनमतनुं जे खंडन लखेल छे ते वांचतां अमने हसवुं आवे छे. ज्यारे शंकरस्वामिए जैनमतनुं स्वरूपज जाण्युं नथी, त्यारे तेनुं करेलुं जैनमतनुं खंडन, ते पुरुषनी छायाने पुरुष जाणीने लाकडीथी मारवा सरखुं छे. ज्यारे शंकरस्वामिनेज जैनमतनी माहिती नहोती,तो वर्त्तमान कालना सामान्य विद्धानोनी माहिती माटे शुं कहेवुं? ते कारणथी सर्वे जीज्ञासुउने बहुज नम्रता पूर्वक विनंति करीए छीए के जैनमतनो सारी रीते अभ्यास करी, जैनमतनुं खंडन मंडन करवुं, नहीं तो शंकरस्वामि अने रामानुज आचार्योनी जेम तमे पण हसवा योग्य थइ पडशो.

सज्जनोने जाणवा वास्ते प्रथम आ जगतनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए. आ जगतने जैनी द्रव्यार्थिक नयना मतथी शाश्वत अर्थात् प्रवाह रूपे निरंतर एवुंज माने छे. आ जगतमां छ प्रकारे काल वर्ते छे, तेनेज जैनीउ छ आरा कहे छे. एक अवसर्पिणी काल, अर्थात् सर्व सारी वस्तुउनो अनुक्रमे नाश करतो करतो जे काल व्यतीत थाय, तेना छ विभागो छे, अने बीजो उत्सर्पिणी काल अर्थात् सर्व सारी वस्तुउने

अनुक्रमे वृद्धिमान् करतो करतो जे काल व्यतीत थाय, तेना पण ठ वि भाग ठे दश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण एक अवसर्पिणी काल, अने तेटलाज सागरोपम प्रमाण एक उत्सर्पिणी काल ठे एक साग रोपम असंख्याता वर्षोनो थाय ठे तेनु स्वरूप जैन शास्त्रथी जाणवु एक अवसर्पिणी अने एक उत्सर्पिणी मली एक कालचक्र थाय ठे, अ र्थात् वीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण एक कालचक्र ठे एवा का लचक्र अनंता भूत कालमां व्यतीत थया, अने भविष्यमां पण व्यतीत थशे अवसर्पिणी काल पुरो थता उत्सर्पिणी काल प्रारंभ थाय ठे, अने उत्सर्पिणी काल पुरो थता अवसर्पिणी कालनो प्रारम्भ थाय ठे एवीज रीते अनादि अनंत काल सुधी आ प्रमाणेज व्यवस्था रहेशे हवे ठ आरानु स्वरूप लखीए ठीए

अवसर्पिणीनो प्रथम आरो सुषमसुषम चार कोटाकोटी सागरो- पम प्रमाण ठे ते कालमां भरत क्षेत्रनी भूमि बहुज सुंदर, रमणीय, म र्दलना तल समान सम हती ते कालना मनुष्य भद्रक, सरल स्वभावी, अल्प रागद्वेषी तथा अल्प मोह, काम, क्रोधादि युक्त हता, सुंदर रू पवान्, निरोगी हता दश जातिना कल्पवृक्षोथी पोतानां खावा, पीवा, पेहेरवा, सुवा विगेरे सर्व व्यवहारना कार्यो करी लेता हता एक पुत्र अने एक पुत्री, वेनुं युगल जन्मतुं हतु ज्यारे बने योवनवत थता हता, त्यारे बने भाइ बेहेन, स्त्रीभरतारनो संबध करता हता तेउने वली बे बीज रीते युगल प्रसवता हता तेउ पण पूर्वोक्त व्यवहार करता हता जैनमतना माप मुजब त्रण गाउ (कोस) प्रमाण तेउंना शरीरनी उं चाइ हती त्रण पल्योपम प्रमाण आयुष्य हतां बसो ठपन पृष्ठकरंडना हाड हतां धर्मनो अभाव हतो जीवहिंसा, असत्यता, चोरी प्रमुख पाप पण विशेष नहोतां वृक्षोमाज रहेता हता युगल समुहो पण गणत रीमा थोडा हता बाकी चतुष्पद पचेंद्रिय, पक्षी प्रमुख सर्व जातिना जीव हता तेउ पण सर्व भद्रक हता क्षुद्रक नहोता शालि प्रमुख सर्व अनाज अने इक्षु प्रमुख सर्व वस्तुउ सर्व जगलोमां स्वयमेव उत्पन्न थती हती तेउ याड मनुष्योना खानपानादिमां उपयोगमा आवती नहोती मनुष्यो तो मात्र कल्पवृक्षोना फलफूलोनोज आहार करता हता वस्त्रने

बदले वृक्षोनी छाल तथा पांदडां पेहेरता, उंढता हता. इत्यादि सर्व बा-वतनुं प्रथम आरानुं स्वरूप जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति प्रमुख शास्त्रोथी जाणवुं.

बीजो आरो सुषम त्रण कोटाकोटी सागरोपम, तेमां वे गाउ (कोश) नुं देहमान, वे पल्योपमनुं आयुष्य, एकसो अठावीश पृष्ठकरंरुकनां हाड हतां. शेष व्यवहार प्रथम आरा जेम हतो.

त्रीजो आरो सुषमडुषम; वे कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण, एक गाउ देहमान, एक पल्योपम आयुष्य, चोसठ पृष्ठकरंडक हाड हतां. शेष व्यवहार प्रथम आरा प्रमाणे हतो. आ सर्व आरामां सर्व वस्तुउं अनुक्रमे घटती छेवटे आगलना आरा तुल्य रहे छे, परंतु एक साथे सर्व वस्तु एकदम घटती नथी.

ए प्रमाणे त्रीजा आराने छेडे एक वंशमां सात कुलकर उत्पन्न थया. जेउंए ते कालना मनुष्यो वास्ते कांइक मर्यादा बांधी होय तेउं कुलकर कहेवाय छे. तेज सात कुलकरोने लौकिकमां सप्त मनु कहे छे. बीजा वंशोना कुलकर गणीयें तो श्री ऋषन्नदेवजी शिवाय चौद कुलकर थाय छे, अने श्रीऋषन्नदेवजी पंदरमां कुलकर गणाय छे.

पूर्वोक्त सात कुलकरोना नाम. १ विमल वाहन, २ चक्षुष्मान्, ३ य-शस्वान्, ४ अन्निचंद्र, ५ प्रश्रेणि, ६ मरुदेव, ७ नान्नि. आ सातेनी न्नार्या-ना नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे. १ चंद्रयशा. २ चंद्रकान्ता, ३ सुरुपा, ४ प्र-तिरूपा, ५ चक्षुःकान्ता, ६ श्रीकान्ता, ७ मरुदेवी. आ सर्व कुलकर गंगा अने सिंधु नदीना मध्य खंडमां थया छे.

आ कुलकर थवानुं कारण एवुं छे के, त्रीजो आरो उत्तरतां, दश जा-तिना कल्प वृक्षो कालना दोषथी अल्प थइ गया, तेथी युगलीयाउंए पोतपोताना वृक्षोपर ममत्व कर्यो.

ज्यारे बीजा युगलीआउंए राखेला वृक्षोथी फल लेवा लाग्या, त्यारे ममत्ववाला युगलो तेउंनी साथे क्लेश करवा लाग्या. युगलीआ पुरुषोने एवो विचार थयो के अमारा क्लेशनो निवेडो लावे तेवो कोइ पुरुष थाय तो सारुं; तेवामां ते युगलीआउं मध्येथी एक युगलने वनना एक श्वेत-हाथीए प्रेमथी पोताना स्कंध उपर चडाव्यो. ज्यारे ते युगल पुरुष ए-कलो हाथी उपर चढी फरवा लाग्यो, त्यारे बीजा युगलो विचार करवा

लाग्या के, आ युगल अमारामां मोटोछे, कारण के ते हाथी उपर चढी फरे छे, अने अमे तो पगे चालीये छीये, तेथी तेने न्यायाधीश बनाववामां आवे तो सारु, अर्थात् ते जे कहे ते अमारे मानवुं पछी तेउंए तेने न्यायाधीश बनाव्यो जे कारणथी हाथीए युगलने पोतानी उपर च ढाव्यो ते कारण, तथा तेउंना पूर्व भवोनी कथा आवश्यकसूत्र तथा प्र थम अनुयोगथी जाणवी

न्यायाधीश युगल विमलवाहने सर्व युगलियाने कल्पवृक्षो वेहेंची आप्यां जे युगल पोताना वृक्षथी संतोष नही पामतां, बीजाना वृक्षथी फल लेवा लाग्या, तेउंनी साथे क्लेष थतां, ते असंतोषी युगलोने विम लवाहन पासे लाववामां आवता हता विमलवाहन तेउंने कहेतो के "हा" तमे आ शु कर्यु ? त्यारथी विमलवाहने हाकारनी दंडनीति प्रवर्तावी ते हाकार दंडनीतिथी फरी तेउं तेवा काम करता नहोता पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया, ते पण पोताना पितानी जेम राजा अर्थात् कुलकर थया तेना वखतमां पण हाकारज दंड रह्यो तेने यशस्वान् नामा पुत्र थया, यशस्वान्ने अभिचन्द्र नामा पुत्र थया आ बनेना समयमां थोडा अपराधवालाने हाकार दंड अने विशेष अ पराधवालाने मकार दंड, अर्थात् आ काम न करवु, आ बे दंडनीति प्रवर्ती अभिचन्द्रना पुत्र प्रश्रेणि थया प्रश्रेणिना पुत्र मरुदेव थया, अने मरुदेवना पुत्र नाभि थया आ त्रण कुलकरोना समयमां हाकार, म कार, अने धिक्कार, आ त्रण दंडनीति प्रवर्ती तेमां थोडा अपराधीने हाकार, मध्यम अपराधीने मकार, अने उत्कृष्ट अपराधीने धिक्कार दंड करता हता नाभि कुलकरने मरुदेवी नामा भार्या हती आ नाभिकु लकर इक्ष्वाकु भूमि अर्थात् विनिता नगरीनी भूमिमां विशेष काल नि वास करता हता आ भूमि काश्मीर देशनी उपर हती, कारण के वि निता नगरीनी चारे बाजुए चार पर्वत हता पूर्व दिशिमां अष्टापद अ र्थात् केलास गिरि, दक्षिण दिशिमा महाशैल्य, पश्चिम दिशिमां सुर शैल्य, अने उत्तर दिशिमा उदयाचल पर्वत, हता

ते नाभिकुलकरनी मरुदेवी नामनी भार्यानी कुक्षिमां आषाढ बद चोथनी रात्रिए सर्वार्थसिद्ध देवलोकथी चवीने श्रीऋषभदेवनो जीव,

गर्भमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. मरुदेवीये चौद स्वप्नो दीठां. इंद्र महाराजे स्वप्न फल कह्यां. चैत्र वद आठमने दिवसे श्रीरीषभदेवजीनो जन्म थयो. छप्पन दिशाकुमारी तथा चोसठ इंद्रोये मली जन्म महोत्सव कर्यो. मरुदेवीये चौद स्वप्नमां प्रथम वृषभनुं स्वप्न दीठुं, तथा पुत्रना बंने साथलोमां वृषभनुं चिन्ह हतुं, ते कारणथी पुत्रनुं नाम रीषभ पाड्युं.

बाल्यावस्थामां श्रीरीषभदेवजीने ज्यारे भूख लागती हती, त्यारे पोताना हाथनो अंगुठो मुखमां लइ चूसता हता. ते अंगुठामां इंद्रे अमृतनो संचार कर्यो हतो. ज्यारे रीषभदेवजी मोटा थया त्यारे देवता तेमने कल्पवृक्षना फल लावी आपता हता. ज्यारे रीषभदेवजी कांइक न्यून वर्षना थया, त्यारे इंद्र तेमनी पासे आव्या, हाथमां इक्षुदंड लाव्या, रिक्त हाथे स्वामि समीप जवुं उचित नथी ते कारणथी इक्षुदंड लाव्या. श्रीरीषभदेवजी ते वखते नाभिकुलकरना खोलामां बेठा हता. श्रीरीषभदेवजीनी दृष्टि इक्षुदंड उपर पडी; इंद्रे कह्युं भगवन्! आप इक्षु भक्षण करशो? रीषभदेवजीये हाथ पसार्यो. इंद्रे इक्षुदंड आप्यो; त्यारथी इंद्रे रीषभदेवजीनो इक्ष्वाकु वंश स्थापन कर्यो; अने श्रीरीषभदेवजीना वंशवालाउये काशकार पीधो, तेथी गोत्रनुं नाम काश्यप थयुं. श्रीरीषभदेवजीना जेजे वयमां जेजे कामो उचित हतां, तेते सर्व शक्र इंद्रे कर्यां. जेजे शक्रइंद्रो थाय छे तेउनो अनादि कालथी आ जीतकल्प छे, के प्रथम भगवानना वयोचित सर्व काम करवां.

ते अवसरे एक छोकरो अने एक छोकरी, बेहेनभाइ बाल्यावस्थामां ताडवृक्षनी नीचे रमता हता. ते समये ताडनुं फल पडवाथी छोकरो मरी गयो. नाभिकुलकरे ते समये विचार कर्यो के आ छोकरी रीषभदेवनी भार्या थशे एम निश्चय करी पोतानी पासे राखी. तेनुं नाम सुनंदा हतुं. बीजी जे रीषभदेवजीनी साथे जन्मी हती, तेनुं नाम सुमंगला हतुं. ते बंनेनी साथे रीषभदेव बाल्यावस्थामां रमता हता, अनुक्रमे यौवन प्राप्त थये इंद्रे विवाहनो प्रारंभ कर्यो. पूर्वे युगल समयमां विवाहविधि नहोतो, ते कारणथी आ विवाहमां पुरुषनां कृत्यो तो सर्व इंद्रे कर्यां, अने स्त्रीना कृत्य सर्व इंद्राणीउये कर्यां, त्यारथी विवाहविधि जगतमां प्रचलित थइ. श्रीरीषभदेवजीने बंने भार्याउनी साथे सांसारिक विषयसु-

ख जोगवतां ज्यारे ७ लाख पूर्व व्यतीत थया, त्यारे सुमगला राणीने जरत अने ब्राह्मी युगल जन्म्या, अने सुनदाने बाहुबली अने सुंदरीयु गल जन्म्या पछी सुनदाने तो बीजा पुत्र पुत्री जन्म्या नहि, परंतु सु मगलाने ओगणपचास पुत्रोना जोडलां जन्म्या सर्व मली सो पुत्र अने बे पुत्रीओ श्रीरीषजदेवजीना थया तेओना नाम लखीये छीये

१ जरत, २ बाहुबली, ३ श्रीमस्तक, ४ श्रीपुत्रांगारक, ५ श्रीमल्लिदेव, ६ अगज्योति, ७ मलयदेव, ८ जार्गवतार्थ, ९ बगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनाथ, १२ मानवर्त्तिक, १३ मानयुक्ति, १४ वैदर्जदेव, १५ वनवासना थ, १६ महीपक, १७ धर्मराष्ट्र, १८ मायकदेव, १९ आस्मक, २० दंडक, २१ कलिंग, २२ इषकदेव, २३ पुरुषदेव, २४ अकल, २५ जोगदेव, २६ वी र्यजोग, २७ गणनाथ, २८ तीर्णनाथ, २९ अवुदपति, ३० आयुर्वीर्य, ३१ नायक, ३२ कालिक, ३३ आनर्त्तक, ३४ सारिक, ३५ गृहपति ३६ करदेव ३७ कच्छनाथ, ३८ सुराष्ट्र, ३९ नर्मद, ४० सारस्वत, ४१ तापसदेव, ४२ कुरु, ४३ जगल, ४४ पचाल, ४५ शूरसेन, ४६ पुट, ४७ कालंगदेव, ४८ काशी कुमार, ४९ कौशल्य, ५० जद्रकाश, ५१ विकाशक, ५२ त्रिगर्त्त, ५३ आव र्त, ५४ साल्लु, ५५ मत्स्यदेव, ५६ कुलियक, ५७ मुषकदेव, ५८ बाल्हीक, ५९ कांबोज, ६० मधुनाथ, ६१ साद्रक, ६२ आत्रेय, ६३ यवन, ६४ आ जीर, ६५ बानदेव, ६६ वानस, ६७ कैकये, ६८ सिंधु, ६९ सौवीर, ७० ग धार, ७१ काष्ठदेव, ७२ तोषक, ७३ शौरक, ७४ जारद्वाज, ७५ शूरदेव, ७६ प्रस्थान, ७७ कर्णक, ७८ त्रिपुर नाथ, ७९ अवंतिनाथ, ८० चेदिपति, ८१ विष्कज, ८२ नैषध, ८३ दशार्णनाथ, ८४ कुसुमवर्ण, ८५ जूपालदेव, ८६ पाल प्रजु, ८७ कुशल, ८८ पद्म, ८९ महापद्म ९० विनिद्र, ९१ विकेश, ९२ वैदेह, ९३ कच्छपति, ९४ जद्रदेव, ९५ वज्रदेव, ९६ सांद्रजद्र, ९७ सेतज, ९८ वत्स ९९ अगदेव, १०० नरोत्तम श्रीरीषजदेवजीना सो पुत्रोना नाम कह्या

ते अवसरे जीवोना कषाय प्रबल थइ जवाथी पूर्वोक्त हकारादि त्रणे दंडनो जय मनुष्यो नही करवा लाग्या ते वखते श्रीरीषजदेवजीने ज्ञा नादि गुणोमां सर्वथी अधिक लोकोये देखवाथी, ते युगल लोकोये तेम ने विनति करी के हालमा सर्व लोक दंडनो जय करता नथी श्रीरीषजदे

शिल्पी अर्थात् कारीगर बन्या. तेना नाम. १ कुंजकार २ लोहकार, ३ चित्रकार, ४ वस्त्र बनावनार, ५ नाइ. एकेक शिल्पना अवांतर नेद वीशवीश छे. सर्व मली एकसो शिल्प बनाव्या.

हवे कर्मद्वार लखीये छीये. १ खेती करवानुं काम, २ वाणिज्य अर्थात् व्यापार करवानुं काम. इत्यादि. धन ममत्वना अनेक कामो बताव्यां. प्रथम माटीना संचयमां नरी एरण, हथोडो तथा साणसी प्रमुख बनाव्या, पछी तेउथी सर्व वस्तुउं काम लायक बनाववामां आवी.

नरतादि पुरुष वर्गना लोकोने बहोंतेर कला शिखवी. स्त्री जातिनी चोसठ कला ब्राह्मी, सुंदरी प्रमुखने शिखवी, तेना नाम १ लखवानी कला, २ वांचवानी कला, ३ गणितकला, ४ गीतकला, ५ नृत्यकला, ६ ताल बजाववानी कला, ७ पटह बजाववानी कला, ८ मृदंग बजाववानी कला, ए वीणावगाडवानी कला, १० वंशपरिक्षा, ११ नेरीपरिक्षा, १२ १३ तुरंगपरिक्षा, १४ धातुर्वाद, १५ दृष्टिवाद, १६ मंत्रवाद, १७ बलि पलित विनाश, १८ रत्नपरिक्षा, १ए नारीपरिक्षा, २० नरपरिक्षा, २१ छंद बंधन, २२ तर्कजल्पन, २३ नीतिविचार, २४ तत्त्वविचार, २५ कविशक्ति, २६ ज्योतिष शास्त्रज्ञान, २७ वैद्यक ज्ञान, २८ षड्नाषा, २ए योगान्यास, ३० रसायणविधि, ३१ अंजनविधि, ३२ अढार प्रकारनी लीपी, ३३ स्वप्नलक्षण, ३४ इंद्रजालदर्शन, ३५ खेतीकाम, ३६ व्यापारकाम, ३७ राज्यसेवा, ३८ शकुनविचार, ३ए वायुस्तंनन, ४० अग्निस्तंनन, ४१ मेघवृष्टि, ४२ विलेपनविधि, ४३ मर्दनविधि, ४४ उर्ध्वगमन, ४५ घटबंधन ४६ घट न्रमण, ४७ पत्रछेदन, ४८ मर्मनेदन, ४ए फलाकर्षण, ५० जलाकर्षण, ५१ लोकाचार, ५२ लोकरंजन, ५३ अफल वृक्षोने फलवाला करवानुं काम, ५४ खड्गबंधन, ५५ छरीबंधन, ५६ मुद्राविधि, ५७ लोहज्ञान, ५८ दंतसमारण, ५ए काललक्षण, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ मुष्टियुद्ध, ६३ दंडयुद्ध, ६४ दृष्टियुद्ध, ६५ वाग्युद्ध, ६६ खड्गयुद्ध, ६७ गारुड विद्या, ६८ सर्पदमन, ६ए नूतमर्दन, ७० योग ते द्रव्यानुयोग, अक्षरानुयोग, व्याकरण, उषधानुयोग, ७१ वर्षज्ञान, ७२ नाममाला. आ पुरुषनी बहोंतेर कलाना नाम कह्यां.

हवे स्त्रीनी चोसठ कलाना नाम लखीये छीये. १ नृत्यकला, २ औचि-

कल्पवृक्ष फलो आपता बंध थया, जेथी लोको बीजा वृक्षोना कंद, मूल, पत्र, फूल, फल खावा लाग्या केटलाएक इक्षुरस पीवा लाग्या, अने काचा अनाज खावा लाग्या केटलाएक दिवसो गया बाद ज्यारे लोकोने काचुं अनाज पचवा न लाग्युं, त्यारे रीषभदेवजी पासे तेओ आव्या रीषभदेवजीए कह्युं के, तमे हाथवती अनाज मसली फोतरा काढी नाखी खाओ केटलाएक दिवसो पछी ते पण न पचवा लाग्या, त्यारे बीजी रीते काचा अनाज खावानी विधि बतावी, ए प्रमाणे अनेक रीते काचा अनाज खावानी रीत बतावी तोपण काल दोषथी अनाज पाचन न थवा लाग्यु ते अवसरमां जंगलोमां वांस प्रमुखना घसावाथी अग्नि उत्पन्न थयो

प्रश्न – तमे कहो छो के श्रीरीषभदेवजीने जातिस्मरण अने अवधि ज्ञान हतुं, तो पछी रीषभदेवजीए प्रथमथीज अग्नि बनाववानी तेमज ते अग्निथी अनाज रांधीने खावानी विधि केम न बतावी ?

उत्तर – हे भव्य ! एकांत स्निग्ध कालमा तेमज एकांत रुक्षकालमां अग्नि कोइ पण वस्तुथी उत्पन्न थइ शकती नथी कदाचित् कोइ देवता महाविदेह क्षेत्रथी अग्निने अहींआ लइ पण आवे, तो पण ते अग्नि तत्काल ओलवाइ जती हती तेज कारणथी अग्निथी पकावी खावानो उपदेश कर्यो नहोतो

हवे ज्यारे अग्निने तृणादि दाह करता देखी, अपूर्व रत्न जाणी तेओ पकडवा लाग्या, त्यारे तेओना हाथ दाझवा लाग्या, तेथी भयभ्रान्त थइ दोडता आवी श्रीरीषभदेवजीने तेओए सर्व वृत्तांत कह्यो रीषभ देवजीए ते ओने अग्नि लाववानी विधि बतावी ते विधि प्रमाणे अग्नि घरमां लावी तेओए रीषभदेवजीने विनंति करी के हवे अमारे शुं करवुं ? रीषभदेवजीए हस्ति उपर बेठां थकां माटीनुं एक कुंडु बनाव्युं तेमा अनाज पाणी नाखी अग्नि उपर पकावी, रांधी खावानी सर्व विधि बतावी जेना हाथथी प्रथम ते कुंडु पकडाव्युं, अने जेने ते बनाववानी विधि बतावी ते कुंभार नामथी प्रसिद्ध थया, ते कारणथी कुंभार प्रजापति कहेवाय छे धीमे धीमे सर्व प्रकारना अनाज अनेक रीतथी पकावी खावानी विधि प्रवृत्त थइ गइ सर्व विधि श्रीरीषभदेवजीएज बतावी छे

हवे शिल्पद्वार कहीये छीये श्रीरीषभदेवजीना उपदेशथी पांच मूल

जाय छे, अने फरी सामग्री पामी प्रगट पण थाय छे. परंतु नवीन कला, लिपि, वा विद्या उत्पन्न थती नथी. सर्व जे रीषज्ञदेवजीए बतावेल छे, तेज चाले छे, तेनुं स्वरूप आवश्यक सुत्रथी जाणवुं.

ब्राह्मीनुं लग्न बाहुबलीनी साथे कर्युं, अने सुंदरीनो विवाह ज्ञरतनी साथे कर्यो. ते वखतथी माता पितानो कन्या आपवानो व्यवहार प्रचलित थयो.

श्री रीषज्ञदेवजीए एक उदरथी उत्पन्न थयेला बेहेनज्ञाइनो विवाहनो संबंध दूर कर्यो. ते देखीने बीजाउ पण तेमज करवा लाग्या, श्री रीषज्ञदेवजीए बहु वखत सुधी राज्य कर्युं, अने प्रजाने वास्ते अनेक तरेहथी सुखनां साधनो उत्पन्न करी आप्यां; अनेक तरेहनी विद्या, कला, कौशल्यता प्रजाने बतावी; जे कारणथी श्रीरीषज्ञदेवजीने जैनीउ जगत्ना कर्त्ता माने छे. बीजा मतवालाउ जे इश्वरनी करेली सृष्टि कहे छे, ते पण इश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्ना कर्त्ता ब्रह्माआदि, विष्णुआदि, योगीआदि, ज्ञगवानआदि, अर्हंतआदि, तीर्थकर, प्रथम बुद्ध, सर्वथी मोटा, इत्यादि नाम तथा महिमा जे गाय छे, ते सर्व श्री रीषज्ञदेवजीनोज गुणानुवाद छे. बीजो कोइ सृष्टिनो कर्त्ता नथी.

अज्ञानी अने मूर्ख लोकोए स्वकपोलकल्पित शास्त्रोमां इश्वर विषयमां मनमानी कल्पना करेली छे. ते कल्पना बहु जीवो आज पर्यंत साची मानी सर्व कार्यो कर्या जाय छे. जैनमत विना सर्वमत प्रायः ब्राह्मणोएज चलाव्या छे. ते कारणथी ब्राह्मणोज मतोना विश्वकर्मा छे. लौकिक शास्त्रोमां जे कांइ निरुपण करेल छे ते सर्व ब्राह्मणो वास्तेज छे. कारण के शास्त्रो बनावनाराउना संतान प्रमुख शास्त्रना आधारथी खुब खाय छे, पीए छे तथा आनंद करे छे. ब्राह्मणो तथा वेदोनी उत्पत्ति आवश्यक आदि शास्त्रोमां जे प्रमाणे बतावी छे, ते प्रमाणे ज्ञव्यजीवोने जाणवा वास्ते हुं पण आ स्थले लखुं छुं

निदान सर्व जगतनो व्यवहार चलावी, ज्ञरत पुत्रने विनीता नगरीनुं राज्य आप्युं. बाहुबली पुत्रने तक्षिलानुं राज्य आप्युं. बाकीना पुत्रोने बीजा देशोनुं राज्य वेहेंची आप्युं. ते पुत्रोना नामथी ते ते देशो-

त्यकला, ३ चित्रकला, ४ वाजीत्र ५ मंत्र ६ तंत्र, ७ ज्ञान, ८ विज्ञान, ९ दंभ, १० जलस्थल, ११ गीतगान, १२ तालमान, १३ मेघवृष्टि, १४ फलवृष्टि, १५ आरामारोपण, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुनविचार, १९ क्रियाकल्पन, २० संस्कृतजल्पन, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृद्धि, २४ स्वर्णसिद्धि, २५ तैलसुरभिकरण, २६ लीला संचारण, २७ गजतुरंगपरिक्षा, २८ स्त्रीपुरुषना लक्षण, २९ कामक्रिया, ३० अष्टादश लिपिपरिछेद, ३१ तत्कालबुद्धि, ३२ वस्तुशुद्धि, ३३ वैद्यकक्रिया, ३४ सुवर्णरत्नभेद, ३५ घटभ्रम, ३६ सारपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनपाटव, ४१ भोज्यविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ काव्यशक्ति, ४४ व्याकरण, ४५ शालिखंडन ४६ मुखमंडन, ४७ कथाकथन, ४८ कुसुमगुंथन, ४९ वरवेष, ५० सकल भाषा विशेष, ५१, अभिधानपरिज्ञान, ५२ आभरणप्रवेश, ५३ भृत्योपचार, ५४ गृहाचार ५५ शाठ्यकरण, ५६ परनिराकरण ५७ धान्यरंधन, ५८ केशबंधन, ५९ वीणादिनाद, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार ६२ लोकव्यवहार, ६३ अत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका आ स्त्रीनी चोसठ कलाना नाम कह्यां

वर्त्तमानमां सर्व सांसारिक कला पूर्वोक्त कलाओनी अंतर्गत छे प्रथम लिपि कलाना अढार भेद दक्षिण हाथथी ब्राह्मी पुत्रीने शिखव्या तेना नाम हंसलिपि, २ भूतलिपि, ३ यक्षलिपि, ४ राक्षसलिपि, ५ यावनीलिपि, ६ तुरकीलिपि, ७ कीरीलिपि, ८ द्राविडीलिपि, ९ सैंधवीलिपि, १० मालवीलिपि, ११ नडीलिपि, १२ नागरीलिपि, १३ लाटीलिपि, १४ फारसीलिपि, १५ अनिमित्तीलिपि, १६ चाणक्कीलिपि, १७ मूलदेवी, १८ उड्डीलिपि आ अढार प्रकारनी ब्राह्मी लिपि, देश विशेषना भेदथी अनेक तरेहनी थयेली छे जेम के १ लाटी, २ चौडी, ३ डाहली, ४ कानडी, ५ गोर्जरी, ६ सोरठी, ७ मराठी, ८ कोंकणी, ९ खुरासाणी, १० मागधी, ११ सिंहली, १२ हाडी, १३ कीरी, १४ हम्मीरी, १५ परतीरी, १६ मसी, १७ मालवी, १८ महायोधी इत्यादि सुंदरी पुत्रीने डाबा हाथथी अंकविद्या शिखवी, जे जगतमां गणितविद्या प्रचलित छे, जेनाथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय छे केटलीएक कला, लिपि तथा विद्या केटलीएकवार लुप्त थइ

जाय छे, अने फरी सामग्री पामी प्रगट पण थाय छे. परंतु नवीन कला, लिपि, वा विद्या उत्पन्न थती नथी. सर्व जे रीषन्नदेवजीए बतावेल छे, तेज चाले छे, तेनुं स्वरूप आवश्यक सुत्रथी जाणवुं.

ब्राह्मीनुं लग्न बाहुबलीनी साथे कर्युं, अने सुंदरीनो विवाह न्नरतनी साथे कर्यो. ते वखतथी माता पितानो कन्या आपवानो व्यवहार प्रचलित थयो.

श्री रीषन्नदेवजीए एक उदरथी उत्पन्न थयेला बेहेनन्नाइनो विवाहनो संबंध दूर कर्यो. ते देखीने बीजाउ पण तेमज करवा लाग्या, श्री रीषन्नदेवजीए बहु वखत सुधी राज्य कर्युं, अने प्रजाने वास्ते अनेक तरेहथी सुखनां साधनो उत्पन्न करी आप्यां; अनेक तरेहनी विद्या, कला, कौशल्यता प्रजाने बतावी; जे कारणथी श्रीरीषन्नदेवजीने जैनीउ जगत्‌ना कर्त्ता माने छे. बीजा मतवालाउ जे इश्वरनी करेली सृष्टि कहे छे, ते पण इश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्‌ना कर्त्ता ब्रह्माआदि, विष्णुआदि, योगीआदि, न्नगवानआदि, अर्हंतआदि, तीर्थंकर, प्रथम बुद्ध, सर्वथी मोटा, इत्यादि नाम तथा महिमा जे गाय छे, ते सर्व श्री रीषन्नदेवजीनोज गुणानुवाद छे. बीजो कोइ सृष्टिनो कर्त्ता नथी.

अज्ञानी अने मूर्ख लोकोए स्वकपोलकल्पित शास्त्रोमां इश्वर विषयमां मनमानी कल्पना करेली छे. ते कल्पना बहु जीवो आज पर्यंत साची मानी सर्व कार्यो कर्या जाय छे. जैनमत विना सर्वमत प्रायः ब्राह्मणोएज चलाव्या छे. ते कारणथी ब्राह्मणोज मतोना विश्वकर्मा छे. लौकिक शास्त्रोमां जे कांइ निरुपण करेल छे ते सर्व ब्राह्मणो वास्तेज छे. कारण के शास्त्रो बनावनाराउना संतान प्रमुख शास्त्रना आधारथी खुब खाय छे, पीए छे तथा आनंद करे छे. ब्राह्मणो तथा वेदोनी उत्पत्ति आवश्यक आदि शास्त्रोमां जे प्रमाणे बतावी छे, ते प्रमाणे न्नव्यजीवोने जाणवा वास्ते हुं पण आ स्थले लखुं छुं

निदान सर्व जगतनो व्यवहार चलावी, न्नरत पुत्रने विनीता नगरीनुं राज्य आप्युं. वाहुबली पुत्रने तक्षिलानुं राज्य आप्युं. बाकीना पुत्रोने बीजा देशोनुं राज्य वेहेंची आप्युं. ते पुत्रोना नामथी ते ते देशो

ना नाम पण पाडवामां आव्या जेम के अंगदेश, वगदेश, मगधदेश इत्यादि देशोना नामो पण पुत्रोना नामथी पड्यां

बाद श्री रीषभदेवजीए स्वयमेव दीक्षा लीधी, तेमनी साथे कच्छ महाकच्छ सामतादि चार हजार पुरुषोए दीक्षा लीधी

श्रीरीषभदेवजीने एक वर्ष सुधी भिक्षा न मली, तेटला वखतमां चार हजार पुरुषो तो भूखे मरवाथी जटाधारी बनी कंद, मूल, फल, फूल पत्रादि आहार करतां गंगा नदीना बन्ने किनारा उपर तापसो बनी रहेवा लाग्या, अने श्री रीषभदेवजीनुं ध्यान तथा जाप ब्रह्माआदि शब्दोथी करवा लाग्या

श्री रीषभदेवजी एक वर्ष वित्या बाद वैशाख सुद ३ ना रोज हस्तिनापुरमां आव्या, त्यां श्री रीषभदेवजीना पौत्र श्रेयांस कुमारे जाति स्मरण ज्ञानना बलथी भिक्षा वास्ते विहार करता एवा भगवानने इक्षु रसथी पारणु कराव्यु ते वखतमां लोकोए भिक्षाचरोने देख्या न होता अने भिक्षा आपवानी विधि पण तेओ जाणता न होता, ते कारणथी श्री रीषभदेवजीने लोको हाथी, घोडा, आभूषण, कन्या आदिनी भेटनो बहु करता हता, परंतु श्री रीषभदेवजी तो त्यागी होवाथी तेओनी भेट लेता न होता पछी लोकोए श्रेयास कुमारने भिक्षा आपतां देखी पुछ्यु के तमे रीषभदेवजीने भिक्षार्थी केवी रीते जाण्या? त्यारे श्रेयास कुमारे लोकोने पोतानो तथा श्री रीषभदेवजीनो पूर्वना आठ भवोनो संबंध कह्यो ते सर्व अधिकार आवश्यक शास्त्रथी जाणवो पछी सर्व लोक भिक्षा देवानी रीति जाणी गया

श्री रीषभदेवजी एक हजार वर्ष सुधी देशोमां छद्मस्थपणे विचरता हुया ते अवस्थामां कच्छ अने महाकच्छना पुत्र नमि तथा विनमिए प्रभुनी बहुज सेवा भक्ति करी तेओने धरणेंद्रे प्रज्ञप्ति आदि अडतालीश हजार (४८०००) विद्या आपी वैताढ्य गिरिनी दक्षिण तथा उत्तर बाजु रूप एकेक श्रेणिनु दरेकने राज्य आप्यु तेओ सर्वे विद्याधर कहेवाया आ विद्याधरोना वंशमां रावण, कुंभकरणादि तथा वाली सुग्रीवादि अने पवन हनुमानादि सर्वे विद्याधर थया छे

एकदा छद्मस्थ अवस्थामा श्री रीषभदेवजी विहार करता करता बा

हुबलीनी तक्षिला नगरीमां गया. बहार बगीचामां कायोत्सर्गमां स्थित रह्या. ज्यारे बाहुबलीने जगवान पधारवाना समाचार मळ्या, त्यारे तेणे विचार कर्यो के आवती काले वडा आंडंबरथी पिताजीने वंदना करवा जइश. प्रजात समये ज्यारे मोटा आडंबरथी पिताजीने वंदना करवा गया, त्यारे जगवान तो त्यांथी विहार करी गया, एम जाणवामां आवतां बाहुबली बहुज उदास थइ गया. पछी श्रीरीषजदेवजीना चरणोना स्थल उपर धर्मचक्रनी स्थापना करी. आ धर्मचक्र तीर्थ विक्रम राजाना वखत सुधी रह्युं, पछी ज्यारे पश्चिम दिशामां नवा मतमतांतरो उत्पन्न थया, त्यारे ते तीर्थ नष्ट थयुं.

अनुक्रमे श्रीरीषजदेवजी जगवान वाल्हीक, जोनक, अडंब, इल्लाक, सुवर्णजूमि, पह्लवकादि देशोमां विहार करवा लाग्या. जेजे देशवालाउंये श्रीरीषजदेवजीनां दर्शन कर्यां, तेउ सर्व जद्रक स्वजाववाला थया, अने बाकीनाउ सर्व म्लेछ, निर्दयी, अनार्य थइ गया; अनेक कल्पनिक मतो मानवा लाग्या, अने तेउना व्यवहार पण विपरीत तरेहना थया.

श्रीरीषजदेवजी एक हजार वर्ष व्यतीत थया बाद विहार करता करता विनीता नगरीना पुरिमताल नामना बागमां गया. बगीचामां वडवृक्ष नीचे फागण वदी एकादशीने दिवसे, त्रण दिवसना उपवास छतां प्रथम पहोरमां केवलज्ञान तथा केवलदर्शन अर्थात् सचराचर जगतमां जूत, जविष्य वर्तमानना सर्व जीवाजीव वस्तुमात्रनुं उत्पत्ति स्थिति अने लयनुं जाणवुं तथा देखवुं थयुं. ते समये चोसठ इंद्रो त्यां आव्या, समवसरणनी देवोये रचना करी, तेमां त्रण गढ अने बार दरवाजा बनाव्या, मध्य जागमां मणिपीठिका बनावी, तेना मध्य जागमां अशोक वृक्षनी रचना करी, तेनी नीचे दरवाजानी सन्मुख चारे दिशामां चार सिंहासनोनी रचना करी. तेमां पूर्वना सिंहासन उपर श्रीरीषजदेव जगवान बिराजमान थया, अने बाकीना त्रण सिंहासनो उपर जगवान सदृश त्रण बिंबोनी स्थापना करी, जे बिंबोने देखवाथी, ते ते दरवाजेथी आवनारा सर्वे श्रीरीषजदेव जगवाननेज ते ते बाजुये देखता हता. तेज कारणथी जगतमां चार मुखवाला श्रीरीषजदेव जगवानज ब्रह्माना नामथी प्रसिद्ध थया छे. धनंजय कोशमां श्रीरीषजदेवजीनुं नाम ब्रह्मा लखेल छे.

ज्यारे श्रीरीषजदेव जगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थयु, त्यारे जरतराजा, ते वात श्रवण करी सकल परिवार संयुक्त समवसरणमां वंदना करवाने तेमज उपदेश श्रवण करवाने आव्या

श्रीरीषजदेव जगवाननो उपदेश श्रवण करी जरत राजाना पांचसो पुत्र तथा सातसो पौत्र, अने ब्राह्मी तथा बीजी अनेक स्त्रीउंए दीक्षा लीधी. मरुदेवीजी तो जगवानना प्रातिहार्यादि देखी तथा वाणी सांजली केवलज्ञान पामी मोक्ष पाम्या हतां जरतना मोटा पुत्र रीषजसेन (पुंडरीक) हता, ते सोरठ देशमां शत्रुंजय तीर्थ उपर अनशन करी मोक्ष पाम्या. ते कारणथी शत्रुंजयनुं नाम पुंडरीक राखवामां आव्यु

जरतना जे पांचसो पुत्रोये दीक्षा लीधी हती, तेउंमां एकनुं नाम मरीचि हतु मरीचिने जैनदीक्षानु पालवु अति कठिन लागवाथी पोतानी आजीविका चलाववा वास्ते स्वमतिकल्पनाये तेमणे नवो उपाय उत्पन्न कर्यो फरी गृहस्थावास अंगीकार करवानुं काम तेने हीनतावालु लाग्यु,तेथी एक कुलिंग आरोपण कर्युं एवा विचारथी के साधु तो मनदंड, वचनदंड अने कायदंडथी रहित छे, अने हु तो ए त्रणे दंड संयुक्त हुं, ते कारणथी मारे त्रिदंड राखवो जोइयें साधुउं तो द्रव्य अने जावथी मुंडित छे, तेथी लोच करे छे, अने हु तो द्रव्यमुंडित छु, तेथी मारे अस्त्राथी मस्तक मुंडाववुं जोइयें, अने शिखा पण राखवी जोइयें, वली साधु तो पांच महाव्रत पाले छे, परंतु मारे तो मात्र स्थूल जीवनी हिंसानो त्याग छे साधु तो निःकंचनवाला छे, अर्थात् परिग्रह रहित छे, अने मारे तो पवित्रकादि राखवी जोइयें साधु तो शीलथी सुगंधित छे, अने हु तेवो नथी, तेथी मारे चंदन प्रमुखनी सुगध लेवी ठीक छे साधु तो मोह रहित छे, अने हुं तो मोह संयुक्त हुं, तेथी मोहाछादितने छत्री राखवी जोइयें साधु तो उपानह रहित छे, मारे तो उपानह पेहेरवा जोइयें साधु तो निर्मल छे, तेथी शुक्लांबरधारी छे, अने हुं तो क्रोध, मान, माया, लोज आ चारे कषायो संयुक्त छु, तेथी मलीन होवाथी, कषायवस्त्र अर्थात् गेरु रंगवाला वस्त्रो मारे राखवा जोइयें साधु तो सचित्त जलना त्यागी छे,अने हु तो गलीने सचित्त जल पीश, अने स्नान पण करीश एवीज रीते स्थूल मृषावाद आदिथी पण ते निवृत्त थयो आ प्रमाणे मरीचिये पोता

नी आजीविकावास्ते स्वमतिपूर्वक लिंग बनाव्युं, अने तेज लिंग परिव्राजकोनुं रह्युं.

मरीचि भगवाननी साथेज विहार करतो हतो, तेनुं साधुउथी विपरीत लिंग देखी लोको पुछवा लाग्या, परंतु मरीचि साधुनो यथार्थ धर्म कहेतो हतो, अने पोतानो पांखंड वेष पूर्वोक्त रीतिये प्रगट करतो हतो. तेनीपासे उपदेश श्रवण करी जेउ दीक्षा लेवा चाहता हता, तेउने भगवानना साधु पासे दीक्षा लेवा मोकलतो हतो. एकदा मरीचि रोगग्रस्त थयो, अने विचार करतां पोते असंयति छे एवुं लागवाथी, तेमज साधुउ मारी वैयावच्च करशे नहीं, अने मारे तेउनी पासे वैयावच्च करावची ते पण ठीक नहीं एवुं धारी, मारे एक चेलो वैयावच्चवास्ते करवो जोइये, एवो निश्चय कर्यो. आ वखते श्रीरीषभदेव भगवान निर्वाण पाम्या हता. ते समये एक कपिल नामनो राजानो पुत्र हतो, ते मरीचि पासे धर्म श्रवण करवा आव्यो. मरीचिये तेने यथार्थ साधुनो धर्म बताव्यो. लिंग, आचार सर्व बताव्या. कपिले पुछ्युं के तमारुं लिंग विलक्षण केम छे? मरीचिये कह्युं हुं साधुधर्म पालवा असमर्थ छुं, तेज कारणथी आ लिंग, निर्वाहवास्ते स्वकपोलकल्पित बनावेल छे. कपिले कह्युं के मने पण श्रीरीषभदेव भगवाननो धर्म रुचतो नथी. तमे कहो? तमारी पासे धर्म छे के नहीं? मरीचिये जाण्युं के आ भारेकर्मी जीव छे, अने मारोज शिष्य थवा योग्य छे, ते लोभथी मरीचिये कही दीधुं के त्यां पण धर्म छे, अने मारी पासे पण कांइक धर्म छे. ते सांभली कपिल मरीचिनो शिष्य थयो. आ कपिल मुनिनी उत्पत्ति छे. ते वखते मरीचि तेमज कपिलनी पासे कोइ पण पुस्तक नहोतुं. निःकेवल जे कांइ आचार मरीचिये कपिलने बताव्यो, तेज आचार कपिल करतो रह्यो. मरीचिये उत्सूत्र भाषण करवाथी एक कोटाकोटी सागरोपम सुधी संसारमां जन्ममरणनी वृद्धि करी. मरीचि काल करी गयो. बाद कपिल ग्रंथार्थज्ञानशुन्य, मरीचिनी बतावेली रीति उपरज आचार पालतो हतो. कपिलने आसुरी नामनो शिष्य थयो. कपिले आसुरीने पोतानोज सर्व आचार बताव्यो. कपिले बीजा पण अनेक शिष्यो बनाव्या, तेउना प्रेममां रक्त थयो थको, मरीने ब्रह्मनामा पांचमा देवलोकमां देवता थयो. उत्पत्ति अनंतर अवधिज्ञानथी जोयुं के

दानादि शुं शुं अनुष्ठान में कर्यां छे ? जेथी हुं देवता थयो, ज्ञानथी जोतां पोताना शिष्य आसुरीने यथार्थज्ञानशून्य दीठो विचार कर्यो के मारो शिष्य कंइ पण जाणतो नथी, तेने कांइक तत्त्वनो उपदेश करुं तो ठीक. एवो विचार करी कपिल देवता आकाशमां पचवर्णना मंडलमां रही, पोताना शिष्यने तत्त्वज्ञाननो उपदेश करवा लाग्या यथा– अव्यक्तथी व्यक्त प्रगट थाय छे, ते अवसरे षष्टितंत्रशास्त्र आसुरीए रच्यु तेमां एवु कथन कर्युं के प्रकृतिमांथी महान् थाय छे, अने महान्थी अहंकार थाय छे, अहंकारथी गण षोडश थाय छे, गणषोडशथी, पंचतन्मात्रा थाय छे, अने पंचतन्मात्राथी पंच महाभूत थाय छे, इत्यादि स्वरूप आ प्रथमां पूर्वे सांख्यमां लखी आव्या छीयें तेउना संप्रदायमां नामीसंख नामा आचार्य थया, त्यारथी ते मतनु नाम सांख्यमत प्रसिद्ध थयु वास्तविक रीते सर्व परिव्राजक संन्यासीउना लिंग आचारादि धर्मनु मूल मरीचि थयो ते सांख्यमतना तत्वो हाल पण भगवद्गीता तथा भागवतादि ग्रंथोमां अने सांख्यमतना शास्त्रोमां प्रचलित छे एक जैनमतविना बीजा सर्व मतोनु मूल आ मतबीज समजवु जोइए

त्यारे श्रीरीषभदेवजीने केवलज्ञान उत्पन्न थयु त्यारे भरतने पण तेज रोज आयुधशालामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं जेथी भरते भरत क्षेत्रना छए खंडोमा पोतानु राज्य स्थापी आज्ञा मनावी, तेज कारणथी तेनु नाम भरतखंड प्रसिद्ध थयु

त्यारे भरते पोताना नाना भाइउने आज्ञा मनाववा वास्ते दूत मोकल्या, त्यारे तेउंए विचार कर्यो के राज्य तो अमने पिताश्री आपी गया छे तो पछी भरतनी आज्ञा अमारे शा वास्ते मानवी जोइये ! चालो पिताश्री पासे जइ सर्व वृत्तांत कहीयें जो पिताजी कहेके तमे भरतनी आज्ञा मानो तो पछी अमे भरतनी आज्ञा मानीशु, अने पिताजी कहेके तमे भरतनी साथे लडो, तो पछी अमे भरतनीसाथे लडशु, एवो विचार करी अठाणु भाइउं कैलास पर्वत उपर श्रीरीषभदेव भगवान पासे गया भगवान तेउना अंत करणना अभिप्राय जाणी तेउने उपदेश करता हवा श्री भगवाने जे उपदेश कर्यो ते श्रीसूत्रकृतांग सूत्रना बीजा वैतालीय अध्ययनमां लखेल छे ते उपदेश श्रवण करी भगवानना अ

छाणु पुत्रोए दीक्षा लइ लीधी. सर्व तकरार तजी दीधी. तेम बनवाथी भरतनी अपकीर्त्ति थइ; तेथी भरत चक्रवर्त्ती पांचसो गाडां पक्काननां लावी समवसरणमां आव्या, अने कहेवा लाग्या के हुं मारा भाइओने भोजन करावीश, अने मारो अपराध क्षमा करावीश. श्री रीषभदेव भगवाने कह्युं के, एवो आहार साधुने कल्पे नहीं. ते सांभली भरत मनमां बहुज उदास थया. तेमणे पछी पुछ्युं के भगवन् आ आहार कोने खवरावुं? त्यारे इंद्रे कह्युं के तमाराथी जेओ गुणोमां अधिक होय तेओने आ भोजन आपो. भरते विचार कर्यो के माराथी गुणाधिक तो श्रावक छे, तेथी तेओने भोजन करावुं, एवो निश्चय करी सर्वे गुणवान श्रावकोने भोजन कराव्युं. वली ते श्रावकोने भरतजीए कह्युं के तमे सर्वे प्रतिदिन मारुं भोजन कर्या करो? तमारे खेती वाणिज्यादि कांइ पण काम करवुं नहिं. निःकेवल स्वाध्याय करवामां तत्पर रहो. भोजन करी मारा मेहेलोना दरवाजा पासे बेसी आप्रमाणे कहो "जीतो भवान् वर्द्धते भयं तस्मान्माहन माहनेति" ते श्रावको पण तेमज करता हवा. भरत राजा तो भोगविलासमां मग्न रहेता हता, परंतु ज्यारे श्रावकोना शब्दो सांभलवामां आवता हता त्यारे मनमां विचारता हता के हुं कोनाथी जीतायो छुं? विचार करतां निश्चय थयो के क्रोध, मान, माया अने लोभ, आ चारे कषायोए मने जीतेल छे. अने तेनाथीज भयनी वृद्धि छे, एवा निश्चयात्मक विचारथी भरतजीने भारे वैराग्य उत्पन्न थतो हतो. अनुक्रमे रसोइ जमनारा श्रावको बहु वधी गया, तेथी रसोइ करनाराओए आवीने भरत महाराजने विनंति करी के आ समुदायमां श्रावक कोण छे, अने कोण नथी? ते अमे जाणी शकता नथी. भरतजीए तेओने कह्युं के तमे पुछीने तेओने भोजन करावो. रसोइआओए जमनाराओने पुछतां, जेओ श्रावकना पांच अणुव्रत त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत धारण करनारा हता, तेओने श्रावक मानी भरत महाराज पासे तेओने लाववामां आवता हता. भरत महाराज तेओना शरीर उपर कांकणी रत्नथी त्रण त्रण रेखाना चिन्ह करता, अने दर छ महीने तेओनी परीक्षा करवामां आवती हती. ते सर्वे श्रावक ब्राह्मणना नामथी प्रसिद्ध थया; कारणके ज्यारे भरत महाराजना दरवाजा पासे तेओ माहन माहन शब्द वारंवार उच्चार करता हता,

त्यारे लोको तेउने माहन माहन कहेवा लाग्या जैनमतना शास्त्रोमां प्राकृत भाषामां हाल पण ब्राह्मणोने माहन शब्दथी लखेल छे, संस्कृत ब्राह्मण शब्द छे, ते प्राकृत व्याकरणमा वचण तेमज माहणना स्वरूपथी सिद्ध थाय छे, श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां ब्राह्मणोना नाम "वुद्ध सावया" अर्थात् वडा श्रावक लखेल छे ए प्रमाणे ब्राह्मणोनी उत्पत्ति छे, ते ब्राह्मणो पोताना पुत्रोने साधुउने आपता हता, अने जेउ दीक्षा लेता न हता, तेउ व्रतधारी श्रावक थता हता, आ रीति भरतना राज्यमा हती

भरत महाराजना पुत्र आदित्ययशा थया, अर्थात् सूर्ययशा थया, जेना वंशजो भरतक्षेत्रमा सूर्यवंशी कहेवाय छे बाहुबलीना मोटा पुत्र चंद्रयश थया, तेना वंशजो चन्द्रवंशी कहेवाय छे श्रीरीषभदेवजीना कुरुवंशी कहेवाय छे, जेउमां कौरव पांडव थयेला छे

ज्यारे सूर्ययशा सिंहासन उपर बेठा, त्यारे तेनी पासे काकणी रत्न न होतु काकणीरत्न चक्रवर्ती शिवाय बीजा कोइ पासे होतुं नथी ते कारणथी सूर्ययशा राजाये ब्राह्मण श्रावकोना गलामा सुवर्णमय यज्ञोपवीत दाखल करावी, जे भाषामां जनोइ कहेवाय छे भोजन प्रमुख सर्वे, भरत महाराजनी जेम तेउने आपता रह्या सूर्ययशना पुत्र महायश गादी उपर बेठा, तेणे रूपानी यज्ञोपवीत बनावी आपी बाद तेउना वंशजो रेशमी यज्ञोपवीत आपता हवा छेवटे सादा सूतरनी बनाववामां आवी आ प्रमाणे यज्ञोपवीतनी उत्पत्ति छे

भरतमहाराजनी आठ पाट सुधी तो ब्राह्मणोनी भक्ति भरतजीनी पेठेज थती रही बाद प्रजा पण ब्राह्मणोने भोजन कराववा लागी सर्व स्थले ब्राह्मणो पूजनीक गणावा लाग्या ए प्रमाणे आठमा तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ स्वामिना वखत सुधी सर्व ब्राह्मणो व्रतधारी जैनधर्मी श्रावको रह्या श्रीचंद्रप्रभ भगवाननी पछी केटलोएक काल व्यतीत थया बाद आ भरतखंडमां जैनमत अर्थात् चतुर्विध संघ तथा सर्व शास्त्रो विछेद थइ गया, ते वखते ते ब्राह्मणाभासोने लोको पुछवा लाग्या के अमने धर्मनु स्वरूप बतावो ते वख्ते ब्राह्मणोये स्वमतिकल्पनाथी जेमां पोतानो लाभ दीठो तेवो धर्म बताव्यो अनेक ग्रंथो पण ते प्रमाणे बनाववामां आव्या

ज्यारे नवमा श्रीसुविधिनाथ (पुष्पदंत) अरिहंत थया, त्यारे फरी

जैनधर्म प्रगट थयो. ते जगवाननो धर्म केटलाएक ब्राह्मणाजासोये न अंगीकार कर्यो. स्वकपोलकल्पित मतनोज कदाग्रह राख्यो. साधुउनो द्वेष करवा लाग्या. चारे वेदोनां नामो बदलावी नाख्यां, अने ते वेदोमां मतलब पण कांइनी कांइ लखी दीधी.

हवे चारे वेदोनी उत्पत्ति लखीये ठीये. ज्यारे जरत राजाये ब्राह्मणोनी पूजा करी, त्यारे बीजा लोको पण ब्राह्मणोने अनेक तरेहनां दान आपवा लाग्या. ते प्रसंगे श्रीजरतचक्रवर्तीये श्रीरीषजदेव जगवानना उपदेश अनुसार ब्राह्मणोने निरंतर स्वाध्याय करवावास्ते श्रीआदीश्वर (रीषजदेव) जगवाननी स्तुति तथा श्रावकधर्मस्वरूपगर्जित चार आर्यवेदनी रचना करी. तेना नाम. १ संसार दर्शनवेद २ संस्थापन परामर्शनवेद, ३ तत्त्वावबोध वेद, ४ विद्याप्रबोध वेद. चारे वेदोमां सर्वनयसंयुक्त वस्तु स्वरूप कथन ते ब्राह्मणोने शिखववामां आव्युं. पुर्वोक्त चार वेद तथा ब्राह्मणो आठमा तीर्थंकर सुधी यथार्थ प्रवर्तता रह्या. आठमा तीर्थंकरनुं तीर्थ व्यवछेद थतां ब्राह्मणोये भ्रष्ट थइ धनना लोजथी ते वेदोमां जीवहिंसा दाखल करी. चारे वेद उलट पालट करी नांख्या. जैनधर्मनुं नाम चारे वेदमांथी काढी नाख्युं, एटलुंज नहीं पण अन्योक्तिथी "दैत्य दस्यु वेदबाह्य" इत्यादि नामोथी साधुउनी निंदागर्जित १ रुग्, २ यजुर, ३ साम, ४ अथर्व, आ चार नामना वेद कल्पवामां आव्या. जे ब्राह्मणोये तीर्थंकरोनो उपदेश अंगीकार कर्यो, तेउये पूर्व वेदोना मंत्रोनो त्याग कर्यो नहीं. ते मंत्रो आजसुधी दक्षिणमां कर्णाटकदेशमां जैन ब्राह्मणोने कंठस्थ ठे. ते प्रमाणे अमे देख्युं ठे तथा सांजल्युं ठे. अमारी पासे पण प्राचीन वेदोना केटलाएक मंत्रोठे. यतः ॥ सिरि जरह चक्कवट्टी, आयरिय वेयाणविस्सुउप्पत्ती ॥ माहणपढणत्थमिणं, कहियं सुहझाण विवहारं ॥ १ ॥ जीणतिछे वुछिन्ने, मिछत्ते माहणेहिंतेठविया ॥ अस्संज्याण पूआ, अप्पाणं काहिया तेहिं ॥ २ ॥ इत्यादि. हवे वेदोनी रचना हिंसा संयुक्त, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद अनेपर्वत प्रमुखोये केवी रीते रची तेनुं पण कांइक स्वरूप लखीये ठीये.

बृहदारण्यक उपनिषद्नी जाष्यमां लख्युं ठे के, यज्ञोनुं कथन करनार यज्ञवल्क्य तेना पुत्र याज्ञवल्क्य ठे. ते कहेवाथी एम प्रतीत थाय ठे के

त्यारे लोको तेउने माहन माहन कहेवा लाग्या जैनमतना शास्त्रोमां प्राकृत भाषामां हाल पण ब्राह्मणोने माहन शब्दथी लखेल छे, संस्कृत ब्राह्मण शब्द छे, ते प्राकृत व्याकरणमा बंभण तेमज माहणना स्वरूपथी सिद्ध थाय छे, श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां ब्राह्मणोना नाम "वुड्ढ सावया" अर्थात् वडा श्रावक लखेल छे ए प्रमाणे ब्राह्मणोनी उत्पत्ति छे, ते ब्राह्मणो पोताना पुत्रोने साधुउने आपता हता, अने जेउ दीक्षा लेता न हता, तेउ व्रतधारी श्रावक थता हता, आ रीति भरतना राज्यमां हती

भरत महाराजना पुत्र आदित्ययशा थया, अर्थात् सूर्ययशा थया, जेना वंशजो भरतक्षेत्रमां सूर्यवंशी कहेवाय छे बाहुबलीना मोटा पुत्र चन्द्रयश थया, तेना वंशजो चन्द्रवंशी कहेवाय छे श्रीरीषभदेवजीना कुरुवंशी कहेवाय छे, जेउमां कौरव पांडव थयेला छे

ज्यारे सूर्ययशा सिंहासन उपर बेठा, त्यारे तेनी पासे काकणी रत्न न होतु काकणीरत्न चक्रवर्ती शिवाय बीजा कोइ पासे होतु नथी ते कारणथी सूर्ययशा राजाये ब्राह्मण श्रावकोना गलामां सुवर्णमय यज्ञोपवीत दाखल कराबी, जे भाषामां जनोइ कहेवाय छे भोजन प्रमुख सर्वे, भरत महाराजनी जेम तेउने आपता रह्या सूर्ययशना पुत्र महायश गादी उपर बेठा, तेणे रूपानी यज्ञोपवीत बनावी आपी बाद तेउना वंशजो रेशमी यज्ञोपवीत आपता हवा छेवटे सादा सूतरनी बनाववामां आवी आ प्रमाणे यज्ञोपवीतनी उत्पत्ति छे

भरतमहाराजनी आठ पाट सुधी तो ब्राह्मणोनी भक्ति भरतजीनी पेठेज थती रही बाद प्रजा पण ब्राह्मणोने भोजन करावबा लागी सर्व स्थले ब्राह्मणो पुजनीक गणावा लाग्या ए प्रमाणे आठमा तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ स्वामिना वखत सुधी सर्व ब्राह्मणो व्रतधारी जैनधर्मी श्रावको रह्या श्रीचंद्रप्रभ भगवाननी पठी केटलोएक काल व्यतीत थया बाद आ भरतखंडमां जैनमत अथात् चतुर्विध संघ तथा सर्व शास्त्रो विछेद थइ गयां, ते वखते से ब्राह्मणाभासोने लोको पुछवा लाग्या के अमने धर्मनु स्वरूप बतावो ते वखते ब्राह्मणोये स्वमतिकल्पनाथी जेमां पोतानो लाभ दीठो तेवो धर्म बताव्यो अनेक ग्रथो पण ते प्रमाणे बनाववामां आव्या

ज्यारे नवमा श्रीसुविधिनाथ (पुष्पदंत) अरिहंत थया, त्यारे फरी

जैनधर्म प्रगट थयो. ते जगवाननो धर्म केटलाएक ब्राह्मणाजासोये न अंगीकार कर्यो. स्वकपोलकल्पित मतनोज कदाग्रह राख्यो. साधुउनो द्वेष करवा लाग्या. चारे वेदोनां नामो बदलावी नाख्यां, अने ते वेदोमां मतलब पण कांइनी कांइ लखी दीधी.

हवे चारे वेदोनी उत्पत्ति लखीये ठीये. ज्यारे जरत राजाये ब्राह्मणोनी पूजा करी, त्यारे बीजा लोको पण ब्राह्मणोने अनेक तरेहनां दान आपवा लाग्या. ते प्रसंगे श्रीजरतचक्रवर्तीये श्रीरीषजदेव जगवानना उपदेश अनुसार ब्राह्मणोने निरंतर स्वाध्याय करवावास्ते श्रीआदीश्वर (रीषजदेव) जगवाननी स्तुति तथा श्रावकधर्मस्वरूपगर्जित चार आर्यवेदनी रचना करी. तेना नाम. १ संसार दर्शनवेद २ संस्थापन परामर्शनवेद, ३ तत्त्वावबोध वेद, ४ विद्याप्रबोध वेद. चारे वेदोमां सर्वनयसंयुक्त वस्तु स्वरूप कथन ते ब्राह्मणोने शिखववामां आव्युं. पुर्वोक्त चार वेद तथा ब्राह्मणो आठमा तीर्थंकर सुधी यथार्थ प्रवर्तता रह्या. आठमा तीर्थंकरनुं तीर्थ व्यवछेद थतां ब्राह्मणोये ज्रष्ट थइ धनना लोजथी ते वेदोमां जीवहिंसा दाखल करी. चारे वेद उलट पालट करी नांख्या. जैनधर्मनुं नाम चारे वेदमांथी काढी नाख्युं, एटलुंज नहीं पण अन्योक्तिथी "दैत्य दस्यु वेदबाह्य" इत्यादि नामोथी साधुउनी निंदागर्जित १ रुग्, २ यजुर, ३ साम, ४ अथर्व, आ चार नामना वेद कल्पवामां आव्या. जे ब्राह्मणोये तीर्थंकरोनो उपदेश अंगीकार कर्यो, तेउये पूर्व वेदोना मंत्रोनो त्याग कर्यो नहीं. ते मंत्रो आजसुधी दक्षिणमां कर्णाटकदेशमां जैन ब्राह्मणोने कंठस्थ ठे. ते प्रमाणे अमे देख्युं ठे तथा सांजल्युं ठे. अमारी पासे पण प्राचीन वेदोना केटलाएक मंत्रोठे. यतः ॥ सिरि जरह चक्कवट्टी, आयरिय वेयाणविस्सुउप्पत्ती ॥ माहणपढणत्थमिणं, कहियं सुहफ्राण विवहारं ॥ १ ॥ जीणतिछे वुछिन्ने, मिछत्ते माहणे हिंतेठविया ॥ अस्संज्याण पूआ, अप्पाणं काहिया तेहिं ॥ २ ॥ इत्यादि. हवे वेदोनीरचना हिंसा संयुक्त, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद अनेपर्वत प्रमुखोये केवी रीते रची तेनुं पण कांइक स्वरूप लखीये ठीये.

वृहदारण्यक उपनिषद्नी जाष्यमां लख्युं ठे के, यज्ञोनुं कथन करनार यज्ञवल्क्य तेना पुत्र याज्ञवल्क्य ठे. ते कहेवाथी एम प्रतीत थाय ठे के

यज्ञोनी रीति प्राय याज्ञवल्क्यथीज चाली छे ब्राह्मण लोकोये शास्त्रोमां लख्यु छे के याज्ञवल्क्ये पूर्वली ब्रह्मविद्या वमीने नवीन ब्रह्मविद्या सूर्यनी पासे शिखी, प्रचलित करी, तेथी पण एज अनुमान थाय छे के, याज्ञवल्क्येज प्राचीन वेद तजी दीधा अने नवा वेद बनाव्या

श्री त्रेशठ शिलाका पुरुष चरित्र प्रथमा आठमा पर्वना बीजा सर्गमां लख्युं छे के काशपुरीमां बे संन्यासणीओ रहेती हती एकनु नाम सुलसा अने बीजीनु नाम सुभद्रा हतु बने वेद, वेदांगोनी जाणकार हती बंने वेदेनोए घणु वादीओने वादमां जीत्या हता ते अवसरे याज्ञवल्क्य परिव्राजक तेओनी साथे वाद करवाने आव्या अरस परस एवी प्रतिज्ञा करी के, जे हारी जाय ते जीतनारनी सेवा करे. याज्ञवल्क्ये सुलसाने वादमां जीती अने पोतानी सेवा करनारी बनावी सुलसा पण रातदिवस याज्ञवल्क्यनी सेवा करवा लागी, याज्ञवल्क्य अने सुलसा बंने यौवनवंत हता तेथी कामातुर थइ जवाथी बने भोगविलासमां लागी गया निदान अग्नि अने घी साथे होय तो घी ओगल्या विना रहेतुं नथी कामक्रीडामां मग्न थइ जवाथी काशपुरीनी पासेनी एक कुटीमां बंने वास करता हता याज्ञवल्क्यथी सुलसाने पुत्र थयो लोकोना उपहासना भयथी ते पुत्रने पिपलाना वृक्षनीचे मुकी बने जणाओ दूर नासी गया आ वृत्तांत सुलसानी बहेन सुभद्रना जाणवामां आव्यु सुभद्रा बालकनीपासे आवी. बालकने देखतां ते स्वयमेव पीपलानुं फल मुखमां पडेलुं चवोलतुं हतु सुभद्राये बालकने लइ पोताना स्थानमां आव्यु तेनु नाम पिप्पलाद राख्यु यत्नथी पालण कर्युं, वेदादि शास्त्रो भणाव्यां, पिप्पलाद घणु बुद्धिमान थयो घणु वादीओने जीती तेओनां अभिमाननो तेणे नाश कर्यो पिप्पलादनी साथे अनुक्रमे याज्ञवल्क्य तथा सुलसा पण वाद करवा आव्या, पिप्पलादे बनेने वादमा जीत्या बाद सुभद्रा मासीना कहेवाथी तेना जाणवामां आव्यु के, ते बने तेना माता पिता छे भने जन्म आपी निर्दयताथी वृक्षनीचे मुकी बंने नासी गया हता, ए वृत्तांत पण तेना जाणवामां आव्यो अत्यत क्रोधयुक्त थइ पिप्पलादे सम्यक् रीतिए याज्ञवल्क्य तथा सुलसा सन्मुख मातृमेध तथा पितृमेध यज्ञोने सिद्ध करी, पितृमेध यज्ञमा याज्ञवल्क्यनो अने मातृमेध यज्ञमां सुलसानो होम कर्यो

पिप्पलाद मीमांसक मतनो मुख्य आचार्य थयो. तेनो वातली नामा शिष्य थयो, त्यारथी जीवहिंसा संयुक्त यज्ञ प्रचलित थया.

याज्ञवल्क्ये नवा वेदो बनाव्या छे, तेमां कांइ पण शंका नथी, कारण के वेदमां लख्युं छे के "याज्ञवल्क्येती होवाच" अर्थात् याज्ञवल्क्य आ प्रमाणे कहेता हवा. वेदमां जे शाखाउ छे ते वेद कर्त्ता ऋषियोना अधिकारनी छे; तेथी आवश्यक सूत्रमां जे लख्युं छे के जीवहिंसा संयुक्त जे वेद छे, ते याज्ञवल्क्य अने सुलसा आदिये बनाव्या छे, ते वात सत्य छे, कारण के केटलीएक उपनिषदोमां पिप्पलादनुं नाम छे, अने केटलाएक स्थले बीजा ऋषियोनां पण नामो छे. जमदग्नि कश्यप तो वेदोमां खास नामथी लखेल छे. हवे विचारो के वेदो नवा बनाववामां आव्या तेमां शुं शंका रहे छे ?

वली लंकानो अधिपति राजा रावण, ज्यारे दिग्विजय करवा वास्ते देशोमां चतुरंगी सेना साथे बीजा राजाउने पोतानी आज्ञा मनाववा फरतो हतो, ते अवसरे नारदमुनि लाकडी प्रमुखना मारथी कुटाया होवाथी पोकार करता रावणनी पासे आव्या. रावणे नारदजीने पुछ्युं के तमने कोणे मार मार्यो, त्यारे नारदजीये कह्युं के, राजपुर नगरमां मरुत नामनो राजा छे, ते मिथ्यादृष्टि छे, अने ब्राह्मणाभासोना उपदेशथी यज्ञ करवा लाग्यो, ते समये शिकारीउनी जेम होमने वास्ते ते ब्राह्मणाभासोने, अरराट शब्दो करता पशुउने यज्ञोमां होमवावास्ते मारतां में दीठा. आकाशथी उतरी मरुत राजा ब्राह्मणोनी साथे बेठो हतो, त्यां आवी, मरुतराजाने में कह्युं के आ तमे सर्वे शुं काम करवा लागी रह्या छो? मरुतराजाए कह्युं के ब्राह्मणोना उपदेशथी देवताउनी तृप्तिवास्ते तेमज स्वर्ग प्राप्तिवास्ते पशुउना बलिदानथी आ यज्ञ करवो शरु कर्यो छे, आ प्रमाणे यज्ञ करवो ते महा धर्म छे. पछी में कह्युं के हे राजा ! चारे वेदोमां जे प्रमाणे यज्ञ करवानुं कथन करेल छे, ते यज्ञ करवानी विधि तमने कहुं छुं ते सांभलो ? आत्मा यज्ञनो यष्टा अर्थात् करनार छे, तप रूप अग्नि छे, ज्ञानरूप घी छे, कर्मरूप इंधन छे, क्रोध, मान, माया, लोभादि पशुउ छे, सत्यवचनरूप यूप अर्थात् यज्ञस्थंभ छे, सर्व जीवोने अभयदानरूप दक्षिणा छे, अने ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयीरूप त्रिवेदी

छे आ प्रमाणे यज्ञ वेदमां कथन करेल छे, एवो यज्ञ जो योगाभ्यास सं युक्त करवामां आवे तो ते करनारो मुक्ति प्राप्त करे छे, परंतु राक्षसरूप थइ बकराप्रमुखने मारी यज्ञ करवामां आवे तो, यज्ञ करनार, कराव नार, मरीने घोर नर्कमां चिरकाल महादुःख भोगवे छे हे राजा! तु उ त्तम वंशमां उत्पन्न थयेल छो, बुद्धिमान् तेमज धनवान् छो, तेथी आ व्याधोचित पापथी निवर्त जो प्राणीवधथीज जीवोने स्वर्ग प्राप्त थतु होत तो अनायासे थोडा वखतमांज आ जीवलोक खाली थइ जशे आ मारा वचनो सांजली यज्ञनी अग्निनी जेम प्रचंड थयेला ब्राह्मणो लाकडी, सो टा, ढीका, पाटु मने मारवा लाग्या, तेथी जेम नदीना पूरथी भय पामे लो माणस उंची जमीन उपर चढी जाय छे, तेम दोडतो हुं तमारीपासे आव्यो हुं हे रावण महाराज! निरपराधी पशुओ मार्या जाय छे तेओनुं रक्षण करवामां तमे समर्थ छो जेम तमारां शरणथी हु निर्जय हु तेम पशुओने शरण आपी निर्जय करो ते सांजली रावण विमानथी उतरी मरुत राजानी पासे आव्या मरुत राजाये रावणनी जक्ति तथा आदर सन्मान उत्तम प्रकारे कर्यां रावणे कह्यु आ तमे शुं करो छो? यज्ञमा पशुवध करी नर्कनी महा माठी गति उपार्जन करवानु तमोए आरंभ्यु छे धर्म तो तीर्थंकर महाराजाये अहिंसारूप कथन करेलो छे, अने तेथीज जगतनु हित थाय छे, ज्यारें पशुओने मारवामां तमे धर्म समज्या, त्यारे अधर्म, धर्मनी तमने समजणज क्यां उरी? माटे आ काम तमे तजी द्यो पछी तेहेज कोपमा आवी रावणे कह्यु के जो यज्ञ करवानुं काम तजी नही द्यो तो तेनु फल आ लोकमा तो तमने हमणाज आपीश, अने पर लोकमा तमारे नर्कना मेमान थवुं पडशे आवा जयात्मक वचन सांजली मरुत राजाये यज्ञ करवो तजी दीधो, कारण के रावणनी आज्ञा ते व खते एवी जयकर हती के तेनुं कोइ उल्लंघन करी शकतुं नही आ क थाथी एम पण सिद्ध थाय छे के, ब्राह्मण लोको जे एम कहे छे के, पूर्वे राक्षसो यज्ञविध्वंस करता हता, ते कोण जाणे रावणादि जबरदस्त जै नधर्मी राजाओये पशुवधरूप यज्ञो करता छोडावी दीधा होय, अने तेज कालथी ब्राह्मणोये पुराणादि शास्त्रोमा ते जबरदस्त जैनराजाओने राक्षसो लखेला छे वली एम पण सांजलवामां आव्यु छे के नारदजीये मायाना

वशथी जैनमत धारण करी वेदोनी निंदा करी होय तोपण शुं जाणीये? आ कथानो आज तात्पर्य लोकोये लखेलो छे.

रावणे नारदजीने पुछ्युं के आवो पापकारी पशुवधात्मक यज्ञ क्यांथी प्रचलित थयो? नारदजीये कह्युं के शुक्तिमती नदीना किनारा उपर शुक्तिमती नामे नगरी छे. वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामि हरिवंश तीर्थंकरनी उलादमां केटलायेक राजा व्यतीत थइ गया पछी अभिचंद्र नामा राजा थयो. तेनो वसु नामनो पुत्र, महाबुद्धिवान,सत्यवादी जगतूमां प्रसिद्ध थयो. तेज नगरीमां क्षीरकदंबक नामना उपाध्याय रहेता हता. तेने पर्वत नामनो पुत्र हतो. ते क्षीरकदंबक उपाध्यायनी पासे वसुराजा, उपाध्यायजीनो पुत्र पर्वत अने हुं नारद त्रणे जणा अभ्यास करता हता. एकदा अमो त्रणे शिष्यो अभ्यासना श्रमथी रात्रिना वेहेला सुइ गया हता, उपाध्यायजी ते वखते जागता हता. अमो उपरना भागमां सुता हता, ते वखते बे ज्ञानवान् चारण साधु आकाशमां परस्पर वातो करता चाल्या जता हता, तेउ बोल्या के आ उपाध्यायजीना बे शिष्यो नर्कमां जशे, अने एक स्वर्गमां जशे. मुनियोनुं आ प्रमाणे बोलवुं सांभली उपाध्यायजी विचार करवा लाग्या के ज्यारे मारा शिखवेला शिष्यो नर्कमां जाय, त्यारे तेना करतां वधारे दुःखजनक बीजु शुं? परंतु त्रणमां नर्कमां कोण जशे अने स्वर्गमां कोण जशे? ते वातनो निर्णय करवा वास्ते त्रणेने एक साथे बोलाव्या. पछी गुरुये अमने दरेकने एकेक लोटनो कुकडो आप्यो, अने कह्युं के कुकडाने एवी जगाये जइ मारो के ज्यां कोइ देखतुं न होय. पछी वसु अने पर्वत बंने जणा तो शून्य जगाउमां जइ दरेक पोतपोताना कुकडाने मारी लाव्या, अने हुंतो ते लोटना कुकडाने लइ नगरीनी बहार बहुज दूर चाल्यो गयो. ज्यां कोइ नहोतुं त्यां जइ उभो रह्यो. चारे तरफ जोवा लाग्यो, अने मनमां आ प्रमाणे तर्क थवा लाग्या. गुरु महाराजे तो आज्ञा करी छे के, हे वत्स! आ कुकडाने तुं त्यां मारजे, के ज्यां कोइ तने देखतुं न होय! प्रथम तो आ कुकडाने हुंज देखुं छुं, वली कुकडो मने देखे छे, खेचर देखे छे, लोकपाल देखे छे; ज्ञानी देखे छे, एवुं तो जगत्मां कोइ पण स्थान नथी, ज्यां कोइ पण न देखतुं होय. ते कारणथी गुरुनो अभिप्राय

एज ठे के, आ कुकडानो वध न करवो, कारण के गुरु पूज्य तो निरंतर महा दयालु ठे, अने हिंसाथी पराङ्मुख ठे मात्र अमारी परीक्षावास्ते आ आदेश आप्यो ठे, तेथी हुं तो कुकडाने मार्याविनाज कुकडाने लइ गुरुपासे आव्यो, अने कुकडाने नही मारवाना सघला विचार गुरुजीने कही दीधा गुरुराजे मनमां निश्चय कर्यो के, आ नारद विवेकवालो ठे, तेथी स्वर्गमां जशे, गुरुजीये मने पोतानी ठाती साथे लगावी, घणु सारु थयु उत्तम उत्तम! एम कह्यु, तेटलामां वसु अने पर्वत पण गुरु पासे आव्या, अने गुरुने कह्यु के अमो कुकडाने एवी जगाये जइ मारी आव्या ठीये के ज्यां कोइ देखतुं न होतु गुरुये कह्यु के तमे तो पे खता हता, तथा खेचरो पण देखता हता हे पापिष्टो! तमे कुकडा केम मार्या? एम कही गुरुजीये विचार कर्यो के वसु अने पर्वतने जणा ववानी मारी मेहेनत वृथा गइ परतु हु शु करु! पाणी जेवा पात्रमां जाय ठे, तेवुज बनी जाय ठे विद्यानो पण तेवोज स्वजाव ठे ज्यारे प्रा णथी प्यारो पर्वत पुत्र अने पुत्रथी प्यारो वसु बन्ने नर्कमां जाय, तो हवे मारे घरमां रहेवानु शुं प्रयोजन ठे? एवा निर्वेद जावथी क्षीरकदंबक उपाध्यायजीये दीक्षा ग्रहण करी साधु थया तेनी पदवी पर्वते धारण करी, कारण के व्याख्यान करवामां पर्वत बहुज विचक्षण हतो हु (नारद) गुरु प्रसादथी सर्व शास्त्रोनो अज्यास करी मारे स्थानके आव्यो वली अजिचंद राजाये संयम लेवाथी वसु तेना पितानी राज्यगादी उ पर बेगे वसु राजा जगत्मां सत्यवादी प्रसिद्ध थयो, अर्थात् वसुराजा कदापि जूठु बोलता नथी, ए प्रमाणे लोकोमां तेनी प्रशंसा प्रसरी गइ वसुराजाए पण पोतानी प्रशंसा निरंतर थया करे ते सारु सत्य बोल वानुं दृढ व्रत अंगीकार कर्युं दरमीआन वसुराजाने एक स्फटिक सिं हासन प्रछन्न रीते एवु मली गयुं के, सूर्यना प्रकाशमां ज्यारे वसुराजा ते सिंहासन उपर बेसतो त्यारे, ते सिंहासन लोकोना देखवामां बिलकुल आवतु नहोतु, तेथी लोकोमां एवी प्रसीद्धि थइ के,सत्यना प्रजावथी व सुराजानुं सिंहासन देवताउ आकाशमां अधर राखे ठे तेनी आवी कीर्त्तिथी बीजा सर्वे राजाउ डरीने तेनी आज्ञा मानता हता, कारण के सांची अथवा जूठी गमे ते रीते थयेली प्रसीद्धि पुरुषने जयकारी थाय ठे

एकदा प्रस्तावे हुं (नारद) सूक्तिमती नगरीमां गयो. पर्वतने घेर जतां ते पोताना शिष्योने रूग्वेद नणावतो हतो, अने तेनो अर्थ पण शिखवतो हतो. प्रसंगे एवी श्रुति रूग्वेदमां आवी के "अजैर्यष्टव्यमिति" पर्वते आ श्रुतिनो एवो अर्थ कर्यो के अज अर्थात् बकराथी होम करवो, सारांश के बकरांने मारी तेना मांसनो होम यज्ञमां करवो. ते सांजली में पर्वतने कह्युं हे जाइ! आ प्रमाणे व्याख्या कइ ज्रांतिथी करे बे? गुरुश्रीक्षीरकदंबकजीए आ श्रुतिनी आवी व्याख्या करी नथी, गुरूजीए तो आ श्रुतिमां अज शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनुं जुनुं धान्य करेलो बे; "न जायंत इत्यजा" जे वाववाथी न उत्पन्न थाय ते अजा, आवो अर्थ श्रीगुरुजीए तमने तथा मने शिखाव्यो हतो, ते अर्थ तमे केम जूली जाउं बो? पर्वते कह्युं के तमे जे अर्थ करोबो ते अर्थ गुरुजीए कर्यो नथी, परंतु हुं जे अर्थ करूं बुं, तेम अर्थ गुरुजीए कर्यो हतो, कारण के निघंटमां पण अजा नाम बकरीनुंज लखेलुं बे. पबी में (नारदे) पर्वतने कह्युं के शब्दोना अर्थ बे प्रकारे थाय बे, एक मुख्यार्थ, बीजो गौणार्थ. आ स्थले श्री गुरुए गौणार्थ कर्यो हतो. गुरु धर्मोपदेष्टानुं वचन अने श्रुतिनो यथार्थ अर्थ, बंने अन्यथा करी हे मित्र! तुं महापाप उपार्जन करे बे. फरी पर्वते कह्युं के अज शब्दनो अर्थ गुरुजीए मेष करेलो बे, निघंटमां पण एज अर्थ बे, तेने उल्लंघन करी तुं अधर्म उपार्जन करे बे; वली आ बाबत निर्णय करवो होय तो वसुराजा जे आपणा सहाध्यायी बे, तेने मध्यस्थ राखी आ श्रुतिना अर्थनो निर्णय करीए, परंतु सरत एटली के जेनो अर्थ जूगे ठरे तेनी जीह्वा बेदवी. आ प्रमाणे प्रतिज्ञा ठरी. में पण पर्वतनी सरत मान्य करी, एवा विचारथी के साचने शुं आंच बे? पर्वतनी माताए ते वखते पर्वतने गुप्त रीते कह्युं के हे पुत्र! तुं आवो जूगे कदाग्रह बोडीदे, कारण के में पण ते श्रुतिनो अर्थ त्रण वर्षनुं धान्यज सांजल्यो बे, माटे तें जे जीह्वा बेदनी प्रतिज्ञा करी ते वास्तविक कर्युं नथी. विचार कर्या विना जे काम करवामां आवे बे, तेथी आपत्तिमां आवी पडवानो प्रसंग आवे बे. ते सांजली पर्वते कह्युं के हे माताजी! जे में प्रतिज्ञा करी बे ते कोइ पण रीते हुं फेरवी शकुं तेम नथी. पबी पर्वतनी माता पोताना पुत्रनुं दुःख

जाणी, दुःखी थवाथी वसु राजानी पासे गइ. पुत्रना जीवितव्य वास्ते कोण एवो छे के जे उपाय न करे ? वसुराजाए पोताना गुरुनी पत्नीने आवतां देखी अपार सन्मान आप्युं सिंहासन उपरथी उभो थयो, अने कहेवा लाग्यो के हे माता ! आजे में मारा गुरुराजना दर्शन कर्यां मारा सरखुं जे काम होय ते मने फरमावो ? गुरुपत्नीए कह्युं के हे वसुराज ! मने पुत्रनी भिक्षा आपो ? पुत्र विना मारे धन धान्यादि शुं कामना छे ? वसुराजा ते सांभली कहेवा लाग्या के हे माता ! पर्वत तो मारे पूजवा योग्य तथा पालवा योग्य छे, कारण के गुरुनी जेम गुरुना पुत्रनी साथे पण वर्तवुं जोइए, एम श्रुति वाक्य छे, तो हवे कोणे क्रोधमां आवी कालने पत्रथी आमंत्रण कर्युं छे ? जे मारा भाइ पर्वतने मारवा चाहे छे ? वास्ते हे माता ! तमे सर्व वृत्तांत मने कहो ? गुरुपत्नीए सर्व वृत्तांत प्रतिज्ञा लीधी त्यां सुधीनो कही बताव्यो, छेवटे कह्यु के जो तमारा भाइनी रक्षा करवी होय तो अज शब्दनो मेष अर्थात् बकरो या बकरी अर्थ करवो, कारण के महात्मा पुरुषो परोपकार वास्ते पोताना प्राण पण अर्पण करे छे, अने आपने तो मात्र वचनथी परोपकार करवानो छे वसुराजाए कह्यु माताजी ! हुं मिथ्या वचन केवी रीते बोली शकुं ? सत्य बोलनारा पुरुषो पोताना प्राण जाय छे तो पण असत्य बोलता नथी, तो गुरुनुं वचन अन्यथा करवु, अने जूठी साक्षी पुरवी, तेने वास्ते तो शुज कहेवु ? गुरुपत्नीए कह्युं के क्यांतो गुरुना पुत्रनो जान बचशे, क्यांतो तमारा सत्य व्रतनो आग्रह रहेशे, वली हुं पण तने ते वखते मारा प्राणनी हत्या आपीश गुरुपत्नीना आ प्रमाणेना वचनो सांभली लाचार थइ तेणीनु वचन अंगीकार कर्युं गुरुपत्नी खुशी थइ पोताने घेर आवी तत्काल नारद तथा पर्वत बंने वसुराजानी सभामां आव्या ते प्रसंगे मोटा मोटा विद्वान् पुरुषो सभामां आवी पहोंच्या, अने वसुराजा स्फटिक सिंहासन उपर बेसी सभापति थइ पुछवा लाग्यो, पर्वत तथा नारदे पोतानो आद्यत सर्व वृत्तांत वसुराजाने संभलाव्यो, छेवटे कह्यु के हे राजन् ! गुरुजीए आ बने अर्थमांथी कयो अर्थ कह्यो छे ते तमे सत्य कही थो ? सभामां बिराजेला वृद्ध ब्राह्मणोए पण कह्यु के हे राजन् तमे सत्य सत्य जे होय तेज कही देजो,

कारण के सत्यथीज मेघ वरसे छे, अने सत्यथीज देव सिद्ध थाय छे, वली सत्यना प्रजावथीज आ लोक स्थिति करी रह्यो छे, अने तमे पण पृथ्वीमां सत्यवादी सूर्यनी जेम प्रकाश करो छो, तेथी सत्य कहेवुं, तेज तमने उचित छे. हवे ते करतां विशेष अमारे तमने कांइ कहेवानुं नथी. आ प्रमाणे वृद्ध पुरुषोना वचनो सांजलतां छतां पण वसुराजाए पोतानी सत्य बोलवानी प्रतिज्ञाने जलांजलि दइ "अजान्मेषान् गुरु व्याख्या दिति" अर्थात् अजनो अर्थ गुरुए मेष (बकरो) कहेल छे. ए प्रमाणे वसुराजाए बोलतांज असत्यना प्रजावथी व्यंतर देवताए वसुराजाना सिंहासनने तोडी वसुराजाने पृथ्वी उपर पछाड्यो, तेथी मरण पामी वसुराजा उग्र पापथी सातमी नरके गयो. वसुराजाना सिंहासन उपर, ते पछी अनुक्रमे वसुराजाना आठ पुत्रो १ पृथुवसु २ चित्रवसु, ३ वासव, ४ शक्र, ५ विजावसु, ६ विश्वावसु, ७ सूर, ८ महासूर, ए प्रमाणे उत्तरोत्तर गादी उपर बेठा. ते आठे पुत्रोने व्यंतर देवताउए मारी नांख्या. पछी सुवसु नामनो नवमो पुत्र त्यांथी जागी नागपुरमां चाल्यो गयो, अने दसमो बृहद्ध्वज नामनो पुत्र जागीने मथुरामां राज्य करवा लाग्यो. आ बृहद्ध्वज राजाना वंशमां यदु नामा बहु प्रसिद्ध राजा थयो, त्यारथी हरिवंश नाम बदलाइ यदुवंश प्रसिद्ध थयुं.

यदुराजाने सूर नामा पुत्र थयो. सूर राजाने बे पुत्रो थया. मोटानुं नाम शौरी अने नानानुं नाम सुवीर हतुं. शौरीने पितानी गादी मली, परंतु पोताना नाना जाइ सुवीरने ते गादी आपी पोते कुशावर्त्त देशमां जइ पोताना नामनुं शौरीपुर नगर वसावी, राज्यधानीनुं नगर बनाव्युं. शौरीने अंधक विष्णु प्रमुख पुत्रो थया, अने अंधक विष्णुने दस पुत्रो थया. तेना नाम. १ समुद्रविजय. २ अक्षोज्य, ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान्, ६ अचल, ७ धरण, ८ पूर्ण, ए अजिचंद्र, १० वसुदेव. तेमां समुद्रविजयना मोटापुत्र अरिष्टनेमि, जैनमतना बावीशमा तीर्थंकर थया, अने वसुदेवना पुत्र प्रतापी कृष्ण वासुदेव तथा बलजद्रजी थया. सुवीरना पुत्र जोजवृष्णि अने जोजवृष्णिना पुत्र उग्रसेन थया, उग्रसेननो पुत्र कंस थयो. वसुराजानो बीजो पुत्र सुवसु नासीने नागपुर गयो.

तेने बृहद्रथ नामनो पुत्र थयो तेणे राजगृहमा राज्य कर्युं तेनो पुत्र ज रासिंधु थयो आ वृत्तात में अहींआ प्रसंगथी लखेल छे

हवे अहींआ नगरना लोको तथा पडितोये पर्वतनी बहुज निंदा करी पर्वतने कह्यु के तु जूठो छे, कारण के तारा साक्षी वसुने जूठो जाणी देवताये मारी नाख्यो, तेथी तारा करतां विशेष पापी कोण छे? ए प्रमाणे कही लोकोये पर्वतने नगर बहार काढी मुक्यो बाद महाकाल नामनो असुर पर्वतनो सहायक थयो

हवे रावणे नारदने पुछ्यु के महाकाल असुर कोण हतो? नारदे कह्यु के आ देशमा चरणायुगल नामनु नगर छे, तेनो अयोधन नामनो राजा हतो, तेने दिति नामा भार्या हती तेउने सुलसा नामा बहु रूपवान् पुत्री थइ सुलसानो स्वयवर पिताये कर्यो स्वयवरमां बीजा अनेक राजाउने बोलाव्या आवेला सर्व राजाउमा सगर राजा प्रबल सत्तावालो हतो सगर राजानी मदोदरी नामनी हजुरी दासी हती ते सगरनी आज्ञाथी प्रतिदिन अयोधन राजाना आवासमां जवा लागी एक दिवस दिति पोताना बगीचाना कदलीगृहमा गइ, ते वखतें सुलसानी साथे मदोदरी पण त्या प्रछन्नपणे आवी छुपी रीते उभी रही मदोदरी गुप्त पणे सुलसा अने दिति बच्चे थती वात साजलवा लागी दितिये कह्युं सुलसा! मारा मनमां तारा स्वयवर माटे बहुज चिंता छे ते चिंता दूर करवी ते तारे आधीन छे, वास्ते जरा थिरज राखी मारी वात साजल! श्रीरीषभदेव स्वामिने भरत अने बाहुबलि एवा बे पुत्रो थया भरतनो पुत्र सूर्ययश, अने बाहुबलिने चद्रयश नामनो पुत्र थयो जेउथी सूर्यवश अने चंद्रयश चालेला छे चद्रवशमा मारो भाइ तृणबिंदु नामा थयो, अने सूर्यवशमां तारा पिता (अयोधन) थया तारा पितानी बेहेन सत्ययशा तृणबिंदुनी भार्या थइ तेने मधुपिंगल नामनो मारो भत्रीजो छे हे सुन्दरी! हु तने ते मधुपिंगलने आपवा चाहु हु अने तु तो कोण जाणे कोने वरीश? आ शल्य मारा अत करणमा छे, वास्ते तारे स्वयवरमा सर्व राजाउने तजी मारा भत्रीजा मधुपिंगलने वरवो सुलसाये मातानुं कहेवु स्विकार्युं गुप्त रहेली मदोदरीये सर्व वृत्तात साभली सगर राजाने कह्यो सगर राजाये पोताना विश्वभूति नामना पुरोहितने

आदेश कर्यो के एवी युक्ति करो के जेथी सुलसा मने स्वयंवरमां वरे. विश्वभूति मोटो कवि हतो. तेणे तत्काल राजाना लक्षणोनी संहिता बनावी. ते संहितामां एवी रचना करी के ते सांभलतांज देखनाराउ सगर राजाने शुभ लक्षणवालो जाणे, अने मधुपिंगलने लक्षण हीन जाणे. ते पुस्तक पेटीमां बंध करी राखी मुक्युं. ज्यारे सर्व राजाउ स्वयंवरमां एकठा थया, त्यारे सगरनी आज्ञाथी विश्वभूतिये ते पुस्तक बहार काढयुं. सगरे ते वखते कह्युं के स्वयंवरमां बेसनार जे लक्षणहीन होय तेने कां तो मारी नाखवो, अथवा स्वयंवरथी बहार काढी मुकवो. आ कहेवुं सर्वेये अंगीकार कर्युं. पुरोहिते पुस्तक वांचवुं शरु कर्युं. जेम जेम पुस्तक वंचातुं गयुं तेम तेम मधुपिंगल पोताने लक्षणहीन मानी लज्जावान् थवा लाग्यो, अने पोतानी मेलेज स्वयंवरथी बहार निकली गयो. आखरे सुलसाये सगरने वरी लीधो. बीजा सर्व राजाउ पोतपोताने स्थानके गया. मधुपिंगल आ अपमानथी तापस थयो. बालतप करी साठ हजार वर्षना आयुवालो काल नामनो असुर परमाधामी थयो. अवधिज्ञानथी सगरनुं पुस्तक बनाववा संबंधी सर्व कपट तेना जाणवामां आव्युं, तेथी विचार कर्यो के सगर राजा प्रमुखने हवे कोइ पण रीते मारुं. महाकालासुर तेना छिद्रो जोवा लाग्यो. ज्यारे शुक्तिमती नगरीनी नजीक पर्वतने जोयो, त्यारे ब्राह्मणनुं रूप धारण करी पर्वतनी पासे आवी कह्युं के हे पर्वत! हुं तारा पितानो मित्र छुं, मारुं नाम शांडिल्य छे. हुं तथा तारो पिता गौतम उपाध्यायनी पासे साथे भणता हता. मारा सांभलवामां आव्युं के नारद तथा बीजा लोकोये तने बहुज दुःखी कर्यो छे, तेथी तारा पिताना संबंधथी हुं तारो पक्ष करवा आव्यो छुं. मंत्रोथी हुं लोकोने विमोहित करीश. एम कही पर्वतने संतलसमां मेलवी लोकोने नरकमां नाखवावास्ते ते असुरे बहुज व्यामोह कर्यो. व्याधि अने भूतादि उपद्रव युक्त लोकोने करी दीधा; पछी जे लोको पर्वतनुं कहेवुं मान्य करे तेउने सारा करी देतो हतो. शांडिल्यनी आज्ञाथी पर्वत पण लोकोने निरूपद्रव करवा लाग्यो. उपकारथी लोको पर्वतना मतमां मलता थवा लाग्या. हवे ते असुरे सगर राजा तथा तेनी राणीउने बहुज भारे रोगादिनो उपद्रव कर्यो. राजा पण पर्वतनो सेवक बनी गयो.

पर्वते शांडिल्यनी साथे मली तेना रोगो शांत कर्या हवे पर्वते राजाने उपदेश कर्यो के हे राजन्! सौत्रामणि नामनो यज्ञ करी मद्यपान जो करवामां आवे तो तेमा विसङ्कुल दोष नथी तथा गोसव नामा यज्ञमां अगम्य (चांडाली) स्त्री तथा माता, बहेन, पुत्री प्रमुखनी साथे संजोग करवामां दोष नथी, अने मातृमेधमां मातानो अने पितृमेधमां पिता नो, वध अंतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमा करवामा आवे तो दोप नथी वली क-च्छुनी पीठ उपर अग्नि स्थापन करी तर्प्पण करवामां आवे,अने कदाचित् कच्छु न मले तो शुद्ध ब्राह्मणना मस्तकनी टटरी उपर अग्नि स्थापन करी होम करवामां आवे, कारण के टटरी पण कच्छुना जेवी होय छे, तो ते वातमां हिंसा नथी कारण के वेदोमां लख्यु छे के यतः ॥ सर्वंपुरुषेववेद यद्भूत यन्नविष्यति ॥ इशानोय मृतत्वस्य, यदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ भा वार्थ जे कांइ छे ते सर्व ब्रह्मरूपज छे, ज्यारे एकज ब्रह्म छे, त्यारे कोण कोने मारे छे? तेथी यथारुचि यज्ञोमा जीवहिंसा करो, अने ते जीवोना मांस भक्षण करो, तेमा कांइ पण दोप नथी, कारण के देवताना उद्देश थी मांस पवित्र थइ जाय छे, इत्यादि उपदेश दइ सगर राजाने पोताना मतमा स्थापन करी अतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमा पर्वत यज्ञ करावतो हवो ते अवसरनो लाभ लइ कालासुर राजसूयादि यज्ञो पण करावतो हवो अने जे जीवोने यज्ञमा मारवामा आवता हता, तेउने देवमायाथी विमा नमां बेसाडेला देखाडतो हतो, जेथी लोकोने यज्ञ करवा उपर प्रतीत थइ लोको निशंक थइ जीवहिंसारूप यज्ञ करवा लाग्या, अने पर्वतनो मत बहुज प्रसार पाम्यो सगर राजा पण यज्ञ करवामां बहुज तत्पर थ यो आखर सुलसा अने सगर बने मरी नर्कमां गया नर्कमा महा का लासुरे सगर राजाना जीवने अनेक प्रकारना दुःख दइ वेर लीधु ते का रणथी हे रावण! पापी पर्वतथी आ जीवहिंसारूप यज्ञ विशेषे करी प्र वर्त्तल छे हे राजन्! आ यज्ञनो तमेज निषेध कर्यो आ कथा श्रवण क-री रावणे नारदने प्रणाम कर्यो नारदजी विदाय थया जैनमतना शा स्त्रोमां आ प्रमाणे वेदोनी उत्पत्ति छे ते आवश्यक सूत्र, आचारदिनकर अने त्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित्र प्रमुखथी जाणवी

वर्त्तमान कालमां जे चारे वेद छे तेनी उत्पत्ति टाक्टर मोक्षमुलर

साहेब तेमना बनावेला संस्कृत साहित्य ग्रंथमां आ प्रमाणे लखे छे. वेदोमां बे भाग छे. एक छंदो भाग, बीजो मंत्र भाग. छंदो भागमां एवा प्रकारनुं कथन छे के जाणे अज्ञानीउना मुखमांथी अकस्मात् वचनो निकलेलां होय. तेनी उत्पत्ति एकत्रीशशो वर्ष उपर थयेल छे, अने मंत्रभाग बन्याने उंगणत्रीशसो वर्ष थयां छे. आ लखवामां शुं आश्चर्य छे? कारण के कोइये उलट पालट करी नवीन वेदो बनाव्या पण होय. आ वेदो उपर अवट, सायण, रावण, महीधर अने शंकराचार्य प्रमुखे भाष्यो बनावेलां छे. टीका, दीपिकानी रचना करी छे. ते प्राचीन भाष्य, दीपिकाउने अयथार्थ जाणी दयानंद सरस्वति स्वामिये स्वमतानुसार नवीन भाष्य बनावी छे. पंडित ब्राह्मणो दयानंद सरस्वतिनी भाष्यने प्रामाणिक मानता नथी. हवे देखवानुं मात्र ए छे के परिणाम शुं आवे छे? जैनमतवालाउये तो ज्यारथी तेउना शास्त्रोमां लखवा मुजब आर्यवेद बगाडी नाखवामां आव्या, त्यारथी वेदोने मानवानुं तजी दीधेल छे. ॥ इति वेदोत्पत्तिः ॥

ज्यारे श्रीरीषभदेव भगवान कैलास पर्वत उपर निर्वाण पाम्या, त्यारे सर्व देवता निर्वाण महोत्सव करवा आव्या. सर्व देवताउमां अग्निकुमार देवताये श्रीरीषभदेव भगवाननी चित्तामां अग्नि लगावी, त्यारथी आ श्रुति लोकोमां प्रसिद्ध थइ. " अग्निमुखावै देवा " अर्थात् अग्नि कुमार देवता सर्व देवताउमां मुख्य छे; वली अल्पबुद्धिवानोये तो आ श्रुतिनो अर्थ एवो कर्यो के अग्नि, तेत्रीश क्रोड देवताउनुं मुखछे. प्रभुनुं निर्वाणस्वरूप आवश्यक सूत्रथी जाणवुं.

ज्यारे देवताउये श्रीरीषभदेवजीनी दाढा विगेरे लीधी, त्यारे श्रावक ब्राह्मण मली देवताउने अति भक्तिथी याचना करता हवा. देवताउ ते बहु जनोने बहुयत्नाथी याचनाथी पीडायेला देखी कहेता हवा. अहो याचको! अहो याचको! त्यारथी ब्राह्मणो याचक कहेवावा लाग्या. वली ब्राह्मणो ते वखते श्रीरीषभदेवजीनी चितामांथी अग्नि लइ पोतपोताना घरमां स्थापनां करता हवा, ते कारणथी ब्राह्मणो " आहिताग्नय " कहेवावा लाग्या.

श्रीरीषभदेवजीनी चिता प्रज्वलित थइ रह्या पछी दाढाप्रमुख सर्व दे-

बताई लइ गया शेष ब्रह्म रह्या ते ब्राह्मणोये पोते लीधी तथा थोडीथो डी लोकोने आपी लोकोये पोताना मस्तक उपर त्रिपुडाकारथी लगावी, त्यारथी त्रिपुड करवुं शरु थयुं इत्यादि बहु व्यवहार ते वखतथी शरु थयो

भरते कैलास पर्वत उपर सिंहनिषद्या नामनु मंदिर बनाव्यु, तेमां भविष्यमां थनारा त्रेवीश तीर्थंकरोनी तथा श्रीरीषभदेवजीनी मली चोवीश प्रतिमाओनी स्थापना करी, अने दंडरत्नथी पर्वतने एवी रीते छोलवामां आव्यो के जे उपर कोइ पुरुष पगोथी चढी शके नहि पर्वतमां आठ पगथीआं राख्यां जेथी कैलास पर्वतनु नाम अष्टापद कहेवाय छे, अने त्यारथीज कैलास महादेवनो पर्वत कहेवाय छे महादेव अर्थात् मोटादेव ते श्रीरीषभदेव, अने तेनु स्थान कैलास पर्वत जाणवु

भरत अने बाहुबलि बने दीक्षा लइ मोक्षे गया भरतनी पछी सूर्ययश गादी उपर बेठा तेनी औलाद सूर्यवंशी कहेवाइ सूर्ययशनी गादी उपर तेनो पुत्र महायश बेठो तेज प्रमाणे अतिबल, महाबल, तेजवीर्य, कीर्तिवीर्य अने दंडवीर्य, अनुक्रमे पोतपोताना पितानी गादी उपर बेठा, अने पोतपोताना राज्य यथाशक्ति चलावता हवा भरतना राज्यथी तेओनु राज्य अरधु अर्थात् त्रण खंडनु रह्यु दरेक अंते भरतनी जेम राज्य छोडी मोक्षमां गया तेओनी पछी गादी उपर असंख्य पाट थइ तेओनी व्यवस्था चित्रांतर गंडिकाथी जाणवी यावत् जीतशत्रु राजा थया इति संक्षेपत श्रीरीषभाधिकार संपूर्ण

हवे श्री अजीतनाथ स्वामिना समयनु स्वरूप लखीए छीए अयोध्या नगरीमां भरतनी पछी असंख्य राजाओ थया बाद इक्ष्वाकु वंशमां जीतशत्रु राजा थया विनीता नगरीनु बीजुं नाम अयोध्या छे हाल जे अयोध्या छे, ते नही प्राचीन अयोध्या कैलास पर्वतनी पासे हती नवीन अयोध्या तेना नामथी वसेली छे जीतशत्रु राजाने सुमित्र नामनो लघु युवराज हतो जीतशत्रुनी विजया नामा राणी हती तेने चौद स्वप्न पूर्वक अजीत नामना पुत्र थया सुमित्रनी राणी यशोमतीने पण चौद स्वप्न देखवाथी सगर नामना पुत्र थया ज्यारे बने यौवनवंत थया त्यारे जीतशत्रु अने सुमित्र बने दीक्षा लइ मोक्षरूप थया हवे श्री अजीतनाथ राजा थया अने सगर युवराज थया केटलाएक

वखत सुधी राज्य करी श्री अजीत नाथजीए तो स्वयमेव दीक्षा लीधी. तप करी, केवलज्ञान पामी बीजा तीर्थंकर थया. पछी सगर राजा थया, अने बीजा चक्रवर्ती पण थया. सगर राजाए भरतनी जेम छ खंडनुं राज्य कर्युं. सगर राजाने जन्हुकुमार प्रमुख साठ हजार पुत्र थया. तेउंए दंड रत्नथी गंगा नदीने असल प्रवाहथी फेरवी, कैलास पर्वतनी चारे बाजुए खाइ खोदी, ते खाइमां गंगा नदीने लाव्या. तेउंए एवो विचार कर्यो के अमारा वडील भरतजीए आ पर्वत उपर सुवर्ण रत्नमय श्री रीषभादि तीर्थंकरोना मंदिर बनावेल छे. तेनी रक्षा वास्ते आ पर्वतनी चारे बाजुए खाइ खोदी तेमां गंगानो प्रवाह लाववो जोइए. ते प्रमाणे गंगानो प्रवाह लाववाथी अने प्रथम खाइ खोदवाथी नागकुमार देवताउंने बहुज उपसर्ग थयो, तेथी नागकुमार देवताउंए ते साठ हजार पुत्रोने मारी नांख्या. गंगाना जलथी देशमां पण बहुज उपद्रव थयो, जेथी सगर राजाना पौत्र भगीरथे सगरनी आज्ञाथी दंडरत्नथी भूमि खोदी गंगाने समुद्रमां मेलवी. तेज कारणथी गंगानुं नाम जान्हवी तथा भागीरथी पण कहेवाय छे. सगर राजाए श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर भरतना बनावेला श्री रीषभदेवजीना मंदिरनो उद्धार कर्यो; तथा बीजां जैन तीर्थोनो पण उद्धार कर्यो. आ समुद्र पण भरत क्षेत्रमां सगर राजाज देवताना सहायथी लाव्या छे. लंकाना टापुमां वैताढ्य पर्वतथी सगर राजानी आज्ञाथी धनवाहन पहेलो राजा थयो, अने लंकाना टापुनुं नाम राक्षसद्वीप छे, तेनो हेतु ए छे के धनवाहन राजाना वंशजो राक्षस कहेवाया. आ वंशमांज रावण तथा बिभीषणादि थया छे; इत्यादि सगर चक्रवर्तीना समयनो वृत्तांत त्रेसठ शलाका पुरुष चरित्रथी जाणवो. आ चरित्रना तेत्रीश हजार काव्यो छे, तेथी तेनो सघलो हेवाल आ ग्रंथमां लखी शकातो नथी, मात्र संक्षेपथी लखेल छे. सगर चक्रवर्ती राज्य करी श्री अजीतनाथजी पासें दीक्षा लइ, संयम तपथी केवलज्ञान पामी मोक्ष पहोंच्या. श्री अजीतनाथ स्वामि पण समेत शिखर पर्वत उपर शरीरनो त्याग करी मोक्ष पाम्या, श्री रीषभदेव स्वामिना निर्वाण पछी पचास लाख कोडी सागरोपम व्यतीत थये श्री अजीतनाथ तीर्थंकर निर्वाण पाम्या. ते पछी त्रीश

लाख कोडी सागरोपम व्यतीत थये श्री संभवनाथजी त्रीजा तीर्थंकर थया राज्य सर्व सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी तथा कुरुवंशी आदि राजाओमां रह्यु इति श्री अजीतनाथ तथा सगर चक्रवर्ती अधिकार

श्रावस्ती नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी जीतारि राजा राज्य करता हता, तेने सेना नामा पटराणी हती, तेने संभव नामना पुत्र त्रीजा तीर्थंकर थया, चोवीशे तीर्थंकरना वर्णन प्रथम परिछेदमां यंत्रमां तेमज गद्यमां लखी आव्या छीए. बीजा तीर्थंकरोनो वचमां जे अंतर छे तेपण यंत्रथी जाणी लेवुं इती तृतीय तीर्थंकर वृत्तांत

तेमनी पछी अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी संवर राजा थया तेमनी सिद्धार्था नामनी राणीनी कुखे अभिनंदन नामना चोथा तीर्थंकर थया बाद अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी मेघ राजानी सुमंगला राणी, तेना पुत्र सुमतिनाथ नामना पांचमां तीर्थंकर थया पछी कोसंबी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी श्रीधर राजानी सुसीमा राणी, तेना पुत्र पद्मप्रभ नामना छठा तीर्थंकर थया पछी वाणारसी नगरीमां प्रतिष्ट राजानी पृथ्वी नामा राणी, तेना पुत्र श्री सुपार्श्वनाथ नामना सातमा तीर्थंकर थया पछी चन्द्रपुरी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी महासेन राजानी लक्ष्मणा नामा राणी, तेना पुत्र श्री चंद्रप्रभ नामना आठमा तीयकर थया पछी कार्कंदी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी सुग्रीव राजानी रामा नामा राणी, तेना पुत्र श्रीसुविधिनाथ, अपर नाम पुष्पदंत नामना नवमा तीर्थंकर थया

अहींआ सुधीतो सर्व ब्राह्मणो जैनधर्मी श्रावक तथा चारे आर्य वेदो जे भरत राजाना समयमां रचवामां आव्या हता ते भणता हता ज्यारे नवमा तीर्थंकरनु तीर्थ विछेद थयु, त्यारे ब्राह्मणो मिथ्यादृष्टि तथा जैन धर्मना द्वेषी अने जगत्‌ना पूज्य थया कन्या, भूमि अने गो दानादिना लेनारा थया सर्व जगत्‌मां उत्तम थया, सर्वना कर्त्ता हर्त्ता अने मतोना मालेक बनी गया सारांश ए छे के सुतुं घर देखी कुतरो पण माल खाइ जाय छे वली जगत्‌मां जे जे पाखंड तथा अनेक तरेह्‌मा देवताओनी पूजा तथा जे जे बीजा पण कुमार्गो प्रचलित थया छे, ते सर्व तेओएज चलावेल छे साक्षात् आदीश्वर भगवाननी रचेली सृष्टि

रूप अमृतमां झेर दाखल करनारा थया छे, कारण के पूर्वे जैनमत तथा कपिलमत शिवाय बीजो कोइ पण मत नहोतो. कपिल मतवाला पण देव तो श्री आदीश्वर (रीषन्नदेव) ज्ञगवाननेज मानता हता. निदान आ हुंडा अवसर्पिणिमां सर्व आश्चर्य गणाय छे.

त्यार बाद ज्ञद्दिलपुर नगरमां इक्ष्वाकु वंशी दृढरथ राजानी नंदा नामा राणी, तेना पुत्र श्री शीतलनाथ नामना दशमा तीर्थंकर थया. आ तीर्थंकरना शासनमां हरिवंशनी उत्पत्ति थइ तेनी कथा लखीए डीए.

कौशांबि नगरीमां वीरो नामनो कोळी रहेतो हतो. तेने वनमाला नामनी अत्यंत रूपवंती स्त्री हती. नगरना राजाये तेणीने हरण करी पोतानी स्त्री बनावी. वीरो कोळी स्त्रीना विरहथी वावरो थइ गयो. हा वनमाला! हा वनमाला! एम बोलतो बोलतो नगरमां फरवा लाग्यो. एकदा वर्षाकालमां राजा वनमालानी साथे मेहेलना झरूखामां बेठो हतो. राजा राणीये वीराने ते हालतमां देखी बहु पश्चाताप कर्यो; छेवट निश्चय कर्यो के आपणे आ काम बहुज बुरूं कर्युं, तेज वखत वीजळी पडवाथी राजा राणी बंने मरीने हरिवर्ष क्षेत्रमां स्त्री, पुरुष युगळीया थया. वीरो कोळी राजा राणीनुं मरण सांज्ञळी राजी थयो, पछी तापस बनी तप करवा लाग्यो. अज्ञान तपना प्रज्ञावथी किल्विष देवता थयो. अवधिज्ञानथी राजा राणीने युगळीया थयेला देखी, विचार कर्यो के, आ ज्ञद्रक परिणामी तथा अल्पारंज्ञी छे, तेथी मरीने देवता थशे, तो पछी हुं मारुं वेर शीरीते लइश? तेथी एवो उपाय करुं के, जेथी तेउ बंने मरीने नर्कमां जाय. एवो विचार करी ते बंनेने त्यांथी उठावी ज्ञरत क्षेत्रमां चंपा नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी चंडकीर्त्ति राजा अपुत्रीउ गुजरी गयो हतो, अने हवे आ नगरीनो राजा कोण थशे? एवी चिंतामां सर्व लोको जे आवी पड्या हता, तेउने देवताये आ बंनेने सोंप्या, अने कह्युं के आ तमारो हरि नामनो राजा थशे. तेने तख्तनशीन करो? तेनी आ हरणी नामनी राणी छे. तेउने खावावास्ते तमारे फल मिश्रित मांस आपवुं, अने तेउने शिकार करवानी टेव पाडवी. लोकोये तेज प्रमाणे कर्युं. तेउ बंने पापमां आसक्त थवाथी मरीने नर्कमां गया. तेउनी उलाद सर्व हरिवंशवाळी कहेवाइ. आ वंशमां वसुराजा थया. इति श्रीहरिवंशोत्पत्ति.

श्री शीतलनाथजीनु शासन पण विछेद गयुं तेवीज रीते पंदरम तीर्थंकरसुधी सात तीर्थंकरोनां शासनो विछेद गया, अने मिथ्याधर्म बहुज वृद्धि पाम्यो

श्रीशीतलनाथ पछी सिंहपुरी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी विष्णु राजानी विष्णुश्री नामाराणी, तेना पुत्र श्री श्रेयांसनाथ नामना अगीआरमा तीर्थंकर थया ते समयमां वैताढ्य पर्वतथी श्रीकंठ नामनो विद्याधरनो पुत्र, पद्मोत्तर विद्याधरनी पुत्रीनुं हरण करी पोताना बनेवी राक्षस वंशी लंकाना राजा कीर्तिधवलने शरणे गयो कीर्तिधवले त्रणसें योजन प्रमाण वानरद्वीप तेउने रहेवाने आप्यो तेउना संतानोमांथी चित्र विचित्र विद्याधरोये विद्याथी वानरनु रूप बनाव्यु वली वानर द्वीपमां रहेवाथी तथा वानरनुं रूप बनाववाथी वानरवंशी प्रसिद्ध थया तेउनी उलादमा वाली तथा सुग्रीवादि थया छे

श्रेयासनाथजीना समयमां पेहेला त्रिपृष्ट नामना वासुदेव हरिवंशमां थया तेनी उत्पत्ति आप्रमाणे— पोतनपुर नगरमां हरिवंशी जीतशत्रु नामनो राजा थयो तेने धारणी नामा राणी हती तेने अचल नामनो पुत्र अने मृगावती नामनी पुत्री थइ मृगावती अत्यंत खुब सुरत हती, ते यौवनवती थइ एटले तेना पिताये तेणीने पोतानी राणी बनावी लीधी ते देखी लोकोये जीतशत्रु राजानुं नाम प्रजापति पाड्यु अर्थात् पोतानी पुत्रीनो पति एवुं नाम राख्यु तेज वखतथी वेदोमां आ श्रुति लखवामां आवी "प्रजापति वैंस्वाडुहितरमभ्यध्यायद्दिव मित्यन्य आहुपुरसमित्यन्येता मृश्योभूत्वा तदसावादित्यो भवत्" ॥ भावार्थ प्रजापति ब्रह्मा पोतानी पुत्री साथे विषय सेवनने प्राप्त थता हवा जैनमतवालाउने आ अर्थथी काइ पण हानी नथी, परतु जे लोकोये ब्रह्माजीने वेद कर्त्ता, हिरण्यगर्भना नामथी इश्वर मानेला छे, अने आ कथाने पुराणोमां लखेली छे, तेउनी फजेती तो अवश्य बीजा मतवालाउ करशे तेमा अमे शु करीये? कारण के जे पुरुष पोताना हाथथी पोतानु म्हो कालु करे, तेने देखीने बीजाउ केम हांसी न करे? यद्यपि मीमांसाना वार्त्तिककार कुमारिले आ श्रुतिना अर्थनु कलक दूर क[illegible] स्ते मन[illegible] कल्पना करेली छे, तथा वर्तमानमा दयानंदसरस्वति [illegible] पण [illegible] पोना फलंच

दूर करवावास्ते पोतानी बनावेली नाष्यमां अर्थोनी अत्यंत तोड फोड करेली बे, परंतु पुराणवालाउंये जे कथा लखेली ते केवी रीते बुपावी शकशे? अमारा मतमां तो वेद श्रुति अने ब्रह्मा (प्रजापति) नो अर्थ यथार्थज करेल बे. आ जीतशत्रु (प्रजापति) राजाने मृगावतीथी त्रिपृष्ट नामनो पुत्र थयो. ज्यारे त्रिपृष्ट अने अचल बंने यौवनवंत थया, त्यारे तेउंये त्रिखंडना राजा अश्वग्रीवने मारी त्रण खंडनुं राज्य कर्युं.

त्यार पबी चंपापुरीमां इक्ष्वाकुवंशी वसुपुज्य नामनो राजा थयो, तेनी ज्या नामा राणी तेनाथी श्रीवासुपुज्य नामना बारमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां बीजा द्विपृष्ट वासुदेव अने अचल बलदेव थया, अने तेउंना प्रतिशत्रु रावण समान तारक नामना बीजा प्रतिवासुदेव थया. आ सर्वे वासुदेव, चक्रवर्ती आदिनुं संपूर्ण वर्णन त्रेसठ शलाका पुरुष चरित्रथी जाणवुं.

त्यार पबी कपिलपुर नगरमां इक्ष्वाकुवंशी कृतवर्मा नामा राजा थया, तेनी श्यामा नामा राणीना पुत्र श्रीविमलनाथ नामना तेरमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां त्रीजा स्वयंनु वासुदेव, नद्र नामा बलदेव, अने मैरक नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पबी अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी सिंहसेन राजा थया, तेनी सुयशा राणीना पुत्र श्री अनंतनाथ नामना चौदमा तीर्थंकर थया, तेमना समयमां चोथा पुरुषोत्तम वासुदेव, सुप्रन नामना बलदेव अने मधुकैटन नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पबी रत्नपुरी नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी नानु नामना राजा थया, तेमनी सुव्रता नामनी राणीना पुत्र श्रीधर्मनाथ नामना पंदरमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां पांचमा पुरुषसिंह नामना वासुदेव, सुदर्शन नामना बलदेव, अने निशुंन नामना प्रतिवासुदेव थया. अहींआ सुधी पांच वासुदेव जे थया ते सर्वे अरिहंतना नक्त अर्थात् जैनधर्मी थया.

त्यार पबी पंदरमा धर्मनाथ अने सोलमा शांतिनाथजीना अंतरमां त्रीजा मघवा नामना चक्रवर्ती अने चोथा सनत्कुमार नामना चक्रवर्ती थया.

त्यार पबी हस्तिनापुरी नगरीमां कुरुवंशी विश्वसेन राजा तेमनी अचिरा राणीना पुत्र श्रीशांतिनाथ नामना सोलमा तीर्थंकर थया. ते प्रथ-

असत्य बोल बोलता नथी, वली तने जे तारा तपनु अभिमान छे, ते तारो तप निष्फल छे, कारण के तमारा शास्त्रमां लख्यु छे के " अपुत्रस्य गतिर्नास्ति " अर्थात् पुत्र रहितनी गति नथी, आ शु तें शास्त्रमां सां भल्यु नथी ? तो जेनी शुभगति न थइ तेनाथी अधिक पापी कोण छे ? हवे जमदग्निए विचार कर्यो के अमारा शास्त्रमा तो जेम चकलाए कह्युं तेमज छे तेथी फरी मनमां विचार आव्यो के, ज्यारे मारे स्त्री अने पुत्र नथी, त्यारे मारो सर्व तप एवो छे के, जेम पाणीना प्रवाहमां मुत रवु, तेवो छे हवे जमदग्निने मनमा स्त्रीनी चाहना थइ आ प्रमाणे बे स्त्री धन्वंतरि देवता जैन धर्मी थयो अने देवताओ त्यांथी अदृश्य थइ गया जमदग्नि त्यांथी उठी नेमिककोष्टक नगगरमा जीतशत्रु राजा पासे गयो राजाने घणु पुत्रीओ हती, तेथी तेनी एक पुत्री मागु, एवो विचार कर्यो राजा पण रुषिने देखी आसनथी उठी बे हाथ जोडी प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के आप शा वास्ते अत्रे पधार्या छो ? मने आदेश करो ? आपनु जे काम होय ते हु करीश जमदग्निए कह्यु, हुं तारी पासे तारी एक कन्या मांगवा आव्यो छुं राजाए कह्यु, मारे (१००) सो पुत्रीओ छे, तेमांथी जे तमारी चाहना करे, ते तमे सुखे लइ जाओ. जमदग्नि कन्याओना मेहेलमां गया, अने कहेवा लाग्या के तमारामांथी जेने मारी धर्मपत्नी थवुं होय ते कही द्यो ते राजपुत्रीओए जटावाला, ताल पडेला तथा धोला केशवाला, दुर्बल अने भीख मांगी खानारा जमदग्निने दीठो, अने तेनु आ वचन सांभल्यु, त्यारे सर्वे तेनी उपर थुकवा लागी, अने कहेवा लागी के आवी वात करता तने लज्जा आ वती नथी ? तेओना अपमानथी जमदग्निने क्रोध चड्यो, अने विद्याना प्रभावथी ते राजपुत्रीओने महा कुरुपवान् बनावी दीधी, अने पोते त्यांथी निकली मेहेलोना आंगणामा आव्या, त्या राजानी नानी पुत्री रेतीना ढगलामा रमती हती, तेने, हाथमा बिजोरानु फल लइ कहे वा लाग्यो के हे रेणुका ! तु मने चाहे छे ? ते बालिकाए बिजोरु देखी हाथ पसार्यो, तेथी रुषिए कह्यु के आ मने चाहे छे, एम कही मुनिए तेने लइ लीधी राजाए केटलीक गाय तथा धन आपी पुत्रीनो विवाह तेनी साथे विधि पुर्वक कर्यो पछी जमदग्निए पोतानी सर्वे सालीओने

स्नेहथी रूपाली करी, अने रेणुकाने लइ पोताना आश्रममां आव्या. ते मुग्धा, मधुर आकृति, हरिणाक्षीने प्रेमथी वृद्धि पमाडता हवा. आंगलीउं उपर दिवस गणतां अनुक्रमे ज्यारे रेणुका सुंदर यौवन रूप कामलीलायुक्त वनने प्राप्त थइ, त्यारे, जमदग्निए अग्निनी साक्षीए रेणुकानी साथे फरी लग्न कर्युं, ज्यारे रेणुका रुतुकालने प्राप्त थइ, त्यारे जमदग्नि कहेवा लाग्या के हे प्रिये! हुं तारा वास्ते चरु साधुं छुं. "चरु ते होममां नाखवानी वस्तुउं कहेवाय छे" जेना प्रतापथी सर्व ब्राह्मणोमां उत्तम प्रतापवालो तने एक पुत्र थशे. रेणुकाए कह्युं हस्तिनापुरमां कुरुवंशी अनंतवीर्य राजानी साथे मारी एक बेहेन परणावी छे. तेने वास्ते एक क्षत्रीय चरु पण साधो, पछी जमदग्निए ब्राह्मण चरु पोतानी भार्या वास्ते, अने क्षत्रिय चरु पोतानी भार्यानी बेहेन वास्ते सिद्ध कर्यो. हवे रेणुकाए मनमां विचार कर्यो के हुं जेम अटवीमां हरणीनी जेम रहुं छुं तेम, मारो पुत्र पण जंगलोमां तेवीज रीते रहेशे, तेथी क्षत्रिय चरु जो हुं भक्षण करुं तो मने राजपुत्र थाय, जेथी जंगलवासथी छुटे, एवो विचार करी क्षत्रिय चरु पोते खाइ लीधो, अने ब्राह्मण चरु पोतानी बेहेनने खवराव्यो. बंनेने पुत्रो प्रसव्या. रेणुकाए जे पुत्र प्रसव्यो तेनुं नाम राम पाड्युं, अने तेनी बेहेननां पुत्रनुं नाम कृतवीर्य पाड्युं. अनुक्रमे बंने मोटा थया. राम आश्रममां मोटो थयो, कृतवीर्य राजमेहेलोमां मोटो थयो. राम क्षत्रिय तेज देखाडवा लाग्यो. अन्यदा एक विद्याधर अतिसार रोगवालो ते आश्रममां आवी पहोंच्यो, अतिसारना कारणथी आकाशगामिनी विद्या भूली गयो. ते मांदा विद्याधरनी रामे औषध, पथ्यादिथी भाइनी जेम आसना वासना करी. विद्याधरे संतुष्ट थइ रामने परशुविद्या आपी. राम पण सरकडाना वनमां जइ ते विद्या सिद्ध करवा लाग्यो. ते विद्याना प्रभावथी राम जगत्‌मां परशुराम नामथी प्रसिद्ध थयो. एकदा रेणुका, जमदग्निनी आज्ञा लइ उत्कंठाथी पोतानी बेहेनने मलवावास्ते हस्तिनापुरमां गइ. रेणुकाने पोतानी साली जाणी अनंतवीर्य राजा मश्करी करवा लाग्यो. अनुक्रमे कामासक्त थवाथी निरंकुश थइ रेणुका साथे विषय सेवन करवा लाग्यो. अनंतवीर्यना भोगथी रेणुकाने एक पुत्र थयो, छतां विषयमां अ-

असत्य बोल बोलता नथी, वली तने जे तारा तपनु अभिमान छे, ते तारो तप निष्फल छे, कारण के तमारा शास्त्रमा लख्यु छे के " अपुत्रस्य गतिर्नास्ति " अर्थात् पुत्र रहितनी गति नथी, आ शु तें शास्त्रमा सां भल्यु नथी ? तो जेनी शुभगति न थइ तेनाथी अधिक पापी कोण छे ? हवे जमदग्निए विचार कर्यो के अमारा शास्त्रमा तो जेम चकलाए कह्यु तेमज छे तेथी फरी मनमां विचार आव्यो के, ज्यारे मारे स्त्री अने पुत्र नथी, त्यारे मारो सर्व तप एवो छे के, जेम पाणीना प्रवाहमां मुत र्यु, तेवो छे हवे जमदग्निने मनमा स्त्रीनी चाहना थइ आ प्रमाणे बे खी धन्वनतरि देवता जैन धर्मी थयो अने देवताओ त्याथी अदृश्य थइ गया जमदग्नि त्यांथी उठी नेमिककोष्टक नगरमां जीतशत्रु राजा पासे गयो राजाने बहु पुत्रीओ हती, तेथी तेनी एक पुत्री मागु, एवो विचार कर्यो राजा पण रुषिने देखी आसनथी उठी बे हाथ जोडी प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के आप शा वास्ते अत्रे पधार्या छो ? मने आदेश करो ? आपनु जे काम होय ते हु करीश जमदग्निए कह्यु, हु तारी पासे तारी एक कन्या मांगवा आव्यो छु राजाए कह्यु, मारे (१००) सो पुत्रीओ छे, तेमाथी जे तमारी चाहना करे, ते तमे सुखे लइ जाओ जमदग्नि कन्याओना मेहेलमा गया, अने कहेवा लाग्या के तमारामाथी जेने मारी धर्मपत्नी थवु होय ते कही धो ते राजपुत्रीओए जटावाला, ताल पडेला तथा धोला केशवाला, दुर्बल अने भीख मांगी खानारा जमदग्निने दीठो, अने तेनु आ वचन सांभल्यु, त्यारे सर्वे तेनी उपर थुक्वा लागी, अने कहेवा लागी के आवी वात करतां तने लज्जा आ वती नथी ? तेओना अपमानथी जमदग्निने क्रोध चढ्यो, अने विद्याना प्रभावथी ते राजपुत्रीओने महा कुरुपवान् बनावी दीधी, अने पोते त्याथी निकली मेहेलोना आगणामां आव्या, त्यां राजानी नानी पुत्री रेनीना आगणामा रमती हती, तेने, हाथमां बिजोरानु फल लइ कहे वा लाग्यो के हे रेणुका ! तु मने चाहे छ ? ते बालिकाए बिजोरु देखी हाथ पसार्यो, तेथी रुषिए कह्यु के आ मने चाहे छे, एम कही मुनिए तेने लइ लीधी राजाए केटलीक गाय तथा धन आपी पुत्रीनो विवाह तेनी साथे विधि पुर्वक कर्यो पछी जमदग्निए पोतानी सर्वे सालीओने

छे. पगमांथी रुधिरनी धारा छुटे छे, तोपण जीववाली भूमि उपर पग मुकतो नथी. ते वखते देवताउये गीत नाटकनो बहु मोहक प्रारंभ कर्यो, तो पण राजा क्षोभायमान थयो नही; तेथी बंने देवताउ सिद्ध पुत्रोनुं रूप करी राजाने कहेवा लाग्या, हे महाभाग! तमारुं आयुष्य हजु लांबुं छे. तेथी स्वछंद भोग विलास करो, कारण के यौवनमां तप करवो ते वास्तविक नथी. ज्यारे वृद्ध थाउ, त्यारे दीक्षा लेजो. आ वात सांभली राजाए कह्युं के जो मारुं आयुष्य लांबु छे, तो हुं बहुज धर्म करीश. कारण के पाणी जेटलुं उंडुं होय छे, तेटलीज कमलनी नाल पण वधी जाय छे, वली यौवनमां इंद्रियोनो जय करवो, तेज खरो तप छे. हवे बंने देवताउने खातरी थइ के आ राजा तो कदापि चलायमान थाय तेवो नथी. पछी बंने देवताउ सर्वथी उत्कृष्ट जमदग्नि तापस पासे तेनी परीक्षा करवा आव्या. तेउए, जेनी वडवृक्षनी जटानी जेम, धरतीनी साथे जटा लागी रही छे, तथा जेना पगोमां सर्प्पनी बंबीउ बनी गइ छे, एवी स्थितिमां जमदग्नि तापसने दीठो. हवे बंने देवताउ देवमायाथी जमदग्निनी दाढीमां मालो बनावी, चकला, चकली बनी, बंने जणा मालामां बेठा. पछी चकलो चकलीने कहेवा लाग्यो के हुं हिमवंत पर्वत उपर जइश. चकलीए कह्युं के हुं तने कदापि नहि जवा दउं, कारण के तुं त्यां जइ कदाच कोइ चकलीमां आसक्त थइ जाय तो मारा शुं हाल थाय? चकलाए कह्युं के जो हुं फरीने पाछो न आवुं तो मने गौहत्यानुं पाप लागे. चकलीए कह्युं के हुं आ तारा सोगनने मानती नथी, जे हुं सोगन आपुं ते तुं कबुल करे, तो हुं तने जवा दउं. चकलाए कह्युं भले तुं जे सोगन आपवानी होय ते कही दे? चकलीए कह्युं के जो तुं कोइ चकलीनी साथे यारी करे तो, आ जमदग्नि तापसनुं जे पाप छे ते तने लागे एम सोगन खा. चकला चकलीना आ वचन सांभली जमदग्निने क्रोध उत्पन्न थयो, अने बंने हाथवती चकला चकलीने पकडी लीधा, अने तेउने कहेवा लाग्यो के हुं पापनो अत्यंत नाश करनार एवो महा दुष्कर तप करुं छुं, छतां हवे मारे एवुं कयुं पाप बाकी रही गयुं छे के जेथी तमे मने पापी ठरावो छो? चकलाए कह्युं हे रुषि! तुं अमारा उपर गुस्सो कर नही; कारण के अमे

म गृहवासमां तो पांचमा चक्रवर्ती थया, पछी दीक्षा लइ केवली थइ तीर्थंकर थया

त्यारपछी हस्तिनापुर नगरमां कुरुवंशी सूर नामना राजा थया, तेनी श्रीराणीना पुत्र श्रीकुंथुनाथ थया प्रथम गृहस्थावासमां छठा चक्रवर्ती थया, पछी दीक्षा लइ सत्तरमा तीर्थंकर थया

त्यार पछी श्रीहस्तिपुर नगरमां कुरुवंशी सुदर्शन नामना राजा थया, तेनी देवी राणीना पुत्र श्री अरनाथ थया ते गृहस्थावासमां सातमा चक्रवर्ती थया, अने दीक्षा लीधा पछी अढारमा तीर्थंकर थया

अढारमा अने ओगणीशमा तीर्थंकरना अंतरमां आठमा, कुरुवंशी सुभूम नामना चक्रवर्ती थया आ सुभूमना वखतमांज परशुराम थया ते बंनेनो संबंध जैनमतना शास्त्रोने अनुसारे लखीये छीये

योगशास्त्रमां लख्युं छे के वसंतपुर नामना नगरमां उच्छन्नवंशी अर्थात् जेनो कोइ संबंधी नहीं, एवो अग्निक नामनो एक छोकरो हतो एकदा अग्निक कोइ सथवारा साथे देशांतर जतां मार्गमां साथथी भूलो पडतां जंगलमां एक तापसना आश्रममां गयो कुलपति तापसे तेने पोतानो पुत्र करी राख्यो अनुक्रमे अग्निक अत्यंत घोर तप करी मोटो तेजस्वी थयो जगत्मां यमदग्नि तापसना नामथी प्रसिद्ध थयो ते अवसरे एक जैनमति विश्वानर नामनो देव तथा एक तापसोनो भक्त धन्वंतरि नामनो देव, बने जणा परस्पर विवाद करवा लाग्या विश्वानरे कह्यु के अरिहंतनो कथन करेलो धर्म प्रमाणिक छे, धन्वंतरिये कह्यु के तापसोनो धर्म सत्य छे बनेना गुरुओनी परीक्षा करवी एम विश्वानरे सुचना करी ते बंने देवोये कबुल करी तेमां पण विश्वानरे कह्यु के जैनमतना जघन्य गुरुनी परीक्षा करवी अने तापसोना उत्कृष्ट गुरुनी परीक्षा करवी ते मारे कबुल छे प्रथम मिथिला नगरीनो पद्मरथ राजा जे नवोज जैनधर्मी थइ भावयति थयो हतो, ते चंपानगरीमां गुरुनी पासे दीक्षा लेवा सारुं जतो हतो तेने रस्तामां ते देवताओये दीठो रस्तामां तेने दुःख देवावास्ते बहु कांटा कांकरा वनावी नांख्या, अने रस्ता शिवाय बीजा स्थानके बहु कीडा आदिनी उत्पत्ति करी राजा भावयति होवाथी शुद्ध भाव पूर्वक, कोमल उघाडा पगे कांटा कांकरा उपर चाल्यो जाय

छे. पगमांथी रुधिरनी धारा छुटे छे, तोपण जीववाली भूमि उपर पग मुकतो नथी. ते वखते देवताउये गीत नाटकनो बहु मोहक प्रारंभ कर्यो, तो पण राजा क्षोभायमान थयो नही; तेथी बंने देवताउ सिद्ध पुत्रोनुं रूप करी राजाने कहेवा लाग्या, हे महाभाग! तमारुं आयुष्य हजु लांबु छे. तेथी स्वछंद भोग विलास करो, कारण के यौवनमां तप करवो ते वास्तविक नथी. ज्यारे वृद्ध थाउ, त्यारे दीक्षा लेजो. आ वात सांभली राजाए कह्युं के जो मारुं आयुष्य लांबु छे, तो हुं बहुज धर्म करीश. कारण के पाणी जेटलुं उंडुं होय छे, तेटलीज कमलनी नाल पण वधी जाय छे, वली यौवनमां इंद्रियोनो जय करवो, तेज खरो तप छे. हवे बंने देवताउने खातरी थइ के आ राजा तो कदापि चलायमान थाय तेवो नथी. पछी बंने देवताउ सर्वथी उत्कृष्ट जमदग्नि तापस पासे तेनी परीक्षा करवा आव्या. तेउए, जेनी वडवृक्षनी जटानी जेम, धरतीनी साथे जटा लागी रही छे, तथा जेना पगोमां सर्प्पनी बंबीउ बनी गइ छे, एवी स्थितिमां जमदग्नि तापसने दीठो. हवे बंने देवताउ देवमायाथी जमदग्निनी दाढीमां मालो बनावी, चकला, चकली बनी, बंने जणा मालामां बेठा. पछी चकलो चकलीने कहेवा लाग्यो के हुं हिमवंत पर्वत उपर जइश. चकलीए कह्युं के हुं तने कदापि नहि जवा दउं, कारण के तुं त्यां जइ कदाच कोइ चकलीमां आसक्त थइ जाय तो मारा शुं हाल थाय? चकलाए कह्युं के जो हुं फरीने पाछो न आवुं तो मने गौहत्यानुं पाप लागे. चकलीए कह्युं के हुं आ तारा सोगनने मानती नथी, जे हुं सोगन आपुं ते तुं कबुल करे, तो हुं तने जवा दउं. चकलाए कह्युं भले तुं जे सोगन आपवानी होय ते कही दे? चकलीए कह्युं के जो तुं कोइ चकलीनी साथे यारी करे तो, आ जमदग्नि तापसनुं जे पाप छे ते तने लागे एम सोगन खा. चकला चकलीना आ वचन सांभली जमदग्निने क्रोध उत्पन्न थयो, अने बंने हाथवती चकला चकलीने पकडी लीधा, अने तेउने कहेवा लाग्यो के हुं पापनो अत्यंत नाश करनार एवो महा दुष्कर तप करुं छुं, छतां हवे मारे एवुं कयुं पाप बाकी रही गयुं छे के जेथी तमे मने पापी ठरावो छो? चकलाए कह्युं हे रुषि! तुं अमारा उपर गुस्सो कर नही; कारण के अमे

असत्य बोल बोलता नथी, वली तने जे तारा तपनुं अभिमान छे, ते तारो तप निष्फल छे, कारण के तमारा शास्त्रमां लख्युं छे के " अपुत्रस्य गतिर्नास्ति " अर्थात् पुत्र रहितनी गति नथी, आ शुं तें शास्त्रमां सां भल्युं नथी ? तो जेनी शुभगति न थइ तेनाथी अधिक पापी कोण छे ? हवे जमदग्निए विचार कर्यो के अमारा शास्त्रमां तो जेम पकलाए कह्यु तेमज छे तेथी फरी मनमां विचार आव्यो के, ज्यारे मारे स्त्री अने पुत्र नथी, त्यारे मारो सर्व तप एलो छे के, जेम पाणीना प्रवाहमां मुतर्वु, तेवो छे हवे जमदग्निने मनमां स्त्रीनी चाहना थइ आ प्रमाणे दे खी ध्वनंतरि देवता जैन धर्मी थयो अने देवताओ त्यांथी अदृश्य थइ गया जमदग्नि त्यांथी उठी नेमिककोष्टक नगरमां जीतशत्रु राजा पासे गयो राजाने घणु पुत्रीओ हती, तेथी तेनी एक पुत्री मागु, एवो विचार कर्यो राजा पण रुषिने देखी आसनथी उठी बे हाथ जोडी प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के आप शा वास्ते अत्रे पधार्या छो ? मने आदेश करो ? आपनुं जे काम होय ते हुं करीश जमदग्निए कह्यु, हु तारी पासे तारी एक कन्या मागवा आव्यो छुं राजाए कह्यु, मारे (१००) सो पुत्रीओ छे, तेमांथी जे तमारी चाहना करे, ते तमे सुखे लइ जाओ जमदग्नि कन्याओना मेहेलमां गया, अने कहेवा लाग्या के तमारामांथी जेने मारी धर्मपत्नी थवु होय ते कही द्यो ते राजपुत्रीओए जटावाला, ताल पडेला तथा धोला केशवाला, दुर्बल अने भीख मांगी खानारा जमदग्निने दीठो, अने तेनु आ वचन सांभल्यु, त्यारे सर्वे तेनी उपर थुकवा लागी, अने कहेवा लागी के आवी वात करतां तने लज्जा आ वती नथी ? तेओना अपमानथी जमदग्निने क्रोध चड्यो, अने विद्याना प्रभावथी ते राजपुत्रीओने महा कुरुपवान् बनावी दीधी, अने पोते त्याथी निकली मेहेलोना आंगणामा आव्या, त्यां राजानी नानी पुत्री रेतीना ढगलामां रमती हती, तेने, हाथमा बिजोरानु फल लइ कहे वा लाग्यो के हे रेणुका ! तुं मने वांछे छे ? ते बालिकाए बिजोरुं देखी हाथ पसार्यो, तेथी रुषिए कह्यु के आ मने वांछे छे, एम कही मुनिए तेने लइ लीधी राजाए केटलीक गाय तथा धन आपी पुत्रीनो विवाह तेनी साथे विधि पुर्वक कर्यो पछी जमदग्निए पोतानी सर्वे सालीओने

स्नेहथी रूपाली करी, अने रेणुकाने लइ पोताना आश्रममां आव्या. ते मुग्धा, मधुर आकृति, हरिणाक्षीने प्रेमथी वृद्धि पमाडता हवा. आंगलीउं उपर दिवस गणतां अनुक्रमे ज्यारे रेणुका सुंदर यौवन रूप कामलीलायुक्त वनने प्राप्त थइ, त्यारे, जमदग्निए अग्निनी साक्षीए रेणुकानी साथे फरी लग्न कर्युं; ज्यारे रेणुका रुतुकालने प्राप्त थइ, त्यारे जमदग्नि कहेवा लाग्या के हे प्रिये! हुं तारा वास्ते चरु साधुं छुं. "चरु ते होममां नाखवानी वस्तुउं कहेवाय छे" जेना प्रतापथी सर्व ब्राह्मणोमां उत्तम प्रतापवालो तने एक पुत्र थशे. रेणुकाए कह्युं हस्तिनापुरमां कुरुवंशी अनंतवीर्य राजानी साथे मारी एक बेहेन परणावी छे. तेने वास्ते एक क्षत्रीय चरु पण साधो, पछी जमदग्निए ब्राह्मण चरु पोतानी भार्या वास्ते, अने क्षत्रिय चरु पोतानी भार्यानी बेहेन वास्ते सिद्ध कर्यो. हवे रेणुकाए मनमां विचार कर्यो के हुं जेम अटवीमां हरणीनी जेम रहुं छुं तेम, मारो पुत्र पण जंगलोमां तेवीज रीते रहेशे, तेथी क्षत्रिय चरु जो हुं भक्षण करुं तो मने राजपुत्र थाय, जेथी जंगलवासथी छुटे, एवो विचार करी क्षत्रिय चरु पोते खाइ लीधो, अने ब्राह्मण चरु पोतानी बेहेनने खवराव्यो. बंनेने पुत्रो प्रसव्या. रेणुकाए जे पुत्र प्रसव्यो तेनुं नाम राम पाड्युं, अने तेनी बेहेननां पुत्रनुं नाम कृतवीर्य पाड्युं. अनुक्रमे बंने मोटा थया. राम आश्रममां मोटो थयो, कृतवीर्य राजमेहेलोमां मोटो थयो. राम क्षत्रिय तेज देखाडवा लाग्यो. अन्यदा एक विद्याधर अतिसार रोगवालो ते आश्रममां आवी पहोंच्यो, अतिसारना कारणथी आकाशगामिनी विद्या भूली गयो. ते मांदा विद्याधरनी रामे औषध, पथ्यादिथी भाइनी जेम आसना वासना करी. विद्याधरे संतुष्ट थइ रामने परशुविद्या आपी. राम पण सरकडाना वनमां जइ ते विद्या सिद्ध करवा लाग्यो. ते विद्याना प्रभावथी राम जगत्मां परशुराम नामथी प्रसिद्ध थयो. एकदा रेणुका, जमदग्निनी आज्ञा लइ उत्कंठाथी पोतानी बेहेनने मलवावास्ते हस्तिनापुरमां गइ. रेणुकाने पोतानी साली जाणी अनंतवीर्य राजा मश्करी करवा लाग्यो. अनुक्रमे कामासक्त थवाथी निरंकुश थइ रेणुका साथे विषय सेवन करवा लाग्यो. अनंतवीर्यना भोगथी रेणुकाने एक पुत्र थयो, छतां विषयमां अ-

तिक्षुब्ध थयो जमदग्नि, दोप तरफ विलकुल दृष्टि नहि करतां रेणुकाने पुत्र सहित पोताना आश्रममा लाव्यो ज्यारे परशुरामे पोतानी माताने पुत्र सहित दीठी, त्यारे अत्यंत क्रोधमां आवी परशुथी पोतानी माता तथा ते छोकराना मस्तक कापी नांख्यां ज्यारे आ वृत्तांत अनंतवीर्य राजाना जाणवामा आव्यो, त्यारे क्रोध युक्त, फोज साथे आवी जमदग्निनु आश्रम वाली भस्म कर्युं, सर्व तापसोने त्रास पमाड्यो तापसोये भागतां भागतां जे रोलो कर्यो ते परशुरामे सांभल्यो, सर्व वृत्तांत जाणवामां आवता परशुराम, राजानी सेना उपर परशु लइ चढी आव्यो परशुथी राजाने तथा तेनी सेनाना सर्व सुभटोने काष्टनी जेम चीरी नाख्या पछी पोताना आश्रममां चाल्यो गयो हस्तिनापुरमां प्रधान राजपुरुषोये कृतवीर्यने राज्यसिंहासन उपर वेसाड्यो कृतवीर्य उमरमा नानो हतो एक दिवस पोतानी माताना मुखथी पोताना पिताना मोतनु वृत्तांत सांभली क्रोधयुक्त थइ, जमदग्निने आश्रममां आवी मारी नांख्यो परशुराम पितानो वध सांभली क्रोधमा जाज्वल्यमान थइ हस्तिनापुर आवी कृतवीर्यने मारीने पोते राज्यसिंहासन उपर चढी वेठो, कारण के राज्य पराक्रमने आधीन छे हवे कृतवीर्यनी तारा नामा गर्भवती राणी परशुरामना भयथी भागीने कोइ जगलमां तापसोना आश्रममां गइ तापसोये दयाथी ते राणीने पोताना मठना भोंयरामां निधाननी जेम गुप्त राखी राणीये चौद स्वप्न सुचित पुत्रने जन्म आप्यो तेनुं नाम सुभूम राख्युं हवे परशुराम ज्यां ज्यां क्षत्रियनो योग मले त्यां त्यां तेनो कुहाडो जाज्वल्यमान थतो होवाथी दरेक क्षत्रियनो शिरछेद करतो अन्यदा तारा राणी ज्यां गुप्तपणे पुत्रसहित रहेली हती त्यां परशुराम आव्यो परशुरामनी परशु जाज्वल्यमान थइ परशुरामे तापसोने पुछ्युं, अहींआ कोइ क्षत्रिय छे ? तापसोये कह्यु अमे गृहस्थावासमां क्षत्रियो हता ते सांभली परशुरामे तापसोनो आश्रम तजी दीधो आखर सर्व ऋषियोने छोडी सातवार निःक्षत्रिय पृथ्वी करी जेम अग्नि पर्यंत उपर घासने वाकी राखती नथी, तेम परशुरामे जे जे क्षत्रिय राजाप्रमुख प्रसिद्ध हता, ते सर्वेने मारी, तेठंनी दाढाथी एक थाल भर्यो हवे परशुरामे गुप्तपणे निमित्तियाठंने पुछ्यु के मारु मोत कोना हाथथी थशे ? निमित्तियाठंये क

छुं के जे थाल तमोये दाढाथी जरेल छे, ते थालमां जे पुरुषना देखवाथी दाढानी क्षीर बनी जशे, अने आपना सिंहासन उपर बेसी जे ते क्षीरने खाशे, तेना हाथथी तमारुं मरण थशे. आ निमित्त सांजली परशुरामे दानशाला शरू करी. दानशालानी आगल एक सिंहासननी रचना करी. ते उपर क्षत्रियोनी दाढावालो स्थाल राख्यो. हवे तापसोना आश्रममां प्रतिदिन तापसोना लाडथी उछरतो वृक्षनी जेम सुभूम वृद्धि पाम्यो. ते अवसरे मेघ नामना विद्याधरे कोइ निमित्तियाने पुछ्युं के मारी पद्मश्री नामनी कन्यानो कोण वर थशे? निमित्तियाये कह्युं के सुभूम वर थशे; एम कही सुभूमनो वृत्तांत मेघ विद्याधरने कह्यो. मेघ विद्याधरे पोतानी पुत्री सुभूमने परणावी, अने सेवकनी जेम तेनी पासे रहेवा लाग्यो. एकदा सुभूमे पोतानी माताने पुछ्युं हे माता! जेमां आपणे रहीये छीये तेटलोज लोक छे के तेनाथी अधिक पण छे? माताये कह्युं, लोक तो अनंत छे, अने आ आश्रमस्थान तो मांखीना पग जेटली जगामां छे. आ लोकमां बहुज प्रसिद्ध हस्तिनापुर नामनुं नगर छे. ते नगरीमां तारा पिता कृतवीर्य नामना राजा राज्य करता हता, परंतु परशुराम तारा पिताने मारी हस्तिनापुरनो राजा बनी गयो छे. ते परशुरामे निःक्षत्रिय पृथ्वी करेली छे. परशुरामना जयथीज अमे आ आश्रममां गुप्तपणे रहीये छीये. माताना आ वचनो सांजली सुभूम मंगलना तारानी जेम लाल थयो. आश्रमथी निकली सिधो हस्तिनापुरमां आव्यो. लोकोये तेने दीठो, त्यारे विचारवा लाग्या के आवो अद्भूत सुंदर पुत्र कोनो हशे? पुछतां सुभूमे कह्युं, हुं क्षत्रिय पुत्र छुं. लोकोये कह्युं, तुं बलती अग्निमां पतंगीआनी जेम केम आव्यो? सुभूमे कह्युं, परशुरामने मारवा आव्यो छुं. लोकोए तेने बालक जाणी तेना बोलवा उपर कांइ ख्याल न कर्यो. हवे सुभूम सिंहनी जेम पूर्वोक्त सिंहासन उपर जइ बेठो. तत्काल देवताना विनियोगथी दाढानी क्षीर बनी गइ. सुभूम ते खावा लाग्यो. रक्षपाल ब्राह्मणो तत्काल सुभूमने मारवा उठ्या, ते वखते मेघनाद विद्याधरे सर्व ब्राह्मणोने मारी काढ्या. आ वृत्तांत जाणी परशुराम कंपतो, दांत पीसतो, क्रोधथी जाज्वल्यमान थतो, परशु लइ सुभूमने मारवा आव्यो. सुभूमने मारवा परशु चलावी, परंतु ते परशु सुभूम

सुधी पहोंचतां पेहेलांज आगना अगारानी जेम ठलवाइ गइ परशुनी विद्यादेवी सुभूमना पुण्य प्रभावथी परशु छोडी नासी गइ सुभूमे श ब्रना अभावथी तत्काल थालज उठावीने परशुराम उपर फेंक्यो, ते थालनुं चक्र बनी गयु ते चक्रे परशुरामनु मस्तक कापी नांख्यु ते चक्रथीज सुभूम आठमो चक्रवर्ती थयो

आ कथा उपर लौकिक शास्त्रमां नवीन कथा बनाववामां आवी छे, परंतु ते वास्तविक नथी नवीन कथा एवी छे के परशुराम परशुथी क्षत्रियोने मारतो मारतो रामचन्द्रजी पासे पहोंच्यो, अने परशुथी रामचन्द्रजीने मारवा लाग्यो रामचंद्रजीये नम्रताथी तेनी पगचंपी करी, तेनुं तेज हरी लीधुं, तेथी परशुरामनी परशु तेना हाथमांथी नीचे पडी गइ, जे परशु ते फरीथी उपाडी शक्यो नहीं इत्यादि हवे सार लेवानो ए छे के– नवीन वात कोइ पण रीते साची ठरे तेम छे ? परशुराम एक अवतारी पुरुष हता तेनी हीनता दूर करवा वास्ते श्रीरामचन्द्रजीनो संघष लखी बताव्यो छे ते संघष बतावता एक अवतारना अंशने बीजा अवतारे खेंची लीधो, तेमां परशुरामनी लघुता बतावी पटमुज नहिं पण एवो पण विचार न कर्यो के घने अवतार अज्ञानी बनी जशे ज्यारे परशुराम पोते पोतानाज अंशने कुहाडाथी कापवा लाग्या, त्यारे तेना करतां अधिक कोण अज्ञानी कहेवाय ? तेथी वास्तविक ए छे के जेनी पासे परशुरामनी परशु पडी गइ ते रामचन्द्रजी न हता, परंतु ते आठमो सुभूम चक्रवर्ती हतो ज्यारे सुभूम चक्रवर्ती थयो, त्यारे जेम परशुरामे सातवार नि क्षत्रिय पृथ्वी करी हती, तेम पाछला वेरथी सुभूमे एकवीश वार निर्ब्राह्मणी पृथ्वी करी पोतानी जाण प्रमाणे कोइ पण ब्राह्मण जीवतो राख्यो नहीं तेज कारणथी आ राजाउने ब्राह्मणोये दैत्य, राक्षसना नामथी पुस्तकोमां लखेल छे बन्ने मरीने अधोगतिमां गया इति परशुराम तथा सुभूम चक्रवर्ती वृत्तांत

सुभूम चक्रवर्ती पेहेलां तेज अतरमां छठ्ठा पुरुषपुंडरिक वासुदेव, आनंद नामना बलदेव अने बलि नामना प्रतिवासुदेव थया, तथा सुभूमनी पछी तेज अतरमा दत्त नामना सातमा वासुदेव, नंद नामना बलदेव, अने प्रल्हाद नामना प्रतिवासुदेव थया

त्यार पछी मिथिलानगरीमां इक्ष्वाकुवंशी कुंभ राजा थया, तेनी प्रभावती राणीनी पुत्री मल्लिनाथ नामा ओगणीशमा तीर्थंकर थया.

त्यार पछी राजगृह नगरीमां हरिवंशी सुमित्र राजा थया, तेनी पद्मावती राणीना पुत्र मुनिसुव्रत नामना वावीशमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां महापद्म नामना नवमा चक्रवर्ती थया. तेनो संबंध त्रेशठशलाकापुरुषचरित्रथी जाणवो, परंतु तेना भाइ विष्णुकुमारनो थोडो संबंध अहींआ लखीये छीये.

हस्तिनापुर नगरमां पद्मोत्तर नामना राजानी ज्वालादेवी राणीने बे पुत्रो थया. मोटानुं नाम विष्णुकुमार अने नानानुं नाम महापद्म हतुं. ते अवसरे अवंती नगरीमां श्रीधर्म नामनो राजा हतो. तेनो मंत्री नमुचि के जेनुं बीजुं नाम बल हतुं. ते मिथ्यादृष्टि ब्राह्मण हतो. तेणे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिना शिष्य सुव्रत आचार्यनी साथे पोताना मत संबंधी विवाद कर्यो. वादमां ते हारी जवाथी, रात्रिये तलवार लइ आचार्यने मारवा चाल्यो. रस्तामां पग थंभ्या. आ वृत्तांत राजाना जाणवामां आवतां तेणे नमुचिने राज्यनी हदपार कर्यो. नमुचि (बल) त्यांथी निकली हस्तिनापुरमां युवराज महापद्मनी सेवा करवा लाग्यो. तेनाथी कोइ काममां तुष्टमान थइ जवाथी महापद्मे तेने वरदान आप्युं. कालानुक्रमे पद्मोत्तर राजा तथा विष्णुकुमार बंन्ने सुव्रताचार्यनी पासे दीक्षा लेता हवा. पद्मोत्तर राजा मोक्ष पाम्या, अने विष्णुकुमार तपना प्रभावथी महा लब्धिवान् थया. अनुक्रमे सुव्रताचार्य फरी हस्तिनापुरमां आव्या. ते वखते नमुचिबले विचार कर्यो के आ अवसर वेर लेवानो छे; तेथी महापद्म चक्रवर्तीने विनंति करी के, जेम वेदमां कहेल छे तेम हुं एक महायज्ञ करवा इच्छुं, तेथी मने पूर्वोक्त आपेलुं वरदान सफल करो. महापद्मे कह्युं सुखेथी मांग. नमुचिये कह्युं के मने केटलाएक दिवससुधी आपनुं तमाम राज्य सत्तासहित आपो. ते सांभली महापद्म तेनी चाहना मुजब सर्व राज्यसत्ता आपी पोताना अंतःपुरमां चाल्या गया. हवे नमुचिये नगरथी निकली यज्ञवास्ते यज्ञमंडप बनाव्यो. पोते दीक्षा लइ तेनी अंदर आसन उपर बेठो. ते वखते जैन मतना साधु शिवाय बीजा सर्व सन्यासी, भिक्षु, तेमज गृहस्थो भेटणा लइ नमस्कार करवा आव्या. ते

प्रसंगे नमुचिये कह्यु के आ यज्ञ मण्डपमां नथी आव्या एवा कोइ बाकी छे? लोकोये कह्यु के जैनमतना सुव्रताचार्य शिवाय बीजा सर्वे दर्शनवा लाउ आवी गया छे तत्काल नमुचिये क्रोधयुक्त थइ आचार्यने बोलाववा वास्ते सिपाइउने मोकल्या, अने तेउनी साथे कहेवराव्यु के राजा गमे तेवो होय तोपण सर्वने मानवा योग्य छे, तेमां पण साधुउने तो विशेष रीते मानवा योग्य छे, कारण के राजाथी उपरांत एवा अनाथ लिंगीउनी रक्षा करनार बीजो कोण छे? वली तमे अमने कांइ पण करवाने समर्थ नथी कदापि तेउ अहींआ न आवे तो कहेवुं के तमे बहु अभिमानी छो, तथा अमारा धर्मना निंदक छो, तेथी मारा राज्यथी बहार निकली जाउ? जे रहेशे तेउने हु मारी नांखीश, अने तेमां मने पाप पण लाग वानु नथी सिपाइउना उपर मुजब जहांगीरी संदेसाथी आचार्ये आवी मीठा वचनथी कह्यु के गृहस्थना काममा जवुं ते अमारो कल्प (आचार) नथी अमे अभिमानथी आव्या नथी एम आप समजशो नहि, कारण के साधुउ तो समभावथी पोताना धर्मकृत्योमां प्रवर्त्ते छे ते सांभली न मुचिवडे कठोर वचनथी शांतवृत्तिवाला मुनियोने कह्यु के, सात दिव सनी अंदर तमे सर्वे मारा राज्यनी बहार निकली जाउ, त्यार बाद जेउ रहेशे तेउने हु मारी नांखीश ते हुकम सांभली सर्व मुनियो पोताना तपोवनमां गया, अने विचार करवा लाग्या के हवे शु उपाय करवो? एक साधुए विचार करी कह्यु के महापद्म चक्रवर्तीना मोटा भाइ विष्णु मुनि लब्धिपात्र छे, अने ते मेरुपर्वत उपर छे, तेना कहेवाथी नमुचिवश प्रशांत थशे, ते कारणथी कोइ चारण साधु तेने अहींआ बोलावी लावे तो सारुं थाय तत्काल एक साधु बोल्या के मारी त्यांसुधी जवानी शक्ति छे, परंतु पाछा आववानी शक्ति नथी गुरुए कह्यु, तमने अहींआ विष्णु मुनि लइ आवशे, तमे जाउ ते साधु एक क्षणमां लब्धिथी त्यां गया, अने विष्णुमुनिने सर्व वृत्तांत संभळाव्यो विष्णुमुनि तत्काल त्यां निकली साधुने साथे लइ गुरुनी पासे आव्या, अने वंदना करी गुरुनी आज्ञाथी एकलाज राजसभामा आव्या ते वखते नमुचि विना सभाना सर्व लोकोये उठीने तेमने वंदना करी प्रभु धर्मोपदेश दइ कह्यु के निःसंगी साधुउ साथे वेर लेववु ते महा नर्क

कारण छे, कारण के साधु कोइनुं बगाडता नथी. वली जगत् पण मोटा पुरुषोने नमस्कार करे छे. कोइ शास्त्रमां मुनिनी निंदा करवी कही नथी, छतां पण आश्चर्यमात्र ए छे के, तुछ तथा क्षणिक, राज्य पामी अधम पुरुष मुनिउनुं अपमान करी पोताने मुनिउ पासे नमस्कार करावचा चाहे छे, वली नमुचिबलने तेमणे कह्युं के तुं आ बुरुं काम करवुं जवा दे, जेथी सर्व साधुउ सुखे रहे; वली तुं मत्सरमां मग्न थइ पोतानुं पोते शावास्ते बगाडवा चाहे छे? साधुउ चोमासामां विहार करता नथी, कारण के चोमासामां जीवोनी बहुज उत्पत्ति थइ जाय छे. वली सर्व जगोए तारुंज राज्य छे, तो सर्व साधु सात दिवसमां क्यां चाल्या जाय? विष्णुमहाराजना वचन सांजली नमुचिबल कुकाष्ठनी जेम अक्कड थइ बोल्यो के बहु बोलवानुं कांइ प्रयोजन नथी. पांच दिवस उपरांत जो तमारो साधु मारा राज्यमां रहेशे, तो हुं तेने चोरनी जेम बांधीश. वली तुं पण अमने मानवा योग्य छे, तेथी तुं जइने साधुउने कही दे के जेउने जीववानी चाहना होय ते नमुचिना राज्यथी बहार चाल्या जाय, कारण के राज्य ब्राह्मणनुं छे. वली तारा मानने खातर त्रण कदम अर्थात् त्रण पगलां जेटली जग्या आपु छुं, तेनी बहार कोइ साधुने देखीश, तो तेनो शिरछेद करीश. विष्णुमुनिये विचार्युं के आ पुरुष, साम अर्थात् मीठा वचनोथी समजी, माने तेवो नथी. आ तो महा पापी अने साधुउनो घातक छे, तेथी तेनी जडज उखेडवी जोइये. एवो निश्चय करी अत्यंत कोपमां आवी विष्णुमुनिये वैक्रिय लब्धिथी पोतानुं शरीर एक लाख योजननुं बनाव्युं. एक पगलाथी भरत क्षेत्रादि माप्या, बीजुं पगलुं पूर्वापर समुद्र उपर धरी, त्रीजुं पगलुं नमुचिबलना मस्तक उपर मुक्युं, जेथी नमुचिबल सिंहासन उपरथी पडी जमीननी अंदर उतरी गयो. तत्काल मरण पामी नर्कमां गयो. देवताउये विष्णुमुनिने मधुर गीत तेना कानमां संभलावी शांत कर्या, पछी शरीर संकोची गुरुपासे आवी आलोचना करी. पापनुं प्रायश्चित्त लइ विहार करी गया. जप, तप, करी संयम पाली मोक्षे गया.

आ कथाथी एम मालम पडे छे के ब्राह्मणोये पुराणोमां जे लख्युं छे के, विष्णु भगवाने वामनरूप करी यज्ञ कर्त्ता बली राजानी साथे छलना करी. ते आज विष्णुमुनि अने नमुचिनी कथा समजवी. ते कथाने ब-

गाडी पोताना मतने अनुसारे कांइनी कांइ कथा बनावी लीधी छे सार काढवानो ए छे के श्री भगवानने एवी शु गरज हती के धर्मी तथा यज्ञ करनारा बलि राजा साथे छलभेद करी तेने नुकशान करवुं ? एवुं काम तो निःकेवल बुद्धिहीन पुरुषोनुं छे, के पोतानी पुत्रियो तथा परस्त्रीयो साथे विषय सेवन करवानी वातो करवी वली भगवान असत्य बोल्या, बीजा पासे असत्य बोलाव्युं, चोरी करी, बीजानी साथे कुशील सेवन कर्युं, छलथी बीजाने मार्या, कपटना काम कर्यां इत्यादि काम तो नीच जनोने करवा योग्य छे श्री वीतराग, सर्वज्ञ परमेश्वर आवां काम कदापि करता नथी एवां काम करनारने, परमेश्वर, भूलथी पण न मानवा जोइये

इति विष्णुमुनि तथा नमुचिबलनो संबंध । लाग

वीशमा अने एकवीशमा तीर्थंकरना अंतरमां श्री अयोध्या नगरी आवी दशरथ राजानी कौशल्या राणीना पद्म (रामचन्द्र) नामना पुत्र [illegible]चार) ते आठमा बलदेव, अने दशरथ राजानी सुमित्रा राणीना पुत्र [illegible], कारण यण (लक्ष्मण) थया, ते आठमा वासुदेव थया जेनो शत्रु, रावण[illegible]लली न वासुदेव लंकानो राजा थयो आ सर्व वृत्तांत जगत्मां प्रसिद्ध [illegible]ात विव प्रणेनु यथार्थ चरित्र पद्मचरित्रथी जाणवुं लौकिक रामायण[illegible] वाद जेठ णना दश मस्तकनी जे वीना लखेली छे, ते वास्तविक नथी मनुष्य पोताना भाविक रीते दश मस्तक कदापि होइ शकतां नथी पद्मचरित्र करवो ? थम अनुयोगमां लख्युं छे के रावणनी पासे वडीलोनी परंपराथी [illegible]ाइ विष्णु णेकनो एक मोटो हार चाल्यो आवतो हतो रावणे बाल्यावस्थ[illegible] नमुचिबल ताना गलामां ते पेहेरी लीधो हतो नवे माणेक बहुज मोटां ह[illegible]ावी लावे माणेक एक बाजुना स्कंध उपर अने पांच माणेक बीजी बाजु[illegible]नी शक्ति उपर हारमां जडेलां रहेता अने तेमां नव मुखो देखातां हतां [illegible]आ विष्णु रावणनु असल मुख, तेज कारणथी दसमुखवालो रावण कहेवात[illegible] त्या गया रावणना समयथीज हिमालयमा वडीनाथनु तीर्थ उत्पन्न थ[illegible]लु तेनी उत्पत्ति जैनमतना शास्त्र मुजब आ प्रमाणे जणाय छे ते मू[illegible] करी लली पार्श्वनाथनी हती, तेनुज नाम वडीनाथ राखवामां आव[illegible]मु संपूर्ण स्वरूप गद्यबंध पार्श्वपुराणथी जाणवु [illegible]णमु

त्यार पछी मिथुला नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी विजयसेन [illegible] जानी वि. नर्केदु

राणीना पुत्र श्री नमिनाथ नामना एकवीशमा तीर्थंकर थया. तेना समयमां हरिषेण नामना दशमा चक्रवर्ती थया; तथा एकवीशमा अने बावीशमा तीर्थंकरना अंतरमां अगीआरमा जय नामा चक्रवर्ती थया.

त्यार पछी सौरीपुर नगरमां हरिवंशी समुद्रविजय राजानी शिवादेवी राणीना पुत्र श्री अरिष्टनेमि नामना बावीशमा तीर्थंकर थया, तेना समयमां तेमना काकाना पुत्र नवमां कृष्ण वासुदेव अने राम (बलभद्र) बलदेव थया. तेना प्रतिशत्रु जरासिंधु प्रतिवासुदेव थया. तेमां कृष्ण अने बलदेव तो जगत्मां बहुज प्रसिद्ध छे; कारण के लोको हाली कृष्ण वासुदेवने साक्षात् ईश्वर तथा ईश्वरना अवतार, जगत्कर्त्ता राजनाछे. आ वात कृष्ण वासुदेव जीवता हतां तो बिलकुल हतीज नबहु बेरंतु तेमना मरण पछी लोको कृष्ण वासुदेवने ईश्वरावतार मामारा राग्या छे. शा कारणथी तेम मानवा लाग्या, तेनो हेतु त्रेशठ शमानवा पुरुष चरित्रमां आ प्रमाणे लखेल छे.

चाहना रे कृष्ण वासुदेवे कोशंबी वनमां पोतानुं शरीर छोड्युं, एटले तब्राह्मणनुंवालुप्रभा पृथ्वी (पाताल) मां गया. बलभद्रजी एकसो वर्ष टली जग्नदीक्षा पाली पांचमां ब्रह्म देवलोकमां गया. अवधिज्ञानथी करीश. भाइ श्री कृष्णने पातालमां त्रीजी पृथ्वीमां देखी, भाइना स्नेसमजी, क्रिय शरीर बनावी श्री कृष्णनी पासे पहोंच्या. श्रीकृष्णने आतेथी तेम्करी कह्युं के हुं बलभद्र नामनो तमारा पाछला भवनो भाइ छुं. आवी विउपरना स्नेहथी अहींआ तमने मलवा आव्यो छुं. हवे तमारा बनाव्युं.रास्ते हुं शुं करुं ते तमो फरमावो? एम कही बलभद्रजीए कृउपर धर्रताना हाथ उपर लीधा. कृष्णनुं शरीर तत्काल पारानी जेम बल सिंहरथी जमीन उपर ढली पड्युं, अने पोताना मूल स्वरूपे बनी पामी नर्वप्रमाणे प्रथम आलिंगन करवाथी, तथा वृत्तांत कहेवाथी अने मा जलावी दर उपाडवाथी कृष्णे पण जाण्युं के आ मारो पूर्व भवनो अति वि पापनुं प्राभाइ बलभद्र छे. हवे कृष्णे संभ्रमथी उठी नमस्कार कर्यो, त्यारे ग आजीए कह्युं, हे भाइ! श्री नेमिनाथजीए आपने कह्युं हतुं के प्र के, विषयसुख महा दुःखदायक छे, ते तमे प्रत्यक्ष अनुभव कर्यो, वली करी.नियंत्रित एवा तमने हुं स्वर्गमां पण लइ जवाने शक्तिवान् नथी,

परंतु तमारा स्नेहथी तमारी पासे रहेवा इच्छुं छुं कृष्णे कह्युं के हे भाइ! तमो अत्रे रहेवा छतां पण, मारे करेला कर्मनुं फल तो अवश्य भोगववानुंज छे, परंतु मने आ दुःखथी ते दुःख बहुज अधिक लागे छे के:– हुं, द्वारिका तथा सकल परिवार दग्ध थइ जवाथी एकलो कोशंबी वनमां जरा कुमारना तीरथी मृत्यु पाम्यो, जेथी मारा शत्रुओने सुख अने मारा मित्रोने दुःख थयुं जगत्मां सर्व यदुवंश बदनाम थयो छे कारणथी हे भाइ! तमो भरतखंडमां जइ चक्र, शारंग, शंख, तथा गदा धारण करनारुं, पीला वस्त्रवालुं, अने गरुडनी ध्वजावालुं, मारु रूप बनावी, विमानमां बेसी, लोकोने ते प्रमाणे बतावो, तथा नील वस्त्रवालुं तालध्वज, हल, मुशल, शस्त्रने धारण करेलुं एवुं तमारु रूप पण विमानमां बेसी लोकोने बतावो, अने सर्व जगोए लोकोने कहो के, राम कृष्ण एवा अमे बने अविनाशी छइए, तथा स्वेच्छाविहारी छइए ज्यारे लोकोने आ सत्य प्रतीत थइ जशे, त्यारे अमारो सर्व अपयश दूर थइ जशे श्री कृष्णनुं पूर्वोक्त सर्व कथन श्री बलभद्रजीए स्विकारी लीधुं बलभद्रजी भरतखंडमां आवी कृष्ण बलभद्रनुं रूप करी सर्व जगोए विमानमां बेसी, लोकोने कहेवा लाग्या के, हे लोको! तमे कृष्ण बलभद्रनी अर्थात् अमो बंनेनी सुदर प्रतिमा बनावी, ईश्वरनी बुद्धिथी, अति आदर सत्कारथी, तेनी पुजा भक्ति करो? कारण के अमेज जगतुंना रचनारा छइए, अने स्थिति, संहार करनारा पण अमेज छइए अमे पोतानी इच्छा पूर्वक स्वर्ग (वैकुंठ) मांथी चाल्या आवीए छइए, अने फरी अमारी इच्छा प्रमाणे स्वर्गमां जइए छीए द्वारिकानी रचना अमेज करी हती, अने अमेज द्वारिकानो संहार कर्यो छे, कारण के ज्यारे अमे वैकुंठमां जवानी इच्छा करीए छीए, त्यारे द्वारिका सहित पोतानो सर्व वंश नाश करी चाल्या जइए छीए अमारी उपरांत बीजो कोइ कर्त्ता हर्त्ता नथी आ प्रमाणे बलभद्रजीनुं कहेवुं सांभली सर्व नगर तथा गामोना लोको, कृष्ण बलभद्रजीनी प्रतिमा, सर्व जगोए बनावी पूजवा लाग्या जेथी बलभद्रजी प्रतिमा पूजनाराओने धन, धान्यादि अनेक वस्तुओनो लाभ आपी सुखी करता हता तेज कारणथी बहु लोको हरिभक्त थइ गया ज्यारथी तेओ भक्त थया त्यारथी पुस्तको बनावी कृ

ष्णजीने पूर्णब्रह्म परमात्मा इश्वरादि अनेक नामोथी लखी तेमनी स्तु-
ति करवा लाग्या. ज्यारथी बलजद्रजीए कृष्णनी पूजा करावी, त्यार-
थीज लोकोए कृष्णनो इश्वरावतार मान्यो होय, एम केम न होय?
लौकिक शास्त्रोमां कृष्णने थयाने पांच हजार वर्ष थयां छे, अने उपर
मुजबना वृत्तांतने पण पांच हजार वर्ष थयां छे. ते वंने तपासतां उपर
मुजब बन्यानी हकीकत साची साबीत थाय छे.

बावीसमा अने त्रेवीसमा तीर्थंकरना अंतरमां बारमा ब्रह्मदत्त ना-
मना चक्रवर्ती थया. त्यार पछी वाणारसी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी अ-
श्वसेन राजा थया. तेनी वामा राणीना पुत्र श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवी-
समा तीर्थंकर थया.

त्यार पछी क्षत्रियकुंड नगरमां इक्ष्वाकुवंशी सिद्धार्थ नामना राजा-
नी त्रिसला राणीना पुत्र श्री वर्द्धमान (महावीर) स्वामि चोवीसमां च-
रम तीर्थंकर थया. जरतखंडमां वर्त्तमानमां जैनमत जे प्रचलित छे,
महावीरस्वामिना शासनथीज चाले छे, अने जे शास्त्रो रचायेलां छे,
सर्वे तेमना उपदेश अनुसारेज रचायेलां छे. श्री महावीरस्वामिनुं स
वृत्तांत जोवुं होय तो आवश्यकसूत्रवृत्ति, कल्पसूत्रवृत्ति तथा मह
वीरचरित्रादि ग्रंथोथी अवलोकन करवुं.

इति श्री तपगछीय मुनि श्री गणि मणिविजय तच्छिष्य मुनि बुद्धि
विजय तच्छिष्य मुनि आत्माराम आनंदविजय विरचिते जैनतत्त्व
दर्शे श्री रीषजादि महावीर पर्यंत पूर्ववृतांतनिरुपणनाम एकाद
परिछेदः समाप्तः ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश परिछेद प्रारंजः ॥

आ परिछेदमां श्री महावीर स्वामिथी वर्त्तमान समय सुधिनुं वृत्त
लखीए छीए. श्री महावीर जगवानना अग्यार शिष्य मुख्य हता. र
साधु शिष्यो चौद हजार हता. तेउमां ११ मुख्य हता. तेमना नाम.
इंद्र जूति, (गौतमस्वामि) २ अग्निजूति, ३ वायूजूति, ४ व्यक्तस्वा
५ सुधर्मास्वामि, ६ मंडितपुत्र, ७ मौर्यपुत्र, ८ अवकंपित, ९ अचल
ता, १० मैतार्य. श्री जगवानथी दीक्षित, छत्रीश हजार साध्वीउ १

श्री भगवतना अनेक राजाओ भक्त (सेवक) हता, जेओ श्रावक हता, तेओ मध्येथी केटलाएकना नाम, श्रेणिक राजा, उदायन, कोणिक, उदायी, वत्सदेशना उदायन, चेटक, नवमल्लिकक्षत्रिय जाति, नवलेच्छिक क्षत्रियजाति, चण्डप्रद्योत, श्वेतराजा, विजयराजा, नन्दिवर्द्धन राजा, हस्तिपालराजा इत्यादि सामान्य गृहस्थो आनंद, कामदेव, शंख, पुष्कली प्रमुख श्रावको, तथा जयंती, रेवती, सुलसा प्रमुख श्राविकाओ लाखो हती श्रावक समुदायमा एक श्रावक सत्यकी नामनो अविरति सम्यग्दृष्टि हतो तेनु चरित्र आवश्यक शास्त्रमा नीचे प्रमाणे लखेल छे

विशाला नगरीमां चेटक राजानी पुत्री सुज्येष्टा नामनी हती, तेणीये कुमारी अवस्थामा दीक्षा लीधी हती, अर्थात् साध्वी थइ हती ते एकदा उपाश्रयनी अंदर सूर्यनी सन्मुख आतापना लेती हती, ते अवसरे पेढाल नामनो परिव्राजक (संन्यासी) विद्यासिद्ध हतो, ते पोतानी विद्यानु दान करवावास्ते पात्र पुरुषनी तपास करतो हतो विचार एवो हतो के, जो ब्रह्मचारिणीनो पुत्र होय तो दान आपवाने उत्तम पात्र गणाय हवे ते संन्यासीये एकदा रात्रिये सुज्येष्ठाने नग्नपणे शीतनी आतापना लेती दीठी, ते समये धुंध विद्याथी अंधारामां तेणीने अचेत करी तेणीनी योनिमां पोताना वीर्यनो संचार कर्यो ते अवसरे सुज्येष्टा ऋतुधर्मने प्राप्त थइ हती, तेथी तेणीने गर्भ रह्यो हवे साध्वीओना समुदायमां गर्भनी चर्चा थवा लागी, परंतु अतिशय ज्ञानीये कह्यु के सुज्येष्टाये कोइनी साथे विषयसेवन करेल नथी, अने विद्याधर संबंधी सर्व वृत्तांत कह्यो, जेथी सर्वनी शंका दूर थइ गइ योग्य समये सुज्येष्टाने पुत्र थयो, ते पुत्रने श्रावकोये पोताने घेर पाली मोटो कर्यो, तेनु नाम सत्यकी पाड्यु एकदा सत्यकी, साधवीओनी साथे श्री महावीर भगवानना समवसरणमां गयो हतो, ते अवसरे कालसंदीपक नामनो एक विद्याधर श्री महावीरस्वामिने नमस्कार करी पुछवा लाग्यो के हे भगवन् मने कोनाथी भय छे? भगवते कह्यु के आ सत्यकी नामना छोकराथी, तने भय छे ते सांभली एकदा कालसंदीपक सत्यकीनीपासे गयो, तेनी अवज्ञा करी कहेवा लाग्यो के शु तु मने मारीश ? एम कही जोरावरीथी सत्यकीने पोताना पग पासे नाख्यो, ते समये तेनो पिता पेढाल आवी पहोंचयाथी तेनु संरक्षण

कर्युं. पछी पेढाले पोतानी सर्व विद्या सत्यकीने आपी. सत्यकी महारोहिणी विद्यानुं साधन करतो हतो. सत्यकीनो रोहिणी विद्या साधन करवानो आ सातमो नव हतो. रोहिणी विद्या साधतां सत्यकीनो जीव पांच नवसुधी जीव (प्राण) थी मार्यो गयो. छठा नवमां पोतानुं आयुष्य छ महिना बाकी रहेते छते रोहिणी विद्या साधवानी इछा थवाथी ते इछा पार पाडवानो आरंन कर्यो नहि; परंतु आ सातमां नवमां रोहिणी विद्या साधवानो आरंन कर्यो. तेनी विधि लखीये छीये.

अनाथ मृतक मनुष्यने चितामां सलगावे, अने आला चामडाने शरीर उपर लपेटी डाबा पगना अंगुठा उपरज उन्ना रही ज्यांसुधी ते चितामां काष्ठ सलग्या करे त्यांसुधी मंत्रनो जाप करे. आ विधि प्रमाणे सत्यकी विद्या साधतो हतो. ते वखते कालसंदीपक विद्याधर पण त्यां आवी पहोंच्यो. तेणे चितामां लाकडां नाखी सात दिवससुधी अग्नि बुझावा दीधो नहि. जेथी सत्यकीनी दृढता देखी रोहिणी देवी साक्षात् प्रगट थइ, कालसंदीपकने कहेवा लागी के तुं विघ्न कर नहि? कारण के हुं सत्यकी उपर तुष्टमान थइ सिद्ध थयेली छुं. रोहिणी देवीये तत्काल सत्यकीने कह्युं के हे सत्यकी ! तारा शरीरमां हुं कये रस्तेथी प्रवेश करुं ? सत्यकीये कह्युं, मस्तक उपरथी प्रवेश कर? रोहिणीये मस्तकने रस्तेथी प्रवेश कर्यो, जेथी सत्यकीने मस्तकमां खाडो पडी गयो. देवीये तुष्टमान थइ मस्तकना खाडानी जगायें त्रीजा नेत्रनो आकार बनाव्यो. हवे सत्यकी त्रण नेत्रवालो प्रसिद्ध थयो. एकदा सत्यकीये वीचार कर्यो के पेढाले मारी माता, जे राजानी कुमारी कन्या हती तेने बगाडेली छे, तेथी तेने शिक्षा करवी जोइये, एम निश्चय करी, तेणे पोताना पिता पेढालने मारी नांख्यो. जेथी लोकोये सत्यकीनुं नाम रुद्र (नयानक) पाडी दीधुं, कारण के जेणे पोताना पिताने मारी नांख्यो, तेना करतां बीजो कोण वधारे नयानक कहेवाय? हवे सत्यकीये विचार कर्यो के कालसंदीपक मारो दुश्मन छे, ते क्यां छे? ज्यारे सांनलवामां आव्युं के ते अमुक जगाये छे, त्यारे ते तेनी पासे पहोंच्यो. कालसंदीपक तेने देखी नाग्यो, सत्यकीये तेनी पूंठ पकडी. कालसंदीपक नीचे उंचे, ज्यां त्यां नागतो रह्यो, परंतु सत्यकीये तेनो पीछो मुक्यो नहि. अनुक्रमे कालसंदीपके स-

त्यकीने ज्रुख थापमा पाडवावास्ते त्रण नगर बनाव्या, सत्यकीये विद्यायी त्रणे नगरने सत्तगावी दीधां ठेवटे कालसंदीपक नासीने लवण समुद्रना पाताल कलशामा चाल्यो गयो सत्यकीये त्या जइ कालसंदीपकने मारी नांख्यो पठी सत्यकी विद्याधर चक्रवर्ती थयो त्रण संध्यासमये सर्व तीर्थ करोने वदना करी नाटक करतो हतो जेथी इन्द्रे सत्यकीनु नाम महेश्वर पाड्यु महेश्वर (सत्यकी) ने बे शिष्यो थया एक नदीश्वर, बीजो नादीया नादीयाने विद्याना बलथी बलद बनावी लेखामा आवतो, अने तेना उपर बेसी महेश्वर अनेक क्रीडा, कुतुहल करतो हतो महेश्वर श्रीमहावीर जगवतनो अविरति सम्यग्दृष्टि श्रावक हतो, परतु अत्यत कामी हतो, अने ब्राह्मणोनी साथे तेने बहुज वेर हतु, तेथी विद्याना बलथी तेणे सैंकडो ब्राह्मणोनी कुमारी कन्याउंने विषयसेवन करी बगाडी हती अनुक्रमे बीजा लोकोनी तथा राजा प्रमुखथी बहु तथा पुत्रीउंनी साथे ते विषय सेवन करवा लाग्यो, परतु तेनी विद्याना जयथी कोइ तेने काइ पण कही शकतुं नहोतु जे कोइ तेनी आडे आवतो, ते मार्यो जातो हतो महेश्वरे विद्याना बलथी एक पुष्पक नामनु विमान बनाव्यु, तेमा बेसी पोतानी इछा मुजब फरतो हतो ए प्रमाणे तेनो काल व्यतीत थतो हतो एकदा महेश्वर उज्जयनी नगरीमा आव्यो त्या चंडप्रद्योत राजानी शिवा नामनी राणी शिवाय बीजी सर्वे राणीउंनी साथे तेणे विषय जोग कर्यो बीजा लोकोनी बहु, पुत्रीउं प्रमुखने पण बगाडवा लाग्यो, जेथी चंडप्रद्योतने अत्यत चिंता थवा लागी तेणे विचार कर्यो के एवो कोइ उपाय करीये के जेथी महेश्वरनो विनाश थइ जाय, तेनी विद्याने लीधे काइ पण उपाय चाल्यो नहि हवे ते नगरमा उमा नामनी एक अत्यत रुपवत वेश्या रहेती हती तेनो एवो नियम हतो के जे कोइ तेने अमुक सख्यानु धन आपे, ते तेनी साथे विषय सेवन करे एकदा महेश्वर ते वेश्याने घेर गयो वेश्याये तेने आदर सत्कार करी तेनी सन्मुख बे फूलो राख्या, एक खिलेलु, अने बीजु खिल्याविनानु महेश्वरे खिलेला फूल तरफ पोतानो हाथ पसार्यो, त्यारे उमाये खिल्या बगरनु फूल महेश्वरना हाथमा आप्यु, अने कह्यु के आ फूल (कमल) तमारा योग्य छे महेश्वरे पुछ्यु के आ कमल मारा योग्य केम ? त्यारे उमाये कह्यु के आ

खिल्याविनाना कमल समान कुमारी कन्या छे, जे तमने भोग करवा-वास्ते वल्लभ छे, अने हुं तो खिलेला फूल समान छुं. महेश्वरे कह्युं के तुं पण मने अति वल्लभ छो. ए प्रमाणे वार्तालाप करी बंन्ने जणाउं विषयमां आसक्त थयां. महेश्वर उमाना हावभावथी तेनेज घेर रहेवा लाग्यो. उमाये महेश्वरने पोताने आधीन करी लीधो, जेथी उमानुं वचन महेश्वर उल्लंघन करी शकतो नहोतो. ए प्रमाणे केटलोएक काल व्यतीत थयो, त्यारे चंद्रप्रद्योते उमाने बोलावी बहुज आदर सत्कार तथा धन आपी कह्युं के तुं महेश्वरने आ वात पुछ? के एवो कोइ समय छे, के जे वखते तमारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी? उमाये युक्तिपूर्वक पूछी कहेवानुं वचन आप्युं. हवे उमाये महेश्वरने पुछ्युं हे स्वामि! मने एक जातनी बहुज बीक छे. आपनी विद्या कोइ वखते जती रहे छे के केम? तेनो खुलासो करो, जेथी मने निरांत थाय. महेश्वरे कह्युं हे वल्लभे! तुं विचार कर नहि. मारी विद्या जती नथी. मात्र ज्यारे हुं मैथुन सेवन करुं छुं, त्यारे मारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी, अर्थात् ते वखते मारी विद्या चालती नथी. हवे उमाये महेश्वरनी सर्व बिना चंद्रप्रद्योतने कही दीधी, जेथी चंद्रप्रद्योते उमाने कह्युं के अमारो महेश्वरने मारवानो विचार छे, जेथी तारी साथे ते भोग भोगवतो होय, अने तेने मारीये एवी गोठवण कर. उमाये कह्युं के मने मारवी नहि. राजाये कह्युं के बहु सारुं. पछी युक्ति प्रमाणे चंद्रप्रद्योते उमाना घरमां सुभटोने गुप्त राख्या. ज्यारे महेश्वर उमानी साथे विषय सेवनमां मग्न थइ बंनेना शरीरो परस्पर एक शरीरवत् थइ गयां, त्यारे राजाना सुभटोये बंनेने कापी नांख्या, अने नगरनो उपद्रव दूर कर्यो. हवे महेश्वरनी सर्वे विद्याउंये महेश्वरना शिष्य नंदीश्वरने पोतानो अधिष्ठाता बनाव्यो. ज्यारे नंदीश्वरे पोताना गुरुने उपर मुजब विटंबनाथी मार्यानी वात सांभली, त्यारे विद्याथी उज्जयनी उपर शिला विकुर्वी; अने कहेवा लाग्यो के हे मारा दासो! हवे तमे क्यां जशो? हुं सर्वने चूर्ण करी नाखुं छुं. हुं सर्व शक्तिमान् इश्वर छुं. कोइनो मार्यो मरतो नथी. हुं सदा अविनाशी छुं. आ भयानक वचनोथी लोको बहुज डरवा लाग्या, सर्वे लोको विनंति करी पगे पडवा लाग्या, तथा सर्वेये कह्युं के अमारा अपराध क्षमा करो. नंदी

श्वरे कह्यु के तमे तेज अवस्थामां अर्थात् उमाना जगमां महेश्वरनु लिंग स्थापन करी पूजा करो, तोज हु तमोने जीवता छोडु लोकोये तेज प्रमाणे अंगीकार करी पुजा करवी शरु करी नंदीश्वरे तेज प्रमाणे अनेक गाम, नगरोमां लोकोने कराबी मंदिरो बधाव्यां, तेमां पूर्वोक्त आकारे जगमा लिंग स्थापन करी पूजा कराबी, आ श्रीमहावीरना अविरती सम्यग्दृष्टि श्रावक महेश्वरनी उत्पत्ति छे

श्री महावीर स्वामिना समयमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजानी चेलणा राणीने कोणिक नामनो पुत्र थयो कोणिकने तेना पिता श्रेणिकनी साथे पूर्व जन्मनु वेर हतु, तेथी कोणिक मोटो थतां तेणे श्रेणिकने गादीउपरथी उठाडी, पकडीने पांजरामा केद कर्यो, अने राज्यगादी उपर पोते बेठो एकदा पोतानी माता चेलणाए प्रसंगवशात् कोणिकने कह्यु के तु तारा पिताने जेवो वहालो हतो, तेवो कोइ पण बीजो पुत्र वहालो न होतो, कारण के ज्यारे तु बालक हतो, त्यारे तारी आंगली पाकी हती, जेथी तने रात्रिए बिलकुल निद्रा आवती न होती, अने आखी रात तु रोया करतो हतो ते वखते तारा पिता तारी आंगलीने पोताना मुखमा लइ तने आराम थवा माटे ते पाकेली आगलीनु रुधिर तथा परु चुसी, थुकी काढता हता, इत्यादि अनेक प्रकारथी तारा पिताये तारी उपर स्नेह करेल छे, अने तें तो पूर्वना उपकारनो बदलो तेने पांजरामां घाली केद राखवारुप करेलो छे माटे वाह ! पुत्र ! तारी लायकी केटली कहु ? माताना आ प्रमाणेना वचनो सांभली कोणिक बहुज दु खी थयो, अने पोताथी थयेला अकार्यने माटे रोवा लाग्यो, अने विचार कर्यो के हु पोतेज जइ पिताश्रीने मारा हाथथी पांजरामाथी कहाडी राज्य सिंहासन उपर बेसाडु एवा निश्चयथी कुहाडो लइ दोडतो पितानी पासे आव्यो श्रेणिके विचार कर्यो के कोणिक कुहाडो लइ दोडतो मारी उपर आवे छे, जेथी आजे मने केवी रीते कमोतथी मारशे ? एवा भयथी श्रेणिक काइक खाइने मरी गया ज्यारे कोणिके पोताना पिताने मरी गयेला दीठा त्यारे ते बहुज रोयो तथा कुटवा लाग्यो, अने अत्यंत शोकमां निमग्न थयो ज्यारे राजगृहनी बहार तथा अंदर श्रेणिकना राजमेहेलो तथा सिंहासनादि देखतो, त्यारे ते अत्यंत दिलगीर थतो

आ दुःखथी राजगृह नगर छोडी तेणे चंपानगरी पोतानी राज्यधानी बनावी, अने त्यां रहेवा लाग्यो; तो पण पितानी सेवा माराथी थइ नहि अने पितानुं अकार्यथी मोत थयुं. एवा वारंवार विचार आववाथी ते बहुज दुःखमां रहेवा लाग्यो. पछी मंत्रीओए एकमत करी प्रछन्नपणे एक पुस्तक बनाव्युं, तेमां एवुं कथन लखाव्युं के, जे पुत्र पोताना मरण पामेला पिताने वास्ते, पिंडप्रदान, वस्त्रजोड, आनूषण, शय्या प्रमुख ब्राह्मणोने आपे छे, ते सर्व श्राद्धादि सामग्री तेना पिताने प्राप्त थाय छे. आ पुस्तकने धुमाडावाला मकानमां राखी धुमाडाथी प्राचीन (जुना) पुस्तकजेवुं बनावी दीधुं. पछी आ पुस्तक कोणिक राजाने संनलाव्युं. कोणिके पण पितानी नक्ति वास्ते पिंडप्रदानादिमां बहुज धन वापर्युं. त्यारथीज मरीगयेला पाछल पिंडप्रदान श्राद्धादि प्रवृत्त थयेल छे. जगत्मां पण प्रसिद्ध छे के कर्ण राजाये श्राद्ध चलावेल छे, ते आज कोणिक राजानुं नाम लोकोए कर्ण राजा करी लखी दीधुं छे.

हवे प्रयाग तीर्थनी उत्पत्ति लखीए छीए. अन्निकासुत जैनाचार्य अत्यंत वृद्ध थइ जतां, गंगानदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, अने ज्यां प्रयाग छे, त्यां पोतानुं शरीर छोडी मुक्ति पाम्या, ते स्थले देवताओए मुनिनो निर्वाण महोत्सव कर्यो, त्यारथी प्रयाग तीर्थनो महिमा थयो. महावीर स्वामिना वखतमां जे राजा प्रमुख तथा व्यवहारादिनुं स्वरुप हतुं, तथा जैनमतनो विस्तार हतो ते सर्वनुं स्वरूप आवश्यकसूत्र, वीरचरित्र, अने बृहत्कल्पादि शास्त्रोथी जाणवुं.

श्री महावीर स्वामिना समयमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा थया. तेनी पाछल कोणिक, श्रेणिकना मरण पछी कोणिके चंपानगरी वसावी, आ अधिकार पूर्वे कह्यो; हवे कोणिकना मरण पछी तेनो पुत्र उदायी राजा थयो, ते कोणिकनी पाछल तेना मरण पछी उदास थवाथी चंपा छोडी पाडलीपुत्र (पटना) वसावी पोतानी राज्यधानी करतो हवो.

श्री महावीर नगवंत विक्रम संवतथी (४७०) वर्ष पहेलां पावापुरी नगरीमां हस्तिपाल राजानी पुरातन राज्यसन्नामां बहोंतेर वर्षनुं आयुष्य नोगवी कार्तिक वदी अमावास्यानी रात्रिए पाछले प्रहरे पद्मासने बेठा थका शरीरादि शेष नागे कर्मनो ... निर्वाण

पाम्या ते समये मोटा शिष्योमां गौतमस्वामि तथा सुधर्मास्वामि, आ वेज शिष्यो विद्यमान हता बाकीना नवे शिष्यो श्री महावीर भगवत विद्यमान थकां, एक मासना अनशन करी केवलज्ञान पामी मुक्ति पाम्या हता अगीआरे मोटा शिष्यो ज्ञातिना ब्राह्मण हता चार वेद अने ठ वेदांगादि सर्व शास्त्रोना वेत्ता हता अगीआरे शिष्योना मली (४४००) चउमालीससो विद्यार्थीउं हता तेउंनो वृत्तांत लखीएठीए

ज्यारे श्री महावीर भगवंतने केवलज्ञान उत्पन्न थयु, ते समये मध्यपापा नगरीमा सोमल नामनो द्विज यज्ञनो आरंभ करतो हतो ते यज्ञ प्रसंगे सर्व ब्राह्मणोमां श्रेष्ट पूर्वोक्त गौतमादि आगीआरे आचार्योंने आमंत्रण कर्युं हतुं ते यज्ञभूमिनी इशान दिशाए महासेन नामना उद्यानमां श्री महावीर भगवंतनु समवसरण रत्न, सुवर्ण, रौप्यमय, अनुक्रमे त्रण गढ संयुक्त देवोए बनाव्यु ते समवसरणनी वचमां सिंहासन उपर वेसी श्री महावीर भगवत उपदेश आपवा लाग्या ते समये आकाश मार्गे, सेंकडो विमानोमा वेठा थका, चारे प्रकारना देवताउं भगवत श्री महावीर स्वामिना दर्शन वास्ते तेमज उपदेश श्रवण करवा आवता हता तेउंने देखी यज्ञ करनारा ब्राह्मणोए जार्युं के आ सर्व देवो साक्षात् अमारा यज्ञनी आहुतीउं लेवा आवे ठे एटला मा देवताउं तो यज्ञभूमिने ठोडी भगवानना चरणोमां जइ हाजर थया वली बीजा लोको पण श्री महावीर भगवंतना दर्शन करी तथा उपदेश सांभली गौतमादि पंडितोने कहेवा लाग्या के, आजे आ नगरीनी बहार सर्वज्ञ, सर्वदर्शी भगवान् आव्या ठे तेनु रुप एवु ठे के तेनु यथार्थ वर्णन करवाने कोइ पण शक्तिवान् नथी, अने तेनो उपदेश एवो ठे के तेमां काइ पण संशय पडतो नथी, वली लाखो देवताउं तेमना चरणोनी सेवा करे ठे, जेथी आजे अमारुं अत्यंत मोटुं भाग्योदय थयुं, के एवा सर्वज्ञ अरिहत भगवतना दर्शन अमे पाम्या ज्यारे गौतमजीए लोकोना मुखथी सर्वज्ञ एवुं वचन सांभल्यु, त्यारे तेमना मनमा इर्ष्यारुप अग्नि सलगी उठी, अने बोली उठ्या के, माराथी अधिक अने सर्वज्ञ बीजो कोण ठे ? हमणांज जइ तेना सर्वज्ञपणाने परास्त करु हुं, इत्यादि अनेक गर्व संयुक्त वचनो कहाड्यां, पठी श्री महावीर भगवतनी पासे ते पहोंच्या

इथीज श्री ज्ञगवंतने चोत्रीश अतिशय संयुक्त, तथा इंड्रो, देवो अने मनुष्योथी परिवृत दीठा. देखतांज बोलवानी शक्ति मंद थइ गइ. ज्ञगवंतनी सन्मुख जतांज, श्री ज्ञगवंते तेमने बोलाव्या. हे गौतम इंड्रज्ञूति ! तमे आव्या ? गौतमजीए मनमां विचार्युं के, मारुं नाम पण आ जाणे बे; परंतु तेमां शुं आश्चर्य ? जगत्मां प्रसिद्ध एवा मने कोण जाणतुं नथी ? मारुं नाम लेवाथी हुं कांइ तेने सर्वज्ञ मानुं नहि; परंतु मारा मननां जे संशय बे, ते संशय जो ते दूर करे तो हुं तेने सर्वज्ञ मानुं. तत्काल ज्ञगवंते कह्युं हे गौतम ? तमारा मनमां आ संशय बे– जीव बे के नहि ? अने ते संशय तमने वेदोनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयेल बे. ते श्रुतियो कहीये छीये.

" विज्ञान घन एवैतेज्यो ज्ञूतेज्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्तीत्यादि " तेनाथी विरुद्ध, आ श्रुति बे, " सवै अयमात्मा ज्ञानमय इत्यादि " आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमां जेम ज्ञासन थाय बे, तेम हुं तमने कहुं बुं ते सांज्ञलो. प्रथम श्रुतिनो अर्थ तमे आ प्रमाणे करो बो– नीलादि रूप होवाथी विज्ञानज चैतन्य बे, विशिष्ट जे नीलादि तेथी जे घन ते विज्ञानघन, ते विज्ञानघन आ प्रत्यक्ष परिछिद्यमान रूप पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, आ पांचे ज्ञूतोथी उत्पन्न थइ फरी तेनी साथेज नाश थइ जाय बे, अर्थात् ज्ञूतोनो नाश थवाथी, तेनी साथे विज्ञानघननो पण नाश थइ जाय बे, ते कारणथी प्रेत्य संज्ञा नथी, अर्थात् मरण पछी फरी परलोक गमन, नर, नारकादि जन्म थतो नथी. आ श्रुतिथी जीवनी नास्ति अर्थात् तेनो अज्ञाव सिद्ध थाय बे. हवे बीजी श्रुति कहे बे के– आ आत्मा ज्ञानमय अर्थात् ज्ञान स्वरूप बे, इत्यादि. तेथी आत्मानी सिद्धि थाय बे. आ बंने श्रुतियो परस्पर विरोधी होवाथी कांइ निश्चय थइ शकतो नथी. वली बीजा पण आत्माना स्वरूपमां परस्पर विरोधी मत बे. कोइ कहे बे के, यत्तः ॥ एतावानेव पुरुषो, यावानिंड्रियगोचरः ॥ ज्ञड़े वृकपदं पश्य, यद्वदंत्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥ वली बीजा मतवाला कहे बे के यतः ॥ " न रूपं ज्ञिक्षवः पुजलः " अर्थात् आत्मा अमूर्त बे. वली एक आगम एवुं कहे बे के यतः ॥ " अकर्त्ता निर्गुणो ज्ञोक्ता आत्मा " अर्थात् अकर्त्ता, सत्व, रज, तम, आ त्रण गुणोथी रहित सुख

दुःखनो जागवनार आत्मा छे आ प्रमाणे जुदाजुदा मतो छे, तेमा सत्य कोण अने असत्य कोण? परस्पर विरोधी होवाथी सर्व तो सत्य थइ शकता नथी, वली युक्ति प्रमाणथी पण मृत्युपछी आत्मानु परलोक गमन सिद्ध थइ शकतु नथी हे गौतम? पूर्वोक्त तमारा मनमा संशय छे तेनो उत्तर तमने कहुं छुं ते सांजलो? पछी श्री जगवंते गौतमस्वामिनो संशय दूर करवावास्ते वेदना पदोनो यथार्थ अर्थ कही संजलाव्यो, ते सर्व अधिकार मूलआवश्यक तथा श्री विशेषावश्यक ग्रंथोथी जाणवो ग्रंथ वध वाना तथा अति गहन थवाना सबबथी में अहींआ लखेल नथी आ गीआरे गणधरोनां संशय दूर करवाना कथनना चार हजार श्लोको छे ज्यारे गौतमजीनो संशय दूर थयो, त्यारे गौतमजी पोताना पांचसो विद्यार्थीठनी साथे दीक्षा लइ श्रीजगवतना प्रथम शिष्य (गणधर) थया

इन्द्रजूतिए दीक्षा लीधी, एम सांजली तेमना जाइ अग्निजूति अत्यत अजिमान युक्त वचनो बोलवा लाग्या, अने लोकोने कहेवा लाग्या के, मारा जाइने इन्द्रजालीआए कपटथी जीती पोतानो शिष्य बनावेल छे, परंतु ते इन्द्रजालीआने हरावी हमणाज हु मारा जाइने पाछो लइ आवु छुं एम बोली ते जगवत श्री महावीरस्वामि पासे आव्या ज्यारे जगवतने दीठा त्यारे मननो सर्व वेग नरम पडी गयो, अने बोलवानी शक्ति पण रहि नहि मनमां अद्भूत आश्चर्य पाम्या, कारण के तेवु रुप तेणे कदि दीठुं पण न होतु, तेम सांजल्युं पण न होतु जगवते तेने नाम लइ बोलाव्या अग्निजूतिए विचार्यु के, मारु नाम पण आ जाणे छे, परतु तेमां कांइ नवाइ नथी, हु प्रसिद्ध छु, तेथी मने कोण जाणतुं नथी? परंतु मारा मनमां जे संशय छे, ते दूर करे तो, हु तेने सर्वज्ञ मानु जगवते कह्यु, हे अग्निजूति। तमारा मनमा आ संशय छे– "कर्म छे के नहि" आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध एवा वेद पदोथी थयेल छे तमे वेद पदोनो यथार्थ अर्थ जाणता नथी, तेथी तेम थयेल छे ते वेद पद आ छे "पुरुष एवे दंमि सर्वंयद्भूत यच्च जाव्य उता मृतत्व स्येशानो यदन्नेनाऽतिरोहति यदेजति यन्नेजति यद्दूरेयदुअंतिके यदंतरस्य पद्धुत सर्वस्यास्य बाह्यत इत्यादि" तेनाथी विरुद्ध आ श्रुति छे यत ॥ "पुण्यः पुण्येनेत्यादि" आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमा आ प्रमा

णे जासन थाय छे. पुरुष अर्थात् आत्मा, एव शब्द अवधारण वास्ते छे. ते अवधारण कर्म तेमज प्रधानादिना व्यवछेद वास्ते छे, "इदं सर्वं" अर्थात् आ सर्व प्रत्यक्ष वर्तमान चेतन वस्तु, यद्भूतं अर्थात् जे भूतकालमां थयेल छे, अने भविष्यमां थशे, एवो जे संसार अने मुक्ति ते सर्व पुरुष आत्मा ब्रह्मज छे, "ग्निं" अत्र वाक्यालंकारमां छे, तथा उत शब्द अतिशब्दना अर्थ वास्ते छे, अने अपि शब्द समुच्चय अर्थ वाची छे. अमृतत्वस्य अमरणभावनो अर्थात् मोक्षनो "इसानः" प्रभुः अर्थात् स्वामि छे. "यदिति यच्चेति" च अक्षरनो लोप थवाथी यदिति थयो, अर्थात् अन्नथी जे वृद्धिने प्राप्त थाय छे "यदेजति" जे चाले छे, एवा जे पशुआदि, अने जे चालता नथी एवा जे पर्वतादि, अने जे दूर छे एवा जे मेरु आदि, तथा जे समीप छे एवा जे शरीर आदि, पूर्वोक्त सर्व पदार्थ, पुरुष अर्थात् ब्रह्मज छे "यतउअंतिके" उ अक्षर अवधारणार्थमां छे. आ श्रुतिथी कर्मनो अभाव सिद्ध थाय छे, अने बीजी श्रुतिथी तथा शास्त्रांतरोथी कर्मनी सिद्धि थाय छे. वली युक्तिथी कर्म सिद्ध थतां नथी, कारण के अमूर्त्त आत्माने मुर्त्तिमान् कर्म केवी रीते लागे ? ते कारणथी कर्म छे के नहि, एवो तमारा मनमां संशय छे. एम कही भगवाने वेदश्रुतियोनो अर्थ यथास्थित तेमने समजावी, तेमनो पूर्वपक्ष खंडन कर्यो, ते विस्तारथी मूलावश्यक तथा विशेषावश्यक शास्त्रथी जाणवुं. एवी रीते अग्निभूतिए पण पोताना शिष्यो साथे गौतमजीनी जेम दीक्षा लीधी.

अग्निभूतिनी दीक्षानी वात सांभली त्रीजा वायुभूति आव्या. बंने भाइउए दीक्षा लेवाथी वायुभूतिने विद्यानुं अभिमान न रह्युं. मनमां विचार कर्यो के भगवानने वंदना करवा जाउं, एवा विचारथी आवी भगवंतने नमस्कार कर्यो. भगवंते कह्युं के हे वायुभूति! तमारा मनमां संशय छे. परंतु तमे क्षोभथी पुछी शकता नथी. तमने संशय छे ते आ छे–जे जीवछे ते देहज छे, अने आ संशय तमने विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल छे, तमे ते वेदपदोनो अर्थ बराबर जाणता नथी, ते वेदपद आ छे. "विज्ञानघन इत्यादि" प्रथम गणधरनी श्रुति जाणवी. ते श्रुतिथी देहथी न्यारो जीव (आत्मा) सिद्ध थतो नथी, अने ते श्रुतिथी विरुद्ध श्रुति आ छे– "सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण नित्यज्योतिर्मयोहिशु-

ह्योयं पश्यंति धीरा यतयः संयतात्मान इत्यादि" आ श्रुतिथी देहथी भिन्न आत्मा सिद्ध थाय छे, आ तमारा मनमां संशय छे भगवाने सर्व संशय दूर कर्यो वायुभूतिए पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

वायुभूतिनी जेम बाकीना आठे आचार्यो अनुक्रमे आव्या चोथा अव्यक्तजी आव्या तेमना मनमां संशय हतो के, पांच भूत छे के नहि? आ संशय विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो परस्पर विरुद्ध श्रुतियो आ छे– "स्वप्नोपमवैसकलमित्येव ब्रह्मविधिरंजसाविज्ञेय इत्यादीनि," तेनाथी विरुद्ध श्रुति, "द्यावापृथिवीजनयन्देव इत्यादि," तथा पृथिवी देवता, अप देवता इत्यादि, तेनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे भासन थाय छे–स्वप्न सरखुं संपूर्ण जगत् छे, वै निपात अवधारणार्थे छे "एष ब्रह्म विधि" अर्थात् आ परमार्थ प्रकारछे अजसा एटले सिद्धा न्यायथी जाणवा योग्य छे, आ श्रुति पांचे भूतोनो अभाव कथन करे छे, बीजी श्रुतियो पांचे भूतोनी सत्ता कथन करे छे, आ तमारा मनमां संशय छे तमारा मनमां एवो पण संशय छे के–युक्तिथी पांच भूतो सिद्ध थता नथी श्री भगवाने तेमनो पूर्वपक्ष खंडन करी वेदपदोनो यथार्थ अर्थ समजाव्यो ते अधिकार छक ग्रंथोथी जाणवो अव्यक्तजीए पण पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

पांचमा सुधर्म नामना आचार्य आव्या, तेमनो अधिकार पण पूर्वोक्त रीते जाणवो श्रीभगवाने कह्युं के तमारा मनमां आ संशय छे–मनुष्यादि सर्व जेवा आ भवमां छे, तेवाज भविष्यना जन्ममां उत्पन्न थायछे, के मनुष्य पण पशुआदि थइ जाय छे? आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल छे ते वेदश्रुतियो आ छे– "पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं इत्यादीनि" तेनाथी विरुद्ध श्रुति– "शृगालोवै एपजायते य सपुरीषोदह्यत इत्यादि" आ सर्व श्रुतियोनो अर्थ भगवाने तेमने यथार्थ समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो तेमणे पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

छठा मंडिक पुत्र आव्या तेमना मनमां संशय हतो के–बंध, मोक्ष छे के नहि? आ संशय पण विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हयो ते श्रुतियो आ छे–"स एष विगुणो विभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा॥

एषबाह्यमभ्यंतरंवावेद इत्यादीनि" आ श्रुतिनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे. आ जीव सत्वादि गुणरहित सर्वगत सर्वव्यापी, पुण्यपापथी तेने बंध थतो नथी, अने संसारमां ते जमण पण करतो नथी, कर्मोथी छुटतो नथी, अने बंधनो अजाव होवाथी, बीजार्जने कर्मोथी छोडावतो पण नथी, आ प्रमाणेना कथनथी आत्मा अकर्त्ता छे, तेज फरीथी बतावे छे–आ पुरुष पोताना आत्माथी जिन्न महत् अहंकारादि, तेमज अज्यंतर एवुं पोतानुं स्वरूप जाणतो नथी, कारण के जाणवुं ते ज्ञानथी थाय छे, अने ज्ञान, प्रकृतिनो धर्म छे, प्रकृति अचेतन छे, तेथी बंध मोक्ष नथी. आ श्रुतिथी बंध मोक्षनो अजाव सिद्ध थाय छे. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे–"नहि वै शरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति अशरीरं वा वसंतं प्रियाप्रिये नस्पृशत इत्यादीनि" जावार्थ–शरीर सहितने सुख दुःखनो अजाव कदापि थतो नथी. तात्पर्य ए छे के–संसारी जीव सुख दुःखथी रहित थतो नथी, अने कारणना अजावथी अमूर्त आत्माने सुखदुःख स्पर्श करी शकता नथी. आ श्रुतिथी बंधमोक्ष सिद्ध थाय छे; तथा तमारा मनमां एम पण छे के–युक्तिथी पण बंध मोक्ष सिद्ध थता नथी. इत्यादि संशयनो जगवाने यथार्थ खुलासो करी तेमनो संशय दूर कर्यो; पछी मंडितपुत्रे पोताना साडा त्रणसो शिष्योनी साथे दीक्षा लीधी.

सातमा मौर्यपुत्र आव्या. तेमना मनमां आ संशय छे– देवता छे किंवा नहि ? आ संशय परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेलो छे, ते श्रुतियो आ छे–"स एष यज्ञायुधी यजमानोंजसास्वर्गलोकं गछति इत्यादीनि" आ श्रुतियो स्वर्ग तथा देवतार्जनी सिद्धि करे छे. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे–"अपामसोमं अमृता अजूम अगमामज्योतिर्विदामदेवान् ॥ किं नूनमस्मान् तृणवदरातिः किमुधूर्त्ति रमृतमर्त्यस्येत्यादीनि" तथा "कोजानाति मायोपमान् गीर्वाणानिंद्रयमवरुणकुबेरादीन् इत्यादि" आ श्रुतिनो जावार्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे– पाणी पीता थकां अर्थात् सोम लतानो रस पीता थकां अमृत (अमरण)धर्मवाला अमे थया छीए, ज्योति, स्वर्ग अने देवताने अमे जाणता नथी. वली देवता अमे थया छीए ते पण जाणता नथी, देवता तृणनी जेम

ह्योर्य पश्यंति धीरा यतयः संयतात्मान इत्यादि" आ श्रुतिथी देहथी भिन्न आत्मा सिद्ध थाय छे, आ तमारा मनमां संशय छे भगवाने सर्व संशय दूर कर्यो वायुभूतिए पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

वायुभूतिनी जेम बाकीना आठे आचार्यो अनुक्रमे आव्या चोथा अव्यक्तजी आव्या तेमना मनमा संशय हतो के, पांच भूत छे के नहि? आ संशय विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो परस्पर विरुद्ध श्रुतियो आ छे– "स्वप्नोपमवैसकलमित्येव ब्रह्मविधिरंजसाविज्ञेय इत्यादीनि," तेनाथी विरुद्ध श्रुति, "द्यावापृथिवीजनयन्देव इत्यादि," तथा पृथिवी देवता, अप देवता इत्यादि, तेनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे भासन थाय छे–स्वप्न सरखु संपूर्ण जगत् छे, वै निपात अवधारणार्थे छे "एष ब्रह्म विधि" अर्थात् आ परमार्थ प्रकारछे अजसा प्रगटपणे सिद्धा न्यायथी जाणवा योग्य छे, आ श्रुति पांचे भूतोनो अभाव कथन करे छे, बीजी श्रुतियो पांचे भूतोनी सत्ता कथन करे छे, आ तमारा मनमां संशय छे तमारा मनमां एवो पण संशय छे के–युक्तिथी पांच भूतो सिद्ध थता नथी श्री भगवाने तेमनो पूर्वपक्ष खंडन करी वेदपदोनो यथार्थ अर्थ समजाव्यो ते अधिकार उक्त ग्रंथोथी जाणवो अव्यक्तजीए पण पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

पांचमा सुधर्म नामना आचार्य आव्या, तेमनो अधिकार पण पूर्वोक्त रीते जाणवो श्रीभगवाने कह्युं के तमारा मनमां आ संशय छे–मनुष्यादि सर्व जेवा आ भवमां छे, तेवाज भविष्यना जन्ममां उत्पन्न थायछे, के मनुष्य पण पशुआदि थइ जाय छे? आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल छे ते वेदश्रुतियो आ छे– "पुरुषोवैपुरुषत्व मश्नुते पशवः पशुत्व इत्यादीनि" तेनाथी विरुद्ध श्रुति– "श्रृगालोवै एषजायते यःसपुरीषोदह्यत इत्यादि" आ सर्व श्रुतियोनो अर्थ भगवाने तेमने यथार्थ समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो तेमणे पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

छठा मंडिक पुत्र आव्या तेमना मनमां संशय हतो के–बंध, मोक्ष छे के नहि? आ संशय पण विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हयो ते श्रुतियो आ छे–"स एष विगुणो विभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा॥

मरणनुं कारण छे, छतां अग्निहोत्र निरंतर करवो एम वेदमां कथन करेल छे, जेथी एवो क्यो समय छे के जे वखते मोक्ष प्राप्त करवानुं कर्म करीये ? ते कारणथी आत्मानो मोक्ष (निर्वाण) कदापि थइ शकतो नथी. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– " द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति " आ श्रुति मोक्षप्राप्ति सूचवे छे. आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्री भगवंते समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो. पछी प्रभासजीए पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी.

श्री महावीर भगवंतने वैशाख सुद दशमीना रोज मध्यपापानगरीना महासेन वनमां पूर्वोक्त (४४००) शिष्यो थया. पछी राजपुत्र तथा श्रेष्ठि पुत्रादि अने राजपुत्री तथा श्रेष्ठिपुत्री तथा अने राजा तथा राणी प्रमुख अनेक मनुष्योए दीक्षा लीधी.

अनुक्रमे भगवंत श्री महावीरस्वामि आयुष्य पूर्ण थये पावापुरीमां मोक्ष प्राप्त करता हवा. तेज रात्रिए इंद्रभूति (गौतमस्वामि) ने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. इंद्रोए निर्वाण महोत्सव कर्यो, अने सुधर्मा स्वामिने श्री महावीरस्वामिनी गादी उपर स्थापन कर्या. श्री गौतमस्वामिने गादी उपर स्थापन. कर्या तेनुं कारण ए छे के केवलज्ञानी पुरुष, कोइ गादीपति थइ शकता नथी, कारण के केवली तो तेमने जे कांइ पुछवामां आवे तेनो उत्तर पोताना ज्ञानथीज आपे छे, परंतु एम कहेता नथी के, हुं अमुक तीर्थंकरना कथन मुजब कहुं छुं, ते कारणथी केवलज्ञानी गादीपति थता नथी. जो गादीपति थाय तो तीर्थंकरना शासननो लोप थाय, जे कदापि थतुं नथी, कारण के अनादि रीतिने केवली केम उछापन करे ? तेज कारणथी श्रीगौतमस्वामि गादीपति थया नहि, अने श्री सुधर्मास्वामिने गादि उपर विराजमान करवामां आव्या.

१ श्री सुधर्मस्वामि पचास वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, त्रीश वर्षसुधी श्रीमहावीर भगवंतनी चरण सेवामां रह्या, श्रीभगवंतना निर्वाण पछी बार वर्षसुधी छद्मस्थ रह्या, अने आठ वर्ष केवलीपर्याय पाली मोक्षे गया. भगवंत श्री महावीरस्वामि पछी श्रीगौतमस्वामि केवलज्ञान पामी बार वर्ष जीवता रह्या. श्रीगौतमस्वामिना निर्वाण पछी श्रीसुधर्मास्वामिने केवलज्ञान प्राप्त थयुं. श्री सुधर्मस्वामिनुं आयुष्य (१००) एकसो

अमने शु करी शके छे? आ श्रुति अभाव प्रतिपादन करे छे वळी आ श्रुति भावनी प्रतिपादक छे–" धूर्त्तिजरा अमृतमर्त्यस्य " अमृतत्व प्राप्त पुरुपने शु करी शके छे ? आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ समजावी श्रीभ गवते तेमनो संशय दूर कर्यो पछी तेमणे पोताना साडा त्रणसो छा त्रोनी साथे दीक्षा लीधी

आठमा अकपित आव्या तेमना मनमा नर्क छे के नहि ? एवो सं शय हतो ते संशय पण परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हतो, ते श्रु तियो आ छे– "नारकोवै एप जायते य शूद्रान्नमश्नाति इत्यादि" भा वार्थ– जे ब्राह्मण शूद्रनु अन्न खाय छे ते नारकी थाय छे आ श्रुतिथी नर्क सिद्ध थाय छे, तथा "नहवै प्रेत्यनरके नारका संतीत्यादि" आ श्रु तिथी नर्कनो अभाव सिद्ध थाय छे आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्रीभ गवंते समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो पछी अकपितजीए पोताना त्रणसो छात्रोनी साथे दीक्षा लीधी

नवमा अचलभ्राता आव्या तेमना मनमां संशय हतो के– पुण्यपाप छे के नहि ? आ संशय वेदनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो ते श्रुतियो आ छे– " पुरुप एवेद ग्निसर्वंइत्यादि" बीजा गणधरनी जेम ते नाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– " पुण्य पुण्येन कर्मणा भवति, पाप पापेन कर्मणा भवति इत्यादि " आ श्रुतिथी पुण्य पाप सिद्ध थाय छे आ सं शय तेमना भगवते दूर कर्या तेमणे पण पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी

हवे दसमा मेतार्य आव्या तेमना मनमां एवो संशय हतो के–पर लोक छे के नहि ? आ संशय वेदनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो ते श्रुतियो आ छे– "विज्ञानघन इत्यादि " प्रथम गणधरनी जेम आ श्रुति अभाव सूचक छे, तथा " सर्वे अय आत्मा ज्ञानमय इत्यादि" आ श्रुति भावप्रतिपादक छे तेमनो यथार्थ अर्थ समजावी भगवंते सं शय दूर कर्यो पछी मेतार्यजीए पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी

हवे छेला (अगीआरमा) प्रभासजी आव्या तेमना मनमा संशय हतो के– निर्वाण छे के नहि ? ते श्रुतियो आ छे–" जरामर्यं वा एतत् सर्वं यदग्निहोत्र," भावार्थ–अग्निहोत्र जीवहिंसा संयुक्त छे, अने जन्म

मरणनुं कारण छे, छतां अग्निहोत्र निरंतर करवो एम वेदमां कथन करेल छे, जेथी एवो क्यो समय छे के जे वखते मोक्ष प्राप्त करवानुं कर्म करीये ? ते कारणथी आत्मानो मोक्ष (निर्वाण) कदापि थइ शकतो नथी. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– "द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति" आ श्रुति मोक्षप्राप्ति सूचवे छे. आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्री भगवंते समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो. पछी प्रभासजीए पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी.

श्री महावीर भगवंतने वैशाख सुद दशमीना रोज मध्यपापानगरीना महासेन वनमां पूर्वोक्त (४४००) शिष्यो थया. पछी राजपुत्र तथा श्रेष्ठि पुत्रादि अने राजपुत्री तथा श्रेष्ठिपुत्री तथा अने राजा तथा राणी प्रमुख अनेक मनुष्योए दीक्षा लीधी.

अनुक्रमे भगवंत श्री महावीरस्वामि आयुष्य पूर्ण थये पावापुरीमां मोक्ष प्राप्त करता हवा. तेज रात्रिए इंद्रभूति (गौतमस्वामि) ने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. इंद्रोए निर्वाण महोत्सव कर्यो, अने सुधर्मा स्वामिने श्री महावीरस्वामिनी गादी उपर स्थापन कस्या. श्री गौतमस्वामिने गादी उपर स्थापन. कर्या तेनुं कारण ए छे के केवलज्ञानी पुरुष, कोइ गादीपति थइ शकता नथी, कारण के केवली तो तेमने जे कांइ पुछवामां आवे तेनो उत्तर पोताना ज्ञानथीज आपे छे, परंतु एम कहेता नथी के, हुं अमुक तीर्थंकरना कथन मुजब कहुं छुं, ते कारणथी केवलज्ञानी गादीपति थता नथी. जो गादीपति थाय तो तीर्थंकरना शासननो लोप थाय, जे कदापि थतुं नथी, कारण के अनादि रीतिने केवली केम उछापन करे ? तेज कारणथी श्रीगौतमस्वामि गादीपति थया नहि, अने श्री सुधर्मास्वामिने गादि उपर बिराजमान करवामां आव्या.

१ श्री सुधर्मस्वामि पचास वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, त्रीश वर्षसुधी श्रीमहावीर भगवंतनी चरण सेवामां रह्या, श्रीभगवंतना निर्वाण पछी बार वर्षसुधी छद्मस्थ रह्या, अने आठ वर्ष केवलीपर्याय पाली मोक्षे गया. भगवंत श्री महावीरस्वामि पछी श्रीगौतमस्वामि केवलज्ञान पामी बार वर्ष जीवता रह्या. श्रीगौतमस्वामिना निर्वाण पछी श्रीसुधर्मास्वामिने केवलज्ञान प्राप्त थयुं. श्री सुधर्मस्वामिनुं आयुष्य (१००) एकसो

वर्षनुं हतुं तेओ श्री महावीरस्वामि पछी वीश वर्षे मोक्षे गया

२ श्री सुधर्मस्वामिनी पाट उपर श्री जंबुस्वामि बेठा राजगृहनगर निवासी श्री रीषभदत्त शेठनी धारणी नामनी स्त्रीना कुखथी तेओ जन्म्या हता नव्वाणु क्रोड सोनैया तथा आठ स्त्रीओनो त्याग करी तेओये दीक्षा लीधी सोल वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, वीश वर्ष व्रतपर्याय, अने चमालीस वर्ष केवलपर्याय पाली श्री महावीरना निर्वाण पछी चोसठमे वर्षे मोक्षे गया

श्री जंबुस्वामि पछी भरतक्षेत्रमां दश वावतो विछेद गइ तेना नाम, १ मन पर्यायज्ञान, २ परमावधिज्ञान, ३ पुलाकलब्धि, ४ आहारकशरीर ५ क्षपकश्रेणि, ६ उपशमश्रेणि, ७ जिनकल्पिमुनिनी रीति, ८ परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र, ९ केवलज्ञान, १० मोक्षप्राप्ति श्री महावीरस्वामि केवलज्ञान पाम्या पछी चौद वर्षे जमाली नामनो प्रथम निन्हव थयो, अने सोल वर्षे तिष्यगुप्त नामनो बीजो निन्हव थयो श्री जंबुस्वामिनु आयुष्य (८०) एंशी वर्षनु हतुं

३ श्री जंबुस्वामिनी पाट उपर श्री प्रभवास्वामि बेठा तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे छे– विंध्याचल पर्वत नजीक जयपुर नामनु नगर हतु, तेनो विंध्य नामनो राजा हतो तेने बे पुत्रो थया, एक मोटो प्रभव, बीजो छोटो प्रभव मोटो प्रभव कोइ कारणसर गुस्से थइ जयपुर नगरथी बहार निकली विंध्याचलनी विषम जगामां गाम वसावी रहेवा लाग्यो, अने चोरी, रस्तानी लूट, धाडचोरी, जबरीथी पकडवुं विगेरे कृत्यो करी पोतानी आजीविका चलावतो हतो एकदा पांचसे चोरनो समुदाय लइ राजगृह नगरमां जंबुजीनु घर लुटवा आव्यो जंबुस्वामीए तेने प्रतिबोध कर्यो ते प्रतिबोधथी तेणे पांचसे चोरोनी साथे जंबुस्वामि सहवर्तमान दीक्षा लीधी इत्यादि श्री जंबुस्वामि तथा प्रभवस्वामिनो अधिकार जंबुचरित्र तथा परिशिष्ट पर्वथी जाणवो प्रभवस्वामि त्रीश वर्ष गृहस्थपर्याय, चमालीस वर्ष व्रतपर्याय, अने अगीआर वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु पचासी वर्षनुं भोगवी श्रीमहावीरस्वामि पछी पचोतेर वर्षे स्वर्गे गया

४ श्रीप्रभवस्वामिनी पाट उपर श्री शिय्यंभवस्वामि बेठा. जेउए मनक साधु वास्ते श्रीदशवैकालिक सूत्रनी रचना करी. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे—एकदा प्रस्तावे प्रभवस्वामिने रात्रिना विचार थयो के मारी पाट उपर कोण बेसशे ? ज्ञानबलथी विचारतां सर्व संघमां पोतानी पाट योग्य कोइ देखवामां आव्युं नही, तेथी पर दर्शनवालाउ तरफ ज्ञानबलथी देखवा लाग्या. अनुक्रमे तेमणे राजगृह नगरमां शिय्यंभव भट्टने यज्ञ करतां थकां, पोतानी पाट योग्य दीठा. तत्काल प्रभवस्वामि विहार करी सपरिवार राजगृह नगरमां आव्या. पोताना बे साधुने आदेश कर्यो के तमे यज्ञस्थानमां जइ भिक्षावास्ते धर्मलाभ कहो, अने यज्ञ करनाराउने आ प्रमाणे कहो— "अहोकष्टमहोकष्टं तत्त्वं विज्ञायते नहि" बंने साधुए गुरुना आदेश मुजब पूर्वोक्त सर्व कर्युं. ज्यारे ब्राह्मणोए "अहोकष्टं" इत्यादि श्रवण कर्युं, ते वखते यज्ञवाडामां शिय्यंभव ब्राह्मणने यज्ञदीक्षा लेवानी हती, तेथी तेउ यज्ञवाडाना दरवाजामां उभा हता, जेथी तेमणे पण मुनियोनुं "अहोकष्टं" इत्यादि श्रवण कर्युं. तत्काल तेउ विचारवा लाग्या के आवा उपशमप्रधान साधु कदापि असत्य बोलता नथी, तेथी तेमना मनमां संशय थयो, जेथी उपाध्यायने पुछ्युं के तत्त्व शुं छे? उपाध्यायजीए कह्युं के चार वेदमां जे कथन करेल छे तेज तत्त्वछे, वेद उपरांत बीजुं तत्त्व नथी. शिय्यंभवे कह्युं के तमे दक्षिणाना लोभथी मने तत्त्व बतावता नथी. वली रागद्वेषरहित, निर्मम, निःपरिग्रह, शांत, दांत, महंत एवा मुनियोनुं कथन कदापि असत्य होतुं नथी, तेथी हवे तमे मारा गुरु नथी, तमे तो जन्मथी जगत्ने ठगवानी बाजी रची बेठा छो, माटे शिक्षायोग्य छो; वास्ते कां तो मने तत्त्व बतावो ? अने तेम नहि करशो तो तलवारथी हुं तमारुं शिरछेद करीश. एम कहेतांज अत्यंत क्रोधना आवेशमां आवी जवाथी मियानथी तलवार बहार काढी. उपाध्याये प्राणांत कष्ट देखी कह्युं के अमारा वेदोमां पण एमज लखेल छे, तथा अमारी आम्नाय पण एवीज छे के ज्यारे कोइ अमारुं शिरछेद करवा आवे त्यारेज तत्त्व कहेवुं, अन्यथा नही. तेथी हवे हुं तमने तत्त्व कहुं छुं. आ यज्ञस्थंभनी नीचे अर्हंतनी प्रतिमा स्थापन करेली छे, अने तेनी प्रछन्न रीते नीचेज पूजा करवामां आवे छे.

तेना प्रजावथी यज्ञना सर्व विघ्नो दूर थइ जाय छे जो यज्ञस्थंभ नीचे अर्हंतनी प्रतिमा न राखवामां आवे तो महातपा सिद्धपुत्र तथा नारद, आ बने यज्ञने विध्वस करी नाखे छे पछी उपाध्यायजीए स्थंभ उखेडी अर्हंतनी प्रतिमा बतावी, अने कह्यु के आ प्रतिमा जे देवनी छे, ते देव, श्री अर्हंतनो कथन करेलो धर्म, जीवदया रूप तत्त्व छे, अने आ जे वेदप्रतिपाद्य यज्ञ छे, ते सर्व हिंसात्मक रूप होवाथी विडंबना रूप छे, परंतु शु करीए? जो अमे एम न करीए तो अमारी आजीविका चालती नथी हवे तु तत्त्व समजी ले, अने मने छोडी दे, तथा परमार्हंत थइ जा कारण के में तने मारा पेटने वास्ते घणु दिवस रख डाव्यो छे गुरुनु शुद्ध अत करण थयेलु जाणी शिय्यजवे तेने नमस्कार कर्यो, अने कह्यु के यथार्थ तत्त्वनो प्रकाश करवाथी तमे हवे साचा उपाध्याय छो एम कही तुष्टमान थइ यज्ञनी सर्व सामग्री सुवर्णपात्रादि शिय्यंजवे उपाध्यायने आपी दीधी, अने प्रजवस्वामि पासे जइ तत्त्वनुं स्वरूप पुछी दीक्षा लीधी तेमनो शेष वृत्तांत परिशिष्टपर्व ग्रथथी जाणी लेवो शियजव स्वामि अठावीश वर्ष गृहस्थावास, अगीआर वर्ष सामान्य साधु, अने तेत्रीश वर्ष युगप्रधानाचार्य पदवी जोगवी, सर्व आयु बासठ वर्षनुं जोगवी श्रीमहावीर जगवत पछी अठाणु वर्षे स्वर्गे गया

५ श्रीशिय्यंजवस्वामिनी पाट उपर यशोजद्रस्वामि बेठा ते बावीस वर्ष गृहस्थवास, चौद वर्ष व्रतपर्याय, पचास वर्ष युगप्रधान पदवी सर्व आयु छासी वर्षनु जोगवी श्रीमहावीर पछी (१४८) वर्षे स्वर्गे गया

६ श्री यशोजद्रस्वामिनी पाट उपर एक संजूतविजय अने बीजा जद्रबाहुस्वामि, आ बने बेठा संजूतविजयजी बेंतालीस वर्ष गृहवास, चालीस वर्ष व्रतपर्याय अने आठ वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु नेवु वर्षनु जोगवी स्वर्गमां गया श्रीजद्रबाहुस्वामिए १ आवश्यक निर्युक्ति, २ दशवैकालिक निर्युक्ति, ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति, ४ आचारांग निर्युक्ति, ५ सूत्रकृतांग निर्युक्ति, ६ सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति, ७ रीषिजाषित निर्युक्ति ८ कल्पनिर्युक्ति, ९ व्यवहार निर्युक्ति, १० दशानिर्युक्ति, आ दश निर्युक्तियो, तथा १ कल्प, २ व्यवहार, ३ दशाश्रुतस्कध, आ त्रण नवमा पूर्वमाथी उद्धार करी बनाव्या वली जद्रबाहुसंहिता नामनुं अति विस्तारवालुं

ज्योतिष शास्त्र बनाव्युं. उपसर्गहरस्तोत्र बनाव्युं. एवीरीते जैनमतवालाउं उपर बहुज उपकार कर्यो. भद्रबाहुस्वामिने वराहमिहिर नामना एक सगा भाइ हता, ते प्रथम तो जैनमतना साधु थया हता, पछी साधुपणुं तजी दीधुं, तेमणे वराही संहिता बनावी. विक्रमादित्यनी सभामां जे वराहमिहिर पंडित हता ते बीजा वराहमिहिर थया छे. संहिताकारक ते नहीं. तेमनुं सर्व वृत्तांत परिशिष्ट पर्वथी जाणवुं. श्रीभद्रबाहुस्वामि पीसतालीस वर्ष गृहस्थावास, सत्तर वर्ष व्रतपर्याय, चौद वर्ष युगप्रधान, सर्व आयु छोंतेर वर्षनुं भोगवी श्रीमहावीर पछी (१७०) वर्षे स्वर्गे गया.

श्री संभूतविजय तथा श्रीभद्रबाहुस्वामिनी पाट उपर श्रीस्थूलभद्रस्वामि बेठा. तेमनो सर्व वृत्तांत परिशिष्ट पर्व ग्रंथथी जाणवो. १ प्रभवस्वामि, २ शिय्यंभवस्वामि, ३ यशोभद्रस्वामि, संभूतविजय, ५ भद्रबाहुस्वामि, ६ स्थूलभद्र. आ छ आचार्यो चौद पूर्वना वेत्ता हता. श्री स्थूलभद्रजी त्रीस वर्ष गृहस्थावास, चोवीस वर्ष व्रतपर्याय, पीसतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु नवाणुं वर्षनुं भोगवी श्रीमहावीर पछी (२१५) वर्षे स्वर्गमां गया. श्रीमहावीर पछी बसे चौद वर्षे आषाढ आचार्यनो शिष्य त्रीजो निन्हव थयो.

स्थूलिभद्रजीना समयमां नवनंदोनुं (१५५) एकसो पंचावन वर्षनुं राज्य उत्थापी चाणाक्य ब्राह्मणे चंद्रगुप्त राजाने राज्यसिंहासन उपर बेसाड्यो. चंद्रगुप्तना वंशजोए (१०८) वर्षसुधी राज्य कर्युं. चंद्रगुप्तना पितानुं नाम मोरपाल हतुं, तेथी चंद्रगुप्तनो मौर्यवंश कहेवाय छे. चंद्रगुप्त जैनमती श्रावक राजा हतो. चंद्रगुप्त तथा नव नंदोनुं वृत्तांत परिशिष्ट पर्व, उत्तराध्ययनवृत्ति तथा आवश्यकवृत्तिथी जोइ लेवुं.

श्रीस्थूलभद्रस्वामि पछी उपरना चार पूर्व, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान विछेद थइ गयां. श्रीमहावीर पछी (२२०) वर्षे अश्वमित्र नामनो चोथो क्षणिकवादि निन्हव थयो. श्रीस्थूलभद्रजीना समयमां बार वर्षनो डुकाल पड्यो, त्यारे चंद्रगुप्तनुं राज्य हतुं; तथा श्रीमहावीर पछी (२२८) वर्षे वित्याबाद गंग नामनो पांचमो निन्हव थयो.

८ श्री स्थूलभद्रजी पछी तेमना बे शिष्यो एक आर्यमहागिरि तथा बीजा सुहस्ति सूरि आठमी पाट उपर बेठा. आर्यमहागिरिना शिष्य

१ बकुल, २ वलिस्सह, वलिस्सहना शिष्य श्री उमास्वातिजी थया, जेमणे तत्त्वार्थादि सूत्रनी रचना करी, उमास्वातिजीना शिष्य श्यामाचार्य, जेमणे पन्नवणा सूत्रनी रचना करी आ श्यामाचार्य श्री महावीर पछी त्रणसो छोंतेर वर्षे स्वर्गे गया आर्यमहागिरिजी त्रीस वर्ष गृहवास, चालीस वर्ष व्रतपर्याय, त्रीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु एकसो वर्षनुं जोगवी स्वर्गे गया

श्रीसुहस्तिसूरिये एक भिखारीने दीक्षा आपी, ते भिखारी काल करी चन्द्रगुप्तना वंशमां तेना पुत्र बिंदुसार, बिंदुसारनो पुत्र अशोक, अशोकनो पुत्र कुणाल, कुणालनो पुत्र संप्रति नामनो राजा थयो संप्रति राजाये जैनधर्मनी बहुज वृद्धि करी श्री कल्पसूत्रना प्रथम उद्देशामां श्री महावीरस्वामिना समयमा वर्त्तमान समय सरखावतां बहु थोडा देशोमां जैनधर्म लखेल छे मारवाड, गुजरात, दक्षिण, पजाब विगेरे देशोमां जे जैनधर्म प्रवर्त्ते छे, ते संप्रति राजाना समयथीज प्रवर्त्ते छे यद्यपि वर्त्तमानमां जैनी राजा नही होवाथी जैनधर्म सर्व स्थले नथी, परंतु संप्रति राजाना समयमां जैनधर्म भारत वर्षमां सर्वत्र हतो, तथा उन्नतिपर हतो, कारण के सप्रति राजानु राज्य मध्य खड तथा गगा अने सिंधुपार सर्व देशोमां हतु सप्रति राजाये धर्मवृद्धिमाटे पोताना नोकरोने जैनसाधुउ बनावी, पोतानी आज्ञा माननारा राजाउ शक, यवन, फारसादि देशोमां हता, ते देशोमां पण मोकल्या हता तेउये ते राजाउने जैनना साधुउना आहार, विहार, आचारादि सर्व बताव्या हता, तेमज समजाव्या हता बाद साधुउनो विहार ते देशोमां करावी ते देशना लोकोने जैनधर्मी कर्या हता संप्रति राजाये (९९०००) नवाणु हजार जीर्णोद्धार जिन मदिरोना कराव्या, तथा (२६०००) छवीस हजार नवा जिनमंदिरो बधाव्या, सोना, चांदी, पीतल, पाषाण प्रमुखनी सवाक्रोड प्रतिमा बनावी तेमना बनावेला मदिर, नाडोल, गीरनार, शत्रुंजय, रतलाम प्रमुख अनेक स्थले अमे देखेल छे सप्रति राजानी प्रतिमा तो अमे सेंकडो वीठी छे संप्रति राजानु संपूर्ण वृत्तांत परिशिष्ट पर्वादि ग्रथोथी जाणवुं

सुहस्ति सूरिए उज्जयननी रेहेनारी भद्रा शेठाणीना पुत्र अवंती सुकमालने दीक्षा आपी जे स्थले अवंतीसुकमाले काल कर्यो, ते स्थले

तेना महाकाल नामना पुत्रे जिनमंदिर बंधाव्युं. तें मंदिरमां पोताना पिताना नामथी अवंती पार्श्वनाथनी मूर्त्ति स्थापन करी. कालांतरे ब्राह्मणोए पोताना बलवान समयमां ते मंदिरमां मूर्त्तिने नीचे दबावी उपर महादेवनुं लिंग स्थापन करी महाकाल मंदिर प्रसिद्ध करी दीधुं. ज्यारे उज्जयनमां विक्रम राजा थयो, ते अवसरे कुमुदचंद्र (सिद्धसेन दिवाकर) नामना जैनाचार्ये ते मंदिरमां कल्याणमंदिर स्तोत्र बनावी स्तुति करी, जेथी शिवलिंग फाटी वचमांथी तत्काल पूर्वोक्त पार्श्वनाथनी मूर्त्ति फरी प्रगट थइ. तेनो इतिहास आ प्रमाणे छे.

विद्याधर गछमां स्कंदिलाचार्यना शिष्य वृद्धवादि आचार्य थया. ते अवसरे उज्जयनमां विक्रमादित्य राजा हतो. तेनो मंत्री देवऋषि ब्राह्मण हतो, कात्यायन गोत्री हतो; तेने देवसिका नामनी स्त्री हती. तेनो पुत्र सिद्धसेन विद्याना अभिमानथी सर्व जगत्ना लोकोने तृणवत् समजतो हतो; बुद्धिमां पण मारा समान कोइ नथी एम मानतो हतो. मने जे मने वादमां जीते तेनो हुं शिष्य थइ जाउं एम ज्यां त्यां विवाद करतो हतो. वृद्धवादि आचार्यनी कीर्ति तेना सांभलवामां अत्यंत आवी, तेथी तेनी साथे विवाद करवा सुखासन (पालखी) मां बेसी भरुच तरफ जतो हतो. ते अवसरे वृद्धवादि पण भवितव्यताना योगे सन्मुख आवता तेने मल्या. बंनेनो मेलाप थतां परस्पर आलापसंलाप थयो. सिद्धसेनजीए कह्युं के मारी साथे तमे वाद करो. वृद्धवादिए कह्युं के वाद तो करुं, परंतु आ जंगलमां हार जीतनो कोइ साक्षि नथी. सिद्धसेनजीए कह्युं आ जे गाय चरावनारा गोपो छे, तेज मारा तमारा साक्षी थाउ, तेउ जेने हार्यो कहे, ते हार्यो. वृद्धवादिए कह्युं तमने जो तेम कबुल होय तो मारे इनकारी नथी. भले तेउज साक्षि रहे. हवे तमे वाद चलावो ! तत्काल सिद्धसेनजीए अत्यंत छटादार संस्कृत भाषामां पोतानो वाद शरु कर्यो, अने ते वाद समाप्त कर्यो, ते सांभली गोपोए कह्युं के आ तो कांइ पण जाणता नथी, केवल लांबा बराडा पाडी अमारा कानमां धाक पाडे छे. हवे गोपोए वृद्धवादिने कह्युं हे वृद्ध ! तुं बोल ? वृद्धवादि अवसर देखी, कछ बांधी, गोपोनी भाषामां बोलवा लाग्या, अने थोडुं थोडुं कुदवा पण लाग्या. ते अवसरे तेमणे जे छंदोनो उच्चार

कर्यो तेमांथी कांइक लखीए छीए- "नवि मारिये नवि चोरिये, परदार गमन निवारिये ॥ थोवाथो थंदाइयें, सग्गिमट्टे मट्टे जाइये ॥ १ ॥ वली बोलवा तथा नाचवा लाग्या ॥ छंद ॥ कालो कंबल नीलो वट्ट, छाँछें ज रिउ दीवठो पट्ट ॥ एवड पढीउं नीले जाड, अवर किसो छे सग्ग नि लाड ॥२॥ इत्यादि गोपो सांजली बहुज खुशी थया, अने कहेवा लाग्या के वृद्धवादि सर्वज्ञ छे, अमने केवो मीठो, कानने सुखदायक तथा अ मारा योग्य उपदेश कर्यो सिद्धसेन तो कांइ जाणतो नथी गोपोनो नि र्णय सांजली सिद्धसेनजीए वृद्धवादिने कह्युं हे जगवन्! तमे मने दीक्षा आपी पोतानो शिष्य बनावो, कारण के मारी प्रतिज्ञा छे के जो गोपो मने हार्यो कहे तो हु हार्यो, अने तमारो शिष्य हुं बनु वृद्धवा- दिए कह्यु के आ गोपोनी सजामां वाद विवाद शो? ते प्रमाणेना वाद विवादथी हारजीत कहेवाय नहि तमे ज्रगुपुर (जरुच) मां राजस जामां चालो, सजा समक्ष मारो तमारो वाद विवाद थशे सिद्धसेन जीए कह्यु के हुं जले विद्वान् होउं, परंतु अवसरनो जाण नथी, अव सरना ज्ञाता तमे छो, तेथी मने हार्यो समजी दीक्षा आपो सिद्धसे नजीए पूर्वोक्त कह्या छतां वृद्धवादि आचार्य तेने राज्यसजामां विवाद करवा सारु लइ आव्या राज्यसजा समक्ष विवाद थयो, तेमां सिद्ध सेनजीनो पराजय थयो, तेणे आचार्य पासे दीक्षा लीधी, गुरुए तेनु ना म कुमुदचन्द्र पाड्यु पछी ज्यारे आचार्य पदवी आपी त्यारे फरी सि द्धसेन दिवाकर नाम राख्यु पछी वृद्धवादि तो अन्यत्र विहार करी ग या, अने सिद्धसेन दिवाकर अवंती (उज्जयन) मां गया उज्जयननो संघ सन्मुख आव्यो, अने सिद्धसेन दिवाकरने सर्वज्ञपुत्र एवुं बिरुद आप्यु, एम बिरुदावली बोलता अवंती नगरीना चोकमां आव्या ते अवसरे विक्रमादित्य राजा हाथी उपर चडेला सन्मुख आवता मल्या राजाए सर्वज्ञपुत्र एवुं बिरुद सांजली तेनी परीक्षा वास्ते हाथी उपर बेठा बेठांज मनथी तेमने नमस्कार कर्यो आचार्ये तत्काल धर्मलाज कह्यो राजाये पुछ्युं, वंदना कर्या विना आपे मने धर्मलाज केम आप्यो? शु धर्मलाज घणु सस्तो छे? आचार्ये कह्यु, आ धर्मलाज क्रोड चिंतामणि रत्नोथी पण अधिक छे, जे कोइ अमने वंदना करे छे,

तेनेज अमे धर्मलाभ कहीये छीये. वली एम पण नथी के तमे अमने वंदना नथी करी. तमे पण पोताना मनथी वंदना करी छे. मनज सर्व कार्योमां प्रधान छे, ते कारणथी अमे धर्मलाभ कह्यो छे, अने तमोए पण मारी परिक्षावास्तेज मनथी नमस्कार करेल छे. विक्रम राजाए तुष्टमान थइ हाथीथी नीचे उतरी सर्व संघनी समक्ष आचार्यने वंदना करी. एक क्रोड सोनामहोर भेट मुकी, आचार्ये सोनामहोर लीधी नही, कारण के तेउ त्यागी हता. राजाये पण पाछी लीधी नहि. आखर आचार्यनी आज्ञाथी संघना गृहस्थोये जीर्णोद्धारमां वापरी दीधी. राजाना दफतरमां तो आ प्रमाणे लखेलुं छे. श्लोक ॥ धर्मलाभ इति प्रोक्ते, दूरादुछ्रितपाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौ कोटिं धराधिपः ॥ १ ॥ श्रीविक्रम राजानी सन्मुख सिद्धसेनदिवाकरे एम पण कह्युं हतुं के ॥ गाथा ॥ पुण्णे वास सहस्से, सयंमि वरिसाण नव नवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुह विक्कमराय सारिछो ॥ १ ॥ अर्थः पुण्य एवां एक हजार एकसो नवाणुं वर्षे, हे विक्रमराय तमारा जेवोज कुमारपाल नृप थशे. अन्यदा सिद्धसेनजी चित्रकूटमां गया. चित्रकूटमां एक अति प्राचीन जिनमंदिर हतुं, तेमां एक बहु मोटो स्थंभ तेमना देखवामां आव्यो. कोइने पुछ्युं के, आ स्थंभ शानो छे? तेणे कह्युं के पूर्वाचार्योये तेमां रहस्य पुस्तको मुकेलां छे, आ स्थंभ विविध औषध द्रव्यनो बनेलो, वज्रनी जेम जलादिथी अभेद्य छे. कोइथी आ स्थंभ खोली शकातो नथी. ते सांभली सिद्धसेनजीये ते स्थंभनी गंध लइ प्रत्यौषधरस तेना उपर छांट्यो, तेथी कमलनी जेम स्थंभ खिली गयो. तेमां पुस्तक दीठां. तेमांथी एक पुस्तक लइ वांचतां प्रथम पत्रमां बे विद्या लखेलीप्राप्त थइ. एक सरसव विद्या, बीजी सुवर्णविद्या. सरसव विद्यानुं ए बल हतुं के कार्य आवी पडे त्यारे मांत्रिक जेटला सरसव जलाशयमां नांखे, तेटला अस्वार बेतालीसे हथीआर सहित बहार आवे, परदलनो भंग करी कार्य सिद्ध थयेथी अदृश्य थइ जाय. हेम विद्याथी कांइ पण मेहेनतविना शुद्ध हेम कोटि गमे ते धातुथी थइ शके. आ बंने विद्या सिद्धसेनजीये सारी रीते लीधी. उपरांत आगल वांचवा जाय छे के स्थंभ बंध थइ गयो, सर्व पुस्तको वचमां रही गयां, अने आकाशवाणी थइ के तुं आ पुस्तकोने वांचवाने योग्य नथी

आगल वांचीश नहि, वांचीश तो तत्काल मरण पामीश सिद्धसेनजीये हरीने विचार कर्यो के वे विद्या मली तेपण सारु थयुं चित्रोडथी विहार करी सिद्धसेनजी पूर्व देशमा कुमारपुरमां गया, तेनो राजा देवपाल नामनो हतो, तेने प्रतिबोधि दृढ जैनधर्मी कर्यो राजा निरंतर सिद्धांत श्रवण करवा लाग्यो, एम केटलोएक काल व्यतीत थयो एकदा राजा गुप्त रीते गुरुजी पासे आव्यो, आंसुथी नेत्र जरी कहेवा लाग्यो के, हे जगवन् अमो बहुज पापी छइये, तेथी आपनी अति उत्तम गोष्टीनो रस पी शकता नथी अमे बहुज संकटमां आवी पड्या छीये आचार्ये पुछ्युं, तमोनो शुं संकट छे? राजाये कह्यु, मारा वेरी राजाउं बहु छे, तेउं एकत्र थइ मारुं राज्य लइ लेवा चाहे छे आचार्ये कह्यु राजन्! आकुल व्याकुल थाउं नहि, तमोने हु सहाय छुं, हवे तमारे शी चिंता छे? राजा आ हिंमतथी बहुज खुशी थयो, पछी आचार्ये राजाने पूर्वोक्त बने विद्याउं आपी समर्थ कर्यो ते विद्याउंथी परदल जंग थइ गयुं तेमनो सर्व सरंजाम लूटी लीधो राजा आचार्यनो परम जक्त थइ गयो आचार्य पण सुखमा पडी शिथिलाचारी थइ गया आ स्वरूप वृद्धवादिजीना सांजलवामां आव्यु उपाश्रयना दरवाजा पासे उजा रही कहेवराव्युं के एक बुढो वादी आव्यो छे सिद्धसेने बोलावी पोतानी सन्मुख बेसाड्या वृद्धवादी पोतानु सर्व शरीर वस्त्रथी ढाकी बोल्या—"अण फुल्लियफुल्लमतोडहिं मारोवामोडिहि मणु कुसुमेहि ॥ अच्चि निरंजणंजीण, हिंड हिकाइ व णेणवणु ॥ १ ॥ सिद्धसेनने विचार करतां आनो अर्थ सुजयो नहि, त्यारे विचारवा लाग्या के मारा गुरु तो नहि होय? एमनी उक्तिनो माराथी अर्थ थइ शकतो नथी, एम धारी फरी जोयुं तो गुरुने उंलख्या गुरुने पगे पडी वारंवार क्षमा मागवा लाग्या, अने पद्यनो अर्थ पुछवा लाग्या वृद्धवादीजीए कह्यु " अप्राप्त फल एवा फुलने तोड नहि, जावार्थ के आ योग कल्पवृक्ष छे, जे योग रूप वृक्षना यम नियम तो मूल छे, ध्यान रूप मोटु थड जेनुं छे, समता, कवित्व, वक्तृत्व, यश, प्रताप, मारण, उच्चाटन, स्तजन, वशीकरणादि सिद्धियो तेना पुष्प छे, अने केवलज्ञान फल छे हजी तो योगकल्पवृक्षने फुलोज लागेलां छे, ते केवलज्ञान रूप फलथी आगल फलशे, तेथी आ अप्राप्त फल, पुष्पोने

शा वास्ते त्रोडे छे ? तथा पांच महाव्रत रूप रोपा छे, तेने मरोड नहि. मनरूप पुष्पोथी निरंजन जिनराजने पूज; वनथी वन शुं ज्रम्या करे छे ? राजसेवादि बूरा नीरस फल शुं प्राप्त करे छे ? गुरुना उपदेशथी सिद्धसेनजी शिक्षा पाम्या. राजाने पुछी गुरु साथे अन्यत्र विहार करी गया, अने निबिड चारित्र पालवा लाग्या, अनेक आचार्योथी पूर्वोनुं ज्ञान प्राप्त कर्युं. वृद्धवादिनो स्वर्गवास थयो. बाद एकदा सिद्धसेन-जीए सर्व संघ एकठो करी कह्युं के मारो विचार सर्व आगमोने सं-स्कृत ज्राषामां करी देवानो थयो छे, श्री संघे कह्युं, शुं तीर्थंकर, गणधर संस्कृत जाणता न होता ? तेउए अर्ध मागधी ज्राषामां आगमो शा वा-स्ते कर्यां ? आ प्रमाणे कहेवाथी आपने पारांचिक नामनुं प्रायश्चित्त आवे छे, आप पोते विचारी ल्यो ? अमे आपने शुं कहीए ? सिद्धसेने विचार करी कह्युं के हुं मौन धरी बार वर्षनुं पारांचिक प्रायश्चित्त लइ गुप्त रीते मुखवस्त्रिका, रजोहरणादि लिंग राखी, अवधूत रूप धारण करी फरीश. एम बोली गछनो त्याग करी नगरादिमां पर्यटन करवा लाग्या. बार वर्ष व्यतीत थये उज्जयन नगरीमां महाकालना मंदि-रमां शेफालिका पुष्पोथी रंगेलां वस्त्र पेहेरी सिद्धसेन आवी बेठा. नम-स्कार करता नथी, तेथी पूजारी प्रमुख लोकोए कह्युं के तमे महादेवने नमस्कार केम करता नथी ? सिद्धसेन वोलताज नथी. एम लोकपरं-पराथी श्रवण करतां विक्रमादित्य पण त्यां आव्या, अने कह्युं " क्षीर लिलिक्षो ज्रिक्षो किमिति त्वया देवो न वंद्यते " सिद्धसेनजीए कह्युं हे राजन् ! मारा नमस्कारथी तमारा देवनुं लिंग फाटी जशे, पछी तमोने बहुज छुःख थशे, ते कारणथी हुं नमस्कार करतो नथी. राजाए कह्युं, लिंग फाटे तो फाटवा द्यो, परंतु तमे नमस्कार करो. तत्काल सिद्धसेन पद्मासने वेसी कहेवा लाग्या, सांज्रलो! पछी प्रथम द्वात्रिंशिकाथी देवनुं स्तवन करवा लाग्या, यथा ॥ स्वयंज्रुवं ज्रूतसहस्रनेत्र, मनेक मेकाक्षर ज्रावलिंगं ॥ अव्यक्त मव्याहत विश्वलोक, मनादि मध्यांतम पुण्य पापं ॥ १ ॥ इत्यादि प्रथमज श्लोक वोलवाथी लिंगमांथी धुमाडा निकलवा लाग्या, एटले लोको वोलवा लाग्या के शिवजीनुं त्रीजुं नेत्र खुल्युं छे, हमणांज आ ज्रिक्षुकने नेत्रना अग्निथी ज्रस्म करी देशे. तत्काल विज-

लीनां तेजनी जेवो तडतडात करतो प्रथम अग्नि निकल्यो, पछी श्री पार्श्वनाथजीनुं बिंब प्रगट थयुं, पटले वादी सिद्धसेनजीए कल्याणमंदिरादि स्तवनो करी क्षमा मागी विक्रमादित्य बोलवा लाग्या के हे जगवन् आ अदृष्ट पूर्व आश्चर्य शुं बताव्युं? आ नवा देव कोण छे? वली आ प्रगट शा वास्ते थया? एम पुछतां सिद्धसेन सूरिए अवतीसुकमाल तथा तेना पुत्र महाकाल संबंधी अने ब्राह्मणोए कालानुसारे बल पामी मूर्त्ति नीचे दबावी शिवलिंग स्थापन करी देवासंबंधी सर्व वृत्तांत कह्यो वली कह्युं के शासन देवताए मारी स्तुतिथी शिवलिंग फाडीने वचमांथी आ प्रतिमा प्रगट करी छे हवे तमे सत्य असत्यनो निर्णय करो विक्रमादित्य आ कार्यथी संतोष पामी देवनी समक्ष गुरुमुखथी बार व्रत ग्रहण करता हवा, अने मदिरना खर्च वास्ते एकसो गाम आपता हवा, तथा सिद्धसेन महाराजनी बहु प्रशंसा करी पोताना स्थाने गया वादींद्र सिद्धसेनने संघे अति तुष्टमान थइ संघमां लीधा, अने आचार्य पदवी पूर्वनी जेम आपी

एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करता मालव देशना ॐकार नगरमां गया नगरना जक्त श्रावकोए आचार्यने विनंति करी के, हे जगवन् आ नगरनी समीप एक गाम हतुं तेमां सुवर नामनो राज पुत्र गामनो अधिपति हतो तेने बे स्त्रीओ हती एक स्त्रीने प्रथम पुत्री जन्मी ते पुत्रीवाली स्त्रीए विचार कर्यो के मारी शोकने पुत्र न थाय तो सारु पुत्र थशे तो ते पतिने वल्लज्ञ थशे, तेथी दाइ (सुयाणी) ने मली अवसरनो लाज लइ पोतानी शोकना जन्मेला पुत्रने बहार फेंकावी दीधो, अने तत्कालनी मरेली पुत्री तेनी पासे मुकी दीधी जे पुत्रने बहार फेंकी दीधो हतो, तेने कुलदेवीए गायनुं रुप करी उछेर्यो ज्यारे ते आठ वर्षनो थयो त्यारे ओंकार नगरना शिवमदिरना अधिकारी जरटे तेने देख्यो, अने तेने पोतानो चेलो बनाव्यो एकदा प्रस्तावे कान्यकुब्ज देशनो राजा चक्षुअंध हतो, ते दिग्विजय करवावास्ते पडाव नाखी रह्यो हतो, रात्रिमां नानाचेलाने शिवजक्त व्यंतर देवताए कह्युं के शेष जोग राजाने आपजे, जेथी तेनी आंखो सारी थशे तेणे तेम कर्याथी राजानी आंख सारी थइ गइ राजाए एकसो गाम मदिरना खर्च

वास्ते आप्यां. अने आ मोटुं शिवमंदिर पण तेणेज बंधाव्युं. अमने आ नगरना मिथ्यादृष्टिउ बलवान होवाथी जिनमंदिर बनाववा देता नथी, तेथी आपने विनंति करीये छीये के आ मंदिरथी अधिक अमारुं मंदिर आ नगरमां बने तोज अमोने संतोष थाय. आप सर्व बाबतमां समर्थ छो. तेउनी विनंति ध्यानमां लइ वादींद्र अवंती नगरमां आव्या. विक्रमादित्यना मेहेल पासे आवी दरवानना मुखथी राजाने कहेवराव्युं– "दिदृक्षु र्भिक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारिवारितः ॥ हस्तन्यस्त चतुःश्लोक, उतागछतुगछतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांभली विक्रमादित्ये श्लोक तेना उत्तरमां लखी मोकल्यो. "दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुःश्लोकः, उतागछतु गछतु ॥१॥ ते श्लोक वांची आचार्ये कहेवराव्युं के भिक्षु आपने मलवा चाहे छे. धन लेता नथी. राजाये तेमने सन्मुख बोलाव्या, अने पिछान थइ एटले आदर सत्कार करी कहेवा लाग्या के गुरुजी बहु दिवसे दर्शननो लाभ आप्यो. आचार्ये कह्युं धर्मकार्योमां लागवाथी बहु दिवसो व्यतीत थया, चिरकाले आववुं थयुं. आ चार श्लोको श्रवण करो. यथा ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयातिदिगन्तरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशांतरंगता ॥ २ ॥ कीर्ति स्तेजातजाड्येव चतुरंभोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गता मार्त्तंडमंडलं ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्यासंस्तूयसे जनैः ॥ नारयोलेभिरे पृष्ठं, नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥ आ चार श्लोको सांभली राजा अत्यंत खुशी थया. गुरुने विनंति करवा लाग्या के, मारा राज्यमां जे कांइ सारभूत होय ते मागो, हुं आपने अर्पण करुं. आचार्ये कह्युं, मारे तो कांइ पण चाहना नथी, परंतु ॐकार नगरमां चतुर्द्वारि जैनमंदिर शिवमंदिरथी श्रेष्ठ तथा उंचुं बनावो, अने प्रतिष्ठा पण करावो; राजाये गुरुना फरमान मुजब कर्युं. जैनमतनी प्रभावना देखी श्री संघ अति संतुष्ट थयो. इत्यादि अनेक प्रकारे जैनधर्मनी प्रभावना करी दक्षिण देशमां प्रतिष्ठान पुरमां जइ ते अनशन करी देवलोक प्राप्त करता हवा. त्यांथी संघे एक भट्टने सिद्धसेन सूरिना खबर आपवा तेमना गछ पासे मोकल्या. भट्टे सूरियोनी सभामां जइ अर्ध श्लोक कह्यो, अने वारंवार ते अर्ध श्लोकज बोलवा लाग्यो. यथा ॥

लीनां तेजनी जेवो तडतडात करतो प्रथम अग्नि निकल्यो, पछी श्री पा
र्श्वनाथजीनु बिंब प्रगट थयु, एटले वादी सिद्धसेनजीए कल्याणमं
दिरादि स्तवनो करी क्षमा मागी विक्रमादित्य बोलवा लाग्या के हे
जगवन् आ अदृष्ट पूर्व आश्चर्य शु थतावयु ? आ नवा देव कोण ठे ?
वली आ प्रगट शा वास्ते थया ? एम पुछतां सिद्धसेन सूरिए अवंती-
सुकमाल तथा तेना पुत्र महाकाल संबधी अने ब्राह्मणोए कालानुसारे
बल पामी मूर्त्ति नीचे दबावी शिवलिंग स्थापन करी देवासंबधी सर्व
वृत्तांत कह्यो वली कह्युं के शासन देवताए मारी स्तुतिथी शिवलिंग
फाडीने वचमांथी आ प्रतिमा प्रगट करी ठे हवे तमे सत्य असत्यनो
निर्णय करो विक्रमादित्य आ कार्यथी संतोष पामी देवनी समक्ष गुरु
मुखथी बार व्रत ग्रहण करता हवा, अने मंदिरना खर्च वास्ते एकसो
गाम आपता हवा, तथा सिद्धसेन महाराजनी बहु प्रशंसा करी पोता
ना स्थाने गया वादींद्र सिद्धसेनने संघे अति बहुमान थइ संघमां ली
धा, अने आचार्य पदवी पूर्वनी जेम आपी

एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करता मालव देशना ॐ-
कार नगरमां गया नगरना भक्त श्रावकोए आचार्यने विनंति करी के,
हे जगवन् आ नगरनी समीप एक गाम हतुं तेमां सुंदर नामनो राज
पुत्र गामनो अधिपति हतो तेने बे स्त्रीठ हती एक स्त्रीने प्रथम पुत्री
जन्मी ते पुत्रीवाली स्त्रीए विचार कर्यो के मारी शोकने पुत्र न थाय
तो सारु पुत्र थशे तो ते पतिने वल्लज्ञ थशे, तेथी दाइ (सुयाणी) ने
मली अवसरनो लाज लइ पोतानी शोकना जन्मेला पुत्रने बहार फेंकावी
दीधो, अने तत्कालनी मरेली पुत्री तेनी पासे मुकी दीधी जे पुत्रने ब
हार फेंकी दीधो हतो, तेने कुलदेवीए गायनु रुप करी उठेर्यो ज्यारे ते
आठ वर्षनो थयो त्यारे ओंकार नगरना शिवमंदिरना अधिकारी जटे
तेने देख्यो, अने तेने पोतानो चेलो बनाव्यो एकदा प्रस्तावे कान्यकु-
ब्ज देशनो राजा बहुधन हतो, ते दिग्विजय करवावास्ते पडाव नाखी
रह्यो हतो, रात्रिमां नानाचेलाने शिवजक्त व्यंतर देवताए कह्यु के शेष
जोग राजाने आपजे, जेथी तेनी आंखो सारी थशे तेणे तेम कर्याथी
राजानी आंख सारी थइ गइ राजाए एकसो गाम मंदिरना खर्च

वास्ते आप्यां. अने आ मोटुं शिवमंदिर पण तेणेज बंधाव्युं. अमने आ नगरना मिथ्यादृष्टिउं बलवान होवाथी जिनमंदिर बनाववा देता नथी, तेथी आपने विनंति करीये छीये के आ मंदिरथी अधिक अमारुं मंदिर आ नगरमां बने तोज अमोने संतोष थाय. आप सर्व बाबतमां समर्थ छो. तेउंनी विनंति ध्यानमां लइ वादींद्र अवंती नगरमां आव्या. विक्रमादित्यना मेहेल पासे आवी दरवानना मुखथी राजाने कहेवराव्युं—"दिदृक्षु र्भिक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारिवारितः ॥ हस्तन्यस्त चतुःश्लोक, उतागच्छतुगच्छतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांभली विक्रमादित्ये श्लोक तेना उत्तरमां लखी मोकल्यो. "दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुःश्लोकः, उतागच्छतु गच्छतु ॥१॥ ते श्लोक वांची आचार्ये कहेवराव्युं के भिक्षु आपने मलवा चाहे छे. धन लेता नथी. राजाये तेमने सन्मुख बोलाव्या, अने पिछान थइ एटले आदर सत्कार करी कहेवा लाग्या के गुरुजी बहु दिवसे दर्शननो लाभ आप्यो. आचार्ये कह्युं धर्मकार्योमां लागवाथी बहु दिवसो व्यतीत थया, चिरकाले आववुं थयुं. आ चार श्लोको श्रवण करो. यथा ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयातिदिगन्तरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशांतरंगता ॥ २ ॥ कीर्ति स्तेजातजाड्येव चतुरंभोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गता मार्त्तंडमंडलं ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्यासंस्तूयसे जनैः ॥ नारयोलेभिरे पृष्ठं, नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥ आ चार श्लोको सांभली राजा अत्यंत खुशी थया. गुरुने विनंति करवा लाग्या के, मारा राज्यमां जे कांइ सारभूत होय ते मागो, हुं आपने अर्पण करुं. आचार्ये कह्युं, मारे तो कांइ पण चाहना नथी, परंतु ॐकार नगरमां चतुर्द्वारि जैनमंदिर शिवमंदिरथी श्रेष्ठ तथा उंचुं बनावो, अने प्रतिष्ठा पण करावो; राजाये गुरुना फरमान मुजब कर्युं. जैनमतनी प्रभावना देखी श्री संघ अति संतुष्ट थयो. इत्यादि अनेक प्रकारे जैनधर्मनी प्रभावना करी दक्षिण देशमां प्रतिष्ठान पुरमां जइ ते अनशन करी देवलोक प्राप्त करता हवा. त्यांथी संघे एक भट्टने सिद्धसेन सूरिना खबर आपवा तेमना गच्छ पासे मोकल्या. भट्टे सूरियोनी सभामां जइ अर्ध श्लोक कह्यो, अने वारंवार ते अर्ध श्लोकज बोलवा लाग्यो. यथा ॥

स्फुरति वाविखद्योत, सांप्रत दक्षिणापथे ॥ ज्यारे वारंवार आ अर्ध श्लोक सिद्धसेनजीनी वेहेन एक साध्वी हता, तेमणे सांजल्यो, त्यारे सिद्ध सारस्वत मंत्रथी बाकीनो अर्ध श्लोक तेमणे पुर्ण कर्यो यथा ॥ नूनम स्त गतोवादी, सिद्धसेनो दिवाकर ॥ १ ॥ पठी ते जट्टे सर्व वृत्तांत कह्यो संघने अत्यत शोक थयो ॥ इति सिद्धसेन दिवाकर संबध

सुहस्ति आचार्य त्रीश वर्ष एहस्यावास, चोवीस वर्ष व्रतपर्याय, ठे तालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु एकसो वर्षनु जोगवी, श्री महावीर पठी (२९१) वर्षे पठी स्वर्गे गया

९ श्री सुहस्ति सूरिनी पाट उपर श्रीसुस्थित सूरि तथा सुप्रतिबद्ध सूरि नामना वे शिष्यो वेठा तेठये क्रोडो वार सूरि मंत्रनो जाप कर्यो, तेथी गच्छनु नाम कोटिक श्री संघे राख्यु सुधर्मस्वामिथी आठ पाट सुधी तो अणगार, निर्ग्रंथ गछ नाम हतु बीजु कोटिक नाम थयु

१० श्री सुस्थित सूरिनी पाट उपर श्री इन्द्रदिन्न सूरि थया आ अ वसरमा श्री महावीरथी (४५३) वर्षे पठी गर्दभिल्ल राजानो उछेद क रनार बीजा कालिकाचार्य थया, तेनी कथा कल्पसूत्रमां कथन करेली ठे वली श्री महावीरथी (४५३) वर्षे पठी भृगुकछ (जरुच) मा श्री आर्य खपुटाचार्य विद्याचक्रवर्ती थया तेनो प्रबंध श्री प्रबंधचिंतामणि ग्रंथ, तथा हारिजद्री आवश्यकनी टीकाथी जाणवो वली प्रजावक चरित्रमां एम लख्यु ठे के, श्रीमहावीरथी (४०४) वर्षे पठी श्री खपुटाचार्य तथा (४६४ (४६७)वर्षे पठी आर्यमंगु, वृद्धवादि, पादलिप्त, तथा सिद्धसेन दिवाकर थया जे सिद्धसेन दिवाकरे विक्रमादित्यने जैनधर्मी कर्या ते विक्रमादित्य श्रीमहावीरथी (४७०) वर्षे थया ते वर्ष आ प्रमाणे थयां जे रात्रिये श्री महावीरस्वामि निर्वाण पाम्या, ते दिवसे अवंती नगरीमां पालक नामना राजानो राज्याभिषेक थयो आ पालक चंडप्रद्योतनो पौत्र हतो तेनु राज्य (६०) साठ वर्ष रह्यु तेनी पठी श्रेणिकनो पुत्र कोणिक अने कोणिकनो पुत्र उदायी, ज्यारे पुत्रविना मरण पाम्यो, त्यारे तेनी गादी उपर नंद नामनो नाइ वेठो तेनी गादी उपर सर्वे नंद ना मना नव राजा थया तेनु राज्य (१५५) वर्ष सुधी रह्यु नवमा नंदनी गादी उपर मौर्यवंशी चंद्रगुप्त राजा थयो तेनो पुत्र बिंदुसार, तेनो पुत्र

अशोक, अशोकनो पुत्र कुणाल, अने कुणालनो पुत्र संप्रति महाराज थयो. मौर्यवंशजोनुं सर्व राज्य (१०८) वर्ष सुधी रह्युं. पूर्वोक्त सर्व राजा प्रायः जैनधर्मी हता. तेउनी पछी त्रीश वर्ष सुधी पुष्पमित्र राजानुं राज्य रह्युं. त्यार बाद बलमित्र, भानुमित्र, आ बंने राजाउये (६०) वर्ष सुधी राज्य कर्युं. त्यार पछी नभवाहन राजाये (४०) वर्ष सुधी राज्य कर्युं. त्यार पछी गर्दभिल्लनुं राज्य (१३) वर्ष रह्युं. बाद चार वर्ष शकोनुं राज्य रह्युं. पछी शकोनो विक्रमादित्ये पराजय करी पोतानुं राज्य स्थापन कर्युं. आ सर्व मली (४७०) वर्षो थयां.

श्री इंद्रदिन्नसूरिनी पाट उपर श्री दिन्नसूरि बेठा. १२ श्रीदिन्नसूरिनी पाट उपर श्री सिंहगिरि सूरि बेठा. १३ सिंहगिरिजीनी पाट उपर श्री वज्रस्वामि बेठा. श्री वज्रस्वामि बाल्यावस्थाथी जातिस्मरण ज्ञानवाला हता. तेउने आकाशगामिनी विद्या पण हती. तेउये बीजा बार वर्षी दुकालमां संघनुं रक्षण कर्युं; वली दक्षिणमां बौद्धोना राज्यमां श्री जिनेंद्र पूजावास्ते पुष्पो पण तेमणे लावी आप्यां, अने बौद्धराजाने जैनमती बनाव्यो. वज्रस्वामी दश पूर्वधर हता, जेनाथी श्री वज्रशाखा उत्पन्न थइ. तेमनो प्रबंध आवश्यक वृत्तिथी जाणवो. श्रीवज्रस्वामि श्रीमहावीर पछी चारसो छन्नुं वरसे विक्रमादित्यना संवत २६ मां जन्म्या. आठ वर्ष घरमां रह्या. चमालीश वर्ष साधु पर्याय, अने छत्रीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु अठाशी वर्षनुं भोगवी स्वर्गे गया. आ आचार्यना समयमां जावडशाह शेठे श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर संवत (१०८) मां तेरमो उद्धार कर्यो. ते वखते श्री वज्रस्वामिये प्रतिष्ठा करी. श्री वज्रस्वामि श्रीमहावीर स्वामि पछी (५८४) वर्षे स्वर्गे गया. श्री वज्रस्वामिना समयमां दशमुं पूर्व, चोथुं संहनन अने चोथुं संस्थान व्यवछेद गयां. श्री सुहस्ति सूरि आठमां अने श्री वज्रस्वामि तेरमां, तेउनी पाटनी वचमां बीजी पटावलीउमां १ श्रीगुणसुंदर सूरि, २ श्री कालिकाचार्य, ३ श्री स्कंधिलाचार्य, ४ श्री रेवतमित्रसूरि, ५ श्रीधर्म सूरि, ६ श्री भद्रगुप्ताचार्य, आ सात अनुक्रमे युग प्रधान आचार्यो थया. वली श्री महावीरथी (५३३) वर्ष पछी श्री आर्यरक्षितसूरिये सर्व शास्त्रोना अनुयोग पृथक् पृथक् कही दीधा. आ प्रबंध आवश्यकवृत्तिथी

जाणवो श्री महावीरथी (५४०) में वर्षे त्रैराशिमतने जीतनारा श्रीगुप्त सूरि थया तेमनो प्रबंध श्री उत्तराध्ययननी वृत्ति तथा विशेषावश्यक सूत्रथी जाणवो जेणे त्रैराशि मत प्रगट कर्यो, तेनु नाम रोहगुप्त हतुं, ते श्रीगुप्त सूरिनो चेलो हतो तेनु उलुक गोत्र हतु ज्यारे रोहगुप्त गुरुनी साथे वादमां पराजय पाम्यो, अने कदाग्रह न छोड्यो, त्यारे अतरंजीका नगरीना बलश्री राजाये तेने राज्य बहार कर्यो ते रोहगुप्ते कणाद नामनो शिष्य कर्यो, अने तेने १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, आ छ पदार्थोनु स्वरूप बताव्युं, पछी कणादे वैशेषिक सूत्र बनाव्यां त्यारथी वैशेषिक मत चाल्यो

१४ श्रीवज्रस्वामिनी पाट उपर चौदमा श्री वज्रसेन सूरि थेला ते- ओ दुकालमां श्री वज्रस्वामिना आदेशथी सोपारक पत्तनमां गया ते न गरमां जीनदत्त नामना शेठना घरमां इश्वरी नामनी तेनी पत्नीए लाख रुपैश्रा खरची एक अन्ननी हांडी राधवा चढावी हती, तेमां झेर नांखवा जती हती, कारण के, तेओये धार्युं के अन्न तो मलतुं नथी, अने दुकाल मटवानो नथी, जेथी झेर खाइ घरना सर्व आदमीओये मरवानो निश्चय कर्यो हतो, ते अवसरे श्री वज्रसेन सूरि ते स्थले आवी पहोंच्या तेओने तेमणे कह्यु के तमे झेर खाओ नही, आवती काले सुकाल थइ जशे ते उपरथी तेओये झेर खाधु नहि श्री गुरुना वचन मुजब सुकाल थयो, अने शेठना चारे पुत्रोये दीक्षा लीधी तेओना नाम १ नागेंद्र, २ चंद्र, ३ निवृत्त, ४ विद्याधर ते चारेथी स्वस्व नामना चार कुल थया श्रीवज्र सेन सूरि नव वर्ष सुधी गृहवासमां रह्या (११६) वर्ष सुधी साधुपर्याय अने त्रण वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु (१२८) वर्षनुं भोगवी, श्रीमहा वीरथी (६२०) वर्ष पछी स्वर्गे गया श्रीवज्रस्वामी अने श्रीवज्रसेनसूरिनी वचमां श्रीआर्यरक्षितसूरि तथा श्रीदुर्वलिका पुष्पसूरि, आ बे युग प्रधानो थया श्री महावीरथी (५८४) वर्ष पछी सातमो निन्हव थयो, तथा श्री महावीरथी (६०९) वर्ष पछी श्रीकृष्ण सूरिनो शिष्य शिवभूति नामनो हतो, तेणे दिगंबर मत चलाव्यो ते अधिकार श्रीविशेषावश्यकाद्विथी जाणवो

१५ श्री वज्रसेन सूरिनी पाट उपर श्री चंद्र सूरि थेला तेमना नाम थी गछनु नाम पण चंद्र गछ थयु १६ श्री चंद्रसूरिनी पाट उपर श्री

सामंतभद्रसूरि थया. तेउं पूर्वगत श्रुतना ज्ञाता हता. तेउं वैराग्यरंगथी रंगाया हता, अने जंगलोमां रहेता हता, तेथी लोकोये चंद्र गछनुं नाम वनवासी गछ राख्युं. १७ श्री सामंतभद्र सूरिनी पाट उपर श्रीवृद्ध देवसूरि थया. तथा श्री महावीरथी (५९५) वर्ष पछी कोरंट नगरना नाहड नामना मंत्रीये, सत्यपुरमां जीनमंदिर बंधाव्युं, तेमां श्री महावीर स्वामिनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा श्री जज्जक सूरिये करी. ते प्रतिमा "जयउ वीर सच्चउरिमंडण" कहेवाय छे. १८ श्री वृद्धदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्योतन सूरि थया.

१९ श्री प्रद्योतन सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया. तेमना सूरिपदस्थापनावसरे बंने स्कंधो उपर सरस्वती अने लक्ष्मी साक्षात् देखी आ महान् पुरुष चारित्रथी भ्रष्ट थइ जशे, एवा विचारथी खिन्नचित्तवाला गुरुने देखी, तेमणे गुरुनी पासे एवो नियम कर्यो के, भक्तिवाला गृहस्थना घरनी भिक्षा लेवी नही, तथा दुध, दहीं इत्यादि छये विगयनो त्याग कर्यो. तेमना आ प्रमाणे तपना प्रभावथी नडोलपुरमां (पालीनी पासेना गाममां) १ पद्मा, २ जया, ३ विजया, ४ अपराजीता, आ चार देवीउं तेमनी सेवा करती हती. ते देखी केटलाएक मूर्ख लोको कहेवा लाग्या के आ आचार्य स्त्रीसंग केम करे छे? ते प्रमाणे बोलनाराउंने ते देवीउंये शिक्षा करी. तेमना समयमां तिक्षिला (गजनी) नगरीमां बहु श्रावको हता, तेउंमां मरकीनो उपद्रव थवाथी, तेउंनी शांतिवास्ते श्रीमानदेव सूरिये नडोलपुरथी शांतिस्तोत्र बनावी मोकल्युं.

श्रीमानदेव सूरिनी पाट उपर श्री मानतुंग सूरि थया. तेमणे भक्तामर स्तवननी रचना करी बाण अने मयुर जेवा पंडितोनी विद्याथी चमत्कार पामेला वृद्ध भोज राजाने प्रतिबोध्यो; तथा भयहर स्तवन रची नागराजाने वश कर्यो. वली भत्तिब्भर इत्यादि स्तवनोनी पण तेमणे रचना करेली छे. प्रभावक चरित्रमां प्रथम श्रीमानतुंग सूरिनुं चरित्र वर्णवेल छे, अने पछी देवसूरिना शिष्य प्रद्योतन सूरि, अने तेमना शिष्य श्री मानदेव सूरिनो प्रबंध लखेल छे, परंतु तेथी शंका न करवी, कारण के प्रभावक चरित्रमां बीजा पण केटलाएक प्रबंधो आगल पाछल कथन करेल छे.

२१ श्री मानतुंग सूरिनी पाट उपर श्रीवीर सूरि थया श्रीवीर सूरि श्री महावीर पछी (७७०) वर्षो पछी नागपुरमा श्री नमिनाथ अर्हतनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी ॥ यदुक्त ॥ नागपुरे नमिजवन, प्रतिष्ठया महित सौजाग्य ॥ अजवद्वीराचार्य, स्त्रिजि· शतै साधिके राज्ञ ॥ १ ॥

२२ श्रीवीर सूरिनी पाट उपर श्री जयदेवसूरि बेठा (२३) श्रीजयदेवसूरिनी पाट उपर श्री देवानंद सूरि बेठा आ अवसरमां श्री महावीरथी (८४५) वर्षे पछी वल्लजी नगरी त्रुटी, तथा (८८२) वर्षे पछी चैत्येस्थिति, तथा (८८६) वर्षे पछी ब्रह्म द्विपिका (२४) श्री देवानंद सूरिनी पाट उपर श्री विक्रमसूरि बेठा (२५) श्रीविक्रम सूरिनी पाट उपर श्री नरसिंह सूरि बेठा यत ॥ नरसिंह सूरिरासी, दतोऽखिलग्रथ पारगोयेन ॥ यक्षो नरसिंह पुरे,मांसरतिस्त्याजीतास्वगिरा ॥१॥ (२५) श्री नरसिंह सूरिनी पाट उपर श्री समुद्रसूरि बेठा यत ॥ वसंततिल काघृत्तम् ॥ खोमीण राजकुलजोपि समुद्रसूरि, र्गछं शशाम किल य प्रवण प्रमाणी ॥ जीत्वा तदाक्षपनकान् स्ववश वितेने, नागह्रदे भुजग नाथ नमस्य तीर्थम् ॥ १ ॥ (२७) श्री समुद्र सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया यतः ॥ वसंततिलका घृत्तम् ॥ विद्या समुद्र हरिजद्र मुर्नीद्रमित्र, सूरि र्बजूव पुनरेवहि मानदेव ॥ मांद्यात् प्रयातमपियोनघ सूरि मंत्र, लेजेंबिका मुखगिरा तपसोज्झयंते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरथी एक हजार वर्षे पछी सत्यमित्र आचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवछेद थयो श्रीव ज्रसेनसूरि अने सत्यमित्र आचार्यनी वचमां १ श्री नागहस्ति, २ श्रीरेवतीमित्र, ३ ब्रह्मद्वीप, ४ नागार्जुन, ५ भूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, आ ८ युगप्रधान अनुक्रमे थया युगप्रधानो मध्येना सुधर्म इंद्रथी वं दायेला अने प्रथमानुं योग सूत्रोना सूत्रधार कल्प श्री कालिकाचार्ये श्री महावीरथी (९९३) वर्षे पछी पांचमथी चोथनी संवत्सरी करी, अने श्री महावीरथी (१०५५) वर्षे पछी अने विक्रमादित्यथी (५८५) वर्षे पछी याकिनी साधवीना धर्मपुत्र श्रीहरिजद्र सूरि स्वर्गवास पाम्या, तथा (१११५) वर्षे पछी श्री जीनजद्रगणि युगप्रधान थया आ जीनजद्र गणि ध्यानशतकना कर्त्ता, हरिजद्र सूरिना ग्रथ उपर टीका करनार होवाथी बीजा जीनजद्र छे, आ कथन पटावलिमा छे, परतु श्री जीन

जद्रगणिक्षमाश्रमणनुं आयुष्य (१०४) वर्षनुं हतुं, ते कारणथी जो हरिजद्र सूरिना वखतमां विद्यमान होय तोपण विरोध नथी.

२८ श्रीमान देवसूरिनी पाट उपर श्री विबुधप्रजसूरि थया. (२९) श्रीविबुध प्रजसूरिनी पाट उपर श्री जयानंद सूरि थया. (३०) श्री जयानंद सूरिनी पाट उपर श्रीरविप्रजसूरि थया, तेमणे श्री महावीर पछी (११७०) वर्षे नडोल नगरमां श्री नेमिनाथ जगवाननी प्रतिष्ठा करी. श्रीमहावीर पछी (११९०) वर्षे उमास्वाति युगप्रधान थया. (३१) श्री रविप्रजसूरिनी पाट उपर श्री यशोदेव सूरि थया. श्री महावीरथी(१२७२) वर्ष पछी अने विक्रम संवत (८०२) मां वनराज, चावडा वंशना राजाये गुजरातमां अणहिलपुर पाटण वसाव्युं; वनराज जैन मतानुसारी राजा हतो. विक्रम संवत ८०० ना जादरवासुद त्रीजने दिवसे बप्पजट्ट आचार्यनो जन्म थयो, जेणे ग्वालियरना आम नामना राजाने जैनी बनाव्यो. तेनुं चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रंथथी जाणवुं.

३२ श्री यशोदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्युम्नसूरि थया. (३३) श्री प्रद्युम्नसूरिनी पाट उपर श्रीमान देवसूरि थया, जेमणे उपधान वाच्य ग्रंथनी रचना करी (३४) श्री मानदेव सूरिनी पाट उपर श्रीविमलचंद्र सूरि थया. (३५) श्रीविमलचंद्रसूरिनी पाट उपर श्री उद्योतन सूरि थया. श्रीउद्योतन सूरि अर्बुदाचल (आबु) पर्वत उपर यात्रा करवा आव्या. त्यां टेली गाम नजीक मोटावड वृक्षनी छायामां बेसी, पोतानी पाटनी वृद्धि थवा वास्ते सारुं मुहूर्त देखी श्री महावीरथी (१४६४) वर्ष पछी अने विक्रम संवत (९९४) वर्ष पछी पोतानी पाट उपर श्री सर्वदेव प्रमुख आठ आचार्यनी स्थापना करी; केटलाएक मात्र सर्वदेव सूरिनी स्थापना करी एम कथन करे छे. मोटा वडवृक्ष नीचे सूरि पदवी देवाथी वनवासी गछनुं नाम वडगछ पांचमु थयुं. "प्रधान शिष्य संतत्या, ज्ञानादि गुणैः प्रधान चरितैश्च वृद्धत्वाद्बृहद्गछ इत्यपि"

३५ श्री उद्योतन सूरिनी पाट उपर श्री सर्वदेवसूरि थया; केटलाएक श्री प्रद्युमसूरि तथा उपधान ग्रंथ कर्त्ता श्रीमान देवसूरि आ बंने आचार्योने पट्टधर मानता नथी. तेउना अजिप्राय प्रमाणे श्री सर्वदेवसूरि चोत्रीसमी पाट उपर थया. श्री सर्व देवसूरि [illegible]

जेम सुशिष्य लब्धिमान हता तेमणे विक्रम संवत (१०१०) पछी राम सैन्य पुरमां श्रीरीषजदेव जगवाननी तथा श्रीचंडप्रज स्वामिनी प्रतिष्टा करी, अने चड्रावतीमां कुंकण मंत्रीने प्रतिबोधी दीक्षा आपी तेमणे च ड्रावतीमां जैनमंदिर बधाव्युं हतु विक्रम संवत (१०२ए) वर्ष पछी ध नपाल पंडिते देशी नाममालानी रचना करी, तथा विक्रम संवत (१०ए६) वर्ष पछी थिरापड्रीय गछमां वादी वेताल श्रीशांतिसूरि थया, तेमणे श्री उत्तराध्ययन उपर टीका करी

३७ श्री सर्वदेवसूरिनी पाट उपर श्रीदेवसूरि थया, तेमने रूपश्री पृथु राजाये बिरुद आप्युं (३८) श्री देवसूरिनी पाट उपर बीजा श्री सर्व देवसूरि थया जेमणे यशोचंड तथा नेमिचंड प्रमुख आठ आचार्योने आचार्य पदवी आपी श्री महावीरथी (१४ए६) वर्षे पछी तक्षिलानुं नाम गजनी राखवामां आव्युं (३ए) श्री सर्व देवसूरिनी पाट उपर श्री यशोजड्रसूरि तथा नेमिचंडसूरि बने गुरु जाइओ बेठा विक्रम संवत (११३५) पछी तथा अन्य कथन मुजब (११३ए) वर्षे पछी नवांगीवृत्ति करनारा श्रीअजयदेवसूरि महाराज स्वर्गवास पाम्या, अने कूर्चपुर गछी चैत्यवासी जीनेश्वरसूरिना शिष्य श्री जीनवल्लज सूरिये चित्रकूटमां श्री महावीर स्वामिना ठ कल्याणकनी प्ररुपणा करी

४० श्री यशोजड्रसूरि तथा श्री नेमिचंडसूरिनी पाट उपर श्रीमुनि चंडसूरि थया जेठंये यावत् जीव मात्र सौवीर पाणी पीवानु राखी, सर्व विगयनो त्याग कर्यो वली तेठंये श्रीहरिजड्रसूरिकृत अनेकांतजयपता का प्रमुख अनेक ग्रंथोनी पंजीका करी, तथा उपदेशवृत्ति, योगबिंदुवृत्ति प्रमुख अनेक वृत्तिठंनी रचना करवाथी जगत्मां तार्किक शिरोमणि एवा बिरुदथी प्रसिद्ध थया आ आचार्य महा वैराग्यवान् निस्पृही थया वि क्रम संवत (११५ए) वर्षे पछी चंडप्रजथी पौर्णिमीयक मतोत्पत्ति थइ चंडप्रजने प्रतिबोधवावास्ते श्रीमुनिचंडसूरिये पाक्षिक सप्ततिकानी रचना करी. श्रीमुनिचंडसूरिना शिष्य वादी श्री अजीतदेवसूरि तथा देवसूरि प्रमुख थया श्री अजीतदेवसूरिये अणहिलपुर पाटणमां श्री सिद्ध राज जयसिंह राजानी सजामां अनेक विद्वानो साथे वाद करी चोरासी वादथी सर्व वादीठंने पराजय पमाड्या ते प्रसंगे दिगंबर मतना चक्रवर्ती,

श्रीकुमुदचंद्र आचार्यने पण वादमां जीती लीधा, अने दिगंबरोनो पाटणमां प्रवेश बंध कराव्यो. आ बिना अत्यारसुधी प्रसिद्ध छे. तेउंये विक्रम संवत (१२०४) मां फलवर्द्धि ग्राममां चैत्यबिंबोनी प्रतिष्ठा करी, तथा आरासणामां श्रीनेमिनाथनी प्रतिष्ठा करी. तेउंए (८४०००) चोरासी हजार श्लोक प्रमाण स्याद्वाद रत्नाकर नामना ग्रंथनी रचना करी, अने तेमनाथी मोटा नामांकित चोवीश आचार्योनी शाखा थइ. तेउंनो जन्म संवत (११३४) दीक्षा संवत (११५२) सूरिपद संवत (११७४) मां प्राप्त थयुं. संवत (१२२०) श्रावण कृष्ण सप्तमी गुरुवारनारोज तेमनो स्वर्गवास थयो. तेमना समयमां श्री देवचंद्रसूरिना शिष्य त्रण क्रोड ग्रंथना कर्त्ता, कलिकालमां सर्वज्ञ बिरुद धारक, पाटणना कुमारपालना प्रतिबोधक, सवालक्ष श्लोक प्रमाण पंचांग व्याकरणना कर्त्ता श्री हेमचंद्रसूरि विद्यासमुद्र थया, तेमनो विक्रम संवत (११४५) मां जन्म, संवत (११५०) दीक्षा, संवत (११६६) मां सूरि पद अने संवत (१२२९) मां स्वर्गवास थयो. तेमनुं संपूर्ण चरित्र श्री प्रबंध चिंतामणि तथा श्रीकुमारपालचरित्रथी जाणवुं.

श्रीमुनिचंद्र सूरिनी पाट उपर श्री अजीतदेवसूरि थया. तेमना समयमां संवत (१२०४) मां खरतरोत्पत्ति, तथा संवत (१२३३) मां आंचलिक मतोत्पत्ति, तथा संवत (१२३६) मां सार्द्धपौर्णिमीयक मतोत्पत्ति, तथा संवत (१२५०) मां आगमिक मतोत्पत्ति थइ. श्रीवीर जगवानथी (१६९२) वर्षे वागजट मंत्रीए श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर चौदमो उद्धार कराव्यो. ते प्रसंगे साडा त्रण क्रोड रुपीआनो व्यय कर्यो.

४२ श्री अजित देवसूरिनी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि थया. जेउंए विवेकमंजरी शुद्ध करी. तेमना मोटा शिष्य श्री सोमप्रजसूरि थया. तेउं शतार्थिकारक अर्थात् एकेक श्लोकना सो सो अर्थ निकले एवां काव्योनी रचना करनारा थया, बीजा मणिरत्न सूरि थया. (४३) श्रीविजयसिंह सूरिनी पाट उपर श्री सोमप्रजसूरि तथा श्रीमणिरत्न सूरि थया. (४४) सोमप्रज सूरि तथा श्रीमणिरत्न सूरिनी पाट उपर श्रीजगच्चंद्रसूरि थया. जेमणे पोताना गछने शिथिल देखी गुरुनी आज्ञाथी वैराग्य रसना समुद्र चैत्रवाल गछीय श्रीदेवजद्र उपाध्यायनी सहायथी क्रिया उद्धार कर्यो, अने हीरला जगच्चंद्र सूरि थया; कारण के जे-

जेम सुशिष्य छविमान हता तेमणे विक्रम संवत (१०१०) पछी राम सैन्य पुरमां श्रीरीषजदेव जगवाननी तथा श्रीचंद्रप्रज स्वामिनी प्रतिष्टा करी, अने चंद्रावतीमां कुकण मंत्रीने प्रतिबोधी दीक्षा आपी तेमणे चंद्रावतीमा जैनमंदिर बधाव्युं हतु विक्रम संवत (१०२९) वर्ष पछी धनपाल पंडिते देशी नाममालानी रचना करी, तथा विक्रम संवत (१०९९) वर्ष पछी थिरापद्रीय गछमां वादी वेताल श्रीशांतिसूरि थया, तेमणे श्री उत्तराध्ययन उपर टीका करी

३७ श्री सर्वदेवसूरिनी पाट उपर श्रीदेवसूरि थया, तेमने रूपश्री एवुं राजाये बिरुद आप्यु (३८) श्री देवसूरिनी पाट उपर बीजा श्री सर्व देवसूरि थया जेमणे यशोजद्र तथा नेमिचंद्र प्रमुख आठ आचार्योने आचार्य पदवी आपी श्री महावीरथी (१४९६) वर्ष पछी तक्षिलानुं नाम गजनी राखवामां आव्युं (३९) श्री सर्व देवसूरिनी पाट उपर श्री यशोजद्रसूरि तथा नेमिचंद्रसूरि बने गुरु जाइओ थेगा विक्रम संवत (११३५) पछी तथा अन्य कथन मुजब (११३९) वर्षे पछी नवांगीवृत्ति करनारा श्रीअजयदेवसूरि महाराज स्वर्गवास पाम्या, अने कूर्चपुर गछी चैत्यवासी जीनेश्वरसूरिना शिष्य श्री जीनवल्लज सूरिये चित्रकूटमां श्री महावीर स्वामिना ७ कल्याणकनी प्ररुपणा करी

४० श्री यशोजद्रसूरि तथा श्री नेमिचंद्रसूरिनी पाट उपर श्रीमुनि चंद्रसूरि थया जेउंये यावत् जीव मात्र सौवीर पाणी पीवानुं राखी, सर्व विगयनो त्याग कर्यो वली तेउंये श्रीहरिजद्रसूरिकृत अनेकांतजयपताका प्रमुख अनेक ग्रंथोनी पजीका करी, तथा उपदेशवृत्ति, योगबिंदुवृत्ति प्रमुख अनेक वृत्तिउंनी रचना करवाथी जगत्मां तार्किक शिरोमणि एवा बिरुदथी प्रसिद्ध थया आ आचार्य महा वैराग्यवान् निस्पृही थया विक्रम संवत (११५९) वर्षे पछी चंद्रप्रजथी पौर्णिमीयक मतोत्पत्ति थइ चंद्रप्रजने प्रतिबोधवावास्ते श्रीमुनिचंद्रसूरिये पाक्षिक सप्ततिकानी रचना करी श्रीमुनिचंद्रसूरिना शिष्य वादी श्री अजीतदेवसूरि तथा देवसूरि प्रमुख थया श्री अजीतदेवसूरिये अणहिलपुर पाटणमां श्री सिद्ध राज जयसिंह राजानी सजामां अनेक विद्धानो साथे वाद करी चोरासी वादथी सर्व वादीउंने पराजय पमाड्या ते प्रसगे दिगंबर मतना चक्रवर्ती,

छतां श्री जगच्चंद्र सूरिए श्री देवचंद्र उपाध्यायना कहेवाथी तेने सूरिपद आप्युं; वली एवी धारणाथी सूरिपद आपवामां आव्युं के विजयचंद्र देवेंद्र सूरिने सहायक थशे. विजयचंद्र बहु वखत सुधी श्री देवेंद्रसूरिनी साथे विनयवान् शिष्यनी जेम वर्तता रह्या, परंतु ज्यारे मालवा देशमां देवेंद्रसूरि आव्या, त्यारे ते वंदना करवाने पण आव्या नहि; बाद श्री देवेंद्र सूरिजीए कहेवराव्युं के एकज वस्तिमां आप बार वर्ष सुधि केम रह्या? विजयचंद्रे उत्तरमां कहेवराव्युं के, शांत दांतने बार वर्ष सुधी एक जगामां रहेवाथी कांइ दोष नथी. संविग्न साधुउ सर्वे, देवेंद्रसूरिनी साथे रह्या. देवेंद्र सूरिजी अनेक संविज्ञ साधुना समुदायनी साथे उपाश्रयमांज रह्या. विजयचंद्र सूरिनो समुदाय वडी शालामां रहेवाथी लोकोए तेमनुं नाम वृद्ध पौशालिक राख्युं, अने देवेंद्रसूरिना समुदायनुं नाम लघु पौशालिक राख्युं. स्तंभतीर्थना चोकमां कुमारपालविहारमां धर्मदेशा नामे मंत्री वस्तुपाले चारे वेदोना निर्णयकारक स्वसमय परसमयना जाणकार श्री देवेंद्रसूरिजीने वंदना करी बहुमान आप्युं. बाद श्री देवेंद्रसूरिजी विजयचंद्रनी उपेक्षा करी विचरता थका अनुक्रमे पालणपुरमां आव्या. चोराशी धनाढ्य शेठीआ तथा अनेक जन समुदाय निरंतर व्याख्यान श्रवण करवा आवता हता; शास्त्रना श्रोता पुरुषो अनेक हता. पालणपुरमां व्याख्यान श्रवण करवा आवनाराउ निरंतर एक मूडा प्रमाण अक्षत अने सोल मण सोपारी दर्शनावसरे चढावता हता, जैनशासननी बहुज उन्नति थइ रहि हती; ते अवसरे सुज्ञ धर्मी लोकोए गुरुजीने विनंति करी के हे भगवन्! आप अहींआ कोइने आचार्य पदवी आपी अमारा मनोरथ पूर्ण करो. गुरुजीए उचित जाणी विक्रम संवत (१३२३) मां पालणपुरमां वीरधवलने श्री विद्यानंद नाम दइ सूरिपद आप्युं. तेमना अनुज भीमसिंहने धर्मकीर्ति उपाध्यायनी पदवी आपी. ते अवसरे प्रल्हादनविहारना सौवर्ण कपिशीर्ष मंडपमां कुंकुमनी वृष्टि थइ, तेथी लोको बहुज आश्चर्य पाम्या. श्री विद्यानंद सूरिजीए विद्यानंद नामनुं नवीन व्याकरण बनाव्युं. यदुक्तं ॥ विद्या नंदाभिधं येन, कृतं व्याकरणं नवं ॥ भाति सर्वोत्तमं स्वल्प, सूत्रं बह्वर्थ संग्रहं ॥१॥ बाद श्री देवेंद्रसूरिजी फरी

मणे चितोडना राजानी सन्नामा बत्रीस दिगबर आचार्यो साथे वाद कर्यो, जेमां तेउं हीरानी जेम अजेय रह्या, तेथी राजाए तेमने हीरला जगचंद सूरि एवु बिरुद आप्यु वली तेमणे जावजीव आचाम्ल तपनो अभिग्रह कर्यो बार वर्ष तप करतां थयां पटले चितोडना राणाये तेमने तपा एवुं बिरुद आप्यु संवत (१२८५) मां वडगच्छनु नाम तपगच्छ थयु आ प्र माणे ठ नामो थयां १ निग्रथ, २ कोटिक ३ चंद्र, ४ वनवासी, ५ वडगच्छ, ६ तप गच्छ आ ठ नामोना प्रवृत्त करनारा हेतुरुप आचार्यो थया तेना नाम १ श्रीसुधर्मस्वामि, २ श्रीसुस्थितसूरि, ३ श्रीचन्द्रसूरि, ४ श्री सा मंतभद्रसूरि, ५ श्री सर्वदेवसूरि ६ श्री जगचन्द्रसूरि

४५ श्री जगच्चन्द्र सूरिनी पाट उपर श्री देवेंद्र सूरि थया तेमणे माल वानी उज्जयन नगरीमां जीनचंद्र नामना मोटा शेठना वीरधवल नामना पुत्रनो विवाह निमित्ते मह्रोत्सव थइ रह्यो हतो, ते वीरधवल कुमारने प्रतिबोध करी संवत (१३०२) मां दीक्षा आपी, त्यार बाद तेना भाइने पण दीक्षा आपी, तेउं दीर्घकालसुधी मालवा देशमां विहार करता रह्या बाद देवेंद्रसूरि गुजरातमा स्तम्भतीर्थमा आव्या, त्यां प्रथमथी श्री वि जयचंद्रसूरि गीतार्थोने पृथक् पृथक् वस्त्रोनी पोटलीउं आपे ठे, नित्य वि गय खावानी आज्ञा आपे ठे, निरतर वस्त्र धोवानी तथा फल, शाक ले वानी अने निवि प्रत्याख्यानमां विगयगत लेवानुं कहे ठे, तथा आर्यानो लावेलो आहार साधु वापरे एवी आज्ञा आपे ठे, वली दिन प्रत्ये द्वि विध प्रत्याख्यान, अने गृहस्थोने अपर्जीने वास्ते प्रतिक्रमण करावानी आज्ञा आपे ठे, तथा सविभागने दिन तेमने घेर गीतार्थ जाय, लेपनी संनिधि राखवी, तत्कालनु उष्णोदक ग्रहण करवु, इत्यादि काम करवाथी केटलापक शिथिलाचारी साधुने साथे लइ सदोष पौषधशालामां रह्या ठे

आ विजयचद्र आचार्यनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे मन्त्री वस्तुपालना घरमा विजयचद्र नामनो दफतरी हतो, ते कोइ अपराधथी केदखाना मा गयो तेवामा तेने श्री देवभद्र उपाध्यायजीए दीक्षा लेवानी प्र तिज्ञा करावी कारागृहथी मुक्त कराव्यो पठी तेणे दीक्षा लीधी बुद्धि बलथी बहुश्रुत थयो, परंतु अभिमानी होवाथी मन्त्री वस्तुपाले कह्यु के आ सूरिपद आपवा योग्य नथी आ प्रमाणे वस्तुपाल मन्त्रीनी मना

छतां श्री जगच्चंद्र सूरिए श्री देवभद्र उपाध्यायना कहेवाथी तेने सूरिपद आप्युं; वली एवी धारणाथी सूरिपद आपवामां आव्युं के विजयचंद्र देवेंद्र सूरिने सहायक थशे. विजयचंद्र बहु वखत सुधी श्री देवेंद्रसूरिनी साथे विनयवान् शिष्यनी जेम वर्तता रह्या, परंतु ज्यारे मालवा देशमां देवेंद्रसूरि आव्या, त्यारे ते वंदना करवाने पण आव्या नहि; बाद श्री देवेंद्र सूरिजीए कहेवराव्युं के एकज वस्तिमां आप बार वर्ष सुधि केम रह्या? विजयचंद्रे उत्तरमां कहेवराव्युं के, शांत दांतने बार वर्ष सुधी एक जगामां रहेवाथी कांइ दोष नथी. संविग्न साधुओ सर्वे, देवेंद्रसूरिनी साथे रह्या. देवेंद्र सूरिजी अनेक संविग्न साधुना समुदायनी साथे उपाश्रयमांज रह्या. विजयचंद्र सूरिनो समुदाय वडी शालामां रहेवाथी लोकोए तेमनुं नाम वृद्ध पौशालिक राख्युं, अने देवेंद्रसूरिना समुदायनुं नाम लघु पौशालिक राख्युं. स्तंभतीर्थना चोकमां कुमारपालविहारमां धर्मदेशा नामे मंत्री वस्तुपाले चारे वेदोना निर्णयकारक स्वसमय परसमयना जाणकार श्री देवेंद्रसूरिजीने वंदना करी बहुमान आप्युं. बाद श्री देवेंद्रसूरिजी विजयचंद्रनी उपेक्षा करी विचरता थका अनुक्रमे पालणपुरमां आव्या. चोराशी धनाढ्य शेठीआ तथा अनेक जन समुदाय निरंतर व्याख्यान श्रवण करवा आवता हता; शास्त्रना श्रोता पुरुषो अनेक हता. पालणपुरमां व्याख्यान श्रवण करवा आवनाराओ निरंतर एक मूडा प्रमाण अक्षत अने सोल मण सोपारी दर्शनावसरे चढावता हता, जैनशासननी बहुज उन्नति थइ रहि हती; ते अवसरे सुज्ञ धर्मी लोकोए गुरुजीने विनंति करी के हे भगवन्! आप अहींआ कोइने आचार्य पदवी आपी अमारा मनोरथ पूर्ण करो. गुरुजीए उचित जाणी विक्रम संवत (१३२३) मां पालणपुरमां वीरधवलने श्री विद्यानंद नाम दइ सूरिपद आप्युं. तेमना अनुज भीमसिंहने धर्मकीर्ति उपाध्यायनी पदवी आपी. ते अवसरे प्रल्हादनविहारना सौवर्ण कपिशीर्ष मंडपमां कुंकुमनी वृष्टि थइ, तेथी लोको बहुज आश्चर्य पाम्या. श्री विद्यानंद सूरिजीए विद्यानंद नामनुं नवीन व्याकरण बनाव्युं. यदुक्तं ॥ विद्या नंदाभिधं येन, कृतं व्याकरणं नवं ॥ भाति सर्वोत्तमं स्वल्प, सूत्रं बह्वर्थ संग्रहं ॥१॥ बाद श्री देवेंद्रसूरिजी फरी

माखवामां विहार करता हुवा श्री देवेंद्र सूरिजीए जे ग्रंथोनी रचना करी छे, तेना नाम १ श्राद्धदिनकृत्यसुत्रवृत्ति, २ नव्यकर्मग्रंथ पंचक सूत्र वृत्ति, ३ सिद्ध पचाशिका सूत्र वृत्ति, ४ धर्मरत्न वृत्ति, ५ सुदर्शन चारित्र, ६ त्रण भाष्य, ७ वृदारवृत्ति, ८ सिरि उसहवद्धमाण प्रमुख स्तवनो कोइ कहे छे के श्राद्धदिनकृत्य सूत्र तो चिरतन आचार्यनु करेख छे श्री देवेंद्र सूरिनो माखवा देशमां विक्रम संवत (१३२७) मां स्वर्गवास थयो दैवयोगथी वियापुरमां तेर दिवस पछी श्री वियानंद सूरिनो पण स्वर्गवास थयो बाद छमास पछी सगोत्रसूरिए श्री वियानंद सूरिना बंधु श्री धर्मकीर्ति उपाध्यायने सूरिपद आपी श्री धर्मघोष सूरि नाम आप्युं

४६ श्री देवेंद्र सूरिनी पाटऊपर श्री धर्मघोष सूरि थया जेमणे मंडपाचलमा शा श्री पृथ्वीधरने पचम अनुव्रत खेतां ज्ञानथी निषेध कर्यो आचार्ये ज्ञानथी जाण्युं के आ पुरुषनु व्रत भंग थइ जशे, ते कारणथी नयथी निषेध कर्यो बाद पृथ्वीधर मंडपाचल राजानो मंत्री थयो धनवृद्धिथी धनद समान थइ गयो तेणे चोरासी जीनमदिर तथा सात ज्ञानना भंडार कराव्या, तथा शत्रुंजय तीर्थ उपर एकवीश घडी प्रमाण सुवर्ण खरची रूपामय श्री रीषभदेवजीनु मदिर बधाव्युं कोइ कहे छे के छप्पन घडी प्रमाण सुवर्ण आपी इद्रमाल पेहेरी, धरती नगरमा कोइ साधर्मीने ब्रह्मचारीना वेष आपवाना अवसरमां पृथ्वीधरने महा धनाढ्य जाणी तेनी भेट करी, ते वखते पृथ्वीधरे तेज वेष ग्रहण करी तेज दिनथी अर्थात बत्रीस वर्षनी उमरमां ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर्युं तेने जाजण नामनो एकज पुत्र हतो तेणे श्री शत्रुंजय तथा उज्जयत गिरिना शिखर उपर बार योजन प्रमाण सुवर्ण रुप्पमय एक ध्वजा चढावी तेमणे सारगदेव राजा पासे कर्पुरनु मेहेसुल बध कराव्यु, तथा मडपाचलमा गुरुना प्रवेश महोत्सवमा (७२०००) रूपे आनो खर्च कर्या

श्री धर्मघोष सूरिए देवपत्तनमां शिष्योनी विनतिथी मत्रमय स्तुति बनावी बली समुद्रना बलथी, वज्रस्वामिए स्वशक्तिथी पुरातन कपर्दी यक्ष जे मिथ्यादृष्टि थइ गयो हतो तेने नवीन कपर्दी यक्षथी

दूर कर्यो हतो, ते मिथ्यादृष्टि कपर्दीने प्रतिबोधी श्री जिनबिंबोनो अधिष्ठाता कर्यो; तथा जेमनी पासे समुद्रना अधिष्ठाताए समुद्रना तरंगोथी रत्न ढोकन कर्या. एकदा प्रस्तावे कोइ दुष्ट स्त्रीए कामणयुक्त वडां बनावी साधुने वहोराव्यां, परंतु श्री धर्मघोष सूरिजीए ते वडां धरती उपर फेंकावी जमीनमां परिठावी दीधां. ते स्त्रीने मंत्रथी पकडावी ज्यारे बहु दुःखी थइ, त्यारे दयाथी छोडी दीधी. वली विद्यापुरमां पद्मांतरीउंनी स्त्रीउंए धर्मघोषजीने व्याख्यानरसना जंग वास्ते मंत्रथी कंठमां केशगुच्छक करी दीधो, ते ज्यारे सूरिजीना जाणवामां आव्युं त्यारे ते स्त्रीउंने स्तंभन करी दीधी. ज्यारे ते स्त्रीउंए आजीजी करी के हवे पछी अमे आपना गच्छने उपद्रव नहि करीए, त्यारे गुरुजीए संघना बहु आग्रहथी तेमने छोडी दीधी. वली उज्जयनममां एक योगी जैनना साधुउंने रहेवा देतो न होतो; ज्यारे श्री धर्मघोष सूरि त्यां आव्या, त्यारे ते योगीए साधुउंने कह्युं के हवे अहींआं आव्या छो तो सावचेत थइ रहेजो. साधुउंए कह्युं अमे पण जोइए छीए के तमे शुं करो छो? योगीए साधुउंने दांत फाडी बताव्या, त्यारे साधुउंए तेने कोणी बतावी. साधुउंए सर्व समाचार पोताना गुरुजीने कह्या. बाद योगीए धर्मशालामां विद्याना बलथी बहु उंदरो बनाव्या, जेथी साधुउं बहु डरवा लाग्या, पछी गुरुजीए घडाना मुख उपर वस्त्र ढांकी एवो मंत्रजप कर्यो के, जेथी ते योगी आराटि करतो आवी गुरुना पगमां पड्यो, अने पोताना अपराध माटे क्षमा मागवा लाग्यो. वली कोइ नगरमां शाकिनीउंनां जयथी मंत्रथी दरवाजा बंध करवामां आवता हता, एकदा मंत्र विना दरवाजा बंध करवामां आव्या, जेथी रात्रिए शाकिनीउंए उपद्रव कर्यो. गुरुजीए तेमने विद्याथी स्तंभित करी अने उपद्रव दूर कर्यो. एकदा रात्रिए गुरुजीने सर्पना डंसथी झेर चड्युं, गुरुजीए संघने गभरायेलो देखी कह्युं के दरवाजामां कोइ पुरुष पोताना मस्तक उपर काष्ठनो भारो लइ आवशे, तेमां विषापहार एक वेलडी आवशे, ते वेलडी घसीने डंख उपर लगावी देजो, जेथी झेर उतरशे. संघे तेज प्रमाणे कर्युं जेथी झेर उतरी गयुं, अने गुरु साजा थया. बाद ते दिवसथी गुरुए जावजीव छ विगयनो त्याग कर्यो, अने निरंतर जुवारनी रोटली

नीरस जाणी खाता रह्या, श्री धर्मघोष सूरिजीए रचेला ग्रथोना नाम १ संघाचारभाष्यवृत्ति, २ सुअधम्मेतिस्तव, ३ कायस्थिति, भ वस्थिति, ४ चोवीस तीर्थंकरना चोवीस स्तवन, ५ अस्ताशर्मेत्यादि स्तोत्र, ६ देवेंद्रैरनिशं इति श्लेष स्तोत्र, ७ यूय युवात्व मितिश्लेष स्तुतीओ, ८ जयवृषभेत्यादि स्तुति आ जय वृषभेत्यादि स्तुति कर वानो हेतु ए छे के, एक मंत्रीए आठ यमक एक काव्यरची कह्यु के आवु काव्य हाल कोइ रची शकतु नथी, गुरुए कह्यु के नास्ति नथी, मत्रीए कह्यु के आप करी बतावो, जेथी गुरुजीए जय वृषभ इत्यादि ८ स्तुति एक रात्रिमां बनावी भीत उपर लखी बतावी, जे वांची मत्री बहुज चमत्कार पाम्या गुरुजीए तेने प्रतिबोधी जैनी कर्यो श्री धर्म घोष सूरि विक्रम संवत (१३५७) मां स्वर्गवास पाम्या

४७ श्री धर्मघोषसूरिनी पाट उपर श्री सोमप्रभसूरि थया जेमणे नमीऊण इत्यादि आराधन सूत्र कर्या तेमनो संवत (१३१०) जन्म, संवत (१३२१) दीक्षा, संवत (१३३२) सूरि पद जेओने अगीआरे अंगोसूत्रार्थ कंठस्थ हतां तथा “ गुरुभिर्गीयमानायां मंत्र पुस्तकायां यछत चरित्रं मंत्रपुस्तिकाच ” एम कही ते मन्त्रपुस्तकोने ग्रहण करता हवा, कारण के बीजो कोइ योग्य न हतो श्री सोमप्रभसूरिये जलकुंकण देशमां अपकायनी विराधनाना भयथी, अने मरु देशमां शुद्ध जलनी दुर्लभ तायी साधुओनो विहार बंध कर्यो भीमपल्लीमां बे कारतक मास थया, जेथी सोमप्रभजीये प्रथम कारतकनी एकादशीनारोज विहार कर्यो, का रण के तेममा जाणवामां आव्यु के भीमपल्लीनो भंग थइ जशे, जेथी भंग थया पछी जे रह्या ते दु:खी थया तेमना ग्रथोनां नाम १ जीतकल्प सूत्र, २ यत्राखिल इत्यादि स्तुतिओ, ३ जीतेनयेन इत्यादि स्तुतिओ, ४ श्री मद्धर्म्मे इत्यादि तेमना मोटा शिष्य विमलप्रभ सूरि, श्री परमानंद सूरि, श्री पद्मतिलकसूरि तथा श्री सोमविमलसूरि हता जे दिवसे श्री धर्म घोषसूरि स्वर्गवास पाम्या, तेज दिवसे संवत (१३५७) मा श्री सोम प्रभसूरिजीये श्री विमलप्रभसूरिने सूरिपद आप्यु, कारण के तेओये पो तानुं आयु अल्प छे एम जाण्युं श्री सोमप्रभसूरि (१३७३) मा देवलोक पाम्या

४७ श्री सोम प्रभसूरिनी पाट उपर श्री सोमतिलक सूरि थया. तेमनो संवत (१३५५) माघ मासमां जन्म, संवत (१३६९) मां दीक्षा, संवत (१३७३) मां सूरि पद अने संवत (१४२४) मां स्वर्गवास थयो. तेमना ग्रंथना नाम. १ बृहन् नव्य क्षेत्र समास सूत्र, २ सत्तरिसयठाण, ३ यत्राखिल जय वृषभ स्वस्ताशर्म प्रमुखनी वृत्ति, ४ श्री तीर्थराज० चतुर्थस्तुति तद्वृत्ति, ५ शुभभावानत० श्रीमद्वीरस्तुति इत्यादि कमलबंधस्तव, ६ शिवशिरसि श्री नाभि संभव० श्री शैवेय० इत्यादिस्तवन. श्रीसोमतिलक सूरिये अनुक्रमे १ श्री पद्मतिलक सूरि, २ श्री चंद्रशेखर सूरि, ३ श्रीजयानंद सूरि, श्री देवसुंदरसूरिने सूरिपद आप्यां. तेमां श्री पद्मतिलकसूरि, श्री सोमतिलकसूरिथी पर्यायमां वडा हता, ते एक वर्ष जीवता रह्या, तेउ महा वैराग्यवान् हता. श्रीचंद्रशेखरसूरि संवत (१३७३) मां जन्म(१३८५) मां दीक्षा,(१३९३) मां सूरिपद पाम्या. तेमना ग्रंथना नाम. १ उषितभोजन कथा, २ यवराज रुषि कथा, श्रीमत्स्तंभकहार बंधादि स्तवन. जेमना मंत्रोथी बीजा मंत्रवादीउ हारी जता. उपद्रव करनारा ग्रह, हरिका, दुर्द्धर मृगराज, श्वान, शुरिति दूर थइ जता हता. श्री जयानंद सूरि संवत (१३८० मां जन्म, (१३९२) आषाढ सुद ७ शुक्रवार दिवसे धारा नगरीमां व्रतग्रहण, (१४२०) मां सूरिपद पाम्या, अने (१४४१) मां स्वर्गवास पाम्या. तेमना ग्रंथ. १ श्री स्थूलभद्र चरित्र, २ देवाः प्रभोयं प्रमुखस्तवन.

४९ श्री सोमतिलक सूरिनी पाट उपर श्री देवसुंदरसूरि थया. तेमनो संवत (१३९६) मां जन्म, (१४०४) मां दीक्षा, (१४२०) मां अणहिलपुर पाटणमां सुरिपद; देव सुंदरसूरि महा योगाभ्यासी, मंत्र तंत्रनी रीद्धिना मंदिर, स्थावर जंगम विषापहारी, जल, अनल, व्याल, हरिना भयना नाश करनारा, अतीत अनागत निमित्तना वेत्ता, राजमंत्री प्रमुखना पुजनीक हता. श्री देवसुंदर सूरिना पांच शिष्य थया, १ श्री ज्ञानसागरसूरि, २ श्री कुलमंडनसूरि, ३ श्री गुणरत्न सूरि, ४ श्री सोमसुंदरसूरि, ५ श्री साधुरत्नसूरि. श्रीज्ञानसागर सूरिनो संवत (१४०५) मां जन्म, (१४१७) मां दीक्षा, (१४४१) मां सूरिपद, (१४६०) मां स्वर्गवास थयो. तेमना रचेला ग्रंथ. श्री आवश्यक, उघनिर्युक्ति प्रमुख अ-

नेक ग्रथोनी अवचुरी, श्रीमुनिसुव्रत स्वामि स्तवन, घनौघनखड पार्श्वना थादि स्तवन श्रीकुलमडन सूरिनो संवत (१४०९) मां जन्म, (१४१७) मा दीक्षा, (१४४२) मा सूरिपद, (१४५५) मा स्वर्गवास थयो तेमना रचेला ग्रथ सिद्धांतालापकोद्धार, विश्व श्रीधर इत्यादि, अष्टादशारचक्र स्तव, गरीउं तथा हार स्तवादय श्री गुणरत्नसूरिना रचेला ग्रथ, १ क्रिया रत्नसमुच्चय, षटदर्शन समुच्चय बृहद्वृत्ति, श्री साधुरत्नसूरिनो रचेलो ग्रथ १ यतिजीकल्पवृत्ति छे

५० श्री देव सुदर सूरिजी पाट उपर श्री सोमसुदर सूरि थया, ते मनो संवत (१४३०) मा जन्म, (१४३७) मां दीक्षा, (१४५०) मा वाचकपद, (१४५७) मा सूरिपद, अने (१४९९) मा स्वर्गवास थयो तेमनो (१०००) साधुनो परिवार, महाक्रियापात्र हतो ते देखीने केटलाएक पाखडी लोकोए तेमनो वध करवा वास्ते एक हजार नाण सने लालच आपी मोकल्या, जे मकानमां रात्रिना गुरुए सथारो कर्यो हतो, ते मकानमा वध करनाराउं आवी संताइ रह्या, तेउं गुरुजीने मा रवानी तैयारी करता हता तेवामां चन्द्रमाना प्रकाशथी गुरुजीने पासु फेरवता रजोहरणथी प्रथम पूजता दीठा, ते देखी तेउंना मनमां वि चार आव्यो के – निद्रामां पण आ पुरुष क्षुद्र प्राणियोनी रक्षा करे छे, अने आपणे तो तेमनो वध करवा आव्या छीए, माटे आपणामां अने तेनामां केटलो अतर छे ? तेथी मनमां पापथी डरी गुरुना चरण कमलमा पडी अपराध खमावता हवा तेमना रचेला ग्रथ योगशास्त्र, उपदेशमाला, षडावश्यक, नवतत्त्वादि बालावबोध, भाष्यावचूर्णि, कल्या णिकस्तोत्र प्रमुख तेमना शिष्य श्रीमुनिसुदरसूरि, कृष्ण सरस्वती बिरु द धारक, श्रीजय सुदरसूरि, तथा महाविद्या विडबन टिपनक कारक श्री भुवनसुदरसूरि, जेमने एकादश अग सूत्रार्थ कठस्थ हतां, तथा चोथा जीनसुदरसूरि, आ चार तेमना प्रतापी शिष्य थया, जेमणे श्रीराणकपुरमां श्रीधनाशाह चोमुख विहारमा श्रीरीषभादि अनेक शत बिबोनी प्रतिष्ठा करी

५१ श्रीसो मसुदरसूरिनी पाट उपर श्रीमुनिसुदरसूरि थया तेमणे अनेक प्रासाद, पद्मचक्र, षटकारक, क्रियागुप्तक, अर्द्धभ्रम, सर्वतोभद्र,

मुरज, सिंहासन, अशोक, भेरी, समवसरण, सरोवर, अष्टमहाप्रातिहार्यादि नवीन त्रिंशति बंध, तर्क प्रयोगादि अनेक चित्राक्षर, द्व्यक्षर, पंचवर्ग परिहारादि अनेक स्तवमय त्रिदशतरंगिणी नामनी एकसो आठ हाथ लांबी पत्रिका लखी गुरुजी उपर मोकली, तथा चातुर्वेद्य विशारद्यनिधि, उपदेशरत्नाकर प्रमुख अनेक ग्रंथोनी रचना करी. वली जेमनुं श्री स्तंभतीर्थमां दफूरखाने "वादीगोकुलसंड" एवुं नाम प्रसिद्ध कर्युं. जेमने दक्षिणमां "बालसरस्वती" एवुं नाम प्राप्त थयुं. तेउ आठ वर्ष गणनायक, अने त्रण वर्ष युगप्रधान पदमां रह्या. तेउ एकसो आठ वर्तुलिकानादोपलक्षक, बाल्यावस्थामां पण एक सहस्त्र श्लोक नवीन दररोज कंठे करी लेता हता. वली तेमणे "संतिकरं" नामनुं समहिम्न स्तवन करी योगिनीकृत मरकीनो उपद्रव दूर कर्यो. चोवीश वार विधिथी सूरि मंत्रनुं आराधन कर्युं, अने चौद वार, धारा नगरी प्रमुख नगरना स्वामि, पांच राजाउए पोतपोताना देशमां जेमना उपदेशथी अमारिका ढंढेरो पिटाव्यो, तथा शिरोहीना सहस्त्रमल्ल राजाने पण अप्रमार प्रवृत्त करी, तेमनो तीडनो उपद्रव टाल्यो. तेमनो विक्रम संवत (१४३६) मां जन्म, (१४४३) मां दीक्षा, (१४६६) मां वाचक पद, (१४७८) सूरिपद; जे वखते वृद्धनगरीना शाह देवराजे (३२०००) रूपीआ महोत्सवमां खरच्या, तथा (१५०३) कारतक सुद पडवाने दिवसे तेमनो स्वर्गवास थयो.

५२ श्री मुनिसुंदर सूरिनी पाट उपर श्री रत्नशेखर सूरि थया. तेमनो (१४५७) मां जन्म, (१४६३) मां दीक्षा, (१४८३) मां पंडित पद, (१४९३) मां वाचकपद, (१५०२) मां सूरिपद, (१५१७) पोस वदीछठना रोज स्वर्गवास थयो. जेमने स्तंभ तीर्थमां बांवी नामना भट्टे बाल सरस्वती नाम आप्युं. तेमना रचेला ग्रंथ. श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति, श्राद्धविधि सूत्र वृत्ति, लघुक्षेत्र समास, आचारप्रदीप प्रमुख अनेक छे. जेमना समयमां लुंका नामना लिखारी (लहीआ) ए संवत (१५०८) मां जीन प्रतिमा उत्थापक लुंका नामनो मत चलाव्यो. ते मतमां (१५३३) मां भाणा नामनो ते मतना वेषनो धारण करनार प्रथम साधु थयो. ते मतनी उत्पत्ति आ प्रमाणे थइ.

गुजरात देशमा अमदावादमा दशा श्रीमालि ज्ञातिनो लुका नामनो लिखारी रहेतो हतो, ते ज्ञानसागर यतिना उपाश्रयमा पुस्तक लखी, ते आमदानीथी पोतानु गुजरान चलावतो हतो एकदा प्रस्तावे एक ग्रंथ लखतां, ते ग्रंथना सात पाना लख्या विना गोडवी दीधां ज्यारे पुस्तक वांचवामां आव्यु, त्यारे तेने पुछ्युं के, सात पाना लख्या विना केम रहेवा दीधां ? लुकाए ते बाबत सिद्धो उत्तर नहि आपतां, पुछना रने आडा अवला कारण बतावी, लडवा मांड्यु लोकोए ते वखते तेनी लुच्चाइ देखी, तेने मार मारी उपाश्रयमांथी हांकी काढ्यो, अने नगरमां जाहेर कर्युं के तेणे उपर मुजब काम कर्युं छे, तेथी तेनी पासे कोइए ग्रंथ लखाववो नहि बाद लुको लाचार थवाथी द्वेष राखी अमदावा दथी छेंतालीस कोस दूर लींबडी नगरमां आव्यो लींबडीमां लुकानी ज्ञातिनो लखमशी नामनो एक वाणीओ राज्यमा कारभारी हतो, तेनी पासे ते बहुज रोयो अने कल्पांत कर्यो लखमशीए पुछ्युं तमने शु दु:ख छे ? त्यारे तेणें कह्युं के, अमदावादमा हुं भगवानना सत्य मत कथन करवा लाग्यो, जेथी तपगछना श्रावकोए मने बहुज मार्यो हवे हु आ पनी पासे आव्यो छु, जो आप मारा मददगार थाओ तो, हु सत्य मत प्र गट करुं लखीमशीए कह्युं, लींबडीना राज्यमां तमे वेसक तमारो स त्य मत प्रगट करी उपदेश करो हु तमोने मदद आपीश, खान पान संबधी फिकर करवी नहि, तमारी पासे शास्त्र पण श्रवण करीश ते उ परथी लुंको श्री महावीर भगवतना साधुओनी तथा जीनप्रतिमानी उ त्थापना करवा लाग्यो शुद्ध साधुओने कहेवा लाग्यो के, तेओ भ्रष्टाचारी छे, निर्दयी छे, मीथ्या ज्ञाननो उपदेश करे छे, इत्यादि मनमानी निंदा करवी शरु करी शास्त्रोमां पण जे जे शास्त्रोमां जीनप्रतिमानी जीकर न होती ते ते शास्त्रोनेज साचा मानवा लाग्यो, अने जेमां जेमा थोडो थो डो जीनप्रतिमानो अधिकार हतो, तेना पाठोना अर्थ कुयुक्तियोथी कांइना काइ समजाववा लाग्यो मात्र एकत्रीश शास्त्र साचां छे, एम प्ररुपवा लाग्यो, तेमा पण आवश्यक सूत्रने तो विलकुल बगाडी, काइनु कांइ बनावी, लोकोने स्वकपोलकल्पित कहेवा लाग्यो, कारण के आ वश्यकमा बहु स्थले जीनप्रतिमानो अधिकार छे एक दिवस लुकाने

कोइए कह्युं के जैन दीक्षा लीधा विना शास्त्र जणवानो व्यवहार सूत्रमां निषेध करेल छे, तो तमे गृहस्थ थइने शास्त्र केम वांचो छो ? लुंकाए कह्युं के, हुं व्यवहार सूत्रनेज सत्य मानतो नथी. आ प्रमाणे प्ररुपणा पचीस वर्ष करी, परंतु लुंकाना उपदेशथी कोइ पण साधु थयो नहि. ज्यारे संवत (१५३३) नी शाल आवी, त्यारे पूर्वोक्त जाणा वाणीआए लुंकाना उपदेशथी वेष पेहेर्यो. तेनुं नाम जाणारिख पाड्युं. तेनो शिष्य संवत (१५६८) मां रूपजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१५७८) मां जीवाजीरिख थयो, तेनो शिष्य संवत (१५८७) मां वृद्धवरसिंहजी थयो, तेतो शिष्य (१६०६) मां वरसिंहजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१६४९) मां जसवंतजी थयो. आ लुंपक मतनी त्रण शाखा थइ. १ गुजराती, २ नागोरी, ३ उतराधी. इति लुंपकमतोत्पत्ति.

५३ श्री रत्नशेखर सूरिनी पाट उपर श्री लक्ष्मीसागर सूरि थया. तेमनो (१४६४) मां जन्म, (१४९०) मां दीक्षा, (१५०१) वाचक पद, (१५०८) सूरिपद. (५४) श्री लक्ष्मीसागर सूरिनी पाट उपर श्री सुमतिसाधु सूरि थया. (५५) श्री सुमतिसाधु सूरिनी पाट उपर श्री हेमविमल सूरि थया. तेओ शिथिल साधुओनी वचमां रह्या, तो पण पोते साधुनो आचार उल्लंघन कर्यो नहि, तेथी केटलाएक दिवस पछी बहु साधुओए शिथिलपणुं तजी दीधुं. वली रुषि हरगिरि, रुषि श्रीपति, रुषि गणपति प्रमुख बहु जनोए लुंपक मतनो त्याग करी श्री हेमविमल सूरि पासे दीक्षा लीधी. ते अवसरे संवत (१५६२) मां कडवा नामना एक वाणीआए कडवो मत चलाव्यो, अने त्रण थुइ मानी, तेमज आ कालमां कोइ साधु देखाता नथी एवो पंथ चलाव्यो. वली संवत (१५७०) मां लुंकामतमांथी निकली बीजा नामना वेषधारीए बीजो मत चलाव्यो, जेने लोको विजयगच्छ कहे छे. संवत (१५७२) मां नागपुरीआ तपगच्छमांथी निकली उपाध्याय पार्श्वचंद्रे पोताना नामथी पासचंदीओ मत चलाव्यो.

५६ श्रीहेमविमल सूरिनी पाट उपर श्रीसुविहितमुनि चुडामणि, कुमततम नाश करवाने सूर्य समान श्री आनंदविमल सूरि थया. तेमनो संवत (१५४७) मां जन्म (१५५२) मां दीक्षा, (१५७०) मां

सूरिपद आनदविमल सूरिना साधुर्ज शिथिलाचारी पण हता, तोपण तेमना वैराग्यरंगनो भंग थयो नहोतो त्यारे तेर्जये जोयु के जीनप्रतिमाना निषेध करनारार्ज बहुज वधी गया, अने शुद्ध साधुर्ज अल्पमात्र रह्या, तथा उत्सूत्र प्ररुपणरूप जलप्रवाहमा भव्य जनो पण तणावा ला गया, त्यारे मनमां दयादृष्टि लावी, पोताना गुरुनी आज्ञाथी, केटलाएक संविज्ञ साधुर्जने साथे लइ संवत (१५८२) मा शिथिलाचारनो परिहार करी क्रिया उद्धार कर्यो देशमा विहार करी अनेक भव्य जनोनो उद्धार कर्यो अनेक शेठोना पुत्रोने धन कुटुंबना मोहनो त्याग करावी दीक्षा आपी वली सोराष्ट्रना राजा पासे एवो करार लखाव्यो के जे जीते ते अमारा देशमां रहे, अने हारे ते अमारा देशमाथी निकली जाय वली तूणसिंह नामना श्रावक के जेमने बादशाहे पालखी आपी हती, अने जेमने बादशाहे मलिक श्री नगदल एवु बिरुद आप्यु हतु, ते तूणसिंह श्रावके विनति करी के साधुर्जने सोरठ देशमा विहार करावो, तेथी गुरुजीये गणि जगर्षिने साधुर्जनी साथे सोरठ देशमा विहार करवा मोकल्या वली जेसलमेर प्रमुख मारवाड देशमा जलनी दुर्लभताथी पूर्वे श्री सोमप्रभ सूरिये साधुर्जनो विहार बंध कर्यो हतो, ते मारवाड देश कुमतिव्याप्त न थइ जाय, ते सारु ते देशना जीवो उपर अनुकंपा लावी तथा लाभ जाणी, साधुर्जने आज्ञा करी के तमे मारवाडमां विहार करी कुमतिमतनु खंडन करो ते अवसरे लघुवयमा शियलथी श्री स्थूलिभद्र समान वैराग्यनिधि, निस्पृहावधि, जावजीव जघन्यथी जघन्य छठ तपना करनारा अने पारणाने दिन आचाम्लना करनारा एवा अभिग्रहधारी महोपाध्याय श्री विद्यासागरगणिये मारवाड देशमा विहार कर्यो तेमणे जेसलमेरादिमां खरतरोने, मेवाड देशमा बीजामतियोने, अने मोर्वी आदिमा लुंका मतियोने प्रतिबोधी श्रावाक बनाव्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे वलीपार्श्वचंद्र कदाग्रही हतो वीरमगाममा ते पार्श्वचंद्र साथे वाद करी तेने निरुत्तर कर्यो, अने बहु जनोने जैनधर्म अंगीकार कराव्यो तेज प्रमाणे मालव प्रमुख देशोमां विहार करी धर्मनी प्रवर्त्ती करी श्री विद्यासागर उपाध्यायजीये तप गछनी घणी वृद्धि करी, अने क्रिया उद्धार कर्यापछी श्री आनंदविमल सूरिजी चौद वरसुधी जघन्यथी पण नियत

तप वर्जी, छठथी कमतप करता न होता. वली तेमणे चतुर्थ, षष्ट तपथी वीश स्थानकनी आराधना करी; अने संवत (१५९६) मां नव दिननुं अनशन करी स्वर्गे गया.

५७ श्री आनंदविमल सूरिनी पाट उपर श्री विजयदान सूरि थया. जेमणे स्तंभतीर्थ, अमदावाद, महीशानक, गंधार वंदर प्रमुखमां महा महोत्सव पूर्वक अनेक जीनविंबोनी प्रतिष्ठा करी. जेमना उपदेशथी वादशाह महमदना मान्य मंत्री गलराजा, अपर नाम मलिक श्रीनगदले श्री शत्रुंजय तीर्थनो मोटो संघ काढ्यो. वली जेमना उपदेशथी गांधार नगरना श्रावक रामजीये तथा अमदावादना शा. कुंवरजी प्रमुखे श्री शत्रुंजय उपर चौमुख, अष्टापदादि जीनमंदिरो वंधाव्या. गिरनार उपर जीर्ण प्रासादोनो उद्धार कराव्यो. जेमनो सूर्यनी जेम उदय थवाथी वादी रुपी तारार्ड अदृश्य थवा लाग्या. श्रीविजयदान सूरि सर्व सिद्धांतना पारगामी, अखंडित प्रतापवाला तथा अप्रमत्त अने रुपे श्री गौतममुनिवत् हता, तेर्ड गुजरात, मालवा, कछ, मारवाड, तथा कुंकणादि देशोमां अप्रतिबद्ध विहार करता हवा. महातपस्वी, जावजीव मात्र घी शिवाय सर्व विगयना त्यागी हता. जेमणे एकादशांग सूत्र अनेकवार शुद्ध कर्यां, बहु जनोने धर्म प्राप्त कराव्यो. तेमनो संवत (१५५३) मां जन्म, संवत (१५६२) मां दीक्षा, (१५८७) सूरि पद, अने (१५६२) मां वटपल्लीमां अनशन करी स्वर्गे गया.

५८ श्री विजयदान सूरिनी पाट उपर श्री हीरविजय सूरि थया. जेमनो संवत (१५८३) मां मागसर सुद ९ ना रोज प्रह्लादनपुर निवासी उका जातीना शा. कुरानी भार्या नाथीना उदरथी जन्म थयो. संवत (१५९६) कारतक वदी २ ना रोज पाटणमां तेमने दीक्षा प्राप्त थइ, तथा (१६०७) मां नारदपुरीमां श्री रीषभदेवजीना मंदिरमां पंडित पद (१६०८) माहा सुद ५ ना रोज नारदपुरीमां वरकाणक पार्श्वनाथ सनाथे नेमजीन प्रासादे वाचक पद, (१६१०) शिरोही नगरमां सूरिपद प्राप्त थयुं. जेमना सौभाग्य, वैराग्य, निःस्पृहतादि गुणोने वचन गोचर करवाने बृहस्पतिमां पण चातुर्यता न होती. जेमना स्तंभतीर्थना विहारमां श्रद्धावानोये एकक्रोड रुपीआ प्रभावनादि धर्मकृत्योमां खरच्या;

वली जेमना चरण विन्यासना प्रतिपदमां बे मोहोर तथा एक रुपीउं मो चन कर्यो जेमनी सेवामां श्रद्धालु श्रावकोये मोतीना साथीआ कर्या वली श्रीगुरुजीये शिरोही नगरमां श्रीकुंथुनाथ स्वामिनी प्रतिष्ठा करी, तथा नारदपुरमां अनेक सहस्त्रबिंबोनी प्रतिष्ठा करी श्री गुरुराजना विहारमा युगप्रधान अतिशय देखवामां आवता हता वली अमदावादमां लुका मतना पुज्य रुषि मेघजीये, पोतानो लुकामत दुर्गतिनो हेतु जाणी पोतानी आचार्यपदवी, रजनी जेम छोडी दइ, पचीस यतियोनी साथे सकल रा जाधिराज बादशाह श्री अकबरशाहनी आज्ञा पुर्वक बादशाही वाजींत्र बजावता थका महामहोत्सव पूर्वक श्रीसूरिजीनी पासे दीक्षा लीधी, आवी विना कोइ आचार्यना समयमां बनी नहोती वली श्री गुरुजीना उपदे शथी अकबर बादशाहे पोताना सर्व राज्यमां एक वर्षमां छ महिनासुधी जीवहिंसा बंध करी, तथा जजीआवेरो बंध कर्यो, तेमनु विस्तारथी च रित्र जाणवुं होय तो श्री हीरसौभाग्य काव्य अवलोकन करवु अहींआ मात्र संक्षेपथी विना लखीये छीये

एकदा प्रस्तावे प्रधान पुरुषोना मुखथी अकबरशाहे श्री हीरविजय सूरिना निरुपम शम, दम, संवेग, वैराग्यादि गुणो श्रवण कर्या जेथी सूरिजीने पोतानु नामांकित फुरमान मोकली बहुमान पुरस्सर गंधार बंदरथी आग्रानी नजीकना फत्तेपुर नागरमां दर्शन करवाने, बादशाहे बोलाव्या गुरुजी अनेक भव्य जीवोने उपदेश आपता, अनुक्रमे विहार करता थका संवत (१६३९) ज्येष्ट वद १३ दिने फत्तेपुरमां आव्या ते स्थले बादशाहना शिरोमणि प्रधान अबुलफजल द्वारा श्रीविमलहर्ष गणि प्रमुख अनेक मुनियोना परिवार सहित, बादशाह साथे मेलाप कर्यो ते अवसरे बादशाहे बहु आदर सत्कार करी सूरिजीने सभामां बेसाड्या बादशाहे सूरिजीने परमेश्वरनु स्वरूप, गुरुनु स्वरुप, तथा ध र्मनु स्वरूप शु छे ? तथा परमेश्वर केवी रीते प्राप्त थाय ? इत्यादि धर्म विचार पुछ्या सूरिजीए मधुर वाणीथी बादशाहने कह्यु के जेनामां अ ढार दूषण न होय ते परमेश्वर छे, पंच महाव्रतादि धारण करनारा गुरु छे, अने आत्मानो शुद्ध स्वभाव, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररुप छे, ते धर्म छे, इत्यादि विस्तार पूर्वक बादशाहे गुरुजी पासे धर्मोपदेश श्रवण कर्यो

जेथी आग्राथी अजमेर सुधी प्रतिकोश कुवा मिनारा सहित कराव्या. जीवहिंसा बंध करी अने दयावान् थया. बाद अकबर बादशाह एकदा अति तुष्टमान थइ जवाथी कहेवा लाग्या के हे प्रभु ! आप पुत्र, कलत्र, धन, स्वजन, देहादि, ममत्व रहित छो, तेथी आप सोनुं, चांदी तो लेता नथी, परंतु अमारा मकानमां जैनमतना पुरातनी पुस्तको बहु छे, ते आप लेवानो अनुग्रह करो. बादशाहना बहु आग्रहथी श्री गुरुजीए सर्व पुस्तक लइ आग्रा नगरना ज्ञानभंडारमां स्थापन कर्यां. बाद गुरुजी एक प्रहरसुधी बादशाहनी साथे धर्मगोष्ठी करी बडा आडंबरथी उपाश्रयमां आव्या. ते वखते लोकोमां जैनमतनी बहुज उन्नति थइ. ते वरसे आग्रा नगरमां चोमासुं करी सोरीपुर नगरे श्री नेमिनाथनी यात्रा करवा गया. ते स्थले श्री रीषभदेव अने नेमिनाथजीनी बहु पुरातनी प्रतिमाउंनी तथा तत्कालना बनावेला श्री नेमिनाथना चरणोनी प्रतिष्टा करी. बाद आग्रावां शा० गानसिंह कल्याणमल्लना बनावेला श्री चिंतामणि पार्श्वनाथादि बिंबोनी प्रतिष्ठा करी; ते श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ आजसुधी आग्रामां प्रसिद्ध छे. पछी श्री गुरुजी फरी फत्तेपुर नगरमां गया, अने अकबर बादशाहने मळ्या. ते प्रसंगे एक प्रहर धर्मगोष्ठी करी, तथा धर्मोपदेश कर्यो. बादशाह कहेवा लाग्या के, में आपने दर्शनोत्कंठित थइ दूर देशथी बोलाव्या, अने विनंति करी, परंतु आप अमारी पासेथी कांइ पण लेता नथी, तेथी फरीथी विनंति करीए छीए; आपने जे रुचे ते अमारी पासेथी मांगी लेवुं जोइए, जेथी अमारो मनोरथ सफल थाय. ते सांभळी गुरुजीए सम्यक् विचार करी कह्युं के, आपना सर्व राज्यमां पर्युषणना आठ दिवसोमां कोइ पण जानवरनो वध न थाय, तथा बंधीवानो मुक्त थाय, आ अमारी मांगणी छे. बादशाहे गुरुने निर्लोभी शांत, दांत जाणी कह्युं के आठ दिवस तमारी तरफथी अने चार दिवस मारी तरफथी सर्व मळी बार दिवस सुधी अर्थात् भादरवा वद १० थी ते ते भादरवासुद ६ सुधी कोइ पण जानवरने मारा राज्यमां मारवामां आवशे नहि. पछी बादशाहे सोनाना अक्षरोथी लखावी छ परवाना श्री गुरुजीने आप्या. ते छ फुरमान (परवाना) आ प्रमाणे. १ श्री गुजरात देशनो, २ मालव देशनो, ३ अजमेर देशनो, ४ दिल्ली फत्तेपुर-

ना देशनो, ५ लाहोर, मुलतान मंडलनो, ६ श्री गुरुजीने पासे रालवा नो पूर्वोक्त पांचे देशना साधारण फुरमान, ते ते देशमां मोकली अमारि पडह् वगडाव्यो, जेथी बादशाहना हुकमथी, नहोता जाणत एवा सर्व आर्य, अनार्य कुलमंडपमां दयारुप वेल विस्तारवान् थइ गइ बधीवान जनोने पण बादशाहे गुरुपासेथी उठी तत्काल मुक्त कर्या वली एक कोशना तलाव उपर पोते जइ, अनेक देशवालाउंए, अनेक जाति ना जानवरो बादशाहने नेट मोकल्या हतां, ते सर्वने पोताना हाथथी ठोडी दीधां बादशाहनी साथे गुरुजीने अनेकवार मेलाप थयो, अने अनेक जीनमंदिर तथा उपाश्रयोनो उपद्रव बादशाहे दूर कर्यो ज्यारे श्री हीरविजय सूरि बीजे देश विहार करवा लाग्या, त्यारे बादशाहे ते मने जे फुरमान लखी आप्यो तेनी नकल आ स्थले लखीए ठीए

जलालुदीन बादशाह
अकब्बर बादशाह
गाजीनुं फुरमान

अकब्बर मोहरनी वंशावली
जलालुदीन अकब्बर बादशाह
हुमायुन बादशाहना पुत्र
बाबर बादशाहना पौत्र
उमर शेख मीरजाना पुत्र
सुलतान अवुस इदना पुत्र
सुलतान महम्मद शाहना पुत्र
मीरशाहना पुत्र
अमीर तैमुर साहि किराननापुत्र

देश मालवा, अकब्बरा बाद, लाहोर, मुलतान, अमदा बाद, अजमेर, मीरत, गुजरात बगाला, तथा हाल जे जे मारा ताबामां मूलक ठे ते सर्वना सुबा, मुसदी, करोरी तथा जागीर दार सर्वेने मालम थाय के, अमारो संपूर्ण इरादो एवो ठे के सर्व रैयत ना मनने संतोष पमाडवो, कारण के रैयतना मनने सतोप ते परमेश्वरनी एक मोटी मेहेरबानी ठे वली विशेष रीते वृद्धावस्थामा मारो एवो इरादो ठे के, मारु सारुं इच्छनारी सर्व रैयत सुखी रहे, ते कारणथी ह रेक धर्मना लोकोमांथी जे सारा विचारवाला, परमेश्वरनी भक्ति करवा मा पोतानी उमर पुरी करनारा ठे, तेउने दूर दूर देशोथी में मारी पासे बोलाव्या, अने तेउनी परिक्षा करी, तेमने मारी सोबतमां राखु हुं,

अने तेमनी वातो सांजली हुं बहु खुशी थाउं बुं. ते प्रमाणे करता थकां मारा सांजलवामां आव्युं के श्रीहीरविजय सूरि, जैनश्वेतांबर मतना आचार्य गुजरातना बंदरोमां परमेश्वरनी जक्ति करे छे; में तेमने मारी पासे बोलाव्या, तेमनी मुलाकात करी हुं बहु खुशी थयो बुं. केटलाएक दिवस पछी ज्यारे तेउए पोताने वतन जवानी रजा मांगी, ते प्रसंगे तेउए अरज करी के, गरीब परवरनी मरजीथी आ प्रमाणे हुकम थवो जोइये;

सिद्धाचलजी, गीरनाजी, तारंगाजी, आबुजीनो पहाड जे गुजरातमां छे, केशरीआनाथजी, राजगृहना पांच पहाड, तथा समेतशिखर उर्फे पार्श्वनाथनो पहाड जे बंगालामां छे, ते पहाडो उपर तथा नीचें, सर्वे, मंदीरोनी कोठीउमां तथा सर्वे जक्ति करवानी जगाउमां, तथा जे जे तीर्थनी जगाउं, जैनश्वेतांवर धर्मनी मारा ताबाना मुलकोमां होय, ते पहाडो, मंदीरो तथा जगानी आसपास कोइ पण आदमीए कोइ पण जनावर मारवुं नहि. आ प्रमाणे तेमणे अरज करी. ते आचार्य बहु दूरथी अमारी पासे आव्या छे, अने तेमनी अरज वाजबी अर्थात् सत्य छे. यद्यपि आ अरज मुसलमानी मतथी विरुद्ध छे, तो पण परमेश्वरने पिछाननारा आदमीउनो आ दस्तुर छे के– कोइ कोइना धर्ममां दखल न करे, अने तेमनो रिवाज वहाल राखे. ते कारणथी आ अरज मारी समजमां साची लागे छे, के सर्वे पहाड तथा पूजानी जगा बहु वखतथी जैनश्वेतांबरी धर्मवालानी छे, ते कारणथी तेमनी अरज कबुल करवामां आवी छे, के सिद्धाचलनो पहाड, गीरनारनो पहाड, तारंगाजीनो पहाड, केशरीआजीनो पहाड, आबुनो पहाड, राजगृहना पांच पहाड, तथा समेतशिखर उर्फे पार्श्वनाथनो पहाड जे बंगालाना मुलकमां छे, ते सर्वे पुजाउनी जगाउ, तथा पहाड नीचे तीर्थनी जगाउ जे मारा राज्यमां छे, तथा गमे ते ठेकाणे जैनश्वेतांवरी धर्मनी जगा होय ते हीरविजय जैन श्वेतांवरी आचार्यने आपवामां आवी छे; अने तेमणे सारी रीते परमेश्वरनी जक्ति करवी जोइए.

वली एक वात आ पण याद राखवी जोइए के, आ जैनश्वेतांवरी धर्मना पहाडो, पूजानी जगा तथा तीर्थनी जगा, जे में श्री हीरविजयजी सूरिने आपेल छे, ते सर्वे जगाउ हकीकतमां तो जैनश्वेतांवर धर्म-

पाक्षाओनीज छे, तेथी ज्या सुधी सूर्यथी दिन रोशन रहे, अने ज्यांसुधी चन्द्रमाथी रात रोशन रहे, त्या सुधी आ फुरमाननो हुकम जैनश्वेताब री धर्मेना खोकोमा सूर्य तथा चन्द्रमानी जेम प्रकाशित रहे, अने कोइ आदमी तेमने हरकत न करे वली कोइ आदमीए ते पहाडो उपर, ते नीनीचे तथा तेनी आसपास पुजानी जगाओमां तथा तीर्थनी जगाओमां जानवर मारवुं नहि, तथा आ हुकम मुजव अमल करवो आ हुकम थी फरवुं नहि, तथा नवीन सनद मांगवी नहि लखी तारीख ७ मी माह उरदी वहेस मुतावेक माह रवीयुल अवल सन् ३७ जुलसी आ अकवर बादशाहना फुरमाननी नकल छे

वली थानसिंहनी करावेली तथा वीजा शाह दुजणमल्लनी करावेली श्री जीनप्रतिमाओनी प्रतिष्ठा, लाखो रुपीआ महोत्सवमा वपरावी, करी प्रथम चातुर्मास, आग्रामा, वीजो फत्तेपुरमां, त्रीजो जिरामनगरमां अने चोथो फरी आग्रामां, ए रीते कर्यां बाद बादशाहनी गोष्ठी वास्ते श्री शातिचन्द्र उपाध्यायने राखीने, श्री गुरुजी पोते मेहेडता तथा नाग पुरमा चातुर्मासि करी शिरोही नगरमा गया, त्या नवा चतुर्मुख प्रासा दमां श्री आदिनाथना बिंबनी तथा श्री अजीतनाथ प्रासादमां श्री अजी तनाथजीना बिंबनी प्रतिष्ठा करी अनुक्रमे अर्बुदाचल यात्रा करवा गया अहींआं श्री शातिचन्द्र उपाध्याये नवीन कृपारस कोश नामनो ग्रंथ रची अकव्वर बादशाहने श्रवण कराव्यो, ते श्रवण करवाथी बादशाहने दया नी बहुज वृद्धि थइ तेथी आ प्रमाणे थयु बादशाहना जन्मना दिवसथी एक मास, पर्युषणना वार दिवस, सर्व रविवार, सर्व संक्रातिना दिवसो, नवरोजनो मास, सर्व इदना दिवसो, सर्व मिहर वासरा, सर्व सोफीअ नादिन, इत्यादि सर्व मली एक वर्षमा छ महीना सुधी जीवहिंसा बंध करावी तेना फुरमान लखाव्या, जे फुरमानो आजसुधी अमारा लोको नी पासे छे श्री हीरवीजय सूरिए जैनमतनी वृद्धि तथा उन्नति बहुज करी, तेमां कांइ पण शक नथी मुसलमानो पण तेमनाथी दयावान् थया तेमणे स्तंभतीर्थ संवत (१६४६) मां स्तंभ तीर्थवासी शा० तेज पालना वनावेला मंदिरमां प्रतिष्ठा करी

५९ श्री हीरविजय सूरिनी पाट उपर श्री विजयसेन सूरि थया

तेमनो संवत (१६०४) मां जन्म, (१६१३) माता पिता सहित दीक्षा, (१६२६) पंडितपद, (१६२७) उपाध्यायपद पूर्वक आचार्यपद, (१६५२) भट्टारकपद, अने (१६७१) मां स्तंभतीर्थे स्वर्गवास थयो. तेमना वेखहर्ष तथा परमानंद, बे शिष्योए अकब्बर बादशाहना पुत्र जाहांगीरने धर्म श्रवण करावी प्रतिबोध कर्यो, अने जाहांगीर बादशाहथी फुरमान कराव्यो, तेनी नकल नीचे मुजब.

जहांगीरनी मोहोरमां वंशावली
उरदीन महम्मह जहांगीर बादशाह
अकबर बादशाह
हुमायुन बादशाह
बाबर बादशाय
मीरजी उमरशेख
सुलतान अबुसइस
सुलतान मीरजा मोहम्मशाह मीराशाह- अमीर तैमुर साहिब किरान

उरुदीन महम्मद
जहांगीर बादशाह
गाजीनुं फुरमान

मारा सर्व राज्यमां तथा विशेष करी गुजरातना सुबा, मोटा हाकेम, कीफायत करनारा आमील, जागीरदार, करोरी तथा सर्व खाताना कारकुनोने मालम थाय के, परमेश्वरने पिछाननारा जे लोक छे, तेनो एवो दस्तूर छे के, हरेक मतना तथा कोमना लोकोज मात्र नहि, परंतु सर्व जीव सुखी रहे, तेम करवुं. हालमां वेखहरख तथा परमानंद यतियोए डुनीआनी रक्षा करनाराउंना दरबारमां आवी, तख्तनी पासे उभा रही अरज करी के:- विजयसेन सूरि तथा विजयदेव सूरि, तेमज जेउं सारी बुद्धिवाला लोको छे, तेउं इश्वरनी भक्ति करे छे, तेमज प्रार्थना करे छे; तथा वेखहरख अते परमानंद यतियोनी परमेश्वरने राजी राखवानी हकीकत, अमे बहु सारी रीते जाणी लीधी, तेथी डुनियाने तावे करनारनो एवो हुकम थयो के:- कोइ आदमीए आ जैन लोकोना मंदिरोमां तथा धर्मशालामां उतरवुं नहि, तथा कारण विना अडचण करवी नहि. जो ते लोको फरीथी नवा बनाववा चाहे तो तेउंने कोइ रीते मना तथा हरकत करवी नहि. वली तेउंना साधुउंना

उपाश्रयमा तो कोइए पण उतरवु नहि वली जो ते लोको सोरठमा श त्रुजय तीर्थनी यात्रा करवा वास्ते जाय तो कोइ पण आदमीए ते यात्रा लुओ पासे कांइ पण मांगवुं नहि, तथा खाळच करवी नहि वली सव रहु वेलहरख अने परमानंद यतिनी अरज तथा लायेस उपर बहुज प्यारे हुकम आ थाय छे के, दर अठवाडीआमां रविवार तथा गुरुवार तथा दर महिनामा सुद पडवाने रोज तथा इदने दिवसे तथा दर व र्षमां नवरोज अने माहशहरयुरमां जे अमारो मुबारक दिन छे, तेमां एक एक वर्षना हिसाब प्रमाणे मारा सर्व राज्यमां कोइ जीवनी हि सा न थाय, तथा शिकारनु काम, पक्षीयोनु पकडवु, मारवु, तथा मा छला मारवा, इत्यादि सर्व बंध करवुं वली तेवी रीतना बीजा पण काम पूर्वोक्त दिवसोमां न थवा जोइए आ वात जरूरनी छे के पूर्वोक्त हुकम मुजब हमेशां चलाववानी कोशिश करवी, तथा मारा फुरमानना हुक मथी कोइ फरे नहि, वीरुद्ध चाले नहि लखी० ता० माह सहर युरमे सन् ३ जुलसी आ फुरमान खांजां हाननां चोपानीआमां तथा सेवक अलीतकीना वर्त्तमान पत्रमां दाखल कर्यो तरजुमो करनार मुनशी सैयद अबदुला मीयां साहेब ओरेजी।

६० श्री विजयसेन सूरिनी पाट उपर श्री विजयदेव सूरि थया ते मनो संवत (१६३४) जन्म (१६४३) दीक्षा, (१६५५) पंडितपद, (१६५६) उपाध्याय पद पूर्वक आचार्यपद, (१६०१) मां स्वर्गवास थयो ६१ श्री विजयदेव सूरिनी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि थया तेमनो (१६४४) जन्म, (१६५४) दीक्षा, (१६७३) वाचकपद, (१६०२) सू रिपद (१७००) मां स्वर्गवास थयो ६२ श्री विजयसिंह सूरिनी पाट उपर श्री विजयप्रभसूरि थया तेमनो संवत (१६७५) जन्म, (१६०९) दीक्षा, (१७०१) पंडितपद, (१७१०) उपाध्यायपद, (१७१३) भट्टा रक पद, (१७४९) मां स्वर्गवास थयो तेमना समयमां मुखबंधा ढु ढीयानो पंथ प्रगट थयो, तेनी उत्पत्ति कहिए छीए

सुरत शेहेरमा शा० वीरजी वोहरा अटकनो दशा श्रीमाळि वाणीओ रहेतो हतो तेने फुली नामनी बाल विधवा एक पुत्री हती तेणे एक लवजी नामनो छोकरो दत्तक लीधो ते लवजीने लुकाना उपाश्रयमा भ

णवा मोकल्यो. तेने यतियोनी संगतथी वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी लुं-
काना यति वजरंगजीनो ते शिष्य थयो. बे वर्ष पछी ते पोताना गुरुने
कहेवा लाग्यो के, जेवो शास्त्रमां साधुनो आचार छे, तेवो तमे केम पा-
लता नथी? गुरुए कह्युं के पंचम कालमां शास्त्रोक्त सर्व क्रिया थइ श-
कती नथी. लवजीए कह्युं के तमे भ्रष्टाचारी छो; तेथी मारा गुरु हवे
तमे नहि. हुं तो पोतेज संयम फरीने लइश. ए प्रमाणे क्लेश करी ल-
वजी रुषिए लुंका मतनी गुरुदीक्षा छोडीने, पोतानी साथे बीजा बे य-
तियो लीधा. १ भाणो, २ सुखजी. त्रणेए पोतपोतानी मेले दीक्षा ली-
धी; अने मुख उपर लुगडानी पट्टी बांधी. तेमना नवीन वेश देखी को-
इ श्रावके तेमने प्रथम तो रहेवा जगा न आपी, तेथी तेउ खंडेर मका-
नमां जइ रह्या. गुजरातमां खंडेर थइ गयेला मकानने ढुंढ कहे छे. लो-
कोए तेवा मकानमां तेउने रहेतां देखी तेउनुं नाम ढुंढीया राख्युं, तेउ
त्रणेने नवो मत चलाववामां बहु क्लेश भोगववो पड्यो, परंतु तेउनो
त्याग देखी केटलाएक लुंका मतियो तेमने मानवा लाग्या; कारण के
गाडरीआ प्रवाहनी रीति जगत्मां प्रचलित छे. ते मुजब भोला, अ-
ज्ञान लोको उपरनो डोल देखी रागी थइ जाय छे; वली गुजरातना लो-
कोनो बहु भाग एवो हठग्राही छे के, जे वात पकडी, ते वातने बहु
मुस्केलीथी छोडे छे; तेथी गुजरात देशमांज जैन मतना केटलाएक फां-
टा निकलेला छे. बाद ते लवजीनो शिष्य सोमजी नामनो उसवाल
वाणीउ, अमदावादना कालुपरनो रेहेनार थयो. तेणे सूर्यनी आतापना
बहुज करी. तेना चेलाना नाम. १ हरिदासजी २ प्रेमजी, ३ गीरधर-
जी, ४ कानजी प्रमुख थया, अने लुंकामतना कुंवरजीना चेला पण ते-
मना शिष्य थया, तेमना नाम. १ श्रीपाल, २ अमीपाल, ३ धरमसी, ४
हरजी, ५ जीवाजी, ६ समरथ, ७ तोडुजी, ८ मोहनजी, ए सदानंदजी,
१० गोधाजी. एक गुजरातवासी धर्मदास छीपाए पोतानी मेले मुंड मुं-
डावी, मुख उपर पट्टी बांधी, पोते ढुंढीयानो साधु छे, एम प्रसिद्ध कर्युं.
हरिदासनो चेलो वृंदावन थयो, वृंदावननो चेलो भवानीदास थयो,
भवानीदासनो चेलो लाहोर निवासी मलूकचंद थयो. मलूकचंदनो म-
हासिंह, महासिंहनो खुशालराय, खुशालरायनो छजमल, छजमलनो

रामलाल, अने रामलालना बे शिष्य, रामरत्न तथा अमरसिंह, आ ब
नेने अमे देखेला छे ते बनेना चेला बसंतराय तथा रामबक्ष विगेरे जी
वता छे तेओ पंजाब देशमा वर्तमानमा फर्या करे छे

जीवाजीनो चेलो लालचंद थयो, अने लालचंदनो चेलो अमरसिं
थयो ते मारवाड देशमां आव्यो, तेमना परिवारमां नानकजी थये
जेना चेला हालमां अजमेर तथा कृष्णगढ जील्लामा बहु फरे छे ए
श्यामिदास, जेना परिवारमां कन्हीराम, खेखराज, तखतमल प्रमुख
हालमा मारवाडमा रहे छे, तथा बुंदीकोटामा अने मालवामा, लाल
चंद, गणेशजी, गोर्धीवरामजी, थया, तथा अमीचंद, हुकमचंद, छव
यचंद, फतेचंद, ज्ञानजी, छगन, मगन, देवकरण अने पन्नालाल
प्रमुख फरे छे, तेओ पण हरिदासनाज चेला छे वली अमरसिंहन
चेला दीपचंद, दीपचंदना धर्मदास, धर्मदासना जोगराज, जोग
राजना हजारीमल्ल, हजारीमल्लना लालजीराम, लालजीरामना गगा
राम, गंगारामना जीवणमल्ल, जे वर्तमानमां दिल्हीनी आसपासना गा
मोमां फरे छे, तथा अमरसिंहना परिवारमां धनजी, मनजी, नाथुराम
अने ताराचंद प्रमुख थया छे, जेमना चेला, रतिराम तथा नंदलाल थ
या नंदलालनो चेलो रुपचंद अने रुपचंदनो बिहारी जे पंजाबमां कोट
जगरावादि गामोमां फरे छे, तथा कानजी अने धर्मदास छीपीना चे
लाओ वीपचंद, गोपालजी प्रमुख लींबडी, बढवाण, मोरबी गोंडल, जेत
पुर, राजकोट, अमरेली, ध्रांगधरा प्रमुख झालावाड काठीयावाड अने
हालार प्रमुखना गामोमां फरे छे धर्मदास छीपीना चेला धनाजी, धना
जीना भुदरजी, भुदरजीना रघुनाथजी, जैमलजी, गुमानचंद, दुर्गदास,
कन्हीराम, रत्नचंद, हमीरमल्ल, कचोरीमल्ल प्रमुख वर्तमानमा मारवा
डमा फरे छे, ते प्रसिद्ध छे

रघुनाथजीनो चेलो भखमजी संवत (१८१८) मां थयो जेणे तेरा
पंथ प्रगट कर्यो तेना चेला भारमल, हेमजी, रायचंद, जीतमल्ल थया,
जीतमल्लनी गादी उपर हाल मेघजी छे आ मुखपथा जेटला साधुओ
छे, तेओनो पंथ संवत (१८०९) नी सालथी चाल्यो छे तेमनो मत ज्या
रथी निकल्यो छे, त्यारथी आज सुधी तेमना मतमां कोइ पण विद्वान

थयेल नथी; कारण के ते लोको कहे छे के, व्याकरण, काव्य, कोश, छंद, अलंकार प्रमुख जाणवाथी, तथा तर्कशास्त्र जाणवाथी बुद्धि बगडी जाय छे. आ अज्ञानपणाना कारणथीज तेओ परस्पर बहु द्वेष राखे छे. कइक मनमानी कल्पित वातो बनावी लहे छे. एक बीजानो पग जामवा देता नथी, मनमां माने छे के, मारा फलाणा गृहस्थ चेलाने फलाणो ओलवशे, इत्यादि अनेक कारणोथी परस्पर इर्ष्या बहुज राखे छे. आ वातमां शंका लागे तेणे मारवाडमां जइ प्रत्यक्ष अनुभव करवो. तेमना आचार, व्यवहार, वेष, श्रद्धा, प्ररुपणा प्रमुख जैनमतना शास्त्रानुसार नथी. वली बीजा मतवालाओ पण जे जैनमतना बहु लोकोने गंदा, कढंगा माने छे, तेओ मात्र आ ढुंढीआओनाज आहार, व्यवहारनी रीत देखीने तेम माने छे. विशेष शुं लखुं, तेओनी अज्ञानतानो अनुभव तेओनी साथेना परिचयथीज थाय छे, वास्तवमे आ लोको जैनमतथी तदन विपरीत चालनारा होवाथी जैनाभास छे. इति ढुंढक मतोत्पत्ति.

६३ श्री विजयप्रभ सूरिनी पाट उपर श्री विजयरत्न सूरि थया. ६४ श्री विजयरत्न सूरिनी पाट उपरश्री विजयक्षमा सूरि थया. ६५ श्री विजयक्षमासूरिनी पाट उपर श्री विजयदया सूरि थया. ६६ श्री विजयदया सूरिनी पाट उपर श्रीविजयधर्म सूरी थया. ६७ श्री विजयधर्म सूरिनी पाट उपर श्री जीनेंद्र सूरि थया. ६८ श्री जीनेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री देवेंद्र सूरि थया. ६९ श्री देवेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री विजयधरणेंद्र सूरि थया; वर्तमानमां तेमनी पाट उपर श्री राजेंद्रसूरि छे, ते विद्यमान विचरे छे.

एकसठमी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि हता, तेमना शिष्य श्री सत्यविजय गणि थया, तेमज महोपाध्याय, षट् शास्त्र वेत्ता, न्यायविशारद, महावैय्याकरणि, तार्किकशिरोमणि, बुद्धिसमुद्र श्री यशोविजय गणि थया. तेओ बंने ए श्री विजयसिंह सूरिनी आज्ञा लइ गछमां क्रियाशिथिल साधुओने देखी, तथा ढुंढक मतना पाखंडनो प्रचार दूर करवा वास्ते क्रिया उद्धार कर्यो. श्री यशोविजय गणिए काशीना पंडितोमां जयपताकानो झुंडो प्राप्त कर्यो, अने गुजरात प्रमुख देशोमां प्रतिमां उत्थापक कुलिंगीओना मतरुप अंधकारने प्रतिमाशतकादि अनेक ग्रंथोना तेजथी दूर कर्यो. तेमना रचेला महान ग्रंथो, अध्यात्मसार, स्या-

ञाप कल्पलता, शास्त्रसमुच्चयवृत्ति, मल्लवादी सूरिकृत नयचक्र उद्धा रादि अनेक मोटा (१००) सो ग्रंथ छे

श्री सत्यविजय गणिजी क्रिया उद्धार करी श्री आनंदघनजीनी साथे घणु वर्ष सुधी वनवासमा रह्या, तथा मह्रा तपस्या योगाभ्यास प्रमुख कर्युं ज्यारे वहुज वृद्ध थइ गया, अने पगमा चालवानी शक्ति न रही, त्यारे अणहिलपुर पाटणमां आवी रह्या तेमना उपदेशथी वे शिष्य थया गणि कपुरविजय पंडित, २ पंडित कुशलविजयजी गणि कपु रविजयजीए अनेक अर्हंत बिंबोनी प्रतिष्ठा करी, अने अनेक गाम तथा शेहेरमां धर्मनी वृद्धि करी, महाप्रभाविक थया श्री गणि कपुर विजयजीने बे शिष्य थया, १ पंडित वृद्धिविजयगणि, २ पंडित क्षमा विजय गणि श्री पंडित क्षमाविजय गणिना शिष्य पंडित श्री जीन विजय गणि, तेमना शिष्य पंडित श्री उत्तम विजय गणि, तेमना शिष्य पंडित पद्मविजयगणि, तेमना शिष्य पंडित रुपविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित कस्तुरविजय गणि, तेमना शिष्य मुनि मणिविजय गणि तेमना शिष्य मुनि बुद्धिविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित मुक्तिविजय गणि, तेमना हस्तथी दीक्षित लघु गुरुभ्रात् आ जैनतत्त्वादर्श ग्रंथना लखनार मुनि आत्माराम (आनंदविजयजी) इति तपगछ गुरु आवलि संपूर्ण

वर्त्तमान समयमा नवीन पंथ मुख्यत्वे करी जे निकळ्या छे ते ल खीए छीए — गुजरात देशमां स्वामिनारायणनो पंथ, बंगालामां ब्रह्म समाजनो पंथ, पंजाबमां लुधीआना नजीक जयणीगाजनिवासी ब्र ह्मणसिख जातिना उपदेशथी कूकापंथ, कोयलमां मौलवी अहमद शाहना नविन फिरका, तथा दयानंदसरस्वति स्वामिनो प्रगट करेलो आर्यसमाज पंथ, इत्यादि केटलाएक मतो, पुरातनी अनेक मतोनो त्याग करी निकलेला छे मत काढनाराउंए एम मान्यु लागे छे के आ पणी बुद्धि समान प्राचीन पंडितोनी बुद्धि न होती, तथा तेउं प्राचीन ग्रंथो जेम के वेदो, उपनिषदो प्रमुखने यथार्थ समजता न होता अ मने तो काइ हरकत नथी, परंतु जो कदापि आवी रीते नवीन नवीन मतो निकलता रहेशे, तो कोइ दिवस ब्राह्मणादि मताधिकारीउंनो ग रास टली जशे, तथा धर्म अने नियम कायम रहेशे नहि

इति श्री तप गछीय मुनिगणी श्रीमणिविजय तछिष्य मुनि श्रीबुद्धि विजय तछिष्य मुनि आत्माराम आनंद विजय विरचिते जैन तत्वादर्शे गुरु आवलि कथनरूप द्वादशः परिछेदः संपूर्ण. ॥ १२ ॥

इति मुनिश्रीआत्माराम आनंदविजयजी
विरचित द्वादश परिछेदरूप जैन-
तत्वादर्श ग्रंथः समाप्तः

शुद्धिपत्र

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
७	११	आदिप	आदिप
८	२०	परहितकारी होय	परहितकारी
ए	२८	खांठन	खंठन
१४	२६	कायवानुंचिह	कायवानुं चिन्ह
१७	११	खांठनना नाम	खंठनना नाम
१८	११	खाठन नाम	खंठन नाम
२०	११	खाठनना नाम	खंठनना नाम
२२	११	खांठन नाम	खंठन नाम
२४	११	खांठन नाम	खंठन नाम
२६	११	खांठन नाम	खंठन नाम
२८	११	खाठनना नाम	खंठनना नाम
३०	११	खांठन नाम	खंठन नाम
३२	११	खाठन नाम	खठन नाम
३६	१८	स्वारि	स्वारि
३७	२६	स्तुति ठे ?	स्तुतिना ठे ?
३८	२	परमेश्वरपणायें	परमश्वरपणाये
४८	४	जीयोपं	जीयोप
७६	१२	रजयामा	रचयामा
८३	१६	क्या ठे	कया ठे
८४	२ए	तो अदत्त	तो गुरु अदत्त
८६	१०	सातमा	सातमी
८६	१८	बीजी	बीजा
८८	२१	यर्जनान्	वर्जनात्
ए२	६	प्रममुख	प्रमुख
ए६	१	अनेकतरेथी	अनेकतरेहथी
ए७	५	मांशुक	प्राशुक
ए७	१८	पुरीप	पुरीस
१०४	१	द्वात्रिंशति	द्वात्रिंशति
१०४	२	चिंतन	चिंतवन
१५१	२	जीज्ञासा	जीज्ञासा
१५३	५	अत्मा	आत्मा
१एए	१७	यस्ते	वास्ते
२ १	१४	यर्तमामान	वर्तमान
२०१	२७	आह	आहा
२०४	१५	प्रकुतिख	प्रतिकुख
२०७	१४	पांचइंयिवाळां ठे	पांचइंद्रिय ठ
२०७	२३	अपर्याप्त	अपर्याप्तो
२०ए	५	अनुपरत	अनुपहत
२१०	१४	अगारापमुखमां	अंगारामुखमा
२१४	८	पराजयमा	पराजयमा
२१५	१३	आतपनामकर्ग	आतापनामकर्म
२१६	१७	पुण्यपापा	पुण्यपाप
२२०	२३	त्स्यानद्धि	स्त्यानर्द्धि
२२१	१२	ककेश	कर्कश
२२४	५	हुंड	हुंडक
२३४	२०	प्रकानी	प्रकारनी
२३८	१८	सह	सहे
२४४	८	याय ठे	थया ठ
२४६	१०	एवाज	एवा जे
२४७	७	जीयवाणीन	जिनवाणीने
२४८	१३	तेनो	तेनु
२५४	२२	लोपआहार	लोमआहार
२५६	१७	सेयोज	नेठंज
२५८	२ए	जेठंनेज	जेठंनो
२६१	६	छुटवानेज	छुटवाने
२६२	५	शुर्व्दांजोनिधि	शब्दांजोनिधि
२६२	२१	स्वरूप	स्वरुप
२६४	१४	अनिष्टयोगार्त्त	अनिष्टसंयोगार्त्त
२६५	६	मनुष्यापूर्वी	मनुष्यानुपूर्वि
२७२	४	ध्यनमांज	ध्यानमाज
२७२	२७	अशुद्ध	अशुभ
२७८	२२	अतिप्रयत्न	अतिप्रयत्न
२८०	२०	क्रमोक्रमे	क्रमेक्रमे
२८३	११	एवां बीजो	एवा बीजा
२८७	२	केवळीसमवृघात	केवलीसमुद्घात
२ए०	१	रूपतापणने	रूपतापने
२ए१	११	धरतो	करतो
२ए४	१४	मुनिश्रीव	मुनिश्रीमद्

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध.
२ए७	२५	प्राणी	पाणी
३०१	१०	शिष्यार्णने	शिष्यणीयोने
३२७	२७	साक्त्	साक्षात्
३३१	६	राखवावो	राखवानो
३३४	२५	निचार	विचार
३३५	५	आतिचार	अतिचार
३३६	२२	अधीन	आधीन
३४०	१२	एएवुं	एवुं
३४२	७	जगत्नी	जगत्
३४७	२३	केवल	कवल
३५२	१ए	अर्था	अर्थी
३५२	१ए	कालकुट	तालपूट
३५३	२४	वडु	वहु
३६०	ए	अजीविका	आजीविका
३७४	२ए	सखिए	लखिये
३ए२	२४	मए	पए
३ए६	१४	आगर	आगार
३ए०	२७	कुलोना	फूलोना
४०१	४	अंगीकर	अंगीकार
४०१	१४	जे	जो
४०१	१७	अवे	आवे
४०२	५	सारोघार	सारोद्धार
४०६	१७	सम्यत्त्व	सम्यक्त्व
४०६	२४	उराचारा	उराचाराः
४०६	२५	म्रियंते	म्रियन्ते
४०७	१ए	रेशमि	रेशमी
४००	२०	अर्हत	अर्हंत
४००	२ए	लोकापहास्य	लोकोपहास्य
४०ए	ए	राज्यचिह्न	राज्यचिन्ह
४१३	२ए	मालाघर	मालाधर
४१५	२३	चेइआए	चेइआएं
४१६	२३	केकेवली	केवली
४१ए	२६	जिनविंवं	जिनविंवं
४१ए	२७	जाएरूव	जिएरूवं
४२०	५	ह्वए	न्हवए
४२०	०	संगीअ	संगीआ
४२०	२३	ञिनत्तु	ञिन्नत्तु
४२१	२२	लोएएल	लोएत्तएल
४२३	१३	निश्राकत	निश्राकृत
४२३	१६	जिनमंमिरो	जिनमंदिरो
४२३	२३	असंविस	असंविग्न
४२३	२६	निर्भ्रंछना	निर्भ्रंछना
४२३	२ए	विधि	विधिनो
४२४	३	इर्या	ईर्या
४२४	२१	सिद्ध	सिद्ध
४२५	४	मोक्षप्रदात्री	मोक्षप्रदायी
४२५	०	तदासा	तदाज्ञा
४२ए	०	प्रमुखथी	प्रमुखनी
४२ए	१०	वडीनीत	वडीनीति
४३०	६	दिशा	दिशाए
४३०	२२	इव्यथी	इव्यनी
४३०	२२	असवारी	अस्वारी
४३०	२०	कागला	कोगला
४३२	४	वैद्यक	वैदक
४३२	२६	वैय्यावथ्र	वैय्यावच्च
४३३	१७	प्रमुख	प्रमुखनी
४३६	१ए	प्रमुखमां	प्रमुख
४३७	२३	स्नात्रप्रन्नावना	स्नात्र, प्रन्नावना
४३०	१४	परन्नावना	प्रन्नावना
४३ए	१३	खमासएा	खमासमएां
४३ए	१ए	कुस्थान	कुस्वप्न
४४०	२६	रागग्रस्त	रोगग्रस्त
४४५	२०	विराधी	विरोधी
४४६	४	दागीन	दागीना
४४७	२२	न्युनादिक	न्यूनाधिक
४५३	४	करेल	लखेल
४५५	४	परतीर्थिको	परतीर्थिंर्त
४५६	२०	तर्जना करे	तर्जना न करे

शुद्धिपत्र

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
७	११	आदिप	आदिप
८	२०	परहितकारी होय	परहितकारी
९	२८	खांडन	खंडन
१४	२६	काचवानुंचिह	काचवानुं चिन्ह
१७	११	खांडनना नाम	खंडनना नाम
१८	११	खाडन नाम	खडन नाम
२०	११	खाडननां नाम	खंडनना नाम
२२	११	खांडन नाम	खंडन नाम
२४	११	खाडन नाम	खंडन नाम
२६	११	खांडन नाम	खंडन नाम
२८	११	खाडनना नाम	खडनना नाम
३०	११	खांडन नाम	खंडन नाम
३२	११	खाडन नाम	खडन नाम
३६	१८	स्वारि	स्वारि
३७	२६	स्तुति छे !	स्तुतिना छे !
३८	२	परमेश्वरपणायें	परमेश्वरपणाये
४८	४	जीवोर्प	जीवोप
७६	१२	रजयामा	रथयामां
८३	१६	क्या छे	कया छे
८४	२९	तो अदत्त	तो गुरु अदत्त
८६	१०	सातमा	सातमी
८६	१८	बीजी	बीजा
८८	२३	यर्जनात्	पर्जनात्
९२	६	प्रप्रमुख	प्रमुख
९६	१	अनकतरथी	अनकतरख्यी
९७	५	प्रांशुक	प्राशुक
९७	१८	पुरीप	पुरीम
१०४	१	द्वात्रिंशति	द्वात्रिंशति
१०४	२	चिंतन	चिंतयन
१५१	२	जीवासा	जीवामा
१५३	८	यारमा	आरमा
१९९	१७	यस्त	यास्त
२०१	१४	यतमामान	यतमान
२०१	२७	आद	आश
२०४	१५	प्रकुतिख	प्रतिकुख
२०७	१४	पार्श्वेद्रींयथाखां छे	पार्श्वइंद्रिय छे
२०७	२३	अपर्यास	अपर्यासा
२०९	५	अनुपरत	अनुपहत
२१०	१४	अंगारापप्रुखमां	अंगाराप्रमुखमां
२१४	८	पराजवमां	पराजयमा
२१५	१३	आतपनामकर्म	आतापनामकर्म
२१६	१७	पुण्यपापा	पुण्यपाप
२२०	२३	त्स्यानद्धि	स्त्यानर्द्धि
२२१	१२	ककेश	क्लेश
२२४	५	कुंड	कुंडक
२३४	२०	प्रकानी	प्रकारनी
२३८	१८	सह	सहे
२४४	८	याय छे	थया छे
२४६	१०	एवाज	एवा जे
२४७	७	जीववाणीन	जिनवाणीने
२४८	१३	तेनो	तेनु
२५४	२२	लोजआहार	लोमआहार
२५६	१७	सेवोज	नथीज
२५८	२९	जेईनेज	जेईनो
२६१	६	त्रुटयानज	त्रुटयान
२६२	५	शुद्धाजोनिधि	शब्दांजोनिधि
२६२	२१	खरुप	स्वरुप
२६४	१४	अनिष्टयोगार्त्त	अनिष्टसंयोगार्त्त
२६५	६	मनुष्यापूर्वी	मनुष्यानुपूर्वि
२७२	४	ध्यनमाज	ध्यानमाज
२७२	२७	अशुद्ध	अशुद्ध
२७८	२२	अतिप्रयत्त	अतिप्रयत्त
२८०	२०	क्रमोक्रम	क्रमेक्रम
२८२	११	एवां बीजो	एवा बीजा
२८७	२	केवलीममदूघात	केवलीसमुद्घात
२९०	१	रूपतापन्न	रूपतापने
२९१	११	धरतो	करता
२९४	१४	मुनिश्रीद	मुनिश्रीमद्

शुद्धिपत्र

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
૪૬૨	૨	ते	के
૪૬૪	૧૦	घोलाया	घलाया
૪૬૭	૧૨	घोज	घोजो
૪૭૧	૨૦	सेचतन	सचेतन
૪૭૨	૧૯	जायस्थिति	जयस्थिति
૪૭૩	૧૧	च्यवन	चवन
૪૭૬	૪	परिणाम	परिमाण
૪૭૬	૨૨	काढ्या	काढ्य
૪૭૮	૧૧	अनर्दंडमीर्थ	अनर्थदंडथी
૪૮૦	૧૦	सम्यत्क्व	सम्यक्त्व
૪૮૧	૧૪	धी	थी
૪૮૫	૨૯	अधर्मी	अधर्मी
૪૮૭	૧૯	पहोफोश	पहोशा
૪૯૦	૫	विहाह	विवाह
૪૯૦	૨૦	जेम	तेम
૪૯૧	૪	बंध	बंध
૪૯૧	૧૦	जिनप्रतिमां	जिनप्रतिमा
૪૯૫	૧	पेथक	पेथडे
૪૯૬	૧૯	सम्यक्त	सम्यक्त्व
૪૯૭	૧૪	जायोजीव	जावजीव
૪૯૮	૧૫	पथके	पेथडे
૪૯૯	૧૫	द्रय	द्रव्य
૪૯૯	૧૯	मोग	माग
૫૦૦	૬	आलेघ	आलोये
૫૦૧	૪	अहत	अर्हत
૫૦૧	૧૯	विज्ञान	विधान
૫૦૨	૧૨	प्रधम	प्रथम
૫૦૫	૫	वृदज	वृपज
૫૦૫	૧૦	न्यूनयपना	न्यून एक यपना
૫૦૭	૧૭	विचार	विचार
૫૦૯	૨૭	आपधानुयाग	आपधानुयाग
૫૦૯	૨૯	मरीय	दलीय
૫૧૨	૧૪	जिन्ग	जिदा
૫૧૩	૨૧	दयाय	दयताढ्य
૫૧૫	૧૭	तमे कहो ?	तमे कहो के
૫૧૭	૨૬	काकणी	काकणी
૫૧૯	૨૨	सुहकाम	सुहकाण
૫૨૦	૧૪	धी	थी
૫૨૦	૨૪	समुला	सुनला
૫૨૫	૧	धेर	घेर
૫૨૬	૨૦	कह्यो	कह्यो
૫૨૮	૨૦	ससगर	सगर
૫૨૯	૯	सर्वेये	सर्वोये
૫૨૯	૧૫	अवधिज्ञान	अवधिज्ञान
૫૩૧	૨૭	स्थापनां	स्थापन
૫૩૬	૭	अगीआरमां	अगीआरमा
૫૩૬	૨૨	मास थता	करता
૫૩૮	૬	हस्तिपुर	हस्तिनापुर
૫૪૦	૧૦	नगगर	नगर
૫૪૪	૨૨	निर्मोक्षथी	निर्मोक्षण
૫૪૫	૬	विष्णुकुमार	विष्णुकुमार
૫૪૮	૨૯	बंधी	वंशी
૫૫૧	૧૧	नामभा	नामना
૫૫૨	૧૧	दती	हती
૫૫૨	૧૩	विचार	तनो विचार
૫૫૪	૧૨	प्रमुखथी	प्रमुखनी
૫૫૮	૯	आगीआरे	अगीआरे
૫૫૯	૨૪	निम्बय	निश्चय
૫૬૦	૧	जागयनार	जोगयनार
૫૬૦	૨૦	इत्यादि	इत्यादि
૫૬૧	૨	सर्य	सर्व
૫૬૫	૧૦	तथा अन	अने
૫૬૫	૧૬	स्थापन कया	स्थापन न कर्या
૫૬૮	૮	परमार्हत	परमार्हत
૫૬૮	૨૨	गृहयाम	गृहस्थयास
૫૭૧	૧૪	मन	अन
૫૭૨	૨	धोयाधा	धोयायो